बालब्रह्मचारी पंडित … जी महाराज कृत

हिन्दी भाषानुवाद सहित.

# विवाहप्रज्ञप्ति (भगवती) सूत्र

प्रसिद्ध कर्ता दक्षिण हैदराबाद …

राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी

अमूल्य.

प्रत १०००

## आभारी-महात्मा

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के पूज्य पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज!

इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री प्राचिन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समय२पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदत देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के आभारी होंगे



## हिन्दी भाषानुवादक

शुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बड़े साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया. और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तले दबे हुवे हम आप के बडे आभारी हैं.

संघकी तर्फ से.

## शास्त्र-प्रकाशक

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ठ दृढधर्मी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी!

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महालाभके लोभी बन साधुमार्गीय जैन धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने को रु. २००००, का खर्चकर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारंभ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु. ४०००० के खर्च में भी काम पुरा होनेका संभव नहीं होने भी आपने उस ही उत्साह से कार्य को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों को गौरव दर्शक व परमादरणीय है!

हैद्राबाद सिकन्द्राबाद जैन संघ

## आश्रयदाता

धोराजी (काठीयावाड) निवासी धर्म प्रेमी कार्यदक्ष कृतज्ञ मणिलाल शिवलाल शेठ! इन्होंने जैन ट्रेनिंग कालेज रतलाम में संस्कृत प्राकृत व अंग्रेजी का अभ्यास कर तीन वर्ष उपदेशक रह अच्छी कौशल्यता प्राप्त की. इन से शास्त्रोध्धार का कार्य अच्छा होगा ऐसी सूचना गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज से मिलने से इन को बोलाये. इन्होंने अन्य प्रेस में शुद्ध अच्छा और शीघ्र काम होता नहीं देख शास्त्रोध्धार प्रेस कायम किया और प्रेस के कर्मचारियों को उत्साही कार्य दक्ष बना काम लिया. तैसे ही भाषानुवाद की प्रेसकॉपी बनाइ. यद्यपि यह भाइ पगार से रहे थे तथापि इन्होंने इस कार्य की सेवा वेतन के प्रमाण से अधिक की. इस लिये इनको भी धन्यवाद देते हैं.

अमोलखऋषि? स्याद्वादसार

कि इस में नाना प्रकार के जीवाजीवादि का स्वरूप और प्रतिपादन कर प्रचुर पदार्थों का विषय है, २ तीर्थंकरों ने गणधरों को कही, गणधरोंने आचार्यादिक को कही, आचार्यादिक ने शिष्यों को कही, यों पूर्व परंपरा से विविध प्रश्न पुरुषों से कहाती आइ सो विवाह प्रज्ञप्ति. ३ विविध प्रकार के विशिष्ट अर्थ का प्रवाह और नयों का प्रभाव जिस में कहा वह विवाह प्रज्ञप्ति. ४ विविध प्रकार के समासों का एक स्थान में समावेश होने से विवाह प्रज्ञप्ति ५ जिस प्रकार गृहस्थ विवाह प्रसंग में विविध प्रकार की सामग्री मीलाता है उस प्रकार इस में भी विविध ज्ञानादि सामग्री का संयोग मीलाया गया है इसलिये इसे विवाह प्रज्ञप्ति सूत्र कहा है. तथा इसे भगवती सूत्र भी कहते हैं. सो सर्व मान्नीय, सर्व पूज्यनीय सर्व विघ्न व दुःख की हर्ता, मंगल कर्ता है.

इस विवाह पन्नत्ति (भगवती) सूत्र को हस्तिरत्न की उपमा दी है १ जिस प्रकार हस्ती स्वलित होता बहुत लोगों के मन को प्रमुदित करता है वैसे ही इस सूत्र के पदादि का अभ्यास करने से और इस का सम्यक् प्रकार से अवबोध होने से लोगों का मन प्रमुदित होता है, २ जिस प्रकार हस्ती सुख पूर्वक उच्च जाता है. वैसे ही इस सूत्र में उपसर्ग निपातादि अव्यय के रूप सहित सघन, शब्द, नंदित, एव ध्यानादि का शब्द होता है. जैसे हस्ती उत्तमोत्तम लक्षण से युक्त होता है. वैसे ही यह सूत्र भी लिंग, वचन विभक्ति आदि वचन शुद्धि की युक्ति कर शुभ लक्षणोपेत है. ४ जिस प्रकार चक्रवर्ती का हस्ती देवाधिष्ठित होता है वैसे ही यह सूत्र भी शासन देव अधिष्ठित है ५ जैसे हस्ती सोने

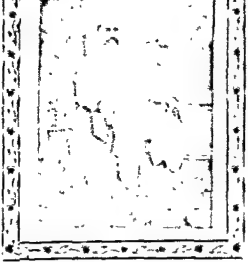

[illegible] मोरवी

[illegible] मोरवी

सूत्र

रत्न हैं, विविध प्रकार के समास के समुह से मिथ्यात्व अज्ञान रूप शत्रुओं का दल बल को जीत ने वाला श्री महावीर महाराजा के बल से युक्त यह सूत्र रूप हाथी है.

श्लोक—या षट्त्रिंशत् सहस्रन्याति विधि, सज्जुषांविभ्राति प्रश्नवाचां। चत्वारिंशाच्छतेषु प्रथयति परितः श्रेणि मुद्देशकानाम् ॥ रङ्गात्कङ्क तरङ्गानय गमगहना दुर्विगाह्या विवाह प्रज्ञप्ति । पंचमाङ्ग जगति भगवती सा विचित्रार्थ कोपः ॥

अर्थ

पांचवा विवाह प्रज्ञप्ति अपर नाम भगवती सूत्र है. सो महा सागर समान अत्यंत गहन, गंभीर, गूढार्थ वाचा है. इस में ४१ शतक १००० उद्देशे, और ३६००० प्रश्न रूप हजारों तरंग उछलते हैं. इस समुद्र का गुह्य भेद रूप रत्नों विग्रह बुद्धि के धारक जनों को प्राप्त नहीं हो सकते हैं परंतु विद्वद्वरों ही प्राप्त कर सकते हैं ऐसा यह भगवती सूत्र सदैव काल जयवंत रहो.

इस भगवती सूत्र का अनुवाद गुरुयाता में धोराजी सर्वज्ञ भंडार से प्राप्त हुई धनपत सिंह बाबु की छपाई हुई प्रतपर से और कच्छ देश पावन कर्ता आठ कोटी मोटी पक्षवाले महंत मुनि श्री नागचंद्रजी महाराज के तरफ से एक पंचपाटी टीका वाली प्रत तथा एक टबा वाली प्रत सार्थमें रख कर किया है. वैसे ही भीनासरवाले श्री मान कनीरामजी बाहादरमलजी बांठिया की तरफ से कुछ हिन्दी अर्थवाली प्रत और एक मेरी पास की प्रतपर से सुधारा किया है. इस की शुद्धि करने में यथा शक्ति व यथामति प्रयास किया है तथापि अशुद्धि रहने का संभव है सो विद्वज्जन...

२७ संघिहन काल आश्रित प्रश्नोत्तर ...७८
२८ भवनपति आदि चारे प्रकार के जीवों देवलोक में उत्पन्न होने के प्रश्नोत्तर ...८२
२९ असज्ञी के आयुष्य कितने प्रकार के? ..८४

प्रथम शतक का तृतीयोद्देश ....८८

१० कांक्षमोहनीय कर्म के प्रश्नोत्तर ...८८
११ आराधक जीवों के लक्षण . ९१
१२ पुनःकांक्षामोहनीय के प्रश्नोत्तर ..९४
१३ साधु के भी कांक्षामोहनी बंध होता है. १०२

प्रथम शतक का चौथा उद्देश....१०६

१४ कर्म प्रकृति तथा मोहनीय कर्म है ...१०६
१५ अपक्रमन के प्रश्नोत्तर ...१०९
१६ कर्म भोगवे बिना मोक्ष नहीं ...११०
१७ पुद्गलों आश्रित प्रश्नोत्तर ...११३
१८ जीव के प्रश्नोत्तर ...११५
३९ छद्मस्त को मोक्ष नहीं केवली को है ...११४
४० केवल ज्ञान से अधिक ज्ञान नहीं ...११८

प्रथम शतक का पांचवा उद्देशा. ११९

४१ नरक के नरकावासे की संख्या ...११९
४२ भुवनपति के भुवन की संख्या ...१२०
४३ पृथ्वीकायसे ज्योतिषतक के वास की संख्या १२१
४४ वैमानीक के विमानों की संख्या ...१२२
४५ नरक की स्थिती के स्थान कषाय के भांगे १२४
४५ चारों कषाय के भांगे का यंत्र ...१३०
४६ नरककी—अवगाहना, शरीर, संघयन, संस्थान, लेश्या, दृष्टी, जोगउपयोग, इनसब के भांगे ...१३३
४७ नरक के जैसे चौवीस ही दंडक के भांगे १३२

प्रथम शतक का छट्ठा उद्देशा....१४५

४८ उदय अस्त सूर्य की दृष्टी विषय प्रभा. १४५

४९ लोक अलोक द्वीप समुद्र की स्पर्शना. १४८
५० जीव प्राणातिपातकी क्रिया करे ? .. १४९
५१ रोहा अनगार के प्रश्नोत्तर-लोक अलोक, जीव कर्म भव्याभव्यक सिद्धासिद्ध, मुर्गी अंडादि पहिले पीछे कौन ? ...१४९
५२ गौतमस्वामीके प्रश्नोत्तर लोक की स्थिति. १५०
५३ लोक किस आधार से रहा-दृष्टांत ..१५१
५४ जीव पुद्गल परस्पर मिले क्या ? .. १५३
५५ सदैव सूक्ष्म पानी की वर्षाद ..१५५

प्रथम शतकका सातवा उद्देश. १५६

५६ नेरीया–देशसे–उत्पन्न आहार-उद्वर्त. अर्ध उत्पन्न के प्रश्नोत्तर ... ...१५६
५७ विग्रहगति के प्रश्नोत्तर .. ...१७२
५८ देव-मनुष्य के आहार की दुर्गंछा करे व मनुष्य तीर्यचका आयुष्य वेदे ... ...१७३
५९ गर्भ उत्पत्ति आश्रिय प्रश्नोत्तरों ...१७४
६० माता पिता के अंग व स्थिति. १८०
६१ गर्भ का जीव नरक में भी जावे ...१८२
६२ गर्भ का जीव देवलोक में भी जावे ..१८४
६३ गर्भ वृद्धिका व सुती का कथन ...१८३

प्रथम शतक का आठवा उद्देशा. १९०

६४ एकांत बाल मनुष्य किस का आयुष्य करे १९०
६५ एकांत पंडित मनुष्य किस का आयुष्य करे. १९१
६६ बाल पंडित मनुष्य किस का आयुष्य करे १९२
६७ मृग घातक मनुष्य को कितनी क्रिया. १९४
६८ अग्निकाय प्रज्वालित कर्ता को कितनी क्रिया .. ... ...१९७
६९ पुनः मृगमारने वाले की क्रिया ...२००
७० मृगवधक को पुरुषमारे दोनोंकी क्रिया. २०१
७१ पुरुषमारने वाले को कितनी क्रिया. २०३
७२ दोनों समान मनुष्य में जय पराजय ...२०४
७३ सवीर्य अवीर्य का प्रश्नोत्तर ...२०६

प्रथम शतक का नवमा उद्देशा. २१०

७४ जीव गुरुलघु किस प्रकार होता है ..२१०

१६९ महाशुक्र देव- का मनावद प्रश्न ६५४
१७० देवता को असंयति कहना क्या ? ६५६
१७१ देवताओं का अर्धमागधी भाषा. ६५७
१७२ केवली मोक्षगामी को जाने छद्मस्त सुनकर मोक्षगामी जाने. ६५८
१७३ चार प्रमाण, केवली चर्म कर्म जाने ६५९
१७४ केवली के मनयोग को देवता जाने ६६१
१७५ अनुत्तर विमान के देव वहाँ से प्रश्नकरे ६६३
१७६ अनुत्तर विमान के देव क्षीणमोही नहीं ६६५
१७७ केवली इन्द्रियों से जाने देखे नहीं. ६६५
१७८ केवली समयनन्तर क्षेत्र बदलते हैं ६६६
१७९ चउदेपूर्व धारी अनेक रूप बतासके. ६६८
पांचवे शतक का पाचवा उद्देश ६६९
१८० छद्मस्त मनुष्य सिद्ध नहीं होवे. ६६९
१८१ सब जीवों एवंभूत वेदना वेदते हैं. ६७०
१८२ भरत के वर्तमान कुलकरों ६७३
पांचवे शतक छट्ठा उद्देश ६७३
१८३ अल्पायुष्य दीर्घायुष्य कैसे होवे ? ६७३
१८४ अशुभदीर्घायु शुभदीर्घायु कैसे होवे ? ६७८
१८५ चोरीमें गयामाल गवेषणे में क्रिया. ६७६
१८६ वस्तु वेचने खरीदने वाले को क्रिया ६७९
१८७ अग्नि प्रज्वालने व बुझाने में ज्यादा पाप किसे ? ६८०
१८८ धनुष्य वान चलने में कितनी क्रिया. ६८२
१८९ चार सो पांच सो योजन में नेरीये भरे हैं. ६८५
१९० आधाकर्मी आदि सदोषस्थान भोगवने का पाप. ६८७
१९१ आचार्य उपाध्याय सम्प्रदायके सन्मान से मोक्षपावे ६८९
१९२ आल (वज्जा) चडाने से वैसाही पावे ६९०
पांचवा शतक का सातवा उद्देश ६९०
१९३ प्रमाणु आदि पुद्गलों का कथन. ६९१
१९४ प्रमाणु व स्कन्धों की परस्पर स्पर्शना ६९८

१६९ महाशुक्र देव का मनोमय प्रश्न ६५९
१७० देवता को असंयति कहना क्या ? ६५६
१७१ देवताओं का अर्धमागधी भाषा. ६५७
१७२ केवली मोक्षगामी को जाने छद्मस्त सुनकर मोक्षगामी जाने. ६५८
१७३ चार प्रमाण, केवली चर्म कर्म जाने ६५९
१७४ केवली के मनयोग को देवता जाने ६६१
१७५ अनुत्तर विमान के देव वहीं से प्रश्न करे ६६३
१७६ अनुत्तर विमान के देव क्षीणमोही नहीं ६६५
१७७ केवली इन्द्रियों से जाने देखे नहीं. ६६५
१७८ केवली समयनन्तर क्षेत्र पलटते हैं ६६६
१७९ चउदेपूर्व धारी अनेक रूप बतासके. ६६८

पांचवे शतक का पाचवा उद्देश ६६९

१८० छद्मस्त मनुष्य सिद्ध नहीं होवे. ६६९
१८१ सब जीवों एवंभुत वेदना वेदते हैं. ६७०
१८२ भरत के वर्तमान कुलकरों ६७३

पांचवे शतक छट्ठा उद्देश ६७३

१८३ अल्पायुष्य दीर्घायुष्य कैसे होवे ? ६७३
१८४ अशुभदीर्घायु शुभदीर्घायु कैसे होवे ? ६७५
१८५ चोरीमें गयामाल गवेषणे में क्रिया. ६७६
१८६ वस्तु वेंचने खरीदने वाले को क्रिया ६७९
१८७ अग्नि प्रज्वालने व बुझाने में ज्यादा पाप किसे ? ६८०
१८८ धनुष्य बान चलने में कितनी क्रिया. ६८२
१८९ चार सो पांच सो योजन में नेरीये भरे हैं. ६८५
१९० आधाकर्मी आदि सदोषस्थान भोगव ने का पाप. ६८७
१९१ आचार्य उपाध्याय सम्प्रदायके सन्मान से मोक्षपावे ६८९
१९२ आल (पज्ञा) चडाने से वैसाही पावे ६९०

पांचवा शतक का सातवा उद्देश ६९०

१९३ प्रमाणु आदि पुद्गलों का कथन. ६९१
१९४ प्रमाणु व स्कन्धों की परस्पर स्पर्शना ६९८

छट्ठे शतक का-पांचवा उद्देशा. ७१२
२१७ तमस्काया का अधिकार ७९२
२१८ कृष्ण राजी का अधिकार ८०३
२१९ लोकांतिक देवता का अधिकार ८१०
छट्ठे शतक का-छट्ठा उद्देशा ....८१५
२२० नरक देव के आवासा की संख्या ८१५
२२१ मरणांतिक समुद्घात का कथन ८१६
छट्ठे शतक का-सातवा उद्देशा....८२२
२२२ धान्य बन्धन में सयोनिक कितना रहे.८२२
२२३ मुहूर्त के श्वासोश्वासादि काल प्रमाण. ८२४
२२४ संख्यात काले, पल्योपम, सागरोपम कालचक्रादि. ८२४
२२५ प्रथम आराका वर्णन ८३४
छट्ठे शतक का-आठवा उद्देशा.. ८३४
२२६ नरक में क्या क्या नहीं है ८३५
२२७ छ प्रकार आयुबंध का कथन. ८४०
२२८ लवणादि समुद्रों का पानी का स्वाद ८४३
२२९ द्वीपसमुद्रों के नाम ८४४
छट्ठे शतक का-नववा उद्देशा ८४५
२३० एक कर्मका बन्धहोते अन्यकर्मभी बंधे ८४५
२३१ देवता बाहिर के पुद्गलो ग्रह वैक्रयकरे ८४६
२३२ देव के ग्रहे पुद्गल वर्णादि पने परिणमे ८४८
२३३ अविशुद्ध शुद्धलेश्या के भांगे ८४९
छट्ठे शतक का-दशवा उद्देशा ८५१
२३४ सुख दुःख के पुद्गलों अदृश्य है ८५१
२३५ जीव चैतन्य की ऐक्यता ८५४
२३६ जीव प्राण की पृथक्त्वता ८५५
२३७ भव्याभव्य का गति सम्बन्ध ८५६
२३८ जीव सुख दुःख दोनो वेदता है ८५७
२३९ आहार ग्रहण करने का क्षेत्र ८५८
२४० केवली इन्द्रियों कर जाने देखे नहीं ८५९
७ सप्तम शतक का-प्रथमोद्देशा ८६१
२४१ अनाहारकक्रीस्थिति अल्पाधिकआहार ८६१

१६९ महाशुक्र देवों का मनोमय प्रश्न ६५९
१७० देवता को असंयति कहना क्या ? ६५६
१७१ देवताओं का अर्धमागधी भाषा. ६५७
१७२ केवली मोक्षगामी को जाने छद्मस्त सुनकर मोक्षगामी जाने. ६५८
१७३ चार प्रमाण, केवली चर्म कर्म जाने ६५९
१७४ केवली के मनयोग को देवता जाने ६६१
१७५ अनुत्तर विमान के देव वहीं से प्रश्नकरे ६६३
१७६ अनुत्तर विमान के देव क्षीणमोही नहीं ६६५
१७७ केवली इन्द्रियों से जाने देखे नहीं. ६६५
१७८ केवली समयनन्तर क्षेत्र पलटते हैं ६६६
१७९ चउदेपूर्व धारी अनेक रूप बतासके. ६६८
पांचवे शतक का पांचवा उद्देश ६६९
१८० छद्मस्त मनुष्य सिद्ध नहीं होवे. ६६९
१८१ सब जीवों एवंभूत वेदना वेदते हैं. ६७०
१८२ भरत के वर्तमान कुलकरों ६७३
पांचवे शतक छट्ठा उद्देश ६७३
१८३ अल्पायुष्य दीर्घायुष्य कैसे होवे ? ६७३
१८४ अशुभदीर्घायु शुभदीर्घायु कैसे होवे ? ६७८
१८५ चोरीमें गयामाल गवेषने में क्रिया. ६७६
१८६ वस्तु वेंचने खरीदने वाले को क्रिया ६७९
१८७ अग्नि प्रज्वालने व बुझाने में ज्यादा पाप किसे ? ६८०
१८८ धनुष्य बान चलाने में कितनी क्रिया. ६८२
१८९ चार सो पांच सो योजन में नेरीये भरे हैं. ६८५
१९० आधाकर्मी आदि सदोषस्थान भोगव ने का पाप. ६८७
१९१ आचार्य उपाध्याय सम्प्रदायके सन्मान से मोक्षपावे ६८९
१९२ आल (बज्जा) चडाने से वैसाही पावे ६९०
पांचवा शतक का सातवा उद्देश ६९०
१९३ प्रमाणु आदि पुद्गलों का कथन. ६९१
१९४ प्रमाणु व स्कन्धों की परस्पर स्पर्शना ६९८

२६९ महाशिलाकंटक संग्राम से अकृत्य वेदना ९.१८
२७० जीव दया से साता वेदनी कर्म बन्धे. ९.१९
२७१ जीव को दुःख देने से दुःखशाता. ९.१६
१७२ छट्टे आराका वर्णन. ९.१७

सप्तम शतक का-सातवा उद्देशा. ९२८

२७३ संवृत साधु भी अनाउपयोगसे इर्यावही क्रियाकरे. ९२८
२७४ काम भोग रूपी अरूपी-व भेदों. ९२९
२७५ चोबीस दंडक कामी भोगी का प्रश्न. ९.३१
२७६ छद्मस्त देवता हो भोग भोगने समर्थ है ९.३४
२७७ आवधी ज्ञानी, परम अवधी, केवल ज्ञानी ९३५
२७७ असज्ञी अकाम वेदना वेदते हैं ! ९३६
२७८ सज्ञी अज्ञानता से निकारण वेदना वेदते ९.३८

सप्तम शतक का-आठवा उद्देशा. ९३९

२७९ छद्मस्त सिद्ध न होवे ९३९
२८० हस्ति कुंथुवे का सरीखा जीव ९.४०
२८१ दश संज्ञा चोवीस दंडक पर ९४०
२८२ नेरिये के पापकर्म दुःख हेतुभूत ९४०
२८३ नर्क की दश प्रकार की तीव्र वेदना ९४१
२८४ हस्ति कुंथुवे की सरीखी क्रिया ९४२

सप्तम शतक का-नववा उद्देशा. ९४३

२८५ साधु के वैक्रेय करने का कथन ९.४४
२८६ कोणिक चेडा का महा सिला कंटक सं. ९४५
२८७ कोणिक चेडा का रथमूशल संग्राम ९.५४
२८८ शक्रेन्द्र कोणिक के पूर्व के मित्र ..९५५
२८९ संग्राम में मरे वे देवता होवे वरुनाग. ९५८

सप्तम शतक का-दशवा उद्देशा. ९७१

२९० अन्य तीर्थिक की चर्चा आस्तिकाया ९७२
२९१ पापकर्म पुण्यकर्म परिणमने का दृष्टांत ९.८२
२९३ अग्नि प्रजालने से बुझानेवाला अल्पकर्मी ९८५
२९४ अचित्त पुद्गलों का प्रकाश तेजोलेश्या ९८८

अष्टम शतक का-प्रथमोद्देशा. ९९०

२९५ प्रयोगसा; मिश्र; विशेष पुद्गलोंका कथन ९.९०

छट्ठे शतक का-पांचवा उद्देशा. ७९२

२१७ तमस्काया का अधिकार ७९२

२१८ कृष्ण राजी का अधिकार ८०३

२१९ लोकांतिक देवता का अधिकार ८१०

छट्ठे शतक का-छट्ठा उद्देशा ....८१५

२२० नरक देव के आवासा की संख्या ८१५

२२१ मरणांतिक समुद्घात का कथन ८१६

छट्ठे शतक का-सातवा उद्देशा....८२२

२२२ धान्य बन्धन में सयोनिक कितना रहे.८२२

२२३ मुहूर्त के श्वासोश्वासादि काल प्रमाण. ८२४

२२४ संख्यात काले, पल्योपम, सागरोपम कालचक्रादि. ८२४

२२५ प्रथम आराका वर्णन ८३४

छट्ठे शतक का-आठवा उद्देशा.. ८३४

२२६ नरक में क्या क्या नहीं है ८३५

२२७ छ प्रकार आयुबंध का कथन. ८४०

२२८ लवणादि समुद्रों का पानी का स्वाद ८४३

२२९ द्वीपसमुद्रों के नाम ८४४

छट्ठे शतक का-नववा उद्देशा ८४५

२३० एक कर्मका बन्धहोते अन्यकर्मभी बंधे ८४५

२३१ देवता बाहिर के पुद्गलो ग्रह वैक्रयकरे ८४६

२३२ देव के ग्रहे पुद्गल वर्णादि पने परिणमे ८४८

२३३ अविशुद्ध शुद्धलेश्या के भांगे ८४९

छट्ठे शतक का-दशवा उद्देशा ८५१

२३४ सुख दुःख के पुद्गलों अदृश्य है ८५१

२३५ जीव चैतन्य की एक्यता ८५४

२३६ जीव प्राण की पृथक्त्वता ८५५

२३७ भव्याभव्य का गति सम्बन्ध ८५६

२३८ जीव सुख दुःख दोनो वेदता है ८५७

२३९ आहार ग्रहण करने का क्षेत्र ८५८

२४० केवली इन्द्रियों कर जाने देखे नहीं ८५९

७ सप्तम शतक का-प्रथमोद्देशा ८६१

२४१ अनाहारककीस्थिति अल्पाधिकआहार ८६१

आठवे शतक का-सातवा उद्देशा. ११११२

११९ स्थविर अन्य तीर्थिक की चर्चा . ११२२

१२० पांच प्रकार का गतिप्रवाद ११२१

आठवा शतक का-आठवा उद्देशा ११२५

१२१ गुरु के-जाति के-समूह के-श्रुत के-भाव के प्रत्याख्यानीक ११२८

१२२ पांच प्रकार के व्यवहार ११३८

१२३ ईर्या पथिक सम्परायिक बंध के भांगे ११३२

१२४ बाईस परिषह किस कर्मोदयसे .११४३

१२५ सूर्य दृष्टिगत आने के दृष्टने के प्रश्नोत्तर ११४९

१२६ जंबूद्वीप के बाहिर भीतर के ज्योतिषी का अधिकार .११५३

आठवे शतक का-नवमा उद्देशा.

१२७ प्रयोगबंध विस्रसाबंध का कथन ११५५

१२८ अनादि सादि वीससा बंध. ...११५६

१२९ प्रयोग बन्ध के तीन प्रकार. ...११६०

१३० आहारक बंध के पांच प्रकार ...११६१

१३१ शरीर बंध के दो प्रकार. ...११६६

१३२ शरीर प्रयोग बंध के पांच प्रकार ११६८

१३३ पांचों शरीर प्रयोग बंध किस २ कर्मोदय से होवे देश बंध सर्व बंध की स्थिति अल्पाबहुत्व अन्तर. ११७०

१३४ आठों कर्म बंध के कारण. ...११९९

१३५ पांचों शरीर का परस्पर बन्ध. १२०७

आठवे शतक का-दशवा उद्देशा.

१३६ ज्ञान क्रिया से आराधक की चौभंगी १२१२

१३७ तीन प्रकार की आराधना का कथन. १२१६

१३८ पुद्गल परिणाम के पांच प्रकार. १२२१

१३९ पुद्गलों के सम्बन्ध के प्रश्नोत्तर. १२२२

१४० आठों कर्म के अविभाग परिछेद १२२५

१४१ आठों कर्मों का परस्पर सम्बन्ध. ...१२२८

१४२ जीव पुद्गल कि पुद्गली ? ...१२३२

१९४ प्रमाणु व स्कन्धो की स्थिति. ७०१
१९५ प्रमाणु स्कंधों का अंतर काल ७०४
१९६ प्रमाणु स्कंधों की अल्पा बहुत्व ७०६
१९७ चौवीस ही दंडक का आरंभ परिग्रह ७०७
१९८ पांच प्रकार के हेतुओं ७११

पांचवा शतक का-आठवा उद्देशा ७१५

१९९ नारदपुत्र निर्ग्रन्थ पुत्र साधु की पुद्गलो चर्चा, ७१६
२०० जीवादि की हानी वृद्धी अवस्थितता ७२२
२०१ सोवचय सावचय के प्रश्नोत्तर ७२८

पांचवा शतकका नववा उद्देशा ....७३१

२०२ राजगृही पृथव्यादि किसे कहना ? ७३१
२०३ दिन का उद्योत रात्रि का अन्धकार ७३२
२०४ चौवीस ही दंडक में उद्योत अंधकार ७३४
२०५ मनुष्य लोक सिवाय काल प्रमाण कहीं भी नहीं ७३५
२०७ देवलोक कितने कहे हैं ७४२

पांचवा शतक का दशवा उद्देशा ....७४३

२०८ चन्द्रमा देव का निवास स्थान ७४३

छट्ठे शतक का-प्रथमोद्देशा ....७४४

२०९ महा वेदना महा निर्जरा आदि दृष्टांत ७४४
२१० करण का कथन ७५०
२११ वेदना निर्जरा की चोभंगी ७५४

छट्ठे शतक का—दूसरा उद्देशा. ७५६

२१२ आहार अधिकार ७५६

छट्ठे शतक का—तीसरा उद्देशा. ७५७

२१३ वस्त्र का और कर्म का दृष्टांतिक संबंध ७५७
२१४ कर्म बंध के स्थिति आदि १६ द्वारों. ७६७

छट्ठे शतक का—चौथा उद्देशा. ७८०

२१५ जीवादि काल आश्रिय सप्रदेशी अप्रदेशी के भांगे ७८०

२६९ भक्तप्रत्याख्यानके त्याग से अकर्कश वेदनी ९१४
२७० जीव दया से साता वेदनी कर्म बन्धे. ९१५
२७१ जीव को दुःख देने से दुःखभाव. ९१६
१७२ छट्ठे आराका वर्णन. ९१७

सप्तम शतक का-सातवा उद्देशा. ९२८

२७३ संवृत साधु भी अनाउपयोगसे इर्या वही क्रियाकरे. ९२८
२७४ काम भोग रूपी अरूपी-व भेदों. ९२९
२७५ चोवीस दंडक कामी भोगी का प्रश्न. ९३१
२७६ छद्मस्त देवता दो भोग भोगने समर्थ है ९३४
२७६ आवधी ज्ञानी, परम अवधी, केवल ज्ञानी९३५
२७७ असज्ञी अकाम वेदना वेदते हैं ! ९३६
२७८ सज्ञी अज्ञानता से निकारण वेदना वेदते ९३८

सप्तम शतक का-आठवा उद्देशा. ९३९

२७९ छद्मस्त सिद्ध न होवे ९३९
२८० हस्ति कुंथवे का सरीखा जीव ९४०
२८१ दश संज्ञा चोवीस दंडक पर ९४०
२८२ नेरीये के पापकर्म दुःख हेतुभूत ९४०
२८३ नर्क की दश प्रकार की क्षेत्र वेदना ९४१
२८४ हस्ति कुंथुवे की सरीसी क्रिया ९४२

सप्तम शतक का-नवमा उद्देशा. ९४३

२८५ साधु के वैक्रेय करने का कथन ९४४
२८६ कोणिक चेडा का महा सिला कंटक सं.९४५
२८७ कोणिक चेडा का रथमूशल संग्राम ९५४
२८८ शक्रेन्द्र कोणिक के पूर्व के मित्र ९५५
२८९ संग्राम में मरे वे देवता होवे वरुनाग. ९५८

सप्तम शतक का-दशवा उद्देशा. ९७१

२९० अन्य तीर्थिक की चर्चा आस्तिकाया ९७२
२९१ पापकर्म पुण्यकर्म परिणमने का दृष्टांत ९८२
२९३ अग्नि प्रजालने से बुझानेवाला अल्पकर्मी ९८५
२९४ अचित्त पुद्गलों का प्रकाश तेजोलेश्या ९८८

अष्टम शतक का-प्रथमोद्देशा. ९९०

२९५ प्रयोगसा, मिस्रा; विश्रेष पुद्गलोंका कथन९९०

४४८ नारक में पुद्गल परिणाम ...१९२६

चउदवे शतक का-चौथा उद्देशा.

४४९ पुद्गलों का परिणमन ...१९२७
४५० जीव के सुख दुःख का जोडा ...१९२८
४५१ परमाणु पुद्गल का चर्म अचर्म पना ...१९२९

चउदवे शतक का-पांचवा उद्देशा

४५२ चोइस दंडक के जीव अग्नि के मध्य हो जा सके क्या ? ....१९४०
४५३ दश प्रकार के सुख दुःख चोइस दंडक पर ...१९३५
४५४ देवता बाहिर के पुद्गलों ग्रहण कर क्रमण करे ....१९३६

चौदीसवा शतक का-छट्ठा उद्देशा

४५५ आहार परिमाणयोनि स्थिती का कथन १९३७
४५६ शक्रेन्द्रादि इन्द्र भोग किस प्रकार भोगवे है ....१९३९

चउदवां शतक का-सातवा उद्देशा १९४९

४५७ महावीर स्वामी गौतम स्वामी का प्रेम १९४३
४५८ द्रव्य क्षेत्र काल भाव की तुल्यता ...१९४४
४५९ भक्त प्रत्याख्यानी आहार करे क्या १९५०
४६० लव सत्तम देवता का अर्थ ...१९५०
४६१ अनुत्तरोपपाति देव का अर्थ किस कर्म से हुअे ......१९५२

चउदवे शतक का-आठवा उद्देशा.

४६३ रत्नप्रभा से ज्योतिषी वैमानिक का अंतर १९५४
४६४ शालवृक्षपुज्य क्यों है १९५५
४६५ अंबड संन्यासी के ७०० शिष्यों १९५९
४६५ देवता अव्याबाध कैसे होते हैं ? १९६१
४६६ देवता की अचिन्त्य शक्ति १९६२
४६७ जंभक देव का कर्तव्य व प्रकार १९६३

चउदवे शतक का-नववा उद्देशा

४६८ साधु कर्म लेश्या जाने रूपी कर्म लेश्या १९६५

छट्ठे शतक का-पांचवा उद्देशा. ७९२

२१७ तमस्काया का अधिकार ७९२
२१८ कृष्ण राजी का अधिकार ८०३
२१९ लोकांतिक देवता का अधिकार ८१०

छट्ठे शतक का-छट्ठा उद्देशा ....८१५

२२० नरक देव के आवासा की संख्या ८१५
२२१ मरणांतिक समुद्घात का कथन ८१६

छट्ठे शतक का-सातवा उद्देशा....८२२

२२२ धान्य बन्धन में सयोनिक कितना रहे.८२२
२२३ मुहूर्त के श्वासोश्वासादि काल प्रमाण. ८२४
२२४ संख्यात काले, पल्योपम, सागरोपम कालचक्रादि. ८२४
२२५ प्रथम आराका वर्णन ८३४

छट्ठे शतक का-आठवा उद्देशा.. ८३४

२२६ नरक में क्या क्या नहीं है ८३५
२२७ छ प्रकार आयुबंध का कथन. ८४०
२२८ लवणादि समुद्रों का पानी का स्वाद ८४३
२२९ द्वीपसमुद्रों के नाम ८४४

छट्ठे शतक का-नववा उद्देशा ८४५

२३० एक कर्मका बन्धहोते अन्यकर्मभी बंधे ८४५
२३१ देवता बाहिर के पुद्गलो ग्रह वैक्रयकरे ८४६
२३२ देव के ग्रहे पुद्गल वर्णादि पने परिणमें ८४८
२३३ अविशुद्ध शुद्धलेश्या के भांगे ८४९

छट्ठे शतक का-दशवा उद्देशा ८५१

२३४ सुख दुःख के पुद्गलों अदृश्य है ८५१
२३५ जीव चेतन्य की एक्यता ८५४
२३६ जीव प्राण की पृथक्त्वता ८५५
२३७ भव्याभव्य का गति सम्बन्ध ८५६
२३८ जीव सुख दुःख दोनो वेदता है ८५७
२३९ आहार ग्रहण करने का क्षेत्र ८५८
२४० केवली इन्द्रियों कर जाने देखे नहीं ८५९

७ सप्तम शतक का-प्रथमोद्देशा ८६१

२४१ अनाहारककीस्थिति अल्पाधिकआहार ८६१

सूत्र

नमस्कार उ० उपाध्याय को ण०नमस्कार लो० लोकमें स० सर्व सा० साधुको ॥*॥ ण०नमस्कार बं०ब्राम्ही

सव्वसाहूणं ॥ * ॥ णमो बंभीए लिवीए ॥ * ॥ रायगिह, चलण, दुक्खे, कंखप-

भावार्थ

अर्थात् जो सब भाव को जान व देख सकते हैं उन को अरहंत कहते हैं. ऐसे अरहंत भगवंत को नमस्कार होवो. इस का अरूहंताणं व अरिहंताणं ऐसे दो पाठान्तर हैं. अष्टप्रकार के कर्मरूप शत्रुको हणनेवाले अरिहंत कहाते हैं. कर्मरूप बीज का क्षय होने से संसार में पुनःजन्म लेने का जिन को नहीं है इसलिये अरूहंत कहाते हैं; उनको नमस्कार होवो. सिद्ध भगवंत को नमस्कार होवो. वे कैसे हैं? शुक्ल ध्यानरूप अग्नि से अष्टप्रकार के कर्मों को दग्ध करके जो मोक्ष पहुंचे हैं उन्हें सिद्ध कहते हैं; उन को नमस्कार होवो. जिन शासन के उपदेशक, ज्ञानादि पंचाचार पालनेवाले, गच्छ के नायक, अष्ट संपदा के धारक, ऐसे श्री आचार्यको नमस्कार होवो. अग्यारह अंग व बारह उपांग स्वयं पठन करे, अन्य को पठन करावे, और चरण सत्तरी व करण सत्तरी पच्चीस गुणों से युक्त होवे ऐसे उपाध्याय को नमस्कार होवो. ज्ञानादिक से मोक्ष मार्ग साधे वैसे सब साधु को नमस्कार होवो. यहांपर " सव्वसाहूणं " पाठ में सव्व शब्दका प्रयोग करने से सामायिक विशेष, अप्रमत्तादिक, पुलाकादिक, जिन कल्पिक, परिहार विशुद्ध कल्पिक, यथा लिंगादि कल्पिक प्रत्येक बुद्ध, स्वयंबुद्ध, व बुद्धबोधित प्रमुख गुणवंत साधुओं को भी ग्रहण कीये हैं उक्त पंच परमेष्ठी मोक्षमार्ग के सहायक व परम उपकारी हैं * ब्राम्ही लिपिक

आठवे शतक का-सातवा उद्देशा. ११११

११९ स्थविर अन्य तीर्थिक की चर्चा . ११११

१२० पांच प्रकार का गतिप्रवाद ११२१

आठवा शतक का-आठवा उद्देशा ११२५

१२१ गुरु के-गति के-समूह के-सूत्र के-भाव के प्रत्याख्यानीक ११२८

१२२ पांच प्रकार के व्यवहार ११२८

१२३ ईर्या पथिक सम्परायिक बंध के भांगे११३२

१२४ बाईस परिषह किस कर्मोदय से .११४३

१२५ सूर्य उद्गत आने के दपने के प्रश्नोत्तर ११४९

१२६ जम्बूद्वीप के बाहिर भीतर के ज्योतिषी का अधिकार .११६३

आठवे शतक का-नवमा उद्देशा.

१२७ प्रयोगरूप विस्रसबंध का कथन ११६५

१२८ अनादि सादी वीस्रसा बंध. ...११६६

१२९ प्रयोग बन्ध के तीन प्रकार. ...११६०

१३० आलिका बंध के पांच प्रकार ...११६१

१३१ शरीर बंध के दो प्रकार. ...११६६

१३२ शरीर प्रयोग बंध के पांच प्रकार ११६८

१३३ पांचों शरीर प्रयोग बंध किस २ कर्मोदय से होवे देश बंध सर्व बंध की स्थिति अल्पाबहुत्व अन्तर. ११७०

१३४ आठों कर्म बंध के कारण. ...११९९

१३५ पांचों शरीर का परस्पर बन्ध. १२०७

आठवे शतक का-दशवा उद्देशा.

१३६ ज्ञान क्रिया से आराधक की चौभंगी १२१२

१३७ तीन प्रकार की आराधना का कथन. १२१६

१३८ पुद्गल परिणाम के पांच प्रकार. १२२१

१३९ पुद्गलों के सम्बन्ध के प्रश्नोत्तर. १२२२

१४० आठों कर्म के अविभाग पारिच्छेद १२२५

१४१ आठों कर्मों का परस्पर सम्बन्ध. ...१२२८

१४२ जीव पुद्गल कि पुद्गली ? ...१२३२

लि० लिविक को॥*॥रा० राजगृह में च० चलन दु० दुःख कं० कांक्षा प्रदोष प० प्रकृति पु० पृथ्वी जा० जावन्त णे० नारकी बा० बाल गु० गुरुक च० चलन॥*॥ण० नमस्कार सु० श्रुतको ते० उस का० काल ते० उस स० समय में रा० राजगृह णा० नाम न० नगर हो० था व० वर्णन वाला त० उस रा० राजगृह

सूत्र

ओसिय, पगइ, पुढवीओ, जावंते, नेरइए, बाले, गुरुएय, चलणाओ॥*॥णमो सुअस्स॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था, वण्णओ तस्सणं रायगिह-

भावार्थ

चालिए इत्यादि चलण विषय अर्थ का निर्णय रूप पहिला उद्देशा नव प्रश्न का जानना. २ दुःख-इस में जीव अपना कीया हुवा कर्म वेदता है इत्यादि प्रश्नकी पृच्छा है. ३ कांक्षा प्रदोष-इस में जीवने कांक्षा मोहनीय कर्म किया ! ऐसे प्रश्नोंकी पृच्छा है ४ प्रकृति-इस में कर्म की कितनी प्रकृतियों कही हैं इत्यादि प्रश्नकी पृच्छा है. पृथ्वी-इस में रत्नप्रभादि कितनी पृथ्वी है इसका निर्णय किया है ६ जावंत इसमें जितना अंतर से सूर्य का उदय होता होवे उसका निर्णय किया है ७ नारकी-इस में नरक में नारकी उत्पन्न होते हैं या नारकी सिवाय अन्य जीव उत्पन्न होते है इसका निर्णय किया है ८ बाल-इसमें एकान्त बालका स्वरूप कहा है, ९ गुरुक-इसमें कोनसा जीव भारी होता है इसप्रश्न का निर्णय किया है १० चलणाओ-इसमें अन्य दर्शनियों का ऐसा कथन होवे कि चलमाणे अचलिए इत्यादि प्रश्न का निर्णय किया है॥*॥इन द्वादशांग रूप श्रुत सो अर्हंत प्रवचन इस को नमस्कार होवो. इस तरह नमस्कार करके श्री

२४२ लोक का संस्थान ८६५
२४३ श्रावकको सामायिकमें सम्परायक्रिया ८६५
२४४ पृथ्वीखोदते त्रस मरेतो मत्या ख्यान खंडन नहीं होवे ...८६६
२४५ साधु को शुद्ध आहार देते सहायदाता होवे ८६७
२४६ साधु को आहार देते मोक्ष प्राप्त करे. ८६७
२४७ अकर्मी जीव की गति के दृष्टांत ८६९
२४८ दुःखी दुःख को स्पर्शता है क्या ? ८७३
२४९ साधु अयत्ना से कार्य कर्ता संपराइ क्रिया ८७४
२५० इंगाल धूम्र दोषवाला आहार ८७६
२५१ क्षेत्र काल मार्ग प्रमाण अतिक्रन्त आहार ८७८
२५२ शास्त्रातीत एषणी वेषणी समुदानी आहार ८८१

सातवे शतक का-दूसरा उद्देशा. ८८३

२५४ सुप्रत्याख्यान दुप्रत्याख्यान ८८३
२५५ प्रत्याख्यान दो प्रकार के ८८७
२५६ जीव प्रत्याख्यानी अप्रत्याख्यानी ? ८९३
२५७ जीव शाश्वता की अशाश्वता ? ८९४

सप्तम शतक का-तीसरा उद्देशा ८९५

२५८ वनस्पति के न्युनाधिक आहार काल ८९५
२५९ मूल कंदादी के पृथक् जीवों ८९७
२६० अनंत काय कंद मूल के नाम ८९८
२६१ लेश्यानुसार कर्म न्युनाधिक ८९९
२६२ वेदना निर्जरा की भिन्नता ९०१
२६३ नेरीये के साता असाता दोनों हैं ९०५

सप्तम् शतक का-चौथा उद्देशा.. ९०७

२६४ संसारी जीवों छ प्रकार के ९०७

सप्तम शतक का-पांचवा उद्देशा ९०८

२६५ खेचरकी तीन प्रकार की योनी ९०८

सप्तम् शतक का छट्ठा उद्देशा ९१०

२६६ यहां आयुष्य बंधे वहां भोगवे ९१०
२६७ यहां अल्पवेदना वहां महावेदना ९११
२६७ अभोगानिवृति अनाभोगानिवृति आय ९१३
२६८ अठारापापसे कर्कश वेदनी कर्म बन्धे ९१४

पु० पुरुषवर पुंडरीक पु० पुरुषवर गंधहस्ती लो०लोकमें उत्तम लो० लोक के नाथ लो० लोक के हितकर्ता लो० लोक में द्वीपसमान लो० लोकमें प० सूर्यसमान अ० अभय देनेवाले च० चक्षुके देनेवाले म० मार्ग देनेवाले जी० जीव देनेवाले रक्षक बो० बोधि देनेवाले ध० धर्मके देनेवाले ध० ध० धर्मके उपदेशक ध० धर्मके नायक ध० धर्मके सारथि ध० धर्ममें व० प्रधान चा० चातुरंत चक्रवर्ती दी० द्वीप ता० त्राण

त्थी, लोगुत्तमे, लोगनाहे, लोगहिए लोगपदीवे, लोग पज्जोयगरे, अभयदए, चक्खुदए, मग्गदए, सरणदए, जीवदए, बोहिदए, धम्मदए, धम्मदेसिए, धम्मनायगे, धम्मसारहिए, धम्मवर चाउरंत चक्कवट्टी, दीवो ताण सरणगइपइट्ठे, अप्पडिहयवरणाण

स्थापनेवाले, अन्यके उपदेश विना स्वतःही हेय ज्ञेय उपादेय पदार्थ स्वरूप को जाननेवाले, रूपादि अतिशय अथवा ज्ञात्यादिकके उत्कृष्ट पुरुषोंमें उत्तम, शौर्यगुणसे पुरुषमें सिंह समान, सब अशुभ पाप रहित होनेसे पुरुषोंमें पुंडरीक कमल समान, पुरुषोंमें गंधहस्ती समान लोक में उत्तम, लोकके नाथ अर्थात् योग सो जिसको पहिले धर्म नहीं प्राप्त हुआहै उसको धर्मकी प्राप्ति कराना और क्षेम सो धर्मकी प्राप्ति होनेपर मनको स्थिर रहनेदेना इस तरह योग व क्षेम दोनों करनेवाले होनेसे लोकके नाथ, षड्विध जीवनिकाय रूप लोक की रक्षा करने से हितकारी, संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवरूप लोकको द्वीपसमान, गणधरादि लोकको उद्योतके करनेवाले, अभयके दाता, श्रुतज्ञानरूप

१ आगम सिद्धिक मोक्षगामी सब भव्य जीव.

च० चलते को च० चला उ० उदीरते को उ० उदीरा वे० वेदते को वे० वेदा प० छोडते को प० छोडा छि० छेदते को छि० छेदा भि० भेदते को भि० भेदा द० जलाते को द० जलाया मि० मरते को म०

भंते ! चलमाणे चालिए ? उदीरिज्जमाणे उदीरिए ? वेदिज्जमाणे वेदिए ? पहेज्जमाणे पहीणे !

उनकर्मों को क्या चलेही कहना ! + २ जो कर्म उदय में नहीं आये हैं, परन्तु आगामिक काल में उदय आवेंगे उनको शुभ अध्यवसाय से आकर्ष कर उदय में लावे उसे उदीरणा कहते हैं. इस तरह प्रथम समय में उदीरणा करते को उदीरेही क्या कहना ! ३ कर्म उदय में आकर प्रथम समय में वेदते होवे उन्हें क्या वेदेही कहना. ! ४ जो कर्म पुद्गल जीव के प्रदेश से अवलम्बन कर रहे थे वे पतन होने लगे उन्हें क्या पतन हुवा कहना ? ५ जो कर्म दीर्घकाल की स्थितिवाले थे उनका छेदन कर अल्प काल की स्थितिवाले बनाये, इस तरह से प्रथम समय में छेदते को छेदा कहना ? ६ जो कर्म तीव्ररस देने वाले थे उनको मंद रस देनेवाले बनाये इस तरह उनकर्मों का प्रथम समयमें भेदतेको भेदे कहना. ! ७ ध्यानरूप ज्वालामें कर्मरूप

---

+ श्री सुधर्मा स्वामी ने सूत्र की आदि में अन्य अनेक प्रश्नों को छोडकर "चलमाणे चालिए" यह प्रश्न क्यों ग्रहण किया ? समाधान-धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष इन चारों को साधने में उद्यमश्रेष्ठ कहा है. चारों में मोक्ष श्रेष्ठ है वह कर्मक्षय से होता है और कर्म क्षय अनुक्रम से होता है इसलिये प्रधान हेतु की सिद्धि के लिये प्रथम ही "चलमाणे चालिए" इसप्रश्नसे निश्चय किया कि जिनके कर्म अपने अनादि स्वभावको सिद्धिमें चलित हुवे उन को चले ही कहना मोक्ष प्राप्ति का प्रथम कार्य में ही यह दर्शाया है.

शब्दार्थ मरा णि॰ निर्जरते को ण॰ निर्जरा हं॰ हां गो॰ गौतम ! ४॰ चलते को च॰ चला जा॰ यावत् णि॰

सूत्र छिज्जमाणे छिण्णे ? भिज्जमाणे भिण्णे ; दज्झमाणे दड्ढे ? मिज्जमाणे मडे ? णिज्जरिज्जमाणे णिज्जि

भावार्थ इन्धन जलाना. शरू किया उस तरह जलाते को जलाया कहना ! ८ जिस के आयुष्य का संचित पुद्गल का क्षय होने लगा मृत्यु सन्मुख हुवा तब उस मरते को मरा कहना ! ९ जीव प्रदेश मे कर्म पुद्गलों की निर्जरा करने लगा उस निर्जरा करने को निर्जरा कहना ? यह नवप्रश्नों श्री महावीर स्वामीसे गौतम स्वामीने पूछे तब भगवन्त महावीर स्वामी उत्तर देते हैं कि हां गौतम ! उनका अर्थ वैसेही है. अर्थात् जैसे किसी कपडे बनानेवाले बनकरने कपडा बनाना शरू किया और प्रथम तंतु बुना उसे वस्त्र बुना कहा जाता है वैसेही उक्त प्रकार के कार्य जिस समय में शरू किये उस ही समय में हुवे, कहे जासकते हैं. यद्यपि इन को पूर्ण होने में असंख्यात समय व्यतीत होते हैं तथापि उन की परिणति में उस की सब आकृति बनगइ है या वह पूर्ण करने का अभिलाषि बना हुवा है. १ वैसे ही जिसने अपने अनादि कर्म को कर्मस्थिति से संचालित किये, भोगवने सन्मुख हुवा उन्हें निश्चय से कर्म भोगवेगा. २ जो उदय नहीं आये हैं उन को उदीरणा से उदय में लाने का जिसने प्रयत्न किया वह उदीरना करेगा. ३ जिनके कर्म उदयमें आकर वेदना देनेलगे वे सबही वेदे जावेंगे ४ जिन के कर्म जीवके प्रदेशसे पतन होनेलगे उस के सब कर्म पडेंगे ५ जिनने कर्म की स्थिति ह्रस्व करने की वह क्षय करेगा ६ जो कर्म पुद्गलों को परावर्तन करने लगा वह परावर्तेगा,

मूल

निजरिज्जमाणे॰निर्जरा॥५॥ए॰येन नवपद किं॰क्या ए॰एक अर्थी णा॰विविध उचारके णा॰विविधव्यंजनके उ॰

ण्णे ? ॥ हंता गोयमा ! चलमाणे चालिए जाव णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे ॥ ५ ॥ एएणं भंते नवपदा किं एगट्ठा, णाणा घोसा, णाणा वंजणा उदाहु णाणट्ठा, णाणा घोसा,

भावार्थ

७ जो शुभ ध्यानरूप अग्नि से कर्म रूप इन्धन जलानेलगा वह कर्म को जलावेगा ८ जिसके आयुष्य का पुद्गल क्षीण होनेलगा वह मरेगा ९ जिसने कर्म की निर्जरा करनी शुरू की वह कर्म की निर्जरा करेगा. इस रीति से इन नव कार्यों को प्रारंभ करते ही बनाहुवा कहना ॥ ५ ॥ पुनः गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! इन नव पद का क्या एक अर्थ या एक प्रयोजन है ? या उदात्त, अनुदात्त व स्वरित घोषवाले हैं ? अनेक व्यंजनमय हैं ? अथवा विविध प्रकार के अर्थवाले, घोषवाले, या व्यंजनवाले हैं + अहो गौतम ! १ चलमाणे चलिए २ उदीरिज्जमाणे उदीरिए, ३ वेइज्जमाणे वेइए ४ पहिज्जमाणे पहीणं

+ यहां चौभंगी जानना. १ एक अर्थ एक व्यंजन जैसे क्षीर क्षीर २ एक अर्थ अनेक व्यंजन यथा क्षीर पयः ३ अनेक अर्थ एक व्यंजन अर्क गोमहिषी का क्षीर ४ अनेक अर्थ अनेक व्यंजन घट पटादि. इस में दूसरा चौथा भांगा यहां ग्रहण किया है, अन्य दोनों भांगे अप्रभावित होनेसे नहीं ग्रहण किये हैं इस सूत्र में चलमाणेआदि चार पद आश्रित दूसरा भांगा जानना और छिज्जमाणे वगैरह पांचपद आश्रित चौथा भांगा जानना.

सूत्र

निर्जरेंके णि० निर्जराको ॥ ४ ॥ ए० येन नवपद किं० क्या ए० एक अर्थी णा० विविध उच्चारके णा० विविध व्यंजनके उ०

णो ? ॥ हंता गोयमा ! चलमाणे चलिए जाव णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे ॥ ५ ॥ एएणं भंते नवपदा किं एगट्ठा, णाणा घोसा, णाणा वंजणा उदाहु णाणट्ठा, णाणा घोसा,

भावार्थ

७ जो शुभ ध्यानरूप अग्नि में कर्म रूप इन्धन जलानेलगा वह कर्म को जलावेगा ८ जिसके आयुष्य का पुद्गल क्षीण होनेलगा वह मरेगा ९ जिसने कर्म की निर्जरा करनी शुरू की वह कर्म की निर्जरा करेगा. इस रीति से इन नव कार्यों को प्रारंभ करते ही बनाहुवा कहना ॥ ५ ॥ पुनः गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं. कि अहो भगवन् ! इन नव पद का क्या एक अर्थ या एक प्रयोजन है ? या उदात्त, अनुदात्त व स्वरित घोषवाले हैं ! अनेक व्यंजनमय है ? अथवा विविध प्रकार के अर्थवाले, घोषवाले, या व्यंजनवाले हैं ÷ अहो गौतम ! १ चलमाणे चलिए २ उदीरिज्जमाणे उदीरिए, ३ वेइज्जमाणे वेइए ४ पहिज्जमाणे पहीणं

÷ यहां चौभंगी जानना. १ एक अर्थ एक व्यंजन जैसे क्षीर क्षीर २ एक अर्थ अनेक व्यंजन यथा क्षीरं पयः ३ अनेक अर्थ एक व्यंजन अर्क गोमहिषी का क्षीर ४ अनेक अर्थ अनेक व्यंजन घट पटादि. इस में दूसरा चौथा भांगा यहां ग्रहण किया है, अन्य दोनों भांगे असंभवित होनेसे नहीं ग्रहण किये हैं इस सूत्र में चलमाणेआदि चार पद आश्रित दूसरा भांगा जानना और छिज्जमाणे वगैरह पांचपद आश्रित चौथा भांगा जानना.

शब्दार्थ णा० विविधव्यंजन के वि० विगतपक्ष को॥ ६ ॥ णे० नारकी को भं० भगवन् के० कितने कालकी ठि० स्थिति प० प्ररूपी गो० गौतम ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् के० कीतना का० काल में आ० थोडाश्वासले पा० बहुत

सूत्र पक्खस्स छिज्जमाणे छिण्णे भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे, एएणं पंचपदा-णाणट्ठा, णाणाघोसा, णाणा वंजणा, विगय पक्खस्स ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वास सहस्साइं ठिई पण्णत्ता, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ७ ॥

णेरइयाणं भंते केवइयं कालस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, णीससंतिवा ?

भावार्थ एक कहे हैं. ये पांचों पद विगत पक्ष की अपेक्षा से विविध प्रकार के अर्थ, घोष, व व्यंजनवाले हैं. ये पांचों पद विगत पक्ष वाचक हैं. इसका अन्तिम नववा पद में मोक्षकी कथा कही और वह मोक्ष जीवको होता है. ॥६॥ नरकादिक चौविस दंडक के जीव कहे जाते हैं. उन में से प्रथम नरककी स्थितिका प्रश्न चलता है अहो भगवन् ! नरक के नेरइयों की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! नारकी की प्रथम नरक की अपेक्षासे जघन्य दश हजार वर्ष की और सातवी नरक की अपेक्षासे उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की कही. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् नारकी कितनेकाल तक श्वासोश्वास लेवे ? अहो गौतम जैसे श्वासोश्वासपद में नारकी

सूत्र

निर्जरेत को णि० निर्जरा०॥ ए० ऐन ० नेश्पद किं० क्या ए० एक अर्थी णा० विविध उच्चारके णा० विविधव्यंजनके उ०

णो ? ॥ हंता गोयमा ! चलमाणे चालिए जाव णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे ॥ ५ ॥ एएणं भंते नवपदा किं एगट्ठा, णाणा घोसा, णाणा वंजणा उदाहु णाणट्ठा, णाणा घोसा,

भावार्थ

७ जो शुभ ध्यानरूप अग्नि में कर्म रूप इन्धन जलानेलगा वह कर्म को जलावेगा ८ जिसके आयुष्य का पुद्गल क्षीण होनेलगा वह मरेगा ९ जिसने कर्म की निर्जरा करनी शरू की वह कर्म की निर्जरा करेगा. इस रीति से इन नव कार्यों को प्रारंभ करते ही बनाहुवा कहना ॥ ५ ॥ पुनः गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! इन नव पद का क्या एक अर्थ या एक प्रयोजन है ? या उदात्त, अनुदात्त व स्वरित घोषवाले हैं ! अनेक व्यंजनमय हैं ? अथवा विविध प्रकार के अर्थवाले, घोषवाले, या व्यंजनवाले हैं ÷ अहो गौतम ! १ चलमाणे चलिए २ उदीरिज्जमाणे उदीरिए, ३ वेइज्जमाणे वेइए ४ पहिज्जमाणे पहीणे

÷ यहां चौभंगी जानना. १ एक अर्थ एक व्यंजन जैसे क्षीर क्षीर २ एक अर्थ अनेक व्यंजन यथा क्षीर पयः ३ अनेक अर्थ एक व्यंजन अर्क गोमहिषी का क्षीर ४ अनेक अर्थ अनेक व्यंजन घट पटादि. इस में दूसरा चौथा भांगा यहां ग्रहण किया है, अन्य दोनों भांगे असंभवित होनेसे नहीं ग्रहण किये हैं इस सूत्र में चलमाणेआदि चार पद आश्रित दूसरा भांगा जानना और छिज्जमाणे वगैरह पांचपद आश्रित चौथा भांगा जानना.

शब्दार्थ

प०परिणमे णो०नहीं प०परिणमेंगे॥१०॥णे०नारकीने भं०भगवन् पु०पूर्वाहारी पो०पुद्गल चि०इकठेकिये ज० जैसे प० परिणमे त० तैसे चि० इकठेकिये उ० उपचिने उ० उदीरे वे० वेदे णि० निर्जरे ए० एकेक प० पदमें च०चार प्रकारके पो०पुद्गल हैं॥११॥णे०नारकी क०कितने प्रकारसे पो०पुद्गल भि०भेदातेहैं गो०गौतम क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री दु० दोप्रकार के पो० पुद्गल भि० भेदावे अ० सूक्ष्म बा० बादर णे० नारकी क० कितने प्रकार के पो० पुद्गल चि० चिणे गो० गौतम ! आ० आहार द० द्रव्य व० वर्गणा

सूत्र

परिणया तहा चियावि एवंचिया उवचिया, उदीरिया, वेइया, णिज्जिण॥॥गाथा॥परिणत चियाय उवचिया उदीरिया वेइयाय णिज्जिण्णा, एक्किक्कम्मि पदम्मि चउव्विहा पोग्गलाहोंति ॥ १ ॥ ११ ॥ णेरइयाणं भंते कतिविहा पोग्गला भिज्जति ? गोयमा ! कम्मदव्व वग्गणमाहिगिच दुविहा पोग्गला भिज्जंति तंजहा अणूचेव, बायराचेव णेरइयाणं भंते

भावार्थ

नहीं॥१०॥अहो भगवन् नारकीको पहिले आहारे हुवे पुद्गल एकत्रित किये? अहो गौतम इसका सब खुलासा जैसे परिणमे का कहा वैसे ही जानना. और इसी तरह बहुत एकत्रित किये, उदीरे, वेदे और निर्जरे ऐसे एक २ पद में चार २ भेद जानना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् नारकी को कितने पुद्गल अनुभाग भेद से भेदावे ? अर्थात तीव्रमंद, मध्यभेद से भेदपावे, उद्वर्तन-करण से मन्दरस तीव्रहोवे तीव्ररस मंद होवे ? अहो गौतम कर्म द्रव्यवर्गणाके आश्रित दो प्रकारके पुद्गल भेदपावे सूक्ष्म व बादर. उदारिकादि द्रव्यमें कर्म द्रव्यही सूक्ष्म है. अहो भगवन् ! नारकी को कितने प्रकार के पुद्गल चिणे, एकत्रित हुवे ? अहो गौतम आहार द्रव्य वर्गणा के आश्रित सूक्ष्म व बादर ऐसे दो प्रकार के पुद्गल एकत्रित होते हैं क्यों की आहार द्रव्य

शब्दार्थ णा० विविधव्यंजन के वि० विगतपक्ष को॥ ६ ॥ णे० नारकी को भं० भगवन् के० कितने कालकी ठि० स्थिति प० प्ररूपी गो० गौतम ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् के० कितना का० काल में आ० थोडाश्वासले पा० बहुत

सूत्र पक्खस्स छिज्जमाणे छिण्णे भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे, एएणं पंचपदा-णाणट्ठा, णाणाघोसा, णाणा वंजणा, विगय पक्खस्स ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वास सहस्साइं ठिई पण्णत्ता, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ७ ॥ णेरइयाणं भंते केवइयं कालस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, णीससंतिवा ?

भावार्थ एक कहे हैं. ये पांचों पद विगत पक्ष की अपेक्षा से विविध प्रकार के अर्थ, घोष, व व्यंजनवाले हैं. ये पांचों पद विगत पक्ष वाचक हैं. इसका अन्तिम नववा पदमें मोक्षकी कथा कही और वह मोक्ष जीवको होता है. ॥६॥ नरकादिक चौविस दंडक के जीव कहे जाते हैं. उन में से प्रथम नरककी स्थितिका प्रश्न चलता है अहो भगवन् ! नरक के नेरइयों की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! नारकी की प्रथम नरक की अपेक्षासे जघन्य दश हजार वर्ष की और सातवी नरक की अपेक्षासे उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की कही. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् नारकी कितने काल तक श्वासोश्वास लेवे ? अहो गौतम जैसे श्वासोश्वासपद में नारकी

... द्रव्य व० वर्गणा आ० आश्री भे० भेद चि० चिन उ० उपाचन उ० उदीर वे० वेद णि० निर्जरा उ० अपवर्तन सं० संक्रमन नि० निधत्त णि० निकाच ति०तीन प्रकार का का० काल ॥ १२ ॥ न० नारकी जे जो० पो० पुद्गल ते० तेजस् क० कार्माणपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे किं०

सूत्र

निहत्तिंसु । निहत्तंति । निहत्तिस्संति निकाइंसु । निकायंति । निकाइस्संति ॥ सव्वेसुवि कम्म दव्ववग्गण महिकिच्च ॥ गाथा ॥ भेदिय चिता उवचिता, उदीरिता वेदियाय णिज्जिण्णा । उवट्टण संकामण णिहत्तणिकायणे तिविह कालो ॥ १ ॥ १२॥ णेरइयाणं भंते जे पोग्गला तेया कम्मत्ताए गिण्हंति, ते किं तीतकाल समए गिण्हंति?

भावार्थ

मूल व उत्तर प्रकृतियों का अध्यवसाय से परस्पर संचार होना उसे संक्रामन कहते हैं. अतीत काल में संक्रमण ११ हुवा, वर्तमान काल में संक्रमण होता है और १२ आगामिक में संक्रमण होवेगा, भिन्न २ बिखरे हुवे पुद्गलों को निधत्त करना. १३ ऐसे अतीत काल में एकत्रित किये, १४ वर्तमान में कर रहे हैं १५ आगामिक में एकत्रित करेंगे. १६ अतीत काल में निकाचे, १७ वर्तमान में निकाचते हैं और १८ आगामिक में निकाचेंगे उक्तसव १८ भेद कर्म द्रव्य वर्गणा आश्रित जानना. ॥ १२ ॥ अहोभगवन् ! नारकी जो पुद्गल तेजस व कार्माण शरीरपने ग्रहण करते हैं वे क्या अतीतकाल में ग्रहण करते हैं. वर्तमान

शब्दार्थ अथवा णा० विविध अर्थी वि० विविध उच्चारके णा० विविध व्यंजनके गो० गौतम ए० ये च० चार पद ए० एकअर्थी णा० विविध उच्चार णा० विविध व्यंजन उ० उत्पन्न पक्षके ए० ये पं० पांच पद णा० विविध अर्थी णा० विविध उच्चारके

सूत्र णाणा वंजणा? गोयमा! चलमाणे चालिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेइज्जमाणे वेइए, पहिज्ज-माणे पहीणे, एएणं चत्तारि पया एगट्ठा णाणा घोसा, णाणावंजणा उप्पण्ण

भावार्थ ये चार पद उत्पन्न पक्ष आश्रित एक अर्थवाले, अनेक घोष, व अनेक व्यंजनवाले हैं यहांपर दो पक्ष ग्रहण किये हैं एक उत्पाद पक्ष और दूसरा विगत पक्ष. उस में उक्त चारों पद केवल ज्ञान को उत्पाद और मोक्ष को विगत पद. उस में यह चारों पद केवल उत्पाद विषयक होने से एक अर्थ वाले कहे हैं जैसे केवल ज्ञान पर्याय जीव को पहिले नहीं प्राप्त हुइ थी और जीव का प्रयास केवल ज्ञान निमित्त है इसलिये यह ही केवल ज्ञान उत्पत्ति पर्याय कहा. जो कर्म चलायमान होवेंगे वे उदय में आवेंगे और जो उदय में आवेंगे वे वेदे जावेंगे और वेदे पीछे क्षीण होवेंगे, इस लिये उत्पाद पक्ष में ये चारों पद एकार्थ वाची जानना. अथवा स्थिति बंधादि पाविशेषित सामान्य आश्रय से एकार्थ है. केवल उत्पादक पक्ष के साधक है, क्यों कि उत्पन्न पक्ष में कर्म स्थिति का प्रक्षीणपना होता है. छिन्न पद में स्थिति का विगम कहा, भिन्न पद में रसका विगम कहा. दग्ध पद में दाहरूप विगम कहा, मृत पद में आयुष्य कर्म के अभावका विगम कहा, णिज्जरिज्ज पद में सब कर्म का विगम कहा इस लिये इन को विगत पक्ष में

शब्दार्थ काल की ठि० स्थिति गो० गौतम ज० जघन्य द० दश वर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट सा० अधिक सा० सागरोपम ॥ १५ ॥ असुर कुमार के० कितनाकाल में आ० थोडा श्वासले पा० बहुत श्वास से ऊ० ऊंचा श्वासले नी० नीचाश्वासले गो० गौतम ज० जघन्य स० सात थो० स्तोक उ० उत्कृष्ट सा० अधिक प० पक्ष

सूत्र ठिई प० गोयमा जहण्णेणं दस वास सहस्साइं ठिई प० उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं ॥ १५ ॥ असुरकुमाराणं भंते केवइयं कालं आणमंतिवा, पाणमंति वा ऊससंतिवा, नीससंतिवा ॥ पुच्छा ॥ गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं साइरेगस्स पक्खस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा, ॥ १६ ॥ असुर-

भावार्थ चलित कर्म की निर्जरा करे अचलित कर्म की निर्जरा करे नहीं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! असुरकुमार की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक सागरोपम से कुच्छ अधिक कही [ उत्तर दिशाके बलेन्द्र आश्रित जानना ] ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमारके देव कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार के देव जघन्य सात स्तोक में उत्कृष्ट एक पक्ष से कुच्छ अधिक में श्वासोश्वास लेवे ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! वे आहार के अर्थी हैं. अहो भगवन् ! कितने समय में उन को आ-

१ असुरनिकायमें उत्पन्न होनेसे व कुमारकी तरह क्रीडा करनेसे असुरकुमार कहाये गये हैं.

शब्दार्थ

प०परिणमे णो०नहीं प०परिणमेंगे॥१०॥णे०नारकीने भं०भगवन् पु०पूर्वाहारी पो०पुद्गल चि०इकठेकिये ज० जैसे प० परिणमे त० तैसे चि० इकठेकिये उ० उपाचिने उ० उदीरे वे० वेदे णि० निर्जरे ए० एकेक प० पदमें च०चार प्रकारके पो०पुद्गल हैं॥११॥णे०नारकी क०कितने प्रकारसे पो०पुद्गल भि०भेदातेहैं गो०गौतम क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री दु० दोप्रकार के पो० पुद्गल भि० भेदावे अ० सूक्ष्म वा० बादर णे० नारकी क० कितने प्रकार के पो० पुद्गल चि० चिणे गो० गौतम! आ० आहार द० द्रव्य व० वर्गणा

सूत्र

परिणया तहा चियावि एवंचिया उवचिया, उदीरिया, वेइया, णिज्जिणा॥गाथा॥परिणत चियाय उवचिया उदीरिया वेइयाय णिज्जिण्णा, एक्किक्कम्मि पदम्मि चउव्विहा पोग्गलाहोंति ॥ १ ॥ ११ ॥ णेरइयाणं भंते कतिविहा पोग्गला भिज्जाति? गोयमा! कम्मदव्व वग्गणमहिगिच्च दुविहा पोग्गला भिज्जंति तंजहा अणूचेव, बायराचेव णेरइयाणं भंते

भावार्थ

नहीं॥१०॥अहो भगवन् नारकीको पहिले आहारे हुवे पुद्गल एकत्रित किये? अहो गौतम इसका सब खुलाला जैसे परिणमे का कहा वैसे ही जानना. और इसी तरह बहुत एकत्रित किये, उदीरे, वेदे और निर्जरे ऐसे एक २ पद में चार २ भेद जानना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् नारकी को कितने पुद्गल अनुभाग भेद से भेदावे? अर्थात तीव्रभेद, मध्यभेद से भेदपावे, उद्वर्तन-करण से मन्दरस तीनहोवे तीव्ररस मंद होवे? अहो गौतम कर्म द्रव्यवर्गणाके आश्रित दो प्रकारके पुद्गल भेदपावे सूक्ष्म व बादर. उदारिकादि द्रव्यमें कर्म द्रव्यही सूक्ष्म है. अहो भगवन्! नारकी को कितने प्रकार के पुद्गल चिणे, एकत्रित हुवे? अहो गौतम आहार द्रव्य वर्गणा के आश्रित सूक्ष्म व बादर ऐसे दो प्रकार के पुद्गल एकत्रित होते हैं क्यों की आहार द्रव्य

शब्दार्थ उ० उत्कृष्ट सा० सातिरेक वा० सहस्र वर्ष में आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे ॥ १७ अ० असुर कुमार किं० क्या आ० आहार आ० ग्रहण करते हैं गो० गौतम द० द्रव्य से अ० अनंत प० प्रदेश द० द्रव्य खे० क्षेत्र का० काल भा० भाव से प० पन्नवणा में से० शेष ज० जैसे णे० नारकी को जा० यावत् ते० उनको पो० पुद्गल की० कीसतरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम सो० श्रोतेन्द्रियपने सु० सुरूपपने मु० अच्छावर्णपने इ० इष्टपने इ० इच्छापने अ० अच्छी वांच्छापने उ० प्रधानपने णो० नहीं अ०

सूत्र साइरेगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ. ॥ १७ ॥ असुरकुमाराणं भंते किं आहार माहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसियाइं दव्वाइं खेत्त काल भाव पण्णवणागमेणं सेसं जहा णेरइयाणं जाव तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ता भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! सोइंदियत्ताए, सुरूवत्ताए, सुवण्णत्ताए, इट्ठत्ताए, इच्छियत्ताए,

भावार्थ वर्ष से कुच्छ अधिक समय में उत्पन्न होवे ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के देवता क्या आहार करे ? अहो गौतम ! द्रव्य से अनंत प्रदेशी द्रव्य का आहार करे, क्षेत्र से, काल से, भाव से आहार करने की विधि जैसी पन्नवणा सूत्र में कही है वैसी यहां जानना और शेष सब अधिकार नारकी का कहा वैसे ही यहां कहना. और उनको पुद्गल कीस तरह परिणमते हैं ? उन को पुद्गल श्रोतेन्द्रियपने, सुरूप, सर्वोत्कृष्ट वर्ण, इष्टपने, ईप्सितपने-षड्ऋतु में सुखदायीपना से, वारंवार ऐसाही बना रहे ऐसी

शब्दार्थ णा० विविधव्यंजन के वि० विगतपक्ष को॥ ६ ॥ णे० नारकी को भं० भगवन् के० कितने कालकी ठि० स्थिति प० प्ररूपी गो० गौतम ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् के० कीतना का० काल में आ० थोडाश्वासले पा० बहुत

सूत्र पक्खस्स छिज्जमाणे छिण्णे भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए णिज्जीरिज्जमाणे णिज्जिण्णे, एएणं पंचपदा-णाणट्ठा, णाणाघोसा, णाणा वंजणा, विगय पंक्खस्स ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वास सहस्साइं ठिई पण्णत्ता, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ७ ॥ णेरइयाणं भंते केवइयं कालस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, णीससंतिवा ?

भावार्थ एक कहे हैं. ये पांचों पद विगत पक्ष की अपेक्षा से विविध प्रकार के अर्थ, घोष, व व्यंजनवाले हैं. ये पांचों पद विगत पक्ष वाचक हैं. इसका अन्तिम नववा पदमें मोक्षकी कथा कही और वह मोक्ष जीवको होता है. ॥६॥ नरकादिक चौविस दंडक के जीव कहे जाते हैं. उन में से प्रथम नरककी स्थितिका प्रश्न चलता है अहो भगवन् ! नरक के नेरइयों की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! नारकी की प्रथम नरक की अपेक्षासे जघन्य दश हजार वर्ष की और सातवी नरक की अपेक्षासे उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की कही. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् नारकी कितनेकाल तक श्वासोश्वास लेवे ? अहो गौतम जैसे श्वासोश्वासपद में नारकी

* प्रकाशक-राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी *

शब्दार्थ दो० दोपल्योपम की ॥ २० ॥ ना० नागकुमार भं० भगवन् के० कितना काल में आ० थोडाश्वास ले पा० बहुत श्वास ले ऊ० ऊंचा श्वास ले नीचा श्वास ले गो० गौतम ज० जघन्य स० सात थोव उ० उत्कृष्ट मु० मुहूर्त पृथक् ॥ २१ ॥ ना० नागकुमार भं० भगवन् आ० आहारके अर्थी हं० हां आ० आहार के अर्थी णा० नागकुमार को भं० भगवन् के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे गो० गौतम ना० नागकुमार दु० दोप्रकार का आहार आ० आहारे आ० आभोग निवर्तित अ० अनाभोग

मूल रस आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, णीससंतिवा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा. ॥ २१ ॥ नागकुमाराणं भंते आहारट्ठी ? हंता आहारट्ठी । णागकुमाराणं भंते केवइय कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! णागकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा

भावार्थ नागकुमार के देवता कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! नाग कुमार देवता जघन्य सात स्तोक उत्कृष्ट मुहूर्त मे पृथक्[*] श्वासोश्वास लेते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! नागकुमार जाति के देवता क्या आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! नागकुमार जाति के देवता आहार के अर्थी हैं. अहो भगवन् ! इन को कितने काल में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! आहार दो प्रकार का है.

* दो मुहूर्त से नव मुहूर्त तक. इसको संख्यक मुहूर्त भी कहते हैं.

शब्दार्थ होंगे स० सर्व में क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री भे० भेद चि० चिन उ० उपचिन उ० उदीर वे० वेद णि० निर्जरा उ० अपवर्तन सं० संक्रमन नि० निधत्त णि० निकाच ति० तीन प्रकार का का० काल ॥ १२ ॥ ने० नारकी जे जो० पो० पुद्गल ते० तेजस् क० कार्माणपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे किं०

सूत्र निहत्तिंसु । निहत्तंति । निहत्तिस्संति निकाइंसु । निकायंति । निकाइस्संति ॥ सव्वे-सुवि कम्म दव्ववग्गण महिकिच्च ॥ गाथा ॥ भेदिय चिता उवचिता, उदीरिता वे-दियाय णिज्जिण्णा । उवट्टण संकामण णिहत्तणिकायणे तिविह कालो ॥ १ ॥ १२॥ णेरइयाणं भंते जे पोग्गला तेया कम्मत्ताए गिण्हंति, ते किं तीतकाल समए गिण्हंति?

भावार्थ मूल व उत्तर प्रकृतियों का अध्यवसाय से परस्पर संचार होना उसे संक्रामन कहते हैं. अतीत काल में संक्रमण ११ हुआ, वर्तमान काल में संक्रमण होता है और १२ आगामिक में संक्रमण होवेगा, भिन्न २ बिखरे हुवे पुद्गलों को निधत्त करना. १३ ऐसे अतीत काल में एकत्रित किये, १४ वर्तमान में कर रहे हैं १५ आगामिक में एकत्रित करेंगे. १६ अतीत काल में निकाचे, १७ वर्तमान में निकाचते हैं और १८ आगामिक में निकाचेंगे उक्तसब १८ भेद कर्म द्रव्य वर्गणा आश्रित जानना. ॥ १२ ॥ अहोभगवन् ! नारकी जो पुद्गल तेजस व कार्माण शरीरपने ग्रहण करते हैं वे क्या अतीतकाल में ग्रहण करते हैं. वर्तमान

काया भं० भगवन के० कितना काल आ० थोडा श्वास ले पा० बहुत श्वास ले ऊ० ऊंचा श्वासले नी० नीचा श्वास ले गो० गौतम वे० वेमात्रा ॥ २५ ॥ पु० पृथ्वी काया आ० आहारार्थी हं० हां गो० गौतम आ० आहार के अर्थी पु० पृथ्वी काया को के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स०

सूत्र

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ॥ २४ ॥ पुढविकाइयाणं भंते केवइयकालस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा ? गोयमा! वेमायाए आणमंतिवा पाणमंतिवा, ऊससंतिवा नीससंतिवा ॥ २५ ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! आहारट्ठी ? हंता गोयमा ! आहारट्ठी । पुढविकाइयाणं भंते केवइय कालस्स

भावार्थ

जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन ! पृथ्वी काया की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट २२ हजार वर्ष की ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी कायाके जीव वे मात्रा से श्वासोश्वास लेवे अर्थात् उन को श्वासोश्वास लेने की मर्यादा नहीं है ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी कायिक जीवों क्या आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! वे आहार के अर्थी हैं. अहो भगवन् ! उन को आहार की इच्छा कितने काल में उत्पन्न होती है ? अहो गौतम ! उन को प्रति समय विरह रहित आहार की इच्छा उत्पन्न होती है. अहो भगवन् ! पृथ्वी

शब्दार्थ

भाविन्न ऊ० ऊंचाश्वासले णी० नीचाश्वासले ज० जैसे उ० ऊश्वासपद में ॥ ८ ॥ णे० नारकी भं० भगवन आ० आहारके अर्थी ज० जैसे प०पन्नवणा में प० प्रथम शतक में आ० आहार उद्देशे में त० तैसे भा० कहना ठि० स्थिति उ० ऊश्वास आ० आहार कि० किसतरह आ० आहारले स० सबमें क० कितना भाग स० सर्व जी० किसप्रकार से भु० वारंवार प० परिणमें ॥ ९ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् पु० पूर्व आ०

सूत्र

जहा ऊस्सासपदं ॥ ८ ॥ णेरइयाणं भंते आहारट्ठी, ? जहा पन्नवणाए पढमसए आहारुद्देसए तहा भाणियव्वं ॥ गाथा ॥ ठिति उस्सासाहारे, किंवाहारेइ सव्वओवावि; कइभागं सव्वाणिय कीसव भुज्जो परिणमंति ॥ १ ॥ ९ ॥ णेरइयाणं भंते पुव्वा-

भावार्थ

के जीव निरंतर समय मात्रका विरह रहित-श्वासोश्वास लेते हैं ऐसा कहा है वैसेही यहां जानना. ॥ ८ ॥ अहो भगवन नारकी आहार के अर्थी-वांछक हैं ? हां का पन्नवणा सूत्र में प्रथम शतक के आहार उद्देशे में जैसे कहा है वैसे कहना नारकी कैसे आहारलेवे ? आत्मा के सब प्रदेश से आहार लेवे. नारकी कितना आहार लेवे ? आहार निमित्त जितने पुद्गल ग्रहन किये होवे उस के असंख्यातवे भाग का आहार लेवे, अनंत भाग में आस्वादे, अथवा आहार परिणाम योग्य सब पुद्गल का आहार करे. जिन पुद्गलों का आहार किया है वे पुद्गलों किस प्रकार से वारंवार परिणमते हैं ? वे आहार के पुद्गलों इन्द्रियपने यावत् दुःखपने परिणमते हैं वगैरह सब अधिकार विस्तार पूर्वक पन्नवणा सूत्र में जानना ॥ ९ ॥ अब नारकी

मे क० कर्कश आदि भे० शेप त० तैसे णा० जानना क० कीतना भाग आ० आहार करते हैं क० कीतना भाग फा० स्पर्शते हैं गो० गौतम अ० असंख्यात में भाग आ० आहार करते हैं अ० अनंत में भाग फा० स्पर्शते हैं जा० यावत् ते० उनको पो० पुद्गल की० कीस तरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमते हैं शेप ज० जैसे णे० नारकी जा०

सूत्र

५, फासओ कक्खडाइं ८, ॥ सेसं तहेव णाणत्तं कइभागं आहारेंति, कइभागं फासेंति ? गोयमा ! असंखेज्जइ भागं आहारेंति अणंतभाग फासेंति । जाव तेणं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो

भावार्थ

दिशा का आहार करे. वर्ण से काला, नीला, रक्त, पीला व शुक्ल पुद्गलोंका आहार करें, गंध से सुरभिगंध व दुरभिगंध का आहार करें, रस से तिक्तादि पांचों रस का आहार करें और स्पर्श से कर्कशादि आठों स्पर्श का आहार करें. शेप जैसे नारकी का कहा वैसे ही कहना. परंतु इतना विशेप जानना कि कितना भाग का आहार करे व कितना भाग आस्वादे ? अहो गौतम ! असंख्यात भाग का आहार करे, व अनंत में भाग में आस्वादे. वे पुद्गल कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे पुद्गलों स्पर्शेन्द्रियपने परिणमे अथवा विषम मात्रा या विविध मात्रा से वारंवार परिणमे यावत् चलित कर्म निर्जरे वहां तक का शेप

शब्दार्थ काल की ठि० स्थिति गो० गौतम ज० जघन्य द० दश वर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट सा० अधिक सा० सागरोपम ॥ १५ ॥ असुर कुमार के० कितनाकाल में आ० थोडा श्वासले पा० बहुत श्वास से ऊ० ऊंचा श्वासले नी० नीचाश्वासले गो० गौतम ज० जघन्य स० सात थो० स्तोक उ० उत्कृष्ट सा० अधिक प० पक्ष

सूत्र ठिई प० गोयमा जहण्णेणं दस वास सहस्साइं ठिई प० उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं ॥ १५ ॥ असुरकुमाराणं भंते केवइयं कालं आणमंतिवा, पाणमंति वा ऊससंतिवा, नीससंतिवा ॥ पुच्छा ॥ गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं साइरेगस्स पक्खस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा, ॥ १६ ॥ असुर-

भावार्थ चलित कर्म की निर्जरा करे अचलित कर्म की निर्जरा करे नहीं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! असुरकुमार की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक सागरोपम से कुच्छ अधिक कही [ उत्तर दिशाके बलेन्द्र आश्रित जानना ] ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमारके देव कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार के देव जघन्य सात स्तोक में उत्कृष्ट एक पक्ष से कुच्छ अधिक में श्वासोश्वास लेवे ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! वे आहार के अर्थी हैं. अहो भगवन् ! कितने समय में उन को आ-

१ असुरनिकायमें उत्पन्न होनेसे व कुमारकी तरह क्रीडा करनेसे असुरकुमार कहाये गये हैं:

शब्दार्थ असंख्यात समय अ० अन्तमुहूर्त व० वमात्रा आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे सं० शेष त० तैसे जा० यावत् अ० अनंत भाग आ० आस्वादे ॥ २९ ॥ बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् जे० जो पो० पुद्गल आ० आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे किं० क्या स० सर्व आ० आहार करते हैं णो० नहीं स० सर्व आ० आहार करते हैं गो० गौतम बे० बेइन्द्रिय को दु० दोप्रकार का आ० आहार प० कहा तं० वह

सूत्र अणाभोगणिव्वत्तिए तहेव ॥ तत्थणं जेसे आभोगणिव्वत्तिए सेणं असंखेज्ज समइए, अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पज्जइ. सेसं तहेव जाव अणंतभागं आसायंति ॥ २९ ॥ बेइंदियाणं भंते जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति, णो सव्वे आहारेंति ? गोयमा ! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा लोमाहारेय पक्खेवाहारेय । जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गिण्हंति ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति, जे

भावार्थ निर्वर्तित आहार असंख्यात समयिक अंतर्मुहूर्त में मर्यादा रहित आहार करे. अन्य यावत् अनंत भाग का आस्वादन करे वहांतक का सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय जितने पुद्गलों को आहार के लिये ग्रहण करते हैं उन सब का क्या वे आहार करते हैं या सब का आहार नहीं करते हैं ? अहो गौतम ! द्वीइन्द्रिय के आहार के दो भेद कहे हैं. १. रोम आहार सो ओघ से वर्षादि समय में जो पुद्गलों प्रवेश करे और २. प्रक्षेप आहार सो कवल रूप. इस में जो पुद्गल रोम आहारपने

शब्दार्थ

ज० जैसे लो० रोम आहार प० कवल आहार जे० जो पो० पुद्गल लो० रोम आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे स० सर्व अ० निरविशेष भा० आहारकरे जे० जो पो० पुद्गल प० कवल आहारपने गि० ग्रहण करतेहैं पो० पुद्गल को अ० असंख्यात भाग को अ० आहारकरे अ० अनेक भाग स० सहस्र अ० नहीं भोगवे अ० नहीं स्पर्शे वि० विध्वंसपाते हैं ए० इन पो० पुद्गल को अ० नहीं भोगवा न० नहीं स्पर्शा क० कौन से अ० थोडे ब० बहुत तु० सरिखे वि० विशेषाधिक गो० गौतम स०सर्व से थोडा पो०पुद्गल अ० नहीं

सूत्र

पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति तेसिणं पोग्गलाणं असंखेज्जइ भागं आहारेंति. अणेगाइंचणं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमागच्छइ॥ एएसिणं भंते पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाणं य, कयरे २ हिंतो अप्पावा, बहुयावा, तुल्लावा, विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला

भावार्थ

ग्रहण करते हैं उन सब पुद्गलों का आहार करते हैं. और जो पुद्गल प्रक्षेप आहारपने ग्रहण किये जाते हैं, उन का असंख्यात वे भागमें आहार करते हैं, और अनेक सहस्र भाग नहीं आस्वादते व नहीं स्पर्शते उन का विध्वंस होता है. अहो भगवन् ! नहीं आस्वादन किये हुवे व नहीं स्पर्शे हुवे पुद्गलों में से कौनसा अल्प व बहुत है ? अथवा तुल्य है या विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से

पोग्गला अ० कही स्पर्श अ० अनंतगुना ॥ ३० ॥ बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् पो० पुद्गल आ० आहारपने
गि० ग्रहण करते हैं ते० वे पो० पुद्गल की० कौनसे भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम
जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमते हैं बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन्
पु० पूर्वाहारी पो० पुद्गल प० परिणमा त० तैसे जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३१ ॥
ते० तेइन्द्रिय च० चतुरिन्द्रिय णा० विविध प्रकार की ठि० स्थिति जा० यावत् अ० अनेक भा० भाग सहस्र अ०

भागाणाइज्जमाणा, असायाइज्जमाणा अणंतगुणा ॥ ३० ॥ बेइंदियाणं भंते पोग्गला
आहारत्ताए गिण्हंति तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा !
जिब्भिंदिय फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ बेइंदियाणं भंते पुव्वाहारिया
पोग्गला परिणया तहेव जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ ३१ ॥ तेइंदिय चउरिंदि-

ये है आस्वाद नहीं कराये हुवे पुद्गल उन से असख्यातगुने पुद्गल अनंत गुने कहे हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् !
जो पुद्गल बेइन्द्रिय आहारपने ग्रहण करते हैं वे कैसे परिणमते हैं ! अहो गौतम ! वे आहार के पुद्गल
बेइन्द्रिय को जिव्हेन्द्रियपने स्पर्शेन्द्रियपने व बारबार परिणमते हैं. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को पहिले के आहारे
हुवे पुद्गल परिणमते हैं यावत् चलित कर्म की निर्जरा करते हैं वगैरह सब अधिकार पहिले जैसे कहना
॥ ३१ ॥ तेइन्द्रिय की स्थिति ४९ दिन की व चतुरिन्द्रिय की स्थिति ६ मास की जघन्य सब अ-

भावार्थ

पोग्गला प० कहीं स्पर्श अ० अनंतगुणा ॥ ३० ॥ बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् पो० पुद्गल आ० आहारपने गि० ग्रहण करते हैं तें० वे पो० पुद्गल की० कैसे भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमते हैं बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् पु० पूर्वाहारी पो० पुद्गल प० परिणमन त० तैसे जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३१ ॥ ते० तेइन्द्रिय च० चउरेन्द्रिय णा० विविध प्रकार की ठि० स्थिति जा० यावत् अ० अनेक भा० भाग सहस्र अ०

मूल

भागाणाइज्जमाणा, असायाइज्जमाणा अणंतगुणा ॥ ३० ॥ बेइंदियाणं भंते पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! जिब्भिंदिय फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ बेइंदियाणं भंते पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया तहेव जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ ३१ ॥ तेइंदिय चउरिंदि-

भावार्थ

ये हैं आस्वाद नहीं कराये हुवे पुद्गल उन से असंख्यात पुद्गल अनंत गुने कहे हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! जो पुद्गल बेइन्द्रिय आहारपने ग्रहण करते हैं वे कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे आहार के पुद्गल बेइन्द्रिय को जिव्हेन्द्रियपने स्पर्शेन्द्रियपने व वेमात्राने परिणमते हैं. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को पहिले के आहारे हुवे पुद्गल परिणमते हैं यावत् चलित कर्म की निर्जरा करते हैं वगैरह सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ ३१ ॥ तेइन्द्रिय की स्थिति ४९ दिन की व चउरेन्द्रिय की स्थिति ६ मास की अन्य सब अ-

रेन्द्रिय घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने भु० वारंवार प० परिणमे ॥ ३२ ॥ पं० पंचे-न्द्रिय ति० तिर्यंच ठि० स्थिति भ० कहना ऊ० उश्वास वे० वेमात्रा आ० आहार अ० अनाभोग निर्वर्तित पने अ० समय समय में अ० आंतरा रहित आ० आभोग निवर्तितपने ज० जघन्य अ० अन्तर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट छ० छठ भक्त में से० शेष ज० जैसे च० चतुरेन्द्रिय जा० यावत् च० चलित कर्म नि० निर्जरे ॥ ३३ ॥

मूल

परिणमंति चउरिंदियाणं चक्खुंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ ३ २ ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं ठिई भणिऊण ऊसासोवेमाया-ए आहारो अणाभोगणिव्वत्तिए अणुसमइयं अविरहिओ आभोनिव्वत्तिओ जह-ण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥३३॥ एवं मणुस्साणवि. णवरं आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतो-

भावार्थ

चक्षुरेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रियपने परिणमते हैं ॥ ३२ ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की. उन का श्वासोश्वास मर्यादा रहित जानना. उन को अनाभोग निर्वर्तित आहार सदैव समय विरह रहित होता है. और आभोग निर्वर्तित आहार जघन्य अंत र्मुहूर्त में उत्कृष्ट छठ भक्त सो दो दिन में. (देवकुरु उत्तर कुरु के क्षेत्र के तिर्यंच आश्रित.) और चलित कर्म को निर्जरा करने पर्यंत का शेष सब अधिकार चतुरेन्द्रिय जैसे कहना ॥ ३३ ॥ ऐसे ही

शब्दार्थ

पोग्गला अ० नहीं स्पर्शे अ० अनंतगुणा ॥ ३० ॥ बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् पो० पुद्गल आ० आहारपने
गि० ग्रहण करते हैं ते० वे पो० पुद्गल की० कौनसे भु० बारंबार प० परिणमते हैं गो० गौतम
जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० बारंबार प० परिणमते हैं बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन्
पु० पूर्वाहारी पो० पुद्गल प० परिणत त० तैसे जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३१ ॥
ते० तेइन्द्रिय च० चतुरिन्द्रिय णा० विविध प्रकार की ठि० स्थिति जा० यावत् अ० अनेक भा० भाग सहस्र अ०

२५४

भागानाइवमाणा, असातगइवमाणा अनंतगुणा ॥ ३० ॥ बेइंदियाणं भंते पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! जिब्भिंदिय फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ बेइंदियाणं भंते पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया तहेव जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ ३१ ॥ तेइंदिय चउरिंदि-

भावार्थ

ये हैं आहार नहीं कराये हुवे पुद्गल उन में असंख्यात पुद्गल अनंत गुने कहे हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् !
जो पुद्गल बेइन्द्रिय आहारपने ग्रहण करते हैं वे कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे आहार के पुद्गल
बेइन्द्रिय को जिव्हेन्द्रियपने स्पर्शेन्द्रियपने व वेमात्राने परिणमते हैं. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को पहिले के आहारे
हुवे पुद्गल परिणमते हैं यावत् चलित कर्म की निर्जरा करते हैं वगैरह सब अधिकार पहिले जैसे कहना
॥ ३१ ॥ तेइन्द्रिय की स्थिति ४९ दिन की व चतुरिन्द्रिय की स्थिति ६ मास की अन्य सब अ-

शब्दार्थ पृथक् भा० आहार ज० जघन्य दि० दिवस पृथक् उ० उत्कृष्ट दिवस पृथक् ॥ ३६ ॥ वे० वैमानिक को ठि० स्थिति भा० कहना उ० उश्वास ज० जघन्य मु० मुहूर्त पृथक् उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस प० पक्ष आ० आहार ज० जघन्य दि० दिवस पृथक् उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीसवर्ष स० सहस्र से० शेष तं० तैसे जा० यावत् णि० निर्जरे ए० ऐसे ठि० स्थिति आ० आहार भा० कहना ठि० स्थिति ज० जैसे ठि०

सूत्र वि णवरं उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि मुहुत्त पुहुत्तस्स आहारो जहण्णेणं दिवस पुहुत्तस्स उक्कोसेणवि दिवसं पुहुत्तस्स सेसं तंचेव ॥ ३६ ॥ वेमाणियाणं ठिई भाणियव्वाओहिया, उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं ॥ आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं दिवस पुहुत्तस्स उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं, सेसं तंचेव जाव णिज्जरेंति. एवं ठिती आहारो य भाणियव्वो.

भावार्थ उश्वास जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक मुहूर्त आहार की इच्छा जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक दिन में होवे ॥ ३६ ॥ वैमानिक देवताओं की स्थिति जघन्य एक पल्योपमकी उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की श्वासोश्वास जघन्य प्रत्येक मुहूर्त में लेवे उत्कृष्ट ३३ पक्ष में लेवे, आभोग निवर्तित आहार की इच्छा जघन्य प्रत्येक दिन में होवे. उत्कृष्ट तेत्तीस हजार वर्ष में होवे शेष चलित कर्म की निर्जरा करे वहांतक सब अधिकार पहिले जैसे कहना. सब जीवों की स्थिति स्थिति पद से जानना व आहार पन्नवणा सूत्रके पहिले आहार उद्देशे में जैसा

शब्दार्थ

इन्द्रिय घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने भु० वारंवार प० परिणमे ॥ ३२ ॥ पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच ठि० स्थिति भ० कहना ऊ० उश्वास वे० वेमात्रा आ० आहार अ० अनाभोग निर्वर्तित पने अ० समय समय में अ० अंतर रहित आ० आभोग निर्वर्तितपने ज० जघन्य अं० अन्तर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट छ० छठ भक्त में से० शेष ज० जैसे च० चतुरेन्द्रिय जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३३ ॥

मूल

परिणमंति चउरिंदियाणं चक्खुंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ ३२ ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं ठिई भणिऊण ऊसासोवेमाया-ए आहारो अणाभोगणिव्वत्तिए अणुसमइयं अविरहिओ आभोगनिव्वत्तिओ जह-ण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥३३॥ एवं मणुस्साणवि. णवरं आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतो-

भावार्थ

चक्षुरेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रियपने परिणमते हैं ॥ ३२ ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की. उन का श्वासोश्वास मर्यादा रहित जानना. उन को अनाभोग निर्वर्तित आहार सर्व समय विरह रहित होता है. और आभोग निर्वर्तित आहार जघन्य अंतर्मुहूर्त में उत्कृष्ट छठ भक्त सो दो दिन में. (देवकुरु उत्तर कुरु के युगल के तिर्यंच आश्रित.) और चलित कर्म की निर्जरा करते यहांतक का सब अधिकार चतुरेन्द्रिय जैसे कहना ॥ ३३ ॥ ऐसे ही

शब्दार्थ स॰ लेश्या सहित ज॰ जैसे ओ॰ औधिक कि॰ कृष्णलेश्या नी॰ नीललेश्या का॰ कापुत लेश्या ज॰ जैसे ओ॰ औधिक जीव ण॰ विशेष प॰ प्रमत्त अ॰ अप्रमत्त भा॰ कहना ते॰ तेजो लेश्या प॰ पद्मलेश्या सु॰ शुक्ल लेश्या ज॰ जैसे ओ॰ औधिक जीव ण॰ विशेष सि॰ सिद्ध णा॰ नहीं भा॰ कहना ॥४०॥ इ॰ यह भ॰ भविक भ॰ भगवन णा॰ ज्ञान प॰ परभविक ज्ञान उ॰ उभय भविक गो॰ गौतम इ॰ यह भ॰ भविक ज्ञान

सूत्र ॥ ३९ ॥ सलेस्सा जहा ओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स, काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा । णवरं पमत्त अप्पमत्ताण भाणियव्वा । तेउलेसस्स पम्हलेसस्स सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा । णवरं सिद्धा ण भाणियव्वा ॥ ४० ॥ इह भविए भंते णाणे, परभविए णाणे, तदुभय भवि एणाणे ? गोयमा ! इह भविए वि णाणे, परभवि-

भावार्थ लेश्या का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन्! सलेशी जीव आरंभी हैं? अहो गौतम जैसे समुच्चय जीव का कहा. वैसा कहना. कृष्ण, नील व कापोत लेश्यावालेको समस्त जीव जैसे कहना परंतु इसमें प्रमत्त व अप्रमत्तका कथन करना नहीं तेजु, पद्म, व शुक्ल लेश्या वाले औधिक जीव (सब जीव) जैसे कहना यहां पर सिद्ध को कहना नहीं क्योंकि सिद्ध अलेशी हैं ॥ ४० ॥ अब आरंभ का हेतुभूत ज्ञानका स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन् !

शब्दार्थ

नहीं सुंघते अ० नहीं स्वादलेते अ० नहीं स्पर्शते वि० विध्वंसपाते हैं पो० पुद्गल को अ० नहीं सुंघेहुवे अ० नहीं स्वादलिये अ० नहीं स्पर्शेहुवे गो० गौतम स० सर्व से थोडा पो० पुद्गल अ० नहीं सुंघेहुवे अ० नहीं स्वादलिये अ० अनंतगुने अ० नहीं स्पर्शेहुवे अ० अनंतगुने ते० तेइन्द्रिय को घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भुं० वारंवार परिणमें च० चउरिन्द्रिय को च० चक्षु-

सूत्र

याणं घाणत्तं ठिईसु जाव अणेगाइं च णं भागसहस्साइं अणाघाइज्जमाणाइं, अ-णासाइज्जमाणाइं, अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति. एएसिणं भंते पोग्गलाणं अ-णाघाइज्जमाणाणं, अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्ज माणाणं य पुच्छा ॥ गोयमा ? सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा, अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा अफासाइज्जमा-णा अणंतगुणा ॥ तेइंदियाणं घाणेंदिय जिब्भिंदिय फासिंदिय वेमायत्ताए भुज्जो भुज्जो

भावार्थ

थिकार अनेक भाग सहस्त्र घ्राणेन्द्रिय से नहीं सुंघते, रसनेन्द्रिय से नहीं आस्वादते व स्पर्शेन्द्रिय से नहीं स्पर्शते नष्ट होते हैं वहां तक पहिले जैसे कहना. उन में कौनसा अल्प व बहुत है ? तुल्य व वि-शेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे घ्राणेन्द्रियपने नहीं सुंघे हुवे पुद्गलों, इस से रसनेन्द्रियपने नहीं आस्वादे हुवे पुद्गलों अनंत गुने, इस से स्पर्शेन्द्रियपने नहीं स्पर्शे हुवे पुद्गलों अनंत गुने. तेइन्द्रिय को आहार के पुद्गल घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रियपने, व विविध प्रकार से परिणमते हैं. वैसे ही चउरेन्द्रिय को

शब्दार्थ सि० सिद्धे यावत् अं० अंतकरे से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है पूर्ववत् ॥ ४४ ॥ जी० जीव भं० भगवन् अ० असंयति अ० अविरति अ० अप्रतिहत प० प्रत्याख्यान पा०

मूल अणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ धणिय बंधण बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठितीयाओ हस्सकालट्ठितीयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुपदेसगाओ अप्पपदेसगाओ पकरेइ, आउयंचणं कम्मं न बंधइ, असायावेयणिज्जंचणं कम्मंणो भुज्जो भुज्जो उवचिणइ, अणादीयंचणं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारं वीईवयइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं संवुडे अणगारे सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ॥ ४४ ॥ जीवेणं भंतेअसंजए, अविरए, अप्पडिहय

भावार्थ करे ? अहो गौतम ! संवृत अणगार आयुष्य छोडकर अन्य सात कर्म की प्रकृतियों का निकाचित बंधन किया होवे तो उन को शिथिलकरे, दीर्घ काल की स्थिति वाले कर्मों को हस्व काल की स्थिति वाले बनावे तीव्र रसवाले कर्मों को अल्प रसवाले बनावे, बहुत प्रदेशात्मक कर्मों को अल्प प्रदेशात्मक बनावे, आयुष्य कर्म का बंध करे नहीं, असाता वेदनीय कर्म को वारंवार संचित करे नहीं व अनादि अनंत संसार में परिभ्रमण करे नहीं; इसलिये अहो गौतम! संवृत अणगार सिद्ध यावत् दुःखों का अंतकरे ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! असंयति, अविरति, व प्रत्याख्यान से पापकर्म नहीं तोडने वाला यहां से चवकर परलोक

शब्दार्थ पृथक् आ० आहार ज० जघन्य दि० दिवस पृथक् उ० उत्कृष्ट दिवस पृथक् ॥ ३६ ॥ वे० वैमानिक को ठि० स्थिति भा० कहना उ० उश्वास ज० जघन्य मु० मुहूर्त पृथक् उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस प० पक्ष आ० आहार ज० जघन्य दि० दिवस पृथक् उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीसवर्ष स० सहस्र से० शेष तं० तैसे जा० यावत् णि० निर्जरे ए० ऐसे ठि० स्थिति आ० आहार भा० कहना ठि० स्थिति ज० जैसे ठि०

सूत्र वि णवरं उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि मुहुत्त पुहुत्तस्स आहारो जहण्णेणं दिवस पुहुत्तस्स उक्कोसेणवि दिवसं पुहुत्तस्स सेसं तंचेव ॥ ३६ ॥ वेमाणियाणं ठिई भाणियव्वाओहिया, उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं ॥ आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं दिवस पुहुत्तस्स उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं, सेसं तंचेव जाव णिज्जरेंति. एवं ठिती आहारो य भाणियव्वो.

भावार्थ उश्वास जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक मुहूर्त आहार की इच्छा जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक दिन में होवे ॥ ३६ ॥ वैमानिक देवताओं की स्थिति जघन्य एक पल्योपमकी उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की श्वासोश्वास जघन्य प्रत्येक मुहूर्त में लेवे उत्कृष्ट ३३ पक्ष में लेवे, आभोग निवर्तित आहार की इच्छा जघन्य प्रत्येक दिन में होवे. उत्कृष्ट तेत्तीस हजार वर्ष में होवे शेष चलित कर्म की निर्जरा करे वहांतक सब अधिकार पाहिले जैसे कहना. सब जीवों की स्थिति स्थिति पद से जानना व आहार पन्नवणा सूत्र के पहिले आहार उद्देशे में जैसा

शब्दार्थ

भ० भारानुष्या अ० अकाम ब्रह्मचर्य अ० अकाम सी० शीत आ०आतप दं० दंश म० मशक अ० स्नान रहित मं० स्वेद ज० जल्ल म० मल पं० कर्दम प० परिदाह अ० थोडे भु० बहुत का० काल अ० आत्मा का प० कष्टदे प० कष्टदेकर का० काल के अवसर में का० काल कि० करके अ० अन्यतर वा० वाणव्यंतर दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न भ० होवे के० कैसे भ० भगवन् वा० वाणव्यंतर दे० देवता

सूत्र

अकाम बंभचेरवासेणं, अकामसीतातवदंसमसगं, अण्हाणगसेयजल्लमल पंकपरिदाहेणं अप्पतरोवा भुज्जतरोवा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति परिकिलेसइत्ता; कालमासे कालंकिच्चा, अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥ केरिसाणं भंते तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा प०? गोयमा! से जहा नामए इह मणुस्स लोगंमि असोगवणेइवा सत्तवण्णवणेइवा, चंपयवणेइवा, चूयवणेइवा, तिलगवणेइवा,

भावार्थ

काल के अवसर में काल कर के वाणव्यंतर देवलोक में देवतापने उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! उन वाणव्यंतर देवता के देवलोक कैसे हैं ! अहो गौतम जैसे मनुष्य लोक में अशोकवन, सप्तपर्णवन, चंपकवन आम्रवन, तिलक वन, अलंबुक ( तुम्बी का ) वन, न्यग्रोधवन, छत्राहवन, अशनवृक्षवन, शणवृक्ष के वन अलसीका वन, कुसुभवन, सिद्धत्थ-श्वेतसरसवका वन, बंधजीव सो मध्यान्ह के कुसुमका वन वगैरह वनों सदैव कुसुमों से फुले हुवे. मंजरी, गुच्छक, गुल्म, वेल, पत्र, अन्य अनेक वृक्षोंकी श्रेणियों के समुह व

शब्दार्थ इन्द्रिय घा॰ घ्राणेन्द्रिय जि॰ जिव्हेन्द्रिय फा॰ स्पर्शेन्द्रियपने भु॰ वारंवार प॰ परिणमें ॥ ३२ ॥ पं॰ पंचे-
न्द्रिय ति॰ तिर्यंच ठि॰ स्थिति भ॰ कहना ऊ॰ उश्वास वे॰ वेमात्रा आ॰ आहार अ॰ अनाभोग निर्वर्तित
पने अ॰ समय समय में अ॰ आंतरा रहित आ॰ आभोग निवर्तितपने ज॰ जघन्य अ॰ अन्तर्मुहूर्त उ॰ उत्कृष्ट
छ॰ छठ भक्त में से॰ शेष ज॰ जैसे च॰ चतुरेन्द्रिय जा॰ यावत् च॰ चलित कर्म नि॰ निर्जरे ॥ ३३ ॥

मूल परिणमंति चउरिंदियाणं चक्खुंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ ३२ ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं ठिई भणिऊण ऊसासोवेमायाए आहारो अणाभोगणिव्वत्तिए अणुसमइयं अविरहिओ आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ ३३ ॥ एवं मणुस्साणवि. णवरं आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतो-

भावार्थ चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रियपने परिणमते हैं ॥ ३२ ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की. उन का श्वासोश्वास मर्यादा रहित जानना. उन को अनाभोग निर्वर्तित आहार सदैव समय विरह रहित होता है. और आभोग निर्वर्तित आहार जघन्य अंतर्मुहूर्त में उत्कृष्ट छठ भक्त सो दो दिन में. (देवकुरु उत्तर कुरु के क्षेत्र के तिर्यंच आश्रित.) और चलित कर्म की निर्जरा करते यहांतक का शेष सब अधिकार चतुरेन्द्रिय जैसे कहना ॥ ३३ ॥ ऐसे ही

भनिक अ० अतीव उ० सुंदर चि० हैं ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति मे उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति मे ब० बहुत वा० वाणव्यंतर दे० देव दे० देवीमे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित सं० संस्तीर्ण फु० स्पर्श अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी मे अ० अतीव २ उ० सुंदर शोभते चि० हैं ए० ऐसे गो० गौतम ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक प० प्ररूपे सो० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा



णं देवाणं देवलोया जहण्णेणं दस वास सहस्स ठिईएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठिईए-हिं बहुहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फुडा, अवगाढगाढ सिरीए, अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥ एरिसगाणं गोयमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जीवे णं असंजए जाव देवेसिया ॥ ४५ ॥ सेवं भंते ! भंते ति भगवं



मंथारा जैसे विस्तीर्ण बने हुवे, आसन शयन रमण भाग से भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं. अहो गौतम ! उन वाणव्यंतर के ऐसे देवलोक कहे हैं. और इसी कारण से कितनेक असंयति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहोवे ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पृच्छा की वैसे

शब्दार्थ स० लेश्या सहित ज० जैसे ओ० औधिक कि० कृष्णलेश्या नी० नीललेश्या का० कापुत लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष प० प्रमत्त अ० अप्रमत्त भा० कहना ते० तेजो लेश्या प० पद्मलेश्या सु० शुक्ल लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष सि० सिद्ध णा० नहीं भा० कहना ॥४०॥ इ० यह भ० भविक भ० भगवन णा० ज्ञान प० परभविक ज्ञान उ० उभय भविक गो० गौतम इ० यह भ० भविक ज्ञान

सूत्र ॥ ३९ ॥ सलेस्सा जहा ओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स, काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा । णवरं पमत्त अपमत्ताण भाणियव्वा । तेउलेसस्स पम्हलेसस्स सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा । णवरं सिद्धा ण भाणियव्वा ॥ ४० ॥ इह भविए भंते णाणे, परभविए णाणे, तदुभय भवि एणाणे ? गोयमा ! इह भविए वि णाणे, परभवि-

भावार्थ लेश्या का प्रश्नकहते हैं. अहो भगवन्! सलेशी जीव आरंभी हैं? अहो गौतम जैसे समुच्चय जीव का कहा. वैसा कहना. कृष्ण, नील व कापोत लेश्यावालेको समस्त जीव जैसे कहना परंतु इसमें प्रमत्त व अप्रमत्तका कथन करना नहीं तेजु, पद्म, व शुक्ल लेश्या वाले औधिक जीव (सब जीव) जैसे कहना यहां पर सिद्ध को कहना नहीं क्योंकि सिद्ध अलेशी हैं ॥ ४० ॥ अब आरंभ का हेतुभूत ज्ञानका स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन्!

शब्दार्थ

भावे गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० तद के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है ण० नारकी णो० नहीं स० सर्व स० समाहारी णो० नहीं स० सर्व स० समशरीरी णो० नहीं स० सर्व स० सरिखा उ० उश्वास णि० निश्वासले गो० गौतम ण० नारकी दु० दोप्रकार के प० प्ररूपे म० महा शरीरी अ० अल्प शरीरी त० तहां ज० जो म० महा शरीरी ते० वे ब० बहुत पो० पुद्गल आ० आहार

मूल

साओ जहा महासरीराय अप्पसरीराय। तत्थणं जेते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति, बहुतराए पोग्गले ऊससंति, बहुतराए पोग्गले णीससंति, अभिक्खणं आहारेंति, अभिक्खण परिणामेंति, अभिक्खणं ऊससंति, अभिक्खणं णीससंति, ॥ तत्थणं जेते अप्पसरीरा तेण अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति,

भावार्थ

अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से सब नारकी सरिखे आहार, शरीर, श्वासोश्वास वाले नहीं हैं ! अहो गौतम ! नारकी दोप्रकार के कहे हैं. १ बडे शरीर वाले और २ छोटे शरीर वाले. * जो बडे शरीर वाले हैं. वे बहुत दुःखी होते हुवे बहुत पुद्गलों का आहार करे, बहुत पुद्गलों परिणमावे बहुत पुद्गलों को उश्वास रूप से ग्रहण करे, बहुत पुद्गलों को निश्वासरूप से नीकाले और भी वारंवार

* नारकी की भवधारनीय अवगाहना जघन्य अंगुलका असंख्यात वा भाग उत्कृष्ट ५०० धनुष्य और

शब्दार्थ

ए० ऐसे म० मनुष्य को ण० विशेष आ० आभोग निवर्तितपने ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट अ० अठम भक्त सो० श्रोतेन्द्रिय च० चक्षुइन्द्रिय घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमें से० शेष त० तैसे जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे॥३४॥ वा० वाणव्यंतर को ठि० स्थिति णा० नानाप्रकारकी. अ० निरवशेष ज० जैसे णा० नाग कुमार को॥३५॥ ए० ऐसा जो० ज्योतिषी को ण० विशेष उ० उश्वास ज० जघन्य मु० मुहूर्त पृथक् उ० उत्कृष्ट मु० मुहूर्त

सूत्र

मुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स सोइंदिय चक्खुंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति सेसं तहेव जाव चलियं कम्मंणिज्जरेंति ॥ ३४ ॥ वाणमंतराणं ठिईए णाणत्तं । अवसेसं जहा णाग कुमाराणं ॥३५॥ एवं जोइसियाणं

भावार्थ

मनुष्य को जानना. परंतु आभोग निवर्तित आहार की इच्छा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अठम भक्त सो तीन दिन में होवे देव कुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के मनुष्य आश्रित. दोनों को आहार के पुद्गल श्रोतेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रियपने व वेमात्रा से परिणमते हैं. अन्य चलित कर्म की निर्जरा करे वहांतक सब पहिले जैसे कहना ॥ ३४ ॥ वाणव्यंतर देवता की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की अन्य सब नाग कुमार जैसे कहना. ॥ ३५ ॥ ज्योतिषी देवता की स्थिति जघन्य एक पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट एक पल्योपम व एक लाख वर्ष अधिक जानना. और

शब्दार्थ सि॰ सिझे यावत् अं॰ अंतकरे से॰ वह के॰ कैसे भ॰ भगवन् ए॰ ऐसे वु॰ कहा जाता है पूर्ववत् ॥ ४४ ॥ जी॰ जीव भं॰ भगवन् अ॰ असंयति अ॰ अविरति अ॰ अप्रतिहत प॰ प्रत्याख्यान पा॰

मूल अणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ धणिय बंधण बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठितीयाओ हस्सकालट्ठितीयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुपदेसगाओ अप्पपदेसगाओ पकरेइ, आउयंचणं कम्मं न बंधइ, असायावेयणिज्जं च णं कम्मं णो भुज्जो भुज्जो उवचिणइ, अणादीयंचणं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारं वीईवयइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं संवुडे अणगारे सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ॥ ४४ ॥ जीवेणं भंतेअसंजए, अविरए, अप्पडिहय

भावार्थ करे ? अहो गौतम ! संवृत अणगार आयुष्य छोडकर अन्य सात कर्म की प्रकृतियों का निकाचित बंधन किया होवे तो उस को शिथिल करे, दीर्घ काल की स्थिति वाले कर्मों को ह्रस्व काल की स्थिति वाले बनावे तीव्र रसवाले कर्मों को मंद रसवाले बनावे, बहुत प्रदेशात्मक कर्मों को अल्प प्रदेशात्मक बनावे, आयुष्य कर्म का बंध करे नहीं, असाता वेदनीय कर्म को बारंबार संचित करे नहीं व अनादि अनंत संसार में परिभ्रमण करे नहीं; इसलिये अहो गौतम ! संवृत अणगार सिझे यावत् दुःखों का अंत करे ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! असंयति, अविरति, व प्रत्याख्यान से पापकर्म नहीं तोडने वाला यहां से चवकर परलोक

शब्दार्थ

उत्पन्न हुवे ते० वे अ० अविशुद्ध लेश्यावाले ॥ ५ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० समवेदनावाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी दु० दोप्रकार के स० संज्ञी अ० असंज्ञी

सूत्र

पण्णगा तेणं विसुद्धलेसतरागा । तत्थणं जे ते पच्छोववण्णगा तेणं अविसुद्ध लेसतरागा । सेतेणट्ठेणं गोयमा ! ॥ ५ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समवेदणा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सण्णिभूयाय, असण्णिभूयाय । तत्थणं जेते सण्णिभूया तेणंमहावेदणा, तत्थणं जे

भावार्थ

लेश्या वाले होते हैं; क्यों की उन को अल्प कर्म रहते हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अशुद्ध लेश्या वाले हैं क्यों कि उन को बहुत कर्म रहते हैं इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सारिखी लेश्या वाले नहीं हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी को सारिखी वेदना है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. किस कारण से ! अहो गौतम ! नारकी के दो भेद १ संज्ञीभूत सो समदृष्टि व असंज्ञीभूत सो मिथ्यादृष्टि. इस में जो संज्ञी भूत समदृष्टि हैं वे बहुत वेदना वाले हैं क्यों कि सम्यग् ज्ञान से पूर्वकृत कर्म विपाक की स्मृति होनेसे अती दुःख होवे और पश्चाताप करे कि मैंने अरिहंत प्ररूपित धर्म पाला नहीं इस कारण से उन को मानसिक दुःख बहुत होवे. और जो असंज्ञीभूत-मिथ्यादृष्टि हैं वे अल्पवेदना वाले हैं क्यों कि वे अपने कृतकर्म को नहीं जानते हैं इस से उन को मानसिक दुःख अल्प रहता है. कितनेक

शब्दार्थ ० जो सं० संज्ञी ते० वे म० बहुतवेदना वाले ज० जो अ० असंज्ञी अ० अल्पवेदनावाले ... गनन् स० सर्व स० समक्रियावाले गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी ति० तीन प्रकार के म० सम्यक् दृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि स० समामिथ्यादृष्टि जे० जो स० समदृष्टि ते० उन को च० चारक्रिया प० परूपी आ०

सूत्र ते असण्णिभूया तेणं अप्पवेयणतरागा से तेणट्टेणं गोयमा ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाकिरिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! णेरइया तिविहा प० तं० सम्मदिट्ठीय, मिच्छादिट्ठीय, सम्मामिच्छादिट्ठीय । तत्थणं जेते सम्मदिट्ठी तेसिणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ तं० आरंभिया, परिग्गहिया,

भावार्थ ऐसा भी अर्थ करते हैं कि संज्ञी पंचेन्द्रिय नारकी में उत्पन्न होवे सो संज्ञीभूत वे बहुत वेदनावाले होवे क्यों कि अशुभ अध्यवसाय से बहुत अशुभ कर्म का बंध कीया और इस से नरक में उत्पन्न हुवे. और असंज्ञी पंचेन्द्रिय प्रथम नरक में असंज्ञीपने उत्पन्न होवे वे अल्प वेदनावाले होवे क्यों कि उनको अति तीव्र अशुभ अध्यवसाय नहीं होते हैं. अथवा संज्ञीभूत सो पर्याप्ता बहुत वेदनावाले और असंज्ञीभूत सो अपर्याप्ता अल्पवेदना वाले, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सरिखी वेदनावाले नहीं हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सम क्रियावाले हैं ? अहो गौतम यह अर्थ योग्य नहीं हैं. क्यों कि नारकी के तीन भेद कहे हैं. १ समदृष्टी, २ मिथ्यादृष्टी ३ समामिथ्यादृष्टि. उस में जो समदृष्टी हैं उन को चार

शब्दार्थ आरंभिकी प० प० पारिग्रहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० अप्रत्याख्यानक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांच क्रिया आ० आरंभिकी जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी ए० ऐसे स० समामिथ्या दृष्टि को भी ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सम आयुष्यवाले स० सम उत्पन्न गो० गौतम णो० नहीं

सूत्र मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, । तत्थणं जे ते मिच्छदिट्ठी तेसिणं पंचकिरिया ओ कज्जंति तं० आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया । एवंसम्मामिच्छदिट्ठीणंपि. सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥७॥ णेरइयाणं भंते सव्वेसमाउया सव्वे समोववण्णगा ? गोयमा!

भावार्थ क्रिया लगती हैं १ पृथिव्यादिक का आरंभसो आरंभिकी २ शरीरादिपर ममत्व सो पारिग्रहिकी ३ वक्रपना व क्रोध, मान व माया युक्त स्वभावसो मायाप्रत्ययिकी और ४ निवृत्ति के अभाव से जो क्रिया लगेसो अप्रत्याख्यान. मिथ्यादृष्टी नारकी को पांच क्रिया लगे. उक्त चार क्रियाओं में मिथ्यादर्शन प्रत्ययिक क्रिया बढी. और ऐसे ही समामिथ्यादृष्टी को जानना. इस कारण से अहो गौतम! नारकी को सरिखि क्रिया नहीं हैं. ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! सब नारकी सरीखे आयुष्य वाले हैं? और सब सरीखे-एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. अहो भगवन्! किस कारण से यह अर्थ योग्य नहीं हैं? अहो गौतम! नारकी के चार भेद कहे हैं. १ कितनेक सम आयुष्य वाले हैं और एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं २ कितनेक सम आयुष्यवाले हैं विषम उत्पन्न होते हैं अर्थात्

शब्दार्थ आरंभिकी प० प० पारिग्रहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० अप्रत्याख्यानक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांच क्रिया आ० आरंभिकी जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी ए० ऐसे स० समामिथ्या दृष्टि को भी ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सम आयुष्यवाले स० सम उत्पन्न गो० गौतम णो० नहीं

सूत्र मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, । तत्थणं जे ते मिच्छदिट्ठी तेसिणं पंचकिरिया ओ कज्जंति तं० आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया । एवंसम्मामिच्छदिट्ठीणंपि. सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥७॥ णेरइयाणं भंते सव्वेसमाउया सव्वे समोववण्णगा ? गोयमा !

भावार्थ क्रिया लगती हैं १ पृथिव्यादिक का आरंभसो आरंभिकी २ शरीरादिपर ममत्व सो पारिग्रहिकी ३ वक्रपना व क्रोध, मान व माया युक्त स्वभावसो मायाप्रत्ययिकी और ४ निवृत्ति के अभाव से जो क्रिया लगेसो अप्रत्याख्यान. मिथ्यादृष्टी नारकी को पांच क्रिया लगे. उक्त चार क्रियायों में मिथ्यादर्शन प्रत्ययिक क्रिया वढी. और ऐसे ही समपिथ्यादृष्टी को जानना. इस कारण से अहो गौतम ! नारकी को सरिखि क्रिया नहीं हैं. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सरीखे आयुष्य वाले हैं ? और सब सरीखे-एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारण से यह अर्थ योग्य नहीं हैं ? अहो गौतम ! नारकी के चार भेद कहे हैं. १ कितनेक सम आयुष्य वाले हैं और एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं २ कितनेक सम आयुष्यवाले हैं विषम उत्पन्न होते हैं अर्थात्

शब्दार्थ

जा॰ यावत् मि॰ मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी से॰ वह तं॰ इसलिये पु॰ पृथ्वी काया स॰ समायुष्य वाले स॰ समवर्ण वाले ज॰ जैसे णे॰ नारकी त॰ तैसे भा॰ कहना ॥ १० ॥ ज॰ जैसे पु॰ पृथ्वी काया त॰ तैसे जा॰ यावत् च॰ चतुरेन्द्रिय ॥ ११ ॥ पं॰ पंचेन्द्रिय तिर्यंच ज॰ जैसे णे॰ नारकी णा॰ नानाप्रकार कि॰ क्रियामें पं॰ पंचेन्द्रिय तिर्यंच भं॰ भगवन् स॰ सर्व स॰ समक्रिया वाले गो॰ गौतम णो॰ नहीं इ॰ यह अर्थ स॰ समर्थ से॰ वह के॰ कैसे गो॰ गौतम पं॰ पंचेन्द्रिय तिर्यंच ति॰ तीन प्रकार के स॰ समदृष्टि मि॰

तियाणं पंचकिरियाओ कज्जंति, तंजहा - आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया. सेते- णट्ठेणं. पुढविकाइया समाउया समोववण्णगा? जहा णेरइया तहा भाणियव्वा ॥ १० ॥ जहा पुढविकाइया तहा जाव चउरिंदिया ॥ ११ ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया जहा णेरइया, णाणत्तं किरियासु ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं भंते सव्वे समाकि-

भावार्थ

क्रिया वाले हैं. ? अहो भगवन् ! वह कैसे ? अहो गौतम ! सब पृथ्वीकायिक जीव मायावी व मिथ्या दृष्टी हैं, उनको अवश्यही आरंभिकी यावत् मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी पांच क्रियाओं लगती हैं. इसी से पृथ्वी कायिक जीव समक्रिया वाले हैं. सब पृथ्वी कायिक जीव सरिखे आयुष्य वाले व साथ उत्पन्न होने वाले हैं! इसका सब अधिकार नारकी जैसे कहना॥१०॥ जैसे पृथ्वी कायाका अधिकार कहा वैसेही अप्काय तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, द्वीन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना. यहांपर बडा शरीर व

शब्दार्थ आरंभिकी प० प० पारिग्रहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० अप्रत्याख्यानक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांच क्रिया आ० आरंभिकी जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी ए० ऐसे स० समामिथ्या दृष्टि को भी ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सम आयुष्यवाले स० सम उत्पन्न गो० गौतम णो० नहीं

सूत्र मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, । तत्थणं जे ते मिच्छदिट्ठी तेसिणं पंचकिरियाओ कज्जंति तं० आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया । एवंसम्मामिच्छदिट्ठीणंपि. सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥७॥ णेरइयाणं भंते सव्वेसमाउया सव्वे समोववण्णगा ? गोयमा!

भावार्थ क्रिया लगती हैं १ पृथिव्यादिक का आरंभसो आरंभिकी २ शरीरादिपर ममत्व सो पारिग्रहिकी ३ वक्रपना व क्रोध, मान व माया युक्त स्वभावसो मायाप्रत्ययिकी और ४ निवृत्ति के अभाव से जो क्रिया लगेसो अप्रत्याख्यान. मिथ्यादृष्टी नारकी को पांच क्रिया लगे. उक्त चार क्रियाओं में मिथ्यादर्शन प्रत्ययिक क्रिया बढी. और ऐसे ही सम्यमिथ्यादृष्टी को जानना. इस कारण से अहो गौतम ! नारकी को सरिखि क्रिया नहीं हैं. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सरीखे आयुष्य वाले हैं ? और सब सरीखे-एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारण से यह अर्थ योग्य नहीं हैं ? अहो गौतम ! नारकी के चार भेद कहे हैं. १ कितनेक सम आयुष्य वाले हैं और एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं २ कितनेक सम आयुष्यवाले हैं विषम उत्पन्न होते हैं अर्थात्

[illegible]

[illegible]

१३६ [illegible] मनुष्य [illegible] आहार करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! [illegible] दो [illegible] इन में जो बड़े शरीर वाले हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, बहुत [illegible] हैं, वैसे ही श्वासोश्वास लेते हैं. यहां नरकमें वारंवार [illegible] कहा है. परंतु देवकुरु उत्तरकुरु के युगलिये तीन दिन से आहार लेते हैं. छोटे शरीर वाले अल्प पुद्गलों का ग्रहण करते हैं. [illegible] वारंवार आहार करते हैं. [illegible] कहना. अहो भगवन् ! सब मनुष्य [illegible] ? अहो गौतम ! [illegible] अर्थ समर्थ नहीं है ? अहो गौतम ! [illegible]

शब्दार्थ जा० यावत् मि० मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी से० वह ते० इसलिये पु० पृथ्वी काया स० समायुष्य वाले स० समवर्ण वाले ज० जैसे णे० नारकी त० तैसे भा० कहना ॥ १० ॥ ज० जैसे पु० पृथ्वी काया त० तैसे जा० यावत् च० चतुरेन्द्रिय ॥ ११ ॥ पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच ज० जैसे णे० नारकी णा० नानाप्रकार कि० क्रियायें पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच भं० भगवन् स० सर्व स० समक्रिया वाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच ति० तीन प्रकार के स० समदृष्टि मि०

तियाणं पंचकिरियाओ कज्जंति, तंजहा - आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया. सेतेणट्ठेणं. पुढविकाइया समाउया समोववण्णगा? जहा णेरइया तहा भाणियव्वा ॥ १० ॥ जहा पुढविकाइया तहा जाव चउरिंदिया ॥ ११ ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया जहा णेरइया, णाणत्तं किरियासु ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं भंते सव्वे समाकि-

भावार्थ क्रिया वाले हैं. ? अहो भगवन् ! यह कैसे ? अहो गौतम ! सब पृथ्वीकायिक जीव मायावी व मिथ्या दृष्टी हैं, उनको अवश्यही आरंभिकी यावत् मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी पांच क्रियायों लगती हैं. इसी से पृथ्वी कायिक जीव समक्रिया वाले हैं. सब पृथ्वी कायिक जीव सरिखे आयुष्य वाले व साथ उत्पन्न होने वाले हैं! इसका सब अधिकार नारकी जैसे कहना॥१०॥ जैसे पृथ्वी कायाका अधिकार कहा वैसेही अप्काय ... द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना. यहांपर बडा शरीर व

शब्दार्थ

प्रकार के प० प्रमत्त अ० अप्रमत्त ते० जो अ० अप्रमत्त संयति ते० उनको ए० एक मा० मायाप्रत्ययिकी क्रिया से० जो प० प्रमत्त संयति ते० उनको दो० दोक्रिया आ० आरंभिकी मा० मायाप्रत्ययिकी जे० जो सं० संयतासंयति ते० उनको आ० पहिली ति० तीन कि० क्रिया अ० असंयति को च० चारक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांचक्रिया स० सममिथ्यादृष्टि को पं० पांचक्रिया ॥ १३ ॥ वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक ज० जैसे अ० असुरकुमार न० विशेष वे० वेदना में णा० नानाप्रकार मा० मायी मि०

मूल

अपमत्त संजयाए, ॥ तत्थणं जे ते अपमत्तसंजया तेसिणं एगा मायावत्तिया किरिया कज्जइ । तत्थणं जे ते पमत्तसंजया तेसिणं दो किरिया कज्जइ तं० आरंभियाय मायावत्तियाए. तत्थणं जे ते संजयासंजया तेसिणं आदिमाओ तिण्णि किरियाओ कज्जंति । असंजयाणंचत्तारि किरियाओ कज्जंति मिच्छदिट्ठीणं पंच सम्मामिच्छदिट्ठीण पंच ॥ १३ ॥ वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा अ-

भावार्थ

मायाप्रत्ययिकी ऐसी दो क्रियाओं लगती हैं. जो संयतासंयति-श्रावक हैं उन को आरंभिकी मायाप्रत्ययिकी व परिग्रहिकी ऐसी तीन क्रियाओं लगती हैं. असंयति को चार क्रियाओं लगती हैं. उपर्युक्त तीन और चौथी अप्रत्याख्यान. मिथ्यादृष्टि व सममिथ्यादृष्टि को पांच क्रियाओं. उपर्युक्त क्रियाओंमें मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी क्रिया पांचवी कही ॥ १३ ॥ वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक को असुरकुमार जैसे कहना. शरीर का अल्पपना व बहुतपना जानने २. शरीर की अवगाहना के अनुसार जानना. वेदना विविध

शब्दार्थ इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी च० चार प्रकार के अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले वि० विषमो उत्पन्न अ० कितनेक वि० विषम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक वि० विषम आयुष्यवाले वि० विषमोत्पन्न ॥ ८ ॥ अ० असुरकुमार भं० भगवन् स० सर्व स० सम आहारी स० सर्व स० सम शरीरी ज० जैसे णे० नारकी त० तैसे भा० कह-

सूत्र णोइणट्ठे समट्ठे। सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा! णेरइया चउव्विहा प०तं० अत्थेगइया समाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववण्णगा, सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥८॥ असुरकुमाराणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा ? जहा णेरइया

भावार्थ एक साथ नहीं उत्पन्न होते हैं, कितनेक विषम आयुष्यवाले हैं और एक साथ उत्पन्न होने वाले हैं, कितनेक विषम आयुष्य वाले हैं और विषम उत्पन्न होने वाले हैं, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी एक सरिखे आयुष्य व एक साथ उत्पन्न होने वाले नहीं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के सब देवता क्या सरिखे आहार वाले व सरिखे शरीर वाले हैं ? अहो गौतम जैसे नारकी का कहा वैसेही यहां कहना. विशेष इतनाही कि असुरकुमारकी भवधारणीय शरीरकी अवगाहना जघन्य अंगुलका असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट सात हाथकी और उत्तरवैक्रिय जघन्य अंगुलका असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक लक्ष योजनकी. जो महाशरीर वाले होते

शब्दार्थ

यावत् इ० ऋद्धि ॥ १५ ॥ जी० जीव का ती० अतीत काल आ० कहा हुवा क० कितना सं० संसार सं० संचिठण काल प० प्ररूपा गो० गौतम च० चार प्रकार का सं० संसार संचिठन काल णे० नारकी सं० संसार संचिठन काल ति० तिर्यंच संसार सं० संचिठन काल म० मनुष्य संसार सं० संचिठण काल दे० देवसंसार सं० संचिठण काल णे० नारकी सं० संसार संचिठण काल क० कितना प्रकार का गो० गौतम

सूत्र

हेसओ भाणियव्वो जाव इड्ढी ॥ १६ ॥ जीवस्सणं भंते तीयद्धाए आदिट्ठस्स कइविहे संसार संचिट्ठण काले पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे संसार संचिट्ठण काले पण्णत्ते, तंजहा णेरइए संसार संचिट्ठण काले, तिरिक्ख जोणिय संसार संचिट्ठण काले, मणुस्स

भावार्थ

अधिक ऋद्धि का धारक होता है ॥ १६ ॥ सलेशी जीव संसार में रहते हैं इसलिये संसार में रहनेका प्रश्न करते हैं. ÷ अहो भगवन् ! नारकी आदि जीवों को अतीत काल में कितने प्रकार के संसार संचिठनकाल कहे हैं ? अहो गौतम ! उपाधिभेद से एक भव से भवान्तर[१] में रहने की क्रिया का काल के चार भेद कहे हैं. १ नारकी के भव में जीव रहे सो नरक संसार संचिठनकाल २ तिर्यंच के भव में रहे सो तिर्यंच संसार

÷ कितनेक की ऐसी मान्यता होती है कि मनुष्य मरकर मनुष्य व पशु मरकर पशु ही होता है इसका निर्णय यहांपर किया गया है.

१ एक भवमें दूसरे भव में रहने की क्रिया का काल.

[illegible] आहार [illegible]
[illegible] पुरुष
[illegible] करते हैं [illegible]

[illegible]

[illegible] अन्नमेन [illegible] आहारेंति

[illegible] आहारेति [illegible]

[illegible] आहार करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! [illegible] शरीर पाते हैं वे [illegible] आहार करते हैं, [illegible] ऐसे ही [illegible] हैं. यहां [illegible] वारंवार [illegible] है. परंतु देवकुरु उत्तरकुरु के युगलिये तीन दिन में आहार करते हैं. छोटे शरीर [illegible] करते हैं. [illegible] संमूर्च्छिम व [illegible] वारंवार आहार करते हैं. [illegible] अहो भगवन् ! [illegible] किया करते हैं ? अहो गौतम ! [illegible] अहो भगवन् ! [illegible] है ? अहो गौतम !

भगवन् अं० अंतक्रिया क० करे गो० गौतम अ० कितनेक क० करे अ० कितनेक णो० नहीं करे अ० अंतक्रिया पद णे० जानना ॥ १८ ॥ अ० अहो भं० भगवन् अ० असंयति भ० भविद्रव्य देव अ० अविराधिक सं० संयति वि० विराधिक संयति अ० अविराधिक संयतासंयति वि० विराधिक सं० संयता संयति अ० असंज्ञी ता० तापस कं० कंदर्पिक च० चरक परिव्राजक कि० अशुभ परिणाम वाले नि०



संसार संचिट्ठण काले असंखेज्जगुणे, तिरिक्ख जोणिय संसार संचिट्ठण काले अणंतगुणे ॥ १७ ॥ जीवेणं भंते अंत किरियं करेज्जा? गोयमा! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए णो करेज्जा. अंतकिरिया पदं णेतव्वं ॥ १८ ॥ अह भंते असंजय भविय दव्व देवाणं, अविराहिय संजमाणं, विराहिय संजमाणं, अविराहिय संजमासंजमाणं, विराहिय संजमासंजमाणं, असण्णीणं, तावसाणं, कंदप्पियाणं, चरगपरिव्वायगाणं,



गुना उस से तिर्यच संसार संचिठन काल अनंत गुना ॥ १७ ॥ अहो भगवन्! जीव अंतक्रिया करे? अहो गौतम! कितनेक जीव अंतक्रिया करे और कितनेक अंतक्रिया करे नहीं इस का विशेष अधिकार पन्नवणा के बीस वे अंतक्रिया पद में जानना. ॥ १८ ॥ अंतक्रियाके अभावसे कोई जीव देवलोक में उत्पन्न होवे इसलिये उस का विशेष स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन्! चारित्र परिणाम से शून्य मिथ्यादृष्टि,

शब्दार्थ देवलोक वि० विराधिक सं० संयतासंयति ज० जघन्य भवनपति उ० उत्कृष्ट जो० ज्योतिषी अ० असंज्ञी ज० जघन्य भ० भवनपति उ० उत्कृष्ट वा० वाणव्यंतर अ० बाकी के स० सब ज० जघन्य भ० भवनपति में उत्कृष्ट ता० तापस जो० ज्योतिषी में कं० कंदर्पिक सो० सौधर्म देवलोक में च० चरक परिव्राजिक बं० ब्रह्मदेवलोक में कि० किल्विषपरिणामी लं० लंतक देवलोक में ति० तिर्यंच स० सहस्रार देवलोक में आ० आजी

सूत्र संजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सोहम्मेकप्पे; अविराहिय संजमासंजमाणं जहण्णेणं सोहम्मेकप्पे, उक्कोसेणं अच्चुएकप्पे, विराहिय संजमासंजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं जोइसिएसु, असण्णीणं जहण्णेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं वाणमंतरेसु अवसेसा सव्वे जहण्णेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं वोच्छामि—तावसाणं जोइसिएसु, कंदप्पियाणं सोहम्मे कप्पे, चरग परिव्वायगाणं बंभलोए कप्पे, किव्विसि-

भावार्थ विराधिक संयमी, अविराधिक संयमासंयमी विराधिक संयमासंयमी, असंज्ञी, तापस, कंदर्प कथा करने वाले, त्रिदंडिये, कपिल मुनि के संतानिये, ज्ञानादिक के अवर्णवाद बोलने वाले, तिर्यंच, आजीविक धर्म वाले व्यवहार में चारित्रवंत होते हुवे मंत्र यंत्रादिक के करने वाले आभियोगिक, और साधु वेष होने पर सम्यक्त्व से भ्रष्ट निन्हव देवलोक में उत्पन्न होते किस २ स्थान पर उत्पन्न होवे ? अहो गौतम असंयति भवि द्रव्य देव जघन्य भवनपति में उत्कृष्ट उपर की ग्रैवेयक में. अविराधिक साधु जघन्य सौधर्म देवलोक में

शब्दार्थ प्रकार के प० प्रमत्त अ० अप्रमत्त ते० जो अ० अप्रमत्त संयति ते० उनकों ए० एक मा० मायाप्रत्ययिकी क्रिया जे० जो प० प्रमत्त संयति ते० उनको दो० दोक्रिया आं० आरंभिकी मा० मायाप्रत्ययिकी जे० जो सं० संयतासंयति ते० उनको आ० पहिली ति० तीन कि० क्रिया अ० असंयति को च० चारक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांचक्रिया स० समामिथ्यादृष्टि को पं० पांचक्रिया ॥ १३ ॥ वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक ज० जैसे अ० असुरकुमार न० विशेष वे० वेदना में णा० नानाप्रकार मा० मायी मि०

मूल अपमत्त संजयाए, ॥ तत्थणं जे ते अपमत्तसंजया तेसिणं एगा मायावत्तिया किरिया कज्जइ । तत्थणं जे ते पमत्तसंजया तेसिणं दो किरिया कज्जइ तं० आरंभियाय मायावत्तियाय. तत्थणं जे ते संजयासंजया तेसिणं आदिमाओ तिण्णि किरियाओ कज्जंति । असंजयाणंचत्तारि किरियाओ कज्जंति मिच्छदिट्ठीणं पंच सम्मामिच्छदिट्ठीण पंच ॥ १३ ॥ वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा अ-

भावार्थ मायाप्रत्ययिकी ऐसी दो क्रियाओं लगती हैं. जो संयतासंयति-श्रावक हैं उन को आरंभिकी माया प्रत्ययिकी व परिग्रहिकी ऐसी तीन क्रियाओं लगती हैं. असंयति को चार क्रियाओं लगती हैं. उपर्युक्त तीन और चौथी अप्रत्याख्यान. मिथ्यादृष्टि व समामिथ्यादृष्टि को पांच क्रियाओं. उपर्युक्त क्रियाओंमें मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी क्रिया पांचवी कही ॥ १३ ॥ वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक को असुरकुमार जैसे कहना. शरीर का अल्पपना व बहुतपना भरने व शरीर की अवगाहना के अनुसार जानना. वेदना विविध

[illegible]

ओ]णियाउयं पकरेइ, मणुस्स देवाउयं पकरेइ ? गोयमा ! णेरइयाउयं पकरेइ, तिरिक्ख मणुस्स देवाउयं पकरेइ ॥ णेरइयाउयं पकरेमाणे जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्को सेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागं पकरेइ, तिरिक्ख जोणियाउयं पकरेमाणे जह- ण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागं पकरेइ, मणुस्साउए वि

[illegible] देव ! असंज्ञी का आयुष्य कितने प्रकार का? असंज्ञी नारक का आयुष्य, असंज्ञी तिर्यंच का आयुष्य, असंज्ञी मनुष्य का आयुष्य, असंज्ञी देव का आयुष्य. अहो भगवन् ! असंज्ञी क्या नारकी का आयुष्य बांधे, तिर्यंच का आयुष्य बांधे, मनुष्य का आयुष्य बांधे, या देव का आयुष्य बांधे? अहो गौतम ! असंज्ञी नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देव का आयुष्य बांधे. असंज्ञी नारकी का आयुष्य बांधे तो जघन्य दश हजार वर्ष [illegible]

शब्दार्थ मिथ्यादृष्टि स० समामिथ्यादृष्टि त० तहां जे० जो स० समदृष्टि ते० वे दु० दोप्रकार के अ० असंयति सं० संयतासंयति त० तहां जे० जो सं० संयतासंयति ते० उनको ति० तीन कि० क्रिया तं० वह ज० जैसे आ० आरंभिकी प० परिग्राहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० असंयति को च० चार मि०

सूत्र रिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! पांचेंदिय तिरिक्खजोणिया, तिविहा प० तं० सम्मादिट्ठी, मिच्छदिट्ठी ! सम्मामिच्छदिट्ठी. तत्थणं जे ते सम्मादिट्ठी ते दुविहा प० तं० असंजयाय, संजयासंजयाय, तत्थणं जे ते संजयासंजया तेसिणं तिण्णि किरियाओ कज्जंति, तंजहा-आरंभिया, परिग्गाहिया, मायावत्तिया. असंज-

भावार्थ शरीरकी अपनी २ अवगाहना जैसे कहना. विकलेन्द्रियादिक को मक्षेप आहार होता है ॥ ११ ॥ तिर्यच पंचेन्द्रिय नारकी जैसे कहना. परंतु क्रिया में जो भेद हैं सो बताते हैं. अहो भगवन् क्या सब तिर्यच पंचेन्द्रिय सरीखी क्रिया वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. किस कारन से ? तिर्यच पंचेन्द्रिय के तीन भेद, सम्यक् दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, व समामिथ्यादृष्टिः उस में जो समदृष्टि हैं उनके दो भेद असंयति व संयतासंयति उस में जो संयतासंयति हैं. उनको तीन क्रिया लगती हैं. १ आरंभिकी, २ पारिग्राहिकी व ३ मायाप्रत्ययिकी, असंयतिको चार, समामिथ्यादृष्टि व मिथ्यादृष्टी को पांच २ क्रियाओं कही

सूत्र

उदीरेंसु, उदीरेंति, उदीरिस्संति, वेदेंसु, वेदेंति, वेदिस्संति। णिज्जरेंसु, णिज्जरेंति, णिज्जरिस्संति गाहा॥ कडे चिए य उवचिए, उदीरिया वेदियाय णिज्जिण्णा॥ आदितिए चउभेया, तियभेया पच्छिमातिण्णि ॥ १ ॥ ३ ॥ जीवाणं भंते! कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? हंता-

...दंडक जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे क० करता है ए० इस का दं० दंडक जा० यावत् वे० वैमानिक ए० ऐसे क० करेंगे ए० यह दं० दंडक जा० यावत् वे० वैमानिक ए० ऐसे क० किये चि० इकट्ठे किये उ० विशेष इकट्ठे किये उ० उदीरे वे० वेदे नि० निर्जरे आ० आदिके ति० तीनके च० चारभेद ति० तीनभेद प० पीछेके ति० तीन के॥३॥ जी० जीव भं० भगवन् कं० कांक्षा मो-

भावार्थ

आश्रित जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करता है, और भविष्यकाल आश्रित जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करेगा, ऐसे ही चौवीस दंडक में जानना. ऐसे ही चय, उपचय, का सामान्य, भूत भविष्य व वर्तमान काल आश्रित जानना. और उदीरणा, वेद व निर्जरा इन तीन बोल को भूत, भविष्य व वर्तमान काल आश्रित चौवीस दंडक पर उतारना ॥ ३ ॥ अहो भगवन्! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? हां गौतम! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है. अहो भगवन्! किस तरह से जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? अहो गौतम! मिथ्यात्व की संगति से या परदर्शन के वचन श्रवण से श्री वीतराग प्ररूपित

**शब्दार्थ** यावत् इ० ऋद्धि ॥ १५ ॥ जी० जीव का ती० अतीत काल आ० कहा हुवा क० कितना सं० संसार सं० संचिठण काल प० प्ररूपा गो० गौतम च० चार प्रकार का सं० संसार संचिठन काल ने० नारकी सं० संसार संचिठन काल ति० तिर्यंच संसार सं० संचिठन काल म० मनुष्य संसार सं० संचिठण काल दे० देवसंसार सं० संचिठण काल ने० नारकी सं० संसार संचिठण काल क० कितना प्रकार का गो० गौतम

**सूत्र** हेसओ भाणियव्वो जाव इड्ढी ॥ १६ ॥ जीवस्सणं भंते तीयद्धाए आदिट्ठस्स कइविहे संसार संचिट्ठण काले पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे संसार संचिट्ठण काले पण्णत्ते, तंजहा णेरइए संसार संचिट्ठण काले, तिरिक्ख जोणिय संसार संचिट्ठण काले, मणुस्स

**भावार्थ** अधिक ऋद्धि का धारक होता है ॥ १६ ॥ सलेशी जीव संसार में रहते हैं इसलिये संसार में रहनेका प्रश्न करते हैं. ÷ अहो भगवन् ! नारकी आदि जीवों को अतीत काल में कितने प्रकार के संसार संचिठनकाल कहे हैं ? अहो गौतम ! उपाधिभेद से एक भव से भवान्तर में रहने की क्रिया का काल के चार भेद कहे हैं. १ नारकी के भव में जीव रहे सो नरक संसार संचिठनकाल २ तिर्यंच के भव में रहे सो तिर्यंच संसार

÷ कितनेक की ऐसी मान्यता होती है कि मनुष्य मरकर मनुष्य व पशु मरकर पशु ही होता है इसका निर्णय यहांपर किया गया है.

चौवीसे ही दंडक में आहारक का वैसे ही दंडकों में दो भंग कहना ॥ ८ ॥ जी० जीव के० भगवन् क० कोनसा इन्द्रिय वर्जे के० बांधे ह० हां गौ० गौतम वं० बांधे क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव क० कोनसा इन्द्रिय वर्जे के० बांधे गो० गौतम प० प्रथम इन्द्रिय जा० यावत् विग्रह

एगिंदियं सरीरं ओगाहणा, तहा गणंतिण्णि ओगाहणा भाणियव्वा, जाव तहामे अणिंत्तं

अणिंत्तं गमणिज्जं जहा ते भंते! पुरओ गमणिज्जं तहाणि इह गमणिज्जं जहाणि इह गमणिज्जं

तहाणि इत्थ गमणिज्जं? हंता गोयमा! जहाण इत्थ गमणिज्जं तहाणि इह गमणिज्जं ॥ ८ ॥ जीवाणं

भंते कस्सा मोहणिज्ज कम्मं बंधंति? हंता गोयमा! बंधंति। कहणं भंते! जीवा कंखा

अर्थात् वही वस्तु उनको ही बताने योग्य है अन्य को बताने योग्य है? यहां पर जैसे चौवीसे के दो आहारक कहे वैसे ही बताने के प्रकार सब आसरता अभिलापे दंडक योग्य है वहां तक दो आहारक कहना. और भी अहो भगवन्! जैसे आप के मन में वह जैसे इन्द्रिय की वस्तु कहती वैसी वह आपके मन में पांचवी इन्द्रियादिक की कहती! और जिस पांचवी इन्द्रियादिक की वस्तु कहती वैसी वह वेदे जैसे पुद्गलादि वस्तु कहती? हां गौतम! जैसे मेरे मन में पुद्गलादिक की वस्तु प्रकाश करता वैसे ही पांचवी इन्द्रियादिक की वस्तु प्रकाश करना और जैसे पांचवी की वस्तु प्रकाश करना वैसे ही इन्द्रिय की वस्तु प्रकाश करना ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! जीव कांक्षा

शब्दार्थ भं० भगवन् प० प्रमाद किं० किससे प० उत्पन्न होवे गो० गौतम जो० जोगसे प० उत्पन्न होवे जो० जोग कि० किससे प० उत्पन्न होवे गो० गौतम वी० वीर्य से प० उत्पन्न होवे वी० वीर्य कि० किससे प० उत्पन्न होवे स० शरीर से

सूत्र मोहणिज्जं कम्मं बंधंति ? गोयमा ! पमाद पच्चयं, जोगनिमित्तंच ॥ सेणं भंते ! पमादे किंपवहे ? गोयमा ! जोगप्पवहे । सेणं भंते ! जोए किंपवहे ? गोयमा ! वीरियप्पवहे। सेणं भंते ! वीरिए किंपवहे ? गोयमा ! सरीरप्पवहे । सेणं भंते सरीरे किंपवहे !

भावार्थ मोहनीय कर्म बांधता है ? हां गौतम ! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म बांधता है. अहो भगवन् ! जीव कैसे कांक्षा ( मिथ्यात्व ) मोहनीय कर्म बांधता है ? अहो गौतम ! प्रमाद प्रत्ययिक व योग निमित्त से. अहो भगवन् ! प्रमाद किस कारन से प्रवर्ते अर्थात् कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! मन प्रमुख योग के व्यापार से प्रमाद उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! योग कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वीर्यांतराय कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न हुवा जो जीव परिणाम उन से योग उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! वीर्य कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वीर्य के दो भेद सकरण वीर्य और अकरण वीर्य. उस में अलेशी केवली समस्त पदार्थ जानने व देखने को वैसेही केवल ज्ञान केवल दर्शन प्रयुंजने को जो अप्रतिघाती परिणाम विशेष भाव होवे उसे अकरण वीर्य कहते हैं उन का यहांपर अधिकार नहीं है. परंतु यहां पर मन वचन काया साधन सलेशीजीव प्रदेशात्मक व्यापार सो सकरण वीर्य ग्रहण कीया है और

सूत्र

...शरीर कि० कैसे प० उत्पन्न होवे जी० जीवसे प० उत्पन्न होवे ए० ऐसे स० होते अ० है उ०
उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ॥२॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् अ०
आत्मा से उ० उदीरे ग० निन्दे सं० संवरे हं० हां गो० गौतम आ० आत्मा से तं० तैसे ही उ० कहना

गोयमा! जीवप्पवहे एवंसइ अत्थि उट्ठाणेइवा, कम्मेइवा, बलेइवा वीरिएइवा पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ १ ॥ सेणूणं भंते, अप्पणाचेव उदीरेइ, अप्पणाचेव गरहइ, अप्पणा चेव संवरइ ? हंता गोयमा ! अप्पणा चेव उच्चारेयव्वं ॥ जंतंभंते । अप्पणा चेव उदीरेइ,

भावार्थ

वह शरीर के व्यापार से होता है. अहो भगवन् ! शरीर कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम जीव से उत्पन्न होवे+ यदि ऐसा होवे तो उत्थान-कार्य साधन के लिये खडे होना, कर्म-गमनादि कर्म करना, बल-शरीर की सामर्थ्यता, वीर्य-उत्साह, पुरुषात्कार-पुरुषका अभिमान, व पराक्रम-कार्य पूर्ण करना, इस में भी जीव की प्रधानता है. ॥२॥ अहो भगवन् ! कर्मबंधादिक में जीव की प्रधानता है तो क्या स्वयंही कर्म की उदीरणा करे, स्वयंही कृत कर्म की निन्दा करे और स्वयंही संवरे, अर्थात् कर्म करे नहीं ? हां गौतम; स्वयंही कर्मकी उदीरणा करे यावत् स्वयं कर्म करे नहीं. अहो भगवन् जब जीव स्वयं उदीरता है, गर्हता है, व संवरता है तो क्या

+ यद्यपि शरीर में कर्म भी कारण है निष्केवल जीव ही कारण नहीं है, तथापि कर्म का कर्ता जीव होने से जीव से शरीर उत्पन्न होना कहा है.

अ०वें अ० आर्य ! इ० आज में वि० स्वस्थान में गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र हो० था स० श्रमणघातक मा० यावत् छ० छद्मस्थ में का० कालकिया तं० उस मू० मूल में अ० मैं अ० आर्य अ० अनादि अ० अनंत दी० दीर्घ चा० चतुर्गतिक सं० संसार में अ० पर्यटन किया ॥ ११३ ॥ तं० इसलिये मा० मत अ० आर्य तु० तुमको के० कोई भ० होवे आ० आचार्य प्रत्यनीक उ० उपाध्याय प्रत्यनीक अ० अपयशकारक अ० अवर्णकारक अ० अकीर्तिकारक मा० मत अ० अनादि अ० अनंत सं० संसार कं० अ० पर्यटन करेगा

अज्जाए गोसाले मंखलिपुत्ते होत्था समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए तं मूलगंचणं अहं अज्जो ! अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसारकंतारं अणुपरियट्टिए, ॥ ११३ ॥ तं मा णं अज्जो ! तुब्भंपि केइ भवतु आयरियपडिणीए उवज्झाय पडिणीए आयरियउवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए मा णं सेवि एवंचेव अणादीयं अणवदग्गं जाव संसारकंतारं अणुपरियट्टिहिति,

जिस से हो सोवेगा वैसा कहेंगे कि अहो आर्यो ! बहुत काल पहिले मैं श्रमण का घातक मंखली पुत्र गोशाला था. यावत् छद्मस्थ में काल कर गया. वहां से मैं अनादि अनंत दीर्घ चतुर्गतिक संसार में परिभ्रमण किया ॥ ११३ ॥ इस लिये अहो आर्यो ! तुम आचार्य उपाध्याय का प्रत्यनीक मत होवो, इन का अपयशकारक, अकीर्तिकारक, अवर्णकारक मत होवो. और इस से जैसे मैंने अनादि अनंत चतु-

शब्दार्थ

उ० उदीरे अ० उदे नहीं आया उ० उदीरणा योग्य क० कर्म उ० उदीरे नो० नहीं उ० उदयान्तर प० पीछे क० कीया कर्म उ० उदीरे जं० जो भं० भगवन् अ० उदे नहीं आया उ० उदीरना योग्य क० कर्म उ० उदीरे तं० उन को उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार पराक्रम से अ० उदे नहीं आया उ० उदीरणा योग्य उ० उदीरे उ० अथवा तं० उन को अ० अनुत्थान अ० अकर्म

सूत्र

भविंयं कम्मं उदीरेइ तंकिं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार परक्कमेणं अणुदिन्नं उदीरणा भविंयं कम्मं उदीरेति. उाहहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं अवीरिएणं, अपुरिसक्कार परक्कमेणं. अणुदिण्णं उदीरणा भाविंयं कम्मं उदीरेइ ? गोयमा ! तं उट्ठाणेणवि, कम्मणवि, बलेणवि, वीरिएणवि, पुरिसक्कार परक्कमेणवि, अणुदिन्नं उदीरणा भाविंयं कम्मं उदीरेइ नो, तं अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं

भावार्थ

उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम से उदीरता है ? अथवा उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम विना उदीरता है ? अहो गौतम ! उत्थान यावत् पराक्रम से उदीरणा के योग्य अनुदित कर्म उदीरता है. परंतु उत्थान यावत् पराक्रम विना उदीरणा के योग्य अनुदित कर्म को नहीं उदीरता है. इस लिये उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम में अस्ति है जिस से उदीरणा योग्य

शब्दार्थ अ० जैसे अ० मैंने ॥ १२४ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ द० दृढ प्रतिज्ञ के० केवली की अं० पास से ए० यह अ० बात सो० सुनकर णि० अवधारकर भी० डरे त० त्रासपाये त० भ्रमित हुवे सं० संसारभय से उ० उद्विग्न द० दृढप्रतिज्ञ के० केवली को वं० वंदना करेंगे ण० नमस्कार करेंगे त० उस ठा० स्थान की आ० आलोचना करेंगे नि० निंदा करेंगे जा० यावत् प० अंगीकार करेंगे ॥ १२५ ॥ त० तब द० दृढ प्रतिज्ञ के० केवली ब० बहुत वा० वर्ष के० केवली प० पर्याय पा० पालकर अ० अपना आ० आयुष्य शेष जा० जानकर भ० भक्त प्रत्याख्यान करेंगे ए० ऐसे ज० जैसे उ०

सूत्र जहाणं अहं ॥१९४॥ तएण ते समणा णिग्गथा दढपइण्णस्स केवलिस्स अंतियं एयमट्ठ सोचाणिसम्म भीया तत्था तसिया संसारभय उव्विग्गा दढ पइण्ण केवलिं वंदिहिति णमंसिहिति तस्स ठाणस्स आलोइएहिति निंदिहिति जाव पडिवज्जेहिति ॥ १९५ ॥ तएणं दढपइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलपरियागं पाउणिहिति २ त्ता अप्पाण आउसेस जाणित्ता भत्तपच्चक्खाहिति, एव जहा उववाइए जाव सव्वदुक्खाणमंत

भावार्थ गतिक संसार में परिभ्रमण किया वैसा परिभ्रमण मत करो ॥ १२४ ॥ उस समय में दृढ प्रतिज्ञ केवली की पास से ऐसा सुनकर अवधार कर श्रमण निर्ग्रंथ डरे, त्रास पाये, संसार से उद्विग्न बने और दृढ प्रतिज्ञ केवली को वंदना नमस्कार कर उस की आलोचना, निंदा यावत् प्रतिक्रमण करने लगे ॥१२५॥ फीर दृढप्रतिज्ञ कुमार बहुत वर्ष पर्यंत केवली पर्याय पालन कर और अपना आयुष्य शेष जानकर भक्त

शब्दार्थ

उ० उत्थान जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रमसे ॥ ११ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० आत्मा से वे० वेदे ग० निन्दे हं० हां गो० गौतम ए० यहां सं० सर्व प० परंपरा ण० विशेष उ० उदेआया वे० वेदे णो० नहीं अ० उदे नहीं आया व० वेदे ए० ऐसे जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम ॥ १२ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० आत्मा से णि० निर्जरे अ० आत्मा से ग० निन्दे हं० हां गो० गौतम ए० यहां स० सर्व प० परंपरा ण० विशेष उ० उदयान्तर प० पीछे क० कीया क० कर्म नि० निर्जरे ए० ऐसे

मूल

॥ ११ ॥ सेणूणं भंते ! अप्पणा चेव वेदेइ, अप्पणा चेव गरहइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि सव्वेवि परिवाडी, णवरं उदिण्णं वेदेइ, णो अणुदिण्णं वेदेइ. एवं जाव पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ १२ ॥ सेणूणं भंते ! अप्पणा चेव णिज्जरेइ अप्पणा चेव गरहइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि सव्वेवि परिवाडी, णवरं उदयाणंतरं पच्छा कडं कम्मं

भावार्थ

कहना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जीव स्वयं वेदता है, स्वयं गर्हता है ? हां गौतम ! यहांपर सब परिपाटी पहिले जैसे कहना. इन में उदय आये हुवे कर्म वेदते हैं इतना ही विशेष है और पुरुषात्कार पराक्रमवाला पहिले जैसे कहना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या स्वयं कर्म की निर्जरा करता है व गर्हा करता है ? हां गौतम ! यहांपर उदयान्तर समय पश्चात् कृतकर्म निर्जरे इतना विशेष जानना

मूल

गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव तदुभयाहिगरणीवि ॥ एवं जाव वेमाणिए ॥ ७ ॥ जीवाणं भंते ! अधिगरणं किं आयप्पओग णिव्वत्तिए, परप्पओग णिव्वत्तिए तदुभयप्पओग णिव्वत्तिए ? गोयमा ! आयप्पओगणिव्वत्तिएवि, परप्पओगणिव्वत्तिएवि, तदुभयप्पओगणिव्वत्तिएवि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव तदुभयप्पओग णिव्वत्तिएवि॥ एवं जाव वेमाणियाणं॥ ८ ॥ कइणं भंते ! सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा! पंचसरीरगा पण्णत्ता, तंजहा-ओरालिय जाव कम्मए ॥ ९॥

भावार्थ

यावत् उभय के अधिकरणवाला जीव है. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जीव अधिकरण को अपने शरीर प्रयोग से बनाता है, अन्य के शरीर प्रयोग से बनाता है अथवा उभय के शरीर प्रयोग से बनाता है ? अहो गौतम ! अपने शरीर प्रयोग से बनाता है, पर के शरीर प्रयोग से बनाता है व उभय के शरीर प्रयोग से बनाता है, अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जीव आत्मप्रयोग से अधिकरण बनाता है यावत् उभयप्रयोगसे अधिकरण बनाता है ? अहो गौतम! अविरति आश्री इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् उभय के शरीर प्रयोग से अधिकरण बनाता है ऐसे ही वैमानिक पर्यंत चौवीस दंडक का जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! शरीर कितने कहे ? अहो गौतम ! शरीर पांच कहे. जिन के नाम. १. उदारिक, २. वैक्रेय ३ आहारक ४ तेजस और ५. कार्माण ॥ ९ ॥ अहो भगवन् !

अंगीकार करे गो० गौतम बा० बालवीर्य पने उ० अंगीकार करे णो० नहीं पं० पंडित वीर्यपने नो० नहीं बा० बाल-पंडित वीर्यपने ॥ २ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मो० मोहनीय क० कीये क० कर्म के उ० उदयमें अ० अतिक्रमे हं० हां अ० अतिक्रमे से० वह भं० भगवन् जा० यावत् बा० बाल पंडित वीर्य पने अ० अतिक्रमे

रियत्ताए उवट्ठाएज्जा णो पंडिय वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, णो बाल पंडिय वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥ २ ॥ जीवेणं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिन्नेणं अवक्कमेज्जा? हंता अवक्कमेज्जा. से भंते ! जाव बालपंडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? गोयमा ! बाल वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, नो पंडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा. सिय बाल पंडिय

वीर्य व बाल पंडित वीर्य से अंगीकार नहीं करता है ॥ २ ॥ अब अपक्रमण सो पीछा पडना उस संबंध में प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! जीव मोहनीय कर्म के उदय से अपक्रमता है, उपर के गुणस्थान पर गया हुवा पीछा पडता है ? हां गौतम! जीव मोहनीय कर्म के उदय से उत्तम गुणस्थान से हीन गुणस्थान को जाता है. अहो भगवन् ! क्या वीर्य सहित जाता है या वीर्य रहित जाता है ? अहो गौतम ! वीर्य सहित जाता है. यदि वीर्य सहित जाता है तो क्या बाल वीर्य से, पंडित वीर्य से या बाल पंडित वीर्य से जाता है. ! अहो गौतम ! बाल वीर्य से अपक्रमे परंतु पंडित वीर्य से अपक्रमे नहीं कदाचित् बाल पंडित

सूत्र

कइणं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचइंदिया पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदिए जाव फासिंदिए ॥ १० ॥ कइणं भंते ! जोए पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तंजहा-मणजोए, वयजोए, कायजोए ॥ ११ ॥ जीवेणं भंते ओरालिय सरीरं निव्वत्तिएमाणे किं अधिकरणी अधिगरणं ? गोयमा ! अधिगरणी अधिगरणंपि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अधिगरणीवि अधिगरणंपि ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि ॥ पुढवीकाइएणं भंते ! ओरालिय सरीरं णिव्वत्तिए

भावार्थ

इन्द्रियों कितनी कही ? अहो गौतम ! इन्द्रियों पांच कहीं श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! योग कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! योग तीन कहे हैं. मन योग, वचन योग और काया योग ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीरवाला जीव को क्या अधिकरणी है, या अधिकरण है ? अहो गौतम ! अधिकरणी भी है और अधिकरण भी है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि उदारिक शरीरवाला जीव अधिकरणी है और अधिकरण भी है ? अहो गौतम ! अविरति आश्री. इसलिये ऐसा कहा गया है कि उदारिक शरीरवाला जीव अधिकरणी है और अधिकरण भी है. ऐसे ही पृथ्वीकायादि पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय,

**शब्दार्थ**

ला से अ० अतिक्रमे अ० परात्मा से अतिक्रमे गो० गौतम आ० आत्मासे अ० अतिक्रमे णो० नहीं अ० परात्मासे अ० अतिक्रमे मो० मोहनीय क० कर्म वे० वेदता से० वह क० कैसे ए० यह भं० भगवन् पु० पहिले गो० गौतम पु० पहिले से वह ए० यह ए० ऐसा रो० रुचे इ० पीछे से० वह ए० यह ए० ऐसा णो० नहीं रो० रुचे ए० ऐसे ख० निश्चय ए० यह ॥५॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् ने० नार-

**मूल**

कस्सइ ? गोयमा ! आयाए अवक्कमइ, णो अणायाए अवक्कमइ । मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे । सेकहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! पुव्विं से एयं एवं रोयइ, इयाणिं से एयं एवं नो रोयइ, एवं खलु एयं एवं ॥ ५ ॥ सेणूणं भंते ! नेरइयस्सवा, तिरिक्ख जो-

**भावार्थ**

अहो भगवन् ! जीव अपनी आत्मासे अपक्रमता है या अन्य की आत्मा से अपक्रमता है. अहो गौतम ! जीव मिथ्यात्व मोहनीय व चारित्र मोहनीय वेदता हुवा अपनी आत्मा से अपक्रमे परंतु अन्यकी आत्मा से अपक्रमे नहीं. अहो भगवन् ! मोहनीय कर्म वेदनेवाले को पहिले पंडितपने की रुचि थी और फीर मिथ्यात्व की रुचि हुई वह कैसे ! अहो गौतम ! अपक्रमण से पहिले अपक्रमणकारी जीव इस जीवादि पदार्थ अथवा अहिंसादि वस्तु को जैसे जिनेश्वर भगवान्ने कही वैसे ही श्रद्धता था; अब मोहनीय कर्म के उदय से जीवादि पदार्थ व अहिंसादिक वस्तु को जैसे तीर्थंकरने कही वैसे श्रद्धे नहीं इसलिये निश्चय में यह प्रकार से मोहनीय कर्म वेदते हुवे जीव स्वात्मा से अपक्रमे ॥ ५ ॥ मोहनीय कर्म के अधिकार में

शब्दार्थ दे० देवेन्द्र का अवग्रह रा० राजा का अवग्रह ग० गृहपति का उ० अवग्रह सा० आगार वाले का अवग्रह सा० स्वधर्मी का उ० अवग्रह ॥४॥ जे० जो इ० ये अ० आर्यपने स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ वि० विचरते हैं ए० उन को अ० मैं अ० अनुज्ञादेताहूं त्ति० ऐसा क० करके स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर त० उसी दि० दीव्य जा० यान विमानपे दु० आरूढ होकर जा० जिस दि० दिशि में से पा० आया ता० उस दि० दिशि में प० पोछागया ॥ ५ ॥ भं० भगवन् भ० भगवान गो० गौतम स०

मूल ग्गहे, गहवइउग्गहे, सागारियउग्गहे, साहम्मिय उग्गहे ॥ ४ ॥ जे इमे अज्जत्ताए समणा णिग्गंथा विहरंति, एएसिणं अहं उग्गहं अणुजाणामी तिकट्टु ॥ समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता तमेवदिव्वं जाणविमाणं दुरूहइ, दुरूहइत्ता जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ ५ ॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं

भावार्थ अहो भगवन् ! अवग्रह कितने कहे हैं ? अहो शक्र ! अवग्रह के पांच भेद कहे हैं, जिन के नाम, १. देवेन्द्र का अवग्रह २ राजा का अवग्रह ३ गृहपति का अवग्रह ४ आगारी का अवग्रह और ५ स्वधर्मी का अवग्रह ॥ ४ ॥ भगवंत महावीर स्वामी से ऐसा सुनकर इन्द्र बोला कि अहो भगवन् ! जो श्रमण निर्ग्रंथ यहां पर आर्यपने विचरते हैं उन सब को मैं अवग्रह देता हूं यावत् अच्छा जानता हूं, ऐसा कहकर श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर उस ही पालक विमान में बैठकर जिस दिशि में से आए थे

शब्दार्थ

मोक्ष ए० ऐसे म० मैंने दु० दोमकारे क० कर्म प० प्रदेश प०प्रदेश कर्म अ० अनुभाग कर्म त० तहां जं० जो प० प्रदेश कर्म तं० उस को णि० निश्चय वे० वेदे जं० जो अ० अनुभाग कर्म तं० उस को अ० कित. नेक वे० वेदे अ० कितनेक नो० नहीं वे० वेदे णा० जाना अ० अरिहंतने सु० सुना अ० अरिहंतने वि० विशेषजाना अ० अरिहंतने इ० इस कर्म को अ० यह जीव उ० उदय आये वे० वेदना वे० वेदेगा अ० जैसे कर्म अ० बांधे हैं ज० जैसे तं० उनको भ० भगवन्तने दि० देखे त० वैसे प० परिणमेंगे से० इस

सूत्र

दुविहे कम्मे पण्णत्ते तंजहा, पएसकम्मेय, अणुभागकम्मेय । तत्थणं जं तं पएसकम्मं तं नियमा वेदेइ, तत्थणं जं तं अणुभाग कम्मं तं अत्थेगइयं वेदेइ अत्थेगइयं नो वेदेइ णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया, इमं कम्मं अयंजीवे अब्भोवगमियाए वेयणाए वेयइस्सइ, इमंकम्मं अयं जीवे उवक्कामियाए वेयणाए वेयइस्सइ, अहाकम्मं अहाणि

भावार्थ

शादिक अनेक प्रकार से भिन्न प्रकार के विभाग करके जाने हैं, अरिहंत को 'यह कर्म है, यह जीव है' ऐसा प्रत्यक्ष है. प्रवज्यों काल से लेकर ब्रह्मचर्य भूमिशयन, केशलोचनादिक का अंगीकार से निवर्तना सो अभ्युपगमिकी वेदना उस को यह जीव वेदेगा. स्वयमेव उदय में आये हुवे अथवा उदीरणा से उदय में लाये हुवे कर्मों की वेदना सो औपक्रमिकी वेदना, उस को यह जीव वेदेगा. जैसे कर्म बांधे हैं, जैसे कर्म के देश कालादि है और जैसे २ भगवन्तने कर्म देखे वैसे २ परिणमेंगे. इसलिये अहो गौतम !

शब्दार्थ श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोला जं० जो भ० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा तु० आप को ए० ऐसा व० बोला स० सत्य ए० यह अ० अर्थ हं० हां स० सत्य ए० यह अ० अर्थ ॥ ६ ॥ स० शक्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा किं० क्या स० सम्यग्वादी मि० मिथ्यावादी गो० गौतम स० सम्यग्वादी णो० नहीं मि० मिथ्यावादी ॥ ७ ॥ स० शक्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा किं० क्या स० सत्य भा० भाषा भा० बोलते हैं मो० मृषा

सूत्र भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता एवं वयासी-जंणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया तुब्भे एवं वदाति सच्चेणं एसमट्ठे ? हंता सच्चेणं ॥ ६ ॥ सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया किं सम्मावादी मिच्छावादी? गोयमा ! सम्मावादी णो मिच्छावादी ॥७॥ सक्केणं भंते! देविंदे देवराया किं सच्चं भासं भासइ, मोसं भासं भासइ, सच्चा मोसं

भावार्थ उसी दिशि में चले गये ॥ ५ ॥ भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र देवराजाने आपको जो बात कही, वह क्या सत्य है ? हां गौतम ! वह बात सत्य है ॥६॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र क्या सम्यक्वादी है या मिथ्यावादी है ? अहो गौतम ! वह सम्यक्वादी है परंतु मिथ्यावादी नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र देवराजा क्या सत्य भाषा बोलता है, मिथ्या भाषा बोलता है, सत्यमृषा भाषा बोलता है या असत्य मृषा भाषा बोलता है ? अहो

शब्दार्थ हं० हां गो० गौतम तं० तैसे व० कहना ए० यह भं० भगवन् पो० पुद्गल अ० अनागत में अ० अनंत सा० शाश्वत स० काल भ० होगा इ० ऐसा व० कहना हं० हां गो० गौतम तं० तैसे ही उ० कहना ए० ऐसे खं० स्कन्ध में ति० तीन आ० आलापक ॥ ७ ॥ ए० ऐसे जी० जीव में ति० तीन आ० आलापक भा० कहना ॥ ८ ॥ छ० छद्मस्थ भं० भगवन् म० मनुष्य अ० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत

सूत्र अणागयमणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया? हंता गोयमा ! तंचेव उच्चारेयव्वं ॥ एवं खंधेणवितिण्णि आलावगा ॥ ७ ॥ एवं जीवेणवि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ॥ ८ ॥ छउमत्थेणं भंते ! मणूसे तीतमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं,

भावार्थ कहना ? हां गौतम ! वर्तमान काल में सब पुद्गल शाश्वत है. अहो भगवन् ! अनागत काल में सब पुद्गल अनंतपना से शाश्वत रहेंगे ? हां गौतम ! सब पुद्गल शाश्वत रहेंगे. (परमाणु पुद्गल का संयोग मीलने से स्कंध होता है उन पर भी तीन आलापक जानना ॥ ७ ॥ पुद्गल का प्रतिपक्षी जीव है इस लिये जीव का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! अतीत काल में जीव था ? अहो गौतम ! जैसे तीन काल के तीन आलापक पुद्गल के कहे वैसे ही भूत, भविष्य व वर्तमान काल की अपेक्षा से जीव के भी तीन आलापक जानना ॥ ८ ॥ अब जीव के अधिकार से उद्देशा के अंत तक यथोत्तर प्रधान जीव की वक्तव्यता करते हैं. अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य अतीत, अनंत व शाश्वत काल में संपूर्ण शुद्ध संयम से,

१. इसमें केवल ज्ञान व अवधिज्ञान ऐसे दोनों ज्ञान रहितको लेना क्योंकि अवधिज्ञानका अधिकार आगेआवेगा

कृत आ० आहारोपचित पो० पुद्गल बो० शरीरोपचित पो० पुद्गल क० कलेवरोपचित पो० पुद्गल त० त० तैसे ते० वे पो० पुद्गल प० परिणमते हैं ण० नहीं हैं अ० अचैतन्यकृत क० कर्म स० श्रमण आ० आयुष्मन् दु० दुःस्थान दु० दुःशय्या दु० खराब स्वाध्याय त० तैसे ते० वे पो० पुद्गल प० परिणमते हैं

सूत्र — चेयकडाकम्मा कज्जंति णो अचेयकडाकम्मा कज्जंति ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव कज्जंति ? गोयमा! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोंदिचिया पोग्गला, कडेवरचिया पोग्गला, तहा२णं ते पोग्गला परिणमंति, णत्थि अचेयकडा कम्मा ॥ समणाउसो ! दुट्ठाणेसु, दुस्सेज्जासु, दुण्णिसीहियासु तहा २ णं ते पोग्गला परिणमंति

भावार्थ — अहो गौतम ! जीव चैतन्य कृत कर्म करते हैं परंतु अचैतन्य कृत कर्म नहीं करते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् अचैतन्य कृत कर्म नहीं करते हैं ? अहो गौतम ! जीवों को आहाररूपपने संचित पुद्गल, शरीर रूप पुद्गल व कलेवर रूप पुद्गल उन आहारादिक के लिये परिणमे इसलिये अचैतन्य कृत कर्म नहीं है. अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! दुष्ट स्थान, दुष्ट शय्यासन, शीत आतापादि युक्त कायोत्सर्ग में दुःखोत्पत्तिरूप हो असातारूप परिणमे इसलिये भी अचैतन्य कृत कर्म नहीं है. अहो आयुष्यवन्त श्रमणो ! ज्वरादि रोगांतक कष्ट व मरणांतिक कारण रूप होवे, संकल्प विकल्प भी

शब्दार्थ

हैं आ० यावत् स० सब दु० दुःखों का अं० अंत क० किया क० करते हैं क० करेंगे से० वह ते० इस लिये गो० गौतम जा० यावत् स० सब दु० दुःखों का अं० अंतक्रिया प० वर्तमान में ए० ऐसे न० विशेष नि० सिझते हैं भा० कहना अ० अनागत में ए० ऐसे न० विशेष सि० सिझेंगे भा० कहना ॥ ९ ॥ ज० जैसे छ० छद्मस्थ त० तैसे अ० अवधि त० तैसे प० परमावधि ति० तीन २ आ० आलापक भा० कहना ॥ १० ॥ के० केवली भं० भगवन् म० मनुष्य ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत स०

मूल

ते उप्पन्न नाणदंसणधरा अरहा जिणे केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झंति, बुज्झंति, मुचंति, परिनिव्वायंति, जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिंसुवा करितिवा करिस्संतिवा से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव सव्व दुक्खाणमंतं करिंसु । पडुप्पन्नेवि एवं चेव, नवरं सिज्झंति भाणियव्वं. अणागएवि एवंचेव, नवरं सिज्झिस्संति भाणियव्वं ॥ ९ ॥ जहा छउमत्थो तहा आहोहिओवि, तहा परमोहिओवि तिन्नितिन्नि आलावगा भाणियव्वा ॥ १० ॥ केवलीणं भंते ! मणूसे तीतमणंतं सासयं समयं जाव अंतं करेंसु ? हंता

भावार्थ

धारक जिन हुवे पीछे सिझते हैं, बुझते हैं व निर्वाण को प्राप्त होते हैं यावत् सब दुःखों का अंत किया, करते हैं व करेंगे. इसलिये अहो गौतम ! सब दुःखों का अंत किया वगैरह वर्तमान काल में सिझते हैं व भविष्य काल में सिझेंगे कहना शेष सब पहिले जैसे कहना ॥ ९ ॥ जैसे छद्मस्थ का कहा वैसे ही अवधि व परम अवधिज्ञानी का जानना ॥ १० ॥ अब केवल ज्ञानी की पृच्छा करते हैं. अहो

 

शब्दार्थ ण० नहीं है अ० अचैतन्यकृत क० कर्म आ० कष्टकारी व० वध के लिये हो० होते हैं सं० संकल्प व० वध के लिये हो० होते हैं म० मरणांत से० अथ व० वध के लिये हो० होते हैं त० तैसे तं० वे पो० पुद्गल प० परिणमते हैं ण० नहीं है अ० अचैतन्यकृत क० कर्म ते० इसलिये जा० यावत् क० कर्म क० करते हैं ए० ऐसे णे० नारकी को ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक को ॥ १६ ॥ २ ॥ *

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितनी भं० भगवन् क० कर्म प्रकृतियों प० प्ररूपी

सूत्र णत्थि अचेयकडा कम्मा ॥ समणाउसो ! आयंके से वहाए होंति, संकप्पे सेवहाए होंति, मरणंते से वहाए होंति, तहा तहाणं ते पोग्गला परिणमंति, णत्थि अचेयकडा कम्मा ॥ से तेणट्ठेणं जाव कम्मा कज्जंति ॥ एवं णेरइयाणवि, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ सोलसमस्स वितिओ उद्देसो सम्मत्तो॥ १६॥२॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-कइणं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ

भावार्थ जीव को मरणांतिकादि कारण होवे उस प्रकार पुद्गल परिणमे इसलिये अचैतन्य कृत कर्म नहीं. परंतु चैतन्य कृत कर्म करता है. इसलिये यावत् कर्म करे. यह कथन नरक से लगाकर वैमानिक पर्यंत चौविस दंडक का जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह सोलहवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १६ ॥ २ ॥

दूसरे उद्देशे में कर्म का कथन किया. आगे भी उस का ही विशेष वर्णन करते हैं. राजगृह नगर के

शब्दार्थ

अं० चरिम शरीरी स० सर्व दुःख का अं० अंतक्रिया क० करता है क० करेगा स० सर्व ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दं० दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं जा० यावत् अं० अंत क० करेंगे हं० हां गो० गौतम ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत जा० यावत् अं० अंत करेंगे ॥ १२ ॥ से० वह भं० भगवन् उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली अ० चाहिए उतना व० कहना हं० हां गो० गौतम उ० उत्पन्न

सूत्र

मंतं करिंसुवा, करिंतिवा, करिस्संतिवा ॥ सव्वेते उप्पण्ण नाण दंसण धरा अरहा जिणे केवली भवित्ता, तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंतं करिस्संतिवा ? हंता गोयमा! तीत मणंतं सासयं जाव अंतंकरिस्संतिवा ॥ १२ ॥ सेणूणं भंते ! उप्पण्ण नाण दंसण धरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा ! उप्पण्ण

भावार्थ

काल के अनंत शाश्वत समय में सिझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक, अरिहंत जिन केवली ही संपूर्ण ज्ञानवाले हुवे? उन से अधिक ज्ञान प्राप्त करने को अन्य कोई भी समर्थ नहीं है ? हां गौतम ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक अरिहंत जिन केवली ही संपूर्ण ज्ञानवाले हैं अन्य कोई इस से अधिक ज्ञानी नहीं है. अहो भगवन् ! आपने कहा

गो० गौतम अ० आठ क० कर्म प्रकृतियों प० प्ररूपी तं० तद्यथा णा० ज्ञानावरणीय जा० यावत् अं० अंतराय ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक सत्र ॥ १ ॥ सत्र ॥ २ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवंत

सूत्र

कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ तंजहा-णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं एवं जाव वेमाणियाणं ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदमाणे कइ कम्मपगडीओ वेदेइ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ एवं जहा पण्णवणाए वेयावेउद्देसओ सोचेव णिरवसेसो भाणियव्वो ॥ वेदाबंधोवि तहेव ॥ बंधावेदोवि तहेव बंधाबंधोवि तहेव भाणियव्वो, जाव वेमाणियाणंति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ! जाव विहरइ ॥ २ ॥ तएणं समणे

भावार्थ

गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! कर्मप्रकृतियों कितने प्रकार की कही हैं ? अहो गौतम ! आठ कर्म प्रकृतियों कही. १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय यावत् अंतराय. ऐसे ही वैमानिक तक कहना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म वेदता हुवा कितनी कर्म प्रकृतियों वेदे ? अहो गौतम ! आठ कर्म प्रकृतियों वेदे. ऐसे ही जैसे पन्नवणा में वेदका वेदका कहा वैसे ही यहां निरवशेष सब कहना. वेद बंध, बंधवेद २ बंध बंध यह सब ऐसे ही जानना. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर भगवान्

शब्दार्थ म० शत सहस्र गो० गौतम ती० तीस नरकावास स० शत सहस्र ति० तीस प० पचीस प० पंदरह द० दश स० शत सहस्र ति० तीन ए० एक पं० पांचकम पं० पांच अ० अनुत्तर न० नरक ॥ १ ॥ के० कितने भं० भगवन् अ० असुर कुमार के आ० आवास स० शत सहस्र चो० चौसठ अ० असुर कुमार के च० चौराशी हो० है ना० नागकुमार के बा० बोहत्तर सु० सुवर्ण कुमार के वा० वायु कुमार के छ० छन्नवे

सूत्र सयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! तीसं निरयावास सयसहस्सा प० ॥ गाहा--तिसाय पण्णवीसा, पन्नरस दसेवय सयसहस्सा ॥ तिण्णेगं पंचूणं, पंचेव अणुत्तरा निरया ॥ १ ॥ केवइयाणं भंते ! असुरकुमारावास सयसहस्सा प० ? एवं--चोसट्ठी असुराणं, चउरासीईय होइ नागाणं ॥ बावत्तरि सुवन्नाणं, वाउकुमाराण छण्णउई ॥ १ ॥

भावार्थ पहिली नरक में कितने लाख नरकावास कहे हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में तीस लाख नरकावास कहे हैं. दूसरी शर्कर प्रभा में पचीस लाख नरकावास कहे हैं. तीसरी बालु प्रभा में पंदरह लाख, चौथी पंकप्रभा में दश लाख, पांचवी धूम्रप्रभा में तीन लाख, छठी में पांच कम एक लाख, और सातवी में पांच नरकावास कहे हैं. सब मीलकर चौरासी लाख नरकावास होते हैं. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार के कितने लाख भवन कहे हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार के चौसठ लाख भवन हैं उनमें से चौतीस लाख दक्षिण में व ३० लाख उत्तर में हैं, नागकुमार के चौरासी लाख

शब्दार्थ म० महावीर अ० अन्यदा क० कदापि रा० राजगृह ण० नगर के गु० गुणशील चे० उद्यान से प० नीकलकर ब० बाहिर ज० जनपद वि० विहार वि० विचरने लगे ॥ ३ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में उ० उल्लुकातीर ण० नगर हो० था त० उस उ० उल्लुकातीर ण० नगर की ब० बाहिर उ० ईशान कौन में ए० यहां ए० एक जम्बू चे० उद्यान ॥ ४ ॥ अ० अनगार भा० भावितात्मा छ० छठ के

सूत्र भगवं महावीरे अण्णयाकयावि रायगिहाओ णयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमइत्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ ३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयातीरे णामं णयरे होत्था, वण्णओ ॥ तस्सणं उल्लुयातीरस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थणं एगजंबुए णामं चेइए होत्था, वण्णओ ॥४॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयावि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव एगजंबुए समोसढे जाव परिसा पडिगया ॥४॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं

भावार्थ स्वामी विचरनेलगे. ॥ २ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर राजगृह नगरके गुणशील न में से नीकलकर बाहिर विचरने लगे ॥३॥ उस काल उस समय में उल्लुया तीर नाम का नगर था वर्णन योग्य था. उस उल्लुका तीर नगर की बाहिर ईशान कौन में एकजंबुक नाम का उद्यान था. ॥ ४ ॥ उस समय में श्रमण भगवंत महावीर एकदा पूर्वानुपूर्वि चलते ग्रामानुग्राम विचरते पावत्

श० शरीरवाला का० यावत् ने० नारकी के स० शरीर कि० क्या सं० संघयणी गो० गौतम छ० छसंघयण में से अ० असंघयणी ने० हड्डी नहिं ने० धमनी नहिं ने० स्नायु नहिं जे० जो पो० पुद्गल अ० अनिष्ट अ० अकान्त अ० अप्रिय अ० अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमनाम ए० उनको स० शरीर सं० संघयणपने प० परिणमते हैं इ० इस भं० भगवन् जा० यावत् छ० छसंघयण में से अ० असंघयणी व० वर्तते ने० नारकी

सिंजिसरीरया भाणियव्वा ॥ १ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए जाव नेरइयाणं सरीरया किं संघयणी प० ? गोयमा ! छण्हंसंघयणाणं असंघयणी, नेवट्ठी, नेवछिरा, नेवण्हारुणि; जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता, अप्पिया, असुहा, अमणुण्णा, अमणामा, एएसिं सरीर संघायत्ताए परिणमंति ॥ इमीसेणं भंते ! जाव छण्हं संघयणाणं असंघयणे वट्टमाणाणं नेरइया किं कोहोवउत्ता सत्तावीसं भंगा ॥ १० ॥

भेदरूपवाले कहे हैं. अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा नरक के प्रत्येक नरकावास में रहनेवाले नारकी के शरीर क्या संघयणी है ? अहो गौतम ! वज्रऋषभनाराच आदि छ संघयण में से किसी प्रकार का संघयण नारकी के शरीर को नहीं होता है. क्यों की उन के शरीर में अस्थि नाडी व नसों वगैरह नहीं है. जो पुद्गल अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय अशुभ, अमनोज्ञ व अमनाम हैं वे शरीर के संघयणपने परिणमते हैं. अहो भगवन् ! इस असंघयणी नारकी क्या क्रोधी ज्यादा हैं यावत् लोभवन्त ज्यादा हैं ? अहो



मूल

भावार्थ

उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ॥२॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् अ० आत्मा से उ० उदीरे ग० निन्दे सं० संवरे हं० हां गो० गौतम आ० आत्मा से तं० तैसे ही उ० कहना

गोयमा! जीवप्पवहे एवंसइ अत्थि उट्ठाणेइवा, कम्मेइवा, बलेइवा वीरिएइवा पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ १ ॥ सेणूणं भंते, अप्पणाचेव उदीरेइ, अप्पणाचेव गरहइ, अप्पणा चेव संवरइ ? हंता गोयमा! अप्पणा चेव उच्चारियव्वं ॥ जंतंभंते। अप्पणा चेव उदीरेइ,

वह शरीर के व्यापार से होता है. अहो भगवन् ! शरीर कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम जीव से उत्पन्न होवे+ यदि ऐसा होवे तो उत्थान-कार्य साधन के लिये खडे होना, कर्म-गमनादि कर्म करना, बल-शरीर की सामर्थ्यता, वीर्य-उत्साह, पुरुषात्कार-पुरुषका अभिमान, व पराक्रम-कार्य पूर्ण करना, इस में भी जीव की प्रधानता है. ॥२॥ अहो भगवन् ! कर्मबंधादिक में जीव की प्रधानता है तो क्या स्वयंही कर्म की उदीरणा करे, स्वयंही कृत कर्म की निन्दा करे और स्वयंही संवरे, अर्थात् कर्म करे नहीं ? हां गौतम; स्वयंही कर्मकी उदीरणा करे यावत् स्वयं कर्म करे नहीं. अहो भगवन् जब जीव स्वयं उदीरता है, गर्हता है, व संवरता है तो क्या,

+ यद्यपि शरीर में कर्म भी कारण है परन्तु केवल जीव ही कारण नहीं है, तथापि कर्म का कर्ता जीव होने से जीव से शरीर उत्पन्न होना कहा है.

मूलार्थ — कितनी ले० लेश्या गो० गौतम ए० एक का० कापोतलेश्या इ० इस भं० भगवन् र० रत्नप्रभा जा० यावत् का० कापोत लेश्या में व० वर्तते स० सत्तावीस भं० भांगा ॥१२॥ इ० इस भं० भगवन् जा० यावत् किं० क्या स० समदृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि स० समामिथ्यादृष्टि गो० गौतम ति० तीन इ० इस जा० यावत् स० सम्यक् दर्शन में व० वर्तते ने० नारकी स० सत्तावीस भांगा ए० ऐसे मि० मिथ्या दर्शन में स० समामि-

सूत्र — भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं कइलेस्साओ प० ? गोयमा ! एगा काउलेस्सा प० । इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए जाव काउलेस्साए वट्टमाणा सत्तावीसं भंगा ॥ १२ ॥ इमीसेणं भंते ! जाव किं सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! तिण्णिवि ॥ इमीसेणं जाव सम्मदंसणे वट्टमाणा नेरइया सत्तावीस भंगा एवं मिच्छदंसणेवि सम्मामिच्छ दंसणे असीइ भंगा ॥ १३ ॥

भावार्थ — भगवन् ! रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में नारकी को कितनी लेश्याओं कही ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी को एक मात्र कापुत लेश्या कही. कापुत लेश्यावाले नारकी को भी क्रोधादि कषाय के सत्तावीस भांग जानना ॥ १२ ॥ भावना दृष्टिद्वार. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में क्या नारकी समदृष्टि, मिथ्या दृष्टि या समामिथ्यादृष्टि हैं ? अहो गौतम ! सम, मिथ्या, व समामिथ्या ऐसे तीनों दृष्टि हैं. सम दृष्टि व मिथ्या दृष्टिवाले नारकी में सत्तावीस भांग व समामिथ्या दृष्टिवाले नारकी में अस्सी भांग

यहां पुरवाले बा० बाहिर के पो० पुद्गल अ० ग्रहण किये विना प० समर्थ आ० आने को णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक ए० ऐसा ए० इस अ० अभिलाप से ग० जाने को ए० ऐसे भा० बोलने को वि० प्रश्न पूछने को उ० उन्मेष करने को नि० निमेष करने को आ० संकुचित करने को प० पसारने को ठा० स्थान से० शैय्या नि० निषिद्या वे० जानने को वि० वैक्रेय करने को प० परिचारणा करने को जा० यावत् हं० हां प० समर्थ इ० ये अ० आठ उ० संक्षिप्त प०

सूत्र

जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू आगमित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे देवेणं भंते! महिड्ढिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू आगमित्तए ! हंता पभू देवेणं भंते ! महिड्ढिए एवं एएणं अभिलावेणं गमित्तए २, एवं भासित्तएवा, वियागरित्तएवा ३, उंमिसावेत्तएवा निम्मिसावेत्तएवा ४, आउंट्टावेत्तएवा पसारेत्तएवा ५, ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा, वेत्तित्तएवा ६, एवं विउव्वित्तएवा ७, एवं परि-

भावार्थ

वाला देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना क्या आने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना यहां आने को समर्थ नहीं है. अहो भगवन् ! महर्द्धिक व महासुखवाला देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर क्या यहां आ सकते हैं ? हां गौतम ! बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर यहां आ सकते हैं. जैसे आने का आलापक कहा वैसे ही जाने का, बोलने का उत्तर देने का, आंखों ढकने का, आंखों खोलने का, संकुचन व पसारन करने का, शैय्या, ध्यान व कायोत्सर्ग

वचन जोगी का० कायजोगी गो० गौतम ति० तीन इ० इस जा० यावत् म० मनजोग में व० वर्तते स० सत्तावीस भांगा ए० ऐसे का० कायजोग में ॥ १५ ॥ इ० इस जा० यावत् ने० नारकी सा० साकार युक्त अ० अनाकार युक्त गो० गौतम सा० साकारयुक्त गो० गौतम सा० साकारयुक्त अ० अनाकारयुक्त इ० इस जा० यावत् सा० साकार युक्त में वर्तते स० सत्तावीस भांगा ए० ऐसे अ० अनाकारयुक्त में स०

सूत्र

गोयमा ! तिण्णिवि ॥ इमीसेणं जाव मणजोए वट्टमाणा सत्तावीसं भंगा । एवं कायजोए ॥१५॥ इमीसेणं जाव नेरइया किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ इमीसेणं जाव सागारोवउत्ते वट्टमाणा सत्तावीसं भंगा । एवं अणागारोवउत्तेवि सत्तावीसं भंगा ॥१६॥ एवं सत्तवि पुढवीओ नेयव्वाओ

भावार्थ

प्रभा के नारकी क्या मनयोगी, वचनयोगी व काययोगी है ? अहो गौतम ! तीनों योगवाले हैं. इन तीनों योगवाले नारकी को सत्तावीस भांगे जानना ॥ १५ ॥ अब दशवा उपयोगद्वार. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा के नारकी क्या साकारोवउत्त हैं या अनाकारोवउत्ता हैं ? अहो गौतम ! साकारवाले हैं और अनाकारवाले भी हैं. साकार उपयोग युक्त नारकी वैसे ही अनाकार उपयोग युक्त नारकी में क्रोधादि कषाय के सत्तावीस भांगे जानना ॥ १६ ॥ जैसे रत्नप्रभा पृथ्वी पर दशद्वार कहे हैं वैसे अन्य शर्करादि

१ विशेषार्थग्राही ज्ञानोपयोग. २ सामान्यार्थग्राही दर्शनोपयोग.

पदार्थ प्रश्न वा० व्याकरण पु० पुछकर सं० संभ्रांत वं० वंदन में वं० वंदना कर ता० उसी दि० दीव्य जा० यान विमानपे दु० आरूढ होकर जा० जिस दिशी से पा० प्रगट हुवा ता० उसी दिशि में प० पीछा गया ॥ २ ॥ भं० भगवन् भ० भगवान गो० गौतमने स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले अ० अन्यदा भं०भगवन स०शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा दे० आपको वं० वंदना करता है ण० नमस्कार करता है जा० यावत् प० पर्युपासना करता है किं० क्या भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा दे० देवानुप्रिय को अ० आठ सं० संक्षिप्त प० प्रश्नोत्तर

मूल वागरणाइं ८, जाव हंता पभू इमाइं अट्ठ उक्खित्त पसिणवागरणाइं पुच्छइ सं भंतिय वंदणएणं वंदइ वंदइत्ता तमेव दिव्वं जाण विमाणं दुरूहइ दुरूहइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ २ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी अण्णदाणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं वंदइ णमंसइ जाव पज्जुवासइ ॥ किण्णं भंते ! सक्के देविंदे

भावार्थ करने का, वैक्रेय करने का और परिचारणा करने का यों आठ आलापक कहना. ऐसे आठ आलापक वाले प्रश्नों पुछकर संभ्रांत वंदना नमस्कार कर उन ही यान विमान में बैठकर जिस दिशा से आया था वहां पीछा गया ॥ २ ॥ इस समय भगवंत गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोला कि अहो भगवन् ! जब शक्र देवेन्द्र देवराजा आते हैं, तब आपको वंदना नमस्कार यावत्

शब्दार्थ

स्थान प० प्ररूपे गो० गौतम अ० असंख्यात ठि० स्थिति स्थान ज० जघन्य ठि० स्थिति जा० जैसे ने० नारकी न० विशेष प० प्रतिषेध भं० भांगा भा० कहना न० नहीं ना० तैसे हो० हुवे लो० लोभयुक्त मा० मानयुक्त ए० इस ग० गमे से ने० जानना जा० यावत् थ० स्तनित कुमार न० विशेष ना० नाना प्रकार ना० जानना ॥ १८ ॥ अ० असंख्यात पु० पृथ्वी कायावास स० शत सहस्र में ए० एकेक पु० पृथ्वीकाया वास में पु० पृथ्वी काया के के० कितने ठि० स्थिति स्थान गो० गौतम अ० असंख्यात

सूत्र

तहा, नवरं पडिलोमाभंगा भाणियव्वा, सव्वेवि ताव होज्जा लोभोवउत्ताय माणोवउत्तेय, एएणं गमेणं नेयव्वं, जाव थणिय कुमारा नवरं णाणत्तं जाणियव्वं ॥ १८ ॥ असंखेज्जेसुणं भंते ! पुढवीकाइयावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइयावासंसि

भावार्थ

यहां पर उलटे कहना. क्योंकि देवता में लोभ की अधिकता विशेष है. असंयोगी भांगा एक लोभवन्त बहुत द्विसंयोगी भांगे ६ लोभवन्त बहुत मायावन्त एक ऐसे कहना. इसी तरह सत्तावीस भांगे जानना. जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही स्तनित कुमार तक सब भुवनपति का कहना. नरक व असुरकुमारादि भुवनपति में संघयण संस्थान लेश्या वगैरह में जो भिन्नता होवे सो विचार कर कहना ॥ १८ ॥ अब स्थावर का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव के असंख्यात वास में से एकेक आवास में रहनेवाले पृथ्वीकायिक जीव के कितने स्थिति स्थान कहे हैं ? जघन्य स्थिति स्थानक यावत् उत्कृष्ट

पु० पुछकर सं० संप्राप्त वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर जा० यावत् प० पीछा गया गो० गौतमादि स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर भ० भगवान गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे गो० गौतम ते० उस काल ते० उस समय में म० महा शुक्र क० देवलोक में म० महा सामानिक वि० विमान में दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महा सुखवाले ए० एक वि० विमान में दे० देवतापने उ० उत्पन्न हुवे तं० तद्यथा मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्नक अ० अमायी स० सम्यक्दृष्टि उ० उत्पन्नक त० तब से० वह मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्नक दे० देवने मा० मायी समदृष्टि उत्पन्न

सूत्र

देवाणुप्पियं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ, पुच्छइत्ता संभंतियं वंदइ, वंदइत्ता जाव पडिगए, गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्के कप्पे महासामाणि-यविमाणे दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा एगविमाणंसि देवत्ताए उववण्णा, तंजहा मायीमिच्छादिट्ठीउववण्णएय, अमायीसम्मादिट्ठीउववण्णएय ॥ तएणं से

भावार्थ

पर्युपासना करते हैं परंतु आज किस कारन से शक्र देवेन्द्र देवराजा आपको संक्षेप में आठ प्रश्नों पुछकर संभ्रांत चित्त से वंदना नमस्कार कर पीछे चले गये ? श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने कहा कि अहो गौतम ! उस काल उस समय में सातवा महाशुक्र देवलोक में महा सामानिक विमान में महर्द्धिक यावत् महासुखवाले दो देव एक ही विमान में देवतापने उत्पन्न हुए. जिन में एक मायी मिथ्यादृष्टि और

शब्दार्थ दे० देव को ए० ऐसा व० कहा प० परिणमते हुवे पो० पुद्गल णो० नहीं प० परिणत अ० अपरिणत प० परिणमते हैं ति० ऐसा पो० पुद्गल णो० नहीं प० परिणत अ० अपरिणत त० तब से० उस मा० मायी स० सम्यग्दृष्टि उ० उत्पन्नक दे० देवने तं० उस मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उत्पन्नक देव को ए० ऐसा व० कहा प० परिणमते हुवे पो० पुद्गल प० परिणत णो० नहीं अ० अपरिणत प० परिणमते हैं ति० ऐसा

मूल मायीमिच्छदिट्ठीउववण्णए देवे तं अमायीसम्मदिट्ठीउववण्णयं देवं एवं वयासी परिणममाणा पोग्गला णो परिणया, अपरिणया परिणमंतीति पोग्गला णो परिणया अपरिणया ॥ तएणं से अमायीसमादिट्ठीउववण्णए देवे तं मायीमिच्छदिट्ठीउववण्णगं देवं एवं वयासी परिणममाणापोग्गला परिणया णो अपरिणया परिणमंतीति पोग्गला

भावार्थ दूसरा अमायी सम्यग्दृष्टि है. जो मायी मिथ्यादृष्टि देव है उसने अमायी सम्यग्दृष्टिवाले देव को ऐसा कहा कि परिणमते हुए पुद्गलों परिणत नहीं है क्यों कि अतीतकाल व वर्तमान काल का विरोध है. और जो पुद्गल परिणमते हैं वे पुद्गल परिणत नहीं है परंतु अपरिणत है. तब अमायीसम्यग्दृष्टि उत्पन्नदेवने ऐसा कहा कि परिणमते हुवे पुद्गल परिणत हैं परंतु अपरिणत नहीं हैं और जो पुद्गल परिणमते हैं वे परिणत हैं परंतु अपरिणत नहीं हैं यदि परिणाम से परिणत पना न होवे तो सदैव

महा स्वप्न गो० गौतम ती० तीस म० महा स्वप्न ॥ ७ ॥ क० कितने भं० भगवन् स० सब सु० स्वप्न ॥ ८ ॥ ति० तीर्थंकर की माता भं० भगवन् ति० तीर्थंकर ग० गर्भ में व० उत्पन्न ए० इन में से क० कितने म० महा स्वप्न पा० देख कर प० जाग्रत होती हैं गो० गौतम ति० तीर्थंकर की माता मा० ति० तीर्थंकर ग० गर्भ में व० आते ए० इन ती० तीस म० महा स्वप्न में से इ० ये च० चउदह म०

सूत्र

गोयमा ! तीसं महासुविणा पण्णत्ता ॥ ७ ॥ कइणं भंते ! सव्वसुविणा पण्णत्ता ? गोयमा ! बावत्तरिं सव्वसुविणा पण्णत्ता ॥ ८ ॥ तित्थगरमायरोणं भंते ! तित्थगरंसि गब्भं वक्कममाणंसि कइ महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति ? गोयमा ! तित्थगरमायरोणं तित्थगरंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे

भावार्थ

॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! कितने महास्वप्न कहे हैं ? अहो गौतम ? तीस महास्वप्न कहे हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! सब कितने स्वप्न कहे हैं ? अहो गौतम ! सब बहत्तर स्वप्न कहे हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! जब तीर्थंकर अपनी माता के गर्भ में आते हैं, तब उन की माता इन स्वप्नों में से कितने स्वप्न देखकर जाग्रत होती हैं ? अहो गौतम ! जब तीर्थंकर अपनी माता के गर्भ में आते हैं तब उन की माता तीस महा स्वप्न में से चउदह स्वप्न देखकर जाग्रत होती हैं. जिन के नाम. १ गज २ ऋषभ ३ सिंह ४ लक्ष्मी ५ पुष्पमाला ६ चंद्र ७ सूर्य ८ ध्वजा ९ कुंभ १० पद्मसरोवर ११ सागर १२ विमान या

महा स्वप्न पा० देखकर प० जाग्रत होती है तं० तद्यथा ग० गज उ० ऋषभ सी० सिंह जा० यावत् सि० शिखा ॥ ९ ॥ च० चक्रवर्ती की माता भं० भगवन् च० चक्रवर्ती ग० गर्भ में व० आते क० कितने प० महा स्वप्न पा० देख कर प० जाग्रत होती है गो० गौतम च० चक्रवर्ती की मा० माता च० चक्रवर्ती जा० यावत् ए० इन ची० तीस म० महास्वप्न ए० ऐसे ति० तीर्थंकरकी माता जा० यावत् सि० शिखा ॥ १० ॥ वा० वासुदेव माता जा० यावत् व० उत्पन्न होते ए० इन च० चउदह म० महा स्वप्न में से

चउद्दस महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति, तंजहा गय, उसभ, सीह जाव सिहिंच ॥ ९ ॥ चक्कवट्टिमायरोणं भंते ! चक्कवट्टिंसि गब्भं वक्कममाणंसि कइमहासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति ? गोयमा ! चक्कवट्टिमायरो चक्कवट्टिंसि जाव वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं एवं तित्थगर मायरो जाव सिहिंच ॥ १० ॥ वासुदेव मायरो जाव वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे सत्त महासुविणे

भावार्थ ४२ स्वप्न और १४ महास्वप्न ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! चक्रवर्ती गर्भ में आते चक्रवर्ती की माता कितने स्वप्न देखती है ? अहो गौतम ! उक्त चौदह स्वप्न देखती है परंतु चक्रवर्ती की माता कुच्छ मंद स्वप्न देखती है ॥ १० ॥ वासुदेव की माता वासुदेव गर्भ में आते उक्त चउदह महा स्वप्न में

शब्दार्थ उदित होता सू० सूर्य च० चक्षु फा० स्पर्श को ह० शीघ्र आ० आता है अ० अस्त होता जा० यावत् ह० शीघ्र आ० आता है ॥ १ ॥ जा० जितना भं० भगवन् खे० क्षेत्र को उ० उदित होता सू० सूर्य आ० तेजसे स० सब बाजु ओं० प्रकाशे उ० उद्योत करे त० तपे प० प्रभासे अ० अस्त होता ता० उतना खे० क्षेत्र को आ० आताप से स० सब बाजु ओं० प्रकाशे उ० उद्योत करे त० तपे प० प्रभासे

सूत्र जावइयाउणं उवासंतराओ उदगंते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, अत्थमंतेवि जाव हव्वमागच्छइ. ॥ १ ॥ जावइयाणं भंते ! खेत्तं उदयंतसूरिए आयवेणं सव्व ओसमंता ओहासेइ, उज्जोएइ, तवेइ, पभासेइ, अत्थमंतेवियणं सूरिए तावइयंचेव खेत्तं आयवेणं सव्वओसमंता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ ? हंता गोयमा !

भावार्थ ४७२६३ योजन और एक योजन के एकसठिये इक्कीस भाग दूर से दृष्टि में आता है, वैसे उतने ही दूर से अस्त होता हुवा सूर्य दीखता है ॥१॥ अहो भगवन् ! प्राच्यादि छ दिशि व ईशानादि चार विदिशि इन दशों दिशिओं में उदित होता हुवा सूर्य अपने तेजसे जितने क्षेत्र में प्रकाशता है, विशेष प्रकाशता है, तपता है, और जाज्वल्यमान होता है वैसे ही क्या अस्त होता हुवा सूर्य उतने ही क्षेत्र में प्रकाशता है, विशेष प्रकाशता है, तपता है, या जाज्वल्यमान होता है ? हां गौतम ! जितने क्षेत्र में सूर्यका उदय होता, प्रकाशता है यावत् जाज्वल्यमान होता है उतने ही क्षेत्र में अस्त होता है, प्रकाशता है यावत् जाज्वल्यमान होता है.

पदार्थ अ० अन्य सत म० सात म० महास्वप्न पा० देखकर प० जाग्रत होती है ॥ ११ ॥ ब० बलदेव की माता पु० पृच्छा गो० गौतम च० बलदेव की माता अ० यावत् च० चउदह म० महा स्वप्न में से अ० अन्यतर च० चार म० महा स्वप्न पा० देखकर प० जाग्रत होती है ॥ १२ ॥ मं० मंडलिक की माता भं० भगवन् पृ० पृच्छा गो० गौतम मं० मंडलिक की मा० माता जा० यावत् ए० इन च० चउदह म० महास्वप्न अ० अन्यतर ए० एक म० महास्वप्न जा० यावत् प० जाग्रत होती है ॥ १३ ॥ स०

मूल पासित्ताणं पडिबुज्झति ॥ ११ ॥ बलदेवमायरो पुच्छा ? गोयमा ! बलदेवमायरो जाव एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं चत्तारि महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति ॥ १२ ॥ मंडालियमायरोणं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! मंडलियमायरो जाव एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं जाव पडिबुज्झंति ॥ १३ ॥ समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंति०

भावार्थ में किसी सात स्वप्न देखती है ॥ ११ ॥ बलदेव की माता बलदेव गर्भ में आते उक्त चौदह स्वप्न में से किसी चार स्वप्न देखकर जागृत होती है ॥ १२ ॥ मंडलिक गर्भ में आते उसकी माता उक्त चौदह स्वप्न में से किसी एक स्वप्न देखकर जागृत होती है ॥ १३ ॥ स्वप्नाधिकार से श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने देखे

शब्दार्थ

अंगे लो० लोक अ० अलोक त० वैसे जी० जीव अ० अजीव ए० ऐसे भ० भव सिद्धिया जीव अ० अभव सिद्धिया जीव सि० सिद्ध अ० असिद्ध सि० सिद्ध अ० असिद्ध ॥ ११ ॥ पु० पहिला भं० भगवन् अं० अंडा प० पीछे कु० मुरगी पु० पहिली कु० मुरगी प० पीछे अं० अंडा रो० रोहा से० वह अं० अंडा क० कहां से भ० भगवन् कु० मुरगी मे सा० वह कु० मुरगी क० कहां से भं० भगवन् अं० अंडे मे ए० ऐसे रो० रोहा से० वह अं० अंडा सा० वह कु० मुरगी पु० पहिले प० पीछे भी दु० दोनों सा० शाश्वत भाव अ० अनक्रम से

सूत्र

अलोएय, तहेव जीवाय अजीवाय, । एवं भवसिद्धियाय, अभवसिद्धियाय । सिद्धी असिद्धी । सिद्धा असिद्धा ॥ ११ ॥ पुव्विं भंते ! अंडए पच्छाकुक्कुडी, पुव्विं कुक्कुडी पच्छा अंडए? रोहा! सेणं अंडए कओ? भयवं कुक्कुडीओ, साणं कुक्कुडी कओ? भंते ! अंडयाओ ? एवामेव रोहा ! सेयअंडए सायकुक्कुडी, पुव्विंपेते पच्छापेते दुवे

भावार्थ

जीव अजीव, भव सिद्धिया अभव सिद्धिया, सिद्धि असिद्धि, सिद्ध व असिद्ध का जानना ॥ ११ ॥ अब उक्त प्रश्नों की सिद्धि के लिये पुनः रोहक अनगार प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! पहिले अण्डा व पीछे मुर्गी या पहिले मुर्गी व पीछे अण्डा ? भगवन्तने पूछा कि अहो रोहा ! अण्डा कहां से हुवा ? भगवन् ! अण्डा मुर्गी से हुवा. रोहा ! मुर्गी किस से हुई ? भगवन् ! मुर्गी अण्डे से हुई. इसी तरह अहो रोहा ! वही अण्डा, वही मुर्गी पहिले भी थे, और पीछे भी वे दोनों हैं. वे दोनों शाश्वत व अनुक्रम

शब्दार्थ श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ने छ० छद्मस्थ का० काल में अं० अंतिम रात्रि में इ० ये द० दश म० महा स्वप्न पा० देखकर प० जाग्रत हुए तं० तथथा ए० एक म० महा घो० घोर रूप दि० दीप्ति धारन करने वाला ता० ताल पिशाच को सु० स्वप्न में प० पराजित पा० देखकर प० जाग्रत हुए ए० एक म० बडा सु० शुक्ल प० पांखवाला पुं० पुंस्कोकिल ए० एक म० बडा चि० चित्र विचित्र प० पांखों वाला पु० पुंस्कोकिल सु० स्वप्न में पा० देख कर प० जाग्रत हुए ए० एक म० बडी दा० मालाका युगल स०

सूत्र महासुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, तंजहा-एगं चणं महं घोररूवं दित्तधरतालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं सुक्किल पक्खगं पुंसकोइलं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं चित्तविचित्त पक्खगं पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ताणं

भावार्थ हुए स्वप्नों का कथन करते हैं. श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी छद्मस्थ अवस्था का अंतिम रात्रि में दश स्वप्नों देखकर जागृत हुवे १ एक बडा घोररूपवाला दीप्त तालपिशाच को स्वप्न में पराजित करके जागृत हुए २ एक बडा शुक्ल पांखोंवाला पुंस्कोकिल को स्वप्न में देखकर जागृत हुवे ३ एक बडा चित्र विचित्र पांखोंवाला पुंस्कोकिल को स्वप्न में देखकर जागृत हुवे ४ एक बडी रत्नों का माला युगल को स्वप्न में देखकर जागृत हुए ५ एक बडा श्वेत गायों का वर्ग स्वप्न में देखकर जागृत हुए ६ सुगंधित

लिंगया और लिं० लिंग अ०...

सातवीं पु० पृथ्वी ए० कौन लो० लोकान्त में ए० एकान्त में सं० जोडना इ० इन ठा० स्थान में तं० यह ज० आकाश का अंतर वा० तनुवात घ० घनोदधि पु० पृथ्वी दी० द्वीप सा० सागर वा० क्षेत्र ने० अतिशय स० समय क० कर्म ले० लेश्या दि० दृष्टि दं० दर्शन ना० ज्ञान स० संघयण स० शरिर ० उपयोग द० द्रव्य प० प्रदेश प० पर्याय अ० काल किं० क्या पु० पहिले लो० लोकान्त पु० पहिले

चमेय तणुवाए, एवं घणवाए, घणोदहि सत्तमा पुढवी । एवं लोयंते एकेक्के ण एएसु इमेहिं ठाणेहिं तंजहा—उवासं वाय घणउदहि, पुढवी दीवाय सागरा वा- नेरइयादी अत्थिय, समय कम्माइं लेस्साओ ॥ १ ॥ दिट्ठी दंसणणाणा, सम । य जोग उवओगे; दव्व पएसा पज्जव, अद्धा किं पुव्विं लोयंते ॥ २ ॥ पुव्वि

न हैं. ऐसे ही लोक का अंत व सातवी नरक का तनुवात, लोक का अंत व सातवी नरक का ११. जानना ऐसे ही घनोदधि वगैरह लोकान्त की साथ जोडना जिन के नाम कहते हैं. १. आकाशां तर २ तनुवात ३ घनवात ४ घनोदधि ५ सातवी पृथ्वी ६ जम्बूद्वीपादि असंख्याते द्वीप ७ लवण समु द्रादि असंख्याते समुद्र ८ भरत क्षेत्रादि वास ९ नारकी आदि चौवीस दंडक १० पंचास्ति काय ११ काल विभाग १२ आठ कर्म १३ छ लेश्या १४ दृष्टि तीन १५ दर्शन चार १६ ज्ञान पांच १७ संघयण छ १८ ... २१ द्रव्य अनंत २२ प्रदेश अनंत २३ पर्याय अनंत २४

तल्मारूभइत्ता तलाओ तलफलं पवालेइवा पवाडेइवा तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरिया पुट्ठे; जोसिं वियणं जीवाणं सरीरेहिंतो तले णिव्वत्तिए तलफले णिव्वत्तिए तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ५ ॥ अहेणं भंते ! से तल-फले अप्पणो गुरूयत्ताए जाव पच्चोवयमाणे, जाइं तत्थ पाणाइं जाव जीवियाओ ववरोवेइ, तएणं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ? गोयमा ! जावचणं से पुरिसे तल-फले अप्पणो गुरूयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेइ, तावचणं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ३ ॥ जेसिं वियणं जीवाणं सरीर हिंतो तलेणिव्वत्तिए तेविणं

भावार्थ

फल को चलाता हुवा नीचे डालता हुवा वह पुरुष कितनी क्रियाओं करे ? अहो गौतम ! जब लग वह ताल वृक्षपर चढता है और चढकर उस के फल चलाता है अथवा नीचे डालता है वहां लग उस को कायिकादि पांचों क्रियाओं लगती है. और जिन जीवों के शरीर से ताल बना हुवा है उन जीवों को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! वह ताल फल अपनी गुरुता से यावत् नीचे गिरे और प्राणों का घात होवे अहो भगवन् ! उस पुरुष को कितनी क्रियाओं लगती है ? अहो गौतम ! जहां लग वह पुरुष ताल वृक्षपर चढकर रहा है और उस का फल अपनी गुरुता से नीचे आकर गिरता है और मार्ग में

शब्दार्थ

सर्वकाल ए० ऐसे उ० उपर का ए० एकेक को सं० जोरना जो० जो हे० निचे का तं० उन को छ० छोरना ने० जानना जा० यावत् अ० अतीत अ० अनागतकाल प० पीछे स० सर्वकाल जा० यावत् अ० अनुक्रम से मा० यह रो० रोहा से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥१४॥ भ० भगवान गो० गौतम स० श्रमण जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितना प्रकार की भं० भगवन्

मूल

एकेकं संजोयं, तेणं जो जो हेट्ठिल्लो तं तं छड्डेतेणं नेयव्वं जाव अतीय अणागयद्धा, सव्वद्धा. जाव अणाणुपुव्वीए सा रोहा, सेवं भंते २ जाव विहरइ ॥ १४ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं जाव एवं वयासी कइविहाणं भंते ! लोयट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठिई पण्णत्ता, तजहा — आगासपइट्ठिए वाए

भावार्थ

भी वैसे ही कहना. इन में कोई पहिले पीछे नहीं. सब अनुक्रम रहित बराबर हैं. सदा शाश्वत है. फीर रोहक अनगार बोले ही अहो भगवन्! आपने जो कहा वह वैसे ही है यों कहकर तप संयम से आत्माको भावते हुवे विचरने लगे ॥ १४ ॥ श्री गौतम स्वामीने प्रश्न किया कि अहो भगवन्! लोक स्थिति कितने प्रकार की है ? अहो गौतम ! लोक स्थिति आठ प्रकार की है. १ आकाश प्रतिष्ठित वायु अर्थात् आकाश के आधार से घनवात तनुवात ऐसे दोनों वायु रहे हैं २ वायु के आधार से उदधि है ३ उदधि प्रतिष्ठित पृथ्वी ४ पृथ्वी प्रतिष्ठित त्रस स्थावर प्राणी ५ जीव के आधार से अजीव रहे हैं ६ कर्म के आ-

सूत्र

जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ जेसिं पियणं जीवाणं सरीरेहिंतो तलफले णिव्वित्तिए तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ५ जेविय से जीवा अहे वीससाए, पच्चोवयमाणस्स उग्गहे वट्टति, तेवियणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ६ ; ॥ ६ ॥ पुरिसेणं भंते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणेवा पवाडेमाणेवा कइकिरिए ? गोयमा ! जावंचणं से पुरिसे रुक्खस्स मूलं पचालेइवा पवाडेइवा, तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ जेसिंपियणं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले णिव्वत्तिए जाव बीए णिव्वत्तिए तेविणं जीवा काइयाए

भावार्थ

प्राणों की घात करता है वहांलग उस पुरुष को चार क्रियाओं कही हैं क्योंकी उस पुरुष के योग से उसकी घात नहीं हुई है. जिन जीवों के शरीर से ताल बना हुवा है उन जीवों को कायिकादि चार क्रियाओं लगती है. और जिन जीवों के शरीर से तालफल बना हुवा है उन जीवों को कायिकादि पांच क्रियाओं लगती है. और जो जीवों स्वभाव से ही नीचे आते हैं उन जीवों को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष वृक्ष के मूल को चलाता व नीचे डालता किसको क्रियाओं करे ? अहो गौतम ! जहां लग वह पुरुष वृक्ष के मूल को चलाता व नीचे गिराता है,

शब्दार्थ

व० मशक को आ० भरकर उ० उपर सि० बंधन बं० बांधे म० मध्य में गं० गांठ बं० बांधे उ० उपर की गं० गांठ को मु० छोडे उ० उपर के दे० भाग का वा० नीकाले उ० उपला दे० भाग में आ० पानी पू० भरे उ० उपर का सि० बंधन बं० बांधे म० मध्य की गं० गांठ को मु० छोडे से० वह गो० गौतम आ० पानी वा० वायु की उ० उपर चि० रहे हं० हां चि० रहे से० वह

सूत्र

बंधइ २ त्ता, मज्झे गंठिं बंधइ २ त्ता, उवरिल्लं गंठिं मुयइ २ त्ता, उवरिल्लं देसं वामेइ २ त्ता, उवरिल्लं देसं आउयायस्स पूरेइ २ त्ता, उप्पिं सियं बंधइ २ त्ता, मज्झिल्लं गंठिं मुयइ ॥ सेणूणं गोयमा ! से आउयाए तस्स वाउयायस्स उप्पिं उवरितले चिट्ठइ ? हंता चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं जाव जीवा कम्मसंगहिया, ॥ से

भावार्थ

दूसरा बंध बांधे, मध्य में बंध बांधकर उपर का मुख खोलकर वायु नीकाल देवे और पानी भरे, फीर उस का मुख बांधकर बीच का बंध छोड देवे तो क्या गौतम ! उस मशक में रहे हुवे नीचे के वायु से पानी रह सकता है ? हां भगवन् ! उपर के विभाग में वायु के आधार से पानी रह सकता है. तब भगवन्तने कहा कि जैसे वायु के आधार से मशक में पानी रहा वैसे ही आकाश के आधार से वायु, वायु के आधार से पानी यावत् कर्म संग्रहीत जीव है. दूसरा दृष्टान्त जैसे कोई पुरुष वायु से पूरित चमडे की मशक को कटि से बांधकर पुरुष प्रमाण से अधिक अगाध पानीवाले द्रह में प्रवेश

अर्थ अ॰ आर्य इ॰ ग्राम में वि॰ सन्निवेश में गो॰ गोशाला मं॰ मंखलीपुत्र हो॰ था ग॰ श्रमणघातक मा॰ पापी छ॰ छद्मस्थ में का॰ कालक्रिया कं॰ उग्र मृ॰ मृत्यु मे अ॰ मैं अ॰ आर्य अ॰ अनादि अ॰ अनंत दी॰ दीर्घ चा॰ चतुर्गतिक सं॰ संसार में अ॰ पर्यटन किया ॥ १९३ ॥ तं॰ इसलिये मा॰ मत अ॰ आर्य तु॰ तुमको के॰ कोई भ॰ होवे आ॰ आचार्य प्रत्यनीक उ॰ उपाध्याय प्रत्यनीक अ॰ अपयशकारक अ॰ अवर्णवादक अ॰ अकीर्तिकारक मा॰ मत अ॰ अनादि अ॰ अनंत सं॰ संसार कांतार अ॰ पर्यटन करोगा

अट्ठाए गोसाले मंखलिपुत्ते होत्था समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए तं मूलगमेण अहं अज्जो ! अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिए, ॥ १९३ ॥ तं मा णं अज्जो ! तुब्भंपि केइ भवतु आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरियउवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए मा णं सेवि एवंचेव अणादीयं अणवदग्गं जाव संसारकंतारं अणुपरियट्टिहिंति,

विशेष हो सोक रहे ऐसा कहते कि अहो आर्यों ! बहुत काल पहिले मैं श्रमण का घातक मंखली पुत्र गोशाला था, यावत् छद्मस्थ में काल कर गया. वहां से मैंने अनादि अनंत दीर्घ चतुर्गतिक संसार में परिभ्रमण किया ॥ १९३ ॥ इस लिये अहो आर्यों ! तुम आचार्य उपाध्याय का प्रत्यनीक मत होवो, उन का अपयशकारक, अवर्णवादक, अकीर्तिकारक मत होवो. और इस में जैसे मैंने अनादि अनंत चतु-

शब्दार्थ पु० स्पर्शाये अ० अन्योन्य ओ० अवगाहे हुवे अ० अन्योन्य सि० स्निग्ध प० बंधाये अ० अन्योन्य घ० घडापने चि० रहते हैं हं० हां अ० है से० वह के० कैसे भं० भगवन् जा० यावत् चि० रहते हैं गो० गौतम से० वह ज० जैसे द० द्रह सि० होवे पु० पूर्ण प० प्रतिपूर्ण वो० उछलता वो० विकसता स० सम घ० घडापने चि० रहे अ० अब के० कोई पु० पुरुष तं० उस द० द्रहमें ए० एक अ० बडा ना० नाव म०

सूत्र पुट्ठा, अण्णमण्ण मोगाढा, अण्णमण्ण सिणेह पडिबद्धा, अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! जाव चिट्ठंति ! गोयमा ! से जहा नामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभर घडत्ताए चिट्ठइ ॥ अहेणं केइपुरिसे तासि हरदंसि एगं महं नावं सदासवं सयच्छिद्दं ओग्गाहेज्जा, सेणूणं गोयमा ! सानावा तेहिं आसवदारेहिं आपूरमाणी २ पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा

भावार्थ हुवे हैं ? भगवन्त कहते हैं कि हां गौतम ! जीव पुद्गल परस्पर बन्धे हुवे रहते हैं यावत् स्नोली भूत रहते हैं. अहो भगवन् ! किस प्रकार से जीव अजीव दोनों बंधे हुवे हैं यावत् स्नोलीभूत हैं ! अहो गौतम ! जैसे कोई द्रह पानी से परिपूर्ण होवे किंचिन्मात्र खाली न होवे, उस में पानी उछलता होवे, और बहुत सुशोभित होवे, वैसे द्रह में कोई पुरुष एक बडी छिद्रवाली नाव सहित प्रवेश करे. अब अहो गौतम ! छिद्रों से आता हुवा पानी से भरकर वह नावा भरे हुवे घडे समान क्या नीचे बैठे ! हां

शब्दार्थ

गौतम उ० ऊर्ध्व प०गीरे अ०अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प०गीरे॥१८॥ ज० जैसे से०वह था० बादर आ० अप्काय अ० अन्योन्य म० रहता चि० चिरकाल दी० दीर्घकाल चि० रहे त० तैसे से० वह नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह खि० शीघ्र वि० विध्वंस आ० आता है से० ऐसे भं०भगवन्॥१॥६॥

ने० नारकी भं० भगवन् ने०नरकमें उ० उपजता किं०क्या दे०देशसे दे० देश उ० उपजे दे०देश से स० सर्व उ० उपजे स० सर्व से दे० देश उ० उपजे स० सर्व से स० सर्व उ० उपजे गो० गौतम नो० नहीं

सूत्र

समाउत्ते चिरंपि दीहकालं चिट्ठइ, तहाणं सेत्ति ? णोइणट्ठे समट्ठे। सेणं खिप्पामेव वि-द्धंसमागच्छइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥१॥६॥

नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेणं देसं उववज्जइ, देसेणं सव्वं उववज्जइ, सव्वेण देसं उववज्जइ, सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ? गोयमा ! नो देसेणं देसं उव

भावार्थ

भी बहुत काल तक टिकती है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों की सूक्ष्म अप्काय बहुत काल पर्यंत नहीं टिकती है. अल्प समय में नष्ट होती है. गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन् ! आपका वचन सत्य है. अन्यथा नहीं है. यह पहिले शतकका छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥१॥६ ॥

छठे उद्देशे में विध्वंस की कथा कही अब सातवे उद्देशे में इससे विपरीत उत्पन्न होने की वक्तव्यता करते

मूल

साए पच्चोवयमाणस्स उग्गहे वट्टंति तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं पुट्ठा ॥ ९ ॥ पुरिसेणं भंते ! रुक्खस्स कंदं पचा० ? गोयमा ! जावं चणं से पुरिसे जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे जेसिंवियणं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले णिव्वत्तिए जाव बीए णिव्वत्तिए ते विण जीवा पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥ १० ॥ अहण भंते ! से कंदे जावं चणं से कंदे अप्पणो जाव चउहिं पुट्ठे, जेसिंवियणं जीवाण सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए खंधे णिव्वत्तिए जाव चउहि पुट्ठा, जेसिंवियणं जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे णिव्वत्तिए, तेविणं जीवा जाव पंचहिं पुट्ठा ; जेविए से जीवा अहे वीससाए पच्चोवय जाव

भावार्थ

रहे हैं वे कायिकादि पांच क्रियाओं से स्पर्शे हो हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! वृक्ष के कंद चलाते य नीचे गिराते कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! जब लग वह पुरुष कंद चलाता है यावत् पांच क्रियाओं. जिन जीवों के शरीर से मूल यावत् बीज बना हुवा है उन जीवों को भी पांच क्रियाओं लगे. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! वह कंद अपनी गुरुता से नीचे आवे तो कितनी क्रियाओं लगे ? वगैरह पूर्वोक्त जैसे यावत् चार क्रियाओं लगे जिन जीवों के शरीर से कंद बना हुवा है उन जीवों को भी पांच क्रियाओं लगती है. और स्वभाव से नीचे आते यावत् पांच क्रियाओं लगे. जैसे कंद का कहा वैसे ही बीज का

सूत्र

पंचहिं पुट्ठा जहा कंदए । एवं जाव वयिं ॥ ११ ॥ कइणं भंते ! सरीरया पण्णत्ता? गोयमा ! पंच सरीरया पण्णत्ता, तंजहा-ओरालियं जाव कम्मए ॥ १२ ॥ कइणं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचइंदिया पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदियं जाव फासिंदियं ॥ १३ ॥ कइविहेण भंते ! जोए पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तंजहा-मणजोए वयजोए कायजोए ॥ १४ ॥ जीवेणं भंते ! ओरालियसरीरणं णिव्वत्तिएमाणे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंच किरिए, एवं पुढवीकाइएवि, एवं जाव मणुस्से ॥ १५ ॥ जीवाणं भंते ! ओरालिय

भावार्थ

मानना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! शरीर कितने कहे हैं ! अहो गौतम ! शरीर पांच कहे हैं. जिन के नाम उदारिक शरीर वैक्रेय शरीर, आहारक शरीर, तेजस शरीर व कार्माण शरीर ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रियों कितनी कही हैं ? अहो गौतम ! इन्द्रियों पांच कही है. श्रोतेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! योग कितने कहे हैं ! अहो गौतम ! योग तीन कहे हैं १ मन योग २ वचन योग व ३ काया योग ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीर बनाते हुवे जीवों को कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! कदाचित् चार व कदाचित् पांच क्रियाओं लगे. ऐसे ही पृथ्वीकाया का यावत् मनुष्य तक कहना

शब्दार्थ तैसे जा० यावत् स० सर्व से स० सर्व आ० आहार करे ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक॥४॥ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक में उ० उत्पन्न हुवा किं० क्या दे० देश से दे० देश उ० उत्पन्न हुवा ए० यह त० तैसे जा० यावत् स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा ज० जैसे उ० उपजता उ० चवता में च० चार दं० दंडक त० तैसे उ० उत्पन्न हुवा उ० चवा च० चार दं० दंडक भा० कहना स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्व से स० सर्व आ० आहारकरे ए०

सूत्र एवं जाव वेमाणिया ॥ ४ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववण्णे किं देसेणं देसं उववण्णे ? एसोवि तहेव जाव सव्वेणं सव्वं उववण्णे जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणेय चत्तारि दंडगा तहा उववण्णे उव्वट्टणेवि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, सव्वेणं सव्वं उववण्णं सव्वेण वा देसं आहारेइ सव्वेणं सव्वं

भावार्थ दंडक में जानना ॥ ४ ॥ अब उत्पन्न हुवा व उत्पन्न हुए का आहार संबंधी दो दंडक कहते हैं. अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न हुवा जीव क्या अपने देश से नारकी का देशपने उत्पन्न हुवा यावत् सर्व से सर्वपने उत्पन्न हुवा ? अहो गौतम ! इस का अधिकार उत्पन्न होते हुवे में जैसा कहा वैसा यहां पर कहना. उत्पन्न होते व उद्वर्तते के चार दंडक जैसे कहा वैसे ही उत्पन्न हुवे व उद्वर्ते का आहार की साथ चार दंडक जानना. इस में सर्व से सर्व उत्पन्न हुवा, उत्पन्न हुए जीव सर्व से देश का आहार करे

सूत्र

सरीरणिव्वत्तिएमाणा कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पंच किरियावि, ॥ पुढवीकाइयावि ॥ एवं जाव मणुस्सा ॥ एवं वेउव्विय सरीरेणवि दोदंडगा, णवरं जस्स अत्थि वेउव्वियं एवं जाव कम्मग सरीरं ॥ एवं सोइंदियं जाव फासिंदियं ॥ एवं मणजोगं वइजोगं कायजोगं, जस्स जं अत्थि तं भाणियव्वं, एते एगत्तपुहत्तेणं छव्वीस दडगा ॥ १६ ॥ कइविहेण भंते ! भावे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे भावे पण्णत्ते, तंजहा-उदइए उवसमिए जाव सण्णिवाइए ॥ सेकिंतं उदइए भावे ? उदइए भावे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-ओदएय उदयणिप्फण्णेय । एवं एएणं

भावार्थ

॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीर बनाने वाले जीवों को कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! तीन चार पांच क्रियाओं लगे वैसे ही पृथ्वी काय यावत् मनुष्य का जानना. ऐसे ही वैक्रेय शरीर के भी एक जीव व अनेक जीव आश्री दो दंडक कहे हैं. विशेषता इतनी कि जिन को जितने शरीर हैं उन को उतने कहना. ऐसे ही कार्माण शरीर तक कहना. ऐसे ही श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय का जानना. मनयोगी, वचन योगी व काया योगी का भी वैसे ही जानना. ॥१६॥ अहो भगवन् ! भाव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम! भाव के छ भेद कहे हैं औदयिक भाव, औपशमिक भाव यावत् सन्निपातिक भाव. अहो

सूत्र

जीवा धम्मेवि ठिया अहम्मेविठिया, धम्माधम्मेविठिया ॥ णेरइयाणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! णेरइया णो धम्मेठिया, अहम्मेठिया, णो धम्माधम्मेठिया, एवं जाव चउरिंदियाणं ॥ पंचिंदियतिरिक्ख जोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्ख जोणिया णो धम्मेठिया, अहम्मेठिया, धम्माधम्मेविठिया ॥ मणुस्सा जहा जीवा ॥ वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया जहा णेरइया ॥ ३ ॥ अण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति एवं खलु समणा पंडिया समणोवासगा बालपंडिया जस्सणं एगपाणाएवि दंडे अणिक्खित्ते सेणं एगंतबालेत्ति वत्तव्वं सिया, से कहमेयं

भावार्थ

अहो गौतम ! जीव धर्म में स्थित हैं, अधर्म में स्थित व धर्माधर्म में स्थित हैं. नारकी की पृच्छा ? नारकी धर्म में स्थित नहीं हैं अधर्म में स्थित हैं और धर्माधर्म में स्थित नहीं हैं. ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यंत कहना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय धर्म में स्थित नहीं हैं परंतु अधर्म व धर्माधर्म में स्थित हैं. मनुष्य धर्म अधर्म व धर्माधर्म में स्थित हैं. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि श्रमण पंडित हैं श्रमणोपासक बालपंडित हैं और जिसने एक प्राणी का घात का परिहार नहीं किया है वह एकान्त बाल है. तो अहो भगवन् ! यह किस

च्छा प० परिग्रह आ० आहार नो० नहीं आ० आहार करे आ० आहारकरे आ० आहार करता आ० आहार करे प० परिणमता प०परिणमे प० क्षीण आ० आयुष्य वाला भ० होवे ज०जहां उ० उपजे त० उस आ० आयुष्य प०अनुभवे तं० उस ति०तिर्यंच आयुष्य म०मनुष्य आयुष्य गो० गौतम दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० मनुष्य आ० आयुष्य ॥ २ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व०

छवत्तियं, परिसह वत्तियं, आहारं नो आहारेइ, अहेणं आहारेइ आहारेज्जमाणे आहारिए,परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणेय आउए भवइ, जत्थ उववज्जइ, तमाउयं पडिसंवेदेइ तिरिक्ख जोणियाउयंवा, मणुस्साउयंवा ? हंता गोयमा ! देवेणं महड्डिए जाव मणुस्साउयं वा ॥९॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ,

सुखवाले, व महानुभाव देवों चवन होने का समय पास आया हुवा जानकर माता पिता का क्रीडा स्थान देख लज्जा आने से, शुक्र शोणित का आहार की दुर्गच्छा आने से व पुद्गल ग्रहणरूप अराति परिषह से किंचित्कालतक आहार करे नहीं परंतु चवे पीछे क्षुधा वेदनीय के उदय से आहार करे. ऐसा आहार किये हुवे, परिणमाये हुवे व प्रक्षीण आयुष्यवाले देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य क्या वेदे ? हां गौतम ! ऐसा महर्द्धिक देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य वेदे ॥ २ ॥ गर्भ में उत्पन्न होने के कारन से गर्भ की अव-

भंते ! एवं ? गोयमा ! जंणं ते अण्णउत्थिया एवं माइक्खंति जाव वत्तव्वंसिया जे ते एवं माहंसु मिच्छंते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! जाव परूवेमि एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासगा बालपंडिया, जस्सणं एगपाणेवि दंडे णिक्खित्ते सेणं णो एगंतबालेत्ति वत्तव्वंसिया ॥ ४ ॥ जीवाणं भंते ! बाला पंडिया बालपंडिया ? गोयमा ! जीवा बालावि पंडियावि बालपंडियावि, णेरइयाणं पुच्छा, गोयमा ! णेरइया बाला, णो पंडिया णो बालपंडिया ॥ एवं चउरिंदियाणं, पंचिंदियातिरिक्ख पुच्छा, गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया बाला, णो पंडिया. बालपंडियावि

कहा है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थिक जो ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि श्रमण पंडित, श्रमणोपासक बाल पंडित व एक भी जीव की घात का जिसने परिहार नहीं किया वह एकांत बाल है वह मिथ्या है मैं इस कथन को ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि श्रमण पंडित, श्रमणोपासक बालपंडित, और जिसने एक प्राणिकी भी घात का भी परिहार किया है वह एकांत बाल नहीं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव बाल, पंडित व बालपंडित हैं! अहो गौतम! जीव बाल, पंडित व बाल पंडित हैं. नारकी की पृच्छा! नारकी बाल हैं परंतु पंडित व बाल पंडित नहीं हैं. ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यंत कहना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा !

क्या स० सशरीरी व० उपजे अ० अशरीरी व० उपजे गो० गौतम सि० कदाचित् स० सशरीरी व० उपजे सि० कदाचित् अ० अशरीरी व० उपजे से० वह कं० कैसे गो० गौतम ओ० उदारिक वे० वैक्रेय आ० आहारक प० प्रत्यय अ० अशरीरी ते० तेजस क० कार्माण प० प्रत्यय स० सशरीरी व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ ११ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता स० समय कं० कौनसा आ०

असरीरी वक्कमइ ? गोयमा ! सिय ससरीरी वक्कमइ, सिय असरीरी वक्कमइ । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! ओरालिय वेउव्विय आहारयाइं पडुच असरीरी वक्कमइ ! तेया कम्माइं पडुच ससरीरी वक्कमइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ॥ ११ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं

शरीर को होती है इसलिये शरीर का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! क्या जीव शरीरी उत्पन्न होता है अथवा अशरीरी उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! जीव कदाचित् शरीरी उत्पन्न होता है और कदाचित् अशरीरी उत्पन्न होता है अहो भगवन् ! किस कारण से ! अहो गौतम ! उदारिक वैक्रेय व आहारक इन तीनों शरीर की अपेक्षा से अशरीरी क्यों कि ये तीनों शरीर एक स्थान से चवकर अन्य स्थान में उत्पन्न हुवे पीछे और को पाते हैं. गमन करते वक्त में इन तीनों शरीर का अभाव है. तेजस व कार्माण शरीर की अपेक्षा से सशरीरी उत्पन्न होते हैं क्यों कि ये दोनों शरीर जीव को संसार अवस्था में सदैव रहते हैं इसलिये ऐसा कहा गया है कि कदाचित् शरीर सहित और कदाचित् शरीर रहित उत्पन्न होता

[illegible] ॥ ५ ॥ अण्णा [illegible] जाव [illegible] अण्णं [illegible] जाव [illegible] अण्णं [illegible] जाव [illegible] आव [illegible]

[illegible]

शब्दार्थ वडीनीत पा० लघुनीत खे० थूक सिं० श्लेष्म वं० वमन पि० पित्त गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गयाहुवा जं० जो आ० आहार करता है तं० उनको चि० इकट्ठा करता है तं० उनको सो० श्रोतेन्द्रियपने जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियपने अ० हड्डी अ० हड्डीमिंजी के० केश मं० दाढी रो० रोम न० नख़पने से० वह ते० इसलिये ॥ १४ ॥ जी० जीव भं०

मूल समागस्स अत्थि उच्चारेइवा, पासवणेइवा, खेलेइवा, सिंघाणेइवा, वंतेइवा, पित्तेइवा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे ! से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जमाहारेइ तं चिणाइ, तं सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए, अट्ठि अट्ठिमिंज केस मंसुरोम नहत्ताए से तेणट्ठेणं ॥ १४ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे पभूमुहेणं

भावार्थ का भोज आहार करता है. ॥ १३ ॥ जहां आहार होता है वहां निहार होता है इसलिये निहार संबंधि प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव को वडीनीत, लघुनीत खेंकार, श्लेष्म, वमन व पित्त क्या होता है ? अहो गौतम ! गर्भ में रहे हुवे जीव को यह नहीं होता है. अहो भगवन् ! ऐसा नहीं होने का क्या कारण है ? अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव जो आहार करता है वह सब आहार श्रोतेन्द्रियादि पांचों इन्द्रियों, हड्डी हड्डी की मिंजी, केश, दाढ़ी रोम व नखपने परिणमता है इस लिये इन जीवों को लघुनीत वडीनीत वगैरह नहीं होते हैं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या

मूल

पाणाइवाए जाव अंतराइये वट्टमाणस्स जाव जीवाया ॥ एवं कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए, सम्मदिट्ठीए ३. एवं चक्खुदंसणे ४. आभिणिबोहियणाणे ५. मइअण्णाणे ३: आहारसण्णाए ४. एवं ओरालिय सरीरे ५, एवं मणजोए ३, सागारोवओगे २ वट्टमाणस्स अण्णे जीवे अण्णे जीवाया ॥ से कहमेयं भंते ! एवं? गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स सचेव जीवे सचेव जीवाया ॥

भावार्थ

जीवों को जीव अन्य है व जीवात्मा अन्य है उत्थान यावत् पराक्रम में रहने वाले जीवों को जीव अन्य है व जीवात्मा अन्य, नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देव में जीव अन्य व जीवात्मा अन्य, ज्ञानावरणीय यावत् अंतराय में जीव अन्य व जीवात्मा अन्य, ऐसे ही कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या, सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि व सम्यग्मिथ्यादृष्टि, चक्षुदर्शनादि चार दर्शन, मतिज्ञानादि पांच ज्ञान, मति अज्ञानादि तीन अज्ञान आहारसंज्ञादि चार संज्ञा उदारिक शरीरादि पांच शरीर मनयोगादि तीन योग और साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त में रहने वाले जीवों को जीव अन्य है, व जीवात्मा अन्य है तो अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थिकों का उपर्युक्त कथन मिथ्या है. मैं इस तरह कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि

...प० प्रतिबद्ध पु० पुत्रका, जीव फु० स्पर्शा हुवा त० इसलिये आ० आहार करे प० परिणवे अ० अथवा पु० पुत्रका जीव प० प्रतिबद्ध मा० माता का जीव से फु० स्पर्शा हुवा त० इसलिये चि० चिने उ० उपचेने से० वह ते० इसलिये जा० यावत् नो० नहीं मु० मुख से का० कवल आ० आहार आ० आहार करे ॥ १५ ॥ क० कितने भं० भगवन् मा० माता के अंग गो० गौतम त० तीन मा० माता के अंग प० परूपे मं० मांस सो० रुधिर म० मस्तक ॥ १६ ॥ क० कितने भं० भगवन् पे० पिता के

सूत्र

फुडा, तम्हा आहारेइ, तम्हा परिणामेइ, अविरात्रियणं पुत्तजीव पडिबद्धा माउजीव फुडा तम्हा चिणाइ, तम्हा उवचिणाइ. से तेणट्ठेणं जाव नो पभू मुहेणं कावलियं आहारं आहारित्तए ॥ १५ ॥ कइणं भंते ! माइअंगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ माइयंगा पण्णत्ता तंजहा मंससोणिए मत्थुलुंगं ॥ १६ ॥ कइणं भंते ! पेइयंगा प-

भावार्थ

आहार करता है और शरीर में परिणमाता है. दूसरी पुत्रजीवरसहरणी नाडी पुत्रके जीव की साथ बंधी हुई व माता की साथ स्पर्शी हुई है. इस से गर्भस्थ जीव के शरीर की वृद्धि होती है. इसीसे अहो गौतम ! कवल आहार लेने को गर्भस्थ जीव नहीं समर्थ होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! माता के कितने अंग कहे हैं ? अहो गौतम ! माता के तीन अंग कहे हैं. मांस, रुधिर व मस्तक की मींजी. फेफसा अथवा कलेजा ऐसा भी अर्थ कितनेक करते हैं. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पिता के कितने अंग हैं ? अहो गौतम !

सूत्र

जाव अणागारोवओगे वट्टमाणस्स सचेव जीवे सचेव जीवाया ॥ ६ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता पभू अरूवी विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवेणं जाव णो पभू अरूवी विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए ? गोयमा ! अहमेयं जाणामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि; मए एयं णायं, मए एयं दिट्ठं, मए एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमण्णागयं-जंणं तहागयस्स जीवस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स सवेदगस्स समोहस्स सलेसस्स ससरीरस्स ताओ सरीराओ अविप्पमुक्कस्स एवं पण्णायाति

भावार्थ

प्राणातिपात यावत् मिथ्या दर्शन शल्य में रहने वाले वह जीव व वही जीवात्मा है. ऐसे ही अनाकारोपयुक्त तक जानना. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महासुख वाला देव पहिले रूपी होकर फीर अरूपीका वैक्रेय करके रहने में क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् अरूवीका वैक्रेय करके रहनेते समर्थ नहीं है ? अहो गौतम ! मैं यह जानता हूं देखता हूं पर्याय से जानता हूं सब वस्तु के सन्मुख होकर जानता हूं मैंने यह जाना, मैंने यह देखा, मैंने यह पर्याय से जाना, मैं सब वस्तु की सन्मुख हुवा कि [illegible]

शब्दार्थ ग० गर्भ में ग० रहाहुवा ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० कितनेक उ० उत्पन्न होवे अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे से० वह के० कैसे गो० गौतम स० संज्ञीपंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्तिसे प० पर्याप्त वी० वीर्यलब्धिसे वे० वैक्रेयलब्धिसे प० शत्रुसैन्य आ० आया हुवा सो० सुनकर नि० अवधारकर प० प्रदेश नि० बहार निकाले वे० वैक्रेय समुद्घात से स० ग्रहण करे स० ग्रहण करके

सूत्र भंते गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा॥ सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीएहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए पराणियं आगयं सोच्चा निसम्म पएसे नि-

भावार्थ नए होजाते हैं. ॥ १८ ॥ अब गर्भस्थ जीव कदाचित् गर्भ में ही काल अवस्था को प्राप्त होवे तो कहां पर उत्पन्न होता है उस संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भस्थ जीव आयुष्य पूर्ण होने से कालकर क्या नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक जीव नरक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस तरह से गर्भस्थ जीव नारकी में उत्पन्न होते हैं अहो गौतम ! कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव राणी की कुक्षि में उत्पन्न होवे अर्थात् राजपुत्र होवे. वहां उन को पूर्ण पर्याप्त बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे पूर्व करणी के प्रभाव से वीर्य लब्धि व वैक्रेय लब्धि की प्राप्ति होवे

सूत्र

तंजहा-कालत्तेवा जाव सुक्किलत्तेवा, सुब्भिगंधत्तेवा, दुब्भिगंधत्तेवा, तित्तत्तेवा जाव महुरत्तेवा, कक्खडत्तेवा जाव लुक्खत्तेवा से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव चिट्ठित्तए ॥७॥ सचेवणं भंते! से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता पभू रूविं विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तए ? गोयमा ! अहमेयं जाणामि जाव जंणं तहागयस्स जीवस्स, अरूविस्स, अकम्मस्स, अरागस्स, अवेदस्स, अमोहस्स, अलेसस्स, असरीरस्स ताओ सरीराओ विप्पमुक्कस्स णो एवं पण्णायति. तंजहा कालत्तेवा जाव लुक्खत्तेवा से तेणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तएवा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥

भावार्थ

लेश्या वाले, व शरीर से रहित जीव को कालापना यावत् शुक्लपना, सुरभिगंधपना व दुरभिगंधपना, तिक्तपना यावत् मधुरपना कर्कशपना यावत् रूक्षपना का ज्ञान होता है इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् रहता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! वही जीव पहिला अरूपी होकर फीर रूपीका वैक्रेय कर रहने को क्या समर्थ होता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि वही जीव पहिले अरूपी होकर रूपी का वैक्रेय कर रहने में समर्थ नहीं है? अहो गौतम! मैं ऐसा जानता हूं यावत् तैसे रूप, कर्म, राग, वेदना, मोह, लेश्या, शरीर व उस शरीर से रहित जीव को कालापना

शब्दार्थ का कांक्षी पु० पुन्य का कांक्षी स० स्वर्ग का कांक्षी मो० मोक्ष का कांक्षी ध० धर्म पि० पिपासु पु० पुन्य पिपासु स० स्वर्ग पिपासु मो० मोक्ष पिपासु त० उस में चित्त वाला म० मनवाला ले० लेश्या वाला अ० अध्यवसाय वाला अ० अर्थयुक्त अ० अर्पित करण वाला उ० उस भा० भावना से भा० भावता ए० इस अं० अंतर में का० काल क० करे दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे से० वह ते० इस लिये गो० गौतम ॥ २० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गया हुवा उ० उलटा होवे पा० पसली जैसे अं० आम्र

सूत्र पुण्णकंखिए, सग्गकंखिए, मोक्खकंखिए; धम्मपिवासिए, पुण्णपिवासिए, सग्गपिवासिए, मोक्खपिवासिए, तच्चित्ते, तम्मणे, तल्लेसे तदज्झवसिए, तदट्ठोवउत्ते, तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयंसिणं अंतरंमि कालं करेज्जा देवलोएसु उववज्जइ सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥ २० ॥ जीवेणं भंते गब्भगए समाणे उत्ताणएवा, पासल्लएवा

भावार्थ कामी, स्वर्ग का कामी व मोक्ष का कामी; धर्म, पुण्य, स्वर्ग व मोक्षका कांक्षी; धर्म, पुण्य, स्वर्ग व मोक्ष का पिपासु, धर्मादिमें तथा प्रकारका चित्तवाला, तन्मय, तीनशुभ लेश्यावन्त, वैसेही अध्यवसाय युक्त, उस अर्थ प्रयोजन युक्त, उसी अर्थ में आत्मा को अर्पण करनेवाला व वैसा भाव को चिन्तवनेवाला यदि उसी समय काल कर जावे तो देवलोक में देवतापने उत्पन्न होता है. इस कारन से अहो गौतम! कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ॥ २८ ॥ अब

शब्दार्थ उ० उदीरे अ० उदे नहीं आया उ० उदीरणा योग्य क० कर्म उ० उदीरे नो० नहीं उ० उदयान्तर प० पीछे क० कीया कर्म उ० उदीरे जं० जो भं० भगवन् अ० उदे नहीं आया उ० उदीरना योग्य क० कर्म उ० उदीरे तं० उन को उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार पराक्रम से अ० उदे नहीं आया उ० उदीरणा योग्य उ० उदीरे उ० अथवा तं० उन को अ० अनुत्थान अ० अकर्म

सूत्र भविंयं कम्मं उदीरेइ तंकिं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार परक्कमेणं अणुदिन्नं उदरिणा भवियं कम्मं उदीरेति. उादहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं अवीरिएणं, अपुरिसक्कार परक्कमेणं, अणुदिण्णं उदीरणा भवियं कम्मं उदीरेइ ? गोयमा.! तं उट्ठाणेणवि, कम्मणवि, बलेणवि, वीरिएणवि, पुरिसक्कार परक्कमेणवि, अणुदिन्नं उदीरणा भवियं कम्मं उदीरेइ नो, तं अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं

भावार्थ उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम से उदीरता है ? अथवा उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम विना उदीरता है ? अहो गौतम ! उत्थान यावत् पराक्रम से उदीरणा के योग्य अनुदित कर्म उदीरता है. परंतु उत्थान यावत् पराक्रम विना उदीरणा के योग्य अनुदित कर्म को नहीं उदीरता है. इस लिये उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम में अस्ति है जिस से उदीरणा योग्य

शब्दार्थ आगे रि० विनाश आ० पाप प० वर्ण व० वध्य क० कर्म ब० बांधे पु० स्पर्शे हुवे णि० निकाचित बांधे क० कीये प० स्थापे अ० तीव्र स्थापे अ० सन्मुख आये उ० उदय आये णो० नहीं उ० उपशांत हुवे दु० कुरूप दु० खराबवर्ण वाला दु० दुर्गंधी दु० खराबरस वाला दु० खराब स्पर्श वाला अ० अनिष्ट अ० अकान्त अ० अप्रिय अ० अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमनाम ही० हीनस्वर वाला दी० दीनस्वर

सूत्र हवइ, विणिहाय मावज्जइ, वण्णवज्झाणिय से कम्माइं बद्धाइं, पुट्ठाइं, णिहित्ताइं, कडाइं, पट्ठवियाइं, अभिनिविट्ठाइं, अभिसमण्णागयाइं उदिण्णाइं, णोउवसंताइं भवंति, तओ भवइ, दुरूवे, दुवण्णे, दुग्गंधे, दुरसे, दुफासे, अणिट्ठे, अकंते, अप्पिए, असुभे, अमणुण्णे, अमणामे, हीणस्सरे, दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे, अकंतस्सरे अप्पियस्सरे, असुभस्सरे,

भावार्थ नाश होता है तब कितनेक जीव मस्तक से नीकलते हैं, और कितनेक पांव से नीकलते हैं, अथवा माता व जीव दोनों की घात न होवे वैसे नीकलते हैं, और अशुभ कर्मोदय से कदाचित् तिच्छी होजाता है तो नीकलने न नीकलने के अभाव से मृत्यु को प्राप्त होजाता है. अब गर्भ से नीकले बाद जो होता है सो कहते हैं. जिनोंने पूर्व भव में पापाचरण व अयोग्य कर्तव्य से निकाचित कर्मों का बंध किया है वैसेही जिन को मनुष्य तिर्यंचादि गति, पंचेन्द्रियादि जाति, वगैरह नामकर्म से व्यवस्थापित किये, तीव्र अनुभाव से स्थापित किये, उदय सन्मुख हुवे, स्वतः की उदीरना से उदय में आये और उपशान्त न हुवे, उन को अशुभ वर्ण, गंध,

सत्तरसमस्स सिविओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ २ ॥

सेलेसिं पडिवण्णएणं भंते ! अणगारे सयासमियं एयति वेयति जाव तंतं भावं परिणमइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ णण्णत्थेगेणं परप्पओगेणं ॥ १ ॥ कइविहाणं भंते ! एयणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा एयणा पण्णत्ता, तंजहा दव्वेयणा, खेत्तेयणा, कालेयणा, भवेयणा, भावेयणा ॥ २ ॥ दव्वेयणाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा णेरइयदव्वेयणा तिरिक्खमणुस्सदेव दव्वे-

भावार्थ

यावत् कंपना का ज्ञान नहीं होता है इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् रहने में समर्थ नहीं है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं, यह सतरहवा शतक का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १७ ॥ २ ॥

दूसरे उद्देशे के अंत में रूपी अरूपी का कथन किया, अब इस में कंपना लक्षण कहते हैं. अहो भगवन् ! शैलेशी प्रतिपन्न अनगार सदैव क्या कंपते हैं, विशेष कंपते हैं यावत् उन भाव को क्या परिणमते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है, मात्र परप्रयोग से कंपना होती है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! कंपना के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कंपना के पांच भेद कहे हैं जिनके नाम १ द्रव्य कंपना, २ क्षेत्र कंपना ३ काल कंपना ४ भव कंपना और ५ भाव कंपना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य कंपना के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य कंपना के चार भेद कहे हैं १ नारकी द्रव्य

शब्दार्थ

ए॰ एकान्त बा॰ अज्ञानी भं॰ भगवन् म॰ मनुष्य कि॰ क्या ने॰ नारकी का आ॰ आयुष्य प॰ बांधे ति॰ तिर्यंच का आ॰ आयुष्य प॰ बांधे म॰ मनुष्य का आ॰ आयुष्य प॰ बांधे दे॰ देव का आ॰ आयुष्य प॰ बांधे ने॰ नारकी का आ॰ आयुष्य कि॰ करके ने॰ नरक में उ॰ उपजे ति॰ तिर्यंच का आ॰ आयुष्य कि॰ करके ति॰ तिर्यंच में उ॰ उपजे म॰ मनुष्य का आ॰ आयुष्य कि॰ करके म॰ मनुष्य में उ॰ उपजे दे॰ देव का आ॰ आयुष्य कि॰ करके दे॰ देवलोक में उ॰ उपजे गो॰ गौतम ए॰ एकान्त बा॰ अज्ञानी म॰ मनुष्य

सूत्र

एगंत बालेणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ, तिरिआउयं पकरेइ, मणुआउयं पकरेइ, देवाउयं पकरेइ, नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जइ, मणुयाउयं किच्चा मणुएसु उववज्जइ, देवाउयं किच्चा देव-

भावार्थ

सातवे उद्देशे में गर्भ की वक्तव्यता कही. गर्भ आयुष्य से होता है इसलिये आगे आयुष्य संबंधि प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! एकान्त बाल ( मिथ्यात्वी ) मनुष्य क्या नरक के आयुष्य का बंध करता है, मनुष्य के आयुष्य का बंध करता है, तिर्यंच के आयुष्य का बंध करता है, या देव के आयुष्य का बंध करता है ! और नरक के आयुष्य का बंध कर के क्या नरक में उत्पन्न होता है, तिर्यंच के आयुष्य का बंध कर के तिर्यंच में उत्पन्न होता है, मनुष्य के आयुष्य का बंधकर के मनुष्य में उत्पन्न होता है या देव

सूत्र

यणा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णेरइयदव्वेयणा ? णेरइय दव्वेयणा गोयमा! जंणं णेरइया णेरइयदव्वे वट्टिसुवा वट्टंतिवा वट्टिस्संतिवा तेणं तत्थ णेरइया णेरइय दव्वे वट्टमाणा णेरइयदव्वेयणं एयंसुवा एयंतिवा एयस्संतिवा, से तेणट्ठेणं जाव दव्वेयणा ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ तिरिक्खजोणिय एवंचेव, तिरिक्खजोणिय दव्वेयणं भाणियव्वं. सेसं तंचेव ॥ एवं जाव देवदव्वेयणा ॥ ३ ॥ खेत्तेयणाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा णेरइय खेत्तेयणा जाव देवखेत्तेयणा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णेरइय खेत्तेयणा णे० २ ? एवंचेव

भावार्थ

कंपना २ तिर्यंच द्रव्य कंपना ३ मनुष्य द्रव्य कंपना और ४ देव द्रव्य कंपना. अहो भगवन् ! नारकी की द्रव्य कंपना क्यों कही ? अहो गौतम ! जो नारकी नरकपना में रहे, रहते हैं व रहेंगे उन नारकीयोंने वहां ही नरक द्रव्य में रहते हुवे नारकी द्रव्य कंपना की, करते हैं व करेंगे; इस से यावत् नारकी द्रव्य कंपना कही. ऐसे ही तिर्यंच द्रव्य कंपना, मनुष्य द्रव्य कंपना यावत् देव द्रव्य कंपना का जानना ॥३॥ अहो भगवन् ! क्षेत्र कंपना के कितने भेद कहे हैं. ? अहो गौतम ! क्षेत्र कंपना के चार भेद कहे हैं. नारकी क्षेत्र कंपना यावत् देव क्षेत्र कंपना. अहो भगवन् ! नारकी की क्षेत्र कंपना किसे कहते हैं ? अहो

[illegible] नहीं [illegible] आदी [illegible] नहीं [illegible] मनुष्य [illegible] आदी का आ० [illegible] मनुष्य [illegible] का [illegible] आ० [illegible] देवता

[illegible]

[illegible] ?

[illegible] तंजहा—अंत०

[illegible] आयुष्य का बंध नहीं करता है. [illegible] आयुष्य नहीं बांधता है और वहां नहीं [illegible] आयुष्य बांधता है और वहां उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! [illegible] मनुष्य का आयुष्य नहीं बांधता है यावत् देवता का आयुष्य [illegible] अहो गौतम ! [illegible] मनुष्य को केवल ही नहीं कही. [illegible] और [illegible] नहीं होने से [illegible] पुण्य की वृद्धि होने से

[illegible]पएसेयणा भाणियव्वा एवं जाव देवखेत्तेयणा एवं कालेयणावि एवं भवेयणावि एवं जाव देवभावेयणावि ॥ ४ ॥ कइविहाणं भंते ! चलणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा चलणा पण्णत्ता, तंजहा सरीरचलणा, इंदियचलणा, जोगचलणा, ॥ ५ ॥ सरीरचलणाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा ओरालिय सरीरचलणा जाव कम्मग सरीर चलणा ॥ ६ ॥ इंदियचलणाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता तंजहा-सोइंदिय चलणा जाव फासिंदिय चलणा ॥ ७ ॥ जोगचलणाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा

भावार्थ गौतम ! जैसे द्रव्य कंपना का कहा वैसे ही क्षेत्र कंपना का जानना. ऐसे ही काल भव व भाव कंपना का [illegible] ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! चलना के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! चलना के तीन भेद कहे हैं १ शरीर चलना २ इन्द्रिय चलना व ३ योग चलना. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! शरीर चलना के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! शरीर चलना के पांच भेद कहे हैं. १ उदारिक शरीर चलना यावत् कार्माण शरीर चलना ॥ ६ ॥ इन्द्रिय चलना के कितने भेद कहे हैं. ? अहो गौतम ! इन्द्रिय चलना के पांच भेद कहे हैं. श्रोतेन्द्रिय चलना यावत् स्पर्शेन्द्रिय चलना. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! योग चलना के कितने भेद कहे

[illegible]

शब्दार्थ से॰ वह के॰ कैसे जा॰ यावत् दे॰ देवता का आ॰ आयुष्य कि॰ करके दे॰ देवता में उ॰ उत्पन्न होवे गो॰ गौतम बा॰ श्रावक त॰ तथारूप स॰ श्रमण मा॰ माहण की अं॰ पास ए॰ एक आ॰ आर्य ध॰ धर्म का सु॰ सुवचन सो॰ सुनकर नि॰ अवधारकर दे॰ देशसे उविरमे दे॰ देशसे नो॰ नहीं उविरमे दे॰ देश प॰ प्रत्याख्यान करे दे॰ देश नो॰ नहीं प॰ प्रत्याख्यान करे ते॰ इस लिये दे॰ देश विरति से दे॰ देश प्रत्याख्यान से नो॰ नहीं ने॰ नारकी का आ॰ आयुष्य प॰ बांधे जा॰ यावत् दे॰ देवता का आ॰ आयुष्य कि॰ करके दे॰ देवता में उ॰ उत्पन्न होवे ॥ ३ ॥ पु॰ पुरुष भं॰ भगवन् क॰ कच्छ द॰

सूत्र पंडिएणं मणुस्से तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धाम्मियं सुवयणं सोचा निसम्म देसं उवरमइ, देसं णो उवरमइ; देसं पच्चक्खाइ, देसं णो पच्चक्खाइ; से तेणं देसोवरमइ, देसपच्चक्खाणेणं णो णेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ । से तेणट्ठेणं जाव देवेसु उववज्जइ ॥ ३ ॥ पुरिसेणं भंते ! कच्छंसि-

भावार्थ बांधे नहीं परंतु देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! किस कारन से बाल पंडित मनुष्य देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य तथारूप श्रमण माहण की पास से एकान्त आर्यधर्म श्रवणकर अवधारकर देश से निवर्ते, देशसे निवर्ते नहीं, देशसे प्रत्याख्यान करे, देश से प्रत्याख्यान करे नहीं; इस तरह देश से निवर्तने से व प्रत्याख्यान करने से

पण्णत्ता तंजहा मणजोगचलणा वइजोगचलणा कायजोग चलणा ॥१८॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ ओरालियसरीर चलणा? ओरालिय सरीर चलणा गोयमा! जण्णं जीवा ओरालिय सरीरे वट्टमाणा ओरालिय सरीरप्पाओगाइं दव्वाइं ओरालिय सरीरत्ताए परिणामेमाणे ओरालिय सरीर चलणं, चलिंसुवा चलंति चलिस्संतिवा से तेणट्ठेणं जाव ओरालियसरीरचलणा २ ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ वेउव्विय सरीर चलणा? वेउव्विय सरीर चलणा एवं चेव णवरं वेउव्विय सरीरे वट्टमाणेएवं जाव कम्मग सरीर चलणा से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सोइंदिय चलणा सोइंदिय चलणा जण्णं जीवा सोइंदियवट्टमाणा सोइंदियप्पाओगाइं दव्वाइं सोइंदियत्ताए परिणामेमाणे सोइंदिय चलणं चलिंसुवा

हैं? अहो गौतम! योग चलना के तीन भेद कहे हैं १ मनयोग चलना २ वचन योग चलना व काया योग चलना ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! उदारिक शरीर की चलना क्यों कही? अहो गौतम! उदारिक शरीर में रहने वाले जीवों उदारिक शरीर प्रायोग्य द्रव्य को उदारिक शरीरपने परिणमाते उदारिक शरीर की चलना की, करते हैं व करेंगे इसलिये ऐसा कहा गया है कि उदारिक शरीर की चलना. ऐसे ही वैक्रेय, आहारक, तेजस कार्मण शरीर का जानना ॥ ९ ॥ अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि श्रोतेन्द्रिय चलना? अहो गौतम! श्रोतेन्द्रिय में रहनेवाले जीवों श्रोतेन्द्रिय

नि॰ डाले ता॰ तब भं॰ भगवन् से॰ उस पु॰ पुरुष को क॰ कितनी कि॰ क्रिया सि॰ कदाचित् ति॰ तीनक्रिया सि॰ कदाचित् च॰ चारक्रिया सि॰ कदाचित् पं॰ पांचक्रिया से॰ वह के॰ कैसे गो॰ गौतम जे॰ जो भ॰ योग्य उ॰ ऊंचा करने से ति॰ तीन उ॰ ऊंचा करने से नि॰ डालने से नो॰ नहीं द॰ जलाने से च॰ चार जे॰ जो॰ भ॰ योग्य उ॰ ऊंचा करने से नि॰ फेंकने से द॰ जलाने मे से॰ उस

सूत्र गणिकायंसि निसिरइ तावंचणं भंते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जे भविए उस्सक्कणयाए तिहिं, उस्सक्कणयाएवि निसिरणयाएवि नोदहणयाए चउहिं, जेभविए

भावार्थ अहो भगवन् ! कोई पुरुष कच्छ में यावत् वनदुर्ग में तृणका ढग करके उस में अग्निकाय का प्रक्षेप करे तो उन को कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! उन को तीन, चार व पांच क्रियाओं लगती हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से उन को तीन, चार, व पांच क्रियाओं लगती हैं ? अहो गौतम ! जितना काल पर्यंत तृणका समुदाय एकत्रित करता है उतना कालतक उन को कायिकी. अधिकरणकी व प्रद्वेषिकी ऐसी तीन क्रियाओं लगती हैं और तृण एकत्रित कर अग्नि में डाले परंतु जले नहीं वहांतक कायिकी, आधिकरण की, प्रद्वेषिकी, व परितापनिकी ऐसी चार क्रियाओं लगती हैं, और जो तृण एकत्रित करके अग्नि में डालता है और उस में जलता है उसको कायिकी आदि पांचों क्रियाओं लगती हैं

चलातिवा चालिस्सातिवा, से तेणट्ठेणं जाव सोइंदिय चलणा सोइंदिय चलणा॥ एवं जाव फासिंदिय चलणा ॥१०॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ मणजोग चलणा ? मणजोग चलणा गोयमा! जंणं जीवा मणजोए वट्टमाणा मणजोगप्पाओग्गाइं दव्वाइं मणजोगत्ताए परिणामेमाणे मणचलणं चालिंसुवा चलंतिवा चालिस्संतिवा, से तेणट्ठेणं जाव मणजोगचलणा मणजोगचलणा ॥ एवं वयजोग चलणा एवं कायजोगचलणावि ॥ ११ ॥ अह भंते ! संवेगे, णिव्वेगे, गुरुसाहम्मिय सुस्सूसणया, आलोयणया, णिंदणया, गरहणया, खमावणया, सुतसहायता, विउसमणया भावे, अप्पडिबद्धता,

मायोग्य द्रव्यों को श्रोत्रेन्द्रियपने परिणमाते हुवे श्रोत्रेन्द्रिय की चलना चली, चलते हैं व चलेंगे इसलिये ऐसा कहा गया है कि श्रोत्रेन्द्रिय की चलना. ऐसे ही स्पर्शेन्द्रिय की चलना तक कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! मनयोग चलना किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! मनयोग में वर्तनेवाले जो जीवों हैं वे मन मायोग्य द्रव्य को मनयोगपने परिणमाते मन चलना चले, चलते हैं व चलेंगे इस लिये यावत् मनयोग चलना. ऐसे ही वचन योग व काया योग का जानना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! १ मोक्षकी अभिलाषा रूप संवेग भाव से २ संसार त्याग रूप निर्वेग भाव से

शब्दार्थ जाता है जा॰ यावत् से॰ वह पु॰ पुरुषवैर से पु॰ स्पर्शा से॰ वह गो॰ गौतम क॰ करते को क॰ किया सं॰ सांधते को सं॰ सांधा नि॰ खींचते को नि॰ खींचा नि॰ निकलते को नि॰ निकला व॰ कहना है॰ हां भं॰ भगवन् क॰ करते को किया जा॰ यावत् नि॰ निकला जे॰ जो मि॰ मृगको मा॰ हने से॰ वह मि॰ मृगवैर से पु॰ स्पर्शे जे॰ जो पु॰ पुरुष को मा॰ हने से॰ वह पु॰ पुरुषवैर से पु॰ स्पर्शे अं॰

सूत्र जाव से पुरिसवेरेणं पुट्ठे। सेणूणं गोयमा ! कज्जमाणे कडे, संधिज्जमाणे संधिए, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठेत्ति वत्तव्वंसिया। हंता भगवं ! कज्जमाणे कडे जाव निसट्ठेत्ति वत्तव्वंसिया। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जे मियंमारेइ से मियवेरेणं पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेणं पुट्ठे, अंतो छण्हं मासाणं मरइ-

भावार्थ मृग को मारा उस को मृग का वैर हुआ. अहो भगवन् ! यह अर्थ किस तरहसे है ? अहो गौतम ! 'कज्जमाणे कडे' करते हुवे को किया अर्थात् धनुष्य बाण करने लगा सो किया, 'संधिज्जमाणे संधिए' धनुष्य बाण सांधनेलगा सो सांधा, 'निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए' धनुष्य खींचने लगा सो खींचा व 'निसरिज्जमाणे निसिट्ठे' धनुष्य में से बाण नीकलनेलगा सो नीकला ऐसा कहा जा सकता है. हां भगवन् ! करते को किया हुवा यावत् नीकलते को निकला हुवा कहा जा सकता है. इसी से अहो गौतम ! जो मृग मारता है वह मृग का वैर से स्पर्शाता है अर्थात् उस मृग मारनेवाले को मृग का वैर लगता है और पुरुष

शब्दार्थ

जाता है जा० यावत् से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा से० वह गो० गौतम क० करते को क० किया भं० सांधते को सं० सांधा नि० खींचते को नि० खींचा नि० निकलते को नि० निकला व० कहना हं० हां भं० भगवन् क० करते को किया जा० यावत् नि० निकला जे० जो मि० मृगको मा० हने से० वह मि० मृगवैर से पु० स्पर्शे जे० जो पु० पुरुष को मा० हने से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शे अं०

सूत्र

जाव से पुरिसवेरेणं पुट्ठे । सेणूणं गोयमा ! कज्जमाणे कडे, संधिज्जमाणे संधिए, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठेत्ति वत्तव्वंसिया ! हंता भगवं ! कज्जमाणे कडे जाव निसट्ठेत्ति वत्तव्वंसिया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जे मियंमारेइ से मियवेरेणं पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेणं पुट्ठे, अंतो छण्हं मासाणं मरइ-

भावार्थ

मृग को मारा उस को मृग का वैर हुआ. अहो भगवन् ! यह अर्थ किस तरहसे है ? अहो गौतम ! 'कज्जमाणे कडे' करते हुवे को किया अर्थात् धनुष्य बाण करने लगा सो किया, 'संधिज्जमाणे संधिए' धनुष्य बाण सांधनेलगा सो संधा, 'निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए' धनुष्य खींचने लगा सो खींचा व 'निसरिज्जमाणे निसिट्ठे' धनुष्य में से बाण नीकलनेलगा सो नीकला ऐसा कहा जा सकता है. हां भगवन् ! करते को किया हुवा यावत् नीकलते को निकला हुवा कहा जा सकता है. इसी से अहो गौतम ! जो मृग मारता है वह मृग का वैर से स्पर्शाता है अर्थात् उस मृग मारनेवाले को मृग का वैर लगता है और पुरुष

शब्दार्थ क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव ग० गुरुत्व को ह० शीघ्र आ० आते हैं गो० गौतम पा० प्राणातिपात से मु० मृषावाद से अ० अदत्तादान मे० मैथुन प० परिग्रह को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ पे० राग दो० द्वेष क० कलह अ० कलंक चढाना पे० चुगली र० रति अ० अरति प० परपरिवाद मा० कपट मि० मिथ्यादर्शन शल्य ए० ऐसे ख० निश्चय जी० जीव ग० गुरुत्व को ह० शीघ्र आ० आते हैं ॥ १ ॥ भं० भगवन् जी० जीव ल० लघुत्व ह० शीघ्र आ० आते हैं गो० गौतम पा० प्राणातिपात

सूत्र कहणं भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवाएणं, मुसावाएणं, आदिन्न, मेहुण, परिग्गह, कोह, माण, माया, लोह, पेज्ज, दोस, कलह, अब्भक्खाण, पेसुन्न, रति, अरति, परपरिवाए, मायामोस, मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥ १ ॥ कहणं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ?

भावार्थ आठवे उद्देशे के अंत में वीर्य का वर्णन किया है. और जीव वीर्य से भारी होता है इसलिये आगे गुरुत्व का अधिकार चलता है. अहो भगवन् ! अधोगति गमनरूप गुरुत्व किस तरह से जीव प्राप्त करे? अहो गौतम ! १ प्राणातिपात-जीव का अतिपात से, २ मृषावाद-असत्य बोलने से ३ अदत्तादान-चोरी करने से ४ मैथुन से ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान-कलंक चढाने से १४ पैशुन्य-चुगली करने से १५ रति अरति १६ परपरिवाद अन्य का

सूत्र

किरिया कज्जइ ? हंता अत्थि ॥ सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ ? गोयमा पुट्ठाकज्जइ णो अपुट्ठाकज्जइ, एवं जहा पढमसए छट्ठुद्देसए जाव णो अणाणुपुव्विकड-त्ति वत्तव्वंसिया, एवं जाव वेमाणियाणं णवरं जीवाणं एगिंदियाणय णिव्वाघाएणं छद्दिसिं वाघायं पडुच्च सियतिदिसिं सिय चउद्दिसिं सिय पंचदिसिं सेसाणं णियमं छद्दिसिं ॥ १ ॥ अत्थिणं भंते ! जीवा मुसावाएणं किरिया कज्जइ ? हंता अत्थि ॥ साभंते ! किं पुट्ठाकज्जइ अपुट्ठा कज्जइ जहा पाणाइवाएणं दंडओ एवं मुसावाएणवि ॥

भावार्थ

होती है ? हां गौतम ! जीवों को प्राणातिपात से क्रिया होती है. अहो भगवन् ! वह स्पर्शी हुइ होती है या बिना स्पर्शी हुई होती है ? अहो गौतम ! स्पर्शी हुई होती है परंतु बिना स्पर्शी हुई नहीं है. वगैरह जैसे प्रथम शतक के छठे उद्देशे में कहा वैसे ही कहना यावत् अनुपूर्वीकृत ऐसा कहना. ऐसेही वैमानिक पर्यंत सब दंडक का जानना, परंतु समुच्चय जीव एकेन्द्रिय में निर्व्याघात आश्री छदिशि व्याघात आश्री क्वचित् तीन दिशि, चारदिशि क्वचित् पांचदिशि कहना. और शेष सब को छ दिशि कहना. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीवों को मृषावाद से क्रिया होती है ? हां गौतम ! जीवों को मृषावाद से क्रिया होती है. अहो भगवन् ! क्या वह स्पर्शी हुई होवे या बिना स्पर्शी हुइ होवे ? अहो गौतम ! जैसे प्राणातिपात का

शब्दार्थ पार ॥ ३ ॥ स० सातवा उ० आकाशांतर किं० क्या ग० गुरु ल० लघु ग० गुरुलघु अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु नो० नहीं गुरुलघु अ० अगुरुलघु स० सातवा त० तनुवात किं० क्या गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु ग० गुरुलघु नो० नहीं अगुरुलघु ए० ऐसे स० सातवा घ० घनवात स० सातवा घ० घनोदधि स० सातवी पु० पृथ्वी उ० आकाशांतर स० सर्व ज० जैसे स०

सूत्र चीईवयंति, पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि॥ ३ ॥सत्तमेणं भंते ! उवासंतरे किं गरुए, लहुए, गरुय लहुए, अगुरुय लहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, नो गरुय लहुए, अगरुय लहुए सत्तमेणं भंते ! तणुवाए किं गरुए, लहुए, गरुयलहुए, अगरुयलहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, गरुय लहुए, नो अगरुय लहुए एवं सत्तमे

भावार्थ नहीं करना ये चार बोल अप्रशस्त कहाये गये हैं ॥ ३ ॥ जीव के गुरुत्व लघुत्व से आकाशादिक का गुरुत्व लघुत्व कहते हैं. १ अहो भगवन् ! सातवी नरककी नीचेका आकाशान्तर क्या गुरुत्व, लघुत्व, गुरुलघुत्व, व अगुरुलघुत्ववाला है ? अहो गौतम ! सातवी नरक का आकाशान्तर गुरु, लघु व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरुलघु है. अहो भगवन् ! सातवी नरक की नीचे का तनुवात क्या गुरु, लघु, गुरुलघु व अगुरुलघु है ! अहो गौतम ! सातवा तनुवात गुरु नहीं है, लघु नहीं है परंतु गुरु लघु है और अगुरु लघु नहीं है. ऐसे ही सातवा घनवात, सातवा घनोदधि, सातवी पृथ्वी व सब आकाशान्तर को सातवा

[illegible]

[illegible] नो [illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible], एवं [illegible]
[illegible] । [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] नहीं है [illegible] नहीं है परंतु [illegible]
[illegible] के [illegible] का [illegible],
[illegible] की [illegible]
[illegible]

सूत्र

दुक्खं, णो परकडं दुक्खं, णो तदुभयकडं दुक्खं, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥ जीवाणं भंते ! किं अत्तकडं दुक्खं वेदेंति परकडं दुक्खं वेदेंति तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति ? गोयमा! अत्तकडं दुक्खं वेदेंति, णो परकडं दुक्खं [illegible], णो तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ५ ॥ जीवाणं भंते ! किं अत्तकडा वेदणा, परकडा वेदणा तदुभयकडा वेदणा ? गोयमा ! अत्तकडा वेदणा णो परकडा वेदणा, णो तदुभयकडा वेदणा ॥ एवं जाव वेमाणियाणं

भावार्थ

जानना. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीवों को क्या स्वतः का किया हुवा दुःख है परका किया हुवा दुःख है या उभय का किया हुवा दुःख है ? अहो गौतम ! जीवों को स्वतः का किया हुवा दुःख है परंतु अन्य का किया व उभय का किया हुवा दुःख नहीं है ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जीव आत्मकृत दुःख वेदते हैं परकृत दुःख वेदते हैं या उभयकृत दुःख वेदते हैं ? अहो गौतम ! जीव आत्मकृत दुःख वेदते हैं परकृत व उभय कृत दुःख नहीं वेदते हैं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जीवों को क्या आत्मकृत वेदना, परकृत वेदना व उभयकृत वेदना है ? अहो भगवन् ! जीवों को आत्म कृत वेदना है परंतु परकृत व उभय कृत वेदना नहीं है ऐसे ही वैमानिक पर्यंत चौवीस

गु० गुरु नो० नहीं ल० लघु नो० नहीं गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु ॥ ७ ॥ क० कर्म द० द्रव्य कार्माण वर्गणा च० चौथा प० पद में ॥ ८ ॥ क० कृष्ण ले० लेश्या भं० भगवन् किं० क्या ग० गुरु जा० यावत् अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु गु० गुरु लघु अ० अगुरु लघु से० वह के० कैसे द० द्रव्य लेश्या प० प्रतीत्य त० तीसरापद भा० भाव लेश्या प० प्रतीत्य च० चौथा पद ए० ऐसे जा० यावत सु० शुक्ल

हुए, अगुरुयलहुए ॥७॥ कम्मा कम्मागियत्वदव्ववग्गणं, ॥८॥ कण्हलेस्साणं भंते ! किं गरुया जाव अगुरुयलहुया ? गोयमा ! नोगरुया, नोलहुया, गरुयलहुयावि, अगुरुयलहुयावि । सेकेणट्टेणं ? गोयमा ! दव्वलेस्सं पडुच्च तइयपएणं, भावलेस्सं पडुच्च

नहीं, लघु नहीं गुरुलघु नहीं परंतु अगुरुलघु है ॥ ७ ॥ कर्म-अमूर्त होने से और कर्मवर्गणा के पुद्गल अगुरु लघु होते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या क्या गुरु, लघु यावत् अगुरु लघु है ? गौतम कृष्णलेश्या गुरु नहीं, लघु नहीं, गुरुलघु, व अगुरु लघु है. अहो भगवन् किस कारन से कृष्ण लेश्या गुरु लघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! द्रव्य लेश्या की अपेक्षा से गुरुलघु है क्यों की द्रव्य लेश्या उदारिक शरीर के वर्ण वाली है और उदारीक शरीर गुरुलघु है इसलिये कृष्ण लेश्या द्रव्य लेश्या की अपेक्षा से गुरु लघु जानना और भाव लेश्या की अपेक्षा से अगुरुलघु जानना क्यों की भाव लेश्या जो जीव परिणाम वह अमूर्त होने से अगुरु लघु होते हैं इसलिये भाव लेश्या की अपेक्षा से कृष्ण लेश्या अगुरुलघु जानना जैसे

शब्दार्थ अ० जैसे अ० मैंने ॥ १९४ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ द० दृढ प्रतिज्ञ के० केवली की अं० पास से ए० यह अ० बात सो० सुनकर णि० अवधारकर भी० डरे त० त्रासपाये त० भसित हुवे सं० संसारभय से उ० उद्विग्न द० दृढ प्रतिज्ञ के० केवली को वं० वंदना करेंगे ण० नमस्कार करेंगे त० उस ठा० स्थान की आ० आलोचना करेंगे नि० निंदा करेंगे जा० यावत् प० अंगीकार करेंगे ॥ १९५ ॥ त० तब द० दृढ प्रतिज्ञ के० केवली ब० बहुत वा० वर्ष के० केवली प० पर्याय पा० पाकर अ० अपना आ० आयुष्य शेष जा० जानकर भ० भक्त प्रत्याख्यान करेंगे ए० ऐसे ज० जैसे उ०

सूत्र जहाणं अहं ॥ १९४ ॥ तएणं ते समणा णिग्गंथा दढ्ढपइण्णस्स केवलिस्स अंतियं एयमट्ठं सोचा णिसम्म भीया तत्था तसिया संसारभय उव्विग्गा दढ्ढ पइण्णं केवलिं वंदिहिंति णमंसिहिंति तस्स ठाणस्स आलोइएहिंति निंदिहिंति जाव पडिवज्जेहिंति ॥ १९५ ॥ तएणं दढ्ढपइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलपरियागं पाउणिहिंति २ त्ता अप्पाणं आउसेसं जाणित्ता भत्तपच्चक्खाहिंति, एवं जहा उववाइए जाव सव्वदुक्खाणमंतं

भावार्थ गतिक संसार में परिभ्रमण किया वैसा परिभ्रमण मत करो ॥ १९४ ॥ उस समय में दृढ प्रतिज्ञ केवली की पास से ऐसा सुनकर अवधार कर श्रमण निर्ग्रंथ डरे, त्रास पाये, संसार से उद्विग्न बने और दृढ प्रतिज्ञ केवली को वंदना नमस्कार कर उस की आलोचना, निंदा यावत् प्रतिक्रमण करने लगे ॥ १९५ ॥ फीर दृढप्रतिज्ञ कुमार बहुत वर्ष पर्यंत केवली पर्याय पालकर और अपना आयुष्य शेष जानकर भक्त

शब्दार्थ गु० गुरु नो० नहीं ल० लघु नो० नहीं गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु ॥ ७ ॥ स० समय क० कार्माण वर्गणा च० चौथा प० पद में॥ ८ ॥ क० कृष्ण ले० लेश्या भं०भगवन् किं० क्या ग० गुरु जा० यावत् अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु गु० गुरु लघु अ० अगुरु लघु से० वह के० कैसे द० द्रव्य लेश्या प० प्रत्यय त० तीसरापद भा० भाव लेश्या प० प्रत्यय च० चौथा पद ए० ऐसे जा० यावत् सु० शुक्ल

सूत्र हुए अगुरुयलहुए ॥७॥ समया कम्माणियचउत्थपएणं, ॥८॥ कण्हलेसाणं भंते ! किं गरुया जाव अगुरुयलहुया ? गोयमा ! नोगरुया, नोलहुया, गरुयलहुयावि, अगुरुयलहुयावि । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्वलेस्सं पडुच्च तइयपएणं, भावलेस्संपडुच्च

भावार्थ नहीं, लघु नहीं गुरुलघु नहीं परंतु अगुरुलघु है ॥ ७ ॥ काल-अमूर्त होने से और कर्मवर्गणा के पुद्गल अगुरु लघु होते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या क्या गुरु, लघु यावत् अगुरु लघु है ? गौतम कृष्णलेश्या गुरुनहीं, लघुनहीं, गुरुलघु, व अगुरु लघु है. अहो भगवन् किस कारन से कृष्ण लेश्या गुरु लघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! द्रव्य लेश्या की अपेक्षासे गुरुलघु है क्यों की द्रव्य लेश्या उदारिक शरीर के वर्ण वाली है और उदारीक शरीर गुरुलघु है इसलिये कृष्ण लेश्या द्रव्य लेश्या की अपेक्षा से गुरु लघु जानना और भाव लेश्या की अपेक्षा से अगुरुलघु जानना क्यों की भाव लेश्या जो जीव परिणाम वह अमूर्त होने से अगुरु लघु होते हैं इसलिये भाव लेश्या की अपेक्षा से कृष्ण लेश्या अगुरुलघु जानना जैसे

सूत्र

॥ ६ ॥ जीवाणं भंते ! किं अत्तकडं वेदणं वेदेंति, परकडं वेदणं वेदेंति तदुभयकडं वेदणं वेदेंति ? गोयमा जीवा अत्तकडं वेदणं वेदेंति, णो परकडं वेदणं वेदेंति, णो तदुभयकडं वेदणं वेदेंति, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्सय चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ४ ॥ ० ० ०

कहिणं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं, इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम जहा ठाणपदे जाव मज्झे ईसाणवडिंसए सेणं

भावार्थ

ही दंडक का जानना ॥६॥ अहो भगवन् ! जीव क्या आत्म कृत वेदना वेदते हैं यावत् उभय कृत वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! जीव आत्म कृत वेदना वेदते हैं. परकृत व उभयकृत वेदना नहीं वेदते हैं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का चौथा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ४ ॥ ० ०

चौथे उद्देशे में वेदना का अधिकार कहा. साता वेदनीय कर्मवाले देवता होते हैं इसलिये साता वेदनीय का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! ईशान नामक देवेन्द्र देवराजा की सुधर्मा सभा कहां है ?

शब्दार्थ

गु० गुरु नो० नहीं ल० लघु नो० नहीं गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु ॥ ७ ॥ स० समय क० कार्माण वर्गणा प० चौथा प० पद में॥ ८ ॥ क० कृष्ण ले० लेश्या भं० भगवन् किं० क्या ग० गुरु जा० यावत् अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहींलघु गु० गुरु लघु अ० अगुरु लघु से० वह के० कैसे द० द्रव्य लेश्या प० प्रत्यय त० तीसरापद भा० भाव लेश्या प० प्रत्यय च० चौथा पद ए० ऐसे जा० यावत सु० शुक्ल

मूल

हुए अगुरुयलहुए ॥७॥ समया कम्माणियचउत्थपएणं, ॥८॥ कण्हलेसाणं भंते ! किं गरुया जाव अगुरुयलहुया ? गोयमा ! नोगुरुया, नोलहुया, गरुयलहुयावि, अगुरुयलहुयावि । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्वलेस्सं पडुच्च तइयपएणं, भावलेस्संपडुच्च

भावार्थ

नहीं, लघु नहीं गुरुलघु नहीं परंतु अगुरुलघु है ॥ ७ ॥ काल-अमूर्त होने से और कर्मवर्गणा के पुद्गल अगुरु लघु होते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या क्या गुरु, लघु यावत् अगुरु लघु है ! गौतम कृष्णलेश्या गुरुनहीं, लघुनहीं, गुरुलघु, व अगुरु लघु है. अहो भगवन् किस कारन से कृष्ण लेश्या गुरु लघु व अगुरुलघु है ! अहो गौतम ! द्रव्य लेश्या की अपेक्षासे गुरुलघु है क्यों की द्रव्य लेश्या उदारिक शरीर के वर्ण वाली है और उदारीक शरीर गुरुलघु है इसलिये कृष्ण लेश्या द्रव्य लेश्या की अपेक्षा से गुरु लघु जानना और भाव लेश्या की अपेक्षा से अगुरुलघु जानना क्यों की भाव लेश्या जो जीव परिणाम वह अमूर्त होने से अगुरु लघु होते हैं इसलिये भाव लेश्या की अपेक्षा से कृष्ण लेश्या अगुरुलघु जानना जैसे

शब्दार्थ

गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को वं० वंदना कर न० नमस्कार कर सं० संयम त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं ॥ ४ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर रा० राजगृह न० नगर से गु० गुणशीलक चे० चैत्य से प० निकले प० निकलकर व० बाहिर ज० अन्यदेश में वि० विचरने लगे ॥ ५ ॥ ते० उसकाल ते० उस समय में क० कयंगला ना० नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त ती० उस क० कयंगला न० नगरी की व० बाहिर उ० ईशान

मूल

हीणेत्ति वत्तव्वं सिया. सेवं भंतेत्ति. भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ४ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ, गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणंसमएणं कयंगला णामं नयरीहोत्था, वण्णओ तीसेणं कयंगलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए

भावार्थ

और सब दुःख का क्षय करने से सर्व दुःख प्रहीन कहना. अहो भगवन् ! आपने कहा सो सत्य है ऐसा कहकर गौतम स्वामी संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे ॥ ४ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवन्त महावीर राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में से नीकल कर अन्य देश में विचरने लगे. ॥ ५ ॥ उसकाल उस समय में कयंगला नामक नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ सूत्र

इतिहास पं० पांचवा नि० निगण्टु संग्रह छ० छठा च० चारवेद का सं० सांगोपांग स० रहस्य सहित सा० स्मरण करनेवाला वा० शुद्धकरनेवाला धा० धारक पा० पारगामी स० छअंग स० कापिलीयशास्त्र वि० पंडित सं० गणित शास्त्र सि० अक्षररूप शास्त्र वा० शब्द छं० छंद नि० शब्द उत्पत्ति का ज्ञान जो० ज्योतिषी शास्त्र अ० अन्य कोई व० बहुत बं० ब्राह्मण प० परिव्राजक में न० नय में सु० अच्छा निश्चयार्थ का ज्ञान हो० था ॥ ७ ॥ त० तहां सा० सावत्थी न० नगरी में पिं० पिंगलक नि० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक

मूल

वेय, अहव्वणवेय, इतिहास पंचमाणं, निघंटुछट्ठाणं, चउण्ह वेयाणं संगोवंगाणं, सरहस्साणं सारए, वारए, धारए, पारए, सडंगवी, सट्ठितंतविसारए, संखाणे, सिक्खाकप्पे, वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे, अण्णेसुय बहुसु बंभण्णएसु परिव्वायएसु नएसु सुपरिनिट्ठिएयावि होत्था. ॥ ७ ॥ तत्थणं सावत्थीए नयरीए पिंगलए नामंनियंठे वेसालिय

भावार्थ

शिष्य कात्यायन गोत्रीय खंदक नामक परिव्राजक रहताथा. वह खंदक परिव्राजक ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद, अथर्ववेद, इतिहास सो प्राचिनकाल के महापुरुषों की कथाओं, और निघन्टु सो अनेकार्थ वाची कोष ऐसे षट्शास्त्र के ज्ञाता थे. और चारों वेदों के छअंग और उस में कहे हुवे मबंध सो अंग, इनकी मयुक्ति, युक्तियों को वारंवार स्मरण करनेवाले, अशुद्ध पाठ का निषेध करनेवाले, हृदय में धारन करनेवाले व पारगामी थे. वैसे ही छ अंग व कापीलिय शास्त्र के ज्ञाताथे. संख्या-गणितविद्या, शिक्षाकल्प, व्याकरण,

णित्ता पच्छा उववज्जिज्जा, सव्वेण समोहणमाणे पुव्विं उववज्जिज्जा पच्छा संपाउणेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा ॥ १ ॥ पुढवीकाइयाणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव समोहए समोहएत्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढवी एवं चेव ईसाणेवि ॥ एवं अच्चुयगेवेज्ज विमाणे अणुत्तर विमाणे ईसिप्पभाराएय एवं चेव ॥ २ ॥ पुढवी काइयाणं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए समोहए समोहएत्ता जे भविए सोहम्मकप्पे पुढवी एवं जहा रयणप्पभाए पुढवीकाइओ उववाइओ; एवं सक्करप्पभाए पुढवी काइओ उववाएयव्वो, जाव ईसिप्पभाराए, एवं जहा रयणप्पभाए वत्तव्वया भणिया

उत्पन्न होवे और सर्व से समुद्घात करते पहिले उत्पन्न होवे पीछे आहार करे इसलिये ऐसा कहा गया है. यावत् उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में पृथ्वी काया मारणांतिक समुद्घात करके ईशान देवलोक में पृथ्वी कायापने उत्पन्न होवे तो क्या पहिले उत्पन्न होकर पीछे आहार करे अथवा पहिले आहार करके पीछे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे सौधर्म देवलोकका कहा वैसे ही यहां जानना. ऐसे ही सनत्कुमार यावत् अच्युत, ग्रैवेयक, अनुत्तर विमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी तक का जानना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शर्करप्रभा में से पृथ्वीकाया मारणान्तिक समुद्घात करके सौधर्म देवलोक में पृथ्वी काया

शब्दार्थ देखो गो० गौतम पु० पूर्व सं० मित्रको कं० किनको भं० भगवन् खं० खंदक को का० किसवक्त कि० किसतरह के० कितने वक्त में प० ऐसा गो० गौतम ते० उस समय में सा० सावत्थी न० नगरी ग० गर्दमालिका अं० अंतेवासी खं० खंदक का० कात्यायन गोत्रीय प०परिव्राजक प० रहता है ज० उनको जा० यावत् म० मेरीपास प० निश्चय किया ग० आने को से० वह अ० नजदीक व० बहुत नजदीक अ० मार्ग में प० रहाहुवा अं० रस्ते में व० रहा है अ० आजही दि० देखेगा ॥ १० ॥ भ० भगवान् गो०

सूत्र, हंता,केवचिरेणवा? एवं खलु गोयमा! तेणंकालेणं तेणंसमएणं सावत्थी णामं णयरी होत्था, वण्णओ, तत्थणं सावत्थीए नगरीए गद्दभालिस्स अंतेवासी खंदए णामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ तंचेव जाव जेणेव मम अंतिए तेणेव पाहारेच्छ गमणाए सेअदूरामए बहुसंपत्ते, अद्धाणपडिवण्णे अंतरापहे वट्टइ अज्जेवणं दिच्छसि गोयमा ! ॥ १० ॥ भंतेत्ति

भावार्थ पूर्व संगतिवाला कौनसा मित्रको मैं देखूंगा ? तब श्री भगवन्त बोले की तू खंदक को देखेगा. तब गौतम स्वामी बोले की किस समय, किस प्रकार व कितनी देर में मीलेगा ? तब श्री भगवन्त बोले की उस काल उस समय में श्रावस्ती नामक नगरी में गर्दभाली परिव्राजकका शिष्य कात्यायन गोत्रीय खंदक नामक परिव्राजक रहता है. उन को पिंगलक निर्ग्रंथने प्रश्न किया. जिस का उत्तर नहीं दे सकने से मेरी पास आरहा है. वह अभी रस्ते के मध्य में है और उसे तू आज ही देखेगा ॥ १० ॥ श्री गौतम

सूत्र

पुढवीकाइओ सव्वपुढवीसु उववाइओ, एवं जाव ईसिप्पभाग पुढवीकाइओ सव्वपुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहे सत्तमाए ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ७ ॥

आउकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए समोहइत्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए एवं जहा पुढवीकाइओ तहा आउकाइओवि, सव्वकप्पेसु जाव ईसिप्पभाराए तहेव उववाएयव्वो, एवं जहा रयणप्पभा

भावार्थ

पृथ्वीकाया का उत्पन्न होना कहना. ऐसे ही जैसे सौधर्म पृथ्वीकायिक सब पृथ्वी में उत्पन्न होने का कहा वैसे ही यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वीकायिक सब पृथ्वी में जानना. यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सत्तरहवा शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ १७ ॥ ७ ॥

अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के अप्काय मारणांतिक समुद्घात करके सौधर्म देवलोक में उत्पन्न होने योग्य होवे वह क्या पहिले उत्पन्न होकर पीछे आहार करे अथवा पहिले आहार कर पीछे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे पृथ्वीकाया का कहा वैसे ही अप्काया का सब देवलोक यावत् [illegible] कहना. और जैसे रत्नप्रभा की अप्काया कही वैसे ही शर्करप्रभा यावत्

शब्दार्थ क० कात्यायन गोत्रीय नं० उनकी पास इ० शीघ्र आ० आया त० तब भ० भगवान् गो० गौतम खं० खंदक क०कात्यायन गोत्रीय अ०नजदीक आ०आयाहुवा जा०जानकर खि०शीघ्र अ०उठकर खि०शीघ्र प० सन्मुख जाकर जे० जहां खं० खंदक क०कात्यायन गोत्रीय ते०तहां उ०आकर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा व० बोले हे० अहो खं० खंदक सा० स्वागतम् सु० सुस्वागतं अ० योग्य आगमन सा० स्वागतम अ० योग्य आगमन से० वह नु० तम को खं० खंदक सा० सावत्थी न० नगरी में पिं०

सूत्र णं भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं अदूरमागयं जाणेत्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेइ २ त्ता, खिप्पामेव पच्चुगच्छइ पच्चुगच्छइत्ता जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी हे खंदया! सागयं खंदया! सुसागयं खंदया! अणुरागयं खंदया! सागयमणुरायं खंदया! सेणूणं तुमं खंदया, सावत्थीए णयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसा-

भावार्थ स्कंदक परिव्राजक की सन्मुख गये, और सन्मुख जाकर स्कंदक परिव्राजक को ऐसा बोले अहो स्कंदक तुम्हारा आगमन श्रेष्ट है, तुम्हारा आगमन अनुपम है, तुम्हारा आगमन शोभन व अनुपम है. अहो स्कंदक! श्रावस्ती नगरी में श्री महावीर के वचन सुनने को रसिक पिंगलक नामक निग्रंथने क्या ऐसे प्रश्नों पूछे थे कि अंत सहित लोक है, या अंत रहित लोक है, यावत् किस मरण से संसार की वृद्धि व हीनता

आउकाइओ तहा अहे सत्तमा पुढवी आउकाइओ उववाएयव्वो जाव ईसिप्पभाराए सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ८ ॥

आउकाइएणं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए समोहएत्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलएसु आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए सेणं भंते ! सेसं तंचेव एवं जाव अहे सत्तमाए जहा सोहम्मआउकाइओ एवं जाव ईसिप्पभारा आउकाइओ जाव अहे सत्तमाए उववातेयव्वो सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमसयस्सय णवमो

भावार्थ

सातवी तमतमा पृथ्वी यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का आठवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ८ ॥

अहो भगवन् ! सौधर्म देवलोक में अप्कायिक मरणांतिक समुद्घात करके इस रत्न प्रभा पृथ्वी के घनोदधि के वलय में उत्पन्न होने योग्य होवे तो वह वहां क्या उत्पन्न होकर आहार करे या आहार करके उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे पहिले कहा वैसे ही यहां जानना. यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी का. जैसे सौधर्म देवलोक का कहा वैसे ही ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का नीचे की सातवी पृथ्वी में उत्पन्न होने तक कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का नववा

शब्दार्थ

च० कहा खं० खंदक म० मेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भं० भगवान् म० महावीर उ० उत्पन्न णा० ज्ञान द० दर्शन युक्त अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली ती० अतीत प० वर्तमान अ० अनागत वि० विज्ञानक स० सर्वज्ञ स० सर्वदर्शी जे० जिनने म० मुझे ए० यह अर्थ त० तुमारा र० हृदय भाव ह० शीघ्र अ० कहा ज० जिससे अ० मैं जा० जानताहूं खं० खंदक ॥ १२ ॥ त० तब खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय भं० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले ग० जावे गो० गौतम

सूत्र

से भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी एवं खलु खंदया ! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए, समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली, तीय पच्चुप्पण्ण मणागय वियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी, जेणं ममएसअट्ठे तवताव सुकडे हव्वमक्खाए जओणं अहं जाणामि खंदया ? ॥ १२ ॥ तएणं से खंदए ...गसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी. गच्छामोणं गोयमा ? तव धम्मायरियं

भावार्थ

...क बोले की अहो गौतम ! मैं तुम्हारे धर्माचार्य धर्मोपदेशक श्री श्रमण भगवंत महा-महावीर स्वामी है. वे इन्द्रादिक के वंदनीक पूजनीक, रागादि शत्रु को जीतनेवाले, ...रहित, व अतीत, अनागत व वर्तमान के ज्ञानी सर्वज्ञ, सर्वदर्शी है. इनोंने मुझे यह ...ये पहिले बतलाया. उन के कथनसेही मैं यह जानता हूं ॥ १२ ॥

सूत्र

उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ९ ॥

वाउकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव जो भविए सोहम्मे कप्पे वाउकाइत्ताए उववज्जित्तए सेणं जहा पुढवीकाइओ तहा वाउकाइओवि णवरं वाउकाइयाणं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तंजहा वेदणासमुग्घाए, जाव वेउव्वियसमुग्घाए, मारणांतिय समुग्घाएणं समोहणमाणे देसेणवा समोहए सेसं तंचेव जाव अहे सत्तमा समोहयाओ ईसिप्पभाराए उववाएयव्वो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्सय दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १० ॥

भावार्थ

उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ९ ॥

अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में वायुकाया मारणांतिक समुद्घात करके यावत् सौधर्म देवलोक में वायुकायापने उत्पन्न होने को योग्य है वगैरह सब पृथ्वीकाया जैसे कहना. विशेष में वायुकाया को चार समुद्घात कही. जिन के नाम. वेदना समुद्घात यावत् वैक्रेय समुद्घात. मारणांतिक समुद्घात करते देश से समुद्घात करे शेष वैसे ही जानना यावत् सातवी पृथ्वीतक. ईषत्प्राग्भार में से उत्पन्न होने का. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह सत्तरहवा शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुआ. ॥ १७ ॥ १० ॥

। वं० व्यंजन गु० गुणयुक्त सि० श्री जैसे अ० अतीव उ० शोभते चि० रहते हैं॥ १४॥
धन्य मं० मंगलकारी अ० अलंकार रहित वि० विभू-
वर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रिय स०श्रमण भ० भगवान् म० महावीर का वि
० शरीर उ० उदार जा० यावत् अ० अतीव उ० शोभता पा० देखकर ह० आनंद
। आनंद हुवा पी० प्रीति हुइ प० उत्कृष्ट मा० अच्छा मन हुवा ह० हर्षयुक्त

णेवत्थेयं, सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥१४॥
यणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं
अतीव उवसोभेमाणं पासइ पासइत्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए
सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए, जेणेव समणे भगवं महावीरे

न्न, श्रेयकारी, उपद्रवकारी, वस्त्राभरण रहित होनेपर शोभनिक व लक्षण व्यंजन युक्त था.
मय कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक नित्यभोजी श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी
त्यंत शोभनिक यावत् लक्षण व्यंजन युक्त देखकर हृष्ट पुष्ट चित्तवाला हुआ, बहुत संतोषित
, आनंदित चित्तवाला हुआ, मन में प्रीति उत्पन्न हुई और

शब्दार्थ लोक जा॰ यावत् म॰ मेरी अं॰ पास ह॰ शीघ्र आ॰ आया से॰ वह खं॰ खंदक अ॰ अर्थ स॰ समर्थ हं॰ हां अ॰ है खं॰ खंदक ए॰ ऐसा अ॰ आत्मविषय में चिं॰ चिंतवन प॰ प्रार्थनारूप म॰ मनोगत सं॰ संकल्प स॰ उत्पन्न हुवा किं॰ क्या स॰ अंतसहित लोक अ॰ अनंतलोक त॰ उस का अ॰ यह अर्थ म॰ मैंने खं॰ खंदक च॰ चार प्रकार का प॰ प्ररूपा द॰ द्रव्य से खे॰ क्षेत्र से का॰ काल से भा॰ भाव से द॰ द्रव्य से ए॰ एक लो॰ लोक स॰ अंतसहित खे॰ क्षेत्र से लो॰ लोक अ॰ असंख्यात जो॰ योजन

सूत्र ए तेणेव हव्वमागए। सेणूणं खंदया! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि॥ जेवि य ते खंदया! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, किं सअंते लोए अणंते लोए तस्सावियणं अयमट्ठे, एवं खलु मए खंदया! चउव्विहे लोए पण्णत्ते तंजहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ. । दव्वओणं एगेलोए सअंते,॥

भावार्थ पास आया है तो क्या यह बात सत्य है? खंदक बोले हां यह सत्य है. अहो खंदक! तेरे मन में ऐसा अध्यवसाय, चिन्तवन, मनन, व मनोगत संकल्प उत्पन्न हुवा कि क्या अंत सहित लोक है या अंत रहित लोक है. परंतु अहो स्कंदक! मैं लोक का इस प्रकार प्ररूपता हूं. लोक के चार भेद कहे हैं द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे व भाव से. द्रव्य से पंचास्तिकायरूप एक, वह द्रव्य तत्त्व से अंत सहित है, क्षेत्र से सब लोक का मध्य मेरुपर्वत है उससे वह ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् दिशा की लम्बाइ व चौडाइ में असंख्यात योजन का

मूल

वायुकुमाराणं भंते ! सव्वे समाहारा, एवं चेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स सोलसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १६ ॥

अग्गिकुमाराणं भंते ! सव्वेसमाहारा एवं चेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स सत्तारसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १७ ॥ सम्मत्तं सत्तरसमं सयं ॥ १७ ॥

भावार्थ

वायु कुमार का भी वैसे ही कहना. अहो भगवन् आपके वचन सत्य हैं यह सत्तरहवा शतक का सोलहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ १६ ॥

अहो भगवन् ! क्या अग्निकुमार सरिखे आहार करने वाले वगैरह पहिले जैसे कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सत्तरहवा शतक का सत्तरहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १७ ॥ १७ ॥

शब्दार्थ संस्थान प० पर्यव अ० अनंत गु० गुरुलघु के प० पर्यव अ० अनंत अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उस का अ० अंत खं० खंदक द० द्रव्य से लो० लोक अ० अंतसहित खे० क्षेत्र से लो० लोक स० अंतसहित का० काल से लो० लोक अ० अनंत भा० भाव से लो० लोक अ० अनंत ॥ १६ ॥ खं० खंदक जा० यावत् स० अंतसहित जी० जीव अ० अनंत जीव त० उस का अ० यह अर्थ जा० यावत् द० द्रव्य से ए० एक जीव स० अंतसहित खे० क्षेत्र से जी० जीव अ० असंख्यात प० प्रदेशिक अ० असंख्यात प्रदेश

सूत्र पज्जवा, अणंता अगुरुयलहुयपज्जवा. नात्थिपुणसे अंते ॥ सेत्तं खंदया ! दव्वओ लोगेसअंते, खेत्तओलोए सअंते, कालओ लोए अणंते, भावओ लोए अणंते ॥ १६ ॥ जेविय ते खंदया ! जाव सअंतेजीवे अणंतेजीवे, तस्सवियणं अयमट्ठे एवं खलु जाव दव्वओणं एगजीवे सअंते, खेत्तओणं जीवे असंखेज्ज पएसिए, असंखेज्ज पएसोगाढे, अत्थिपुण से अंते, कालओणं जीवे नकदाइ न आसि णिच्चे

भावार्थ पर्यव, अनंत संठान पर्यव, अनंत गुरुलघु पर्यव, व अनंत अगुरुलघु पर्यव हैं. इसलिये भावसे लोक अनंत है. इसतरह से अहो स्कंदक ! द्रव्यसे लोक अंत सहित, क्षेत्रसेभी अंत सहित, कालसे व भाव से लोक अनंत है ॥ १६ ॥ अहो स्कंदक ! जीव अंत सहित है या अंत रहित है उस प्रश्न के उत्तर में जीव के चार भेद कहे हैं द्रव्य से, क्षेत्रसे, कालसे व भावसे, द्रव्य से एकही जीव है वह द्रव्य से अंत सहित है. क्षेत्रसे असं-

शब्दार्थ

उ० उत्थान जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रमसे ॥ ११ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० आत्मा से वे० वेदे ग० निन्दे हं० हां गो० गौतम ए० यहां सं० सर्व प० परंपरा ण० विशेष उ० उदेआया वे० वेदे णो० नहीं अ० उदे नहीं आया व० वेदे ए० ऐसे जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम ॥ १२ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० आत्मा से णि० निर्जरे अ० आत्मा से ग० निन्दे हं० हां गो० गौतम ए० यहां स० सर्व प० परंपरा ण० विशेष उ० उदयान्तर प० पीछे क० कीया क० कर्म नि० निर्जरे ए० ऐसे

सूत्र

॥ ११ ॥ सेणूणं भंते ! अप्पणा चेव वेदेइ, अप्पणा चेव गरहइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि सच्चेवि परिवाडी, णवरं उदिण्णं वेदेइ, णो अणुदिन्नं वेदेइ. एवं जाव पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ १२ ॥ सेणूणं भंते ! अप्पणा चेव णिज्जरेइ अप्पणा चेव गरहइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि सच्चेवि परिवाडी, णवरं उदयाणंतरं पच्छा कडं कम्मं

भावार्थ

कहना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जीव स्वयं वेदता है, स्वयं गर्हता है ? हां गौतम ! यहांपर सब परिपाटी पहिले जैसे कहना. इन में उदय आये हुवे कर्म वेदते हैं इतना ही विशेष हैं और पुरुषात्कार पराक्रमतक पहिले जैसे कहना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या स्वयं कर्म की निर्जरा करता है व गर्हा करता है ? हां गौतम ! यहांपर उदयान्तर समय पश्चात् कृतकर्म निर्जरे इतना विशेष जानना

शब्दार्थ खंदक पु० पृच्छा अं० अंत सहित सि० सिद्धि अ० अनंत सिद्धि त० उनका अ० यह अ० अर्थ म० मैंने च० चार प्रकार की सि०सिद्धि प० प्ररूपी द० द्रव्य से ए०एकसिद्धि स०अंतसहित खे० क्षेत्र से प० पैंतालीस जो० योजन स० लक्ष आ० लंबी वि० चौडी ए० एक जो० योजन क्रोड बा० बीयालीस स० लक्ष ती० तीस स० सहस्र दो० दो उ० इगुणपचास जो० योजन स० शत कि० किंचित् वि० विशेषाधिक प० परिधि में प० प्ररूपी अ० है से०उसका अं०अंत का०काल से सि० सिद्धि न०नहीं क०कदापि न०नहीं

सूत्र अणंतासिद्धी, तस्सवियणण अयमट्ठे, मए चउव्विहासिद्धी पं० तं० दव्वओ खेत्तओ, कालओ, भावओ. दव्वओणं एगासिद्धी, सअंता । खेत्तओणंसिद्धी पणयालीस जोयणसयसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं, एगाजोयण कोडी बायालीसं सयसहस्साइं तीसंच सहस्साइं दोण्णियअ उणापण्णे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता, अत्थिपुणसे अंते, कालओणंसिद्धी नकदाइनआसि, ॥ भावओय जहा

भावार्थ तुम को सिद्ध शिला अंत सहित है या अंत रहित है ऐसा प्रश्न पुछाथा उस का भी यह अर्थ है. सिद्धशिला चार प्रकार की कही है. द्रव्य से सिद्धशिला एक होने से अंत सहित है, क्षेत्र से सिद्धशिला ४५ लाख योजन की लम्बी व चौडी, वैसेही १४२३०२४९ से कुच्छ अधिक परिधि होने से अंत सहित है. काल से भूत भविष्य व वर्तमान ऐसे तीनों काल में शाश्वत होने

शब्दार्थ का० काल से सिद्ध सा० सादी अ० अपर्यवसित न० नहीं है पु० फीर से० उसका अं० अंत भा० भाव से सि० सिद्ध अ० अनंत णा० ज्ञान पर्यव दं० दर्शन पर्यव अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उसका अं० अंत॥१९॥ खं० खंदक ए० एतारूप अ० आत्मविषय चिं० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा के० किस म० मरण जी० जीव व० वृद्धि पावे हा० हीनपावे त० उसका अ० यह अर्थ खं० खंदक मैं० मैंने

मूल ओणं सिद्धे अणंता णाणपज्जवा अणंता दंसणपज्जवा, अणंता अगुरुलहुय पज्जवा, नत्थिपुण से अंते ॥ सेत्तं दव्वओ सिद्धे सअंते, खेत्तओ सिद्धे सअंते, कालओ सिद्धे अणंते, भावओ सिद्धे अणंते ॥१९॥ जे विय ते खंदया ! इमेयारूवे अज्झ-त्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था केणवा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढइवा, हायइवा, ।

भावार्थ ज्ञानपर्यव, दर्शनपर्यव, व अनंत अगुरुलघु पर्यव होने से अंत रहित है. इस तरह सिद्ध द्रव्य क्षेत्र से अंत सहित व काल भाव से अंत रहित है ॥ १९ ॥ अहो खंदक ! तुम को ऐसा विचार हुवा कि किस मरण से जीव संसारकी वृद्धि या हानि कर सकता है ? अहो खंदक ! मरण दो प्रकार के कहे हैं बाल मरण व पंडित मरण. उस में से बाल मरण के बारह भेद कहे हैं १ धर्म से भ्रष्ट होकर या क्षुधा से वलवलाट करता मरन मरे सो वलय मरण २ इन्द्रियों के वश में पडकर मरे सो वसट्ट मरण ३ अंतःकरण में शल्य रखकर मरे सो अंतःशल्य मरण ४ मनुष्य मरकर मनुष्य होना व

सूत्र

जाव वेमाणिए ॥१॥ सिद्धेणं भंते ! सिद्ध भावेणं किं पढमे अपढमे? गोयमा ! पढमे णो अपढमे ॥ २ ॥ जीवाणं भंते ! जीवभावेणं किं पढमा अपढमा ? गोयमा ! णो पढमा अपढमा ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ३ ॥ सिद्धाणं पुच्छा ? गोयमा ! पढमा णो अपढमा ॥ ४ ॥ आहारएणं भंते ! जीवे आहारभावेणं किं पढमे अपढमे? गोयमा ! णो पढमे अपढमे ॥ एवं जाव वेमाणिए ॥५॥ पोहत्तिएवि एवं चेव ॥६॥ अणाहारएणं भंते ! जीवे अणाहारभावेणं पुच्छा ? गोयमा ! सिय पढमे सिय अपढमे

भावार्थ

चौवीस दंडक का जानना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! सिद्ध सिद्धभाव से क्या प्रथम है या अप्रथम है ? अहो गौतम ! सिद्ध सिद्धभाव में अप्रथम है परंतु प्रथम नहीं है. यह एक आश्री कहा अब अनेक आश्री कहते हैं. अहो भगवन् ! बहुत जीव जीवभाव में क्या प्रथम हैं या अप्रथम हैं ? अहो गौतम ! प्रथम नहीं है परंतु अप्रथम हैं, एेसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ३ ॥ सिद्ध प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! आहारक जीव आहारभाव में क्या प्रथम है या अप्रथम है ? अहो गौतम ! प्रथम नहीं है परंतु अप्रथम है, एेसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ५ ॥ बहुत जीवों का भी वैसे ही जानना. ॥६॥ अहो भगवन्! अनाहारक जीव क्या अनाहार भाव से प्रथम है या अप्रथम है? अहो गौतम ! स्यात् प्रथम है स्यात् अप्रथम है अर्थात् कितनेक जीवों की अनाहारक होने की आदि है सिद्धवत् और

पदार्थ जीव अ० अनंत ने० नारकी भवग्रहण से अ० आत्मा को सं० योजे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव अ० अनादि अ० अनंत दी० दीर्घकाल चा० चतुर्गति सं० संसार कं० कंतार में अ० परिभ्रमण करे से० वह किं० कैसे पं० पंडित मरण पं० पंडितमरण दु० दोप्रकार का पा० पादोपगमन भ० भक्तप्रत्याख्यान पा० पादोपगमन दु० दोप्रकार नी० नीहारिम अ० अनीहारीम नि० निश्चय अ० प्रतिक्रमण रहित से०

सूत्र तिरिय मणुदेव अणाइयंचणं अणवदग्गं दीहद्धं, चाउरंत संसारकंतारं अणुपरियट्टइ. सेतं बालमरणेणं मरमाणे वड्ढइ । सेत्तं बालमरणे ॥ से किं तं पंडियमरणे ? पंडियमरणे ! दुविहे प० तं० ( ग्रंथ संख्या १००० ) पाओवगमणेय भत्त पंचक्खाणेय । से किं तं पाओवगमणे ? पाओवगमणे ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-नीहारिमेय, अनीहा-

भावार्थ है व अनादि अनंत चतुर्गतिक संसार में पर्यटन करता है. इसलिये बाल मरण से संसार की वृद्धि होती है. पंडित मरण क्या है ? पंडित मरण के दो भेद कहे हैं. १ पादोपगमन अर्थात् वृक्ष की गिरी हुई शाखा की तरह अपने शरीर को स्थिर करे २ भक्त प्रत्याख्यान सो जीवन पर्यंत अशनादि चारों आहार का त्याग करे. उसमें से प्रथम पादोपगमन के दो भेद कहे हैं १ नीहारिम सो नगरमें मरे. उन के शरीर का निहारन ( संस्कार ) होवे और २ अनीहारिम. पर्वतादिक में करे. उन के शरीर का निहारन ( संस्कार ) होवे नहीं. पादोपगमन मरण मरने वाला प्रतिक्रमण नहीं करता है क्यों कि वह हलन चलनादि क्रिया

पदार्थ वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय सं० संबुद्ध स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदन कर न० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भं० भगवन् तु०[तुमारी अं० पास के० केवली प० प्ररूपा, धर्म को नि० धारने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंध करो त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय ती० उस म० बडी म० महान् प० परिषदामें ध० धर्म प० कहा ध० धर्म कथा भा० कही॥२१॥ त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय

सूत्र एत्थणं से खंदए कच्चायण सगोत्ते संबुद्धे! समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता एवं वयासी इच्छामिणं भंते! तुज्झ अंतिए केवली पन्नत्तं धम्मं निसामित्तए. अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंधं ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे खंदयस्स कच्चायण सगोत्तस्स तीसियमहइ महालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ. धम्मकहा भाणियव्वा

भावार्थ प्रति बोध पाये और श्री श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर कहने लगे कि अहो भगवन्! आप की समीप केवली प्ररूपित धर्म सुनने को मैं चाहता हूं. अहो देवानुप्रिय! जैसा तुम को सुख होवे वैसा करो, विलम्ब मत करो. उस समय श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी ने उस महती परिषदा में खंदक परिव्राजक को धर्म कथा कही. ॥ २१ ॥ उस समय कात्यायन गोत्रीय खंदक ने महावीर स्वामी की

सूत्र

जाव वेमाणिए ॥१॥ सिद्धेणं भंते ! सिद्ध भावेणं किं पढमे अपढमे? गोयमा ! पढमे णो अपढमे ॥ २ ॥ जीवाणं भंते ! जीवभावेणं किं पढमा अपढमा ? गोयमा ! णो पढमा अपढमा ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ३ ॥ सिद्धाणं पुच्छा ? गोयमा ! पढमा णो अपढमा ॥ ४ ॥ आहारएणं भंते ! जीवे आहारभावेणं किं पढमे अपढमे? गोयमा ! णो पढमे अपढमे ॥ एवं जाव वेमाणिए ॥५॥ पोहत्तिएवि एवं चेव ॥६॥ अणाहारएणं भंते ! जीवे अणाहारभावेणं पुच्छा ? गोयमा ! सिय पढमे सिय अपढमे

भावार्थ

चौवीस दंडक का जानना. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! सिद्ध सिद्धभाव से क्या प्रथम है या अप्रथम है ? अहो गौतम ! सिद्ध सिद्धभाव से अप्रथम है परंतु प्रथम नहीं है. यह एक आश्री कहा अब अनेक आश्री कहते हैं. अहो भगवन् ! बहुत जीव जीवभाव से क्या प्रथम हैं या अप्रथम हैं ? अहो गौतम ! प्रथम नहीं हैं परंतु अप्रथम हैं, ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ३ ॥ सिद्ध प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! आहारक जीव आहारभाव से क्या प्रथम है या अप्रथम है ? अहो गौतम ! प्रथम नहीं है परंतु अप्रथम है, ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ५ ॥ बहुत जीवों का भी वैसे ही जानना. ॥६॥ अहो भगवन्! अनाहारक जीव क्या अनाहार भाव से प्रथम है या अप्रथम है? अहो गौतम ! स्यात प्रथम व स्यात् अप्रथम है अर्थात् कितनेक जीवों को अनाहारक होने की आदि है सिद्धवत् और

वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय सं० संबुद्ध स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदन कर न० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भं० भगवन् तु०[तुमारी अं० पास के० केवली प० प्ररूपा धर्म को नि० धारने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंध करो त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय ती० उस म० बडी म० महान् प०परिषदामें ध०धर्म प०कहा ध०धर्म कथा भा०कही॥२१॥ त०तब से०वह खं०खंदक क०कात्यायन गोत्रीय

एत्थणं से खंदए कच्चायण सगोत्ते संबुद्धे ! समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुज्झं अंतिए केवली पन्नत्तं धम्मं निसामित्तए. ...णुप्पिया मापडिबंधं ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे खंदयस्स कच्चायण ...महइ महालियाए परिसाए, धम्मं परिकहेइ. धम्मकहा भाणियव्वा

...मण भगवंत को वंदना नमस्कार कर कहने लगे कि अहो भगवन् ! आप की ...े को मैं चाहता हूं. अहो देवानुप्रिय ! जैसा तुम को सुख होवे वैसा ...र श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी ने उस महती परिषदा में खंदक ...२१ ॥ उस समय कात्यायन गोत्रीय खंदक ने महावीर स्वामी की

सूत्र

पुहत्तेणं पढमे णो अपढमे ॥ १६ ॥ सकसायी कोहकसायी जाव लोभकसायी एगत्तेणं पुहत्तेण जहा आहारए, अकसायी जीवे सिय पढमे सिय अपढमे, एवं मणुस्सेवि, सिद्धे पढमे णो अपढमे ॥ पुहत्तेणं जीवा मणुस्सा पढमावि अपढमावि, सिद्धा पढमा णो अपढमा ॥ १७॥ णाणी-एगत्त पुहत्तेणं जहा सम्मद्दिट्ठी, आभिणिबोहियणाणी जाव मणपज्जवणाणी एगत्तपुहत्तेणं एवंचेव, णवरं जस्सजं अत्थि, केवलणाणी जीवे मणुस्से सिद्धेय एगत्तपुहत्तेणं पढमा णो अपढमा ॥ अण्णाणी मइ अण्णाणी सुयअण्णाणी विभंगणाणी एगत्तपुहत्तेणं जहा आहारए

भावार्थ

आश्री प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है ॥ १६ ॥ सकषायी क्रोधकषायी यावत् लोभ कषायी एक अनेक आश्री आहारक जैसे जानना. अकषायी जीव व मनुष्य एक आश्री स्यात् प्रथम स्यात् अप्रथम है सिद्ध आश्री प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है. अनेक आश्री जीव मनुष्य प्रथम भी हैं और अप्रथम भी हैं सिद्ध प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं ॥ १७ ॥ ज्ञानी का एक आश्री समदृष्टि जैसे कहना. आभिनिबोधिक ज्ञानी यावत् मनःपर्यव ज्ञानी का एक व अनेक आश्री भी ऐसे ही कहना. केवल ज्ञानी जीव मनुष्य व सिद्ध में एक अनेक आश्री प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं. मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी विभंग ज्ञानी का

जो अ पांडिहि [illegible] पुणो आवेसो तेण अचरिमो होइ; अच्चन्तविजोगो जस्स,तेण भावेण सो चरिमो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति, जाव विहरइ ॥ अट्ठारसमस्स पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ ५ ॥ * * *

तेणं कालेणं तेणं समएणं विसाहा णामं णयरी होत्था, वण्णओ. सामी समोसढे जाव पज्जुवासइ ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी

[illegible] ॥ ४८ ॥ इस चरिम व अचरिम का लक्षण कहते हैं. जो जिस भाव को पुनः प्राप्त करेगा वह उस भाव में अचरिम है और जिस का जिस भाव का अत्यंत [illegible] है अर्थात् जिस भाव को पुनः प्राप्त नहीं करने का है वह उस भाव में चरिम है. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यों कह कर यावत् विचरने लगे. यह अठारहवा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ १८ ॥ ५ ॥ ० ० ० ०

[illegible] उद्देशे में [illegible] का कहा, दूसरे उद्देशे में चरमशरीरी देवेन्द्र का कथन करते हैं. उस [illegible] के विशाखा नामकी नगरी थी वह वर्णन योग्य थी. भगवंत श्रीमहावीर स्वामी पधारे परिषदा [illegible] करने को [illegible] यावत् पर्युपासना करने लगी. ॥ १ ॥ उस काल उस समय में [illegible]

सूत्र

पुरंदरे एवं जहा जहा सोलसमसए बिइए उद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेण आगओ णवरं एत्थं आभिओगावि अत्थि जाव बत्तीसइविहं नट्टविहं उवदंसेइ. उवदंसेइत्ता जाव पडिगए॥२॥भंतेत्ति भगवं गोयमे! समणं भगवं महावीरं जाव एवं वयासी जहा तइय सए ईसाणस्स तहेव कूडागारसाला दिट्ठंतो तहेव, पुव्वभव पुच्छा जाव अभिसमण्णागया, गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे हत्थि-णाउरे णामं णयरे होत्था वण्णओ, सहसंबणे उज्जाणे वण्णओ॥३॥तत्थणं हत्थिणाउरे

भावार्थ

धारन करनेवाला शक्र देवेन्द्र देवराजा जैसे सोलवे शतक के दूसरे उद्देशे में वर्णन किया वैसे यान विमान से आया. विशेष में यहां पर आभियोगिक देवों भी थे यावत् बत्तीसप्रकार के नाटक बतलाकर यावत् पीछा गया ॥२॥ भगवान गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को यावत् ऐसा बोले अहो भगवन् ! वगैरह जैसे तीसरे शतक में ईशानेन्द्र का कथन वैसे ही कूटाकारशाला के दृष्टांत से पूर्वभाव की पृच्छा यावत् प्राप्त हुआ. श्रमण भगवंत महावीरने गौतमादि श्रमण निर्ग्रंथों को कहा कि अहो गौतम ! उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में हस्तिनापुर नगर था. वह वर्णन योग्य था. उस की ईशान कौन में सहस्रवन उद्यानथा

[illegible] परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए [illegible] पडागे [illegible] जहा रायप्पसेणइज्जे चित्ते जाव [illegible] कामभोगे पच्चणुभवमाणे, [illegible] विहरइ ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं [illegible] अरहा अरिट्ठनेमी जहा सोलसमसए तहेव समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ ५ ॥ तएणं से [illegible] इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ एवं

[illegible] नगर के [illegible] राजा था [illegible] अपरिभूत था. [illegible] हजार [illegible] बहुत [illegible] मनुष्यों को [illegible] था. [illegible] का [illegible] मानता हुआ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] समय [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]

शब्दार्थ पार्श्वनाथ के संतानिये थे० स्थविर भ० भगवन्त जा० जातिवंत जा० यावत् अ० यथाप्रतिरूप उ० अनुज्ञा ओ० लेकर सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं म० महाफल दे० देवानुप्रिय त० तथारूप थे० स्थविर भ० भगवन्त के ना० नाम गो० गोत्र को स० सुनने से किं० क्या अ० अभिगमन वं० वंदन न० नमस्कार प० पृच्छना प० पूजते जा० यावत् ग० ग्रहण करते तं०

सूत्र सद्दाविंति एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया। पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जाति संपण्णा जाव अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा-विहरंति. तं महाफलं खलु देवाणुप्पिया तहारूवाणं थेराणं भगवंताणं नामगोयस्स विसवणयाए किमंगपुण अभिगमण वंदण नमंसण पडिपुच्छण पज्जुवास-

भावार्थ वार्तालाप सुनकर बहुत आनंदित हुए. और परस्पर ऐसा बोलनेलगे कि अहो देवानुप्रिय! जातिसंपन्न यावत यथाप्रतिरूप श्री पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्यानुशिष्य श्री स्थविर भगवन्त पुष्पावती उद्यान में आज्ञा मांगकर संयम व तपसे आत्माको भावते हुवे विचर रहे हैं. ऐसे तथारूप स्थविर भगवन्त का नाम गोत्र सुनने से ही महा फल होता है तो फीर अभिगमन, वंदन, नमस्कार, प्रतिपृच्छा, पर्युपासना यावत् अर्थादिक का ग्रहण करने का तो कहना ही क्या! इसलिये अहो देवानुप्रिय! अपन वहां जावे और स्थविर भगवन्तको वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करे. यही इस भव व परभव में अनुगामीक होगा. ऐसा परस्पर वार्तालाप

सूत्र

जहा एक्कारसमसए सुदंसणे तहेव णिग्गओ जाव पज्जुवासइ ॥ ६ ॥ तएणं मुणि सुव्वए अरहा कत्तियस्स सेट्ठिस्स धम्मकहा जाव परिसा पडिगया ॥ ७ ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी मुणिसुव्वयस्स जाव णिसम्म हट्ठ तुट्ठ उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेइत्ता मुणिसुव्वय जाव एवं वयासी-एवमेयं भंते! जाव से जहेयं तुब्भे वदह, जं णवर देवाणुप्पिया! णेगमट्ठ सहस्सं आपुच्छामि, जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेमि तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं पव्वयामि ॥८॥ अहासुहं जाव मापडिबंधं ॥ ९ ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी जाव पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता जेणेव हत्थिणापुरं णयरं जणेव सए गिहे तेणेव

भावार्थ

अंगीकार करता वैसे ही अपने गृह से नीकला यावत् पर्युपासना करने लगा ॥६॥ तब मुनिसुव्रत अरिहंतने कार्तिक श्रेष्ठि को धर्म कथा कही यावत् परिषदा पीछी गइ ॥ ७ ॥ उस समय में मुनि सुव्रत अरिहंत की पास में धर्मकथा सुनकर कार्तिक शेठ बहुत हृष्ट तुष्ट हुवे, अपने स्थान से उठे, और उठकर मुनि सुव्रत अरिहंत को ऐसा बोले कि अहो भगवन्! जैसे आप कहते हैं वैसे ही है. विशेष में अहो देवानुप्रिय! मेरे एक हजार आठ गुमास्ते को पुछकर व ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापकर फीर आप की पास दीक्षा अंगीकार करूंगा ॥ ८ ॥ अहो देवानुप्रिय! आप को सुख होवे वैसे करो विलम्ब मत करो ॥ ९ ॥ फीर

शब्दार्थ

प० नीकलकर ए० इकठे मि० मिले पा० पांव से चलकर तुं० तुंगिया न० नगरी की म० मध्य में नि० नीकलकर जे० जहां पु० पुष्पवती चे० उद्यान हो० था तं० तहां उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को पं० पांच प्रकार के अ० अभिगम से अ० जाते हैं तं० वह ज० जैसे स० सचित्त द० द्रव्य त्रि० त्यजकर अ० अचित द० द्रव्य अ० रखकर ए० एक पटका उ० उत्तरासन क० करके च० चक्षुदर्शन से

सूत्र

सएहिं सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमइत्ता एगयओ मेलायंति, पायविहार-चारेणं तुंगियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति निग्गच्छइत्ता, जेणेव पुप्फवईए नामं चेइए होत्था तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता थेरे भगवंते पंचविहेणं अभि-गमेणं अभिगच्छंति तंजहा सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं,

भावार्थ

स्थविर भगवंत की समीप आते ही १ तांबूलादि सचित्त द्रव्य को अलग करना, २ वस्त्रादि अचित्त द्रव्य को अलग नहीं करना, ३ बीच में नहीं सीला हुवा ऐसा एक वस्त्र का उत्तरासन करना ४ चक्षु दृष्टि में आते ही दोनों हस्त की अंजली करना, और ५ अन्य सब छोडकर मन से साधु स्थविर भगवन्त की तरफ एकाग्रता करना ऐसे पांच अभिगम किया. फीर उन स्थविर भगवन्त को तीन आदान प्रदक्षिणा करके तीन प्रकारसे

गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव तदुभयाहिगरणीवि ॥ एवं जाव वेमाणिए ॥ ७ ॥ जीवाणं भंते ! अधिगरणं किं आयप्पओग णिव्वत्तिए, परप्पओग णिव्वत्तिए तदुभयप्पओग णिव्वत्तिए? गोयमा ! आयप्पओगणिव्वत्तिएवि, परप्पओगणिव्वत्तिएवि, तदुभयप्पओगणिव्वत्तिएवि ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव तदुभयप्पयोग णिव्वत्तिएवि॥ एवं जाव वेमाणियाणं॥ ८॥ कइणं भंते! सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा! पंचसरीरगा पण्णत्ता, तंजहा-ओरालिय जाव कम्मए ॥ ९॥

यावत् उभय के अधिकरणवाला जीव है. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जीव अधिकरण को अपने शरीर प्रयोग से बनाता है, अन्य के शरीर प्रयोग से बनाता है अथवा उभय के शरीर प्रयोग से बनाता है ? अहो गौतम ! अपने शरीर प्रयोग से बनाता है, पर के शरीर प्रयोग से बनाता है व उभय के शरीर प्रयोग से बनाता है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जीव आत्मप्रयोग से अधिकरण बनाता है यावत् उभयप्रयोगसे अधिकरण बनाता है ? अहो गौतम! अविरति भावों इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् उभय के शरीर प्रयोग से अधिकरण बनाता है ऐसे ही वैमानिक पर्यंत चौवीस दंडक को जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! शरीर कितने कहे ? अहो गौतम ! शरीर पांच कहे. जिन के नाम. १ उदारिक, २ वैक्रेय ३ आहारक ४ तेजस और ५ कार्माण ॥ ९ ॥ अहो भगवन् !

शब्दार्थ अं० पास ध० धर्म सो० सुनकर नि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् हि० आनंदपाये ति० तीनवार आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके ए० ऐसा व० बोले सं० संयम से भं० भगवन् किं० क्या फल त० तप से भं० भगवन् किं० क्याफल त० तब थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले सं० संयम से अ० आर्य अ० अनाश्रवफल त० तप से वो० कर्म छेदना

सूत्र थेराणं भगवंताणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव हियया, तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति करेइत्ता एवं वयासी संजमेणं भंते किं फले तवेणं भंते किं फले तएणं थेरा भगवंतो ते समणोवासए एवं वायसी संजमेणं अज्जो अणण्हयफले, तवे वोदाणफले। तएणं

भावार्थ हुवे और स्थविर भगवंत को तीन आदान प्रदक्षिणा करके ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! तप व संयम का क्या फल ! तब श्रमणोपासक को स्थविर भगवंत ऐसा कहने लगे कि संयम से आश्रव का निरुंधन होना है अर्थात् संयम पालने वाले को नवीन कर्म का आगमन नहीं होता है. वैसे ही पूर्वकृत कर्मों को छेदन करना यह तपका फल है. तब श्रमणोपासक बोले कि अहो भगवन् ! यदि संयम का आश्रव निरोध रूप व तपका कर्मक्षयरूप फल है तो संयम व तपके आराधन करने वाले किस कारन से देव होते हैं ! तब उन स्थविर भगवंत की पास रहने वाले स्थविरों ने इस प्रश्न का उत्तर

भावार्थ

संयम से आ० आनंद रक्षित थे० स्थविर व० बोले क० कर्म से का० काश्यप थे० स्थविर व० बोले सं० संगत से दे० देवलोक में उ० उपजते हैं पु० पूर्वतप से पु० पूर्वसंयम से क० कर्म से सं० संगत से अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता त० तब स० श्रमणोपासक थे० स्थविर भ० भगवन्त से ए० ऐसा वा० प्रश्नोत्तर वा० कहते हु० हुए

सूत्र

कम्मियाए, अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ तत्थणं कासवे नामं थेरे एवं वयासी संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ पुव्व तवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए, अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति. सच्चेणं एसअट्ठे नो चेवणं आयभाव वत्तव्वयाए ॥ तएणं ते समणोवासया थेरेहिं भगवंतेहिं इमाइं एयारूवाइं

भावार्थ

देवलोक में देवताओं होते हैं. ३ आनंदरक्षित नामक स्थविर बोले कि कर्म के विकार से देवलोक में उत्पन्न होते हैं क्योंकि समस्त कर्म का क्षय नहीं किया है परंतु थोडे बहुत दोष रहेहुवे हैं. काश्यप नामक स्थविर बोले कि संगति से देवलोक में देव होते हैं अर्थात् मनुष्यादि की संगति से सराग भाव रहने से या द्रव्यादि में सराग भाव रहने से तप संयम के आराधक देवलोक में देवता होते हैं. इस तरह पूर्व तप, पूर्व संयम, कर्म विकार व संगति से देवलोक में संयम व तप करनेवाले देव होते हैं ऐसा जो कहा है वह सत्य है. हमने हमारा अहंभाव से नहीं कहा है. तब स्थविर

शब्दार्थ

गमर्थ भ० भगवन्त ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक के ए० ऐसे वा० प्रश्न वा० कहने को अ० नहीं समर्थ म० अभ्यास वाले उ० अथवा अ० अभ्यास रहित आ० ज्ञानवंत अ० ज्ञानरहित प० विज्ञानवंत अ० विज्ञानरहित पु० पूर्वतपसे अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे पु० पूर्व संयम से क० कर्म से सं० संगसे दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्म भाव व० वक्तव्यता ॥ २२ ॥ प० समर्थ गो० गौतम ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसे वा० प्रश्न को वा० कहने को णो० नहीं

सूत्र

सच्चेणं एसमट्ठे णोचेवणं आयभाववत्तव्वयाए ॥ २२ ॥ पभूणं गोयमा! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए णो अप्पभू तहचेव नेयव्वं, अवसेसियं जाव पभू समियं आउज्जिय पलिउज्जिय जाव

भावार्थ

सत्ते नहीं है ! ॥ २२ ॥ अहो गौतम ! उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने को वे स्थविर भगवन्त समर्थ, अभ्यासवाले, ज्ञानवन्त व परिज्ञानवन्त हैं परंतु असमर्थ, अनभ्यासवाले, अज्ञानवन्त व अपरिज्ञानवन्त नहीं है ॥ २३ ॥ अहो गौतम ! मैं भी ऐसा कहता हूं यावत् परूपता हूं कि पूर्व-सराग-तप से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं वैसे ही पूर्व संयम, कर्म विकार व संगति से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं.

गमन भ० भगवन् त० व प० स्थावर भ० भगवन्त त० उन स० श्रमणोपासक के ए० ऐसे वा० प्रश्न
वा० कहने को अ० नहीं समर्थ ग० अभ्यास वाले उ० अथवा अ० अभ्यास रहित आ० ज्ञानवंत

हुआ म० महा उ० उष्ण आ० अणुकायपने अ० झरता है गो० गौतम म० महातपोपतीर प्रभव पा० झरण का अ० अर्थ प० प्ररूपा से० ऐसा भं० भगवन् भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भगवान् म० महावीर को वं० वंदना करते हैं न० नमस्कार करते हैं ॥ २ ॥ ५ ॥ *

मे० वह भं० भगवन् म० मानता हूं ओ० अवधारणी भाषा भा० भाषापद भा० कहना ॥२॥६॥

सूत्र

गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥ सेवं भंते भंतेत्ति, भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ ॥ विईय सए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ५ ॥ * * *

सेणूणं भंते ! मणामीति ओहारणी भासा भासापदं भाणियव्वं ॥ विईयसए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ६ ॥ * * *

भावार्थ

प्रभव नामक झरणा व उस का अर्थ कहा. अहो भगवन् ! आपका वचन सत्य है. ऐसा कहकर भगवन्त गौतमने श्रमण भगवन्त को वंदना नमस्कार किया. यह दूसरा शतकका पांचवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥२॥५॥

गत उद्देशे में मिथ्याभाषी कहे इसलिये भाषा का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! मैं ऐसा मानता हूं कि अवधारिणी भाषा इन सूत्रानुसार से श्री पन्नवणा सूत्रका अग्यारहवा भाषापद कहना. भाषा को

सूत्र

असणं पाणं खाइमं साइमं जहा गंगदत्तो जाव मित्तणाइ जाव परिजणेणं जेट्ठ पुत्तं णेगमट्ठसहस्सेणय समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव रवेणं हत्थिणापुरं णयरं मज्झंमज्झेणं जहा गंगदत्तो जाव आलित्तेणं भंते ! लोए पलित्तेणं भंते ! लोए आलित्तपलित्तेणं भंते ! लोए जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ ॥ इच्छामिण भंते ! णेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावियं, मुंडावियं जाव माइक्खयं तएणं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं णेगमट्ठ सहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावेइ जाव धम्ममाइक्खति एवं देवाणुप्पिया गंतव्वं एवं चिट्ठियव्वं जाव संजमियव्वं ॥१३॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं संपडिवज्जइ-तमाणाए तहा गच्छइ जाव संजमइ ॥ १४ ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठ

भावार्थ

मित्र ज्ञाति यावत् परिजन सहित ज्येष्ठ पुत्र व एक हजार आठ गुमास्ते मार्ग में चलते हुवे सब ऋद्धि व वादिंत्रों सहित हस्तिनापुर नगर की बीच में गंगदत्त जैसे यावत् अहो भगवन् ! यह लोक आलिप्त, प्रलिप्त, आलिप्त प्रलिप्त है यावत् अनुगामी होगा. अहो भगवन् ! एक हजार आठ गुमास्ते सहित मैं स्वयमेव प्रव्रजित होने, मुंडित होने, यावत् कहने को इच्छता हूं तब मुनि सुव्रत अरिहंतने एक हजार आठ गुमास्ते सहित कार्तिक श्रेष्ठी को प्रव्रजित किया यावत् उपदेश दिया कि ऐसे बैठना ऐसे संयम पालना ॥ १३ ॥ फीर एक हजार आठ गुमास्ते सहित कार्तिक श्रेष्ठिने मुनिसुव्रत अरिहंत का ऐसा धार्मिक उपदेश सम्यक्

शब्दार्थ — गण भं० भगवन् ने० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक के ए० ऐसे वा० प्रश्न वा० कहने को अ० नहीं समर्थ स० अभ्यास वाले उ० प्रवरा अ० अभ्यास रहित आ० ज्ञानवंत

शब्दार्थ — दे० देव की व० वक्तव्यता सा० वह भा० कहना न० विशेष भ० भवन प० प्ररूपे उ० उपपात से लो० लोक का अ० असंख्यात का भाग ए० ऐसे स० सर्व भा० कहना जा० यावत् सि० सिद्धि स्थान स० संपूर्ण क० कल्प प० प्रतिस्थान बा० जाडपना उ० ऊंचा सं० संस्थान जी० जीवाभिगम में जा० यावत्

सूत्र — सा भाणियव्वा. नवरं भवणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे, एवं सव्वं भाणियव्वं, जाव सिद्धगंडिया सम्मत्ता ॥ कप्पाण पइट्ठाणं, बाहल्लुच्चत्तमेव संठाणं जीवाभिगमे जाव वेमाणि उद्देसो भाणियव्वो ॥ विईयसए सत्तमो

भावार्थ — भाग में रहते हैं. उत्तर दक्षिण में रहनेवाले सब भुवनपति, वाणव्यंतर ज्योतिषी, व वैमानिकके स्थानक का वर्णन यावत् सिद्ध स्थान प्रतिपादक प्रकरणतक का सब वर्णन जीवाभिगम सूत्र से जानना. उस का किंचित् विस्तार यह है. १ कल्प में विमानों का आधार. सौधर्म ईशान देवलोक में विमानों घनोदधि प्रतिष्ठित हैं २ विमान का पिंड-सौधर्म ईशान देवलोक में २७०० योजन का पिण्ड है ३ ऊंचाई-सौधर्म ईशान देवलोक में पांचसो योजन के ऊंचे विमान कहे हैं ४ संस्थान-सौधर्म ईशान देवलोक में, आवलिका प्रविष्ट त्र्यंस, चउरंस व वर्तुलाकार विमानों हैं, और आवलिका बाहिर विविध प्रकार के संस्थान वाले हैं. इस [illegible]

[illegible] वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-अणगारस्स णं भंते! भावियप्पणो सव्वं कम्मं वेदेमाणस्स सव्वं कम्मं णिज्जरमाणस्स सव्वं मारं मरमाणस्स सव्वं सरीरं विप्पजहमाणस्स, चरिमं कम्मं वेदेमाणस्स चरिमं कम्मं णिज्जरमाणस्स चरिमं मारं मरमाणस्स चरिमं सरीरं विप्पजहमाणस्स मारणंतियं कम्मं वेदेमाणस्स मारणंतियं कम्मं णिज्जरमाणस्स मारणंतियं मारं मरमाणस्स मारणंतियं सरीरं विप्पजहमाणस्स जे चरिमा णिज्जरापोग्गला सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता, समणाउसो! सव्वं लोगंपि णं ते ओगाहित्ताणं चिट्ठंति? हंता मागंदियपुत्ता! अणगारस्स णं भावियप्पणो जाव ओगाहित्ताणं चिट्ठंति ॥ ७ ॥ छउमत्थे णं भंते! मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं

[illegible] भावितात्मा अनगार जो सब कर्म वेदते हुए, सब कर्म निर्जरते हुए, सब [illegible] आयुष्य कर्म के पुद्गलों का क्षय करते हुए और सब शरीर छोड़ते हुए, चरिम कर्म वेदते हुए, चरिम कर्म निर्जरते हुए, चरिम आयुष्य कर्म का क्षय करते हुए, चरिम शरीर छोड़ते हुए, मारणान्तिक कर्म वेदते हुए, मारणान्तिक कर्म निर्जरते हुए, मारणान्तिक आयुष्य कर्म का क्षय करते हुए, मारणान्तिक शरीर छोड़ते हुए [illegible]

सूत्र

किंचि आणत्तंवा पाणत्तंवा एवं जहा इंदियउद्देसए पढम जाव वेमाणिया जाव तत्थणं जे ते उववउत्ता ते जाणंति पासंति आहारेंति, से तेणट्ठेणं णिक्खेवो भाणियव्वो ॥ ८ ॥ कइविहेणं भंते ! बंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे बंधे पण्णत्ते तंजहा-दव्वबंधेय भावबंधेय ॥ ९ ॥ दव्वबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-पओगबंधेय वीससाबंधेय ॥ १० ॥ वीससाबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते, मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सादीयवीससाबंधेय अणा-

भावार्थ

रहे हुवे हैं ? हां माकंदिय पुत्र ! भावितात्मा अनगार को यावत् अवगाह कर रहे हुवे हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरित किये हुवे पुद्गलों तथा उन के भेद वर्णादि विशेष पुद्गलों वगैरह जैसे पन्नवणा पद में पहिले उद्देशे में कहा वैसे ही यहां वैमानिक पर्यंत जानना. यावत् वहां जो उपयोग युक्त है वह जाने देखे व आहार करे वहां तक कहना. अहो माकंदिय पुत्र ! इसलिये ऐसा कहा है ॥८॥ अहो भगवन् ! बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! बंध के दो भेद कहे हैं. १ द्रव्य बंध और २ भाव बंध ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य बंध के दो भेद कहे हैं. १ प्रयोग बंध और २ वीस्रसा बंध ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! वीस्रसा बंध के

सूत्र

दीय वीससाबंधेय ॥ ११ ॥ पओग वीससाबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते, मागंदिय पुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-सिढिलबंधण बंधेय, घणियबंधण बंधेय ॥ १२ ॥ भावबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-मूलपगडि बंधेय उत्तरपगडिबंधेय ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते ! कइविहे भावबंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, मूलपगडिबंधेय, उत्तरपगडिबंधेय ; एवं जाव वेमाणियाणं ॥ १४ ॥ णाणावरणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स कइविहे भावबंधे पण्णत्ते ?

भावार्थ

कितने भेद कहे हैं ? सादी वीससा बंध व अनादि वीससा बंध ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! प्रयोग वीससा बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो मार्कंदिय पुत्र ! प्रयोग वीससा बंध के दो भेद कहे हैं ? शिथिल बंधन बंध और घनित बंधन बंध ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! भाव बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो मार्कंदिय पुत्र ! भाव बंध के दो भेद कहे हैं. मूल प्रकृति बंध व उत्तर प्रकृति बंध ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने भाव बंध कहे हैं ? अहो मार्कंदिय पुत्र ! नारकी को दो प्रकार के भाव बंध कहे हैं. मूल प्रकृति बंध और उत्तर प्रकृति बंध. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म के कितने भाव बंध कहे हैं ? अहो मार्कंदिय पुत्र ! ज्ञानावरणीय कर्म के दो भाव बंध कहे हैं.

सूत्र

मागंदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तंजहा-मूलपगडिबंधेय, उत्तरपगडिबंधेय ॥ १५ ॥ णेरइयाणं भंते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कइविहे भावबंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता दुविहे भावबंधे पण्णत्ते तंजहा-मूलपगडिबंधेय, उत्तर पगडिबंधेय ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ णाणावरणिज्जेणं जहा दंडओ भणिओ एवं जाव अंतराइयं भाणियव्वो ॥ १६ ॥ जीवाणं भंते ! पावे कम्मे जेय कडे जाव जेय कज्जिस्सइ अत्थिया तस्स केइ णाणत्ते ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ जीवाणं पावे कम्मे जेय कडे जाव जेय कज्जिस्सइ अत्थिया केइ णाणत्ते ? मागंदियपुत्ता ! से जहा णामए केइपुरिसे धणुं परामुसइ, परामुसइत्ता उसुं परामुसइ २ त्ता ठाणं

भावार्थ

मूल प्रकृतिबंध व उत्तर प्रकृतिबंध. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को ज्ञानावरणीय कर्म के कितने भाव बंध कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! दो भाव बंध कहे हैं ! मूलप्रकृतिबंध व उत्तर प्रकृति बंध. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. जैसे ज्ञानावरणीय का दंडक कहा वैसे ही अंतराय तक का दंडक कहना. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! जिन जीवोंने पापकर्म किये हैं और जो जीवों पापकर्म करेंगे उन में क्या भिन्नता है ? हां माकंदियपुत्र ! उन में भिन्नता है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जिन जीवोंने पापकर्मों

ठाणं २ त्ता आयतकण्णायतं उसुं करेइ, करेइत्ता उड्ढं वेहासं उव्विहति २ त्ता सेणूणं मागंदियपुत्ता! तस्स उसुस्स उड्ढं वेहासं उव्वीहस्स समाणस्स एयतिवि णाणत्तं, जाव तं तं भाव परिणमंतिवि णाणत्तं? हंता भगवं? एयतिवि णाणत्तं जाव परिणमंति विणाणत्तं से तेणट्ठेणं मागंदियपुत्ता! एवं वुच्चइ-जाव तं तं भावं परिणमंति विणाणत्तं ॥ १७॥ नेरइयाणं भंते! पावे कम्मे जेय कडे एवं चेव एवं जाव वेमाणियाणं ॥ १८॥ णेरइयाणं भंते! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति तेसिणं भंते! पोग्गलाणं सेयकालंसि कइभागं आहारेंति कइभागं णिज्जरेंति?

भावार्थ

किये हैं और जो आगे पापकर्म करेंगे उन में भिन्नता है? अहो माकंदिय पुत्र! जैसे कोई पुरुष धनुष्य ग्रहण करता है, धनुष्य उठाकर एक स्थान करता है और कर्ण पर्यंत प्रत्यंचा खींच कर बाण को आकाश में फेंकता है. इस तरह आकाश में बाण जाते वक्त वह बाण चलता है यही भेद है? हां भगवन्! यही भेद है इसलिये अहो माकंदिय पुत्र! ऐसा कहा गया है कि उस २ भाव को परिणमते हैं यही भिन्नता है ॥ १७ ॥ जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे ही वैमानिक पर्यंत कहना. ॥ १८ ॥ अहो भगवन्! नारकी जो पुद्गल आहार पने ग्रहण करते हैं उन में से आगामिक काल में कितने पुद्गलों का आहार करते हैं और कितने पुद्गलों की निर्जरा करते हैं? अहो माकंदिय पुत्र! असंख्यात भाग का आहार करते हैं

मागंदियपुत्ता ! असंखेज्जइ भागं आहारेंति अणंतभागं णिज्जरेंति ॥ १९ ॥ चक्खियाणं भंते ! केइ तेसु णिज्जरापोग्गलेसु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ? णो इणट्ठे समट्ठे अणाहारमेयं वुइयं समणाउसो ! एवं जाव वेमाणियाणं ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥१८॥३॥ • •

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव भगवं गोयमे एवं वयासी- अह भंते ! पाणाइवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणाइवाए विरमणे जाव मिच्छादंसण

भावार्थ

व अनंत भागकी निर्जरा करते हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! उन निर्जरित पुद्गलों में कोई बैठने को यावत् सोने को क्या समर्थ है ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो श्रमण ! यह अनाधार कहा गया है. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह आठारहवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १८ ॥ ३ ॥ :o; :o; :o;

तीसरे उद्देशे में निर्जरा की व्याख्या कही. चौथे उद्देशे में पाप की व्याख्या करते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पुछने लगे कि अहो भगवन् ! प्राणातिपात मृषावाद यावत् मिथ्या दर्शन शल्य, प्राणा-

शब्दार्थ अंगीकार करे गो० गौतम बा० बालवीर्य पने उ० अंगीकार करे णो० नहीं पं० पंडित वीर्यपन नो० नहीं बा० बाल-पंडित वीर्यपने ॥ २ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मो० मोहनीय क० कीये क० कर्म के उ० उदयमें अ० अतिक्रमे हं० हां अ० अतिक्रमे से० वह भं० भगवन् जा० यावत् बा० बाल पंडित वीर्य पने अ० अतिक्रमे

सूत्र

रियत्ताए उवट्ठाएज्जा णो पंडिय वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, णो बाल पंडिय वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥ २ ॥ जीवेणं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिन्नेणं अवक्कमेज्जा? हंता अवक्कमेज्जा. से भंते ! जाव बालपंडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? गोयमा ! बाल वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, नो पंडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा. सिय बाल पंडिय

भावार्थ

वीर्य व बाल पंडित वीर्य से अंगीकार नहीं करता है ॥ २ ॥ अब अपक्रमण सो पीछा पडना उस संबंध में प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! जीव मोहनीय कर्म के उदय से अपक्रमता है, उपर के गुनस्थान पर गया हुवा पीछा पडता है ? हां गौतम! जीव मोहनीय कर्म के उदय से उत्तम गुणस्थान से हीन गुणस्थान को जाता है. अहो भगवन् ! क्या वीर्य सहित जाता है या वीर्य रहित जाता है ? अहो गौतम ! वीर्य सहित जाता है. यदि वीर्य सहित जाता है तो क्या बाल वीर्य से, पंडित वीर्य से या बाल पंडित वीर्य से जाता है. ? अहो गौतम ! बाल वीर्य से अपक्रमे परंतु पंडित वीर्य से अपक्रमे नहीं कदाचित् बाल पंडित

सूत्र

सव्वेवेरमणे पुढवीकाइए जाव वणस्सइ काइए, धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवे असरीरपडिबद्धे परमाणुपोग्गले सेलेसिपडिवण्णए अणगारे सव्वेय बादरबोंदिधरा कलेवरा एएणं दुविहा जीवदव्वाय अजीवदव्वाय जीवदव्वाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवाए जाव एएणं दुविहा जीवदव्वाय अजीवदव्वाय, अत्थेगइया जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, अत्थेगइया जीवाणं जाव णो हव्वमागच्छंति ॥ से केणट्ठेणं पाणाइवाय जाव णो हव्वमागच्छंति ?

भावार्थ

तिपात से निवर्तना यावत् मिथ्यादर्शनशल्य से निवर्तना, पृथ्वी कायिक यावत् वनस्पति कायिक धर्मास्तिकाया, अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाया. शरीर रहित जीव, परमाणु पुद्गल शैलेशी प्रतिपन्न अनगार, बादर शरीर धारन करनेवाले बेइन्द्रियादि ये सब जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य ऐसे दो भेदों से क्या जीव द्रव्य को परिभोग के लिये आते हैं ? अहो गौतम ! प्राणातिपातादिक के जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य ऐसे दो भेद किये हैं. उन में से कितनेक जीवों के परिभोग के लिये आते हैं और कितनेक जीवों के परिभोग के लिये नहीं आते हैं. अहो भगवन् ! ऐसा किस कारन से कहा गया है यावत् कितनेक नहीं आते हैं ? अहो गौतम ! प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक और सब

सूत्र

गोयमा ! पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले पुढवीकाइए जाव वणस्सइकाइए सव्वेय बादरबोंदिधरा कडेवरा एएणं दुविहा जीवदव्वाय अजीवदव्वाय जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छा दंसणसल्ल विवेगे धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए जाव परमाणुपोग्गले सेलेसिपडिवण्णए अणगारे एएणं दुविहा जीवदव्वाय अजीवदव्वाय जीवाणं परिभोगत्ताए णो हव्वमागच्छंति; से तेणट्ठेणं जाव णो हव्वमागच्छंति ॥ १ ॥ कइणं भंते ! कसाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता तंजहा कसायपदं णिरवसेसं भाणियव्वं जाव णिज्जरेंति लोभेणं ॥ २ ॥ कइणं भंते!

भावार्थ

बादर शरीर धारन करनेवाले द्विइन्द्रियादिक ये सब जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य ऐसे दो भेदवाले होते हैं. वे जीवों के परिभोग के लिये आते हैं. प्राणातिपात विरमण यावत् मिथ्या दर्शन शल्य का त्याग धर्मास्तिकाया अधर्मास्तिकाया यावत् परमाणु पुद्गल, शैलेशी प्रतिपन्न अनगार इन के जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य ऐसे दो भेद जीव परिभोग के लिये नहीं आते हैं. इस से ऐसा कहा गया है यावत् कितनेक परिभोग के लिये नहीं आते हैं ॥ १ ॥ परिभोग कषायवंत को होता है इसलिये कषाय का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! कषाय के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! चार कषाय कही वगैरह कषाय पद कहना यावत्

सूत्र

कलिओगा एवं जाव चउरिंदिया, सेसा एगिंदिया जहा बेइंदिया पंचिदिय तिरिक्ख जोणिया जाव वेमाणिया जहा णेरइया, सिद्धा जहा वणस्सइकाइया ॥ ४ ॥ इत्थीओणं भंते ! किं कडजुम्माओ पुच्छा, गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्माओ, उक्कोसपदे कडजुम्माओ, अजहण्णमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्माओ जाव सियकलिओगाओ, एवं असुरकुमारइत्थीओवि जाव थणियकुमार इत्थीओवि । एवं तिरिक्ख जोणियइत्थीओवि । एवं मणुस्सइत्थीओवि । एवं वाणमंतर जोइसिय वेमाणिय

भावार्थ

उन का परित्याग किये बिना अनियत रूप होने से जघन्य व उत्कृष्ट पद में किसी का संभव नहीं है. मध्यम पद में स्यात् कृत युग्म यावत् स्यात् कलि युग्म. बेइन्द्रिय से चतुरेन्द्रिय के जघन्य पद में कृत युग्म, उत्कृष्ट पद में द्वापर युग्म, अजघन्य अनुत्कृष्ट पद में क्वचित् कृत युग्म यावत् क्वचित् कलियुग्म शेष सब एकेन्द्रिय का बेइन्द्रिय जैसे कहना. पंचेन्द्रिय तिर्यंच यावत् वैमानिक का नारकी जैसे कहना. सिद्ध का वनस्पति काया जैसे ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! स्त्रियों में क्या कृत युग्म है ? अहो गौतम ! जघन्य पद में कृत युग्म, मध्यम पद में स्यात् कृत युग्म यावत् स्यात् कलि युग्म. ऐसे ही असुरकुमार की स्त्रियों यावत् स्तनित कुमार की स्त्रियों, ऐसे ही तिर्यंच [illegible]

सूत्र

देव इत्थीओवि ॥ ५ ॥ जावइयाणं भंते ! वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावइया परा अंधगवण्हिणो जीवा ? हंता गोयमा ! जावइया वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावइया परा अंधगवण्हिणो जीवा ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ ४ ॥

दो भंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववण्णा, तत्थणं एगे असुरकुमारे देवे पासादीए दरसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एगे असुरकुमारे

भावार्थ

ज्योतिषी व वैमानिक की स्त्रियों का जानना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जितने अल्प आयुष्यवाले बादर अग्निकाय के जीवों हैं उतने उत्कृष्ट आयुष्यवाले अग्निकायिक क्या जीवों हैं ? हां गौतम ! जितने अल्प आयुष्यवाले अग्निकायिक जीवों हैं उतने उत्कृष्ट आयुष्यवाले अग्निकायिक जीवों हैं. × अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह अठारहवा शतक का चौथा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १८ ॥ ४ ॥

चतुर्थ उद्देशे के अंत में अग्नि का कथन किया, आगे देवता का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! असुर

× कितनेक अंधगवण्हिणो का अर्थ ऐसा करते हैं कि सूक्ष्म नाम कर्म के उदय से सूक्ष्म अग्नि जीवों और कितनेक आचार्य सूक्ष्मजीवों भी अर्थ करते हैं.

सूत्र

देवे सेणं णो पासादीए णो दरसणिज्जे, णो अभिरूवे णो पडिरूवे, से कहमेयं भंते! एवं ? गोयमा! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-वेउव्विय सरीराय अवेउव्विय सरीराय, तत्थणं जे से वेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे सेणं पासादीए जाव पडिरूवे, तत्थणं जे से अवेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे सेणं णो पासादीए जाव णो पडिरूवे ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-तत्थणं जे से वेउव्वियसरीरे तंचेव जाव णो पडिरूवे ? गोयमा! से जहा णामए-इहमणुस्सलोगंसि दुवे पुरिसा भवंति, एगे पुरिसे अलंकिय विभूसिए, एगे पुरिसे अणलंकिय विभूसिए, एएसिणं

भावार्थ

कुमारवास में दो असुरकुमार असुरकुमारपने उत्पन्न हुवे, जिन में एक असुरकुमार देव प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप होवे और दूसरा प्रासादिक दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप होवे नहीं, तो यह किस तरह है? अहो गौतम! असुरकुमार देव के दो भेद कहे हैं. एक वैक्रेय शरीर किया हुवा और दूसरा वैक्रेय शरीर नहीं किया हुवा. जो वैक्रेय शरीर वाला होता है वह प्रासादिक यावत् प्रतिरूप होता है. और जो वैक्रेय शरीर रहित होता है वह प्रासादिक यावत् प्रतिरूप नहीं होता है. अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा कि वैक्रेय शरीरवाला प्रासादिक यावत् प्रतिरूप है! और वैक्रेय शरीर रहित प्रासादिक यावत्

सूत्र

गोयमा ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे, कयरे पुरिसे णो पासादीए जाव णो पडिरूवे, जेवा से पुरिसे अलंकिय विभूसिए जेवासे पुरिसे अणलंकियविभूसिए ? भगवं ! तत्थ जे से पुरिसे अलंकियविभूसिए सेणं पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे,जेवासे पुरिसे अणलंकियविभूसिए सेणं पुरिसे णो पासादीए जाव णो पडिरूवे । से तेणट्टेणं जाव णो पडिरूवे ॥ १ ॥ दो भंते ! णागकुमारा देवा एगंसि णागकुमारावासंसि एवंचेव, एवं जाव थणियकुमारा, ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया एवंचेव ॥ २ ॥ दो भंते ! णेरइया एगंसि णेरइयावासंसि

भावार्थ

प्रतिरूप नहीं है ? अहो गौतम ! जैसे इस मनुष्य लोक में दो पुरुषों हैं जिन में एक पुरुष वस्त्रालंकार से अलंकृत व आभूषणों से विभूषित है और दूसरा पुरुष अलंकृत व विभूषित नहीं है. अब उन में कौनसा पुरुष प्रासादिक यावत् प्रतिरूप है और कौनसा पुरुष प्रासादिक यावत् प्रतिरूप नहीं है ? अहो. भगवन् ! जो पुरुष वस्त्र अलंकार से अलंकृत व आभरणों से विभूषित है वह पुरुष प्रासादिक है, और जो पुरुष अलंकृत व विभूषित नहीं है वह प्रासादिक यावत् प्रतिरूप नहीं है; इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् प्रतिरूप नहीं है ॥१॥ ऐसे ही नागकुमार यावत् स्तनितकुमार वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का जानना ॥ २ ॥ अहो

सूत्र

णेरइयत्ताए उववण्णा तत्थणं एगे णेरइए महाकम्मतराएचेव महावेयणतरा चेव, एगे णेरइए अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव से कहमेयं भंते ! एवं? गोयमा ! णेरइया ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा मायीमिच्छदिट्ठी उववण्णगाय, अमायी सम्मदिट्ठीउववण्णगाय, तत्थणं जे से मायीमिच्छादिट्ठी उववण्णए णेरइए सेणं महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव, तत्थणं जे से अमायीसम्मदि उववण्णए णेरइए सेण अप्पकम्मतराए चेव अप्पवेयणतराए चेव ॥ ३ ॥ दो भंते ! असुरकुमारा एवं चेव ॥ एवं एगिंदिय विगलिंदयवज्जं जाव वेमाणिया ॥४॥ णेरइयाणं

भावार्थ

भगवन् ! एक ही नरकावास में दो नेरइये नारकीपने उत्पन्न हुवे, जिन में एक नारकी महाकर्मवाला यावत् महावेदनावाला, दूसरा नारकी अल्पकर्मवाला यावत् अल्पवेदनावाला है तो यह किस तरह है? अहो गौतम ! नारकी के दो भेद कहे हैं. १ मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्नक और २ अमायीसम्यग्दृष्टि उत्पन्नक. उन में जो मायीमिथ्यादृष्टि उत्पन्नक नारकी है वह महाकर्मवाला यावत् महावेदनावाला है और जो अमायी सम्यग् दृष्टि उत्पन्नक नारकी है वह अल्प कर्मवाला यावत् अल्प वेदनावाला है ॥ ३ ॥ ऐसे ही असुरकुमार यावत् एकेन्द्रिय व विकलेन्द्रिय छोडकर सब दंडक का जानना ॥ ४ ॥

दो भंते ! असुकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववण्णा, तत्थणं एगे असुरकुमारदेवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ, वंकं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्वइ, जं जहा इच्छइ तं तहा विउव्वइ । एगे असुरकुमारे देवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्विइ वंकं विउव्विस्सामीति, उज्जयं विउव्वइ जं जहा इच्छइ णो तं तहा विउव्वइ ॥ से कहमेयं भंते! एवं ?गोयमा! असुर कुमारा दुविहा पण्णत्ता तंजहा-मायीमिच्छद्दिट्ठी उववण्णगाय,अमायीसम्मद्दिट्ठी उववण्णगाय, तत्थणं जे से मायीमिच्छद्दिट्ठी उववण्णए असुरकुमारदेवे सेणं उज्जुयं विउव्विस्सामीति

भावार्थ रहता है और जिस स्थान रहता है वहां का आयुष्य वेदता है. ऐसा वैमानिक पर्यंत जानना. परंतु पृथ्वीकाया पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते पृथ्वीकाया का आयुष्य वेदते हैं और अन्य पृथ्वीकाया का आयुष्य आगे करके रहता है ऐसे ही मनुष्य पर्यंत स्वस्थान में उत्पन्न होने का व परस्थान आश्री पूर्वोक्त जैसे कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! एक असुरकुमारावास में दो असुर कुमार देवतापने उत्पन्न हुए उन में एक असुरकुमार अच्छे रूप का वैक्रेय करूंगा ऐसा करके अच्छेरूप का वैक्रेय करता है, वक्र रूप का वैक्रेय करूंगा. ऐसा करके वक्र रूप का वैक्रेय करता है, इस तरह जैसा इच्छता है वैसा करता है. और दूसरा असुरकुमार अच्छे रूप का वैक्रेय करूंगा ऐसा करके वक्र रूप का वैक्रेय करता और वक्र रूप का वैक्रेय करूंगा ऐसा करके ऋजुरूप का वैक्रेय करे इस तरह जैसा इच्छे वैसा रूप कर सके नहीं तो यह किस तरह है ? अहो गौतम ! [illegible]

वंकं विउव्वइ जाव णो तं तहा विउव्वइ, तत्थणं जे से अमायी सम्मदिट्ठी उववण्णए असुरकुमारदेवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ जाव तं तहा विउव्वइ ॥ दो भंते! नागकुमारा एवंचेव, एवं जाव थणियकुमारा॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया एवं चेव ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स पचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥५॥ फाणियगुलेणं भंते ! कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे, पण्णत्ते ? गोयमा एत्थणं दोणया भवंति तंजहा निच्छइयणएय, वावहारियणएय, ॥ वावहारियणयस्स गोड्डे फाणियगुले, णिच्छइयणयस्स पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे अट्ठफासे ॥ १ ॥ भमरेणं भंते ! कइवण्णे पुच्छा ? गोयमा ! एत्थणं दो णया भवंति, तंजहा णिच्छइयणएय

भावार्थ उत्पादक और २ अमायी समदृष्टि उत्पादक. उन में मायीमिथ्यादृष्टि उत्पादक असुरकुमार ऋजु का वैक्रेय करके यावत् वैसा वैक्रेय नहीं कर सकते हैं. और जो अमायी सम्यग्दृष्टि असुरकुमार ऋजु वैक्रेय करूंगा ऐसा करके यावत् वैक्रेय करता है. ऐसे ही नागकुमार यावत् स्तनितकुमार वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह अठारहवा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १८ ॥ ५ ॥

पांचवे उद्देशे में सचेतन वस्तु की विविध वक्तव्यता कही, छठे उद्देशे में अचेतन वस्तु का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! ढीले गुड में कितने वर्ण, गंधादि व स्पर्श कहे हैं. ? अहो गौतम ! इस में

सूत्र

कइणं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचइंदिया पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदिए जाव फासिंदिए ॥ १० ॥ कइणं भंते ! जोए पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तंजहा-मणजोए, वयजोए, कायजोए ॥ ११ ॥ जीवेणं भंते ओरालिय सरीरं निव्वत्तिएमाणे किं अधिकरणी अधिकरणं ? गोयमा ! अधिगरणी अधिगरणंपि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अधिकरणीवि अधिगरणंपि ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि ॥ पुढवीकाइएणं भंते ! ओरालिय सरीरं णिव्वत्तिए

भावार्थ

इन्द्रियों कितनी कहीं ? अहो गौतम ! इन्द्रियों पांच कहीं श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! योग कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! योग तीन कहे हैं. मन योग, वचन योग और काया योग ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीरवाला जीव क्या अधिकरणी है, या अधिकरण है ? अहो गौतम ! अधिकरणी भी है और अधिकरण भी है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि उदारिक शरीरवाला जीव अधिकरणी है और अधिकरण भी है ? अहो गौतम ! अविरति आश्री. इसलिये ऐसा कहा गया है कि उदारिक शरीरवाला जीव अधिकरणी है और अधिकरण भी है. वैसे ही पृथ्वीकायादि पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय,

वावहारियणएय, वावहारियणयस्स कालए भमरे, णिच्छिइयणयस्स पंचवण्णे जाव अट्ठफासे ॥२॥ सुयपिच्छेणं भंते ! कइवण्णे पण्णत्ते ? एवंचेव णवरं वावहारियणयस्स णीलए सुयपिच्छे, णेच्छइयस्स णयस्स सेसं तंचेव ॥ एवं एएणं अभिलावेणं लोहितिया मंजिट्ठिया, पीतिया हालिद्दा, सुक्किल्लए संखे, सुब्भिगंधे कोट्ठे, दुब्भिगंधे-मियगसरीरे, तित्तेणं णिंबे, कडुया सुंठी, कसाए तुंयरए कविट्ठे, अंबा अंबालिया, महुरे खंडे; कक्खडे वइरे, मउए णवणीए, गुरुए अए, लहुए उलुयपत्ते, सीए हिमे, उसिणे

भावार्थ

निश्चय और व्यवहार ऐसे दो नय ग्रहण किये गये हैं. व्यवहारनय से मधुररसवाला गुड है और निश्चयनयसे गुड में पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श पाते हैं. अहो भगवन् ! भ्रमर में कितने वर्णादि पाते हैं ? अहो गौतम ! यहां पर भी दो नय ग्रहण किये हैं, जिन में व्यवहार नयसे भ्रमर में काला वर्ण पाता है और निश्चयनय मे पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श पाते हैं. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शुक की पांख में कितने[1] वर्ण पाते हैं ? अहो गौतम ! यहां भी दो नय ग्रहण किये हैं. व्यवहारनय से शुक की पांख में हरा वर्ण पाता है और निश्चय नय से पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श पाते हैं. और भी इस आलापक

१ श्वेतांबर मत्ता २ लोक मत्ता.

सूत्र

अगणिकाए, णिद्ध-तेल्ले ॥ छारियाणं भंते पुच्छा ? गोयमा ! एत्थणं दोणया भवंति तंजहा। णिच्छइयणएय, वावहारियणएय, वावहारियणयस्स लुक्खाछारिया, णेच्छइयणयस्स पंचवण्णे जाव अट्ठफासा पण्णत्ता ॥ ३ ॥ परमाणुपोग्गलेणं भंते ! कइवण्णे जाव कइफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगवण्णे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते ॥ दुपदेसिएण भंते ! खधे कइवण्णे पुच्छा ? गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय दुफासे सिय तिफासे

भावार्थ

मे लाल मजीठ, पीली हल्दी, श्वेत शंख, सुगंधी कोष्टक, दुर्गन्धी मृत्युक शरीर, तिक्तरस, निंब, कटुक सूंठ, कषायला तूरा कवीठ, अम्बट इमली, मधुर सक्कर, कर्कश स्पर्श वज्र, कोमल मक्खन, भारी लोहा, हलका पोरपत्र, शीत हिम, ऊष्ण अग्नि, चिकना तेल, रूक्ष राख यों सब में व्यवहार नय से एक २ ही वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पाता है और निश्चय नय से पांच वर्ण यावत् आठोंही स्पर्श पाते हैं. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल में कितने वर्ण यावत् स्पर्श पाते हैं ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल में एक वर्ण एक रस दो स्पर्श कहे हैं. अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श कहे हैं ? अहो गौतम ! कदाचित् एक वर्ण कदाचित् दो वर्ण, यदि दोनों एक वर्ण के होवे तो एक ही वर्ण, इस के पांच विकल्प

सूत्र

सिय चउफासे ॥ एवं तिपदेसिएवि-णवर-एगवण्णे सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, ... रसेसुवि, सेसं जहा दुपदेसियस्स, एवं चउप्पदेसिएवि णवरं सिय एगवण्णे जाव सिय चउवण्णे; एवं रसेसुवि, सेसं तंचेव ॥ एवं पंचपएसिएवि णवरं सिय एगवण्णे जाव पंचवण्णे एवं रसेसुवि; गंध फासा तहेव जहा पंचपदेसिओ ॥ एवं जाव असंखिज्जपदेसिओ ॥ सुहुम परिणएणं भंते ! अणंतपदेसिए खंधे कइवण्णे ? जहा पचपदेसिए तहेव

भावार्थ

दोनों दो वर्ण के होवे तो दो वर्ण इन के दश विकल्प. ऐसे ही स्यात् एक गंध, स्यात् दो गंध, इस के तीन विकल्प, ऐसे ही स्यात् एक रस, स्यात् दो रस दोनों के १५ विकल्प, ऐसे ही स्यात् दो स्पर्श, स्यात् तीन स्पर्श, स्यात् चार स्पर्श, इस के ४२ विकल्प होते हैं. ऐसे ही तीन प्रदेशिक स्कंध का कहना. विशेष में स्यात् तीनों का एक वर्ण जिन के पांच विकल्प यावत् तीन वर्ण सब ४५ विकल्प, गंध के द्विसंयोगी दो, तीन संयोगी तीन, ऐसे पांच रस के ४५ विकल्प वर्ण जैसे कहना, और शेष सब द्विप्रदेशिक स्कंध जैसे कहना. स्पर्श के २५ भांगे सब मीलकर १२० भांगे हुवे यावत् ऐसे ही चार प्रदेशिक का. विशेष में स्यात् एक वर्ण स्यात् चार वर्ण सब भांगे ९० पाते हैं. गंध के ६, रस के ९०, स्पर्श के ३६, सब२२२भांगे वर्ण के. ऐसे ही पांच प्रदेशिक का कहना विशेष में स्यात् एक वर्ण स्यात् पांच वर्ण ऐसे ही रस गंध व स्पर्श का पूर्वोक्त प्रकार से कहना, सब भांगे ४७४ हुवे. जैसे

णिरवसेसं ॥ ४ ॥ बादरपरिणएणं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कइवण्णे पुच्छा ? गोयमा ! सिय एगवण्णे जाव सिय पंचवण्णे, सियएगगंधे, सिय दुगंधे; सिय एगरसे जाव सिय पंचरसे, सिय चउफासे जाव सिय अट्ठफासे ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ ६ ॥ • •

रायगिहे जाव एवं वयासी अण्णउत्थियाणं भंते ! एवं माइक्खंति जाव परूवेंति

भावार्थ पांच प्रदेशिक स्कंध का कहा वैसे ही यावत् असंख्यात प्रदेशिक स्कंध का जानना. परमाणु से लगाकर असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध सूक्ष्म परिणाम रूप होता है और अनंत प्रदेशिक स्कंध सूक्ष्म तथा बादर दोनों परिणामरूप होता है इसलिये अनंत प्रदेशात्मक स्कंध की पृथक् व्याख्या करते हैं. अहो भगवन् ! सूक्ष्म परिणत असंख्यात प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्णादि कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसे पंच प्रदेशिक स्कंध का कहा वैसे ही इस का भी कहना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! बादर परिणत अनंतप्रदेशात्मक स्कंध में कितने वर्णादि हैं ? अहो गौतम ! स्यात् एक वर्ण स्यात् पांच वर्ण स्यात् एक गंध स्यात् दो गंध, स्यात् एक रस स्यात् पांच रस स्यात् चार स्पर्श स्यात् आठ स्पर्श भी होता है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह अठारहवा शतक का छठा उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १८ ॥ ६ ॥

छठे उद्देशे में नयवादिमत आश्रित वस्तु विचारणा कही. अब सातवे उद्देशे में अन्ययूथिक मत आश्री

सूत्र

एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्संति, एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासइ, तंजहा मोसंवा, सच्चामोसंवा, से कहमेयं भंते! एवं ? गोयमा ! जंणं ते अण्णउत्थिया जाव जंणं एवमाहसु मिच्छंते एव माहंसु, अहं पुण गोयमा ! एव माइक्खामि ४ णो खलु केवली जक्खाएसेणं आदिस्सइ, णो खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासइ, तंजहा मोसंवा सच्चामोसंवा ॥ केवलीणं असावज्जाओ अपरोवघाइयाओ आहच्च दो भासाओ भासइ, तंजहा सच्चंवा असच्चामोसंवा ॥ १ ॥ कइविहेणं भंते ! उवही पण्णत्ता ?

भावार्थ

प्रश्न करते हैं. राजगृह नगर में यावत् पर्युपासना करते हुवे श्री गौतम स्वामी ऐसा बोले कि अहो भगवन्! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि केवलि के शरीर में यक्ष प्रवेश करते हैं जिससे केवली भी कदाचित मृषा व सत्यमृषा ऐसी दो भाषा बोले. अहो भगवन् ! यह कथन किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं उन का कथन मिथ्या है. अहो गौतम ! इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि केवली यक्षाधिष्ठित नहीं होते हैं. वैसे ही यक्षाधिष्ठित से मृषा व सत्यमृषा ऐसी भाषा केवली नहीं बोलते हैं परंतु केवली ...

गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ता, तंजहा कम्मोवही, सरीरोवही, बाहिरभंड मत्तोवगरणोवही, ॥ णेरइयाणं भंते ! पुच्छा ? दुविहे उवही पण्णत्ता तंजहा कम्मो वहीय, सरीरोवहीय, सेसाणं तिविहे उवही । एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं ॥ एगिंदियाणं दुविहे उवही पण्णत्ता, तंजहा - कम्मोवहीय, सरीरोवहीय ॥ २ ॥ कइविहेणं भंते ! उवही पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ता, तंजहा-सचित्ते, अचित्ते, मीसए, एवं णेरइयाणवि, एवं णिरवसेसा जाव वेमाणियाणं ॥ ३ ॥

णाओं बोलते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! उपधि के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! उपधि न भेद कहे हैं १ कर्मोपाधि, २शरीरोपाधि व ३ शाय भंड पात्र व उपकरण की उपधि. अहो भगवन् ! नार को कितने प्रकार की उपधि कही ? अहो गौतम ! नारकी को कर्म व शरीर ऐसी दो उपधि एकेन्द्रिय छोडकर शेष सब को तीनों प्रकार की उपधि कही. एकेन्द्रिय को दो की उपधि १ कर्मोपधि व २ शरीरोपधि. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! उपधिके कितने हैं ? अहो गौतम ! उपधि के तीन भेद हैं-१ सचित्त, २ अचित्त, ३ मीश्र. नारकी आदि चौविस दंडक में तीनों प्रकार की उपधि कही ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! परिग्रह के और कितने भेद कहे हैं ? अहो

कइविहेणं भंते! परिग्गहे? गोयमा! तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तंजहा-कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे, बाहिरभंडमत्तोवगरण परिग्गहे ॥ णेरइयाणं भंते! एवं जहा उवहिणा दो दंडगा भणिया तहेव परिग्गहेणवि दो दंडगा भाणियव्वा ॥ ४ ॥ कइविहाणं भंते! पणिहाणे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तंजहा-मणपणिहाणे वइपणिहाणे, कायपणिहाणे ॥ णेरइयाणं भंते! कइविहे पणिहाणे? पण्णत्ते एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवीकाइयाणं पुच्छा? गोयमा! एगे कायपणिहाणे पण्णत्ते, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं ॥ बेइंदियाणं पुच्छा? गोयमा! दुविहे

भावार्थ

गौतम! परिग्रह के तीन भेद कहे हैं. तद्यथा-१ कर्म परिग्रह २ शरीर परिग्रह और ३ बाह्य भंड पात्र व उपकरण का परिग्रह. अहो भगवन्! नारकी को कितने परिग्रह हैं? अहो गौतम! जैसे उपधि के दो दंडक कहे वैसे ही परिग्रह के दो दंडक कहना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन्! प्रणिधान के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! प्रणिधान के तीन भेद कहे हैं तद्यथा-१ मन प्रणिधान, २ वचन प्रणिधान, व ३ काया प्रणिधान. नारकी यावत् स्तनितकुमार को तीनों प्रणिधान कहे हैं। पृथ्वीकाय यावत् वनस्पति काया को एक काया प्रणिधान कहा है। बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय को वचन व काया यों दो प्रणिधान हैं. और [illegible]

जणवयविहारं विहरइ ॥ ८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरं गुणसिलए चेइए, वण्णओ जाव पुढवीसिलापट्टओ ॥ ९ ॥ तस्सणं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति, तंजहा—कालोदाई, सेलोदाई, एवं जहा सत्तमसए अण्णउत्थिउद्देसए जाव से कहमेयं मण्णे एवं ? ॥ १० ॥ तत्थणं रायगिहे णयरे मद्दुएणामं समणोवासए परिवसइ, अड्डे जाव अपरिभूए अभिगय जाव विहरइ ॥ ११ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव समोसढे, परिसा जाव पज्जुवासइ ॥ १२ ॥ तएणं मद्दुए

भावार्थ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी बाहिर जनपद देश में विहार करने लगे ॥ ८ ॥ उस काल उस समय में राजगृह नाम का नगर था, उस की ईशान कौन में गुणशील नामक उद्यान था यावत् पृथ्वीशीला पट था ॥९॥ उस गुणशील उद्यान की पास बहुत अन्यतीर्थिक रहते थे. जिन के नाम. कालोदायी, शैलोदायी वगैरह जैसे सातवे शतक में अन्यतीर्थिक उद्देशा कहा है तैसेही यहां कहना. तो अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? ॥ १० ॥ उस राजगृह नगर में मद्दुक नामक श्रमणोपासक ऋद्धिवंत यावत् अपराभूत रहता था ॥ ११ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पूर्वानुपूर्वी चलते, यावत्-

समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे जाव हियए ण्हाए जाव सरीर
सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता. पातविहारचारेणं रायगिहं णयरं
जाव णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता, तेसिं अण्णउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीईवयति
॥ १३ ॥ तएणं से अण्णउत्थिया मंडुयं समणोवासयं अदूरसामंते वीईवयमाणं
पासइ, पासइत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया !
अम्हं इमा कहा अविउप्पकडा इमंचणं मंडुए समणोवासए अम्हं अदूरसामंतेणं







ग्राम विचरते यावत् पधारे परिषदा यावत् पर्युपासना करने लगी ॥१२॥ मंडुक श्रमणोपासकने जब यह बात
सुनी तब वह हर्षित हुवा, तुष्ट हुवा यावत् स्नान किया यावत् अलंकृत शरीरवाला हुवा और अपने गृह से
नीकलकर पांव से चलता हुवा राजगृह से यावत् नीकलकर उन अन्य तीर्थिकों की पास से जाता था ॥१३॥ तब वे
अन्यतीर्थिक मंडुक श्रमणोपासक को पास में जाता हुवा देखकर परस्पर ऐसा बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय !
अपन को यह बात समझ में नहीं आती है और यह मंडुक श्रमणोपासक नजीक में जा रहा है इस से
अहो देवानुप्रिय ! मंडुक श्रमणोपासक को यह बात पूछना अपन को श्रेय है. ऐसा करके परस्पर यह
बात सुनकर मंडुक श्रमणोपासक की पास गये और उन से ऐसा बोले-अहो मंडुक ! तेरे धर्माचार्य धर्मोपदे-

समणोवासगाणं भवसि, जेणं तुमं एयमट्ठं णजाणइ णपासइ ? तएणं मंडुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-अत्थिणं आउसो ! वाउयाए वाति ? हंता मंडुया ! वाति ॥ तुब्भेणं आउसो वाउयस्स वायमाणस्स रूवं पासह ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं आउसो ! घाणसहगया पोग्गला ? हंता अत्थि, तुब्भेणं आउसो ! घाणसहगयाणं पोग्गलाणं रूवं पासह ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं आउसो ! अरणिसहगए अगणिकाए ? हंता अत्थि । तुब्भेणं आउसो ! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं आउसो समुद्दस्स

भावार्थ मंडुक श्रमणोपासक उन अन्यतीर्थिकों को ऐसा बोले कि अहो आयुष्मन् ! क्या वायु चलता है ? हां मंडुक वायु चलता है, अहो आयुष्मन् ! तुम चलते हुवे वायु का रूप क्या देखते हो ? अहो मंडुक ! हम चलते हुवे वायु का रूप नहीं देखते हैं. घ्राणसहगत पुद्गलों हैं क्या ? हां मंडुक ! घ्राणसहगत पुद्गलों हैं. अहो आयुष्मन् ! क्या तुम घ्राणसहगत पुद्गलों का रूप देखते हो ? यह अर्थ योग्य नहीं है (अर्थात् घ्राणसहगत पुद्गलों का रूप हम नहीं देखते हैं. अहो आयुष्मन् ! क्या अरणि सहगत अग्नि है ? हां मंडुक ! अरणिसहगत अग्निकाय है. अहो आयुष्मन् ! तुम क्या अरणि सहगत अग्नि-

सूत्र

पारगयाइं रूवाइं ? हंता अत्थि, तुब्भ...
रूवाइं पासह ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं ? हंता अत्थि। तुब्भेणं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं पासह ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवामेव आउसो ! अहंवा तुब्भेवा अण्णोवा छउमत्थो णजाणइ णपासइ, तं सव्वं ण भवति. एवं भे सुबहुंलोए णभविस्सतीति कट्टु, ते अण्णउत्थिए एवं पडिहणति, एवं पडिहणातिचा जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, समण भगवं महावीरं पंचविहेणं अभि-

भावार्थ

काय का रूप देखते हो ? यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो आयुष्मन् ! समुद्र के पारगत रूप हैं ? हां मद्रुक ! हैं, तब क्या तुम उन को देखते हो ? यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो आयुष्मन् ! क्या देवलोक गत रूप हैं ? हां मद्रुक ! देवलोक गत रूप हैं. तब क्या उन देवलोक गत रूप को तुम देखते हो ? यह अर्थ योग्य नहीं है. ऐसे ही अहो आयुष्मन् ! मैं, तुम अथवा अन्य छद्मस्थ जो जो वस्तु दिखने में नहीं आती है वह नहीं है ऐसा मानेंगे तो तुम्हारे मत में सुबहुलोक नहीं होगा. इस तरह अन्यतीर्थिकों को निरुत्तर कर गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की

गमेणं अभि जाव पज्जुवासइ ॥ १४ ॥ मंडुयादि ! समणे भगवं महावीरे मंडुयं समणोवासयं एवं वयासी सुट्ठुणं मंडुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहुणं मंडुया ! तुम्हं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी जेणं मंडुया ! अट्ठंवा हेउंवा पसिणंवा, वागरणंवा अण्णायं अदिट्ठं असुयं अमतं अविण्णातं बहुजणमज्झे आघवइ पण्णवेइ जाव उवदंसेइ, सेणं अरिहंताणं आसादणयाए वट्टइ, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणयाए वट्टइ, केवलीणं आसादणयाए वट्टइ, केवलीपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणयाए वट्टइ, तं सुट्ठुण तुमं मंडुया ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहुणं तुम

की पास आकर भगवंत महावीर की पांच प्रकार के अभिगम से सन्मुख जाकर यावत् पर्युपासना करने लगा. ॥ १४ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी मंडुक श्रमणोपासक को ऐसा बोले कि अहो मंडुक ! तुमने अन्यतीर्थिकों को जो ऐसा कहा यह अच्छा किया. अहो मंडुक ! जो बहुत मनुष्यों में नहीं देखा हुआ, नहीं जाना हुआ व नहीं सुना हुआ अर्थ, हेतु, प्रश्न व व्याकरण को इस तरह कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं वे तीर्थंकर की आसातना करते हैं, अरिहंत प्ररूपित धर्म की आसातना करते हैं, केवली की आसातना करते हैं केवली प्ररूपित धर्म की आसातना करते हैं. इस से अहो मंडुक ! तैने उन अन्य तीर्थिकोंको ऐसा कहा सो

मूल

मंडुया ! जाव एवं वयासी॥१५॥तएणं मंडुए समणोवासए समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठे समणे भगवं महावीरं मंडुयस्स समणोवासगस्स तीसेय जाव परिसा पडिगया ॥ १६ ॥ तएणं मंडुए समणोवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव निसम्म हट्ठ तुट्ठे पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छइत्ता अट्ठाइ परियातिइत्ता, समण भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता जाव पडिगए ॥ १७ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समण भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं

भावार्थ

अच्छा किया. ॥ १५ ॥ अब श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने मंडुक श्रमणोपासक को ऐसा कहा तब मंडुक हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुवा और मंडुक श्रमणोपासक को उस महती परिषदा में महावीर स्वामीने उपदेश दिया यावत् परिषदा पीछी गई. ॥ १६ ॥ और मंडुक श्रमणोपासकने श्रमण भगवंत महावीर को यावत् नमस्कार कर हृष्ट तुष्ट हुवा और प्रश्नों पुछकर उसे ग्रहण कर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर यावत् पीछा गया. ॥ १७ ॥ भगवान गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! मंडुक श्रमणोपासक आपकी पास यावत् दीक्षित होने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. यहां जैसे शंख का कहापा वैसे ही

यपाली-रूपणं भंते ! मंडुए समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं जाव पव्वइत्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवं जहेव संखे तहेव अरुणाभे जाव अंतंकरेहिति ॥ १८ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डीए जाव महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू अण्णमण्णेणं सद्धिं संगामं संगामेत्तए ? हंता पभू ॥ ताओणं भंते ! बोंदीओ किं एग जीव फुडाओ अणेग जीव फुडाओ ? गोयमा ! एग जीव फुडाओ णो अणेग जीव फुडाओ तेसिणं भंते ! बोंदीणं अंतरा किं एग जीव फुडा अणेग जीव फुडा ? गोयमा ! एग जीव फुडा णो अणेग जीव फुडा ॥ १९ ॥ पुरिसेणं भंते ! अंतरं हत्थेणवा

भावार्थ यहां का [illegible] यावत् अरुणाभ विमान में उत्पन्न होकर वहां से महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा बुझेगा यावत् [illegible] ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महासुख वाला देवता सहस्ररूपों का वैक्रेय करके [illegible] को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! देवसहस्ररूपों का वैक्रेय करके परस्पर संग्राम करने [illegible] समर्थ है. अहो भगवन् ! उन शरीरों को क्या एक जीव स्पर्शा हुवा है या अनेक जीव स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! एक जीव स्पर्शा हुवा है. अहो भगवन् ! उन शरीरों की बीच में क्या एक जीव स्पर्शा हुवा है या अनेक जीव स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! एक जीव स्पर्शा हुवा है परंतु अनेक जीव स्पर्शे हुवे नहीं हैं.

सूत्र

एवं जहा अट्ठमसए तइय उद्देसए जाव णो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥ २० ॥ अत्थिणं भंते ! देवा असुरा संगामा देवा असुरा ? हंता अत्थि ॥ देवासुरेणं भंते ! संगामेसु वट्टमाणेसु किंणं तेसिं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमंति ? गोयमा ! जंणं ते देवा तणंवा, कट्ठंवा, पत्तंवा, सक्करंवा, परामुसंति तंणं तेसिणं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमंति ॥ जहेव देवाणं तहेव असुरकुमाराणं ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ असुरकुमाराणं देवाणं णिच्चं विउव्विया पहरणरयणा पण्णत्ता ॥ २१ ॥ देवेणं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे पभु लवणसमुद्दं अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छित्तए ? हंता

भावार्थ

॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! पुरुष बीच में हस्त पांव वगैरह जैसे आठवे शतक के तीसरे उद्देशे में कहा वैसे ही यहां जानना. ॥२०॥ अहो भगवन् ! देव व असुर में क्या संग्राम होता है? हां गौतम! देव व असुर में संग्राम होता है. अहो भगवन् ! देव व असुर के होते हुवे संग्राम में महाररत्न (शस्त्रपने) क्या परिणमता है? अहो गौतम ! देव जो तृण, काष्ट, पत्र व कंकर डालते हैं, वे उन देवोंको महाररत्नपने परिणमते हैं. जैसे देवों का कहा वैसे ही असुरकुमार का क्या जानना. ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. क्यों की असुरकुमार को सदैव वैक्रेयवाला महार रत्न होता है. ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक

सूत्र

पभू देवेणं भंते ! महिड्ढीए एवं धायइखंडदीवं जाव हंता पभू ॥ एवं जाव रुयगवरं दीवं जाव हंता पभू ॥ तेणं परं वीईवएज्जा णो चेवणं अणुपरियट्टिज्जा ॥ २२ ॥ अत्थिणं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति ? हंता अत्थि । अत्थिणं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेण पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ? हंता अत्थि॥ अत्थिणं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ? हंता अत्थि ॥ २३ ॥ कयरे भंते !

११.५

महाऋद्धि वाला देव क्या लवण समुद्र को अनुपर्यटन करके आनेको समर्थ है ? हां गौतम ! समर्थ है. ऐसे ही धातकी खंड द्वीप यावत् रूचकद्वीप का जानना. उस के आगे के द्वीप को उल्लंघने में समर्थ है परंतु उनकी प्रदक्षिणा करने में समर्थ नहीं है. ॥२२॥ अहो भगवन् ! ऐसे क्या देवों है कि जो अनंत पापकर्मांश जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांचसो वर्ष में खपावे ? हां गौतम ! ऐसे देवों है. अहो भगवन् ! ऐसे देवों क्या है कि जो अनंत पापकर्मांश एक दो तीन उत्कृष्ट पांच हजार वर्ष में खपावे ! हां गौतम ! है. अहो भगवन् ! क्या ऐसे देव है कि जो अनंत पापकर्मांश जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच लाख वर्ष में खपावे !

देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, एवं एएणं अभिलावेणं बंभलोगलंतगा देवा अणंत कम्मंसे तिहिं वाससहस्सेहिं, महासुक्कसहस्सारगा देवा अणंते चउहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, आणयपाणयआरणअच्चुयगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, हेट्ठिमगेवेज्जगादेवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससयसहस्सेणं खवयंति, मज्झिमगेवेज्जगा देवा दोहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति, उवरिमगेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे तिहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति, विजयवेजयंतजयंतअपराजियगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति, सव्वट्ठसिद्धगा

भावार्थ ॐ ईशान देवलोक के देवता अनंत पापकर्मांश एक हजार वर्ष में में खपाते, सनत्कुमार व माहेन्द्र देवलोक के देवता दो हजार वर्ष में खपाते, ब्रह्मलोक व लांतक देवलोक के देवता अनंत पापकर्मांश तीन हजार वर्ष में महाशुक्र व सहस्रार देवलोक के देवता चार हजार वर्ष में, आनत प्राणत आरण व अच्युत देवलोक के देवता अनंत पापकर्मांश पांच हजार वर्ष में, नीचे की ग्रैवेयक के देवों दो लाख वर्ष में खपाते, ऊपर की ग्रैवेयक के देवता तीन लाख वर्ष में खपाते, विजय वैजयंत जयंत व अपराजित के देवता चार हजार वर्ष में और सर्वार्थ

शब्दार्थ म० महावीर अ० अन्यदा क० कदापि रा० राजगृह ण० नगर के गु० गुणशील चे० उद्यान से प० नीकलकर ब० बाहिर ज० जनपद वि० विहार वि० विचरने लगे ॥ ३ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में उ० उल्लुकातीर ण० नगर हो० था त० उस उ० उल्लुकातीर ण० नगर की ब० बाहिर उ० ईशान कौन में ए० यहां ए० एक जम्बू चे० उद्यान ॥ ४ ॥ अ० अनगार भा० भावितात्मा छ० छठ के

सूत्र भगवं महावीरे अण्णयाकयायि रायगिहाओ णयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमइत्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ ३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयातीरे णाम णयरे होत्था, वण्णओ ॥ तस्सणं उल्लुयातीरस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थणं एगजंबुए णाम चेइए होत्था, वण्णओ ॥४॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव एगजंबुए समोसढे जाव परिसा पडिगया ॥४॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं

भावार्थ स्वामी विचरने लगे. ॥ ३ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर राजगृह नगरके गुणशील न में से नीकलकर बाहिर विचरने लगे ॥३॥ उस काल उस समय में उल्लुया तीर नाम का नगर था नर्णनयोग्य था. उस उल्लुका तीर नगर की बाहिर ईशान कौन में एकजंबुक नाम का उद्यान था. ॥ ॥ ४ ॥ उस समय में श्रमण भगवंत महावीर एकदा पूर्वानुपूर्वि चलते ग्रामानुग्राम विचरते यावत्

सूत्र

...प० उत्पन्न होवे जी० जीवसे प० उत्पन्नहोवे प० ऐसे स० होते अ० है उ०
उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ॥२॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् अ०
आत्मा से उ० उदीरे ग० निन्दे सं० संवरे हं० हां गो० गौतम आ० आत्मा से तं० तैसे ही उ० कथना

गोयमा! जीवप्पवहे एवंसइ अत्थि उट्ठाणेइवा, कम्मेइवा, बलेइवा वीरिएइवा पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ २ ॥ सेणूणं भंते, अप्पणाचेव उदीरेइ, अप्पणाचेव गरहइ, अप्पणा चेव संवरइ ? हंता गोयमा ! अप्पणा चेव उच्चारेयव्वं ॥ जंतंभंते । अप्पणा चेव उदीरेइ,

भावार्थ

यह शरीर के व्यापार से होता है. अहो भगवन् ! शरीर कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम जीव से उत्पन्न होवे+ यदि ऐसा होवे तो उत्थान-कार्य साधन के लिये खडे होना, कर्म-गमनादि कर्म करना, बल-शरीर की सामर्थ्यता, वीर्य-उत्साह, पुरुषात्कार-पुरुषका अभिमान, व पराक्रम-कार्य पूर्ण करना, इस में भी जीव की प्रधानता है. ॥२॥ अहो भगवन् ! कर्मबंधादिक में जीव की प्रधानता है तो क्या स्वयंही कर्म की उदीरणा करे, स्वयंही कृत कर्म की निन्दा करे और स्वयंही संवरे, अर्थात् कर्म करे नहीं ? हां गौतम; स्वयंही कर्मकी उदीरणा करे यावत् स्वयं कर्म करे नहीं. अहो भगवन् जब जीव स्वयं उदीरता है, गर्हता है, व संवरता है तो क्या

+ यद्यपि शरीर में कर्म भी कारण है कि केवल जीव ही कारण नहीं है, तथापि कर्म का कर्ता जीव होने से जीव से शरीर उत्पन्न होना कहा है.

शब्दार्थ

कितनी ले० लेश्या गो० गौतम ए० एक का० कापोतलेश्या इ० इस भं० भगवन् र० रत्नप्रभा जा० यावत् का० कापोत लेश्या में व० वर्तते स० सत्तावीस भं० भांगा ॥१२॥ इ० इस भं० भगवन् जा० यावत् किं० क्या स० समदृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि स० समामिथ्यादृष्टि गो० गौतम ति० तीन इ० इस जा० यावत् स० सम्यक् दर्शन में व० वर्तते ने० नारकी स० सत्तावीस भांगा ए० ऐसे मि० मिथ्या दर्शन में स० समामि-

सूत्र

भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं कइलेस्साओ प० ? गोयमा ! एगा काउलेस्सा प० । इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए जाव काउलेस्साए वट्टमाणा सत्तावीसं भंगा ॥ १२ ॥ इमीसेणं भंते ! जाव किं सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी ? गोयमा ! तिण्णिवि ॥ इमीसेणं जाव सम्मदंसणे वट्टमाणा नेरइया सत्तावीस भंगा एवं मिच्छदंसणेवि सम्मामिच्छ दंसणे असीइ भंगा ॥ १३ ॥

भावार्थ

भगवन् ! रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में नारकी को कितनी लेश्याओं कही ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी को एक मात्र कापुत लेश्या कही. कापुत लेश्यावाले नारकी को भी क्रोधादि कषाय के सत्तावीस भांगे जानना ॥ १२ ॥ आगे दृष्टिद्वार. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में क्या नारकी समदृष्टि, मिथ्या दृष्टि या समामिथ्यादृष्टि हैं ? अहो गौतम ! सम, मिथ्या, व समामिथ्या ऐसे तीनों दृष्टि हैं. सम दृष्टि व मिथ्या दृष्टिवाले नारकी में सत्तावीस भांगे व समामिथ्या दृष्टिवाले नारकी में अस्सी भांगे

यहां पुरुवाले वा० बाहिर के पो० पुद्गल अ० ग्रहण किये विना प० समर्थ आ० आने को णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक ए० ऐसा ए० इस अ० अभिलाप से ग० जाने का ए० ऐसे भा० बोलने को वि० प्रश्न पूछने को उ० उन्मेष करने को नि० निमेष करने को आ० संकुचित करने को प० पसारने को ठा० स्थान से० शय्या नि० निषिद्या वे० जानने को वि० वैक्रेय करने को प० परिचारणा करने को जा० यावत् हं० हां प० समर्थ इ० ये अ० आठ उ० संक्षिप्त प०

सूत्र जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू आगमित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे देवेणं भंते! महिड्डिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू आगमित्तए ! हंता पभू देवेणं भंते ! महिड्डिए एवं एएणं अभिलावेणं गमित्तए २, एवं भासित्तएवा, वियागरित्तएवा ३, उंमिसावेत्तएवा निम्मिसावेत्तएवा ४, आउंट्टावेत्तएवा पसारेत्तएवा ५, ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा, वेउव्वित्तएवा ६, एवं विउव्वित्तएवा ७, एवं परि-

भावार्थ वाला देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना क्या आने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना यहां आने को समर्थ नहीं है. अहो भगवन् ! महर्द्धिक व महासुखवाला देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर क्या यहां आ सकते हैं ? हां गौतम ! बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर यहां आ सकते हैं. जैसे आने का आलापक कहा वैसे ही जाने का, बोलने का उत्तर देने का, आंखों ढकने का, आंखों खोलने का, संकुचन व पसारन करने का, शय्या, ध्यान व कायोत्सर्ग

अर्थ वचन जोगी का० कायजोगी गो० गौतम ति० तीन इ० इस जा० यावत् म० मनजोग में व० वर्तते स० सत्तावीस भांगा ए० ऐसे का० कायजोग में ॥ १५ ॥ इ० इस जा० यावत् ने० नारकी सा० साकार युक्त अ० अनाकार युक्त गो० गौतम सा० साकारयुक्त गो० गौतम सा० साकारयुक्त अ० अनाकारयुक्त इ० इस जा० यावत् सा० साकार युक्त में वर्तते स० सत्तावीस भांगा ए० ऐसे अ० अनाकारयुक्त में स०

सूत्र गोयमा ! तिण्णिवि ॥ इमीसेणं जाव मणजोए वट्टमाणा सत्तावीसं भंगा । एवं कायजोए ॥१५॥ इमीसेणं जाव नेरइया किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ इमीसेणं जाव सागारोवउत्ते वट्टमाणा सत्तावीसं भंगा । एवं अणागारोवउत्तेवि सत्तावीसं भंगा ॥१६॥ एवं सत्तवि पुढवीओ नेयव्वाओ

भावार्थ प्रभा के नारकी क्या मनयोगी, वचनयोगी व काययोगी है ? अहो गौतम ! तीनों योगवाले हैं. इन तीनों योगवाले नारकी को सत्तावीस भांगे जानना ॥ १५ ॥ अब दशवा उपयोगद्वार. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा के नारकी क्या साकारोवउत्त हैं या अनाकारोवउत्ता हैं ? अहो गौतम ! साकारवाले हैं और अनाकारवाले भी हैं. साकार उपयोग युक्त नारकी वैसे ही अनाकार उपयोग युक्त नारकी में क्रोधादि कषाय के सत्तावीस भांगे जानना ॥ १६ ॥ जैसे रत्नप्रभा पृथ्वी पर दशद्वार कहे हैं वैसे अन्य शर्करादि

१ विशेषार्थग्राही ज्ञानोपयोग. २ सामान्यार्थग्राही दर्शनोपयोग.

पदार्थ प्रश्न वा० व्याकरण पु० पुछकर सं० संभ्रांत वं० वंदन से वं० वंदना कर ता० उसी दि० दीव्य जा० यान विमानपे दु० आरूढ होकर जा० जिस दिशी से पा० प्रगट हुवा ता० उसी दिशि में प० पीछा गया ॥ २ ॥ भं० भगवन् भ० भगवान गो० गौतमने स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले अ० अन्यदा भं० भगवन स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा दे० आपको वं० वंदना करता है ण० नमस्कार करता है जा० यावत् प० पर्युपासना करता है किं० क्या भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा दे० देवानुप्रिय को अ० आठ सं० संक्षिप्त प० प्रश्नोत्तर

मूल यापुच्छणया ८, जाव हंता पभू इमाइं अट्ठ उक्खित्त पसिणवागरणाइं पुच्छइ सं भंतिय वंदणएणं वंदइ वंदइत्ता तमेव दिव्वं जाण विमाणं दुरूहइ दुरूहइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ २ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी अण्णदाणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं वंदइ णमंसइ जाव पज्जुवासइ ॥ किण्णं भंते ! सक्के देविंदे

भावार्थ करने का, वैक्रेय करने का और परिचारणा करने का यों आठ आलापक कहना. ऐसे आठ आलापक वाले प्रश्नों पुछकर संभ्रांत वंदना नमस्कार कर उन ही यान विमान में बैठकर जिस दिशा से आया था वहां पीछा गया ॥ २ ॥ उस समय भगवंत गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! जब शक्र देवेन्द्र देवराजा आते हैं. तब आपको वंदना नमस्कार यावत्

शब्दार्थ

स्थान प० कहते गो० गौतम अ० असंख्यात ठि० स्थिति स्थान ज० जघन्य ठि० स्थिति ज० जैसे ने० नारकी न० विशेष प० प्रतिलोम भं० भांगा भा० कहना म० नहीं ना० तैसे हो० हुवे लो० लोभयुक्त मा० मानयुक्त ए० इस अ० गमे से ने० जानना जा० यावत् थ० स्तनित कुमार न० विशेष ना० नाना प्रकार ना० जानना ॥ १८ ॥ अ० असंख्यात पु० पृथ्वी कायावास स० शत सहस्र में ए० एकेक पु० पृथ्वीकाया वास में पु० पृथ्वी काया के के० कितने ठि० स्थिति स्थान गो० गौतम अ० असंख्यात

मूल

तहा, नवरं पडिलोमाभंगा भाणियव्वा, सव्वेवि ताव होज्जा लोभोवउत्ताय माणोव उत्ताय, एएणं गमेणं नेयव्वं, जाव थणिय कुमारा नवरं नाणत्तं जाणियव्वं ॥ १८ ॥ असंखेज्जेसुणं भंते ! पुढवीकाइयावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइयावासंसि

भावार्थ

यहां पर उलटे कहना. क्योंकि देवता में लोभ की अधिकता विशेष है. असंयोगी भांगा एक लोभयुक्त बहुत द्विसंयोगी भांगे ९ लोभयुक्त बहुत मानयुक्त एक ऐसे कहना. इसी तरह सत्तावीस भांगे जानना. जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही स्तनित कुमार तक सब भुवनपति का कहना. नरक व असुरकुमारादि भुवनपति में संघयण संस्थान लेश्या वगैरह में जो भिन्नता होवे सो विचार कर कहना ॥ १८ ॥ अब स्थावर का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव के असंख्यात वास में से एकेक आवास में रहनेवाले पृथ्वीकायिक जीव के कितने स्थिति स्थान कहे हैं ? जघन्य स्थिति स्थानक यावत् उत्कृष्ट

पु० पुछकर सं० संघात वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर जा० यावत् प० पीछा गया गो० गौतमादि स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर भ० भगवान गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे गो० गौतम तं० उस काल तें० उस समय में म० महा शुक्र क० देवलोक में म० महा सामानिक वि० विमान में दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महा सुखवाले ए० एक वि० विमान में दे० देवतापने उ० उत्पन्न हुवे तं० तद्यथा मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्नक अ० अमायी स० सम्यक्दृष्टि उ० उत्पन्नक त० तब से० वह मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्नक दे० देवने मा० मायी समदृष्टि उत्पन्न

मूल

देवाणा देवाणुप्पियं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ, पुच्छइत्ता संभंतियं वंदइ, वंदइत्ता जाव पडिगए. गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्के कप्पे महासामाणि-यविमाणे दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा एगविमाणंसि देवत्ताए उववण्णा, तंजहा मायीमिच्छादिट्ठीउववण्णए, अमायीसम्मादिट्ठीउववण्णए ॥ तएणं से

भावार्थ

उपपातसन्ना करते हैं परंतु आज किस कारन से शक्र देवेन्द्र देवराजा आपको संक्षेप में आठ प्रश्नों पुछकर संभ्रान्त चित्त से वंदना नमस्कार कर पीछे चले गये ? श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने कहा कि अहो गौतम ! उस काल उस समय में महाशुक्र देवलोक में महा सामानिक विमान में महर्द्धिक यावत् महासुखवाले दो देव एक ही विमान में देवतापने उत्पन्न हुए. जिस में एक मायी मिथ्यादृष्टि और

शब्दार्थ ए० ऐसे पु० पृथ्वी काया स० सर्व ठा० स्थान में अ० अभंग न० विशेष ते० तेजु लेश्या में अ० असी भांगा आ० अप्काय ते० तेउकाय वा० वायु काया स० सर्व ठा० स्थान अ० अभंग व० वनस्पति काया ज० जैसे पु० पृथ्वीकाय॥१२॥बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय जे० जिन स्थान में ने० नारकी को अ० असी भांगा ते० उन स्थान में अ० असी न० विशेष अ० ज्ञान स० सम्यक्त्व में आ० मतिज्ञान सु० श्रुत

सूत्र सव्वेसुवि ठाणेसु अभंगयं । नवरं तेउलेस्साए असीइभंगा ॥ एवं आउकाइयावि ॥ तेउकाइया, वाउकाइयाणं सव्वेसुवि ठाणेसु अभंगयं । वणप्फइकाइया जहा पुढविकाइया ॥ १२ ॥ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणं जेहिं ठाणेहिं नेरइयाणं असीइभंगा तेहिं ठाणेहिं असीइचेव. णवरं अब्भहियासम्मत्ते ॥ आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे एएहिं

भावार्थ तेजोलेश्या ज्यादा कहना * ऐसे ही अप्काय का अधिकार जानना. तेउकाय व वायुकाय में दशोंद्वार पर अभंग जानना. क्यों कि इन में क्रोधादि कषायवाले बहुत जीव हैं और देवता आकर उत्पन्न नहीं होते हैं. वायुकाय में शरीर चार कहना उदारिक, वैक्रेय, तेजस व कार्माण. वनस्पति काय का पृथ्वीकाय जैसे कहना ॥ १२ ॥ जिस स्थान नरक में असी भांग कहे हैं उन स्थान पर बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय में असी भांग जानना. नरक में एकादि से संख्यात समय अधिक तक जघन्य

*जो देवगतिमें से देवता चवकर पृथ्वीकायमें एक या अनेकपनासे उत्पन्न होतेहैं इससे उनको असीभांगेपाते हैं

मूल

तलमारूभइत्ता तलाओ तलफलं पचालेइवा पवाडेइवा तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरिया पुट्ठे; जेसिं पियणं जीवाणं सरीरेहिंतो तले णिव्वत्तिए तलफले णिव्वत्तिए तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ५ ॥ अहेणं भंते ! से तल-फले अप्पणो गुरूयत्ताए जाव पच्चोवयमाणा, जाइं तत्थ पाणाइं जाव जीवियाओ ववरोवेइ, तएणं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ? गोयमा ! जावचणं से पुरिसे तल-फले अप्पणो गुरूयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेइ, तावचणं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे २ ॥ जेसिं पियणं जीवाणं सरीरे हिंतो तलेणिव्वत्तिए तेविणं

भावार्थ

फल को चलाता हुवा नीचे डालता हुवा वह पुरुष कितनी क्रियाओं करे ! अहो गौतम ! जब लगवह ताल वृक्षपर चढता है और चढकर उस के फल चलाता है अथवा नीचे डालता है वहां लग उस को कायिकादि पांचों क्रियाओं लगती है. और जिन जीवों के शरीर से ताल बना हुवा है उन जीवों को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! वह ताल फल अपनी गुरुता से यावत् नीचे गिरे और प्राणों का घात होवे अहो भगवन् ! उस पुरुष को कितनी क्रियाओं लगती है ? अहो गौतम ! जहां लग वह पुरुष ताल वृक्षसे अलग होकर रहा है और उस का फल अपनी गुरुता से नीचे आकर गिरता है और मार्ग में

शब्दार्थ

सर्वकाल ए० ऐसे उ० उपर का ए० एकेक को सं० जोडना जो० जो हे० निचे का तं० उन को छ० छोडना ने० जानना जा० यावत् अ० अतीत अ० अनागतकाल प० पीछे स० सर्वकाल जा० यावत् अ० अनुक्रम से मा० वह रो० रोहा मे० वह ए० ऐसे भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥१४॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितना प्रकार की भं० भगवन्

मूल

एक्केक्कं संजोयं, तेणं जो जो हेट्ठिल्लो तं तं छड्डेतेणं नेयव्वं जाव अतीय अणागयद्धा, पच्छासव्वद्धा. जाव अणाणुपुव्वीए सा रोहा, सेवं भंते २ जाव विहरइ ॥ १४ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं जाव एवं वयासी कइविहाणं भंते ! लोयट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठिई पण्णत्ता, तंजहा — आगासपइट्ठिए वाए

भावार्थ

भी वैसे ही कहना. इन में कोई पहिले पीछे नहीं. सब अनुक्रम रहित बराबर हैं. सदा शाश्वत है. फीर रोहक अनगार बोले की अहो भगवन् ! आपने जो कहा वह वैसे ही है यों कहकर तप संयम से आत्माको भावते हुवे विचरने लगे ॥ १४ ॥ श्री गौतम स्वामीने प्रश्न किया कि अहो भगवान् ! लोक स्थिति कितने प्रकार की है ? अहो गौतम ! लोक स्थिति आठ प्रकार की है. १ आकाश प्रतिष्ठित वायु अर्थात् आकाश के आधार से घनवात तनुवात ऐसे दोनों वायु रहे हैं २ वायु के आधार से उदधि है ३ उदधि प्रतिष्ठित पृथ्वी ४ पृथ्वी प्रतिष्ठित त्रस स्थावर प्राणी ५ जीव के आधार से अजीव रहे हैं ६ कर्म के आ-

सूत्र

जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ जेसिं पियणं जीवाणं सरीरेहिंतो तलफले णिव्वित्तिए तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ५ जेवियसे जीवा अहे वीससाए, पच्चोवयमाणस्स उग्गहे वट्टंति, तेवियणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ६ ; ॥ ६ ॥ पुरिसेणं भंते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणेवा पवाडेमाणेवा कइकिरिए ? गोयमा ! जावंचणं से पुरिसे रुक्खस्स मूलं पचालेइवा पवाडेइवा, तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ जेसिंपियणं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले णिव्वत्तिए जाव बीए णिव्वत्तिए तेविणं जीवा काइयाए

भावार्थ

प्राणों की घात करता है इसलिये उस पुरुष को चार क्रियाओं कही हैं क्योंकी उस पुरुष के योग से उसकी घात नहीं हुई है. जिन जीवों के शरीर से ताल बना हुवा है उन जीवों को कायिकादि चार क्रियाओं लगती है. और जिन जीवों के शरीर से तालफल बना हुवा है उन जीवों को कायिकादि पांच क्रियाओं लगती है. और जो जीवों स्वभाव से ही नीचे आते हैं उन जीवों को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष वृक्ष के मूल को चलाता व नीचे डालता किनती क्रियाओं करे ? अहो गौतम ! जहां लग वह पुरुष वृक्ष के मूल को चलाता व नीचे गिराता है,

शब्दार्थ व० मशक को आ० भरकर उ० उपर सि० बंधन बं० बांधे म० मध्य में गं० गांठ बं० बांधे उ० उपर की गं० गांठ को मु० छोडे उ० उपर के दे० भाग का वा० नीकाले उ० उपला दे० भाग में आ० पानी पू० भरे उ० उपर का सि० बंधन बं० बांधे म० मध्य की गं० गांठ को मु० छोडे से० वह गो० गौतम आ० पानी वा० वायु की उ० उपर चि० रहे हं० हां चि० रहे से० वह

सूत्र बंधइ २ त्ता, मज्झे गंठिं बंधइ २ त्ता, उवरिल्लं गंठिं मुयइ २ त्ता, उवरिल्लं देसं वामेइ २ त्ता, उवरिल्लं देसं आउयायस्स पूरेइ २ त्ता, उप्पि सियं बंधइ २ त्ता, मज्झिल्लं गंठिं मुयइ ॥ सेणूणं गोयमा ! से आउयाए तस्स वाउयायस्स उप्पिं उवरितले चिट्ठइ ? हंता चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं जाव जीवा कम्मसंगहिया, ॥ से

भावार्थ दूसरा बंध बांधे, मध्य में बंध बांधकर उपर का मुख खोलकर वायु नीकाल देवे और पानी भरे, फीर उस का मुख बांधकर बीच का बंध छोड देवे तो क्या गौतम ! उस मशक में रहे हुवे नीचे के वायु से पानी रह सकता है ? हां भगवन् ! उपर के विभाग में वायु के आधार से पानी रह सकता है. तब भगवन्तने कहा कि जैसे वायु के आधार से मशक में पानी रहा वैसे ही आकाश के आधार से वायु, वायु के आधार से पानी यावत् कर्म संग्रहीत जीव है. दूसरा दृष्टान्त जैसे कोई पुरुष वायु से पूरित चमडे की मशक को कटि से बांधकर पुरुष प्रमाण से अधिक अगाध पानीवाले द्रह में प्रवेश

शब्दार्थ जं० जो भं०. भगवन् आ०आत्मासे उ०उदीरे ग०निन्दे स० संवरे त० उन को कि०क्या उ०उदयआया उ० उदीरे अ०उदे नहीं आया भ०उदीरे उ०उदे नहीं आया उ०उदीरणा योग्य उ०उदीरे उ०उदयान्तर प०पीछे क०कीया कर्म उ० उदीरे गो० गौतम णो० नहीं उ०उदे आया उ०उदीरे णो० नहीं अ०उदे नहीं आया

सूत्र अप्पणाचेव गरहइ, अप्पणाचेव संवरइ, तंकिं उदिण्णं उदीरेइ, अणुदिन्नं उदीरेइ अणुदिन्नं उदीरणा भवियं कम्मं उदीरेइ, उदयाणंतरं पच्छाकडं कम्मं उदीरेइ ? गोयमा ! नो उदिण्णं उदीरेइ, णो अनुदिण्णं उदीरेइ, अनुदिण्णं उदीरणा भवियं कम्मं उदीरेइ, नो उदयाणंतरं पच्छाकडं कम्मं उदीरेइ ॥ जंतंभंते ! अणुदिन्नं उदीरणा

भावार्थ उदय आया हुवा उदीरता है, उदय नहीं आया हुवा उदीरता है, उदय में नहीं आया है परंतु उदीरणा के योग्य जो उसे उदीरता है, अथवा उदय के अनंतर समय में पश्चात् कृत कर्म को उदीरता है ! अहो गौतम! जो कर्म उदयमें आये हैं उनकी उदीरणा करे नहीं क्योंकी उदयमें आये हुवे कर्मों की उदीरणा नहीं होती है, जो उदय में नहीं आये हैं उन की भी उदीरणा नहीं होती है क्यों की वे बहुत काल में उदय में आवेंगे इस लिये वर्तमान काल में उन की उदीरणा का अभाव है, जो उदय में नहीं आये हैं परंतु उदीरणा के योग्य हुवे हैं उन को उदीरते हैं और उदयांतर कृत कर्म को नहीं उदीरते हैं. अहो भगवन् ! जो उदय में नहीं आये हैं और उदीरणा के योग्य बने हुवे उन को उदीरते हैं तो क्या

शब्दार्थ पु० स्पर्शाये अ० अन्योन्य ओ० अवगाहे हुवे अ० अन्योन्य सि० स्निग्ध प० बंधाये अ० अन्योन्य घ० घडापने चि० रहते हैं हं० हां अ० है से० वह के० कैसे भं० भगवन् जा० यावत् चि० रहते हैं गो० गौतम से० वह ज० जैसे ह० द्रह सि० होवे पु० पूर्ण प० प्रतिपूर्ण वो० उछलता वो० विकसता म० सम घ० घडापने चि० रहे अ० अब के० कोइ पु० पुरुष तं० उस ह० द्रहमें ए० एक अ० बडा ना० नाव म०

सूत्र पुट्ठा, अण्णमण्ण मोगाढा, अण्णमण्ण सिणेह पडिबद्धा, अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! जाव चिट्ठंति ! गोयमा ! से जहा नामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभर घडत्ताए चिट्ठइ ॥ अहेणं केइपुरिसे तासि हरदंसि एगं महं नावं सदासवं सयच्छिदं ओग्गाहेज्ञा, सेणूणं गोयमा ! सानावा तेहिं आसवदारेहिं आपूरमाणी २ पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा

भावार्थ हुवे हैं ? भगवन्त कहते हैं कि हां गौतम ! जीव पुद्गल परस्पर बन्धे हुवे रहते हैं यावत् लोली भूत रहते हैं. अहो भगवन् ! किस प्रकार से जीव अजीव दोनों बंधे हुवे हैं यावत् लोलीभूत हैं ! अहो गौतम ! जैसे कोई द्रह पानी से परिपूर्ण होवे किंचिन्मात्र खाली न होवे, उस में पानी उछलता होवे, और बहुत सुशोभित होवे, वैसे द्रह में कोई पुरुष एक बडी छिद्रवाली नाव सहित प्रवेश करे. अब अहो गौतम ! छिद्रों से आता हुवा पानी से भरकर वह नावा भरे हुवे घडे समान क्या नीचे बैठे ? हां

शब्दार्थ गौतम ऊ० ऊर्ध्व प० गीरे अ० अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प० गीरे॥१८॥ ज० जैसे से० वह या० बादर अ० अप्काय अ० अन्योन्य स० रहता चि० चिरकाल दी० दीर्घकाल चि० रहे त० तैसे से० वह नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह खि० शीघ्र वि० विध्वंस आ० आता है से० ऐसे भं० भगवन्॥१॥६॥

ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरकमें उ० उपजता किं० क्या दे० देशसे दे० देश उ० उपजे दे० देश से स० सर्व उ० उपजे स० सर्व से दे० देश उ० उपजे स० सर्व से स० सर्व उ० उपजे गो० गौतम नो० नहीं

सूत्र समाउत्ते चिरंपि दीहकालं चिट्ठइ, तहाणं सेत्ति! णोइणट्ठे समट्ठे। सेणं खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥१॥६॥

नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेणं देसं उववज्जइ, देसेणं सव्वं उववज्जइ, सव्वेणं देसं उववज्जइ, सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ? गोयमा ! नो देसेणं देसं उव

भावार्थ भी बहुत काल तक टिकती है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों की सूक्ष्म अप्काय बहुत काल पर्यंत नहीं टिकती है. अल्प समय में नष्ट होती है. गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन् ! आपका वचन सत्य है. अन्यथा नहीं है. यह पहिले शतकका छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥१॥६॥

छठे उद्देशे में विध्वंस की कथा कही अब सातवे उद्देशे में इससे विपरीत उत्पन्न होने की वक्तव्यता करते

मूल

साए पच्चोवयमाणस्स उग्गहे वट्टंति तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं पुट्ठा ॥ ९ ॥ पुरिसेणं भंते ! रुक्खस्स कंदं पचा० ? गोयमा ! जावं चणं से पुरिसे जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे जेसिंवियणं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले णिव्वत्तिए जाव बीए णिव्वत्तिए ते विण जीवा पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥ १० ॥ अहेणं भंते ! से कंदे जाव चणं से कंदे अप्पणो जाव चउहिं पुट्ठे, जेसिंवियणं जीवाण सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए खंधे णिव्वत्तिए जाव चउहिं पुट्ठा, जेसिंवियणं जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे णिव्वत्तिए, तेविणं जीवा जाव पंचहिं पुट्ठा ; जेविए से जीवा अहे वीससाए पच्चोवय जाव

भावार्थ

रहे हैं वे कायिकादि पांच क्रियाओं से स्पर्शे हो हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! वृक्ष के कंद चलाते व नीचे गिराते कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! जब लग वह पुरुष कंद चलाता है यावत् पांच क्रियाओं, जिन जीवों के शरीर से मूल यावत् बीज बना हुवा है उन जीवों को भी पांच क्रियाओं लगे. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! वह कंद अपनी गुरुता से नीचे आवे तो कितनी क्रियाओं लगे ? यों ह पूर्वोक्त जैसे यावत् चार क्रियाओं लगे जिन जीवों के शरीर से कंद बना हुवा है उन जीवों को भी पांच क्रियाओं लगती है. और स्वभाव से नीचे आते यावत् पांच क्रियाओं लगे. जैसे कंद का कहा वैसे ही बीज का

गोतम् नं० नरक में उ० उपजता किं० क्या दे० देश से दे० देश आ० आहारकरे आ० आहार करे स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्व से स० सर्व गौतम नो० नहीं दे० देश से दे० देश आ० आहार करे नो० नहीं दे० देश से स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्वसे स० सर्व आ० आहार करे

देसेणं सव्वं आहारेइ, सव्वेणं देसं आहारेइ, सव्वेणं सव्वं
सेणं देसं आहारेइ, णो देसेणं सव्वं आहारेइ, सव्वेणं

हार करे ? सर्व से देश का आहार करे ? अथवा सर्व से सर्व का आ-
के देश से देश पुद्गलों का आहार नहीं करता है, जीव एक देश से
है, परंतु उत्पन्न होने के दूसरे समय में ही सब प्रदेश से नरक के
[illegible] है, और जीव के समस्त प्रदेश से समस्त पुद्गलों का आहार करता है. जैसे
[illegible] में पुरी को डालने पहिले पास के तेल को चूस लेती है फीर थोडा बहुत
थोडा बहुत छोडती है. इस प्रकार उत्पन्न होने के समय में आहार के ग्रहण योग्य
[illegible] उन सब को खींच लेता है फीर कितनेक पुद्गलों ग्रहण करता है और कितनेक छो-
डता है. [illegible] को प्रकार से नरक के जीव आहार करते हैं. जैसे नरक का कहा वैसे ही ...

शब्दार्थ

जीव प० प्रतिबद्ध पु० पुत्रका जीव फु० स्पर्शा हुवा त० इसलिये आ० आहार करे प० परिणमे अ० अथ-
वा पु० पुत्रका जीव प० प्रतिबद्ध मा० माता का जीव से फु० स्पर्शा हुवा त० इस लिये चि० चिने उ० उप-
चेने से० वह ते० इसलिये जा० यावत् नो० नहीं मु० मुख से का० कवल आ० आहार आ० आहार
करे ॥ १५ ॥ क० कितने भं० भगवन् मा० माता के अंग गो० गौतम त० तीन मा० माता के अंग
प० मरूपे मं० मास सो० रुधिर म० मस्तक ॥ १६ ॥ क० कितने भं० भगवन् पे० पिता के

सूत्र

फुडा, तम्हा आहारेइ, तम्हा परिणामेइ, अविरात्रियणं पुत्तजीव पडिबद्धा माउजीव
फुडा तम्हा चिणाइ, तम्हा उवचिणाइ. से तेणट्ठेणं जाव नो पभू मुहेणं कावलियं
आहारं आहारित्तए ॥ १५ ॥ कइणं भंते ! माइअंगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ
माइयंगा पण्णत्ता तंजहा मंससोणिए मत्थुलुंगं ॥ १६ ॥ कइणं भंते ! पेइयंगा प-

भावार्थ

आहार करता है और शरीर में परिणमाता है. दूसरी पुत्रजीवरसहरणी नाडी पुत्रके जीव की साथ बंधी
हुई व माता की साथ स्पर्शी हुई है. इस से गर्भस्थ जीव के शरीर की वृद्धि होती है. इसीसे अहो
गौतम ! कवल आहार लेने को गर्भस्थ जीव नहीं समर्थ होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! माता के कितने
अंग कहे हैं ? अहो गौतम ! माता के तीन अंग कहे हैं. मांस, रुधिर व मस्तक की मींजी. फेफसा अथवा
कलेजा ऐसा भी अर्थ कितनेक करते हैं. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पिता के कितने अंग हैं ? अहो गौतम !

जाव अणागारोवओगे वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे सच्चेव जीवाया ॥ ६ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता पभू अरूवी विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवेणं जाव णो पभू अरूवी विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए ? गोयमा ! अहमेयं जाणामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि; मए एयं णायं, मए एयं दिट्ठं, मए एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमण्णागयं-जंणं तहागयस्स जीवस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स सवेदगस्स समोहस्स सलेसस्स ससरीरस्स ताओ सरीराओ अविप्पमुक्कस्स एवं पण्णायाति

प्राणातिपात यावत् मिथ्या दर्शन शल्य में रहने वाले वह जीव व वही जीवात्मा है. ऐसे ही अनाकारोपयुक्त तक जानना. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महासुख वाला देव पहिले रूपी होकर फीर अरूपीका वैक्रेय करके रहने में क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् अरूपीका वैक्रेय करके रहनेसे समर्थ नहीं है ? अहो गौतम ! मैं यह जानता हूं देखता हूं पर्याय से जानता हूं सब वस्तु के सन्मुख होकर जानता हूं मैंने यह जाना, मैंने यह देखा, मैंने यह पर्याय से जाना, मैं सब वस्तु की [illegible]

शब्दार्थ ग० गर्भ में ग० रहाहुवा ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० कितनेक उ० उत्पन्न होवे अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे से० वह के० कैसे गो० गौतम स० संज्ञीपंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्तिमे प० पर्याप्त वी० वीर्यलब्धिमे वे० वैक्रेयलब्धिमे प० शत्रुसैन्य आ० आया हुवा सो० सुनकर नि० अवधारकर प० प्रदेश नि० बहार निकाले वे० वैक्रेय समुद्घात से स० ग्रहण करे स० ग्रहण करके

सूत्र भंते गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा॥ सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीएहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए पराणियं आगयं सोच्चा निसम्म पएसे नि-

भावार्थ नष्ट होजाते हैं. ॥ १८ ॥ अब गर्भस्थ जीव कदाचित् गर्भ में ही काल अवस्था को प्राप्त होवे तो कहां पर उत्पन्न होता है उस संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भस्थ जीव आयुष्य पूर्ण होने से कालकर क्या नरक में उत्पन्न होते हैं ! अहो गौतम ! कितनेक जीव नरक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस तरह से गर्भस्थ जीव नारकी में उत्पन्न होते हैं अहो गौतम ! कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव राणी की कुक्षि में उत्पन्न होवे अर्थात् गजपुत्र होवे. वहां उन को पूर्ण पर्याप्त बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे, पूर्व करणी के प्रभाव से वीर्य लब्धि व वैक्रेय लब्धि की प्राप्ति होवे

सूत्र

तंजहा-कालत्तेवा जाव सुक्किलत्तेवा, सुब्भिगंधत्तेवा, दुब्भिगंधत्तेवा, तित्तत्तेवा जाव महुरत्तेवा, कक्खडत्तेवा जाव लुक्खत्तेवा से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव चिट्ठित्तए ॥७॥ सच्चेवणं भंते! से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता पभू रूविं विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तए ? गोयमा ! अहमेयं जाणामि जाव जंणं तहागयस्स जीवस्स, अरूविस्स, अकम्मस्स, अरागस्स, अवेदस्स, अमोहस्स, अलेसस्स, असरीरस्स ताओ सरीराओ विप्पमुक्कस्स णो एवं पण्णायाति. तंजहा कालत्तेवा जाव लुक्खत्तेवा से तेणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तएवा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥

भावार्थ

लेश्या वाले, व शरीर से रहित जीव को कालापना यावत् शुक्लपना, सुरभिगंधपना व दुरभिगंधपना, तिक्तपना यावत् मधुरपना कर्कशपना यावत् रूक्षपना का ज्ञान होता है इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् रहता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! वही जीव पहिला अरूपी होकर फीर रूपीका वैक्रेय कर रहने को क्या समर्थ होता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि वही जीव पहिले अरूपी होकर रूपी का वैक्रेय कर रहने में समर्थ नहीं है? अहो गौतम! मैं ऐसा जानता हूं यावत् तैसे रूप, कर्म, राग, वेदना, मोह, लेश्या, शरीर व उस शरीर से रहित जीव को कालापना

शब्दार्थ — का कांक्षी पु० पुन्य का कांक्षी स० स्वर्ग का कांक्षी मो० मोक्ष का कांक्षी ध० धर्म पि० पिपासु पु० पुन्य पिपासु स० स्वर्ग पिपासु मो० मोक्ष पिपासु त० उन में चित्त वाला म० मनवाला ले० लेश्या वाला अ० अध्यवसाय वाला अ० अर्थयुक्त अ० अर्पित करण वाला उ० उस भा० भावना से भा० भावता ए० इस अं० अंतर में का० काल क० करे दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे से० वह ते० इस लिये गो० गौतम ॥ २० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गया हुवा उ० उलटा होवे पा० पसली जैसे अं० आम्र

सूत्र — पुण्णकंखिए, सग्गकंखिए, मोक्खकंखिए; धम्मपिवासिए, पुण्णपिवासिए, सग्गपिवासिए, मोक्खपिवासिए, तच्चित्ते, तम्मणे, तल्लेसे तदज्झवसिए, तदट्ठोवउत्ते, तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयंसिणं अंतरंसि कालं करेज्जा देवलोएसु उववज्जइ सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥ २० ॥ जीवेणं भंते गब्भगए समाणे उत्ताणएवा, पासल्लएवा

भावार्थ — कामी, स्वर्ग का कामी व मोक्ष का कामी; धर्म, पुण्य, स्वर्ग व मोक्षका कांक्षी; धर्म, पुण्य, स्वर्ग व मोक्ष का पिपासु, धर्मादिमें तथा प्रकारका चित्तवाला, तन्मय, तीनशुभ लेश्यावन्त, वैसेही अध्यवसाय युक्त, उस अर्थ प्रयोजन युक्त, उसी अर्थ में आत्मा को अर्पण करनेवाला व वैसा भाव को चिन्तवनेवाला यदि उसी समय काल कर जावे तो देवलोक में देवतापने उत्पन्न होता है. इस कारन से अहो गौतम ! कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ॥ २० ॥ अब

शब्दार्थ उ० उदीरे अ० उदे नहीं आया उ० उदीरणा योग्य क० कर्म उ० उदीरे नो० नहीं उ० उद्यान्तर प० पीछे क० कीया कर्म उ० उदीरे जं० जो भं० भगवन् अ० उदे नहीं आया उ० उदीरना योग्य क० कर्म उ० उदीरे तं० उन को उ० उत्थान क० कर्म व० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार पराक्रम से अ० उदे नहीं आया उ० उदीरणा योग्य उ० उदीरे उ० अथवा तं० उन को अ० अनुत्थान अ० अकर्म

सूत्र भवियं कम्मं उदीरेइ तंकिं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार परक्कमेणं अणुदिन्नं उदरिणा भवियं कम्मं उदीरेति. उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं अवीरिएणं, अपुरिसक्कार परक्कमेणं. अणुदिण्णं उदीरणा भवियं कम्मं उदीरेइ ? गोयमा ! तं उट्ठाणेणवि, कम्मेणवि, बलेणवि, वीरिएणवि, पुरिसक्कार परक्कमेणवि, अणुदिन्नं उदीरणा भवियं कम्मं उदीरेइ नो, तं अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं

भावार्थ उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम से उदीरता है ? अथवा उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम बिना उदीरता है ? अहो गौतम ! उत्थान यावत् पराक्रम से उदीरणा के योग्य अनुदित कर्म उदीरता है. परंतु उत्थान यावत् पराक्रम बिना उदीरणा के योग्य अनुदित कर्म को नहीं उदीरता है. इस लिये उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम में अस्ति है जिस से उदीरणा योग्य

शब्दार्थ

भावे रि० विनाश आ० पापे प० वर्ण व० वध्य क० कर्म ब० बांधे हुवे पु० स्पर्शे हुवे णि० निकाचित बांधे क० कीये प० स्थापे अ० तीव्र स्थापे अ० सन्मुख आये उ० उदय आये णो० नहीं उ० उपशांत हुवे दु० कुरूप दु० परावर्ण वाला दु० दुर्गंधी दु० खराब, वाला दु० खराब स्पर्श वाला अ० अनिष्ट अ० अकान्त अ० अप्रिय अ० अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमनाम ही० हीनस्वर वाला दी० दीनस्वर

सूत्र

च्छइ. विणिहाय मावज्जइ, वण्णवज्झाणिय से कम्माइं बद्धाइं, पुट्ठाइं, णिहित्ताइं, कडाइं, पट्ठवियाइं, अभिनिविट्ठाइं, अभिसमण्णागयाइं उदिण्णाइं. णोउवसंताइं भवंति, तओ भवइ, दुरूवे, दुवण्णे, दुग्गंधे, दुरसे, दुफासे, अणिट्ठे, अकंते, अप्पिए, असुभे, अमणुण्णे, अमणामे, हीणस्सरे, दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे, अकंतस्सरे अप्पियस्सरे, असुभस्सरे,

भावार्थ

नाश होता है तब कितनेक जीव मस्तक से नीकलते हैं, और कितनेक पांव से नीकलते हैं, अथवा माता व जीव दोनों की घात न होवे वैसे नीकलते हैं. और अशुभ कर्मोदय से कदाचित् तिर्च्छा होजाता है तो नीकलने न नीकलने के अभाव से मृत्यु को प्राप्त होजाता है. अब गर्भ से नीकले बाद जो होता है सो कहते हैं. जिनोंने पूर्व भव में पापाचरण व अयोग्य कर्तव्य से निकाचित कर्मों का बंध किया है वैसेही जिन को मनुष्य तिर्यंचादि गति, पंचेंद्रियादि जाति, वगैरह नामकर्म से व्यवस्थापित किये, तीव्र अनुभाव से स्थापित किये, उदय सन्मुख हुवे, स्वतः की उदीरना से उदय में आये और उपशान्त न हुवे, उन को अशुभ वर्ण, गंध,

सूत्र

परिणए जाव पंचिंदिय मीसा सरीर जाव परिणए, एवं जहा वेउव्वियं तहा वेउव्विय मीसगंपि ॥ णवरं देव , नेरइयाणं अपज्जत्तगाणं सेसाणं पज्जत्तगाणं तहेव जाव नो पज्जत्ता सव्वट्ठ सिद्ध अणुत्तरोववाइय जाव परिणए, अपज्जत्ता सव्वट्ठ सिद्ध अणुत्तरोववाइयदेव पंचिंदिय वेउव्विय मीसा सरीर कायप्पओग परिणए ॥ १७ ॥ जइ आहारग सरीर कायप्पओग परिणए किं मणुस्साहारग सरीर कायप्पओग परिणए, अमणुस्साहारग जाव परिणए, एवं जहा ओगाहण संठाणे जाव इड्डिपत्त पमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्ता संखिज्जवासाउय जाव परिणए, नो अणिड्डिपत्ता जाव परिणए जइ आहारग मीसा सरीर कायप्पओग परिणए किं मणुस्स आहारग मीसा सरीर जाव परिणए ? एवं जहा आहारगं तहेव मीसगंपि निरवसेसं भाणियव्वं ॥ १८ ॥

भावार्थ

अन्य सब के पर्याप्ता में वैक्रय मीश्र शरीर है. ॥ १७ ॥ यदि आहारक शरीर काय प्रयोग परिणत है तो क्या मनुष्य आहारक शरीर काय प्रयोग परिणत है, या मनुष्य सिवाय अन्य आहारक शरीर काय प्रयोग परिणत है ? अहो गौतम ! यह शरीर संख्यात वर्ष के आयुष्य वाले पर्याप्त सम्यग्दृष्टि, प्रमत संयति और ऋद्धिवंत पुरुष को होता है. इनगुनोंसे विपरीत गुणों वाले को नहीं होता है. आहारक शरीर जैसे

मत्तरसमस्स वितिओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ २ ॥

सेलेसि पडिवण्णएणं भंते ! अणगारे सयासमियं एयति वेयति जाव तंतं भावं परिणमइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ णण्णत्थेगेणं परप्पओगेणं ॥ १ ॥ कइविहाणं भंते ! एयणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा एयणा पण्णत्ता, तंजहा दव्वेयणा, खेत्तेयणा, कालेयणा, भवेयणा, भावेयणा ॥ २ ॥ दव्वेयणाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा णेरइयदव्वेयणा तिरिक्खमणुस्सदेव दव्वे-

भावार्थ

यावत् कंपना का ज्ञान नहीं होता है इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् रहने में समर्थ नहीं है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं, यह सतरहवा शतक का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १७ ॥ २ ॥

दूसरे उद्देश के अंत में रूपी अरूपी का कथन किया, अब इस में कंपना स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! शैलेशी प्रतिपन्न अनगार सदैव क्या कंपते हैं, विशेष कंपते हैं यावत् उस भाव को क्या परिणमते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है, मात्र परप्रयोग से कंपना होती है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! कंपना के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कंपना के पांच भेद कहे हैं जिनके नाम १ द्रव्य कंपना, २ क्षेत्र कंपना ३ काल कंपना ४ भव कंपना और ५ भाव कंपना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य कंपना के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य कंपना के चार भेद कहे हैं १ नारकी द्रव्य

सूत्र

... शरीर जाव परिणए, एवं जहा वेउव्वियं तहा वेउव्विय परिणएवा, अपज्जत्ता सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइय जाव कम्म सरीर मीसापरिणएवा ॥ २० ॥ जइ वीससा परिणए किं वण्ण परिणए, गंधपरिणए, रसपरिणए, फासपरिणए, संठाणपरिणए ? गोयमा ! वण्णपरिणएवा जाव संठाणपरिणएवा ॥ जइ वण्णपरिणए किं कालवण्णपरिणए नीलवण्ण जाव सुक्किलवण्णपरिणए ? गोयमा ! कालवण्णपरिणएवा जाव सुक्किलवण्णपरिणएवा । जइ गंधपरिणए किं सुब्भिगंध परिणए दुब्भिगंध परिणए ? गोयमा ! सुब्भिगंधपरिणएवा, दुब्भिगंधपरिणएवा ॥ जइ रसपरिणए किं तित्तरसपरिणए पुच्छा ? गोयमा ! तित्तरस परिणए जाव महुररस परिणएवा ॥ जइ फासपरिणए किं कक्खड फासपरिणए जाव लुक्खफास परिणए ? गोयमा ! कक्खड फासपरिणएवा जाव लुक्खफास परिणएवा, ॥ जइ संठाणपरिणए पुच्छा ? गोयमा ! परिमंडल संठाण परिणए जाव आययसंठाण परिणएवा ॥

भावार्थ

विशेष मीश्र परिणत का जानना ॥ २० ॥ यदि वीससा [ स्वभाव ] परिणत है तो क्या वर्ण, गंध, रस, स्पर्श व संठाण परिणत है ? अहो गौतम ! वर्ण परिणत यावत् संठाण परिणत है, [illegible] परिणत, गंध में दोनों गंध, [illegible]

**शब्दार्थ** ए० एकान्त बा० अज्ञानी भं० भगवन् म० मनुष्य कि० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच का आ० आयुष्य प० बांधे म० मनुष्य का आ० आयुष्य प० बांधे दे० देव का आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उपजे ति० तिर्यंच का आ० आयुष्य कि० करके ति० तिर्यंच में उ० उपजे म० मनुष्य का आ० आयुष्य कि० करके म० मनुष्य में उ० उपजे दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उपजे गो० गौतम ए० एकान्त बा० अज्ञानी म० मनुष्य

**सूत्र** एगंत बालेणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ, तिरिआउयं पकरेइ, मणुआउयं पकरेइ, देवाउयं पकरेइ, नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जइ, मणुयाउयं किच्चा मणुएसु उववज्जइ, देवाउयं किच्चा देव-

**भावार्थ** सातवे उद्देशे में गर्भ की वक्तव्यता कही. गर्भ आयुष्य से होता है इसलिये आगे आयुष्य संबंधि प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! एकान्त बाल ( मिथ्यात्वी ) मनुष्य क्या नरक के आयुष्य का बंध करता है, मनुष्य के आयुष्य का बंध करता है, तिर्यंच के आयुष्य का बंध करता है, या देव के आयुष्य का बंध करता है ! और नरक के आयुष्य का बंध कर के क्या नरक में उत्पन्न होता है, तिर्यंच के आयुष्य का बंध कर के तिर्यंच में उत्पन्न होता है, मनुष्य के आयुष्य का बंधकर के मनुष्य में उत्पन्न होता है या देव

किं सच्चमण पओगपरिणया, किं असच्चमण पओगपरिणया, किं सच्चामोसमणप्पओगपरिणया, किं असच्चामोसमणप्पओगपरिणया ? गोयमा ! सच्चमणप्पओगपरिणयावा, जाव असच्चामोसमणप्पओगपरिणयावा; अहवा एगे सच्चमणप्पओगपरिणए, एगे मोसमणप्पओगपरिणए, अहवा- एगे सच्चमणप्पओगपरिणए, एगे सच्चामोसमणप्पओगपरिणए, अहवेगेसच्चमणप्पओगपरिणए, एगे असच्चामोसमणप्पओगपरिणए, अहवेगे मोसमणप्पओगपरिणए, एगेसच्चामोसमणप्पओग परिणए, अहवेगे मोसमणप्पओग परिणए, एगे असच्चामोसमणप्पओग परिणए, अहवेगे सच्चामोसमणप्पओगपरिणए, एगेअसच्चामोसमणप्पओग परिणए; ॥ २२ ॥ जइ सच्च-

वचन व काय प्रयोग परिणत है अथवा एक मन प्रयोग, एक वचन प्रयोग व एक मन प्रयोग एक काय प्रयोग व एक वचन प्रयोग एक काय प्रयोग परिणत है. यदि मन प्रयोग परिणत है तो क्या सत्य मन, असत्य मन, मिश्र मन व व्यवहार मन प्रयोग परिणत है ! अहो गौतम ! सत्य मन प्रयोग परिणत यावत् व्यवहार मन प्रयोग परिणत है. अथवा एक सत्य मन, एक असत्य मन, एक सत्य मन एक सत्यमृषा, एक सत्य मन, एक व्यवहार मन, एक असत्य मन, एक मिश्र मन, एक असत्य मन एक व्यवहार मन, अथवा

संठाण परिणया ॥ २३ ॥ तिण्णि भंते ! दव्वा किं पओग परिणया मीसापरिणया, वीससापरिणया ? गोयमा ! पओगपरिणया, मीसापरिणया, वीससा परिणया, अहवा- एगे पओग परिणए, दोमीसा परिणया, अहवेगे पओगपरिणए दोवीससा परिणया, अहवा- दोपओग परिणया एगे मीसापरिणए, अहवा- दोपओग परिणया, एगे वीससा- परिणए अहवा- एगे मीसापरिणए दो वीससा परिणया, अहवा- दोमीसापरिणया एगे वीससापरिणए अहवा- एगे पओग परिणए, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥ २४ ॥ जइ पओगपरिणया किं मणप्पओगपरिणया, वयप्पओगपरिणया, कायप्प-

संस्थान परिणत यावत् आयत संस्थान परिणत जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! क्या तीन पुद्गल प्रयोग परिणत, मीश्र परिणत व वीस्रसा परिणत हैं ? अहो गौतम ! प्रयोग, मीश्र व वीस्रसा तीनों परिणत हैं अथवा एक प्रयोग परिणत दो मीश्र परिणत, एक प्रयोग परिणत दो वीस्रसा परिणत, दो प्रयोग परिणत, एक मीश्र परिणत, दो प्रयोग परिणत एक वीस्रसा परिणत, एक मीश्र दो वीस्रसा परिणत दो मीश्र एक वीस्रसा और एक प्रयोग एक मीश्र व एक वीस्रसा परिणत हैं ॥ २४ ॥ यदि प्रयोग परिणत हैं तो क्या मन प्रयोग परिणत वचन प्रयोग परिणत व काया प्रयोग परिणत हैं ? अहो गौतम ! इस में एक संयोगी तीन, तीन संयोगी भांगे कहना. यदि मन प्रयोग

शब्दार्थ

क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव ग० गुरुत्व को ह० शीघ्र आ० आते हैं गो० गौतम पा० प्राणातिपात से मु० मृषावाद से अ० अदत्तादान मे० मैथुन प० परिग्रह को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ पे० राग दो० द्वेष क० कलह अ० कलंक चढाना पे० चुगली र० रति अ० अरति प० परपरिवाद मा० कपट मि० मिथ्यादर्शन शल्य ए० ऐसे ख० निश्चय जी० जीव ग० गुरुत्व को ह० शीघ्र आ० आते हैं ॥ १ ॥ भं० भगवन् जी० जीव ल० लघुत्व ह० शीघ्र आ० आते हैं गो० गौतम पा० प्राणातिपात

सूत्र

कहणं भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवाएणं, मुसावाएणं, आदिन्न, मेहुण, परिग्गह, कोह, माण, माया, लोह, पेज्ज, दोस, कलह, अब्भक्खाण, पेसुन्न, रति, अरति, परपरिवाए, मायामोस, मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥ १ ॥ कहणं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ?

भावार्थ

आठवे उद्देशे के अंत में वीर्य का वर्णन किया है. और जीव वीर्य से भारी होता है इसलिये आगे गुरुत्व का अधिकार चलता है. अहो भगवन् ! अधोगति गमनरूप गुरुत्व किस तरह से जीव प्राप्त करे? अहो गौतम ! १ प्राणातिपात-जीव का अतिपात से, २ मृषावाद-असत्य बोलने से ३ अदत्तादान-चोरी करने से ४ मैथुन से ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान-कलंक चढाने से १४ पैशुन्य-चुगली करने से १५ रति अरति १६ परपरिवाद

तंजहा—जाइआसीविसाय, कम्म आसीविसाय, ॥ १ ॥ जाइ आसीविसाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—विच्छुयजाइ आसीविसे, मंडुक्कजाइ आसीविसे उरगजाइ आसीविसे मणुस्सजाइ आसीविसे, ॥ २ ॥ विच्छुयजाइ आसीविसस्सणं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! पभूणं विच्छुय जाइ आसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं

शीविष क० कितनेप्रकारका गो० गौतम च० चारप्रकारका वि० वृश्चिक जा० जाति आशीविष मं० मेंडूक जाति आशीविष उ० सर्पजाति आशीविष म० मनुष्य जा० जाति आशीविष ॥ २ ॥ वि० वृश्चिक जा० जाति आशीविषका भं० भगवन् के० कितना वि० विषय प० प्ररूपा गो० गौतम प० समर्थ वि० वृश्चिक जा० जाति आशीविष अ० अर्धभरत प० प्रमाणमात्र बों० शरीर वि० विष वि०

से सहस्रार देवलोक में देवतापने उत्पन्न होवे और वहां अपर्याप्तावस्था में आशीविष होवे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जाति आशीविष के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! जाति आशीविष के चार भेद कहे हैं १ वृश्चिक जाति आशीविष २ मेंडक जाति आशीविष ३ सर्प जाति आशीविष व ४ मनुष्य जाति आशीविष ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! वृश्चिक जाति आशीविष का कितना विषय कहा ? अहो गौतम ! अर्ध

जा० जाति आशीविष ए० ऐसे न० विशेष म० समय खे० क्षेत्र प० प्रमाणमात्र बों० शरीर वि० विषमे वि० विषपरिगत से० शेष तं० तैसे जा० यावत क० करेंगे ॥ ३ ॥ सरल शब्दार्थ ॥ ४ ॥

तिवा ॥ मणुस्सजाइ आसीविसस्सवि एवंचेव, नवरं समयखेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं सेसं तंचेव जावकरिस्संतिवा ॥ ३ ॥ जइ कम्मआसीविसे किं नेरइय कम्म आसीविसे, तिरिक्ख जोणिय कम्म आसीविसे, मणुस्स कम्म आसीविसे, देवकम्मआसीविसे ? गोयमा ! नो नेरइयकम्म आसीविसे, तिरिक्ख जोणिय कम्म आसीविसे, मणुस्स कम्म आसीविसे, देव कम्मआसीविसे ॥ जइ तिरिक्ख जोणिय कम्म आसीविसे, किं एगिंदिय तिरिक्ख जोणिय कम्मासीविसे, जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिय कम्मासीविसे ? गोयमा ! नो एगिंदिय तिरिक्ख जोणिय कम्म

शरीर को अपने विष से विषमय बनाने को समर्थ है, और मनुष्य जाति आशीविष समय क्षेत्र (अढाई द्वीप) प्रमाणवाला शरीर को विष से विषमय बनाने को समर्थ है परंतु ऐसा किसीने किया नहीं, करते नहीं व करेंगे नहीं ॥ ३ ॥ यदि कर्म आशीविष है तो क्या नारकी कर्म आशीविष, तिर्यंच कर्म आशीविष, मनुष्य कर्म आशीविष व देव कर्म आशीविष है ?

शब्दार्थ

पार ॥ ३ ॥ स० सातवा उ० आकाशांतर कि० क्या ग० गुरु ल० लघु ग० गुरुलघु अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु नो० नहीं गुरुलघु अ० अगुरुलघु स० सातवा त० तनुवात कि० क्या गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु ग० गुरुलघु नो० नहीं अगुरुलघु ए० ऐसे स० सातवा घ० घनवात स० सातवा घ० घनोदधि स० सातवी पु० पृथ्वी उ० आकाशांतर स० सर्व ज० जैसे स०

सूत्र

वीईवयंति,समत्था चत्तारि अवसत्था चत्तारि॥ ३ ॥सत्तमेणं भंते ! उवासंतरे किं गरुए, लहुए, गरुय लहुए, अगुरुय लहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, नो गरुय लहुए, अगरुय लहुए सत्तमेणं भंते ! तणुवाए किं गरुए, लहुए, गरुयलहुए, अगरुयलहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, गरुय लहुए, नो अगरुय लहुए एवं सत्तमे

भावार्थ

नहीं करना ये चार बोल असमर्थ कहाये गये हैं ॥ ३ ॥ जीव के गुरुत्व लघुत्व से आकाशादिक का गुरुत्व लघुत्व कहते हैं. १ अहो भगवन् ! सातवी नरककी नीचेका आकाशान्तर क्या गुरुत्व, लघुत्व, गुरुलघुत्व, व अगुरुलघुत्ववाला है ? अहो गौतम ! सातवी नरक का आकाशान्तर गुरु, लघु व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरुलघु है. अहो भगवन् ! सातवी नरक की नीचे का तनुवात क्या गुरु, लघु, गुरुलघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! सातवा तनुवात गुरु नहीं है, लघु नहीं है परंतु गुरु लघु है और अगुरु लघु नहीं है. ऐसे ही सातवा घनवात, सातवा घनोदधि, सातवी पृथ्वी व सब आकाशान्तर को सातवा

गोयमा ! सोहम्म कप्पोवग वेमाणिय देव कम्मासीविसेवि जाव सहस्सार कप्पोवग वेमाणिय देव कम्मासीविसेवि, नो आणय कप्पोवग वेमाणिय देव कम्मासीविसे जाव नो अच्चुयकप्पोवग वेमाणिय देव कम्मासीविसे ॥ जइ सोहम्म कप्पोवग वेमाणिय देव कम्मासीविसे किं पज्जत्ता सोहम्मकप्पोवग जाव कम्मासीविसे अपज्जत्ता सोहम्म जाव कम्मासीविसे ? गोयमा ! नो पज्जत्ता सोहम्म कप्पोवग वेमाणिय देव कम्मासीविसे, अपज्जत्ता सोहम्म कप्पोवग वेमाणिय देव कम्मासीसे । एवं जाव नो पज्जत्ता सहस्सार कप्पोवग वेमाणिय देव कम्मासीविसे, अपज्जत्ता सहस्सार कप्पोवग जाव कम्मासीविसे ॥ ४ ॥ दसट्ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ

कल्पोत्पन्न यावत् अच्युत कल्पोत्पन्न वैमानिक देव कर्माशीविष है ? अहो गौतम ! सौधर्म यावत् सहस्रार कल्पोत्पन्न कर्माशीविष है परंतु आणत, प्राणत, आरण व अच्युत कल्पोत्पन्न कर्माशीविष नहीं है. यदि सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिक देव कर्म आशीविष है तो क्या पर्याप्त है या अपर्याप्त है ? अहो गौतम ! अपर्याप्त सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिक देव कर्म आशीविष है परंतु पर्याप्त नहीं है. ऐसे ही सहस्रार तक में अपर्याप्त कल्पोत्पन्न वैमानिक देव कर्म आशीविषका जानना ॥४॥ छद्मस्थ सर्व भावसे दश स्थान को नहीं

अदिण्णादाणेणवि ॥ मेहुणेणवि ॥ परिग्गहेणवि ॥ एवं एए पंचदंडगा ॥ जं समएणं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ, एवं तहेव जाव वत्तव्वं सिया, जाव वेमाणियाणं ॥ एवं जाव परिग्गहेणं ॥ एवं एएवि पंच-दंडगा ॥ जं देसेणं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जंति जाव परिग्गहेणं, जं पएसेणं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जंति सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ एवं तहेव दंडओ ॥ एवं जाव परिग्गहेणं ॥ एवं एए वीसदंडगा ॥ २ ॥ जीवाणं भंते ! किं अत्तकडे दुक्खे, परकडे दुक्खे, तदुभयकडे दुक्खे ? गोयमा ! अत्तकडे

भावार्थ करना ऐसे ही मृषावाद का जानना ऐसे ही अदत्तादान, मैथुन व परिग्रह का जानना. ॥२॥ अहो भगवन् ! एक समय में जीवों को प्राणातिपात से जो क्रिया होती है वह क्रिया स्पर्शी हुई होती है या विना स्पर्शी हुई होती है ? अहो गौतम ! पूर्वोक्त प्रकार सब वैमानिक तक कहना. ऐसे ही मृषावाद यावत् परिग्रह का कहना. अहो भगवन् ! एक देश से जीवों को प्राणातिपात से जो क्रिया होती है वह क्रिया यावत् परिग्रह पर्यंत कहना. एक प्रदेश से प्राणातिपात से जो क्रिया होती है, वह क्रिया क्या स्पर्शी हुई होवे या विना स्पर्शी हुई होवे ? इस का भी पूर्वोक्त जैसे जानना. ऐसे ही परिग्रह पर्यंत कहना. यों बीस दंडक का

पं० पांचप्रकारका आ० मति ज्ञान सु० श्रुतज्ञान ओ० अवधि ज्ञान म० मनःपर्यव ज्ञान के० केवल ज्ञान से० वह किं० कैसे आ० मतिज्ञान च० चारप्रकारका उ० अवग्रह ई० ईहा अ० अवाय धा० धारणा ए० ऐसे रा० रायप्रश्रेणी में जो० जो ना० ज्ञान के भे० भेद त० तैसे इ० यहां भा० कहना जा० यावत् के० केवलज्ञान ॥ ६ ॥ अ० अज्ञान भं० भगवन् क० कितनाप्रकारका गो० गौतम ति० तीन

तंजहा - आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे, केवलनाणे ॥ से किं तं आभिणिबोहिय नाणे ? आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे प० तंजहा- उग्गहे, ईहा, अवाय, धारणा. एवं जहा रायप्पसेणीए, जो नाणाणं भेओ तहेव इह भाणियव्वो, जाव से त्तं केवल नाणे ॥ ६ ॥ अण्णाणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

अहो भगवन् ! ज्ञान के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! ज्ञान के पांच भेद कहे हैं. १ मति ज्ञान २ श्रुत ज्ञान, ३ अवधि ज्ञान, ४ मनःपर्यव ज्ञान और ५ केवल ज्ञान आभिनिबोधिक ( मति ) ज्ञान क्या है ? मति ज्ञान के चार भेद कहे हैं ? अवग्रह सो सामान्यपना से वस्तु को ग्रहण करना २ ईहा सो ग्रहण किये हुवे को विचारना ३ अवाय सो ग्रहण किये हुवे को निश्चित करना और ४ धारना उक्त ग्रहण किये हुवे को धार कर रखना. इन में अवग्रह के दो भेद अर्थावग्रह व व्यंजनावग्रह इत्यादि पांचों ज्ञान का कथन रायप्रसेणी सूत्र से जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! अज्ञान के कितने भेद कहे हैं ? अहो



सूत्र

भावार्थ

[illegible] नहीं [illegible] गुरुलघु [illegible] नहीं [illegible] अगुरुलघु [illegible] गुरुलघु [illegible] नारकी

[illegible] पडुच्च [illegible], नो गुरुयलहुया, नो अगुरुयलहुया। [illegible] कार्मण पडुच्च नो गुरुया नो लहुया नो गुरुयलहुया अगुरुयलहुया। [illegible], एवं जाव [illegible]। [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] जाव [illegible]-

[illegible] अगुरुलघु नहीं है [illegible] नहीं है परंतु अगुरु [illegible] अगुरुलघु है. [illegible] मानना. [illegible] अपेक्षा ग्रहण [illegible] अपेक्षा [illegible] अपेक्षा [illegible]

...संस्थित आ० यावत् स० सन्निवेश संस्थित द्वी० द्वीपसंस्थित म० समुद्र संस्थित वा० क्षेत्रसंस्थित वा० वर्षधरसंस्थित प० पर्वतसंस्थित रु० वृक्षसंस्थित थू० स्तूपसंस्थित ह० अश्वसंस्थित ग० गजसंस्थित न० नरसंस्थित किं० किंनर संस्थित किं० किंपुरुषसंस्थित म० महोरगसंस्थित गं० गांधर्वसंस्थित उ० वृषभसंस्थित प० पशु प० पसय वि० विहग व० वानर णा० नानासंस्थान

अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं जहा नंदिए जाव चत्तारिय वेदा संगोवंगा सेत्तं सुय-अण्णाणे ॥ सेकिंतं विभगनाणे ? अणेगविहे प० तंजहा गामसंठिए, नगरसंठिए, जाव सन्निवेस संठिए; दीवसंठिए, समुद्दसंठिए, वाससंठिए वासहर संठिए, पव्वयसंठिए, रुक्खसंठिए, थूभसंठिए, हयसंठिए,गयसंठिए,नरसंठिए,किं नरसंठिए,किं पुरिस संठिए, महोरग संठिए, गंधव्व संठिए, उसभ संठिए, पसुपसयविहगवानरणाणा संठाण संठिए

होता है क्यों कि मन व चक्षु दोनों ही दूर रहे हुवे पदार्थ को प्रकाशते हैं इस से अर्थावग्रह के छ भेद और व्यंजनावग्रह के चार भेद कहे हैं. श्रुत अज्ञान किस को कहते हैं ? जो मिथ्यादृष्टि से रामायण, महाभारत इत्यादि श्रवण करे, विचारे, निश्चय करे व धारण करे अथवा ऋग्, यजुः साम व अथर्वण वेद इन चार वेद और शिक्षादि छ उपांग उस की व्याख्या और स्वच्छंदपना से बनाये हुए शिल्पनि-मित्तादिक सो श्रुत अज्ञान. विभंग ज्ञान किस को कहते हैं ? विभंग ज्ञान के अनेक भेद कहे हैं. ग्राम के

सूत्र

दुक्खं, णो परकडं दुक्खं, णो तदुभयकडं दुक्खं, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥ जीवाणं भंते ! किं अत्तकडं दुक्खं वेदेंति परकडं दुक्खं वेदेंति तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति ? गोयमा ! अत्तकडं दुक्खं वेदेंति, णो परकडं दुक्खं [illegible], णो तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ५ ॥ जीवाणं [illegible] ! किं अत्तकडा वेदणा, परकडा वेदणा तदुभयकडा वेदणा ? गोयमा ! अत्त-कडा वेदणा णो परकडा वेदणा, णो तदुभयकडा वेदणा ॥ एवं जाव वेमाणियाणं

भावार्थ

मानना. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीवों को क्या स्वतः का किया हुवा दुःख है परका किया हुवा दुःख है या उभय का किया हुवा दुःख है ? अहो गौतम ! जीवों को स्वतः का किया हुवा दुःख है परंतु अन्य का किया व उभय का किया हुवा दुःख नहीं है ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जीव आत्मकृत दुःख वेदते हैं परकृत दुःख वेदते हैं या उभयकृत दुःख वेदते हैं ? अहो गौतम ! जीव आत्मकृत दुःख वेदते हैं परकृत व उभय कृत दुःख नहीं वेदते हैं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जीवों को क्या आत्मकृत वेदना, परकृत वेदना व उभयकृत वेदना है ? अहो भगवन् ! जीवों को आत्म कृत वेदना है परंतु परकृत व उभय कृत वेदना नहीं है ऐसे ही वैमानिक पर्यंत चौवीस

न मइअण्णाणी, सुय अण्णाणी, विभंगणाणी॥ ८ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं णाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि; जेणाणी ते नियमा तिण्णाणी, तंजहा आभिणिबोहियणाणी, सुयणाणी, ओहिणाणी, जे अण्णाणी ते अत्थेगइया दुअण्णाणी, अत्थेगइया तिअण्णाणी. एवं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ॥ असुरकुमाराणं भंते ! किं णाणी अण्णाणी? जहेव नेरइया तहेव तिण्णि णाणाणि नियमा, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए, एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवि काइयाणं भंते! किं णाणी अण्णाणी ? गोयमा ! नो णाणी

ही अज्ञानवाले और कितनेक मति, श्रुत व विभंग ऐसे तीन अज्ञान वाले हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी ज्ञानी या अज्ञानी हैं ? अहो गौतम ! नारकी ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं जो ज्ञानी हैं वे निश्चय ही मति श्रुत व अवधि ऐसे तीन ज्ञान वाले हैं और जो अज्ञानी हैं वे कितनेक मति व श्रुत ऐसे दो अज्ञान वाले हैं और कितनेक मति श्रुत अज्ञान व विभंग ज्ञान ऐसे तीन अज्ञान वाले हैं ऐसे ही असुरकुमारादि दश भवनपति में तीन ज्ञान की नियमा व तीन अज्ञान की भजना हैं पृथ्वीकायिकादि पांच स्थावर में ज्ञान नहीं है मात्र मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान की नियमा है बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय ज्ञानी व अज्ञानी हैं. जो ज्ञानी हैं वे निश्चयही मति व श्रुत ज्ञान वाले हैं और जो अज्ञानी हैं वे निश्चयही मति व श्रुत अज्ञान वाले हैं. तिर्यंच पंचेन्द्रिय ज्ञानी व अज्ञानी

गु० गुरु लो० लघु नो० नहीं गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु ॥ ७ ॥ स० समय क० कार्माण
वर्गणा च० चौथा प० पद भं० ॥ ८ ॥ क० कृष्ण ले० लेश्या भं० भगवन् किं० क्या ग० गुरु जा० यावत् अ०
अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु गु० गुरु लघु अ० अगुरु लघु से० वह के० कैसे द० द्रव्य
लेश्या प० प्रत्यय त० तीसरापद भा० भाव लेश्या प० प्रत्यय च० चौथा पद ए० ऐसे जा० यावत् सु० शुक्ल

दूए अगुरुयलहुए ॥७॥ समया कम्माणियचउत्थपएणं, ॥८॥ कण्हलेसाणं भंते ! किं
गरुया जाव अगुरुयलहुया ? गोयमा ! नोगरुया, नोलहुया, गरुयलहुयावि,
अगुरुयलहुयावि । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्वलेसं पडुच्च तइयपएणं, भावलेसंपडुच्च

नहीं, लघु नहीं गुरुलघु नहीं परंतु अगुरुलघु है ॥ ७ ॥ काल-अमूर्त होने से और कर्मवर्गणा के पुद्गल
अगुरु लघु होते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या क्या गुरु, लघु यावत् अगुरु लघु है ? गौतम
कृष्णलेश्या गुरु नहीं, लघु नहीं, गुरुलघु, व अगुरु लघु है. अहो भगवन् किस कारन से कृष्ण लेश्या गुरु लघु
व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! द्रव्य लेश्या की अपेक्षा से गुरुलघु है क्यों की द्रव्य लेश्या उदारिक शरीर
के वर्ण वाली है और उदारीक शरीर गुरुलघु है इसलिये कृष्ण लेश्या द्रव्य लेश्या की अपेक्षा से गुरु लघु
जानना और भाव लेश्या की अपेक्षा से अगुरुलघु जानना क्यों की भाव लेश्या जो जीव परिणाम वह
अमूर्त होने से अगुरु लघु होते हैं इसलिये भाव लेश्या की अपेक्षा से कृष्ण लेश्या अगुरुलघु जानना जैसे

जीवा किण्णाणी अण्णाणी ? गोयमा ! जहा पुढविकाइया ।-बादराणं भंते ! जीवा किण्णाणी अण्णाणी ? जहा सकाइया, नो सुहुमा नो बादराणं भंते ! जीवा ? जहा सिद्धा ॥ १३ ॥ पज्जत्ताणं भंते ! जीवा किण्णाणी अण्णाणी ? जहा सकाइया । पज्जत्ताणं भंते ! नेरइया किण्णाणी ? तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा नियमा, जहा नेरइया एवं जाव थणिय कुमारा। पुढविकाइया जहा एगेंदिया, एव जाव चउरिंदिया ॥ पज्जत्ताण भंते ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया किण्णाणी अण्णाणी ? तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए, मणुस्सा जहा सकाइया, वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा नेरइया ॥ अपज्जत्तगाणं भंते ! जीवा किण्णाणी अण्णाणी ?

सूक्ष्म जीव ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं ? अहो गौतम ! सूक्ष्म जीव में मात्र पृथ्वीकायिक जैसे दो अज्ञान हैं. बादर जीवों में पांच ज्ञान व तीन अज्ञान की भजना है. नो सूक्ष्म नो बादर में केवल ज्ञान की नियमा है ॥ १३ ॥ अब पर्याप्त द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! पर्याप्त जीव क्या ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त जीव ज्ञानी भी हैं व अज्ञानी भी हैं. उन में पांच ज्ञान व तीन अज्ञान की भजना है. पर्याप्त नारकी में तीन ज्ञान व तीन अज्ञान की नियमा है. असंज्ञी अपर्याप्त-

शब्दार्थ गु० गुरु नो० नहीं ल० लघु नो० नहीं गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु ॥ ७ ॥ स० समय क० कार्माण वर्गणा च० चौथा प० पद में॥ ८ ॥ क० कृष्ण ले० लेश्या भं०भगवन् किं०क्या ग० गुरु जा०यावत् अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहींलघु गु० गुरु लघु अ० अगुरु लघु से० वह के० कैसे द०द्रव्य लेश्या प० प्रत्यय त० तीसरापद भा० भाव लेश्या प० प्रत्यय च० चौथा पद ए० ऐसे जा०यावत् सु०शुक्ल

सूत्र हुए अगुरुयलहुए ॥७॥ समया कम्माणियचउत्थपएणं, ॥८॥ कण्हलेसाणं भंते ! किं गरुया जाव अगुरुयलहुया ? गोयमा ! नोगरुया, नोलहुया, गरुयलहुयावि, अगुरुयलहुयावि । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्वलेस्सं पडुच्च तइयपएणं, भावलेस्संपडुच्च

भावार्थ नहीं, लघु नहीं गुरुलघु नहीं परंतु अगुरुलघु है ॥ ७ ॥ काल-अमूर्त होने से और कर्मवर्गणा के पुद्गल अगुरु लघु होते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या क्या गुरु, लघु यावत् अगुरु लघु है ? गौतम कृष्णलेश्या गुरुनहीं, लघुनहीं, गुरुलघु, व अगुरु लघु है. अहो भगवन् किस कारन से कृष्ण लेश्या गुरु लघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! द्रव्य लेश्या की अपेक्षासे गुरुलघु है क्यों की द्रव्य लेश्या उदारिक शरीर के वर्ण वाली है और उदारीक शरीर गुरुलघु है इसलिये कृष्ण लेश्या द्रव्य लेश्या की अपेक्षा से गुरु लघु जानना और भाव लेश्या की अपेक्षा से अगुरुलघु जानना क्यों की भाव लेश्या जो जीव परिणाम वह अमूर्त होने से अगुरु लघु होते हैं इसलिये भाव लेश्या की अपेक्षा से कृष्ण लेश्या अगुरुलघु जानना जैसे

वेमाणियाणं तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा नियमा । नोपज्जत्तगनोअपज्जत्तगाणं भंते ! जीवा किण्णाणी अण्णाणी ? जहा सिद्धा ॥ १४ ॥ निरय भवत्थाणं भंते ! जीवा किण्णाणी अण्णाणी ? जहा निरयगइया ॥ तिरिय भवत्थाणं भंते ! जीवा किण्णाणी अण्णाणी ? तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए । मणुस्स भवत्था जहा सकाइया ॥ देव भवत्थाणं भंते ! जहा निरयभवत्था, अभवत्था ? जहा सिद्धा ॥ १५ ॥ भवसिद्धियाणं भंते ! जीवा किण्णाणी अण्णाणी ? जहा सकाइया,

भावार्थ

दो अज्ञान की नियमा. तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त में भी दो ज्ञान दो अज्ञान की नियमा. मनुष्य के अपर्याप्ता में तीन ज्ञान की भजना तीर्थंकरों को तीन ज्ञान होवे इस अपेक्षा से, और दो अज्ञान की नियमा वाणव्यंतर के अपर्याप्त में असंज्ञी उत्पन्न होने से तीन ज्ञान की नियमा, तीन अज्ञान की भजना. ज्योतिषी वैमानिक के अपर्याप्ता में तीन ज्ञान तीन अज्ञान की नियमा है. नो पर्याप्त नो अपर्याप्त में केवल ज्ञान की नियमा है ॥ १४ ॥ नरक भवस्थ में तीन ज्ञान की नियमा तीन अज्ञान की भजना. तिर्यंच भवस्थ में तीन ज्ञान तीन अज्ञानकी भजना. मनुष्य भवस्थ में पांच ज्ञान तीन अज्ञान की भजना. देव भवस्थ में तीन ज्ञान की नियमा तीन अज्ञान की भजना. अभवस्थ में केवल ज्ञान की नियमा ॥ १५ ॥ अब भव्यद्वार करते हैं. अहो भगवन् ! भवसिद्धिक क्या ज्ञानी है या अज्ञानी है ? अहो गौतम ! भवसिद्धिक ज्ञानी

सूत्र

पुढवीकाइओ सव्वपुढवीसु उववाइओ, एवं जाव ईसिप्पभार पुढवीकाइओ सव्वपुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहे सत्तमाए ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ७ ॥

आउकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए समोहइत्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए एवं जहा पुढवीकाइओ तहा आउकाइओवि, सव्वकप्पेसु जाव ईसिप्पभाराए तहेव उववाएयव्वो, एव जहा रयणप्पभा

भावार्थ

पृथ्वीकाया का उत्पन्न होना कहना. ऐसे ही जैसे सौधर्म पृथ्वीकायिक सब पृथ्वी में उत्पन्न होने का कहा वैसे ही यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वीकायिक सब पृथ्वी में जानना. यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सत्तरहवा शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ १७ ॥ ७ ॥

अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में अप्काय मारणांतिक समुद्घात करके सौधर्म देवलोक में उत्पन्न होने योग्य होवे वह क्या पहिले उत्पन्न होकर पीछे आहार करे अथवा पहिले आहार कर पीछे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे पृथ्वीकाया का कहा वैसे ही अप्काया का सब देवलोक यावत् [illegible] कहना. और जैसे रत्नप्रभा की अप्काया कही वैसे ही शर्करप्रभा यावत्

गोयमा ! पंचविहा प० तं० आभिणिबोहियणाणलद्धी जाव केवलणाणलद्धी ॥ अन्नाणलद्धीणं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! तिविहा प० तं० मइअण्णाणलद्धी सुयअण्णाणलद्धी, विभंग णाणलद्धी। दंसणलद्धीणं भंते ! कतिविहा प० ? गोयमा ! तिविहा प० तं० सम्मदंसणलद्धी, मिच्छादंसणलद्धी सम्मामिच्छा दंसणलद्धी। चरित्तलद्धीणं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा सामाइय चरित्तलद्धी, छेदोवट्ठावणियलद्धी, परिहारविसुद्धि चरित्तलद्धी, सुहुमसंपराय चरित्तलद्धी, अहक्खायलद्धी। चरित्ताचरित्तलद्धीणं भंते ! कइविहा प० गोयमा !

भावार्थ

भोग लब्धि ९ वीर्य लब्धि व १० इन्द्रिय लब्धि. ज्ञान लब्धि के पांच भेद मतिज्ञान लब्धि यावत् केवल ज्ञान लब्धि. अज्ञान लब्धि के तीन भेद मति अज्ञान लब्धि यावत् विभंग ज्ञान लब्धि. दर्शन लब्धि के तीन भेद समदर्शन लब्धि, मिथ्या दर्शन लब्धि व समामिथ्या दर्शन लब्धि. चारित्र लब्धि के पांच भेद सामायिक चारित्र लब्धि जो सावद्य विरतिरूप. इस के दो भेद १ इत्वर सो अल्प काल रहे. यह भरत इरवत क्षेत्र में प्रथम व अंतिम तीर्थंकरों के समय में आरोपित होता है. २ यावज्जीव का सो शेष बाइस तीर्थंकर के समय में व महाविदेह क्षेत्र में होता है. २ पूर्व संयम का व्यवच्छेद कर जिस की

भावार्थ

क० कात्यायन गोत्रीय ते० उनकी पास ह० शीघ्र आ० आया त० तब भ० भगवान् गो० गौतम खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय अ० नजदीक आ० आयाहुवा जा० जानकर खि० शीघ्र अ० उठकर खि० शीघ्र प० सन्मुख जाकर जे० जहां खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय ते० तहां उ० आकर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा व० बोले ह० अहो खं० खंदक सा० स्वागतम् सु० सुस्वागतं अ० योग्य आगमन सा० स्वागतम अ० योग्य आगमन से० यह तु० तुम को खं० खंदक सा० श्रावस्ती न० नगरी में पिं०

सूत्र

णं भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं अदूरमागयं जाणेत्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेइ २ त्ता, खिप्पामेव पच्चुगच्छइ पच्चुगच्छइत्ता जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी हंखंदया ! सागयं खंदया ! सुसागयं खंदया ! अणुरागयं खंदया ! सागयमणुरागयं खंदया ! सेणूणं तुमं खंदया, सावत्थीए णयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसा-

भावार्थ

स्कंदक परिव्राजक की सन्मुख गये, और सन्मुख जाकर स्कंदक परिव्राजक को ऐसा बोले अहो स्कंदक तुम्हारा आगमन श्रेष्ठ है, तुम्हारा आगमन अनुपम है, तुम्हारा आगमन शोभन व अनुपम है. अहो स्कंदक ! श्रावस्ती नगरी में श्री महावीर के वचन सुनने को रसिक पिंगलक नामक निर्ग्रंथने क्या ऐसे प्रश्नों पूछे थे कि अंत सहित लोक है, या अंत रहित लोक है, यावत् किस मरण से संसार की वृद्धि व हीनता

[illegible] जानते हैं, [illegible] मा.वी., मैं

[illegible] उसमें भवता
[illegible] सुविध करता भी
[illegible]
[illegible] महाराज! क्या ज्ञान संकेतात्मक होता है या बनता है!
[illegible] होता है परन्तु [illegible] नहीं है [illegible] होते हैं [illegible] विवेक [illegible]
[illegible] इन्द्रियों [illegible] होते हैं विवेक
[illegible] विवेक [illegible] होते हैं [illegible] ज्ञान ही बनता है।
[illegible] करते हैं ज्ञान के [illegible] विवेक [illegible]
[illegible] है [illegible] विवेक [illegible] ज्ञान [illegible] है [illegible]
ज्ञान के [illegible] बनता है [illegible] महाराज! [illegible] क्या होती है

आउकाइआ तहा अहे सत्तमा पुढवी आउकाइओ उववाएयव्वो जाव ईसिप्पभाराए सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ८ ॥

आउकाइएणं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए समोहएत्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलएसु आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए सेणं भंते ! सेसं तंचेव एवं जाव अहे सत्तमाए जहा सोहम्मआउकाइओ एवं जाव ईसिप्पभारा आउकाइओ जाव अहे सत्तमाए उववातेयव्वो सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमसयस्स णवमो

भावार्थ सातवी तमतमा पृथ्वी यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का आठवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ८ ॥

अहो भगवन् ! सौधर्म देवलोक में अप्कायिक मरणांतिक समुद्घात करके इस रत्न प्रभा पृथ्वी के घनोदधि के वलय में उत्पन्न होने योग्य होवे तो वह वहां क्या उत्पन्न होकर आहार करे या आहार करके उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे पहिले कहा वैसे ही यहां जानना. यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी का. जैसे सौधर्म देवलोक का कहा वैसे ही ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का नीचे की सातवी पृथ्वी में उत्पन्न होने तक कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का नववा

पुच्छा ? गोयमा ! णाणी नो अण्णाणी, अत्थेगइया तिण्णाणी अत्थेगइया चउणाणी, जे तिणाणी ते आभिणिबोहियणाणी, सुयणाणी, मणपज्जवणाणी, जे चउणाणी ते आभिणिबोहियणाणी, सुयणाणी, ओहिणाणी, मणपज्जवणाणी । तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा ? णाणीवि, अण्णाणीवि मणपज्जवणाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । केवलणाणलद्धियाणं भंते ! जीवा किंणाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णाणी नो अण्णाणी, नियमा एग णाणी केवलणाणी तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि, केवलणाणवज्जाइं

ऐसे तीन ज्ञान अथवा मति श्रुत अवधि व मनःपर्यव
अवधिवाले मति, श्रुत, अवधि अथवा मति श्रुत मनःपर्यव ऐसे तीन ज्ञान अथवा मति श्रुत केवल ज्ञान लब्धिक ऐसे चार ज्ञानवाले हैं इस के अलब्धिक जीवों में चार ज्ञान तीन अज्ञान की भजना है केवल ज्ञान लब्धिक जीवों में एक केवलज्ञान की नियमा है इस के अलब्धिक में केवलज्ञान छोडकर चार ज्ञान व तीन अज्ञान की भजना है. अज्ञान लब्धि वाले जीवों में ज्ञान नहीं है परंतु अज्ञान है इन में तीन अज्ञान की भजना है इस के अलब्धिक में पांच ज्ञान की भजना है जैसे अज्ञान की लब्धि अलब्धि कही वैसे ही मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान की लब्धि अलब्धि जानना. विभंग ज्ञान की लब्धि के जीवों में तीन अज्ञान

सूत्र

पंचनाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । दाणलद्धियाणं पंचनाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा ! नाणी नो अण्णाणी, नियमा एग-नाणी-केवल नाणी ॥ एवं जाव वीरियलद्धिया अलद्धिया भाणियव्वा बालवीरिय लद्धियाणं तिण्णि नाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं पंचनाणाइं भयणाए ॥ पंडिय वीरिय लद्धियाणं पंचनाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं नाणाइं अण्णाणाइं तिण्णिय भयणाए ॥ बालपंडिय वीरिय लद्धियाणं तिण्णि नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं पंचनाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । इंदिय लद्धियाणं भंते ! जीवा किंणाणी अण्णाणी ? गोयमा ! चत्तारि नाणाइं तिण्णिय अण्णाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा ! नाणी नो अण्णाणी नियमा एगनाणी-केवल नाणी ॥ सोइंदिय लद्धियाणं जहा इंदिय लद्धिया तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा !

भावार्थ

इन्द्रिय के लद्धिया में चार ज्ञान तीन अज्ञान की भजना इसके अलद्धिया में केवल ज्ञान की नियमा. क्योंकि अनेन्द्रिय केवल ज्ञानी ही होते हैं. श्रोत्रेन्द्रिय के लद्धिया में चार ज्ञान तीन अज्ञान की भजना उस के [illegible] मति श्रुति ऐसे दो ज्ञानवाले विकले-[illegible] के [illegible] को [illegible] ज्ञान व [illegible] को एक ज्ञान होता है.

सूत्र

उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ९ ॥

वाउकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउकाइत्ताए उववज्जित्तए सेणं जहा पुढवीकाइओ तहा वाउकाइओवि णवरं वाउकाइयाणं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तंजहा वेदणासमुग्घाए, जाव वेउव्वियसमुग्घाए, मारणांतिय समुग्घाएणं समोहणमाणे देसेणवा समोहए सेसं तंचेव जाव अहे सत्तमा समोहयाओ ईसिप्पभाराए उववाएयव्वो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्सय दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १० ॥

भावार्थ

उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ९ ॥

अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में वायुकाया मारणांतिक समुद्घात करके यावत् सौधर्म देवलोक में वायुकायापने उत्पन्न होने को योग्य है वगैरह सब पृथ्वीकाया जैसे कहना. विशेष में वायुकाया को चार समुद्घात कही. जिन के नाम. वेदना समुद्घात यावत् वैक्रेय समुद्घात. मारणांतिक समुद्घात करते देश से समुद्घात करे शेष वैसे ही जानना यावत् सातवी पृथ्वीतक. ईषत्प्राग्भार में से उत्पन्न होने का. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह सत्तरहवा शतक का दसवा उद्देशा समाप्त हुआ. ॥ १७ ॥ १० ॥

चत्तारि नाणाइं भयणाए। एवं सुयनाण सागारोवउत्तावि, ओहिनाण सागारोवउत्ता जहा ओहिनाण लद्धिया। मणपज्जवनाण सागारोवउत्ता जहा मणपज्जवनाण लद्धिया॥ केवलणाणसागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया॥ मइअण्णाण सागारोवउत्ताणं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए, एवं सुयअण्णाणसागरोवउत्तावि, विभंगनाणसागरोवउत्ताणं तिण्णि अण्णाणाइं नियमा। अणागारोवउत्ताण भंते! जीवा किण्णाणी अण्णाणी? पंचणाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। एवं चक्खुदंसण अचक्खुदंसण अणागारोवउत्तावि, नवरं चत्तारि नाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। ओहिदंसण अणागारोवउत्ताणं पुच्छा? गोयमा! नाणीवि, अण्णाणीवि, जे नाणी ते अत्थेगइया तिनाणी, अत्थेगइया चउनाणी, जे तिनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी,

भावार्थ ज्ञान श्रुतज्ञान अवधि व मनःपर्यव ज्ञान में चार ज्ञान की भजना. केवलज्ञान साकारोपयुक्त में केवल ज्ञान की नियमा. मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान के साकारोपयुक्त में तीन अज्ञान की भजना विभंग ज्ञान के साकारोपयुक्त में तीन अज्ञान की नियमा. अनाकारोपयुक्त में पांच ज्ञान तीन अज्ञान की भजना. चक्षु

णणाणाइं भयणाए॥ २२ ॥ सवेदगाणं भंते ! जहा सइंदिया । एवं इत्थिवेदगावि एवं पुरिसवेदगावि नपुंसगवेदगावि, अवेदगा जहा अकसाइया ॥ २३ ॥ आहारगाणं भंते ! जहा सकसाइया, णवरं केवलनाणंवि ॥ अणाहारगाणं भंते ! जीवा किंणाणी अण्णाणी ? मणपज्जवनाणवज्जाइं णाणाइं, अण्णाणाइं तिण्णि भयणाए ॥ २४ ॥ आभिणिबोहियनाणस्सणं भंते ! केवइए विसए प० ? गोयमा ! से समासओ चउव्विहे प० तंजहा दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, दव्वओणं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, खेत्तओणं आभिणि

भावार्थ

अवेदी में केवल ज्ञान की नियमा ॥ २१ ॥ सकषायी, क्रोध, मान, माया व लोभ कषायी में चार ज्ञान तीन अज्ञान की भजना अकषायी में पांच ज्ञान की भजना ॥ २२ ॥ सवेदी, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी व नपुंसकवेदी में चार ज्ञान तीन अज्ञान की भजना. अवेदी में पांच ज्ञान की भजना सवेदीपना नववे गुणस्थान पर्यंत पाता है ॥ २३ ॥ आहारक में पांच ज्ञान तीन अज्ञान की भजना अनाहारक में मनःपर्यव ज्ञान छोडकर चार ज्ञान तीन अज्ञान की भजना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! आभिनिबोधिक ज्ञान का विषय कितना कहा है ? अहो गौतम ! आभिनिबोधिक ज्ञान के चार [illegible]

अणंता आभिणिबोहियनाणपज्जवा पण्णत्ता ॥ केवइयाणं भंते सुयनाणपज्जवा . प० एवं चेव, एवं जाव केवलनाणस्स ॥ एवं मइ अण्णाणस्स, सुयअण्णाणस्सय। केवइयाण भंते ! विभंगनाणपज्जवा प० ? गोयमा ! अणंता विभंगनाण पज्जवा प० ॥ एएसिण भंते ! आभिणिबोहियनाण पज्जवाणं, सुयणाण पज्जवाणं, ओहिनाण पज्जवाणं मणपज्जवणाणपज्जवाण, केवलणाण पज्जवाण य कयरे २ जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणनाण पज्जवा, ओहिनाण पज्जवा अणंतगुणा, सुयनाण

पर्यव द्वार कहते हैं मति ज्ञान के पर्यव अनंतगुने. पर्यव के दो भेद. १ स्वपर्यव २ परपर्यव. क्षयोपशम की विचित्रता से अवग्रहादि मति विशेष सो स्वपर्यव. जैसे एक अवग्रह से अन्य अवग्रहादि अनंत भाग वृद्धि से विशुद्ध तथा अन्य असंख्यात भाग वृद्धि अपर असंख्यात भाग वृद्धि, अन्य संख्यात गुन वृद्धि अपर असंख्यात गुन वृद्धि. यों संख्याते के संख्यात भेदपना से असंख्याते के असंख्यात भेदपना से अनंत के अनंत भेदपना से अथवा ज्ञेय के अनंतपना से मतिज्ञेय को भेदने से अथवा मति ज्ञान के अविभाग पावे उत्तर वृद्धि से छिदते हुए अनंत खण्ड होते हैं इसलिये इस के अनंत पर्यव कहे हैं और जो पदार्थ यति ज्ञान परिछिन्न पदादि वस्तु के व्यतिरिक्त सो पदादि पदार्थ पर्याय सो पर पर्याय. वे स्व-पर्याय से अनंतगुने हैं ऐसे ही श्रुत ज्ञान के अनंत पर्यव कहे हैं. २ स्वपर्याय सो श्रुत ज्ञान के स्वगत



भार्थ

शब्दार्थ लोक जा० यावत् म० मेरी अं० पास ह० शीघ्र आ० आया से० वह खं० खंदक अ० अर्थ स० समर्थ हं० हां अ० है खं० खंदक ए० ऐसा अ० आत्मविषय में चिं० चिंतवन प० प्रार्थनारूप म० मनोगत सं० संकल्प स० उत्पन्न हुआ किं० क्या स० अंतसहित लोक अ० अनंतलोक त० उस का अ० यह अर्थ म० मैंने खं० खंदक च० चार प्रकार का प० प्ररूपा द० द्रव्य से खे० क्षेत्र से का० काल से भा० भाव से द० द्रव्य से ए० एक लो० लोक स० अंतसहित खे० क्षेत्र से लो० लोक अ० असंख्यात जो० योजन

सूत्र ए तेणेव हव्वमागए । सेणूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ॥ जेविय ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, किं सअंतेलोए अणंतेलोए तस्सावियणं अयमट्ठे, एवं खलुमए खंदया ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते तंजहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ. । दव्वओणं एगेलोए सअंते, ॥

भावार्थ पास आया है तो क्या यह बात सत्य है? खंदक बोले हां यह सत्य है. अहो खंदक! तेरे मन में ऐसा अध्यवसाय, चिन्तवन, मनन, व मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ कि क्या अंत सहित लोक है या अंत रहित लोक है. परंतु अहो स्कंदक ! मैं लोक को इस प्रकार प्ररूपता हूं. लोक के चार भेद कहे हैं द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे व भाव से. द्रव्य से पंचास्तिकायरूप एक, यह द्रव्य तत्त्व से अंत सहित है, क्षेत्र से सब लोक का मध्य मेरुपर्वत है उससे यह ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् दिशा की लम्बाइ व चौडाइ में असंख्यात योजन का

म

नरत्थोरा मणनाण पज्जवा विभंगना
तगुणा सुयअण्णाण पज्जवा अणंत गुणा
पज्जवा अणंतगुणा,आभिणिबोहिय नाणपज

भावार्थ

श्रुत अज्ञान व विभंग ज्ञान के पर्यव अनंत हैं ए
मनःपर्यव ज्ञान के पर्यव क्योंकि मनोद्रव्य मात्र विष
श्रुत ज्ञान के पर्यव अनंतगुने इस से आभिनिबोधि
अनंतगुने. तीन अज्ञान आश्री मत से थोडे विभं
इस से मति अज्ञान के पर्यव अनंतगुने. अब इन
पर्यव इन से विभंग ज्ञान के पर्यव अनंतगुने इस
पर्यव अनंतगुने श्रुत अज्ञान श्रुत ज्ञानी के भीष
ज्ञान के पर्यव विशेषाधिक कितनेक श्रुत ज्ञानी के
मति अज्ञान के पर्यव अनंतगुने श्रुत ज्ञान से कही
पर्यव विशेषाधिक [illegible]





केवइयाणं भंते सुयनाणपज्जवा. प०
अण्णाणस्स, सुयअण्णाणस्सय। केवइ
या ! अणंता विभंगनाण पज्जवा प० ॥
सुयणाण पज्जवाणं, ओहिनाण पज्जवाणं
? कयरे २ जाव विसेसाहियावा ?
ओहिनाण पज्जवा अणंतगुणा, सुयनाण

र्यव के दो भेद. १ स्वपर्यव २ परपर्यव. क्षयोप-
पर्यव. जैसे एक अवग्रह से अन्य अवग्रहादि अनंत
द्धि अपर असंख्यात भाग वृद्धि, अन्य संख्यात गुन
संख्यात भेदपना से असंख्याते के असंख्यात भेदपना
ता से मतिज्ञेय को भेदने से अथवा मति ज्ञान के
हे होते हैं इसलिये इस के अनंत पर्यव कहे हैं और
के जो घटादि पदार्थ पर्याय सो पर पर्याय. वे स्व-
पर्यव कहे हैं. १ स्वपर्याय जो श्रुत ज्ञान के स्वगत

मूल

वायुकुमाराणं भंते ! सव्वे समाहारा, एवं चेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स सोलसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १६ ॥

अग्गिकुमाराणं भंते ! सव्वेसमाहारा एवं चेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स सत्तरसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १७ ॥ सम्मत्तं सत्तरसमं सयं ॥ १७ ॥

भावार्थ

वायु कुमार का भी वैसे ही कहना. अहो भगवन् आपके वचन सत्य हैं यह सत्तरहवा शतक का सोलहवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ १७ ॥ १६ ॥

अहो भगवन् ! क्या अग्निकुमार सरिखे आहार करने वाले वगैरह पहिले जैसे कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सत्तरहवा शतक का सत्तरहवा उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १७ ॥ १७ ॥

गोर वाले अ० असंख्यात जी० जीव वाले दु० दोप्रकार के ए० एक गुठली वाले ब० बहुगुठली वाले मे० वह किं० कौन से ए० एक गुठली वाले अ० अनेक प्रकार के तं० वह ज० जैसे नि० निम्ब अं० आम्र जं० जामुन ज० जैसे प० पन्नवणा में जा० यावत् फ० फल ब० बहु जीव वाले से० वह ब० बहु बीज वाले से० वह अ० असंख्यात जी० जीव वाले से० वह किं० कौन से अ० अनंत जी० जीव वाले

एरी जेयावण्णे तहप्पगारा, सेत्तं संखेज्जजीविया ॥ सेकिंतं असंखेज्ज जीविया ? असंखेज्ज जीविया दुविहा पण्णत्ता तं० एगट्ठिया, बहुट्ठियाय । से किंतं एगट्ठिया? एगट्ठिया अणेगविहा प०, तंजहा निंबंबजंबु एवं जहा पण्णवणाएए जाव फला. बहुवीयगा, सेत्तं बहुवीयगा, सेत्तं असंखेज्ज जीविया ॥ से किंतं अणतजीविया ?

भावार्थ

जीववाले. अहो भगवन् ! संख्यात जीववाले वृक्ष किस को कहते हैं ? संख्यात जीववाले वृक्ष के अनेक भेद कहे हैं. उन के नाम तालवृक्ष तमालवृक्ष, तक्कलीवृक्ष, तेतलीवृक्ष, लेपवृक्ष. पालवृक्ष. कल्याणवृक्ष, शाल्वृक्ष, केतकी वृक्ष, कदली वृक्ष, चर्म वृक्ष, भुयवृक्ष, गरलवृक्ष, लवंग वृक्ष, पुंगी फल, खजुर, नालियेर, और इस प्रकार के अन्य वृक्ष के नाम भी पन्नवणा सूत्र से जानना. ये संख्यात जीववाले वृक्ष कहे. अब असंख्यात जीववाले वृक्ष के दो भेद १. जिस फल में एक गुठली होवे वैसे एक गुठलीवाले और २ जिस फल में बहुत गुठली होवे वैसे बहुत गुठलीवाले. अहो भगवन् ! एक गुठलीवाले वृक्ष के कितने

शब्दार्थ संस्थान प० पर्यव अ० अनंत गु० गुरुलघु के प० पर्यव अ० अनंत अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उस का अं० अंत खं० खंदक द० द्रव्य से लो० लोक अ० अंतसहित खे० क्षेत्र से लो० लोक स० अंतसहित का० काल से लो० लोक अ० अनंत भा० भाव से लो० लोक अ० अनंत ॥ १६ ॥ खं० खंदक जा० यावत् स० अंतसहित जी० जीव अ० अनंत जीव त० उस का अ० यह अर्थ जा० यावत् द० द्रव्य से ए० एक जीव स० अंतसहित खे० क्षेत्र से जी० जीव अ० असंख्यात प० प्रदेशिक अ० असंख्यात प्रदेश

सूत्र पज्जवा, अणंता अगुरुयलहुयपज्जवा. नात्थिपुणसे अंते ॥ सेत्तं खंदया ! दव्वओ लोगेसअंते, खेत्तओलोए सअंते, कालओ लोए अणंते, भावओ लोए अणंते ॥ १६ ॥ जेविय ते खंदया ! जाव सअंतेजीवे अणंतजीवे, तस्सवियणं अयमट्ठे एवं खलु जाव दव्वओणं एगेजीवे सअंते, खेत्तओणं जीवे असंखेज्ज पएसिए, असंखेज्ज पएसोगाढे, अत्थिपुण से अंते, कालओणं जीवे नकदाइ न आसि णिच्चे

भावार्थ पर्यव, अनंत संस्थान पर्यव, अनंत गुरुलघु पर्यव, व अनंत अगुरुलघु पर्यव हैं. इसलिये भावसे लोक अनंत है. इसतरह से अहो स्कंदक ! द्रव्यसे लोक अंत सहित, क्षेत्रसेभी अंत सहित, कालसे व भाव से लोक अनंत है ॥ १६ ॥ अहो स्कंदक ! जीव अंत सहित है या अंत रहित है उस प्रश्न के उत्तर में जीव के चार भेद कहे हैं द्रव्य से, क्षेत्रसे, कालसे व भावसे, द्रव्य से एकही जीव है वह द्रव्य से अंत सहित है. क्षेत्रसे असं-

करतं नाणुजाणइ, वयसा, कायसा, ॥ तिविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा । अहवा नकरेइ नकारवेइ करंतं नाणुजाणइ वायसा । अहवा नकरेइ नकारवेइ करंतं नाणुजाणइ, कायसा ॥ दुविहं तिविहेणं पडिक्कमाणे नकरेइ, नकारवेइ, मणसा वयसा कायसा। अहवा नकरेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा, अहवा नकारवेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ॥ दुविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे-नकरेइ नकारवेइ, मणसा वयसा । अहवा नकरेइ नकारवेइ, मणसा कायसा । अहवा नकरेइ नकारवेइ वयसा कायसा ।

भावार्थ

करावे नहीं, करने को अनुमोदे नहीं, मन मे काया मे, ४ करे नहीं, करावे नहीं, करते को अनुमोदे नहीं, वचन मे कायामे तीन करन एक योगमे प्रतिक्रमता हुवा ५ करे नहीं, करावे नहीं, करतेको अनुमोदे नहीं मन मे, ६ करे नहीं, करावे नहीं, करने को अनुमोदे नहीं वचन मे ७ करे नहीं, करावे नहीं, करते को अनुमोदे नहीं काया मे. दो करन तीन योग से प्रतिक्रमता हुवा करे नहीं, करावे नहीं मन वचन व काया मे ९ करे नहीं. करने को अनुमोदे नहीं मन वचन व काया मे १० करावे नहीं करने को अनुमोदे नहीं. मन वचन व काया मे. दो करन दो योग मे प्रतिक्रमता हुवा ११ करे नहीं करावे नहीं मन मे [illegible]

जाव वेमाणिए॥ सिद्धे पढमे णो अपढमे॥ पुहुत्तेणं जीवा पढमावि अपढमावि एवं जाव वेमाणिया॥ सिद्धा पढमा णो अपढमा॥ मिच्छादिट्ठीए एगत्त पुहुत्तेणं जहा आहारगा, सम्मामिच्छादिट्ठीए एगत्तपुहुत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी, णवरं जस्स अत्थि सम्मामिच्छत्तं॥ १५॥ संजए जीवे मणुस्से य, एगत्त पुहुत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी॥ असंजए जहा आहारए॥ संजया संजए जीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्से एगत्तपुहुत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी, णोसंजए णोअसंजए णोसंजयासंजए जीवे सिद्धेय एगत्त

भावार्थ — अनाहारक आश्रित एक जीव क्या प्रथम है या अप्रथम है? अहो गौतम! स्यात् प्रथम है स्यात् अप्रथम है ऐसे ही एकेन्द्रिय छोडकर यावत् वैमानिक पर्यंत जानना. सिद्ध में प्रथम व अप्रथम है, अनेक जीव आश्री प्रथम भी है और अप्रथम भी है. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. सिद्ध प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है. मिथ्यादृष्टिका एक अनेक आश्री आहारक जैसे कहना. सम्यग्मिथ्यादृष्टिका सम्यग्दृष्टि जैसे कहना विशेष में जिन को सम्यग्मिथ्यादृष्टि होवे उन को ही कहना॥ १५॥ संयतिजीव मनुष्य में एक अनेक आश्री सम्यग्दृष्टि जैसे कहना. असंयति का आहारक जैसे कहना संयतासंयति तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य का एक अनेक का भी सम्यग्दृष्टि जैसे कहना. नोसंयति नो असंयति नोसंयतासंयति जीव व सिद्ध में एक अनेक

अहवा नकारवेइ करंतं नाणुजाणइ कायसा ॥ एगविहं तिविहेणं पडिक्कमणाणे नकरेइ मणसा वयसा कायसा । अहवा नकारवेइ मणसा वयसा कायसा । अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ॥ एगविहं दुविहेणं पडिक्कममाणं नकरेइ मणसा वयसा, । अहवा नकरेइ मणसा कायसा । अहवा नकरेइ वयसा कायसा । अहवा नकारवेइ मणसा वयसा । अहवा नकारवेइ मणसा कायसा। अहवा नकारवेइ वयसा कायसा अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा, अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा, अहवा करंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा, ॥ एगविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ मणसा, अहवा न करेइ वयसा, अहवा ण करेइ कायसा । अहवा न कारवेइ

भावार्थ नहीं काया से २६ करावे नहीं अनुमोदे नहीं मन से २७ करावे नहीं अनुमोदे नहीं वचन से २८ करावे नहीं अनुमोदे नहीं काया से. एक करन तीन योग से प्रतिक्रमता हुवा २९ करे नहीं मन से वचन से व काया से ३० करावे नहीं मन से वचन से व काया से ३१ अनुमोदे नहीं मन से वचन से, व काया से एक करन दो योग से प्रतिक्रमता हुवा ३२ करे नहीं मन से वचन से ३३ करे नहीं मन से काया से ३४ करे नहीं वचन से काया से ३५ करावे नहीं मन से वचन से ३६ करावे नहीं मन से काया से ३७

... म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदन

... पास के० केवली

भाजन भ० जैसे मा० मत सी० शीत उ० ऊष्ण खु० क्षुधा पि० तृषा चो० चोर वा० सर्प दं० दंस म० मशक वा० वात पि० पीत सं० श्लेष्म स० स० सन्निपात वि० विविध रो० रोग आ० आतंक प० परिषह उ० उपसर्ग फ० स्पर्शे त्ति० ऐसा क० करके नि० निकाल्दते प० परलोक का हि० हितकेलिये सु० सुख केलिये ख० क्षमाकेलिये नि० मुक्तिके हेतु अ० अनुगामिक भ० होंगे ते० उसको इ० इच्छता हूं दे० देवानुप्रिय स० स्वतः प० प्रव्रजित मुं० मुंडहोकर से० शिक्षा ग्रहणकर सि० शिक्षा

मूल

समए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे माणंसीयं, माणंउण्हं, माणंखुहा माणंपिवासा, माणंचोरा, माणंवाला, माणंदंसा, माणंमसया माणंवाइय-पित्तिय-संभिय-सण्णिवाइय-विविहारोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु, एस नित्थारियसमाणे परलोयस्स हियाए,सुहाए,खमाए,निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ,तं इच्छामिणं देवाणुप्पिया! सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सय-

भावार्थ

विश्वास का कर्ता है. आत्मकृत कार्य के सम्मतपने से बहुमत व अनुमत है. आभरण के करंडिये समान है. इसे मैंने शीत, ऊष्ण, क्षुधा, तृषा चोर, सर्प, दंस, मशक, वात, पित्त, कफ, संनिपात आ... उपसर्ग व परिषह से बचाया है. इस ... इस लोक व ...

मरूपा अ० अशुद्ध प० भोगनेवाला स० सर्व स० सत्व हं० हननेवाला छे० छेदनेवाला भे० भेदनेवाला लुं० छेदकर वि० विशेष छेदकर उ० उपद्रव कर आ० आहार आ० आहार करे त० तहां इ० यह दु० द्वादश आ०आजीविक उ०उपासक भ० हैं तं०यह ज०जैसे ता०ताल त०ताल प्रलम्ब उ०उविद्ध सं० संविद्ध अ० अविविध उ० उदक ना० नामुदक न० नमुदक अ० अनुपालक सं० संखपालक अ० अयंपुल का०

सूत्र

थूलगस्स मेहुणस्सवि, परिग्गहस्स जाव करंतं नाणुजाणइ कायसा॥एएखलु एरिसगा समणो वासगा भवंति नो खलु एरिसगा आजीविओ वासगाभवंति ॥ ४ ॥ आजीवियसमय स्सणं अयमट्ठे पण्णत्ते अक्खीणपडिभोइणो, सव्वसत्ता से हंता, छेत्ता भेत्ता, लुंपित्ता विलुंपित्ता, उद्दवइत्ता आहार माहारेंति ॥ तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा

भावार्थ

४९ और अनागत काल के प्रत्याख्यान के ४९ सब मीलकर १४७ भांगे होते हैं. स्थूल प्राणातिपात के जैसे १४७ भांगे कहे वैसे ही स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान, स्थूल मैथुन व स्थूल परिग्रह के १४७ भांगे जानना. इस अनुसार जो व्रत पालनेवाले होते हैं वे ही श्रावक कहे जाते हैं. जैसे श्रमणोपासक के लक्षण कहे वैसे ही लक्षणवाले आजीविक पंथ के श्रमणोपासक नहीं होते हैं ॥ ३-४ ॥ गोशालक के सिद्धांत का ऐसा अर्थ कहा है कि जिन में जीवों का प्रासुक्पन क्षय नहीं हुआ है ऐसा अप्रासुक भोगनेवाले असंयति सब सत्वों को मारकर, छेदकर, भेदकर, अंगोपांगादि छीनकर उपद्रव उपजाकर

सूत्र

पुहत्तेणं पढमे णो अपढमे ॥ १६ ॥ सकसायी कोहकसायी जाव लोभकसायी एगत्तेणं पुहत्तेण जहा आहारए, अकसायी जीवे सिय पढमे सिय अपढमे, एवं मणुस्सेवि, सिद्धे पढमे णो अपढमे ॥ पुहत्तेणं जीवा मणुस्सा पढमावि अपढमावि, सिद्धा पढमा णो अपढमा ॥ १७॥ णाणी-एगत्त पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी, आभिणिबोहियणाणी जाव मणपज्जवणाणी एगत्तपुहत्तेणं एवंचेव, णवरं जस्सजं अत्थि, केवलणाणी जीवे मणुस्से सिद्धेय एगत्तपुहत्तेणं पढमा णो अपढमा ॥ अण्णाणी मइ अण्णाणी सुयअण्णाणी विभंगणाणी एगत्तपुहत्तेणं जहा आहारए

भावार्थ

आश्री प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है ॥ १६ ॥ सकषायी क्रोधकषायी यावत् लोभ कषायी एक अनेक आश्री आहारक जैसे जानना. अकषायी जीव व मनुष्य एक आश्री स्यात् प्रथम स्यात् अप्रथम है सिद्ध आश्री प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है. अनेक आश्री जीव मनुष्य प्रथम भी हैं और अप्रथम भी हैं सिद्ध प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं ॥ १७ ॥ ज्ञानी का एक आश्री समदृष्टि जैसे कहना. आभिनिबोधिक ज्ञानी यावत् मनःपर्यव ज्ञानी का एक व अनेक आश्री भी ऐसे ही कहना. केवल ज्ञानी जीव मनुष्य व सिद्ध में एक अनेक आश्री प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं. मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी विभंग ज्ञानी का

शब्दार्थ इ० इच्छते हैं कि० क्या पु० फीर जे० जो इ० ये स० श्रमणोपासक भ० होते हैं ते० उन को णो० नहीं
क० कल्पता है इ० यह प० पन्नरह क० कर्मादान स० स्वयं क० करना का० कराना क० करते
अ० अन्य को स० अच्छा जानना तं० वह ज० जैसे इं० अंगार कर्म व० वन कर्म सा० शकट कर्म भा०

सूत्र भिण्णेहिं, गोणेहिं, तसपाण विवज्जिएहिं. वित्तेहिं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति. एएवि
ताव एवं इच्छंति किमंग पुण जे इमे समणोवासगा भवंति. तेसिं णो कप्पंति इमाइं
पण्णरसकम्मादाणाइं सयंकरेत्तएवा, कारवेत्तएवा, करंतंवा अण्णं समणुजाणेत्तए

भावार्थ जिन में त्रस प्राणी की हिंसा होवे वैसा व्यापार नहीं करते हैं. इस प्रकार आजीविक पंथवाले आचार
पालते हुवे विचरते हैं. उक्त आजीविकमतानुसारी ऐसा धर्म पालने को इच्छते हैं तो फीर जो श्रा-
वक हैं उन का तो कहना ही क्या. उन को पन्नरह कर्मादान करने का, अन्य से कराने का व करते को
अनुमोदने का नहीं कल्पता है १ अंगार कर्म-अग्निविषय व्यापार करना, ईटपाकादि करना सो अंगार
कर्म २ वनादि कटाकर अथवा बीज रोपणादि व्यापार करना सो वन कर्म ३ शकटादि वाहन बनाकर
बेचना सो साडी कर्म ४ वृषभ, ऊंट, अश्वादि भाडे देना सो भाडी कर्म ५ हल कोदालादिक से भूमि फोडना
[illegible] दांत [illegible] का व्यापार करना सो दंतवाणिज्य कर्म ७ लाख चपडी आदिका
[illegible] जीवों का व्यापार सो केशवाणिज्य

जी० जीव स० सत्व सं० संयम से सं० यतना करना अ० इस अ० अर्थ केलिये णो० नहीं किं० किंचित् प० प्रमाद करना ॥ २१ ॥ त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का ए० ऐसा ध० धर्म उ० उपदेश स० सम्यक् सं० अंगीकार किया त० उस आ० आज्ञाको त० जैसे ग० जावे चि० रहे नि० बैठे तु० सोवे भुं० भोजनकरे भा० बोले उ० सदाहोवे पा० प्राणभू भूत जी० जीव स०सत्व सं०संयम सं०यत्नकरे अ०इस अ० अर्थ में णो० नहीं प० प्रमादकरे

सूत्र

संजमेणं संजमियव्वं. अस्सिंचणं अट्ठे णोकिंचि पमाइयव्वं. ॥ २१ ॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धाम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जइ,तमाणाए तहगच्छइ,तहचिट्ठइ,तहनिसीयइ,तहतुयट्टइ, तहभुंजइ तहभासइ,तहउट्ठाएइ तहपाणेहिं भूएहिंजीवेहिंसत्तेहिं संजमेणं संजमेइ, अस्सिंचणंअट्ठेणोपमायइ ॥ २२ ॥

भावार्थ

व यत्नापूर्वक बोलना. ऐसे ही उद्यमवन्त बनकरके प्राणभूत जीव व सत्व से संयम पालना. इस में किंचिन्मात्र प्रमाद करना नहीं ॥ २१ ॥ तब कात्यायन गोत्रीय खंदकने श्रमण भगवान् महावीर का ऐसा धार्मिक उपदेश सुनकर उसे सम्यक् प्रकारसे अंगीकार किया. और उनकी आज्ञामें यत्ना पूर्वक जाना, खडे रहना, बैठना, सोना, भोजन करना, बोलना व सावध रहना ऐसे करने लगे. सावध होकर प्राणभूत जीव व सत्व की रक्षा कर संयम पालने लगे. इस में किंचिन्मात्र प्रमाद नहीं करने लगे ॥ २२ ॥ तब ईर्या स-

दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न भ० होता है ॥ ५ ॥ क० कितने प्रकार के दे० देवलोक प० प्ररूपे गो० गौतम च० चार प्रकार के दे० देवलोक प० प्ररूपे भ० भवनवासी जा० यावत् वे० वैमानिक देव से० यह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ ८ ॥ ५ ॥

स० श्रमणोपासक भं० भगवन् त० तथा रूप स० श्रमण मा० माहण को फा० फासुक ए० एषनीक अ० असन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम प० देता हुवा किं० क्या क० करे गो० गौतम ए०

मूल

देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥ ५ ॥ कइविहाणं भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता तंजहा-भवणवासी जाव वेमाणिया देवा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ अट्ठमसए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ८ ॥ ५ ॥ × ×

समणोवासगस्सणं भंते ! तहारूवं समणंवा माहणंवा फासुएसणिज्जेणं असण-पाण खाइम साइमेणं पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ? गोयमा ! एगंतसो से निज्जरा

भावार्थ

देवपने उत्पन्न होते हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! देवलोक कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! चार प्रकार के देवलोक कहे हैं भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह आठवा शतक का पांचवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ८ ॥ ५ ॥

र्थ प० प्रतिहत प० प्रत्याख्यान पा० पापकर्म को फा० फासुक अ० अफ्रासुक ए० शुद्ध अ० अशुद्ध अ० अशन पा० पान जा० यावत् किं० क्या क० करे ए० एकान्त से० वह पा० पापकर्म क० करे न० नहीं है से० उन को का० किंचित् नि० निर्जरा क० करे ॥ ३ ॥ नि० निर्ग्रंथ गा० गाथापतिकुल

सूत्र डिहय पच्चक्खाय पावकम्मं फासुएणवा अफासुएणवा एसणिज्जेणवा अणेसणिज्जेणवा असण पाण जाव किं कज्जइ? गोयमा ! एगंतसो से पावे कम्मे कज्जइ, नत्थिसे काइ निज्जरा कज्जइ ॥३॥ निग्गथं च णं गाहावइकुलं पिंडवाय पडियाए अणुप्पविट्ठं केइ

भावार्थ प्रतिहत, व प्रत्याख्यान से पाप कर्म को नहीं रोकनेवाले को फासुक व अफासुक अशन, पान, खादिम व स्वादिम देनेवाले श्रावकको क्या फल होवे ? अहो गौतम ! उन को एकान्त पाप कर्म होवे किंचिन्मात्र निर्जरा नहीं होवे * ॥ ३ ॥ गृहस्थ के घर आहारादि ग्रहण करने के लिये गये हुए साधु को कोई

संयम में स्थिर रहकर तप संयम की वृद्धि करसकते हैं. दाता को तप संयम की वृद्धि के कारनभूत होने से बहुतर निर्जरा होती है और जो जीवघातादि पाप होता है उस से निर्जरा की अपेक्षा से अल्प पाप कर्म लगता है. प्रथम अशुद्ध आहार देनेवाला अल्प आयुष्य बान्धता है ऐसा जो कथन है वह निष्कारण रागादि की अपेक्षा से ... न व केवली गम्य ॥

सूत्र

पं॰ स्थण्डिल में प॰ देखकर प॰ पूंजकर प॰ परठवे ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ नि॰ निर्ग्रंथ को गा॰ गाथापति
पडिलेहित्ता परिमज्जित्ता परिट्ठवियव्वे सिया ॥ ४ ॥ निग्गंथंचणं गाहावइकुलं पिंड-
वाय पडियाए अणुप्पविट्ठं केइ तिहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा-एगं आउसो अप्पणा भुं-
जाहि, दो थेराणं दलयाहि, सेय तं पडिगाहेज्जा थेराय अणुगवेसमाणे सेसं तंचेव जाव
परिट्ठवियव्वे सिया ॥ एवं जाव दसहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा, णवरं एगं आउसो

भावार्थ

गवेषणा करनी और जहां स्थविर देखने में आवे वहां ही उन विभागवाला आहार दे देना. कदाचित्
गवेषणा करते हुए स्थविर देखने में आवे नहीं तो वह आहार स्वयं भोगना नहीं वैसे ही अन्य को
देना नहीं परंतु एकान्त निर्जन स्थान में जाकर अचित्त फासुक स्थंडिल देखकर व पूंजकर वहां परिठाना.
॥ ४ ॥ गृहस्थ के घर आहार लेने के लिये गये हुवे साधु को कोई गृहस्थ विभाग किये हुवे तीन पिण्ड देवे
और कहे कि अहो आयुष्मन् ! इस में से एक तुम भोगना और दो स्थविरों को दे देना. साधु को
उस आहार लेकर जहां स्थविर होवे वहां जाना और वह आहार उनको देदेना गवेषणा करते हुए कदाचित् न मीले
तो वह आहार साधु को स्वयं भोगना नहीं वैसे ही अन्य को देना भी नहीं परंतु एकान्त में निर्जीव स्थान देखकर परि-
ठाना. ऐसे ही चार पांच यावत् दश पिण्ड विभाग कर देवे जिस में से एक [illegible] साधु को [illegible] और

सूत्र

पुंदरे एवं जहा जहा सोलसमसए बिइय उद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेण आगओ णवरं एत्थं आभिओगावि अत्थि जाव बत्तीसइविहं नट्टविहं उवदंसेइ, उवदंसेइत्ता जाव पडिगए॥२॥भंतेत्ति भगवं गोयमे! समणं भगवं महावीरं जाव एवं वयासी जहा तइय सए ईसाणस्स तहेव कूडागारसाला दिट्ठंतो तहेव, पुव्वभव पुच्छा जाव अभिसमण्णागया, गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे णामं णयरे होत्था वण्णओ, सहसंबवणे उज्जाणे वण्णओ॥३॥तत्थणं हत्थिणाउरे

भावार्थ

धारन करनेवाला शक्र देवेन्द्र देवराजा जैसे सोलहवे शतक के दूसरे उद्देशे में वर्णन किया वैसे यान विमान से आया. विशेष में यहां पर आभियोगिक देवों भी थे यावत् बत्तीसप्रकार के नाटक बतलाकर यावत् पीछा गया ॥२॥ भगवान गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को यावत् ऐसा बोले अहो भगवन् ! वगैरह जैसे तीसरे शतक में ईशानेन्द्र का कथन वैसे ही कूटाकारशाला के दृष्टांत से पूर्वभाव की पृच्छा यावत् प्राप्त हुआ. श्रमण भगवंत महावीरने गौतमादि श्रमण निर्ग्रंथों को कहा कि अहो गौतम ! उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में हस्तिनापुर नगर था. वह वर्णन योग्य था. उस की ईशान कौन में सहस्त्रवन उद्यान था

१० वक्तव्यता भ० कही ए० ऐसे गो० गोच्छग र० रजोहरण चो० चोलपट्टग कं० कंबल ल० [illegible] संथारा की व० वक्तव्यता भा० कहना जा० यावत् द० दश सं० संथारा से आमंत्रण करे जा० यावत् प० [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] पिंड के लिये प० प्रवेश किया अ० कोई

गोच्छग, रयहरणं, चोलपट्टं, कंबलं, लट्ठी, संथारग वत्तव्वया भाणियव्वा जाव दसहिं संथारएहिं उवनिमंतेज्जा जाव पडिविसज्जेसिया ॥ ६ ॥ निग्गंथेणय गाहावइकुलं पिंडवाय पडियाए पविट्ठेण अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्सणं एवं भवइ इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि विउट्टामि विसोहामि,

[illegible] जैसे दो पात्र का कहा वैसे ही तीन चार यावत् दश पात्र का जानना. और जैसे पात्र का कहा वैसे ही गोच्छग, रजोहरण, चोलपट्टग, कंबल, यष्टि, व संथारा की वक्तव्यता दश तक कहना ॥६॥ यह [illegible] के लिये कोई साधु गया और वहां किसी प्रकार का अकृत्य स्थान का सेवन किया. [illegible] इस दोष की ऐसा विचार होवे कि इस पापस्थान की यहां ही आलोचना, प्रतिक्रमण, निंदा व [illegible] करूं, उस से निवर्तूं, शुद्ध बनूं, [illegible] नहीं करने के लिये उद्यमी बनूं और यथोचित प्रायश्चित्त [illegible]

शब्दार्थ णा० ज्ञानवन्त दं० दर्शनवन्त च० चारित्रवन्त ल० लज्जा ला० लाघववन्त ओ० शरीर प्रभा युक्त ते० तेजस्वी व० वर्चस्वी ज० यशस्वी जि० जिता है क्रोध जि० जिता है मान मा० माया लो० लोभ नि० निद्रा इं० इन्द्रिय प० परिषह जी० जीवित आ० वांच्छा म० मरण भ० भय सो० शोकमे वि० रहित ब० बहु श्रुत ब० बहुत परिवार वाले पं० पांच अ० अनगार स० शत स० साथ सं० रहेहुवे अ०

सूत्र दंसणसंपण्णा, चरित्तसंपण्णा, लज्जा लाघव संपण्णा, ओयंसी तेयंसी, वच्चंसी जसंसी; जियकोहा, जियमाणा, जियमाया, जियलोभा, जियनिद्दा, जियइंदिया, जियपरीसहा, जीवियास मरण भय सोक विप्पमुक्का, बहुसुया, बहुपरिवारा, पंचाहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा अहाणुपुव्विं चरमाणा, गामाणुगामं दूइज्जमाणा, सुहं सुहेणं विहरमाणा, जेणेव तुंगियानयरी जेणेव पुप्फवईए

भावार्थ विनय सम्पन्न, मतिज्ञानादि ज्ञान सहित, सम्यक्त्व सहित, सामायिकादि चारित्र सहित, लौकिक लोकोत्तर लज्जा सहित, द्रव्य से उपधि व भाव से गर्व या लघुतावाले, ओजस्वी, तेजस्वी, वचन की विशिष्टता युक्त सो वर्चस्वी, यशस्वी, क्रोध, मान, माया व लोभ को जीतनेवाले, निद्रा, इन्द्रिय, परिषह को जीतनेवाले, जीवित, मरण, भय व शोक से मुक्त, बहुत श्रुत के धारक और चारों तीर्थरूप बहुत परिवारवाले श्री पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्यानुशिष्य स्थविर भगवंत पांचसो साधु के परिवार सहित

कार करूं त० पीछे थे० स्थविर की अं० पास आ० आलोचना करूंगा जा० यावत त० तपकर्म प० [illegible] से० वह सं० निकलाहुआ अ० असंप्राप्त पु० पहिले अ० अमुख नि० होवे से० वह भं० भ० आराधक वि० विराधक गो० गौतम आ० आराधक नो० नहीं वि० विराधक

विराहए ? गोयमा ! आराहए नो विराहए ॥ सेय संपट्ठिए असंपत्ते

कालं करेज्जा सेणं भंते ! किं आराहए विराहए ? गोयमा ! आराहए णो

विराहए ॥ सेय संपट्ठिए असंपत्ते अप्पणाय पुव्वामेव कालं करेज्जा सेणं भंते ! किं

आराहए विराहए ? गोयमा ! आराहए नो विराहए ॥ सेय संपट्ठिए संपत्ते थेराय

परंतु विराधक नहीं कहना ॥ ऐसा दोषवाला साधु स्थविर की पास [illegible] स्थविर [illegible] काल कर जावे और आलोचना कर सके नहीं उसे आराधक कहना परंतु विराधक कहना । अहो गौतम ! आराधक कहना विराधक कहना आलोचना करने लिये निकला परन्तु स्थविर पास [illegible] सके नहीं और वह स्वयं आलोचना करनेवाला परिणाम होने से आराधक कहना परंतु विराधक कहना नहीं उक्त [illegible] आलापक कहे अब स्थविर की पास आश्री चार आलापक कहते हैं. [illegible] आलोचना करने को निकला स्थविर की पास हुआ परंतु स्थविर वातादि कारण से मूर्छित

आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए ॥७॥ निग्गंथेणय गामाणुगामं दूइज्जमाणेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए तस्सणं एवं भवइ इहेव ताव एत्थवि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए ॥ ८ ॥ निग्गंथीएय गाहावइकुलं पिंडवाय पडियाए अणुप्पविट्ठाए अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तीसेण एव भवइ इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि जाव तवो-कम्मं पडिवज्जामि, तओपच्छा पवित्तिणीए अंतिए आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि साय संपट्ठिया असंपत्ता पवित्तिणीय अमुहा सिया साणं भंते ! किं आराहिया विरा-

निर्ग्रन्थ को दोष लगे तो आलोचना के आठ आलापक जानना ॥ ७ ॥ ग्रामानुग्राम जाते किसी साधु को दोष लगे तो पहिले उन को ऐसा विचार होवे कि मैं इस दोष को यहांपर आलोवूं यावत् प्रायश्चित्त कर के तप कर्म अंगीकार करूं फीर स्थविर की पास जाकर इस की आलोचना करूंगा यावत् तप कर्म अंगीकार करूंगा वगैरह उपर्युक्त जैसे सब प्रकार के आठ आलापक जानना. ॥८॥ जैसे साधु आश्री २४ आलापक कहे वैसे ही २४ आलापक साध्वी आश्री कहते हैं. गृहस्थ के गृह में आहारादि के लिये गई हुई साध्वी को किसी प्रकार का दोष लगे फीर उन को ऐसा विचार होवे कि पाहिले मैं यहां पर इस स्थान की आलोचना करूं यावत् तपकर्म अंगीकार करूं फीर प्रवर्तिनी ( मुख्य साध्वी ) की पास इस की

पार्श्वनाथ के संतानिये थे० स्थविर भं० भगवन्त जा० जातिवंत जा० यावत् अ० यथाप्रतिरूप उ० अनुज्ञा ओ० लेकर सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं म० महाफल दे० देवानुप्रिय त० तथारूप थे० स्थविर भ० भगवन्त के ना० नाम गो० गोत्र को स० सुनने से किं० पुन: अ० अभिगमन वं० वंदन न० नमस्कार प० पृच्छना प० पूजते जा० यावत् ग० ग्रहण करते तं०

सूत्र — सद्दाविचा एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया। पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जाति संपण्णा जाव अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा- विहरंति. तं महाफलं खलु देवाणुप्पिया तहारूवाणं थेराणं भगवंताणं नामगोयस्स विसवणयाए किमंगपुण अभिगमण वंदण नमंसण पडिपुच्छण पज्जुवास-

भावार्थ — वार्तालाप सुनकर बहुत आनंदित हुए. और परस्पर ऐसा बोलनेलगे कि अहो देवानुप्रिय! जातिसंपन्न यावत् यथाप्रतिरूप श्री पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्यानुशिष्य श्री स्थविर भगवन्त पुष्पवती उद्यान में आज्ञा मांगकर संयम व तपसे आत्माको भावते हुवे विचर रहे हैं. ऐसे तथारूप स्थविर भगवन्त का नाम गोत्र सुनने से ही महा फल होता है तो फीर अभिगमन, वंदन, नमस्कार, प्रतिपृच्छा, पर्युपासना यावत् अर्थादिक का ग्रहण करने का तो कहना ही क्या! इसलिये अहो देवानुप्रिय! अपन वहां जावे और स्थविर भगवन्तको वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करे. यही इस भव व परभव में अनुगामीक होगा. ऐसा परस्पर वार्तालाप

आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए ॥७॥ निग्गंथेणय गामाणुगामं दूइज्जमाणेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए तस्सणं एवं भवइ इहेव ताव एत्थवि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए ॥ ८ ॥ निग्गंथीएय गाहावइकुलं पिंडवाय पडियाए अणुप्पविट्ठाए अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तीसेण एवं भवइ इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि जाव तवो-कम्मं पडिवज्जामि, तओपच्छा पवत्तिणीए अंतिए आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि साय संपट्ठिया असंपत्ता पवत्तिणीय अमुहा सिया साणं भंते ! किं आराहिया विरा-

निर्ग्रन्थ को दोष लगे तो आलोचना के आठ आलापक जानना ॥ ७ ॥ ग्रामानुग्राम जाते किसी साधु को दोष लगे तो पहिले उस को ऐसा विचार होवे कि मैं इस दोष को यहांपर आलोवूं यावत् प्रायश्चित्त कर के तप कर्म अंगीकार करूं और स्थविर की पास जाकर इस की आलोचना करूंगा यावत् तप कर्म अंगीकार करूंगा इत्यादि उपर्युक्त जैसे सब प्रकार के आठ आलापक जानना. ॥८॥ जैसे साधु आश्री २४ आलापक कहे वैसे ही २४ आलापक साध्वी आश्री बताते हैं. गृहस्थ के गृह में आहारादि के लिये गई हुई साध्वी को किसी प्रकार का दोष लगे फीर उस को ऐसा विचार होवे कि पहिले मैं यहां पर इस स्थान की आलोचना करूं यावत् तपकर्म अंगीकार करूं फीर प्रवर्तिनी ( मुख्य साध्वी ) की पास इस की

सूत्र

असणं पाणं खाइमं साइमं जहा गंगदत्तो जाव मित्तणाइ जाव परिजणेणं जेट्ठ पुत्तं णेगमट्ठसहस्सेणय समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव रवेणं हत्थिणापुरं णयरं मज्झंमज्झेणं जहा गंगदत्तो जाव आलित्तेणं भंते ! लोए पलित्तेणं भंते ! लोए आलित्तपलित्तेणं भंते ! लोए जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ ॥ इच्छामिणं भंते ! णेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावियं, मुंडावियं जाव माइक्खियं तएणं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं णेगमट्ठ सहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावेइ जाव धम्ममाइक्खति एवं देवाणुप्पिया गंतव्वं एवं चिट्ठियव्वं जाव संजमियव्वं ॥१३॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं संपडिवज्जइ-तमाणाए तहा गच्छइ जाव संजमइ ॥ १४ ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठ

भावार्थ

मित्र ज्ञाति यावत् परिजन सहित ज्येष्ठ पुत्र व एक हजार आठ गुमास्ते मार्ग में चलते हुवे सब ऋद्धि व वादित्रों सहित हस्तिनापुर नगर की बीच में गंगदत्त जैसे यावत् अहो भगवन् ! यह लोक आलित, पलित, आलित पलित है यावत् अनुगामी होगा. अहो भगवन् ! एक हजार आठ गुमास्ते सहित मैं स्वयमेव प्रव्रजित होने, मुंडित होने, यावत् कहने को इच्छता हूं तब मुनि सुव्रत अरिहंतने एक हजार आठ गुमास्ते सहित कार्तिक श्रेष्ठी को प्रव्रजित किया यावत् उपदेश दिया कि ऐसे बैठना ऐसे संयम पालना ॥ १३ ॥ फीर एक हजार आठ गुमास्ते सहित कार्तिक श्रेष्ठीने मुनिसुव्रत अरिहंत का ऐसा धार्मिक उपदेश सम्यक्

जले जो० अग्नि झि० जले ॥ ११ ॥ अ० गृह भं० भगवन् झि० जलता किं० क्या अ० गृह झि० जले कु० भीत्ति झि० जले क०० तट्टी झि० जले था० स्थंभ झि०जले व० मोभ झि० जले वं० वंश झि० जले म० निवा झि० जले व० रसी झि० जले छि० किलिंज झि० जले छा० छादन झि० जले जो० अग्नि झि० गो० गौतम नो० नहीं अ० गृह झि० जले नो० नहीं कु० भीत्ति झि० जले जा० यावत् छा० छादन

सूत्र

नो पदीवचंपए झियाइ, जोई झियाइ ॥ ११ ॥ अगारस्सणं भंते ! झियायमाणस्स किं अगारे ज्झियाइ, कुड्डाज्झियाइ, कडणाज्झियाइ, धारणाज्झियाइ, वलहरणेझियाइ, वंसाज्झियाइ, मल्लाज्झियाइ वग्गाज्झियाइ छित्तराज्झियाइ, छाणेज्झियाइ, जोईज्झियाइ ? गोयमा ! नो अगारे ज्झियाइ, नो कुड्डाज्झियाइ जाव नो छाणाज्झियाइ,

भावार्थ

दीपक की शिखा जलती है, बत्ती जलती है, तेल जलता है, दीपक का ढक्कन जलता है, अथवा दीपक की ज्योति जलती है ? अहो गौतम ! दीपक नहीं जलता है यावत् दीपक का ढक्कन भी नहीं जलता है परंतु दीपक की ज्योति ( अग्नि ) जलती है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! अग्नि से जलता हुवा गृह क्या गृह जलता है, छपर जलता है, भित्ति जलती है, तट्टी जलती है, स्थंभ जलता है, उपर की कडीयों जलती है, वंशादि आच्छादन जलता है अथवा अग्नि जलती है ऐसा कहना ? अहो गौतम ! गृह नहीं

कइकिरिए ? एवं एसो जहा पढमो दंडओ तहा इमोवि अपरिसेसो भाणियव्वो जाव वेमाणिए णवरं मणुस्से जहा जीवे ॥ १३ ॥ जीवाणं भंते ! ओरालिय सरीराओ कइ किरिया ? गोयमा ! सिय तिकिरिया जाव सिय अकिरिया ॥ नेरइयाणं भंते ! ओरालिय सरीराओ कइकिरिया एवं एसोवि जहा पढमो दंडओ तहा भाणियव्वो जाव वेमाणिया णवरं मणुस्सा जहा जीवा ॥ १४ ॥ जीवाणं भंते ! ओरालिय सरीरेहिंतो कइ किरिया? गोयमा! तिकिरियावि, चउ पंचकिरियावि अकिरियावि ॥ नेरइयाणं भंते! ओरा-

भावार्थ अहो भगवन् ! बहुत जीव को बहुत उदारिक शरीर से कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! क्वचित् तीन, क्वचित् चार व क्वचित् पांच क्रियाओं लगे और क्वचित् अक्रिय भी होवे. नारकीको तीन, चार व पांच क्रियाओं लगे ऐसे ही मनुष्य वर्जकर सब दंडक का जानना. मनुष्य में समुच्चय जीव जैसे कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! बहुत जीवों को उदारिक शरीर से कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम! क्वचित् तीन, चार व पांच क्रियाओं लगे. और अक्रिय भी होवे. अहो भगवन् ! नारकी को कितनी क्रिया लगे ? अहो गौतम ! जैसे प्रथम दंडक में कहा वैसे ही यहां जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! बहुत जीवों को बहुत उदारिक शरीर से कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! तीन, चार व पांच क्रियाओं लगे व अक्रिय होवे. अहो भगवन् ! उदारिक शरीर से नारकी को कितनी क्रियाओं लगे ?

त० उस काल ते० उस समय में रा० राजगृह न० नगर व० वर्णन युक्त गु० गुणशिल चे० चैत्य व० वर्णन युक्त जा० यावत् पु० पृथ्वीशिलापट्ट त० उस गु० गुणशिल चे० चैत्य की अ० नजदीक अ०

सूत्र

तहा आहारगंपि तेयगंपि कम्मगंपि भाणियव्वं एक्केक्के चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं भंते ! कम्मगसरीरेहिंतो कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठम सयस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ८ ॥ ६ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे वण्णओ गुणसिलए चेइए वण्णओ, जाव पुढवी सिलावट्टओ तस्सणं गुणसिलयस्सणं चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति

भावार्थ

वैक्रेय शरीर, बहुत जीव एक वैक्रेय शरीर और बहुत जीव बहुत वैक्रेय शरीर ऐसे दंडक जानना. ऐसे ही आहारक तेजस व कार्माण का जानना. उदारिक शरीर सिवा अन्य चार शरीरों की घात नहीं हो सकती है इससे इन में कचित् तीन व कचित् चार क्रियाओं लगती हैं. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह आठवा शतक का छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ८ ॥ ६ ॥ ० ०

छठे उद्देश में क्रिया का स्वरूप कहा. इन में भी मद्वेषिकी क्रिया के कारन भूत अन्यतीर्थिको का विवाद कहते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नाम का नगर था. उस का वर्णन उववाइ सूत्र से जानना. उस की ईशान कोन में गुणशील नामक उद्यान यावत् पृथ्वीशिलापट्ट था. उस गुणशील नामक

सूत्र

किंचि आणत्तंवा णाणत्तंवा एवं जहा इंदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया जाव तत्थणं जे ते उवउत्ता ते जाणंति पासंति आहारेंति, से तेणट्ठेणं णिक्खेवो भाणियव्वो ॥ ८ ॥ कइविहेणं भंते ! बंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे बंधे पण्णत्ते तंजहा-दव्वबंधेय भावबंधेय ॥ ९ ॥ दव्वबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-पओगबंधेय वीससाबंधेय ॥ १० ॥ वीससाबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते, मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सादीयवीससाबंधेय अणा-

भावार्थ

रहे हुवे हैं ? हां माकंदिय पुत्र ! भावितात्मा अनगार को यावत् अवगाह कर रहे हुवे हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरित किये हुवे पुद्गलों तथा उन के भेद वर्णादि विशेष पुद्गलों वगैरह जैसे पन्नवणा पद में पहिले उद्देशे में कहा वैसे ही यहां वैमानिक पर्यंत जानना. यावत् वहां जो उपयोग युक्त है वह जाने देखे व आहार करे वहां तक कहना. अहो माकंदिय पुत्र ! इसलिये ऐसा कहा है ॥८॥ अहो भगवन् ! बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! बंध के दो भेद कहे हैं. १ द्रव्य बंध और २ भाव बंध ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य बंध के दो भेद कहे हैं. १ प्रयोग बंध और २ वीस्रसा बंध ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! वीस्रसा बंध के

शब्दार्थ तिविह ति० त्रिविध से अ० असंयत अ० अविरत जा० यावत् ए० एकान्त बा० बाल भ० होवे त० तब ते० वे अ० अन्यतीर्थिक ते० उन थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० बोले तु० तुम अ०

मूल तिविहेणं असंजय जाव एगंत बालायावि भवामो ॥ तएणं तेअण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी-तुज्झेणं अज्जो ! दिज्जमाणे अदिण्णे, पडिग्गाहिज्जमाणे अपडिग्गहिए, निसिरिज्जमाणे अणिसिट्ठे तुज्झेणं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थणं अंतरा केइ अवहरिज्जा गाहावइस्सणं तं भंते ! णो खलु तं तुज्झे, तएणं तुज्झे अदिण्णं गिण्हह जाव अदिण्णं साइज्जह, तएणं तुज्झे अदिण्णं गिण्हमाणा जाव एगंत बालायावि भवह ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-नो

भावार्थ सो दीया नहीं कहा जावे, लेने लगा सो लीया नहीं कहा जावे, और पात्र में डालने लगा सो डाला नहीं कहा जावे, और भी कहा आप ! तुम को गृहस्थ आहारादि देनेलगा परंतु पात्र में गया नहीं इतने में कोई पुरुष उस आहार को ले जावे तो वह आहार गृहस्थ का गया परंतु तुम्हारा नहीं गया. इस से तुम अदत्त ग्रहण करने वाले यावत् अदत्त का आस्वादन करने वाले हो. और इस तरह अदत्त ग्रहण करते यावत् अदत्त का आस्वादन करते तुम असंयति अविरति यावत् एकान्त बाल होते हो. फीर स्थविर भगवन्त उन अन्य तीर्थिकों को ऐसा बोले कि अहो आर्यों ! हम अदत्त नहीं ग्रहण करते हैं अदत्त नहीं

अ० तहां च० चमरकी अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा के च० चमरचंचा रा० राज्यधानी प० प्ररूपी ए० एक योजन स० लाख आ० लम्बी वि० चौडी जं० जंबुद्वीप प्रमाण दि० द्वीपार्ध जो० योजन शत उ० ऊंचापने मू० मूल में प० पचास जो० योजन वि० चौडी उ० उपर स० साडीबारह जो० योजन क० कांगीना कांगरा अ० अर्द्ध जो० योजन आ० लंबे को० कोश वि० चौडा दे० देसऊणा अ०

सूत्र

सहस्साइ उग्गाहित्ता तत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचानामं राय-हाणी पण्णत्ता। एगं जोयण सय सहस्स आयाम विक्खंभेणं, जंबूद्दीवप्पमाणा दीवड्ढ जोयण सय उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं उवरिं अद्धतेरस जोय-णाइं कविसीसगा अद्धजोयण आयामेणं, कोसं विक्खंभेणं देसूण अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं एगा मेगाए बाहाए पंच २ दार सया अड्ढाइ जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं

भावार्थ

योजन रत्नप्रभा पृथ्वी को अवगाहकर चमर नामक असुरेन्द्र की चमरचंचा नामक राज्यधानी कही. यह राज्यधानी जंबूद्वीप प्रमाण एक लाख योजन की लम्बी चौडी कही. उस के कोट एक सो पचास योजन के ऊंचे कहे, मूल में पचास योजन की चौडी कही उपर साडी बारह योजन की चौडी कही. [illegible]

णि० देते अ० अदत्त भुं० भोगते अ०अदत्त सा०आस्वादते ति० त्रिविध ति० त्रिविध से अ०असंयत अ०

ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवंवयासी-अम्हेणं अज्जो ! दिज्जमाणे दिण्णे, गोहज्जमाणे पडिग्गहिए, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठे. अम्हेणं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थणं अंतरा केइ अवहरेज्जा अम्हेणं तं नो खलु गाहावइस्स तएणं अम्हे दिण्णं गिण्हामो, दिण्णं भुंजामो, दिण्णं साइज्जामो, तएणं अम्हे दिण्णं जाव दिण्णं साइज्जमाणा तिविहं तिविहेणं संजय जाव एगंत पंडियायात्रि तुब्भेणं अज्जो! अप्पणाचेव तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंत बालायात्रि

म को कोई पुरुष आहारादि देने लगा और पात्र में नहीं पडा इतने में कोई उस आहार वह आहार हमारा गया परंतु गृहस्थ का नहीं गया इस से हम दिया हुवा ग्रहण करते हैं, इस तरह दिया हुवा ग्रहण करते, भोगते व आस्वादते तीन करन व तीन योग से संयति, न यावत् एकान्त पंडित होते हैं परंतु तुम ही तीन करन तीन योग से असंयति, अविरति यावत् एकान्त बाल होते हो. तब वे अन्यतीर्थिकने स्थविर भगवंत को कहा कि किस तरह हम असंयति अविरति यावत् एकान्त बाल होते हैं ? स्थविर भगवंतने उत्तर दिया कि तुम अदत्त ग्रहण करते हो यावत् इस [illegible] बाल होते हो. फीर अन्यतीर्थिकने स्थविर भगवंतने कहा कि किस तरह हम

सूत्र

दीय वीससाबंधेय ॥ ११ ॥ पओग वीससाबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते, मागंदिय पुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-सिढिलबंधण बंधेय, घणियबंधण बंधेय ॥ १२ ॥ भावबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-मूलपगडि बंधेय उत्तरपगडिबंधेय ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते ! कइविहे भावबंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, मूलपगडिबंधेय, उत्तरपगडिबंधेय ; एवं जाव वेमाणियाणं ॥ १४ ॥ णाणावरणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स कइविहे भावबंधे पण्णत्ते ?

भावार्थ

कितने भेद कहे हैं ? सादी वीससा बंध व अनादि वीससा बंध ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! प्रयोग वीससा बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो मार्कदिय पुत्र ! प्रयोग वीससा बंध के दो भेद कहे हैं ? शिथिल बंधन बंध और घनित बंधन बंध ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! भाव बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो मार्कंदिय पुत्र ! भाव बंध के दो भेद कहे हैं. मूल प्रकृति बंध व उत्तर प्रकृति बंध ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने भाव बंध कहे हैं ? अहो मार्कंदिय पुत्र ! नारकी को दो प्रकार के भाव बंध कहे हैं. मूल प्रकृति बंध और उत्तर प्रकृति बंध. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म के कितने भाव बंध कहे हैं ? अहो मार्कंदिय पुत्र ! ज्ञानावरणीय कर्म के दो भाव बंध कहे हैं.

स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० बोले तु० तुम अ० आर्य ति० त्रिविध ति० त्रिविध से जा० यावत् ए० एकान्त बा० अज्ञान भ० होते हो त० तब ते० वे अ० अन्यतीर्थिक ते० उन थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० बोले तु० तुम अ० आर्य री० गति करते पु० पृथ्वी को पे० आक्रमतेहो अ० हणतेहो

मूल

भवह ॥ ४ ॥ तएणं ते अण्णउत्थिया थेरे भगवंते एवं वयासी-तुज्झेणं अज्जो तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंत बालयावि भवह ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-केणं कारणेणं अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंत बालयावि भवामो ? तएणं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवंवयासी-तुज्झेणं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेह अभिहणह, वत्तेह, लेसेह, संघाएह, संघट्टेह, परितावेह, किलामेह, उवद्दवेह ॥ तएणं तुज्झे पुढविं पेच्चेमाणा अभिहणमाणा जाव उवद्दवेमाणा

भावार्थ

योगसे असंयति अविरति यावत् एकान्त बाल हो क्योंकि तुमचलते हुये पृथ्वीकाया को हणते हो, मारते हो, ममलते हो, संघट्टन करते हो, परितापना उत्पन्न करते हो, किलामना देते हो व उद्वेग उत्पन्न करते हो. ऐसा अन्यतीर्थिक का कथन सुनकर स्थविर भगवंत बोले कि अहो आर्यो ! हम चलते हुवे पृथ्वी को आक्रमते नहीं हैं. यावत् उद्वेग नहीं उपजाते हैं क्योंकि शारीरिक व्यापारादि के लिये, ग्लानी की वैया-

जा० यावत् उ० उद्वेग उपजाते ति० त्रिविध ति० त्रिविध से अ० असंयत अ० अविरत जा० यावत् ए० एकान्त वा० बाल भ० होते हो ॥ ५ ॥ त० तब ते० वे अ० अन्यतीर्थिक थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० बोले तु० तुम अ० आर्य ग० जाते अ० नहीं गये वी० व्यतिक्रमते अ० नहीं व्यतिक्रमा रा० राजगृह न० नगर को सं० प्राप्त करने की का० इच्छा वाले अ० नहीं प्राप्त हुवे त० तब ते० वे थे०

सूत्र

केणं कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविहं तिविहेणं एगंत बालायावि भवामो? तएणं ते थेरा भगवंतो अण्णउत्थिए एवं वयासी-तुज्झेणं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेह जाव उवद्दवेह, तएणं तुज्झे पुढविं पेच्चेमाणा जाव उवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंत बालायावि भवह ॥ ५ ॥ तएणं ते अण्णउत्थिया थेरे भगवंते एवं वयासी-तुज्झेणं अज्जो ! गममाणे अगए वीइक्कमिज्जमाणे अवीइक्कंते रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपत्ते, तएणं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-नो खलु अज्जो ! अम्हे

भावार्थ

तीन योग से असंयति अविरति यावत् एकान्त बाल हैं ? स्थविरोंने उत्तर दिया कि अहो आर्यो ! तुम्हारे ही अभिप्राय से तुम पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करते हो यावत् उद्वेग उपजाते हो ॥ ५ ॥ पुनः अन्यतीर्थिक तीसरा प्रश्न करते हैं. अहो आर्यो ! जाते हुए नहीं गये, व्यतिक्रमते हुवे नहीं व्यतिक्रमे, और राजगृह नगर को प्राप्त होने की इच्छावाले प्राप्त नहीं हुवे ऐसा तुम मानते हो. तब स्थविर भगवन्तने

सूत्र

मागंदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तंजहा-मूलपगडिबंधेय, उत्तरपगडिबंधेय ॥ १५ ॥ णेरइयाणं भंते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कइविहे भावबंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता दुविहे भावबंधे पण्णत्ते तंजहा-मूलपगडिबंधेय, उत्तर पगडिबंधेय ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ णाणावरणिज्जेणं जहा दंडओ भणिओ एवं जाव अंतराइयं भाणियव्वो ॥ १६ ॥ जीवाणं भंते ! पावे कम्मे जेय कडे जाव जेय कज्जिस्सइ अत्थियाइं तस्स केइ णाणत्ते ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवाणं पावे कम्मे जेय कडे जाव जेय कज्जिस्सइ अत्थियाइं केइ णाणत्ते ? मागंदियपुत्ता ! से जहा णामए केइपुरिसे धणुं परामुसइ, परामुसइत्ता उसुं परामुसइ २ त्ता ठाणं

भावार्थ

मूल प्रकृतिबंध व उत्तर प्रकृतिबंध. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को ज्ञानावरणीय कर्म के कितने भाव बंध कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! दो भाव बंध कहे हैं ! मूलप्रकृतिबंध व उत्तर प्रकृति बंध. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. जैसे ज्ञानावरणीय का दंडक कहा वैसे ही अंतराय तक का दंडक कहना. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! जिन जीवोंने पापकर्म किये हैं और जो जीवों पापकर्म करेंगे उन में क्या भिन्नता है ? हां माकंदियपुत्र ! उन में भिन्नता है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जिन जीवोंने पापकर्मों

र्थ

तीर्थिक को प्र० देना प० प्रतिपादन करे प० प्रतिपादन करके ग० गति प्रवाद अ० अध्ययन प० प्ररूपा ॥ ६ ॥ क० कितने प्रकार का भं० भगवन् ग० गति प्रवाद प० प्ररूपा गो० गौतम पं० पांच प्रकार का ग० गति प्रवाद प० प्रयोगगति त० ततगति बं० बंधन छेदगति उ० उपपातगति वि० विहायोगति ए० यहां मे आ० आरंभकर प० प्रयोगपद नि० निर्विशेष भा० कहना जा० यावत् वि० विहायोगति

सूत्र

पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे गइप्पवाए पण्णत्ते तंजहा-पओगगई, ततगई, बंधणच्छे-यणगई, उववायगई, विहायगई एत्तो आरब्भ पओगपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव

भावार्थ

इस तरह पराजय करके गति प्रवाद नामक अध्ययन कहा ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार के गति प्रवाद कहे ! अहो गौतम ! गति प्रवादके पांच भेद कहे हैं. प्रयोगगति सो मन वचन व काया के योगों की प्रवृत्ति २ ततगति सो ग्रामादि जाने की प्रवृत्ति अथवा अवाधिभूत ग्रामादिक में से नगर में जाने की प्रवृत्ति ३ कर्मबंध छेदने से अथवा शरीर बंध छेदने से जीव की गति होवे सो बंधन छेद गति ४ अपने भव में आयुष्य क्षय कर अन्य स्थान उत्पन्न होने को गमन करना सो उपपात गति ५ मनुष्य पशु खेचरादि की शुभाशुभ गमन करने की प्रवृत्ति सो विहायो गति. इन पांचों गति का विस्तार पूर्वक कथन पन्नवणा सूत्र के सोलहवे पद से जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह आठवा शतक का सातवा उद्देशा

प० प्रत्यनीक प० प्ररूपे गो० गौतम त० तीन प० प्रत्यनीक इ० यह लोक प्रत्यनीक प० परलोक प्रत्यनीक दु० दोनों लोक प्रत्यनीक ॥ २ ॥ स० समूह भं० भगवन् प० प्रत्यय क० कितने प० प्रत्यनीक गो० गौतम त० तीन प० प्रत्यनीक कु० कुल प्रत्यनीक ग० गण प्रत्यनीक सं० संघप्रत्यनीक ॥ ३ ॥ अ० अनुकंपा भं० भगवन् प० प्रत्यय क० कितने प० प्रत्यनीक गो० गौतम त० तीन त० तपस्वी प्रत्यनीक गि० ग्लान

सूत्र

पडिणीया प० तं० इह लोगपडिणीए परलोग पडिणीए दुहलोग पडिणीए॥ २ ॥ समूहण्णं भंते! पडुच्च कइ पडिणीया प० ? गोयमा! तओ पडिणीया प० तं० कुलपडिणीए, गणपडिणीए, संघपडिणीए,॥ ३ ॥ अणुकंपं भंते! पडुच्च कइ पडिणीया पुच्छा ? गोयमा! तओ पडिणीया

भावार्थ

नीक ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! गति आश्री कितने प्रत्यनीक कहे ? अहो गौतम ! गति आश्री तीन प्रत्यनीक कहे. १ यह लोक प्रत्यनीक सो मनुष्य लक्षण पर्याय का प्रत्यनीक पंचाग्नि साधक तपस्वी जैसे इन्द्रियार्थ के प्रतिकूलपना से, २ परलोक प्रत्यनीक सो इन्द्रियार्थ में तत्पर रहकर परलोक का भय जाने नहीं ३ उभय लोक प्रत्यनीक चोरी प्रमुख से इस लोक व परलोक ऐसे दोनों लोक का सुख को नाश करे ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! समूह समवाय आश्री कितने प्रत्यनीक कहे ? अहो गौतम ! समूह आश्री तीन प्रत्यनीक कहे १ चंद्रादिक कुल का प्रत्यनीक २ कोटिकादि गण का प्रत्यनीक और ३ संघ का प्रत्यनीक ॥ ३ ॥ अहो भगवन् अनुकंपा निमित्त कितने प्रत्यनीक कहे हैं ? अहो गौतम ! तीन प्रकार के

सूत्र

कलिओगा एवं जाव चउरिंदिया, सेसा एगिंदिया जहा बेइंदिया पंचिदिय तिरिक्ख जोणिया जाव वेमाणिया जहा णेरइया, सिद्धा जहा वणस्सइकाइया ॥ ४ ॥ इत्थीओणं भंते ! किं कडजुम्माओ पुच्छा, गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्माओ, उक्कोसपदे कडजुम्माओ, अजहण्णमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्माओ जाव सियकलिओगाओ, एवं असुरकुमारइत्थीओवि जाव थणियकुमार इत्थीओवि । एवं तिरिक्ख जोणियइत्थीओवि । एवं मणुस्सइत्थीओवि । एवं वाणमंतर जोइसिय वेमाणिय

भावार्थ

उन का परिमाण किये बिना अनियत रूप होने से जघन्य व उत्कृष्ट पद में किसी का संभव नहीं है. मध्यम पद में स्यात् कृत युग्म यावत् स्यात् कलि युग्म. बेइन्द्रिय से चतुरेन्द्रिय के जघन्य पद में कृत युग्म, उत्कृष्ट पद में द्वापर युग्म, अजघन्य अनुत्कृष्ट पद में क्वचित् कृत युग्म यावत् क्वचित् कलियुग्म शेष सब एकेन्द्रिय का बेइन्द्रिय जैसे कहना. पंचेन्द्रिय तिर्यंच यावत् वैमानिक का नारकी जैसे कहना. सिद्ध का वनस्पति काया जैसे ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! स्त्रियों में क्या कृत युग्म है ? अहो गौतम ! जघन्य पद में कृत युग्म. मध्यम पद में स्यात् कृत युग्म यावत् स्यात् कलि युग्म. ऐसे ही असुरकुमार की स्त्रियों यावत् स्तनित कुमार की स्त्रियों, वैसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, वाणव्यंतर,

वहार का प० प्ररूपा आ० आगम सु० श्रुत आ० आज्ञा धा० धारणा जी० जीत ज० जैसे से० वह त० तहां आ० आगम सि० होवे आ० आगम से व० व्यवहार प० रखे णो० नहीं से० वह त० तहां आ० आगम सि० होवे ज० जैसे त० तहां सु० श्रुत से व० व्यवहार प० रखे णो० नहीं से० वह त० तहां सु० श्रुत सि० होवे ज० जैसे त० तहां आ० आज्ञा सि० होवे आ० आज्ञा से व० व्यवहार प० रखे णो० नहीं त० तहां आ० आज्ञा सि० होवे ज० जैसे त० तहां धा० धारणा सि० होवे धा० धारणा से

सूत्र

गोयमा! पंचविहे ववहारे पण्णत्ते, तंजहा-आगमे, सुए, आणा, धारणा, जीए ॥ जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेण ववहारं पट्ठवेज्जा ॥ णोय से तत्थ आगमे सिया जहा से तत्थ सुए सिया, सुएणं ववहारं पट्ठवेज्जा ॥ णोय से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा णोय से तत्थ आणासिया जहा से तत्थ

भावार्थ

प्रत्यनीक ॥ ६ ॥ जो प्रत्यनीकपना का त्याग करते हैं वे शुद्ध व्यवहार पाल सकते हैं. अहो भगवन् ! व्यवहार के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! व्यवहार के पांच भेद कहे हैं. १ जिस से पदार्थ जाना जावे सो आगम व्यवहार २ सुना जावे सो श्रुत ३ आदेश कर देवे सो आज्ञा ४ धारण कर रखे सो धारणा और आचार (परंपराकी रीति) सो जीत व्यवहार. इन में से केवलज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानी, चउदह पूर्वधर व दशपूर्वधर इन का व्यवहार सो आगम व्यवहार. इस में प्रथम आलोचनादि केवल

शब्दार्थ

जा० यावत् क० कितने भं० भगवन् अ० अनुत्तर विमान प० कहे गो० गौतम प० पांच अ० अनुत्तर विमान प० कहे तं० वह ज० यथा वि० विजय जा० यावत् स० सर्वार्थसिद्ध ॥ १ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मा० मारणान्तिक स० समुद्घात से स० मरकर जे० जो भ० योग्य इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में ती० तीस नि० नरकावास में स० लक्ष अ० अन्यतर नि० नरकावास में ने० नारकीपने उ० उत्पन्न होने को से० अथ भं० भगवन् त० वहां आ० आहारकरे प० परिणमावे स० शरीर बं० बांधे गो०

सूत्र

पण्णत्ता? गोयमा! पंच अणुत्तर विमाणा पण्णत्ता,तंजहा विजए जाव सव्वट्ठसिद्धे॥ १॥

जीवेणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता जे भाविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु अन्नयरंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, सेणं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा बंधेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए तत्थगएचेव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा

भावार्थ

विमान की पृच्छा करते हैं. अहो भगवन् ! अनुत्तर विमान कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! अनुत्तर विमान पांच कहे हैं उन के नाम १ विजय २ वैजयंत ३ जयंत ४ अपराजित ५ सर्वार्थ सिद्ध ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मारणान्तिक समुद्घातसे मरकरके जो जीव इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासे में से किसी नरकावास में नारकीपने उत्पन्न होने योग्य होवे, वह जीव क्या वहां गया हुवा वहां के पुद्गलों का

शब्दार्थ दार १० रखे से० वह कि० क्या आ० कहा भं० भगवन् आ० आगमबलिक स० श्रमण णि० निर्ग्रंथ

सूत्र सुएणं, आणाए, धारणाए, जीएणं ॥ जहा २ से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा २ ववहारं पट्ठवेज्जा ॥ से किमाहु भंते ! आगमबलिया समणा निग्गंथा

भावार्थ है इस तरह समझाने पर अपना सब अतिचार कहे तो प्रायश्चित्त देवे. ऐसा प्रायश्चित्त सहर्ष ग्रहण करे तो अल्प काल में निर्वाण प्राप्त करे. अब श्रुत व्यवहार कहते हैं. अग्यारह अंग व नव पूर्व का जिनको ज्ञान होवे वे श्रुत व्यवहारी कहाते हैं. वे आलोचना करनेवाले का अभिप्राय जानने के लिये उस के मुख से तीन वार दोष कहने का कहे यदि तीनों वार एक सरिखा प्रकाश करे तो उसे शुद्ध समझे परंतु इस में भिन्नता मालूम पडे तो असत्य समझ कर उस को पहिले मृषावाद का प्रायश्चित्त देना फीर आलोचना का प्रायश्चित्त कहना. ३ आज्ञा व्यवहार. सूत्रार्थ के सेवन से महा गीतार्थ बने हुवे दो आचार्य जंघाबल की क्षीणता से विहार कर सके नहीं और अलग २ देशान्तर में रहे हुवे होवे, परस्पर एक दूसरे को मील सके नहीं. उस समय में उन में से कोई एक प्रायश्चित्त लेने को वांच्छे, और गीतार्थ शिष्य न होवे तो धारणा कुशल अगीतार्थ को अथवा शिष्य को सिद्धांत की भाषा से गूढार्थ अतिचार [illegible]

बंधइ, पुरिसो बंधइ, णपुंसगो बंधइ, इत्थीओ बंधंति, पुरिसा बंधंति,णपुंसगा बंधंति, णोइत्थिणोपुरिसोणोणपुंसगो बंधइ ? गोयमा ! णो इत्थी बंधइ, णो पुरिसो बंधइ जाव णो णपुंसगा बंधति ॥ पुव्वपडिवण्णए पडुच्च अवगयवेदा बंधंति, पडिवज्जमाणए पडुच्च अवगयवेदो वा बंधइ, अवगयवेदा वा बंधति,॥ जइ भंते! अवगयवेदो वा बंधइ, अवगयवेदा वा बंधंति, तं भंते ! किं इत्थिपच्छाकडो बंधइ, पुरिसपच्छाकडो बंधइ, णपुंसगपच्छाकडोबंधइ, इत्थिपच्छाकडा बंधंति, पुरिसपच्छाकडा बंधंति, णपुंसगपच्छा-

भावार्थ

केवली एक स्त्री व एक पुरुष है. इस के विरह का संभव होने से असंयोगी चार व द्विसंयोगी चार ऐसे आठ विकल्प होते हैं. १ एक मनुष्य बांधे २ एक मनुष्यणी बांधे ३ बहुत मनुष्य बांधे, और ४ बहुत मनुष्यणी बांधे. द्विसंयोगी चार भांगे १ एक मनुष्य एक मनुष्यणी २ एक मनुष्य बहुत मनुष्यणी ३ बहुत मनुष्य व एक मनुष्यणी और ४ बहुत मनुष्य बहुत मनुष्यणी. अब वेद की अपेक्षा से प्रश्न करते हैं अहो भगवन ! ईर्यापथिक क्रिया का बंध क्या एक स्त्री करे, एक पुरुष करे, एक नपुंसक करे, बहुत स्त्री, करे, बहुत पुरुष करे, बहुत नपुंसक करे अथवा नो स्त्री नो पुरुष नो नपुंसक बंध करे ? अहो गौतम ! ईर्यापथिक क्रिया का बंध स्त्री करे नहीं यावत् बहुत नपुंसक करे नहीं. पूर्व प्रतिपन्न आश्री विगत [illegible] हैं. और वर्तमान काल आश्री विगतवेदवाला बांधता है अथवा विगतवेद वाले बांधते

शब्दार्थ मारणान्तिक से स० मरकर जे० जो भ० योग्य च० चौसठ अ० असुरकुमार वास स० लक्ष अ० अन्यतर अ० असुरकुमार वास में अ० असुरकुमार पने उ० उत्पन्न होने को ज० जैसे ने० नारकी त० तैसे भा० कहना जा० यावत् थ० स्थनित कुमार ॥ ३ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मा० मारणान्तिक स० करके जे० जो भ० योग्य अ० असंख्यात पु० पृथ्वी कायिक वा० वास स० लक्ष अ० अन्यतर पु० पृथ्वीकायिक वा० वास में पु० पृथ्वीकायपने उ० उत्पन्न होने को से० अथ भं० भगवन् मं० मेरु प० पर्वत

सूत्र पुढवी ॥ २ ॥ जीवेणं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए जे भविए चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए जहा नेरइया तहा भाणियव्वा जाव थणियकुमारा ॥ ३ ॥ जीवेणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहए २ जे भविए असंखेज्जेसु पुढविकाइया वास सयसहस्सेसु अन्नयरंसि पुढविकाइयावासंसि पुढवि काइयत्ताए उववज्जित्तए सेणं

भावार्थ और शरीर बांधते हैं, ऐसे ही सातवी पृथ्वीतक का जानना ॥ २ ॥ असुरकुमार यावत् स्थनित कुमार में उत्पन्न होकर आहार करने का, रस परिणमाने का व शरीर बांधने का नारकी जैसे कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! मारणान्तिक समुद्घात से मरकर जो जीव पृथ्वीकायिक के असंख्यात स्थान में से किसी स्थान में उत्पन्न होने योग्य होता है वह मेरु पर्वत की पूर्व दिशा में कितना दूर जाता है और किस स्थान मात्र

च्छाकडाए, पुरिसपच्छाकडाए, णपुंसगपच्छाकडाए बंधंति ? गोयमा ! इत्थीप-
वि बंधइ, पुरिसपच्छाकडोवि बंधइ, णपुंसगपच्छाकडोवि बंधइ, इत्थीपच्छाकडा
वि, पुरिसपच्छाकडावि बंधंति, णपुंसगपच्छाकडावि बंधंति, अहवा इत्थीपच्छाक-
डोय पुरिसपच्छाकडोयबंधइ, १२ एवं एए छव्वीसं भंगा भाणियव्वा जाव
अहवा इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय णपुंसगपच्छाकडाय बंधंति ॥ तं भंते ! किं

एक नपुंसक पश्चात् कृत और ४ बहुत पुरुष पश्चात् कृत बहुत नपुंसक पश्चात् कृत अब तीन संयोगी
[illegible] कहते हैं १ एक स्त्री एक पुरुष एक नपुंसक २ एक स्त्री एक पुरुष बहुत नपुंसक
[illegible] नपुंसक ४ बहुत स्त्री एक पुरुष एक नपुंसक ५ बहुत स्त्री बहुत पुरुष एक नपुंसक
[illegible] नपुंसक ७ एक स्त्री बहुत पुरुष बहुत नपुंसक और ८ बहुत स्त्री, बहुत पुरुष व बहुत नपुंसक
[illegible] बांधे ? अहो गौतम ! एक स्त्री पश्चात् कृत, एक पुरुष पश्चात् कृत व एक नपुंसक
[illegible] ऐसे ही २६ भांगे जानना यावत् बहुत स्त्री, बहुत पुरुष बहुत नपुंसक पश्चात् कृत
[illegible] तीन काल आश्री आठ विकल्प का प्रश्न करते हैं १ गत काल में बंधा
[illegible] और अनागत में बंधेगा २ गत काल में बंधा, वर्तमान में बंधता है व अनागत में
[illegible] वर्तमान में नहीं बंधता है, व अनागत में बंधेगा ४ गतकाल में बंधा

सूत्र

देवे सेणं णो पासादीए णो दरसणिज्जे, णो अभिरूवे णो पडिरूवे, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-वेउव्विय सरीराय अवे-उव्विय सरीराय, तत्थणं जे से वेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे सेणं पासादीए जाव पडिरूवे, तत्थणं जे से अवेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे सेणं णो पासादीए जाव णो पडिरूवे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-तत्थणं जे से वेउव्वियसरीरे तंचेव जाव णो पडिरूवे ? गोयमा ! से जहा णामए-इहमणुस्सलोगंसि दुवे पुरिसा भवंति, एगे पुरिसे अलंकिय विभूसिए, एगे पुरिसे अणलंकिय विभूसिए, एएसिणं

भावार्थ

कुमारवास में दो असुरकुमार असुरकुमारपने उत्पन्न हुवे, जिन में एक असुरकुमार देव प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप होवे और दूसरा प्रासादिक दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप होवे नहीं, तो यह किस तरह है? अहो गौतम! असुरकुमार देव के दो भेद कहे हैं. एक वैक्रेय शरीर किया हुवा और दूसरा वैक्रेय शरीर नहीं किया हुवा. जो वैक्रेय शरीर वाला होता है वह प्रासादिक यावत् प्रतिरूप होता है. और जो वैक्रेय शरीर रहित होता है वह प्रासादिक यावत् प्रतिरूप नहीं होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा कि वैक्रेय शरीरवाला प्रासादिक यावत् प्रतिरूप है, और वैक्रेय शरीर रहित प्रासादिक यावत्

जाव अत्थेगइए न बंधी न बंधइ नबंधिस्सइ ॥ गहणागारिसं पडुच्च अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ एवं जाव अत्थेगइए नबंधी बंधइ बंधिस्सइ, णो चेवणं नबंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगइए नबंधी नबंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगइए न बंधी नबंधइ नबंधिस्सइ ॥ तं भंते ! किं साइयं सपज्जवसियं बंधइ, साइयं अपज्जवसियं बंधइ, अणाइयं

भावार्थ

नहीं किया वर्तमान में उपशान्त मोह होने से बांधता है. और अनागत में भी बंध करेगा ६ क्षीण मोह नहीं होने से गतकाल में बंध नहीं किया. वर्तमान में क्षीण मोह होने से बांधता है और अनागत में शैलेशी पना को प्राप्त होने से बंध नहीं करेगा ७ किसी भव्य जीव ने गतकाल में बंध नहीं कीया, वर्तमान में नहीं बंधता है अनागत में क्षपक होगा तब बंध करेगा ८ अभव्य जीव ने गतकाल में नहीं बंधा वर्तमान में नहीं बंधता है व अनागत में बंधेगाभी नहीं क्योंकी यह प्रथम गुणस्थान नहीं छोडता है. अब एक भव आश्री ईर्यापथिक कर्म पुद्गल का ग्रहण रूप आकर्ष सो ग्रहणाकर्ष उस आश्री किसी दीर्घ आयुष्य वाले केवलज्ञानी ने गतकाल में ईर्यापथिक क्रिया का बंध किया, वर्तमान में करते हैं और अनागत में करेंगे २ केवल ज्ञानी ने गत काल में ईर्यापथिक क्रिया का बंध किया. वर्तमान में करते हैं, और अनागत में शैलेशीपना से नहीं करेगा. ३ कोई जीव उपशम श्रेणी पर चढकर पीछा पडा उसने गतकाल में बंध किया, वर्तमान में नहीं बंधता है और

[illegible]

सूत्र

धायइसंडेसु, एवं जिवस, जुय, जव, अंगुल, जाव जोयणकोडिया जोयण कोडा कोडिया संखेज्जेसु असंखेज्जेसु, जोयणसहस्सेसु लोगंतेवा एगपदेसियं सेढिं मोत्तूण असंखेज्जेसु पुढविकाइया वास सयसहस्सेसु अण्णयरंसि पुढवि काइया-वासंसि पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्ता तओ पच्छा आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा बंधेज्जा, जहा पुरच्छिमेणं मंदरस्स पव्वयस्स आलावओ भणिओ, एवं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं उड्ढे अहे जहा पुढविकाइया तहा एगिंदियाणं सव्वेसिं एक्के-

भावार्थ

ष्ट, अंगुल यावत् कोटाकोटि योजन, संख्यात, असंख्यात योजन सहस्र व लोकान्त तक जाकर अंगुल के असंख्यातवे भाग जितने स्थान में एक प्रदेशात्मक श्रेणी को अवगाह करके पृथ्वीकाय के असंख्यात सहस्र स्थान में से किसी स्थान में उत्पन्न हुए पीछे आहार करते हैं, आहारकरके परिणमाते हैं व शरीर बांधते हैं.

[illegible]

बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ? गोयमा ! अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगइए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगइए बंधी नबंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगइए बंधी नबंधइ नबंधिस्सइ, ॥ तं भंते ! किं साइयं सपज्जवसियं बंधइ, पुच्छा ? तहेव गोयमा ! साइयंवा सपज्जवसियं बंधइ, अणाइयंवा सपज्जवसियं बंधइ अणाइयंवा अपज्जवसियं बंधइ, णो चेवणं साइयं

काल में किया वर्तमान में करे नहीं व अनागत में नहीं करेंगे ? अहो गौतम ! जिन संसारी जीवोंने यथाख्यात नहीं प्राप्त किया उनोंने गत काल में बंध किया, वर्तमान में बंधते हैं व अनागत में बंधेंगे २ जिन का आगामिक काल में मोह क्षय होगा उनोंने गत काल में बंध किया, वर्तमान में करते हैं व आगामिक में नहीं करेंगे ३ कितनेक उपशम श्रेणीवालेने गत काल में बंध किया, वर्तमान में नहीं करते हैं व आगामिक में पडवाइ बनकर बंध करेंगे४ कितनेक केवल ज्ञानीने गत काल में बंध किया, वर्तमान में नहीं करते हैं और अनागत में नहीं करेंगे * अहो भगवन् ! क्या सांपरायिक बंध सादि अंत है, सादि अनंत है, अनादि सांत हैं, या अनादि अनंत है ? अहो गौतम ! उपशांत मोह से पडकर सांपरायिक

* सांपरायिक बंध में मात्र चार भांगे ही पाते हैं क्यों कि यह बंध अनादि है, पहिले सब जीवों को हुवा है

सूत्र

गोयमा ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे, कयरे पुरिसे णो पासादीए जाव णो पडिरूवे, जेवा से पुरिसे अलंकिय विभूसिए जेवासे पुरिसे अणलंकियविभूसिए ? भगवं ! तत्थ जे से पुरिसे अलंकियविभूसिए सेणं पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे,जेवासे पुरिसे अणलंकियविभूसिए सेणं पुरिसे णो पासादीए जाव णो पडिरूवे । से तेणट्ठेणं जाव णो पडिरूवे ॥ १ ॥ दो भंते ! णागकुमारा देवा एगंसि णागकुमारावासंसि एवंचेव, एवं जाव थणियकुमारा, ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया एवंचेव ॥ २ ॥ दो भंते ! णेरइया एगंसि णेरइयावासंसि

भावार्थ

प्रतिरूप नहीं है ? अहो गौतम ! जैसे इस मनुष्य लोक में दो पुरुषों हैं जिन में एक पुरुष वस्त्रालंकार से अलंकृत व आभूषणों से विभूषित है और दूसरा पुरुष अलंकृत व विभूषित नहीं है. अब उन में कौनसा पुरुष प्रासादिक यावत् प्रतिरूप है और कौनसा पुरुष प्रासादिक यावत् प्रतिरूप नहीं है ? अहो. भगवन् ! जो पुरुष,वस्त्र अलंकार से अलंकृत व आभरणों से विभूषित है वह पुरुष प्रासादिक है, और जो पुरुष अलंकृत व विभूषित नहीं है वह प्रासादिक यावत् प्रतिरूप नहीं है; इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् प्रतिरूप नहीं है ॥१॥ ऐसे ही नागकुमार यावत् स्तनितकुमार वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का जानना ॥ २ ॥ अहो

द० दर्शन परिषह ॥ १२ ॥ प० पे.भं० भगवन् बा० बाइस परिषह क० कितनी क० कर्म प्रकृति में स० समवर्तते हैं गो० गौतम च० चार क० कर्म प्रकृति में स० समवर्तते हैं णा० ज्ञानावरणीय वे०वेदनीय मो० मोह०ं अं० अंतराय णा० ज्ञानावरणीय में भं० भगवन् क० कितने प० परिषह स० समवर्तते हैं गो० गौतम दो० दो परिषह स० समवर्तते हैं प० प्रज्ञा परिषह अ० अज्ञान परिषह वे०वेदनीय में ए० अग्या-

जाव दंसण परीसहे ॥ १२ ॥ एएणं भंते ! बावीसं परीसहा कइ कम्मपगडीसु समोयरंति ? गोयमा ! चउसु कम्म पगडीसु समोयरंति, तंजहा-णाणावरणिज्जे, वेयणिज्जे, मोहणिज्जे अंतराइए ॥ णाणावरणिज्जेणं भंते ! कम्मे कइ परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! दो परीसहा समोयरंति तंजहा-पण्णा परीसहे अण्णाण परीसहे ॥ वेयणिज्जेणं भंते ! कइ परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एक्कारस परीसहा समोयरंति

भावार्थ अहो भगवन् ! परिषह कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! परिषह बाइस कहे हैं. उन के नाम. १ क्षुधा परिषह २ पिपासा परिषह ३ शीत ४ उष्ण ५ दंश मशक ६ अचेल ७ अरति ८ स्त्री ९ चर्या १० निषिद्या, ११ शय्या १२ आक्रोश १३ वध १४ याचना १५ अलाभ १६ रोग १७ तृणस्पर्श १८ जल्लमेल १९ सत्कार पुरस्कार २० प्रज्ञा २१ अज्ञान और २२ दर्शन परिषह ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! उक्त बाइस परिषह कितनी कर्म प्रकृतियों के उदय में आते हैं ? अहो गौतम ! ज्ञानावरणीय, वेदनीय, मोहनीय व

॥ ६ ॥ पूर्ववत् स० यह हो भं० भगवन् छ० छठा स० शतक में छ० छठा उ० उद्देशा ॥ ६ ॥ ६ ॥

अ० अथ भं० भगवन् सा० शाल वी० ब्रीहि गो० गेहुं ज० यव ज० जवार ए० इन ध० धान्य को को० कोठे में गुप्त प० बांस के टोपले में गुप्त मं० तृण के माले में उ० उपलिप्त लि० लिप्त पि० ढका हुवा मु० मुद्रित हुवा लं० लांछित किया की के० कितना काल जो० योनि सं० रहती है गो० गौतम ज० जघन्य अं० अंत मुहूर्त उ० उत्कृष्ट ति० तीन सं० संवत्सर ते० उस पीछे जो० योनि प० म्लान होवे ते० उस

सूत्र

सेवं भंते भंतेत्ति पुढवि उद्देसओ सम्मत्तो ॥ छट्ठसए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥६॥६॥

अह भंते ! सालीणं, वीहीणं, गोधूमाणं, जवाणं, जवजवाणं, एएसिणं धण्णाणं कोट्ठाउत्ताणं, पल्लाउत्ताणं, मंचाउत्ताणं, मालाउत्ताणं, उल्लित्ताणं, लित्ताणं, पिहियाणं मुद्दियाणं, लंछियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ ? गोयमा ! जहण्णं अंतोमुहुत्तं

भावार्थ

गल रस पने परिणमाते हैं व शरीर बांधते हैं और कितनेक वहां से पीछे स्व शरीर में आकर दूसरी वक्त मारणा- न्तिक समुद्घात करके वहां उत्पन्न होते हैं और फीर आहारादि करते हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह छठा शतक का छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ६ ॥ ६ ॥

अहो भगवन् ! शाल, ब्रीहि, गेहुं, यव व जवार इन धान्य को कोठा, पाला, मांचा, व माले में रखकर

सूरिया किं तीयं खेत्तं ओभासंति, पडुप्पण्णं खेत्तं अणागयं खेत्तं ओभासंति ? गोयमा ! नो तीयं खेत्तं, पडुप्पण्णं खेत्तं ओभासंति, नो अणागयं खेत्तं ओभासंति ॥ तं भंते ! किं पुट्ठं ओभासंति, किं अपुट्ठं ओभासंति ? गोयमा ! पुट्ठं ओभासंति नो अपुट्ठं ओभासंति जाव नियमा छद्दिसिं ॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! सूरिया किं तीयं खेत्तं उज्जोवेंति एवं चेव जाव नियमा छद्दिसिं ॥ एवं तवेंति, एवं भासेंति जाव नियमा छद्दिसिं ॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! सूरिया किं तीये खेत्ते किरिया कज्जइ, पडुप्पण्णे खेत्ते किरिया कज्जइ, अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ? गोयमा ! नो तीये खेत्ते किरिया

चे किरिया कज्जइ, नो अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ, ।

? अहो गौतम ! अतीत व अनागत क्षेत्र को नहीं प्रकाशते हैं मात्र वर्तमान
वन् ! उसे क्या स्पर्शते हुए प्रकाशते हैं या विना स्पर्शते हुए प्रकाशते हैं ?
ए प्रकाशते हैं परंतु विना स्पर्शते हुए नहीं प्रकाशते हैं यावत् छदिशि को प्रकाशते
करते हैं. तपते हैं, यावत् भास करते हैं. अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में
करते हैं वर्तमान क्षेत्र में क्रिया करते हैं या अनागत क्षेत्र में करते हैं!

सूत्र

णेरइयत्ताए उववण्णा तत्थणं एगे णेरइए महाकम्मतराएचेव महावेयणतरा चेव, एगे णेरइए अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव से कहमेयं भंते ! एवं? गोयमा ! णेरइया ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा मायीमिच्छादिट्ठी उववण्णगाय, अमायी सम्मदिट्ठीउववण्णगाय, तत्थणं जे से मायीमिच्छादिट्ठी उववण्णए णेरइए सेणं महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव, तत्थणं जे से अमायीसम्मदि उववण्णए णेरइए सेण अप्पकम्मतराए चेव अप्पवेयणतराए चेव ॥ ३ ॥ दो भंते ! असुरकुमारा एवं चेव ॥ एवं एगिंदिय विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिया ॥४॥ णेरइयाणं

भावार्थ

भगवन् ! एक ही नरकावास में दो नेरइये नारकीपने उत्पन्न हुवे, जिन में एक नारकी महाकर्मवाला यावत् महावेदनावाला, दूसरा नारकी अल्पकर्मवाला यावत् अल्पवेदनावाला है तो यह किम तरह है ? अहो गौतम ! नारकी के दो भेद कहे हैं. १ मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्नक और २ अमायीसमदृष्टि उत्पन्नक. उन में जो मायीमिथ्यादृष्टि उत्पन्नक नारकी है वह महाकर्मवाला यावत् महावेदनावाला है और जो अमायी सम्यग् दृष्टि उत्पन्नक नारकी है वह अल्प कर्मवाला यावत् अल्प वेदनावाला है ॥ ३ ॥ ऐसे ही असुरकुमार यावत् एकेन्द्रिय व विकलेन्द्रिय छोडकर सब दंडक का जानना ॥ ४ ॥

शब्दार्थ ॥ २ ॥ अ० अथ भं० भगवन् अ० अलसी (भंगी) कु० कुसुम्भो को० कोद्रव कं० कांग व० बंटी रा० राल गो० कोद्रव विशेष स० सन स० सरसव मू० मूलक बीज ते० वैसे ॥३॥ ए० एक मु० मुहूर्त का के० कितने उ० उश्वास वा० वाद वि० कहा गो० गौतम अ० असंख्यात स० समय का स० वृंद का स० मीलने का सं० संयोग सा० वह ए० एक आ० आवलिका प० कहाती है सं० संख्यात आ० आवलिका उ० उश्वास

सूत्र कोदूसग, रालग, सरिसव, मूलगबीयमाईणं एएसिणं धन्नाणं एयाणिवि तहेव, णवरं सत्त संवच्छराइं सेसं तंचेव ॥ ३ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! मुहुत्तस्स केव-इया ऊसासद्धा वियाहिया ? गोयमा ! असंखिज्जाणं समयाणं समुदय समइ समाग-मेणं साएगा आवलियत्ति पवुच्चइ. संखिज्जा आवलिया ऊसासो, संखेज्जा आव-लिया निस्सासो, हट्ठस्स अणवगल्लस्स निरुवकिट्ठस्स जंतुणो, एगे ऊसास नीसासे एसपाणुत्ति वुच्चइ ( १ ) सत्तपाणूणि से थोवे, सत्त थोवाइं सलवे ॥

भावार्थ अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पांच वर्ष तक रहे॥२॥ अलसी, कुसुंभ, कोद्रव, कांग, बंटी, राल, कोद्रव विशेष, सण, सरसव, मूले का बीज वगैरह धान्य को कोठे आदि में रख कर लींपे यावत् रेखा से मुद्रित करे सब सात वर्ष तक उन धान्यों की योनि रहती है ॥३॥ अब स्थिति का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन्! एक मुहूर्त के कितने श्वासोश्वास कहे ? अहो गौतम ! असंख्यात समय के समुदाय की एक आवलिका होती है, संख्यात आवलिका का एक उश्वास, संख्यात आवलिका का एक नीश्वास हृष्ट,तुष्ट, जरा व रोग से अपरामृत

सूत्र

अगणिकाए, णिद्धे-तेल्ले ॥ छारियाणं भंते पुच्छा ? गोयमा ! एत्थणं दोणया भवंति तंजहा णिच्छइयणएय, वावहारियणएय, वावहारियणयस्स लुक्खाछारिया, णेच्छइयणयस्स पंचवण्णे जाव अट्ठफासा पण्णत्ता ॥ ३ ॥ परमाणुपोग्गलेणं भंते ! कइवण्णे जाव कइफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगवण्णे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते ॥ दुपदेसिएण भंते ! खधे कइवण्णे पुच्छा ? गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय दुफासे सिय तिफासे

भावार्थ

मे लाल मजीठ, पीली हल्दी, श्वेत शंख, सुगंधी कोष्टक, दुर्गन्धी मृत्युक शरीर, तिक्तरस, निंब, कटुक सूंठ, कषायला तूरा कबीठ, अम्बट इमली, मधुर सक्कर. कर्कश स्पर्श वज्र, कोमल मक्खन, भारी लोहा, हलका बोरपत्र, शीत हिम, ऊष्ण अग्नि, चिकना तेल, रूक्ष राख यों सब में व्यवहार नय से एक२ ही वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पाता है और निश्चय नय से पांच वर्ण यावत् आठोंही स्पर्श पाते हैं. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल में कितने वर्ण यावत् स्पर्श पाते हैं ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल में एक वर्ण एक रस दो स्पर्श कहे हैं. अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श कहे हैं ? अहो गौतम ! कदाचित् एक वर्ण कदाचित् दो वर्ण, यदि दोनों एक वर्ण के होवे तो एक ही वर्ण, इस के पांच विकल्प

शब्दार्थ

भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की अ० नीचे गा० गृह स० सन्निवेश नो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ ॥ ३ ॥ अ० है भं० भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की अ० नीचे उ० उदार व० बद्दल सं० स्नेह उत्पन्न होवे स० पुद्गल होवे वा० वर्षा वा० वर्षे हं० हां अ० है ति० तीनों प० करे दे० देव प० करे अ० असुर ना० नाग कुमार ॥ ४ ॥ अ० है भं० भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीकी अ०नीचे बा०बादर थ०स्थनित शब्द हं०हां अ०है ति०तीनों प० करे ॥ ५ ॥ अ० है भं० भगवन्

मूत्र

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गामाइवा, जाव सण्णिवेसाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥ ३ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे उराला वलाहया संसेयंति समुच्छंति, वासं वासंति ? हंता अत्थि तिण्णिवि पकरेंति देवोवि पकरेइ असुरोवि, नागोवि, ॥ ४ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बादरे थणियसद्दे ? हंता अत्थि तिण्णिवि पकरेंति ॥ ५ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयण-

भावार्थ

सन्निवेश क्या है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की नीचे बडे बद्दल उत्पन्न होते हैं व वर्षा वर्षाते हैं ? हां गौतम अहो भगवन् ! वहां क्या देव, असुर व नाग वर्षाते हैं ? हां गौतम ! तीनों वर्षा वर्षाते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी नीचे क्या बादर स्थनित शब्द है ? हां गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी नीचे बादर स्थनित शब्द है और उसे असुर, नाग व देव ऐसे तीनों जातिवाले करते हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या इस रत्नप्रभा पृथ्वी

सिय चउफासे ॥ एवं तिपदेसिएवि-णवरं एगवण्णे सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, एवं रसेसुवि, सेसं जहा दुपदेसियस्स, एवं चउप्पदेसिएवि णवरं सिय एगवण्णे जाव सिय चउवण्णे; एवं रसेसुवि, सेसं तंचेव ॥ एवं पंचपएसिएवि णवरं सिय एगवण्णे जाव पंचवण्णे एवं रसेसुवि; गंध फासा तहेव जहा पंचपदेसिओ ॥ एवं जाव असंखेज्जपदेसिओ ॥ सुहुम परिणएणं भंते ! अणंतपदेसिए खंधे कइवण्णे ? जहा पचपदेसिए तहेव

दोनों दो वर्ण के होवे तो दो वर्ण इस के दश विकल्प. ऐसे ही स्यात् एक गंध, स्यात् दो गंध, इस के तीन विकल्प, ऐसे ही स्यात् एक रस, स्यात् दो रस दोनों के १५ विकल्प, ऐसे ही स्यात् दो स्पर्श, स्यात् तीन स्पर्श, स्यात् चार स्पर्श, इस के ४२ विकल्प होते हैं. ऐसे ही तीन प्रदेशिक स्कंध का कहना. विशेष में स्यात् तीनों का एक वर्ण जिस के पांच विकल्प यावत् तीन वर्ण सब ४५ विकल्प, गंध के द्विसंयोगी दो, तीन संयोगी तीन, ऐसे पांच रस के ४५ विकल्प वर्ण जैसे कहना, और शेष सब द्विप्रदेशिक स्कंध जैसे कहना. स्पर्श के २५ भांगे सब मीलकर १२० भांगे हुवे यावत् ऐसे ही चार प्रदेशिक का. विशेष में स्यात् एक वर्ण स्यात् चार वर्ण सब भांगे ९० पाते हैं. गंध के ६, रस के ९०, स्पर्श के ३६, सब२२३भांगे वर्ण के. ऐसे ही पांच प्रदेशिक का कहना विशेष में स्यात एक वर्ण स्यात् पांच वर्ण ऐसे ही रस गंध व स्पर्श का पूर्वोक्त प्रकार से कहना, सब भांगे ४७४ हुवे. जैसे

शब्दार्थ आयुष्य बंध प० प्ररूपा गो० गौतम छ० छ प्रकार का आ० आयुष्यबंध जा० जातिनाम निधत्त आ० आयुष्यबंध ग० गतिनाम निधत्त आ० आयुष्यबंध ठि० स्थितिनाम निधत्त आ० आयुष्यबंध ओ० अवगाहन नाम निधत्त आ० आयुष्यबंध प० प्रदेश नाम निधत्त आ० आयुष्यबंध अ० अनुभाग नाम

सूत्र अगणी पुढवीसु अगणि पुढवीसु ॥ आउतेउ वणस्सइ, कप्पुवरिंमि कण्हराईसु ॥ १० ॥ कइविहेणं भंते ! आउयबंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तंजहा--जाइनाम निहत्ताउए, गतिनाम निहत्ताउए, ठिइनाम निहत्ताउए

भावार्थ में बादर अपकाय, बादर अग्निकाय व बादर वनस्पतिकाय नहीं है यह विशेषता है. नवग्रैवेयक से ईषत् प्राग्भार पृथ्वीतक वर्णन नहीं किया है, परंतु इस का निषेध जानना. तमस्काय वगैरह सौधर्मादि पांच देवलोक में अग्निकाय व पृथ्वीकाय का प्रश्न. सातों पृथ्वीयों में अग्निकाय का प्रश्न, और उपर के देवलोक में अपकाय, तेउकाय व वनस्पतिकाय का प्रश्न कहा है. ॥ १० ॥ पृथिव्यादि जीव आयुष्य सहित होते हैं इसलिये आयुष्य का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! आयुष्य का बंध कितने प्रकार का कहा ? अहो गौतम ! आयुष्य का बंध छ प्रकार का कहा है. एकेन्द्रियादि पांच प्रकार के जातिरूप नामकर्म की उत्तर प्रकृति विशेष अथवा जीव परिणामकी साथ नितिमय कर्म पुद्गलका अनुभव के लिये जो आयुष्य बांधनेमें आवे सो जाति नाम निधत्त आयुष्य २ नरकादिगति का आयुष्यबंध करे सो गति नाम निधत्त आयुष्य ३

सूत्र

णिरवसेसं ॥ ५ ॥ बादरपरिणएणं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कइवण्णे पुच्छा ? गोयमा ! सिय एगवण्णे जाव सिय पंचवण्णे, सियएगगंधे, सिय दुगंधे; सिय एगरसे जाव सिय पंचरसे, सिय चउफासे जाव सिय अट्ठफासे ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ ६ ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी अण्णउत्थियाणं भंते ! एवं माइक्खंति जाव परूवेंति

भावार्थ

पांच प्रदेशिक स्कंध का कहा ऐसे ही यावत् असंख्यात प्रदेशिक स्कंध का जानना. परमाणु से लगाकर असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध सूक्ष्म परिणाम रूप होता है और अनंत प्रदेशिक स्कंध सूक्ष्म तथा बादर दोनों परिणामरूप होता है इसलिये अनंतप्रदेशात्मक स्कंध की पृथक् व्याख्या करते हैं. अहो भगवन् ! सूक्ष्म परिणत असंख्यात प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्णादि कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसे पंच प्रदेशिक स्कंध का कहा वैसे ही इस का भी कहना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! बादर परिणत अनंतप्रदेशात्मक स्कंध में कितने वर्णादि हैं ? अहो गौतम ! स्यात् एक वर्ण स्यात् पांच वर्ण स्यात् एक गंध स्यात् दो गंध, स्यात् एक रस स्यात् पांच रस स्यात् चार स्पर्श स्यात् आठ स्पर्श भी होता है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह अठारहवा शतक का छठा उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १८ ॥ ६ ॥

छठे उद्देशे में नयवादिमत आश्रित वस्तु विचारणा कही. अब सातवे उद्देशे में अन्ययूथिक मत आश्री

सूत्र

उपावि ॥ दंडओ जाव वेमाणियाणं एवं एए दुवालस दंडगा भाणियव्वा ॥ ११ ॥ जीवाणं भंते ! किं जाइ नाम निहत्ता, जाइनामनिहत्ताउया, जाइनामनिउत्ता, जाइनामनिउत्ताउया, जाइगोयनिहत्ता, जाइगोयनिहत्ताउया, जाइगोयनिउत्ता, जाइगोयनिउत्ताउया, जाइनामगोय निहत्ता, जाइनामगोयनिहत्ताउया जाइ-नामगोयनिउत्ता, जाइ नामगोय निउत्ताउया जाव अणुभाग नामगोय निउत्ताउया ?

भावार्थ

नाम का बंध किया उन्हें भी जाति नाम निधत्त कहना. अनेक जीवों के जाति नाम निधत्त समान गति स्थिति, अवगाहना, प्रदेश व अनुभाग का जानना. इस तरह एक जीव व अनेक जीव के बारह दंडक चौवीस ही दंडक पर उतारना ॥११॥ १ एक जीव सामान्य जाति का आयुष्य बंध करे २ बहुत जीव सामान्य जाति का आयुष्य बंध करे ३ एक जीव उत्तम जाति का आयुष्य बंध करे ४ बहुत जीव उत्तम जाति का आयुष्य बंध करे, ५ एक जीव जाति की साथ नीच गोत्र का आयुबंध करे ६ बहुत जीव जाति की साथ नीच गोत्र के आयुष्य का बंध करे ७ एक जीव जाति की साथ उच्च गोत्र के आयुष्य का बंध करे ८ बहुत जीव जाति की साथ उच्च गोत्र के आयुष्य का बंध करे ९ एक जीव जाति की साथ नीच नाम व गोत्र के आयुष्य का बंध करे १० बहुत जीव जाति की साथ नीच नाम व गोत्र के आयुष्य का बंध करे ११ एक जीव जाति की साथ उच्च नाम व गोत्र के आयुष्य का बंध करे १२ बहुत जीव जाति की साथ

सूत्र

एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्संति, एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासइ, तंजहा मोसंवा, सच्चामोसंवा, से कहमेयं भंते! एवं ? गोयमा ! जंणं ते अण्णउत्थिया जाव जंणं एवमाहंसु मिच्छंते एव माहंसु, अहं पुण गोयमा ! एव माइक्खामि ४ णो खलु केवली जक्खाएसेणं आदिस्सइ, णो खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासइ, तंजहा मोसंवा सच्चामोसंवा ॥ केवलीणं असावज्जाओ अपरोवघाइयाओ आहच्च दो भासाओ भासइ, तंजहा सच्चंवा असच्चामोसंवा ॥ १ ॥ कइविहेणं भंते ! उवही पण्णत्ता ?

भावार्थ

प्रश्न करते हैं. राजगृह नगर में यावत पर्युपासना करते हुवे श्री गौतम स्वामी ऐसा बोले कि अहो भगवन्! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि केवलि के शरीर में यक्ष प्रवेश करते हैं जिससे केवली भी कदाचित मृषा व सत्यमृषा ऐसी दो भाषा बोले. अहो भगवन् ! यह कथन किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं उन का कथन मिथ्या है. अहो गौतम ! इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि केवली यक्षाधिष्ठित नहीं होते हैं. वैसे ही यक्षाधिष्ठित से मृषा व सत्यमृषा ऐसी भाषा केवली नहीं बोलते हैं; परंतु केवली सत्य व असत्यमृषा ऐसी दो

शब्दार्थ चि० रहते हैं सं० संठान से ए० एक प्रकार का वि०- स्वरूप वि० विस्तार से अ० अनेकविध वि० स्वरूप दु० दुगुने दु० दुगुने प्रमाण के जा० यावत् अ० इस ति० तिर्यक् लोकमें अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र स० स्वयंभू रमण समुद्र प० छेल्ला प० प्ररूपा स० आयुष्यमान् श्रमण ॥ १३ ॥ दी० द्वीप स० समुद्र के भं० भगवन् के० कितने ना० नाम प० प्ररूपे गो० गौतम जा० जितने लो० लोक में सु०

सूत्र ट्टमाणा, समभरघडत्ताए चिट्ठंति, संठाणओ एगविहिविहाणा वित्थारओ अणेगविहि-विहाणा दुगुणा दुगुणप्पमाणाओ, जाव अस्सिं तिरियलोए असंखेज्ज दीवसमुद्दा सयंभुरमणपज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो ॥ १३ ॥ दीवसमुद्दाणं भंते ! केवइया नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ? गोयमा ! जावइया लोए सुभा नामा, सुभारूवा, सुभागंधा,

भावार्थ वगैरह सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र जैसे जानना यावत् बाहिर के द्वीप समुद्र किनारे तक पानी से पूर्ण भरे हुवे हैं, उचरा हुवा पानी है. चारों तरफ विचरता है, भरा हुवा घडा समान रहा है, चूडी के आकारवाला है, चौडाइमें एक २ एकसे दुगने हैं, इस तरह तीर्च्छे लोकमें द्वीप समुद्र रहे हुवे हैं. उसमें छेल्ला समुद्र स्वयंभूरमण है ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! द्वीप समुद्र के कितने नाम हैं ? अहो गौतम ! इस लोक में जितने शुभ नाम के, शुभ रूप के, शुभ गंध के, शुभ रस के, व शुभ स्पर्श के पदार्थों हैं. उतने नाम के सब द्वीप समुद्र हैं. और एक २ नाम के अनेक द्वीप समुद्र हैं. पहिले पल्योपम

लेसं देवं, अविसुद्धलेसे देवे समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं, अविसुद्धलेसे समोहया स-मोहएणं अविसुद्धलेसं देवं, अविसुद्धलेसे देवे समोहया समोहएणं विसुद्धलेसं देवं विसुद्धले-से देवे असमोहएणं अविसुद्धलेसं देवं विसुद्धलेसे असमोहएणं विसुद्धलेसं देवं, विसुद्ध लेसेणं भंते! देवे समोहएणं अविसुद्ध लेसं देवं जाणइ पासइ? हंता जाणइ पासइ, एवं विसुद्ध समो-हए विसुद्धलेसं देवं, विसुद्ध समोहयासमोहएणं अविसुद्धलेसं देवं, विसुद्ध समोहयासमोहएणं,

भावार्थ

ती ० विभंगज्ञानवंत देव उपयोग रहित आत्मा से अवधि ज्ञानवंत देव, देवी या अन्य को नहीं जान व देख सकते हैं ३ विभंग ज्ञानवंत देव उपयोग सहित आत्मासे विभंग ज्ञानी देव, देवी व अन्य किसी को नहीं जान सकता है ४ विभंग ज्ञानी उपयोग रहित अवधिज्ञानी देवादि को नहीं जान सकता है ५ विभंगज्ञानी देव उपयोग सहित व रहित आत्मा से विभंगज्ञानवंत देव देवी या अन्य किसी को नहीं जान सके ६ विभंग ज्ञानी उपयोग सहित या रहित आत्मा से अवधिज्ञानवंत देव देवी को नहीं जान व देख सकते हैं. यह छ भांगे मिथ्यादृष्टि देव के जानना *७ अवधिज्ञानी देव उपयोग रहित आत्मा से विभंग ज्ञान-वंत देव देवी या अन्य किसी को नहीं जान सके व नहीं देख सके, ८ अवधिज्ञानी देव उपयोग रहित

* इन छ भांगे में उपयोग रहित कहे हैं. उपयोग रहित जीव कदापि नहीं जान सकता व देख सकता है. परंतु उपयोग सहित मिथ्यादृष्टि मिथ्यात्व व अज्ञान के प्रभाव से पदार्थ वस्तु स्वरूप नहीं जान सकता है इसी से छ भांगे नहीं जानने व देखने के कहे हैं.

वीईवयंति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं मडुयं समणोवासगं एयमट्ठं पुच्छित्तए त्ति कट्टु, अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता, जेणेव मडुए समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मंडुयं समणोवासगं एवं वयासी-एवं खलु मडुया ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए णायपुत्ते पंचत्थिकाए पण्णवेइ जहा सत्तमसए अण्णउत्थिय उद्देसए जाव से कहमेयं मडुया! एवं?॥तएणं से मंडुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-जइ कज्जं कज्जइ जाणामो पासामो, अहकज्जं णकज्जइ णजाणामो णपासामो॥ तएणं अण्णउत्थिया मंडुयं समणोवासयं एवं वयासी-केसणं तुमं मडुया!

भावार्थ

सब आप पुद्गल अस्तिकाया कहते हैं वगैरह जैसे सातवे शतक में अन्यतीर्थिक उद्देशे में कहा वैसे ही यावत् यह किस तरह है ? तब मंडुक श्रमणोपासक अन्यतीर्थिकों को ऐसा बोले की जैसे धूम्रादिक के स्वाव से अग्नि जानी जाती है वैसे ही धर्मास्तिकायादिक से जो कार्य किये जाते हैं उन कार्यों से धर्मास्ति कायादिक जानते हैं. और कार्य न करे तो नहीं जानते हैं व नहीं देखते हैं. क्यों कि छद्मस्थ पांच पदार्थ को कार्य बिना नहीं जान सकते हैं. तब अन्यतीर्थिक उस मंडुक श्रमणोपासक को ऐसा बोले-अहो मंडुक ! तू कैसा श्रमणोपासक है कि इस बात को नहीं जान सकता व नहीं देख

स० उस को नो० नहीं इ० ईर्यापथिक क्रिया क० करे सं० सांपरायिक क्रिया क० करे ॥ ४ ॥ स० श्रमणोपासक को भं० भगवन् पु० पहिले त० त्रस प्राण का स० समारंभ का प० प्रत्याख्यान भ० होवे पु० पृथ्वी का स० समारंभ के अ० अप्रत्याख्यान भ० होवे से० वह पु० पृथ्वी को ख० खोदता हुआ अ० किसी त० त्रसप्राणी को वि० हणे से० उन को भं० भगवन् तं० उस व० व्रत में अ० अतिक्रमे नो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य नो० नहीं न० उन का अ० अतिपात में आ० वर्तना है॥५॥पूर्ववत्॥३॥

मूल

पाहिगरणवत्तियं च णं तस्स नो ईरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ से तेणट्ठेणं॥४॥ समणोवासगस्सणं भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाए भवइ, पुढवि समारंभे अपच्चक्खाए भवइ सेय पुढविं खणमाणे अण्णयरं तसं पाणं विहिंसेज्जा, सेणं भंते ! तं वयं अइचरइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ नो खलु से तस्स अइवायाए आउट्टइ॥५॥

भावार्थ

अधिकरणिकी क्रिया प्रत्ययिकी सांपरायिक क्रिया उस को लगती है परंतु ईर्यापथिक क्रिया नहीं लगती है. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! श्रावक को त्रसप्राण के समारंभ का प्रत्याख्यान पहिले से ही है परंतु पृथ्वीकायादिक के समारंभ का प्रत्याख्यान नहीं है. यदि पृथ्वीकाय खोदते हुवे श्रावक किसी त्रसप्राणी की हिंसा करे तो क्या वह व्रतभंग करता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् श्रावक के व्रत का भंग नहीं होता है. क्यों कि उस को त्रसवध का संकल्प नहीं था ॥५॥ श्रावक

भंते ! कइविहा ? एवं चेव तिविहावि ॥ एवं चरित्ताराहणावि ॥ २ ॥ जस्सणं भंते उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा ? गोयमा ! जस्स उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा, जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा जहण्णा वा अजहन्नमणुक्कोसा वा । जस्सणं भंते ! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा, जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया

भावार्थ — आराधक इत्यादि तीन पूर्ववत् जैसे ही चारित्र आराधक के भी तीन भेद होते हैं १. उत्कृष्ट चारित्र आराधक यथाख्यात चारित्रीय होवे मध्यम चारित्राराधक सामायिकादि में मध्यम परिणामी होवे और ३ जघन्य चारित्राराधक सामायिकादि चारित्र शिथिलता पूर्वक पाले ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जिस को उत्कृष्ट ज्ञान आराधना होती है उस को क्या उत्कृष्ट दर्शन आराधना होती है अथवा जिस को उत्कृष्ट दर्शन आराधना होती है उस को क्या उत्कृष्ट ज्ञान आराधना होती है ? अहो गौतम ! जिस को उत्कृष्ट ज्ञान आराधना होती है उस को उत्कृष्ट दर्शन आराधना और मध्यम दर्शन आराधना होती है और जिस को उत्कृष्ट दर्शन आराधना होती है उस को जघन्य, उत्कृष्ट व मध्यम ज्ञान आराधना होती है अहो भगवन् ! जिस को उत्कृष्ट ज्ञान आराधना होती है उस को क्या चारित्र आराधना

 

सूत्र समणोवासगाणं भवसि, जेणं तुमं एयमट्ठं णजाणइ णपासइ? तएणं मंडुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-अत्थिणं आउसो! वाउयाए वाति? हंता मंडुया! वाति॥ तुब्भेणं आउसो वाउयस्स वायमाणस्स रूवं पासह? णो इणट्ठे समट्ठे॥ अत्थिणं आउसो! घाणसहगया पोग्गला? हंता अत्थि, तुब्भेणं आउसो! घाणसहगयाणं पोग्गलाणं रूवं पासह? णो इणट्ठे समट्ठे॥ अत्थिणं आउसो! अरणिसहगए अगणिकाए? हंता अत्थि। तुब्भेणं आउसो! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह! णो इणट्ठे समट्ठे॥ अत्थिणं आउसो समुद्दस्स

भावार्थ मंडुक श्रमणोपासक उन अन्यतीर्थिकों को ऐसा बोले कि अहो आयुष्मन्! क्या वायु चलता है? हां मंडुक वायु चलता है, अहो आयुष्मन्! तुम चलते हुवे वायु का रूप क्या देखते हो? अहो मंडुक! हम चलते हुवे वायु का रूप नहीं देखते हैं. घ्राणसहगत पुद्गलों हैं क्या? हां मंडुक! घ्राणसहगत पुद्गलों हैं. अहो आयुष्मन्! क्या तुम घ्राणसहगत पुद्गलों का रूप देखते हो? यह अर्थ योग्य नहीं है, अर्थात् घ्राणसहगत पुद्गलों का रूप हम नहीं देखते हैं. अहो आयुष्मन्! क्या अरणि सहगत अग्नि है? हां मंडुक! अरणिसहगत अग्निकाय है. अहो आयुष्मन्! तुम क्या अरणि सहगत अग्नि-

अत्थेगइए दोचेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतं करेइ, अत्थेगइए कप्पोवएसुवा कप्पातीतएसुवा उववज्जइ ॥ उक्कोसियाणं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं एवं चेव ॥ उक्कोसियाणं भंते ! चरित्तारायणं आराहेत्ता एवं चेव, णवरं अत्थेगइए कप्पातीतएसु उववज्जइ ॥ मज्झिमिएणं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ? गोयमा अत्थेगइए दोचेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ, तचंपुण भवग्गहण णाइक्कमइ ॥ मज्झिमियंणं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता एवं चेव

भावार्थ है उस को उत्कृष्ट, मध्यम व जघन्य चारित्र आराधना होती है और जिस को उत्कृष्ट चारित्र आराधना है उस को निश्चय ही उत्कृष्ट दर्शन आराधना होती है. अहो भगवन् ! उत्कृष्ट ज्ञान आराधनावाला कितने भव में सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ? अहो गौतम ! कितनेक उसी भव में सीझे कितनेक दूसरे भव में सीझे यावत् अंतकरे और कितनेक कल्प में अथवा कल्पातीत में उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! उत्कृष्ट दर्शन आराधना वाला कितने भव में सीझे ! अहो गौतम ! उत्कृष्ट ज्ञान आराधना जैसे कहना. अहो भगवन् ! उत्कृष्ट चारित्र आराधना वाला कितने भव में सीझे यावत् अंत करे ? अहो गौतम !

ज्ञानी भ० भगवन् म० मनुष्य ज० जो भ० भव्य भ० भवग्रहण से सि० सिझने को जा० यावत् अं० अंत करने को ॥ ७ ॥ जे० जो अ० असंज्ञी पा० प्राणी पु० पृथ्वीकाया जा० यावत् व० वनस्पति काया छ० छठा ए० कोई त० त्रस ए० ये अं० अंध मू० मूढ त० अंधकार में रहे हुवे त० तम प० पडल

मूत्र

भंते ! से खीणभोगी सेसं जह छउमत्थस्स ॥ केवलीणं भंते ! मणूसे जे भाविए तेणं चेव भवग्गहणेणं एवं जहा परमाहोहिए जाव महापज्जवसाणे भवइ ॥ ७ ॥ जे इमे भंते ! असण्णिणो पाणा पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया छट्ठा एगइया तसा, एएणं अंधा मूढा समप्पविट्ठा, तम पडल मोहजाल पलिच्छण्णा, अकामनिकरणं वेयणं वेदतीति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा ! जे इमे असण्णिणो पाणा पुढवि

भावार्थ

और इस तरह भोगों को त्यजते हुवे महा निर्जरा व महा पर्यवसान करते हैं. परम अवधि ज्ञानी जैसे केवल ज्ञानी का जानना ॥७॥ अहो भगवन् ! जो असंज्ञी पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पति कायिक और अन्य कोई त्रस प्राणी अंध, मूढ, अंधकार में प्रविष्ट, ज्ञानावरणीय के पडल रूप मोहजाल से ढके हुवे हैं वे अकामनिकरण वेदना वेदते हैं ऐसा क्या कहना ? हां गौतम ! अंध, मूढ, अंधकार में प्रविष्ट व ज्ञानावरणीय के पडल रूप मोहजाल से आच्छादित असंज्ञी पृथ्वी कायिक यावत् कोई त्रस प्राणी अकामनिकरण

चत्तारि भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसा किं दव्वं पुच्छा ? गोयमा ! सियदव्वं सिय दव्वदेसे अट्ठवि भंगा भाणियव्वा, जाव सियदव्वाइंच दव्व देसाय जहा चत्तारि भणिया, एवं पंच छ सत्त जाव संखेज्जा असंखेज्जा ॥ अणंता भंते !

भावार्थ

हुआ द्रव्यांतर संबंध उत्पन्न होवे तब द्रव्य देश है, ३ जब तीनों पृथक होकर रहे अथवा एक अणु अ. ग. दो प्रदेशात्मक स्कंध अलग ऐसे रहे तब द्रव्यों है, जब तीनों ही स्कंधपने को अनागत अथवा दो द्व्यणु भूत एकका केवलद्रव्यांतर की साथ संबंध तब द्रव्य देशों है २ जब दो परमाणु द्व्यणुकपने परिणमे और एक द्रव्यांतर साथ संबंधी अथवा एक केवलही रहा अथवा दोनों द्रव्यपने परिणमे द्रव्यांतर साथ संबंधी होवे तब द्रव्य और द्रव्य देशा है ६ जब एक द्रव्यरहा और दोनों द्रव्य साथ संबंधी हुए तब द्रव्य देशों है ७ जब वे दोनों द्रव्यका भद कर रहे एक द्रव्यांतर साथ संबंध कर रहा तब द्रव्यों द्रव्यदेश कहना यों तीन प्रदेशी परमाणु में सात विकल्प होते हैं और आठवा विकल्प नहीं पाता है. अहो भगवन् ! चार पुद्गलास्तिकाय के प्रदेशों क्या द्रव्य हैं वगैरह आठों प्रश्न करना. अहो गौतम ! चारों प्रदेशों में चार होने से दो दो अलग होकर दोनों तरफ बहुवचन मीलने से आठों ही विकल्प पाते हैं जिन में सात विकल्प जैसे तीन परमाणु के कहे वैसेही होते हैं और आठवा दोका एक स्कंध और दो दूसरा स्कंध होनेसे बहुत द्रव्य बहुत प्रदेशों होते हैं जैसे चार प्रदेशों में आठ विकल्प कहे वैसे ही पांच छ सात

सूत्र

पारगयाइं रूवाइं ? हंता अत्थि, तुब्भेणं आउसो ! समुद्दस पारगयाइं रूवाइं पासह ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं ? हंता अत्थि । तुब्भेणं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं पासह ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवामेव आउसो ! अहंवा तुब्भेवा अण्णोवा छउमत्थो णजाणइ णपासइ, तं सव्वं ण भवसि. एवं भे सुबहुंलोए णभविस्सतीति कट्टु, ते अण्णउत्थिए एवं पडिहणति, एवं पडिहणतित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, समण भगवं महावीरं पंचविहेणं अभि-

भावार्थ

काय का रूप देखते हो ? यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो आयुष्मन् ! समुद्र के पारगत रूप हैं ? हां मद्रुक ! हैं, तब क्या तुम उन को देखते हो ? यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो आयुष्मन् ! क्या देवलोक गत रूप हैं ? हां मद्रुक ! देवलोक गत रूप हैं. तब क्या उन देवलोक गत रूप को तुम देखते हो ? यह अर्थ योग्य नहीं है. ऐसे ही अहो आयुष्मन् ! मैं, तुम अथवा अन्य छद्मस्थ जो जो वस्तु दिखने में नहीं आती है वह नहीं है ऐसा मानेंगे तो तुम्हारे मत में सुबहुलोक नहीं होगा.

चत्तारि भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसा किं दव्वं पुच्छा ? गोयमा ! सियदव्वं सिय दव्वदेसे अट्ठवि भंगा भाणियव्वा, जाव सियदव्वाइंच दव्व देसाय जहा चत्तारि भणिया, एवं पंच छ सत्त जाव संखेज्जा असंखेज्जा ॥ अणंता भंते !

भावार्थ हुआ द्रव्यांतर संबंध उपगत होवे तब द्रव्य देश है. ३ जब तीनों पृथक होकर रहे अथवा एक अणु अ. ग दो प्रदेशात्मक स्कंध अलग ऐसे रहे तब द्रव्यों है, जब तीनों ही स्कंधपने को अनागत अथवा दो द्रयणु भूत एकका केवलद्रव्यांतर की साथ संबंध तब द्रव्य देशों है २ जब दो परमाणु द्रयणुकपने परिणमे और एक द्रव्यांतर साथ संबंधी अथवा एक केवलही रहा अथवा दोनों द्रव्यपने परिणमे द्रव्यांतर साथ संबंधी होवे तब द्रव्य और द्रव्य देशो है ६ जब एक द्रव्यरहा और दोनों द्रव्य साथ संबंधी हुए तब द्रव्य देशों है ७ जब वे दोनों द्रव्यका भेद कर रहे एक द्रव्यांतर साथ संबंध कर रहा तब द्रव्यों द्रव्यदेश कहना यों तीन प्रदेशों परमाणु में सात विकल्प होते हैं और आठवा विकल्प नहीं पाता है. अहो भगवन् ! चार पुद्गलास्तिकाय के प्रदेशों क्या द्रव्य हैं वगैरह आठों प्रश्न करना. अहो गौतम ! चारों प्रदेशों में चार होने से दो दो अलग होकर दोनों तरफ बहुवचन मीलने से आठों ही विकल्प पाते हैं जिन में सात विकल्प जैसे तीन परमाणु के कहे वैसेही होते हैं और आठवा दोका एक स्कंध और दो दूसरा स्कंध होनेसे बहुत द्रव्य बहुत प्रदेशों होते हैं जैसे चार प्रदेशों में आठ विकल्प कहे वैसे ही पांच छ सात

शब्दार्थ दीपक अं० अंधकार में रू० रूप पा० देखने को जे० जो णो० नहीं प० समर्थ पु० आगे रू० रूप अ० देखेविना पा० देखने को म० मार्गमें रू० रूप अ० गवेपणा कियेविना अ० अवलोकन कियेविना ॥२॥ अ० हे भं० भगवन् प० समर्थ प० प्रकामनिकरन वे० वेदना वे० वेदे हं० हां क० कैसे जा० यावत्

सूत्र चाणं पासित्तए, जेणं नो पभू उड्ढं रूवाइं अणुलोयत्ताणं पासित्तए जेणं नो पभू अहे रूवाइं अणुलोयत्ताणं पासित्तए एसणं गोयमा ! पभू अकामनिकरणं वेदणं वेदेइ ॥ ९ ॥ अत्थिणं भंते ! पभूवि पकामनिकरणं वेयणं वेदेइ ? हंता । कहण्णं जाव वेदणं वेदेइ, ? जेणं नो पभू समुद्दस्स पारं गमेत्तए, जेणं नो पभू समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासित्तए जेणं नो पभू देवलोगं गमित्तए, जेणं नो पभू देवलोगगयाइं रूवाइं

भावार्थ पास के रूप को अवलोकन करनेपर भी ऊर्ध्व में रूपों को अवलोकन किये विना देखनेको समर्थ नहीं हैं, और अधो में रूप को अवलोकन किये विना देखने को समर्थ नहीं है. अहो गौतम ! इसी तरह संज्ञी जीव अकाम निकरण वेदना वेदते हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! रूप के दर्शन में संज्ञीपना से समर्थ होने पर भी संज्ञी जीव प्रकाम निकरण वेदना ( बढती हुई अभिलाषा के कारणभूत वेदना ) वेदते हैं ? हां गौतम ! वे प्रकाम निकरण वेदना वेदते हैं. अहो भगवन् ! वे प्रकामनिकरण वेदना कैसे वेदते हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई समुद्र को पार पहुंचने को समर्थ नहीं हैं, जैसे समुद्र की पार गये हुवे रूपों को देखने को

अविभागपलिच्छेदा प० ? गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ॥ नेरइयाणं भंते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मरस केवइया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ? गोयमा ! अनंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ॥ एवं सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं पुच्छा गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता, एवंसव्व जीवाणं एवं जहा नाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठण्हवि कम्मपगडीणं भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं अंतराइयस्स ॥ ९ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवप्पएसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभाग पलिच्छेदेहिं आवेढिय परिवेढिए ?

भावार्थ

अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म के कितने अविभाग परिच्छेद है ? अहो गौतम ! अनंत अविभाग परिच्छेद है. अहो भगवन् ! नारकी को ज्ञानावरणीय कर्म का कितना अविभाग परिच्छेद कहे ? अहो गौतम ! अनंत अविभाग परिच्छेद कहे. ऐसे ही वैमानिक तक चौवीस ही दंडक को ज्ञानावरणीय के अनंत अविभाग परिच्छेद कहे हैं. जैसे ज्ञानावरणीय का कहा वैसे ही आठों कर्म प्रकृतियों का चौवीस ही दंडक वाले अनंत अविभाग परिच्छेद जानना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! एक २ जीव के एक प्रदेश को ज्ञाना-

सूत्र

गमेणं अभि जाव पज्जुवासइ ॥ १४ ॥ मंडुयादि ! समणे भगवं महावीरे मंडुयं समणोवासयं एवं वयासी सुट्ठुणं मंडुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहुणं मंडुया ! तुम्हं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी जेणं मंडुया ! अट्ठंवा हेउंवा पसिणंवा, वागरणंवा अण्णायं अदिट्ठं असुयं अमतं अविण्णातं बहुजणमज्झे आघवइ पण्णवेइ जाव उवदंसेइ, सेणं अरिहंताणं आसादणयाए वट्टइ, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणयाए वट्टइ, केवलीणं आसादणयाए वट्टइ, केवलीपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणयाए वट्टइ, तं सुट्ठुण तुमं मंडुया ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहुणं तुम

भावार्थ

की पास आकर भगवंत महावीर की पांच प्रकार के अभिगम से सन्मुख जाकर यावत् पर्युपासना करने लगा. ॥ १४ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी मंडुक श्रमणोपासक को ऐसा बोले कि अहो मंडुक ! तुमने अन्यतीर्थिकों को जो ऐसा कहा वह अच्छा किया. अहो मंडुक ! जो बहुत मनुष्यों में नहीं देखा हुआ, नहीं माना हुआ व नहीं सुना हुआ अर्थ, हेतु, प्रश्न व व्याकरण को इस तरह कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं वे तीर्थंकर की आसातना करते हैं, अरिहंत प्ररूपित धर्म की आसातना करते हैं, केवली की आसातना करते हैं केवली प्ररूपित धर्म की आसातना करते हैं. इस से अहो मंडुक ! तैने उन अन्य तीर्थिकोंको ऐसा कहा सो

गोयमा एएसिं चउण्हवि कम्माणं मणूसस्स जहा नेरइयस्स तहा भाणियव्वं से संतंचेव ॥ १० ॥ जस्सणं भंते ! नाणावरणिज्जं, तस्स दंसणावरणिज्जं, जस्स दंसणावरणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ? गोयमा जस्स नाणावरणिज्जं तस्स दंसणावरणिज्जं नियमंअत्थि, जस्स दंसणावरणिज्जं तस्सवि नाणावरणिज्जं नियम अत्थि ॥ जस्सणं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं जस्स वेयणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ? गोयमा जस्स नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि, जस्स पुण वेयणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं सिय अत्थि सिय नत्थि, ॥ जस्स पुण भंते !

भावार्थ

यह जानना परंतु वेदनीय, आयुष्य, नाम व गोत्र इन चार कर्मों का मनुष्य आश्री नारकी जैसे जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! जिन को ज्ञानावरणीय है उन को क्या दर्शनावरणीय है और जिस को दर्शनावरणीय है उन को क्या ज्ञानावरणीय है ? अहो गौतम ! जिस को ज्ञानावरणीय होता है उस को दर्शनावरणीय अवश्य होता है और जिस को दर्शनावरणीय होता है उस को ज्ञानावरणीय अवश्य ही होता है. अहो भगवन् ! जिस को ज्ञानावरणीय है उन को क्या वेदनीय है अथवा जिस को वेदनीय है उस को क्या ज्ञानावरणीय है ? अहो गौतम ! ज्ञानावरणीयवाले को वेदनीय कर्म निश्चय होता है परंतु वेदनीयवाले को [illegible]

शब्दार्थ यावत् प० परिपूर्ण अ० होवे ॥ १ ॥ से० अथ भं० भगवन् ह० हस्ति का कुं० कुंथु का स० सरिखा जी० जीव हं० हां गो० गौतम ह० हस्ति कुं० कुंथु का ए० ऐसे ज० जैसे रा० रायप्रसेणी में जा० जावत् खु० क्षुद्र म० महान् से० वह ते० इसलिये गो० गौतम जा० यावत् स० सरिखा ॥ २ ॥ ने०नारकी भं० भगवन् पा० पापकर्म जे० जो क० किये क० करते हैं क० करेंगे स० सर्व ते० वे दु० दुःख जे० जो नि० निर्जरे से० वह सु० सुख हं० हां गो० गौतम ने० नारकी पा० पापकर्म जा० यावत् सु० सुख

सूत्र चउत्थे उद्देसए तहा भाणियव्वं ॥ जाव अलमत्थु ॥ १ ॥ से णूणं भंते ! हत्थिस्सय कुंथुस्सय समे चेव जीवे ?हंता गोयमा ! हत्थिस्सय कुंथुस्सय एवं जहा रायप्पसेणइज्जे, जाव खुड्डियवा महालियंवा सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव समे चेव ॥२॥ नेरइयाणं भंते! पावे कम्मे जेय कडे जेय कज्जइ जेय कज्जिस्सइ सव्वे सेदुक्खे जे निज्जिण्णे से सुहे?

भावार्थ चतुर्थ उद्देशे जैसे कहना ॥ १ ॥ अब जीव का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या हस्ती का व कुंथु का जीव समान है ? हां गौतम ! हस्ती व कुंथु का जीव समान है. इस का वर्णन रायप्रसेणी सूत्रमें से जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नरक के जीवोंने जो पापकर्म किये हैं, करते हैं, व करेंगे उन सब को क्या दुःख के हेतुभूत जानना, और जिन पापकर्मोंकी निर्जरा की, करते हैं व करेंगे उन को क्या सुख के हेतुभूत जानना ? हां गौतम ! नारकीने जो पाप कर्मो किये, करते हैं व करेंगे वे सब

सूत्र चत्तारि भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसा किं दव्वं पुच्छा ? गोयमा ! सियदव्वं सिय







गोयमा ! नो पोग्गली पोग्गले । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवं पडुच्च से तेण-ट्ठेणं एवं वुच्चइ सिद्धे णो पोग्गली पोग्गले ॥ सेवं भंते ! भंते ! त्ति ॥ इति दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥ सम्मत्तं अट्ठमं सयं ॥ ८ ॥ +

भावार्थ सिद्ध पुद्गली है या पुद्गल है ? अहो गौतम ! सिद्ध पुद्गली नहीं है परंतु पुद्गल है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है ? अहो गौतम ! जीव प्रत्यायिक ऐसा कहा गया है कि जीव पुद्गली नहीं है परंतु पुद्गल है. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह आठवा शतक का दशवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ ८ ॥ १० ॥ आठवा शतक समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ + +

मूल

मंडुया! जाव एवं वयासी॥१५॥तएणं मंडुए समणोवासए समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठे समणं भगवं महावीरं मंडुयस्स समणोवासगस्स तीसेय जाव परिसा पडिगया ॥ १६ ॥ तएणं मंडुए समणोवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव निसम्म हट्ठ तुट्ठे पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छइत्ता अट्ठाइ परियातिइत्ता, समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता जाव पडिगए ॥ १७ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं

भावार्थ

अच्छा किया. ॥ १५ ॥ जब श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने मंडुक श्रमणोपासक को ऐसा कहा तब मंडुक हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुवा और मंडुक श्रमणोपासक को उस बडी परिषदा में महावीर स्वामीने उपदेश दिया यावत् परिषदा पीछी गई. ॥ १६ ॥ और मंडुक श्रमणोपासकने श्रमण भगवंत महावीर को यावत् नमस्कार कर हृष्ट तुष्ट हुवा और प्रश्नों पुछकर उसे ग्रहण कर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार कर यावत् पीछा गया. ॥ १७ ॥ भगवान गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! मंडुक श्रमणोपासक आपकी पास यावत् दीक्षित होने को क्या समर्थ है ! अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. यहां जैसे शंख का कहाया वैसे ही

अ० यावत् प० भगवन् गो० गौतम प० पूछते ए० ऐसा व० बोले क० कहां जं० जंबूद्वीप किं० किस
भं० भगवन् जं० जंबूद्वीप ए० ऐसे जं० जंबूद्वीप प० पन्नति भा० कहना जा० यावत्
ए० ऐसे स० पूर्वापर सहित जं० जंबूद्वीप में चो० चौदह स० नदियों स० लाख छ० छप्पन स० सहस्र भ०

सागमाणे एवं वयासी कहिण्णं जंबूद्दीवे दीवे, किं संठिएणं भंते ! जंबूद्दीवे दीवे?
एवं जंबूद्दीव पन्नत्ती भाणियव्वा, जाव एवामेव सपुव्वावरेणं, जंबूद्दीवे दीवे
चोद्दस सलिला सयसहस्सा छप्पन्नंच सहस्सा भवंतीति अक्खायं सेवं भंते! भंतेत्ति॥

[illegible] यावत् भगवंत गौतम स्वामी पर्युपासना करते हुवे ऐसा पूछने लगे कि अहो भगवन् !
जम्बूद्वीप कहां है और इस का आकार कैसा है ! अहो गौतम ! जम्बूद्वीप सब द्वीपों में आभ्यंतर
[illegible] एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा चंद्रमा समान गोलाकार यावत् १४५६००० नदियों
[illegible] हुई है गंगा, सिंधु, रक्ता व रक्तवती ये चार चौदह २ हजार के परिवार से हैं. रोहिता,
रोहितांशा, सुवर्ण कूला और रूप्यकूला यह चार नदियों अठाइस २ हजार के परिवार से हैं हरिता,
हरिकांता, नरकांता नारीकांता ये चार नदियों ५६ हजार २ नदियों के परिवार से हैं, और सीता सीतोदा
[illegible]

शब्दार्थ द० दश प्रकार की वे० वेदना प० अनुभवते वि० विचरते हैं सी० शीत उ० ऊष्ण खु० क्षुधा पि० तृषा कं०खुजली पे० परवशपना ज०ज्वर दा०दाह भ०भय सो०शोक ॥ ५ ॥ से०वह भं० भगवन् ह०हस्ति कुं० कुंथुको स० सरिखी अ० अप्रत्याख्यान क्रिया क० करे हं० हां गो० गौतम ह० हस्ति कुं०कुंथु जा० यावत् क० करे से० वह के० कैसे ए० ऐसा वु० कहा जाता है जा० यावत् क० करे गो० गौतम अ० अविरति प० प्रत्यायिक से० वह ते० इसलिये जा० यावत् क० करे ॥ ६ ॥ अ० आधाकर्मी आहार भ०

मूल माणा विहरंति, तं० सीयं, उसिणं, खुहं, पिवासं, कंडुं, परज्झं, जरं, दाहं, भयं, सोगं ॥ ५ ॥ से णूणं भंते ! हत्थिस्सय कंथुस्सय समाचेव अप्पच्चक्खाण किरिया कज्जइ ? हंता गोयमा ! हत्थिस्स कुंथुस्स य जाव कज्जइ ॥ से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ जाव कज्जइ ? गोयमा ! अविरइं पडुच्च से तेणट्ठेणं जाव कज्जइ ॥ ६ ॥ अहाक-

भावार्थ चौवीस दंडक में पाती हैं ॥ ४ ॥ नारकी दश प्रकार की वेदना अनुभवते हुवे विचरते हैं जिन के नाम. १ शीत २ ऊष्ण ३ क्षुधा ४ पिपासा ५ खुजली ६ परवशता ७ ज्वर ८ दाह ९ भय व १० शोक ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! हस्ती व कुंथुको क्या एक सरीखी अप्रत्याख्यान क्रिया लगती है? हां गौतम! हस्ती व कुंथु को अप्रत्याख्यान क्रिया एक सरिखी लगती है. अहो भगवन्! किस कारन से हस्ती व कुंथु को एक सरिखी अप्रत्याख्यान क्रिया लगती है? अहो गौतम! अविरति आश्रित हस्ती व कुंथु को एक सरिखी अप्रत्याख्यान क्रिया

...प्रभास ता० तारागण को० क्रोडा क्रोडी सो० प्रकाशे सो० प्रकाशते हैं सो० प्रकाशेंगे ॥ १ ॥ ल० लवण समुद्र में भं० भगवन् के० कितने चं० चंद्र प० प्रकाशें ए० ऐसे ज० जैसे जी० जीवाभिगममें जा० यावत् ता० तारा ॥ २ ॥ धा० धातकीखंड में का० कालोदधि में पु० पुष्करवर में अ० आभ्यंतर पु० पु० पुष्करार्ध में म० मनुष्य क्षेत्र में ए० इन स० सर्व में ज० जैसे जी० जीवाभिगम में जा० यावत् ए० एक स० चंद्र परिवार ता० तारागण को० क्रोडाक्रोडी ॥ ३ ॥ पु० पुष्करार्ध में भं० भगवन्

कोडीण सोभिंसु सोभिंति सोभिस्संति ॥ १ ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे केवइया चंदा पभासिंसुवा ३ एवं जहा जीवाभिगमे जाव ताराओ ॥ २ ॥ धायइखंडे, कालोदे, पुक्खरवरे, अब्भितरपुक्खरद्धे मणुस्सखेत्ते एएसु सव्वेसु जहा जीवाभिगमे जाव एगससी परिवारो तारागण कोडि कोडिणं ॥ ३ ॥ पुक्खरद्धेणं भंते ! समुद्दे के-

हजार नवसो पचास क्रोडा क्रोड तारे गत काल में शोभे, वर्तमान में शोभते हैं और अनागत में शोभेंगे. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में कितने चंद्रने प्रकाश किया, प्रकाशते हैं यावत् प्रकाशेंगे ? अहो गौतम ! चार चंद्रने गत काल में प्रकाश किया, वर्तमान में करते हैं और अनागत में करेंगे. चार सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे. इन का परिवार ऊपर के जैसा कहा है. ॥ २ ॥ धातकी खंड में बारह चंद्रमाने प्रकाश...

शब्दार्थ स० शक्र दे० देवेन्द्र च० चमर अ० असुर राजा कू० कूणिक को सा० साहाय्य द० दी गो० गौतम स० शक्र दे० देवेन्द्र पु० पूर्वसंगति से अ० असुर अ० असुरराजा प० पर्याय संगाते से ए० ऐसे गो० गौतम ॥ ११ ॥ ब० बहुत म० मनुष्य भं० भगवन् अ० अन्योन्य ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प०

सूत्र भंते ! सक्के देविंदे देवराया चमरे अ_रिंदे असुरराया कूणियस्स रण्णो साहेज्जं दलयित्था ? गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया पुव्वसंगइए, चमरे असुरिंदे असुरराया परियायसंगइए॥ एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया चमरे असुरिंदे असुरराया कूणियस्स रण्णो साहेज्जं दलयित्था ॥ ११ ॥ बहुजणेणं भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ, एवं खलु बहवे मणुस्सा अण्णतरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहेचेव

भावार्थ उत्पन्न हुए ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र व चमर असुरेन्द्रने किस कारन से कूणिक राजा को साहायता दी ? अहो गौतम ! शक्रेन्द्र का जीव पूर्व जन्म में कार्तिक सेठ था. उस समय कूणिक राजा का जीव उनका मित्र था. चमरेन्द्रका जीव पूर्व जन्म में पूरण नामक तापस था. और कूणिक का जीव भी तापस था. दोनों तापसों का परस्पर मित्रता थी. पूर्व जन्म की प्रीति के संबंध से कूणिक राजा को दोनों इन्द्रोंने साहायता दी ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! बहुत मनुष्य परस्पर ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि बहुत मनुष्य किसी उच्च नीच संग्राम में सन्मुख होते हणाते तो वे कहां जाते हैं...

पदार्थ

जाना जी० जीवाजीव जा० यावत् प० देता हुवा छ० छठ छठ मे अ० अंतर रहित त० तप कर्म से अ० आत्मा को भा० भावता हुवा वि० विचरता है त० तब से० वह व० वरुण ना० नाग का पौत्र अ० एकदा रा० राजा की आज्ञा से ग० ज्ञाति की आज्ञा में ब० बलात्कार से र० रथमुशल संग्राम में आ० आज्ञा कराया हुवा छ० छठ मे अ० अठम अ० बढाकर कु० कौटुम्बिक को स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले खि० शीघ्र भो० अहो दे० देवानुप्रिय चा० चारघंटवाला अ० अश्वरथ जु० युक्त उ० तैयार करो ह० अश्व ग०

सूत्र

अपरिभूए, समणोवासए अभिगय जीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ तएणं से वरुणे नागनत्तुए अण्णया कयाइं रायाभियोगेणं, गणाभियोगेणं, बलाभियोगेणं, रहमुसले संगामे आणत्तेसमाणे छट्ठभत्तिए अट्ठमभत्तं अणुवड्ढेइ अणुवड्ढेइत्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दावेइत्ता एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउरघंटं आसरहं जुत्तामेव

भावार्थ

जाननेवाला श्रमणोपासक यावत् अतिथि को अशनादि देता हुवा छठछठ का निरंतर तप करके आत्मा को भावता हुआ विचरता था. उस समय में नाग नप्तृक वरुण को राजा की आज्ञासे, गणकी आज्ञासे व बलात्कार से रथमुशल संग्राम में जाने का हुआ. इस तरह आज्ञा होने से छट्ठ भक्त तप का अष्टम भक्त तप किया और अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बोलाकर ऐसा कहा कि अहो देवानुप्रिय ! चार घण्ट वाला

शब्दार्थ कूणिक पा० निश्रमादि किये त० तब से० वह व०वरुण र०रथमुशल सं०संग्राम में उ०आते हुवे ए०ऐसा अ० अभिग्रह अ० ग्रहण किया क० कल्पता है मे० मुझे र० रथमुशल संग्राम में सं० संग्राम करते जे० जो पु० पहिला प० हने तं० उसको प० हनने को अ० अवशेष नो० नहीं क० कल्पे ए० ऐसा अ० अभिग्रह अ० ग्रहणकर सं० संग्राम करता ए० एक पुरुष स० सरिखा स० सरिखीत्वचा वाला स०सरिखी

मूल पायच्छित्ते सव्वालंकार विभूसिए सण्णद्धबद्ध सकोरिंटमल्लदामं जाव धरिज्जमाणेणं अणेगगणनायग जाव दूयसंधिवालसद्धि संपरिवुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमइत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ दुरूहइत्ता, हयगयरह जाव संपरिवुडे महया भडचडग जाव परिक्खित्ते, जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता रहमुसलं संगामं उयाए तएणं से वरुणे नागनत्तुए रहमुसलं संगामं उयाए- समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ कप्पइ मे रहमुसलं संगामं संगामे-

भावार्थ वगैरह सब कूणिक राजाने जैसा किया वैसा करके सब अलंकार से विभूषित हुवे शरीर पर कवच धारन किया और कोरंटक वृक्ष के पुष्पों की माला युक्त छत्र धारण करते हुवे, अनेक गणों के नायक यावत् दूतसंधिपाल सहित मज्जनगृहसे बाहिर नीकले. बाहिर नीकलकरके उपस्थानशाला (दीवानखाना) में घंट वाला रथकी पास आये और उस में बैठे. रथ में बैठकर अश्वगजादि चतुरंगिनी सेना से परिवृत यावत्

शब्दार्थ

कितनी ले० लेश्या गो० गौतम ए० एक का० कापोतलेश्या इ० इस भं० भगवन् र० रत्नप्रभा जा० यावत् का० कापोत लेश्या में व० वर्तते स० सत्तावीस भं० भांगा ॥१२॥ इ० इस भं० भगवन् जा० यावत् किं० क्या स० समदृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि स० समभिथ्यादृष्टि गो० गौतम ति० तीन इ० इस जा० यावत् स० सम्यक् दर्शन में व० वर्तते ने० नारकी स० सत्तावीस भांगा ए० ऐसे मि० मिथ्या दर्शन में स० समभि-

मूल

भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं कइलेस्साओ प० ? गोयमा ! एगा काउलेस्सा प० । इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए जाव काउलेस्साए वट्टमाणा सत्तावीसं भंगा ॥ १२ ॥ इमीसेणं भंते ! जाव किं सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी ? गोयमा ! तिण्णिवि ॥ इमीसेणं जाव सम्मदंसणे वट्टमाणा नेरइया सत्तावीस भंगा एवं मिच्छदंसणेवि सम्मामिच्छ दंसणे असीइ भंगा ॥ १३ ॥

भावार्थ

भगवन् ! रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में नारकी को कितनी लेश्याओं कहीं ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी को एक मात्र कापुत लेश्या कही. कापुत लेश्यावाले नारकी को भी क्रोधादि कषाय के सत्तावीस भांग जानना ॥ १२ ॥ सातवा दृष्टिद्वार. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में क्या नारकी समदृष्टि, मिथ्या दृष्टि या समभिथ्यादृष्टि हैं ? अहो गौतम ! सम, मिथ्या, व समभिथ्या ऐसे तीनों दृष्टि हैं. सम दृष्टि व मिथ्या दृष्टिवाले नारकी में सत्तावीस भांग व समभिथ्या दृष्टिवाले नारकी में अस्सी भांग

शब्दार्थ — होता आ० आसुरक्त जा० यावत् मि० धगधगायमान हुवा ध० धनुष्य प० ग्रहणकर उ० बाण को प० ग्रहणकर ठा० स्थान ठि० स्थापकर आ० कर्णतक उ० बाण को क० करके व० वरुण को गा० गाढा प्रहार क० करे त० तब से० वह व० वरुण ते० उस पु० पुरुष से गा० गाढप्रहार क० कराया हुवा आ० आसुरक्त जा० यावत् मि० देदीप्यमान हुवा ते० उस पु० पुरुष को ए० एकप्रहार कू० कूटमें आ० मारकर जी०

सूत्र — वरुणेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसिमाणे धणुं परामुसइ परामुसइत्ता, उसुं परामुसइ परामुसइत्ता ठाणं ठाइ ठिच्चा आययकण्णाययं उसुंकरेइ उसुंकरेइत्ता वरुणं नागनत्तुयं गाढप्पहारी करेइ, ॥ तएणं से वरुणे नागनत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकएसमाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसिमाणे धणुं परामुसइ परामुसइत्ता आययकण्णाययं उसुं करेइ उसुं करेइत्ता, तंपुरिसं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवि-

भावार्थ — समान भेद पाव व उपकरण युक्त रथ सहित आया. और वरुण नाग नतृक को ऐसा कहा कि अहो वरुण नागनतृक ! तू मेरे पर प्रहार कर. उस समय में वरुणने उस पुरुष को कहा कि जिनने पहिले मेरे पर प्रहार नहीं किया है उसे मारनेका मुझे नहीं कल्पता है. तुम ही पहिले मेरे पर प्रहार करो. जब वरुणने उस पुरुष को ऐसा कहा तब उसने आसुरक्त यावत् क्रोधित मनकरके धगधगायमान होता हुवा धनुष्य उठाया और उस में बाण रखकर अपना स्थान किया. फिर कर्ण पर्यंत सरपेंचा खींच

 

शब्दार्थ ध्या दर्शन में अ० अस्सीभंगा ॥१३॥ इ० इस जा० यावत् किं० क्या ना० ज्ञानी अ० अज्ञानी गो० गौतम ना० ज्ञानी अ० अज्ञानी ति० तीन ना० ज्ञान नि० निश्चय ति० तीन अ० अज्ञान भ० भजना इ० इस भं० भगवन् जा० यावत् आ० मतिज्ञान में व० वर्तते गो० गौतम स० सत्तावीस भंगा ए० ऐसे ति० तीन ज्ञान ति० तीन अ० अज्ञान भा० कहना ॥ १४ ॥ इ० इस जा० यावत किं० क्या म० मनजोगी व०

सूत्र इमीसेणं जाव किं णाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णाणीवि, अण्णाणीवि. तिण्णि-णाणाइं नियमा, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ॥ इमीसेणं भंते ! जाव आभिणिबो-हियणाणे वट्टमाणे ? गोयमा ! सत्तावीसं भंगा ॥ एवं तिण्णि णाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भाणियव्वाइं ॥१४॥ इमीसेणं जाव किं मणजोगी वयजोगी कायजोगी ?

भावार्थ जानना ॥ १३ ॥ आठवा ज्ञानद्वार. अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा में नारकी क्या ज्ञानी है ! क्या अ-ज्ञानी है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा नामक नरक में नारकी को तीन ज्ञान की नियमा है और तीन अ-ज्ञान की भजना है. मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान येने दो मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व विभंग ज्ञान युक्त नारकी को सत्तावीस भांगे जानना. असंज्ञी की अपेक्षा से उत्पन्न होते समय अंतर्मुहूर्त पर्यंत दो अज्ञान की विवक्षा की जावे तो अस्सी भांगे पाते हैं. उस के अल्पपने के कारन से अवगाहना भी अल्प रहती है और काल भी अल्प रहता है. ॥ १५ ॥ अब नववा योगद्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! रत्न-

र० रथसे मु० अश्व मो० छोडकर नु० अश्वको नि० नीकालकर द० दर्भका सं० संथारा सं० करके द० दर्भ संथारे पर दु० बैठकर पु० पूर्व तरफ प० पर्यंकासन नि० बैठा क० करतल जा० यावत् क० करके ए० ऐसा व० बोला न० नमस्कार अ० आरिहंत भ० भगवन्तको जा० यावत् सं० प्राप्तको न० नमस्कार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को आ० आदि क० करने वाले जा० यावत् सं० प्राप्त करने के का० कामीको

सूत्र धारगं संथारइ २ त्ता, दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता, पुरत्थाभिमुहे सपलियंकानिसण्णे करयल जाव कट्टु एवं वयासी— नमोत्थुणं अरहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं, नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स जाव संपाविउकामस्स, मम धम्मायरियस्स धम्मोवएसयस्स वंदामिणं भगवं तत्थगयं इहगए पासउ मे भगवं तत्थगए जाव वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पुव्विपिणं मए समणस्स

भावार्थ एकान्त में गया. वहां रथ से नीचे उतरकर अश्व छोड दीये. फीर दर्भ का संथारा बनाकर उस पर पूर्वाभिमुख करके पर्यंकासन से बैठा. और हस्तद्वय जोडकर मस्तक को आवर्तना देता हुवा ऐसा बोला कि आरिहंत भगवन्त यावत् मुक्तिको प्राप्त ऐसेको नमस्कार होवो. धर्मकी आदि करनेवाले यावत् मोक्ष प्राप्त करने की इच्छावाले मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक श्री श्रमण भगवन्त महावीर को नमस्कार होवो. यहां रहे हुवे आपको मैं वंदना नमस्कार करता हूं. इस तरह वंदना नमस्कार करके ऐसा बोला कि मैंने पहिले श्री

आस्तिभाव को अ० अस्ति भाव व० कहते हैं स० सर्व न० नास्तिभाव को न० नास्ति चि० ऐसा व० कहते हैं तं० उस को ने० ज्ञान से तु० तुम दे० देवानुप्रिय ए० यह अर्थ स० स्वयं प० विचारो त्ति० ऐसा करके ॥ ८ ॥ पूर्ववत् ॥ ६ ॥ त० तब से० वह का० कालोदायी स० श्रमण भ० भगवन्त म०

भगवं महावीरे एवं जहा नियंठुद्देसए जाव भत्तपाणं पडिदंसेइ २ त्ता, समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नच्चासण्णे जाव पज्जुवासेइ ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणंसमएणं समणे भगवं महावीरे महा कहा पडिवण्णे यावि होत्था, कालोदाईय तं देसं हव्वमागए कालोदाइत्ति समणे भगवं महावीरे कालोदाइं एवं वयासी-से नूणं ते कालोदाई अण्ण या कयाइं एगयओ सहियाणं समुवागयाणं तहेव जाव सेकहमेयं मण्णे एवं से नूणं

भावार्थ

ऐसा कहा कि गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी हैं वगैरह जैसा दूसरे शतक में निर्ग्रंथ उद्देशे में वर्णन हैं वैसा यहां जानना. और श्री गौतम स्वामीने श्रमण भगवन्त महावीर को भक्तपान बताकरके वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना की ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी परिषदा में धर्मोपदेश करते हुवे प्रवर्तते थे. वहां कालोदाई भी आया. उस समय में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी कालोदायी को ऐसा बोले कि अहो कालोदायी ! एकदा तुम सब मीलकर परस्पर ऐसा वार्तालाप करते थे कि श्रमण ज्ञात पुत्रने पंचास्तिकाय अरूपी है यावत् यह किस तरह है

शब्दार्थ

सर्वकाल ए० ऐसे उ० उपर का ए० एकेक को सं० जोड़ना जो० जो है० निचे का तं० उन को छ० छोड़ना ने० जानना जा० यावत् अ० अतीत अ० अनागतकाल प० पीछे स० सर्वकाल जा० यावत् अ० अनुक्रम से मा० यह रो० रोहा से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥१४॥ भं० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितना प्रकार की भं० भगवन्

मूल

एक्केकं संजोयं, तेणं जो जो हेट्ठिल्लो तं तं छड्डेतेणं नेयव्वं जाव अतीय अणागयद्धा, पच्छासव्वद्धा. जाव अणाणुपुव्वीए सा रोहा, सेवं भंते २ जाव विहरइ ॥ १४ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं जाव एवं वयासी कइविहाणं भंते ! लोयट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठिई पण्णत्ता, तंजहा — आगासपइट्ठिए वाए

भावार्थ

भी वैसे ही कहना. इन में कोई पहिले पीछे नहीं. सब अनुक्रम रहित बराबर हैं. सदा शाश्वत है. फीर रोहक अनगार बोले की अहो भगवन्! आपने जो कहा वह वैसे ही है यों कहकर तप संयम से आत्माको भावते हुवे विचरने लगे ॥ १४ ॥ श्री गौतम स्वामीने प्रश्न किया कि अहो भगवन्! लोक स्थिति कितने प्रकार की है ? अहो गौतम ! लोक स्थिति आठ प्रकार की है. १ आकाश प्रतिष्ठित वायु अर्थात् आकाश के आधार से घनवात तनुवात ऐसे दोनों वायु रहे हैं २ वायु के आधार से उदधि है ३ उदधि प्रतिष्ठित पृथ्वी ४ पृथ्वी प्रतिष्ठित त्रस स्थावर प्राणी ५ जीव के आधार से अजीव रहे हैं ६ कर्म के आ-

सूत्र

भंते ! किं सकसाई होज्जा अकसाई होज्जा ? गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा, जइ सकसाई होज्जा, सेणं भंते ! कइसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! चउसु संजलण कोह माण माया लोभेसु होज्जा ॥ तस्सणं भंते ! केवइया अज्झवसाणा प०? गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा प० ॥ तेणं भंते ! किं पसत्था अप्पसत्था ? गोयमा ! पसत्था नो अप्पसत्था ॥ सेणं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहिं अणंतेहिं नेरइय भवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ अणंतेहिं तिरिक्ख जोणिय

भावार्थ

वह सकषायी होता है या अकषायी होता है ? अहो गौतम ! सकषायी होता है परंतु अकषायी नहीं होता है. अहो भगवन्! जब सकषायी होता है तब कितनी कषायों में होता है ? अहो गौतम! संज्वलन क्रोध, मान, माया, व लोभ में होवे. अहो भगवन् ! उस को कितने अध्यवसाय कहे हैं ? अहो गौतम ! उस को असंख्यात अध्यवसाय कहे हैं. अहो भगवन् ! क्या वे प्रशस्थ हैं या अप्रशस्थ हैं ? अहो गौतम वे प्रशस्थ हैं परंतु अप्रशस्थ नहीं हैं. अहो भगवन् ! उन प्रशस्त अध्यवसायों से अनागत काल के नारकी के भव से आत्मा को अलग करे, अनंत तिर्यंच के भव से आत्मा को अलग करे, अनंत मनुष्य के भव से अलग करे, अनंत देव भव से आत्मा को अलग करे, यों चारों गति का सेपन करे, नरक तिर्यंच मनुष्य व देवता इस नामकी चारों नाम कर्म की मूल व उत्तर प्रकृतियों और इस समान अल्प प्रकृतियों को

शब्दार्थ

समर्थ का० कालोदायिन् ए० इन पो० पुद्गलास्तिकाया में रू० रूपीकायामें अ० अजीव काया में न० समर्थ के० कोई आ० बैठने को जा० यावत् तु० निद्रालेने को ॥ ७ ॥ ए० इन पो० पुद्गलास्तिकाया में रू० रूपीकाया में अ० अजीव काया में जी० जीव पा० पाप क० कर्म पा० पापफल वि० विपाक सं० संयुक्त क० करे नो० नहीं ए० यह अर्थ स० समर्थ का० कालोदायी जी० जीवास्तिकाया अ० अरूपी काया में जी० जीव पा० पापकर्म पा० पापफल वि० विपाक सं० संयुक्त क० करे हं० हां क० करे ॥ ८ ॥ ए०

मूल

ट्टित्तएवा ? नो इणट्ठे समट्ठे । कालोदाई ! एएसिणं पोग्गलत्थिकायंसि रूवीकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तएवा जाव तुयट्टित्तएवा ॥ ७ ॥ एएसिणं भंते ! पोग्गलत्थिकायंसि रूवीकायंसि अजीवकायंसि जीवाणं पावाणं कम्माणं पावफलविवाग संजुत्ता कज्जंति? णो इणट्ठेसमट्ठे । कालोदाइ! एयंसिणं जीवत्थिकायंसि अरूवीकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावफल विवाग संजुत्ता कज्जंति ? हंता कज्जंति ॥ ९ ॥

भावार्थ

अहो कालोदायिन ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् अरूपी अजीव कायमें बैठने को यावत् निद्रा लेने को कोई समर्थ नहीं है. परंतु रूपी अजीव पुद्गलास्तिकाय में क्रियाओं करने को समर्थ हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! इस रूपी अजीव पुद्गलास्तिकाय में क्या जीवों पापकर्म के फल विपाक से संयुक्त होते हैं ? अहो कालोदायिन ! यह अर्थ योग्य नहीं है. परंतु अरूपी जीवास्तिकायमें जीवों पापकर्मके फल विपाकसे संयुक्त

पविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवर नाण दंसणे समुप्पज्जइ ॥ सेणं भंते ! केवलि पण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा पन्नवेज्जवा, परूवेज्जवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, णणत्थ एगणाएणवा, एगवागरणेणवा ॥ सेणं भंते ! पव्वावेज्जवा, मुंडावेज्जवा,? णो इणट्ठे समट्ठे, उवदेसं पुण करेज्जा ॥ सेणं भंते ! किं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ? हंता सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ॥ सेणं भंते ! किं उड्ढं होज्जा, अहे होज्जा, तिरियं होज्जा ? गोयमा ! उड्ढंवा होज्जा, अहेवा होज्जा, तिरियंवा होज्जा, उड्ढं

नहीं हुआ ऐसा अध्यवसाय विशेष में प्रवेश करे. अनंत विषय वाला, अनुत्तर, निर्व्याघात, निरावरण, संपूर्ण, अखंडित व ( ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय का क्षय होने से ) प्रधान केवल ज्ञान, केवल दर्शन को वह प्राप्त करे. फीर क्या वह केवलि प्ररूपित धर्म को शिष्य को सन्मुख ग्रहण करने के लिये यथा प्रकाशे, प्ररूपे, कहे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अर्थात् प्रकाशे, प्ररूपे व कहे भी नहीं. मात्र एक दृष्टांत यथाविध आचारांग के एक प्रश्नोत्तर सिवाय कुछ नहीं बोल सकते हैं. अहो भगवन् ! रजोहरणादि द्रव्य लिंग देवे क्या, फिर मस्तक लोच कर के मुंड करे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. [illegible]

पविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवर नाण दंसणे समुप्पज्जइ ॥ सेणं भंते ! केवलि पण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा पन्नवेज्जवा, परूवेज्जवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, णणत्थ एगणाएणवा, एगवागरणेणवा ॥ सेणं भंते ! पव्वावेज्जवा, मुंडावेज्जवा,? णो इणट्ठे समट्ठे, उवदेसं पुण करेज्जा ॥ सेणं भंते ! किं सिज्झइ जाव अंतकरेइ ? हंता सिज्झइ जाव अंतकरेइ ॥ सेणं भंते ! किं उड्ढं होज्जा, अहे होज्जा, तिरियं होज्जा ? गोयमा ! उड्ढंवा होज्जा, अहेवा होज्जा, तिरियंवा होज्जा, उड्ढं



नहीं हुआ ऐसा अध्यवसाय विशेष में प्रवेश करे. अनंत विषय वाला, अनुत्तर, निर्व्याघात, निरावरण, संपूर्ण, अखंडित व ( ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय का क्षय होने से ) प्रधान केवल ज्ञान, केवल दर्शन को वह प्राप्त करे. फीर क्या वह केवलि प्रज्ञापित धर्म को शिष्य को सन्मुख ग्रहण करने केलिये क्या प्रकाशे, प्ररूपे, कहे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अर्थात् प्रकाशे, प्ररूपे व कहे भी नहीं. मात्र एक दृष्टांत तथाविध आचारना के एक प्रश्नोत्तर सिवाय कुछ नहीं बोल सकते हैं. अहो भगवन् ! रजोहरादि द्रव्य लिंग रखकर क्या दीक्षा देवे, शिर लोच आदि कर के मुंडन करे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अर्थात् किसी को दीक्षा देवे नहीं व मुण्डित करे नहीं. मात्र इतना उपदेश करे कि अमुक की पास जाकर दीक्षा ले लो. अहो भगवन् ! क्या वह सीझे, बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ? अहो गौतम ! वे सीझे

शब्दार्थ धन्य से ॥ १२ ॥ पूर्ववत् ॥ १३ ॥ का० हो भं० भगवन् पु० पुरुष म० सरिखे जा० यावत् स०शारिरे

मूल कालोदाई जीवाणं पावा कम्मा जाव कज्जंति ॥ १२ ॥ अत्थिणं भंते ! जीवाणं कल्लाणकम्मा कल्लाणफल विवाग संजुत्ता कज्जंति ? हंता अत्थि ॥ कहण्णं भंते ! जीवाणं कल्लाण कम्मा जाव कज्जंति ? कालोदाई ! से जहा नामए केइ पुरिसे मणुण्णं थाली पागसुद्धं अट्ठारस वंजणाउलं ओसहमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्सणं भोयणस्स आवाए नो भद्दए भवइ तओपच्छा परिणममाणे २ सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव सुहत्ताए नो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइ-वायवेरमणे जाव परिग्गह वेरमणे कोहाविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्ल विवेगे,

भावार्थ विपाक करते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन्! जीव क्या कल्याण कारी कर्म करते हैं ? हां कालोदायिन् ! जीव कल्याण कारी कर्म करते हैं. अहो भगवन् ! जीव कल्याण कारी कर्म कैसे करते हैं ? कालोदायिन्! जैसे कोइ पुरुष औषधि मिश्रित, अठारह प्रकार के व्यंजन युक्त व मनोज्ञ पात्र में पकाया हुवा भोजन करे उस औषधि मिश्रित भोजन भोगते हुवे प्रथम कटुक व अमनोज्ञ दीखता है परंतु शरीर में परिणमते हुवे सुरूप, सुगंध, सुवर्ण यावत् सुख रूप होता है इसी तरह प्राणातिपात से यावत् परिग्रह से निवर्ते वे व क्रोध यावत् मिथ्यादर्शनशल्य का त्याग करते हुवे जीव को प्रथम दुःख होता है परंतु परिणमते

सूत्र

केवलि पण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगइए केवलि जाव नो लभेज्ज सवण-याए जाव अत्थेगइए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥ ११ ॥ सोच्चाणं भंते ! केवलिस्सवा जाव तप्पक्खिय उवासियाएवा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ? गोयमा ! सोच्चाणं केवलिस्सवा जाव अत्थेगइए केवलि पण्णत्तं धम्मं एवं जाचेव असोच्चाए वत्तव्वया साचेव सोच्चाएवि भाणियव्वा, नवरं अभिलावो सोचत्ति सेसं तंचेव, णिरवसेसं जाव जस्सणं मणपज्जव णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्सणं केवल णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे

भावार्थ

जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश होवे. अहो गौतम ! इस कारन से ऐसा कहा गया है कि असोच्चा केवली यावत् स्वयं बुद्धकी उपासिका के वचन श्रवण कर धर्म श्रवण करने का व केवल ज्ञानकी प्राप्ति का लाभ कितनेक को होवे और कितनेक को नहीं होवे. यह असोच्चा केवली की वक्तव्यता कही ॥ ११ ॥ अब सोच्चा केवली का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! सोच्चा केवली के यावत् उन के पक्षवाले श्रावक श्राविका, उपासिका के वचन सुनकर केवली प्ररूपित धर्म सुन सके यावत् केवल ज्ञान प्राप्त कर सके ! अहो गौतम ! जैसे असोच्चा केवली की वक्तव्यता कही वैसे ही सोच्चा केवली की कहना परंतु विशेषता

शब्दार्थ व० मशक को आ० भरकर उ० उपर सि० बंधन बं० बांधे म० मध्य में गं० गांठ बं० बांधे उ० उपर की गं० गांठ को मु० छोडे उ० उपर के दे० भाग का वा० नीकाले उ० उपला दे० भाग में आ० पानी पू० भरे उ० उपर का सि० बंधन बं० बांधे म० मध्य की गं० गांठ को मु० छोडे से० वह गो० गौतम आ० पानी वा० वायु की उ० उपर चि० रहे हं० हां चि० रहे से० वह

सूत्र वंधइ २ त्ता, मज्झे गंठिं बंधइ २ त्ता, उवरिल्लं गंठिं मुयइ २ त्ता, उवरिल्लं देसं वामेइ २ त्ता, उवरिल्लं देसं आउयायस्स पूरेइ २ त्ता, उप्पि सियं बंधइ २ त्ता, मज्झिल्लं गंठिं मुयइ ॥ सेणूणं गोयमा ! से आउयाए तस्स वाउयायस्स उप्पिं उवरितले चिट्ठइ ? हंता चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं जाव जीवा कम्मसंगहिया, ॥ से

भावार्थ दूसरा बंध बांधे, मध्य में बंध बाधकर उपर का मुख खोलकर वायु नीकाल देवे और पानी भरे, फीर उस का मुख बांधकर बीच का बंध छोड देवे तो क्या गौतम ! उस मशक में रहे हुवे नीचे के वायु से पानी रह सकता है ? हां भगवन् ! उपर के विभाग में वायु के आधार से पानी रह सकता है. तब भगवन्तने कहा कि जैसे वायु के आधार से मशक में पानी रहा वैसे ही आकाश के आधार से वायु, वायु के आधार से पानी यावत् कर्म संग्रहीत जीव है. दूसरा दृष्टान्त जैसे कोई पुरुष वायु से पूरित चमडे की मशक को कटि में बांधकर पुरुष प्रमाण से अधिक अगाध पानीवाले द्रह में प्रवेश

सुक्कलेस्साए ॥ सेणं भंते ! कइसु णाणेसु होज्जा ? गोयमा ! तिसुवा चउसुवा होज्जा तिसु होज्जमाणे तिसु आभिणिबोहियणाण सुअणाण ओहिणाणेसु होज्जा, चउसु होज्ज• माणं आभिणिबोहियणाण सुअणाण ओहिणाण मणपज्जवणाणेसु होज्जा ॥ सेणं भंते ! किं सजोगी होज्जा अजोगी होज्जा ? एवं जोगोवओगो संघयण संठाणं उच्चत्तं आउयंच एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि ॥ सेणं भंते ! किं सवेदए पुच्छा ? गोयमा ! सवेदएवा होज्जा, अवेदएवा होज्जा जइ अवेदए होज्जा किं उवसंतवेदए होज्जा खीणवेदए होज्जा? गो० !नो उवसंतवेदए होज्जा खीणवेदए होज्जा॥जइ

भावार्थ

उच्चत्व, आयुष्य, कहना. अहो भगवन् ! क्या वे सवेदी हैं या अवेदी हैं ? अहो गौतम ! सवेदी होवे अथवा अवेदी भी होवे ? यदि अवेदी होवे तो क्या उपशांत वेदी होवे या क्षीण वेदी होवे ? अहो गौतम ! उपशांत वेदी होवे नहीं परंतु क्षीण वेदी होवे. यदि सवेदी होवे तो स्त्री वेदी, पुरुष वेदी व पुरुष नपुंसक वेदी होवे. अहो भगवन् ! क्या वे सकषायी होवे या अकषायी होवे ? अहो गौतम ! वे सकषायी होवे और अकषायी भी होवे. यदि अकषायी तो क्षीण कषायी होवे परंतु उपशांत कषायी होवे नहीं और सकषायी होवे तो एक, दो, तीन व चार कषायी होवे. एक में संज्वलनका लोभ होवे, दो में माया व लोभ,

भावार्थ

अग्निकाया का नि० बुझाता है ए० इन भं० भगवन् दो० दोनों पु० पुरुषों में से क० कौनसा पु० पुरुष म० महाकर्म वाला म० महाक्रियावाला म० महाआश्रव वाला म० महावेदना वाला क० कौनसा पु० पुरुष

मूल

तराएचेव जाव अप्पवेयणतराएचेव जेवा से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ जेवा से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ ? कालोदाई : तत्थणं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ सेणं पुरिसे महाकम्मतराएचेव जाव महावेयणतराएचेव, तत्थणं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, सेणं पुरिसे अप्पकम्मतराएचेव जाव अप्पवेयणतराएचेव ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तत्थणं जे से पुरिसे जाव अप्पवेयणतराएचेव ? कालोदाई ! तत्थणं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ सेणं पुरिसे बहुतरायं पुढविकायं समारंभइ, बहुतराए आउकायं समारंभइ, अप्पतरायं तेउकायं समारंभइ, बहुतरायं

भावार्थ

होवे ? अहो कालोदायिन् ! जो पुरुष अग्निकाया को प्रज्वलित करता है वह पुरुष महा कर्म वाला यावत् महा वेदना वाला होता है और जो अग्नि बुझाता है वह अल्प कर्म वाला यावत् अल्प वेदना वाला होता है. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो कालोदायिन् ! जो पुरुष अग्नि प्रज्वलित करता है वह बहुत पृथ्वीकायिक, अपकायिक, अल्प तेउकायिक, बहुत वायुकायिक, बहुत वनस्पतिकायिक व त्रस कायिक

तिसु संजलण माण माया लोभेसु होज्जा, दोसु होज्जमाणे दोसु संजलण माया लोभेसु होज्जा, एगंमि होज्जमाणे एगंमि संजलण लोभे होज्जा ॥ तस्सणं भंते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा एवं जहा असोच्चाए तहेव जाव केवल णाणं समुप्पज्जइ॥सेणं भंते केवलि पण्णत्तं धम्मं आघवेज्जवा,पण्णवेज्जवा परूवेज्जवा?हंता गोयमा ! आघवेज्जवा, पण्णवेज्जवा, परूवेज्जवा ॥ सेणं भंते ! पव्वावेज्जवा मुंडावेज्जवा ? हंता ! पव्वावेज्जवा, मुंडावेज्जवा ॥ सेणं भंते ! सिज्झइ बुज्झइ जाव अंतकरेइ ? हंता जाव अंतकरेइ॥ तस्सणं भंते! सिस्सावि सिज्झंति जाव अंतकरेंति? हंता सिज्झंति जाव अंतकरेंति ॥ तस्सणं भंते ! पसिस्सावि सिज्झंति ? एवंचेव जाव



बुझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ? हां गौतम ! उन के शिष्यों भी सीझते हैं बुझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं अहो भगवन् ! क्या उन के प्रशिष्य सीझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ? हां गौतम ! उन के प्रशिष्यों भी सीझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं. अहो भगवन् ! क्या वे ऊर्ध्व में होवे, अधो में होवे व तिर्यक् में होवे ? अहो गौतम ! जैसे असोच्चा केवली का कथन वैसे ही जानना. अहो भगवन् ! वे एक समय में कितने होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक,

शब्दार्थ तं० तैसे जा० यावत् जी० जीव क० कर्म संग्रहित से० वह ज० जैसे के० कोइ पुरुष व० मशक को आ० भरे क० कटि से बं० बांधे अ० अगाध प० तल अ० बहुत पु० पुरुषप्रमाण उ० पानी में ओ० प्रवेश करे से० वह णू० निश्चय गो० गौतम से० वह पु० पुरुष त० उस आ० पानी की उ० उपर चि० रहे हं० हां चि० रहे ए० ऐसे अ० आठ प्रकार की लो० लोकस्थिति प० प्ररूपी जा० यावत् जी० जीव क० कर्म संग्रहित ॥ १६ ॥ अ० हे भं० भगवन् जी० जीव पो० पुद्गल अ० अन्योन्य ब० बंधाये हुवे अ० अन्योन्य

मूल जहावा केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ २ त्ता कडीए बंधइ अत्थाह मतारम पोरिसियं उदगंसि ओगाहेज्जा ॥ सेणूणं गोयमा ! से पुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चिट्ठइ ? हंता चिट्ठइ ॥ एवं वा अट्ठविहा लोयट्ठिई पण्णत्ता, जाव जीवा कम्म संगहिया ॥१६॥ अत्थिणं भंते ! जीवा य पोग्गला य अण्णमण्ण बद्धा, अण्णमण्ण

भावार्थ करके आगे जावे तो क्या गौतम ! वह पुरुष पानी पर तीरता हुवा रहता है ? गौतम स्वामी कहते हैं कि वह पुरुष पानी पर ही तीरता हुवा रहता है. जैसे वह पानी पर ही तीरता हुवा रहता है वैसे ही अहो गौतम ! आकाश प्रतिष्ठित वायु वगैरह आठ प्रकार की लोक स्थिति कही है ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! जीव व पुद्गल परस्पर क्या बंधे हुवे हैं ! परस्पर एक २ को स्पर्शे हुवे हैं ? परस्पर चिकनाइ से लगे

व० वत्य गा० स्वामी प० पधारे प० परिषदा णि० नीकली ध० धर्म क० कहा प० परिषदा प० पीछी गई ते० उस काल ते० उस समय में पा० पार्श्वनाथ के शिष्य गं० गांगेय अ० अनगार जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां उ० आये उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अ० नजदीक ठि० खडा रहा कर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ए० ऐसा व० बोले सं०

सूत्र

नामी समोसढे, परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया,॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावचिज्जा गंगेयं णामं अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवा गच्छइ उवागच्छइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा, समणं भगवं महावीरं एवं वयासी संतरं भंते ! णेरइया उववज्जंति, निरंतरं णेरइया उववज्जंति ? गंगेया ! संतरंपि णेरइया उववज्जंति निरंतरंपि णेरइया उववज्जंति, ॥ संतरं भंते !

भावार्थ

कितना गहन है यह बताने के लिये बत्तीसवे उद्देशे में गांगेय अनगार के प्रश्न कहते हैं. उस काल उस समय में वाणिज्य ग्राम नामक नगर था. उस के दूतिपलास नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे. परिषदा वंदन को आई. धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस काल उस समय में पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्य श्री गांगेय अनगार जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी थे वहां आये और पास उपस्थित

पु० पृथ्वी काया उ० उत्पन्न होवे गं० गांगेय नो० नहीं सं० अंतरा सहित पु० पृथ्वीकाया उ० उत्पन्न होवे नि० निरंतर उ० उत्पन्न होवे जा० यावत् वनस्पति काया बे० बेइन्द्रिय जा० यावत् वे० वैमानिक ज० जैसे ने० नारकी ॥ १ ॥ सं० अंतरा सहित भं० भगवन् ने० नारकी उ० उद्वर्ते नि० निरंतर भं० भगवन् ने० नारकी उ० उद्वर्ते गं० गांगेय सं० अंतर सहित ने० नारकी उ० उद्वर्ते नि० निरंतर ने० नारकी उ० उद्वर्ते ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार सं० अंतर सहित भं० भगवन् पु० पृथ्वी काया उ०

एवं जाव वणस्सइ काइया ॥ बेइंदिया जाव वेमाणिया एते जहा नेरइया ॥ १ ॥ संतरं भंते ! णेरइया उव्वट्टंति, निरंतरं भंते ! णेरइया उव्वट्टंति ? गंगेया ! संतरंपि णेरइया उव्वट्टंति, निरंतरंपि णेरइया उव्वट्टंति ॥ एवं जाव थणिय कुमारा ॥ संतरं भंते ! पुढवीकाइया उव्वट्टंति पुच्छा ? गंगेया णो संतरं पुढवीकाइया उव्वट्टंति

गांगेय ! अंतर सहित नहीं उत्पन्न होते हैं परंतु निरंतर उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही अप्काय यावत् वनस्पति काय का जानना. बेइन्द्रिय से वैमानिक तक का नारकी जैसे कहना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अंतर सहित उद्वर्तते हैं ( मरते हैं ) या निरंतर उद्वर्तते हैं ? अहो गांगेय ! अंतर सहित उद्वर्तते हैं और निरंतर भी उद्वर्तते हैं. ऐसे ही स्थनित कुमार तक अंतर सहित व निरंतर उद्वर्तते हैं. अहो भगवन् ! क्या पृथ्वी कायिक जीव अंतर सहित उद्वर्तते हैं या निरंतर उद्वर्तते हैं ? अहो गांगेय ! निरंतर

प्रकार के भं० भगवन् प० प्रवेशन प० प्ररूपा गं० गांगेय च० चार प्रकार के तं० वह ज० जैसे ने० नारकी प्रवेशन ति० तिर्यंच योनि प्रवेशन म० मनुष्य प्रवेशन दे० देव प्रवेशन ने० नारकी प्रवेशन भं० भगवन् क० कितने प्रकार का प० प्ररूपा गं० गांगेय स० सात प्रकार का तं० वह ज० जैसे र० रत्नप्रभा पृथ्वी ने० नारकी प्रवेशन जा० यावत् अ० अधो स० सातवी पृथ्वी ने० नारकी प्रवेशन॥३॥सरल शब्दार्थ

सूत्र

पण्णत्ते ? गंगेया ! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, तंजहा णेरइयपवेसणए, तिरिक्ख जोणिय पवेसणए, मणुस्स पवेसणए, देवपवेसणए ॥ णेरइयपवेसणएणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गंगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते तंजहा रयणप्पभापुढवीणेरइय पवेसणए जाव अहे सत्तमा पुढवी णेरइय पवेसणए॥३॥एगेण भंते ! णेरइए नेरइय पवेसणएणं

भावार्थ

॥ २ ॥ जीव मरकर गति में प्रवेश करते हैं इसलिये गति प्रवेशन रूप कहते हैं. अहो भगवन् ! प्रवेशन ( एक गति में से दूसरी गति में जाना ) के कितने भेद कहे ? अहो गांगेय ! चार प्रकार के प्रवेशन कहे हैं नारकी प्रवेशनक, तिर्यंच प्रवेशनक, मनुष्य प्रवेशनक, और देव प्रवेशनक. अहो भगवन् ! नारकी प्रवेशनक के कितने भेद कहे हैं ? अहो गांगेय ! नारकी प्रवेशनक के सात भेद हैं ? रत्नप्रभा नरक प्रवेशनक, शर्कराप्रभा नरक प्रवेशनक यावत् नीचे सातवी तमतमप्रभानरक प्रवेशनक ॥ ३ ॥ अहो [illegible] रत्नप्रभा नरक प्रवेशन होवे,

सूत्र

पओग परिणयाणं पुच्छा ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-पज्जत्तग असुर कुमार देव पंचिदिय पओग परिणया, अपज्जत्तग असुर कुमारदेव पंचिदिय पयोग परिणयाय एवं जाव पज्जत्तग थणिय कुमारदेव पंचिदिय पयोग परिणया, अपज्जत्तग थणिय कुमारदेव पंचिदिय पओग परिणयाय, ॥ एवं एएणं अभिलावेणं दुपएणं, भेएणं पिसायाय जाव गंधव्वदेव पंचिदिय पओग परिणयाय॥ एवं पज्जत्तापज्जत्तग चंदविमान जोइसियदेव पंचिदिय पओग परिणया जाव पज्जत्ता पज्जत्तग ताराविमानदेव पंचिदिय पयोग परिणयाय ॥ पज्जत्तग सोहम्म कप्पोववण्णगदेव पंचिदिय पओग परिणया, अपज्जत्तग सोहम्म कप्पोववण्णगदेव पंचिदिय पओग परिणया ॥ एवं जाव पज्जत्ता पज्जत्तग अच्चुअकप्पोववण्णगदेव पंचिदिय पओग परिणयावि ॥ पज्जत्तगा पज्जत्तग हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जग कप्पातीयदेव पंचिदिय पओग परिणया जाव पज्जत्ता पज्जत्तग

भावार्थ

संमूर्छिम भुजपरिसर्प, गर्भज भुज परिसर्प, संमूर्छिम खेचर व गर्भज खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय इन सबके एक एक के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो २ भेद जानना. संमूर्छिम मनुष्य व गर्भज मनुष्य के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद जानना. दश भुवनपति, आठ वाणव्यंतर, पांच-ज्योतिषी, बारह प्रकार के कल्पोत्पन्न

होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ॥ एवं एक्केका पुढवी छड्डेयव्वा जाव अहवा एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ॥ ५ ॥ तिण्णि भंते ! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहे सत्तमाए होज्जा? गंगेया रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहवा अहे सत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए

भावार्थ वालुप्रभा में ८ एक शर्करप्रभा में एक पंकप्रभा में ९ एक शर्करप्रभा में एक धूम्र प्रभा में १० एक शर्कर प्रभा में एक तम प्रभा में ११ एक शर्कर प्रभा में एक तम तम प्रभा में १२ एक वालु प्रभा में एक पंक प्रभा में १३ एक वालु प्रभा में एक धूम्रप्रभा में १४ एक वालु प्रभा में एक तम प्रभा में १५ एक वालु प्रभा में एक तम तम प्रभा में १६ एक पंक प्रभा में एक धूम्रप्रभा में १७ एक पंक प्रभा में एक तम प्रभा में १८ एक पंक प्रभा में एक तम तम प्रभा में १९ एक धूम्र प्रभा में एक तम प्रभा में २० एक धूम्र प्रभा में एक तम तम प्रभा में और २१ एक तम प्रभा में एक तम तम प्रभा में उत्पन्न होवे. इस तरह दो जीव के इक्कीस भांगे कहे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! तीन जीव नरक प्रवेशन से प्रवेश करते हुवे क्या रत्न प्रभा में उत्पन्न होवे यावत् नीचे सातवी नरक में उत्पन्न होवे ? अहो गांगेय ! यहां असंयोगी सात भांगे

शब्दार्थ जीव प० प्रतिबद्ध पु० पुत्रका, जीव फु० स्पर्शा हुवा त० इसलिये आ० आहार करे प० परिणमे अ० अथवा पु० पुत्रका जीव प० प्रतिबद्ध मा० माता का जीव से फु० स्पर्शा हुवा त० इस लिये चि० चिने उ० उपचेने से० वह ते० इसलिये जा० यावत् नो० नहीं मु० मुख से का० कवल आ० आहार आ० आहार करे ॥ १५ ॥ क० कितने भं० भगवन् मा० माता के अंग गो० गौतम त० तीन मा० माता के अंग प० प्ररूपे मं० मास सो० रुधिर म० मस्तक ॥ १६ ॥ क० कितने भं० भगवन् पे० पिता के

सूत्र फुडा, तम्हा आहारेइ, तम्हा परिणामेइ, अविरात्तियणं पुत्तजीव पडिबद्धा माउजीव फुडा तम्हा चिणाइ, तम्हा उवचिणाइ. से तेणट्ठेणं जाव नो पभू मुहेणं कावलियं आहारं आहारित्तए ॥ १५ ॥ कइणं भंते ! माइअंगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ माइयंगा पण्णत्ता तंजहा मंससोणिए मत्थुलुंगं ॥ १६ ॥ कइणं भंते ! पेइयंगा प-

भावार्थ आहार करता है और शरीर में परिणमाता है. दूसरी पुत्रजीवरसहरणी नाडी पुत्रके जीव की साथ बंधी हुई व माता की साथ स्पर्शी हुई है. इस से गर्भस्थ जीव के शरीर की वृद्धि होती है. इसीसे अहो गौतम ! कवल आहार लेने को गर्भस्थ जीव नहीं समर्थ होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! माता के कितने अंग कहे हैं ? अहो गौतम ! माता के तीन अंग कहे हैं. मांस, रुधिर व मस्तक की मींजी. फेफसा अथवा कलेजा ऐसा भी अर्थ कितनेक करते हैं. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पिता के कितने अंग हैं ? अहो गौतम !

एगे होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणाए दो सक्कराए, एगे वालुयाए, एगे अहे-सत्तमाए होज्जा ४। अहवा दो रयणाए, एगे सक्कराए, एगे वालुयाए एगे पंकाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणाए, एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ४ ॥ अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए, एगे पंकाए, दो धूमाए होज्जा, एवं जहा चउण्हं चउक्कसंजोगो भणिओ, तहा पंचण्हवि चउक्क संजोगो भाणियव्वो,

भावार्थ
इस तरह जैसे चार जीवों के तीन संयोगी भांगे कहे वैसे ही पांच जीवों के तीन संयोगी भांगे मानना. इसमें विशेष कि उस में एक को साथ संचारना थी यहां दो को साथ संचारना होवे इस तरह २१० भांगे होवे इसका अंतिम भांगा तीन जीव धूम्रप्रभा में एक जीव तम प्रभा में एक जीव तम तम प्रभा में उत्पन्न होवे. अब चतुष्क संयोगी १४० भांगे कहते हैं एक रत्नप्रभा में, एक शर्कर प्रभा में एक वालु प्रभा में दो पंकप्रभा में यावत् एक रत्नप्रभा में एक शर्कर प्रभा में एक वालुप्रभा में दो तम तम प्रभा में यों चार भांगे. अथवा एक रत्नप्रभा में एक शर्कर प्रभा में दो वालुप्रभा में एक पंकप्रभा में यावत् एक रत्नप्रभा में एक शर्कर प्रभा में दो वालुप्रभा में एक तम तम प्रभा में यों चार. अथवा एक रत्नप्रभा में दो शर्कर प्रभा में एक वालुप्रभा में एक पंकप्रभा में यावत् एक रत्नप्रभा में दो शर्कर प्रभा में एक वालुप्रभा में एक तमतम प्रभा में यों चार भांगे. अथवा दो रत्नप्रभा में एक शर्करप्रभा में एक वालुप्रभा में एक पंक प्रभा में यावत् दो रत्न

पत्र ऋषीजी

अच्चुअकप्पोववण्णग वेमाणिय देव पंचिंदिय पओग परिणया ॥ एवं हेट्ठिमगेवेज्जग कप्पातीय वेमाणिय देव पंचिंदिय पओग परिणया जाव उवरिम गेवेज्जग कप्पातीय वेमाणिय देव पंचिंदिय पओग परिणया ॥ एवं विजय अणुत्तरोववाइय कप्पातीय वेमाणिय देव पंचिंदिय पओग परिणया जाव सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइय कप्पातीय वेम ०० परिणया, एक्केक्के दुयभेया भाणियव्वा ॥ जाव जेपज्जत्तग सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइय कप्पातीय वेमाणिय देव पंचिंदिय पओग परिणया परिणया दंडओ ॥ ५ ॥ जे अपज्जत्ता सुहुम पुढवीकाइय एगिंदिय पओग परिणया ते फासिंदिय पओग परिणया । जे पज्जत्ता

ऐसे पांचों शरीर जानना भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी अपर्याप्त में वैक्रेय तेजस व कार्मण ऐसे तीन शरीर पाते हैं ५ ॥ अब इन्द्रियों आश्रित पांचवा दंडक कहते हैं जो अपर्याप्त सूक्ष्म परिणत हैं वे स्पर्शेन्द्रिय प्रयोग परिणत हैं ऐसे ही पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय, पर्याप्त बादर पृथ्वीकाय का जानना पृथ्वीकाय में जैसे चार भाग कहे,

एगे अहे सत्तमाए होज्जा ॥ अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगेसक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहे सत्तमाए होज्जा ॥ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए,

भावार्थ

भांगे होते हैं. १ एक रत्न प्रभा में एक शर्करा प्रभा में एक वालु प्रभा में, एक पंक प्रभा में एक धूम्रप्रभा में २ एक र० एक श० एक वा० एक पं० एक त० में ३ एक र० एक श० एक वा० एक पं० एक तमतम प्रभा में ४ एक र० एक श० एक वा० एक धू० एक त० में ५ एक र० एक श० एक वा० एक धू० एक तमतमप्रभा में ६ एक र० एक श० एक वा० एक त० एक तमतमप्रभा में ७ एक र० एक श० एक पं० एक धू० एक त० में ८ एक र० एक श० एक पं० एक धू० एक तमतमप्रभा ९ एक एक र० एक श० एक पं० तमतमप्रभा में

सूत्र

एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगेसक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा ॥ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए,

भावार्थ

भांगे होते हैं. १ एक रत्न प्रभा में एक शर्कर प्रभा में एक बालु प्रभा में, एक पंक प्रभा में एक धूम्र प्रभा में २ एक र० एक श० एक वा०एक पं० एक त०में३ एक र०एक श०एक वा० एक पं०एक तमतम प्रभा में ४ एक र० एक श० एक वा० एक धू० एक त० में ५ एक र० एक श०एक वा०एक धू०एक तमतमप्रभा में६एक र०एक श०एक वा०एक त० एक तमतमप्रभा में७एक र०एक श०एक पं०एक धू० एक त०८ एक र०एक श०एक पं०एक धू० एक तमतमप्रभा ९ एक एक र० एक श० एक पं० तमतमप्रभा में

परिणया। देव पंचिंदिय पओग परिणया, जाव सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइय कप्पा-तीत वेमाणिय देव पंचिंदिय पओग परिणया ॥ ६ ॥ जे अपज्जत्ता सुहुम पुढवि काइय एगिंदिय ओरालिय तेयाकम्मा सरीर पओग परिणया, ते फासिंदिय पओग परिणया, जे पज्जत्ता सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय ओरालिय तेयाकम्मा सरीर पओग परिणया एवं चेव। अपज्जत्त बादर पुढविकाइय एगिंदिय ओरालिय तेयाकम्मा सरीर पओग परिणया एवं चेव। एवं पज्जत्तगावि, एवं एएणं अभिलावेणं जस्स जइ इंदियाणि सरीराणिय ताणि भाणियव्वाणि, जाव जे अपज्जत्ता सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइय

के पर्याप्त व अपर्याप्त ये पांच इन्द्रियों परिणत है ॥ ६ ॥ औदारिकादि शरीर में इन्द्रियादि भेद से पांचवा दंडक कहते हैं. जो अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय उदारिक, तेजस, कार्माण शरीर प्रयोग परिणत है वे स्पर्शेन्द्रिय प्रयोग परिणत है. जो पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय उदारिक, तेजस, कार्माण शरीर प्रयोग परिणत हैं वे भी स्पर्शेन्द्रिय प्रयोग परिणत है. ऐसे ही अपर्याप्त बादर पृथ्वीकाय व पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय औदारिकादि शरीर स्पर्शेन्द्रिय प्रयोग परिणत हैं. इस प्रकार उक्त अनुक्रम से जिस स्थान जितने शरीर व जितनी २ इन्द्रियों होवे वैसे कहना, यावत् अनुत्तर विमान के

होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहे सत्तमाए होज्जा. ॥८॥ छब्भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा किं रयणप्पभाए, पुच्छा ? गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहे सत्तमाएवा होज्जा ॥ अहवा एगे रयणप्पभाए, पंच सक्करप्पभाए वा होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए, पंच वालुयप्पभाए होज्जा. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए पंच अहे सत्तमाए होज्जा ६ ॥ अहवा दो रयणप्पभाए, चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा,

भावार्थ

एक तमतम प्रभा १८ एक श० एक वा० एक पं० एक त० एक तमतम प्रभा १९ एक श० एक वा० एक धू० एक त० एक तमतम प्रभा २० एक श० एक पं० एक धू० एक त० एक तमतम प्रभा और २१ एक वा० एक पं० एक धू० एक त० एक तमतम प्रभा ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! छ नारकी नरक में प्रवेश करते हुवे क्या र० में उत्पन्न होवे यावत् तमतम प्रभा में उत्पन्न होवे ? अहो गांगेय ! र० में यावत् सातवी तमतम प्रभा में उत्पन्न होवे. यों असंयोगी सात भांगे हुवे. अब द्विसंयोगी १०५ भांगे होते हैं जिस में सात नरक के द्विसंयोगी २१ पद और १५-२४-३३-४२-२१ यों पांच विकल्प. इन दोनों का

शब्दार्थ ग० गर्भ में ग० रहाहुवा ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० कितनेक उ० उत्पन्न होवे अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे से० वह के० कैसे गो० गौतम स० संज्ञीपंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्तिसे प० पर्याप्त वी० वीर्यलब्धिसे वे० वैक्रेयलब्धिसे प० शत्रुसैन्य आ० आया हुवा सो० सुनकर नि० अवधारकर प० प्रदेश नि० बाहार निकाले वे० वैक्रेय समुद्घात से स० ग्रहण करे स० ग्रहण करके

सूत्र भंते गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा॥ सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीएहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए पराणियं आगयं सोच्चा निसम्म पएसे नि-

भावार्थ नष्ट होजाते हैं. ॥ १८ ॥ अब गर्भस्थ जीव कदाचित गर्भ में ही काल अवस्था को प्राप्त होवे तो कहां पर उत्पन्न होता है उस संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भस्थ जीव आयुष्य पूर्ण होने से कालकर क्या नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक जीव नरक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस तरह से गर्भस्थ जीव नारकी में उत्पन्न होते हैं अहो गौतम ! कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव राणी की कुक्षि में उत्पन्न होवे अर्थात् राजपुत्र होवे. वहां उन को पूर्ण पर्याप्त बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे पूर्व करणी के प्रभाव से वीर्य लब्धि व वैक्रेय लब्धि की प्राप्ति होवे.

सूत्र

...णाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, चत्तारि अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए, दो सक्करप्पभाए, तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं तिय संजोगो भणिओ तहा छण्हवि भाणियव्वो, णवरं एक्को अब्भहिओ उच्चारेयव्वो सेसं तंचेव ३५० ॥ चउक्क संजोगोवि तहेव ३५० ॥ पंचसंजोगोवि तहेव णवरं एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव पच्छि-

भावार्थ

र० में पांच तमतम प्रभा में यों ६ भांगे अथवा दो र० में चार श० में यावत् दो र० में चार तमतम प्रभा में यों ६ भांगे. तीन र० में तीन श० में यावत् तीन र० में तीन तमतम प्रभा में इसी क्रम से जैसे पांच जीवों के दो संयोगी कहे वैसे ही जानना. विशेष में एक अधिक कहना यावत् १०५ वा भांगा पांच त० में एक तमतम प्रभा में उत्पन्न होवे. अब तीन संयोगी ३५० भांगे कहते हैं. एक र० में एक श० में चार वा० में यावत् एक र० में एक श० में चार तमतम प्रभा में उत्पन्न होवे यों पांच भांगे होवे. अथवा एक र० में दो शर्कर प्रभा में तीन वा० में यावत् एक र० में दो श० में तीन तमतम में इस तरह जैसे पांच जीव आश्री भांगे कहे वैसे छ जीव के तीन संयोगी भांगे कहना विशेष में एक बढाना यों ३५० भांगे तीन संयोगी होवे. ऐसे ही चतुष्क संयोगी ३५० भांगे वैसे ही कहना यावत् दो वा० एक पं० एक धू० एक

सूत्र

ओरालिय तेया कम्मा सरीर फासिंदिय पओग परिणया ते वण्णओ काल वण्ण परिणया जाव आयत संठाण परिणया। जे पज्जत्ता सुहुम पुढवि काइय एगिंदिय ओरालिय तेया कम्मा सरीर फासिंदिय पओग परिणया एवं चेव, एवं जहाणुपुव्वीए जस्स जइसरीराणि इंदियाणि य तस्स तत्तियाणि भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्ता सव्व ट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइय कप्पातीय वेमाणिय देव पंचिंदिय वेउव्वियतेया कम्मा सरीर सोइंदिय जाव फासिंदिय पओग परिणया ते वण्णओ काल वण्ण परिणया जाव आयत संठाण परिणयावि एए णव दंडगा ॥ ११ ॥ मीसा परिणयाणं भंते ! पोग्गला

भावार्थ

इन्द्रियों होवे उतनी लेकर वर्णादि पचीस बोल ग्रहण करना ॥ १० ॥ जो अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय उदारिक, वैक्रेय, तेजस व कार्माण शरीर स्पर्शेन्द्रिय परिणत हैं वे श्याम वर्ण यावत् लम्बगोल संस्थान परिणत हैं. ऐसे ही सर्वार्थ सिद्ध विमान तक जिन को जितनी इन्द्रियों व शरीर हैं उन को उतनी इन्द्रियों व शरीर कहना. जो सर्वार्थ सिद्ध अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिक देव पंचेन्द्रिय, वैक्रेय, तेजस कार्माण श्रोतेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय परिणत हैं वे वर्ण से श्याम वर्ण परिणत यावत् संस्थान से लम्बगोल संस्थान परिणत हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! मीश्र परिणत पुद्गल के कितने भेद कहे हैं ?

सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, जाव एगे अहे सत्तमाए होज्जा १२४ ॥१॥ सत्त भंते ! णेरइया णेरइय पवेसणएणं पवेसमाणा पुच्छा गंगेया? रयणप्पभाएवा होज्जा जाव अहे सत्तमाए होज्जा ७ ॥ अहवा एगे रयणप्पभाए छ सक्करप्पभाए होज्जा; एवं एएणं कमेणं जहा छण्हं दुयसंजोगो तहा सत्तण्हंवि भाणियव्वं, णवरं एगो अब्भहिओ संचारिज्जइ.

चौवीसहर १२४ भांगे होते हैं. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! सात जीव नरक गति में प्रवेशन करते हुवे क्या रत्नप्रभा में उत्पन्न होवे यावत् तम तम प्रभा में उत्पन्न होवे ? अहो गांगेय ! सातों जीवों का असंयोगी सात भांगे. द्विसंयोगी सात नरक के २१ पद और सात जीव के ६ विकल्प १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१ सो दोनों का गुनाकार करने से १२६ भांगे होते हैं. तीन संयोगी सात जीव के १५ विकल्प ११५, १२४, २१४, १३३, २२३, ३१३, १४२, २३२, ३२२, ४१२, १५१, २४१, ३३१, ४२१, ५११ और सात नरक के तीन संयोगी ३५ पद होते हैं. इन दोनों का गुनाकार करने से ५२५ भांगे होवे. सात नरक के चार संयोगी ३५ पद होते हैं और सात जीवों के चतुष्क संयोगी २० विकल्प होते हैं इस तरह दोनों का गुनाकार करने से ७०० भांगे मानना. सात जीव के पांच संयोगी १५ विकल्प होते हैं और पांच संयोगी सात नरक के २१ पद होते हैं इस तरह दोनों के गुनाकार करने से पांच संयोगी ३१५ भांगे होते हैं सात जीव के छ संयोगी ६ विकल्प होते हैं. और सात नारकी के छ संयोगी ७

पवेसणएणं पवेसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा? गंगेया ! रयणप्पभाएवा होज्जा, जाव अहे सत्तमाएवा होज्जा ७ । एगे रयणप्पभाए सत्त सक्करप्पभाए होज्जा, एवं दुयसंजोगो १४७ ॥ तियसंजोगो ७३५ चउक्कजोगो १२२५ ॥ पंचसंजोगो ७३५ ॥ जाव छक्कसंजोगोय जहा सत्तण्हं भणियं तहा अट्ठण्हवि भाणियव्वं, णवरं एक्केक्को अब्भहिओ, सेसं तंचेव जाव छक्कसंजोगस्स अहवा तिण्णि सक्करप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, जाव एगे अहे सत्तमाए होज्जा ॥१४७॥ अहवा एगे रयणप्पभाए जाव दो तमाए, एगे अहे सत्तमाए होज्जा । एवं संचारेयव्वं, ... । अहवा दो रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, जाव एगे अहे सत्तमाए होज्जा ७ ॥

रत्नप्रभा में उत्पन्न होवे यावत् सातवी तम तम प्रभा में उत्पन्न होवे? अहो गांगेय ! आठों नारकी रत्नप्रभा में यावत् तम तम प्रभा में उत्पन्न होवे यों असंयोगी सात भांगे हुए. एक रत्नप्रभा में सात शर्करप्रभा में ऐसे द्विसंयोगी १४७ भांगे होवे क्यों कि सात नरक के द्विसंयोगी २१ पद होते हैं और आठ जीवों के द्विसंयोगी सात विकल्प होते हैं इस से १४७ भांगे होवे तीन संयोगी के ७३५ भांगे होवे क्योंकी पद ३५ है और विकल्प २१ होते हैं इस से ७३५ भांगे होते हैं. चतुष्क संयोगी १२२५, पांचसंयोगी ७३५, छ संयोगी १४७ सात संयोगी ६ यों सब मीलकर ३००३ भांगे सात संयोगी के जैसे कहे वैसे कहना ॥१३॥

णया जाव सुक्किल्लवण्ण परिणया, जे गंधपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं०-सुगंध परिणया, दुग्गंध परिणयावि, एवं जहा पण्णवणाए तहेव निरवसेसं जाव संठाणओ आयत संठाण परिणया ते वण्णओ, कालवण्ण परिणयावि जाव लुक्ख फास परिणयावि ॥ १३ ॥ एगे भंते ! दव्वे किं पयोग परिणए, मीसापरिणए, वीससा परिणए? गोयमा ! पओग परिणएवा, मीसा परिणएवा, वीससा परिणएवा ॥ जइ पओग परिणए किं मणपओग परिणए, वइपओग परिणए, कायपओग परिणए? गोयमा ! मणप्पओग परिणएवा, वयपओग परिणएवा, कायप्पओग परि-

यावत् शुक्ल वर्ण परिणत. गंध परिणत के दो भेद सुरभिगंध व दुरभिगंध परिणत. रस परिणत पांच प्रकार के तिक्त परिणत यावत् मधुर रस परिणत. स्पर्श परिणत के आठ भेद कर्कश स्पर्श परिणत यावत् रूक्ष स्पर्श परिणत. संठाण के पांच भेद समचतुस्रसंस्थान परिणत यावत् आयत संस्थान परिणत वगैरह सब अधिकार लम्बगोल संस्थान परिणत, वर्ण से श्याम वर्ण यावत् रूक्ष स्पर्श परिणततक पन्नवणा सूत्रानुसार जानना ॥ १३ ॥ अब एक पुद्गल द्रव्य परिणत आश्री प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! क्या एक द्रव्य प्रयोग परिणत, मीश्र परिणत व स्वभाव परिणत है ? अहो गौतम ! एक पुद्गल प्रयोग

संचारियव्वा जाव अहवा संखेज्जा तमाए संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा २ ३ १॥ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए, संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा! जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए, संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एवं एएणं कमेणं एक्केक्को संचारियव्वो, सक्करप्पभाए जाव अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा

वालु प्रभा में यावत् एक रत्न प्रभा में एक शर्कर प्रभा में संख्यात तमतम प्रभा में यों पांच भांगे अथवा एक रत्न प्रभा में दो शर्कर प्रभा में संख्यात वालु प्रभा में यावत् एक रत्न प्रभा में दो शर्कर प्रभा में संख्यात तमतम प्रभा में अथवा एक रत्न प्रभा में तीन शर्कर प्रभा में संख्यात वालु प्रभा में यावत् एक रत्न प्रभा में तीन शर्कर प्रभामें संख्यात तमतमप्रभा में यों इस क्रमसे एक २ भांगा कहना अथवा एक रत्नप्रभा संख्यात शर्कर प्रभा संख्यात वालुप्रभा यावत् एक रत्नप्रभा संख्यात शर्कर प्रभा संख्यात तमतम प्रभा अथवा दो रत्नप्रभा संख्यात शर्कर प्रभा संख्यात वालु प्रभा यावत् दो रत्नप्रभा संख्यात शर्कर प्रभा

शब्दार्थ उत्थान जा० यावत् प० पराक्रम ते० वे ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से अ० अवीर्य से० वह ते० इसलिये ज० जैसे ने० नारकी जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच म० मनुष्य ज० जैसे ओ० औधिक जीव न० विशेष सि० सिद्ध व० वर्जना भा० कहना वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक ज० जैसे ने० नारकी से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १ ॥ ८ ॥

सूत्र वि सवीरिया । जोसिणं नेरइयाणं नत्थि उट्ठाणे जाव परक्कमे तेणं नेरइया लद्धिवी-रिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं अवीरिया । से तेणट्ठेणं जहा नेरइया एवं जाव पंचिं-दिय तिरिक्ख जोणिया । मणूसा जहा ओहिया जीवा नवरं सिद्ध वज्जा भाणियव्वा । वाणमंतर जोइस वेमाणिया जहा नेरइया ॥ सेवं भंते २ त्ति ॥ पढमेसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ८ ॥

* * *

भावार्थ वीर्य से वीर्य सहित हैं परंतु करण वीर्य से वीर्य रहित हैं इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहागया है कि नारकी के जीव वीर्य सहित व वीर्य रहित है. जैसा नारकी का कहा वैसे ही मनुष्य छोडकर अन्य सब दंडक का कहना मनुष्य का समुच्चय जीव जैसे कहना परंतु समुच्चय जीव के दंडक में सिद्ध है यह यहां नहीं कहना अहो भगवन् ! आपने जो कहा व सत्य है यह पहिला शतकका आठवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ८ ॥

* *

संठाण परिणए॥ २३ ॥ तिण्णि भंते ! दव्वा किं पओग परिणया मीसापरिणया, वीससापरिणया ? गोयमा ! पओगपरिणया, मीसापरिणया, वीससा परिणया, अहवा- एगे पओग परिणए, दोमीसा परिणया, अहवेगे पओगपरिणए दोवीससा परिणया, अहवा- दोपओग परिणया एगे मीसापरिणए, अहवा- दोपओग परिणया, एगे वीससापरिणए अहवा- एगे मीसापरिणए दो वीससा परिणया, अहवा- दोमीसापरिणया एगे वीससापरिणए अहवा- एगे पओग परिणए, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥ २४ ॥ जइ पओगपरिणया किं मणप्पओगपरिणया, वयप्पओगपरिणया, कायप्प-

मनुष्य परिणत एक आयत संस्थान परिणत जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! क्या तीन पुद्गल प्रयोग परिणत, मीश्र परिणत व वीस्रसा परिणत हैं ? अहो गौतम ! प्रयोग, मीश्र व वीस्रसा तीनों परिणत हैं अथवा एक प्रयोग परिणत दो मीश्र परिणत, एक प्रयोग परिणत दो वीस्रसा परिणत, दो प्रयोग परिणत, एक मीश्र परिणत, दो प्रयोग परिणत एक वीस्रसा परिणत, एक मीश्र दो वीस्रसा परिणत दो मीश्र एक वीस्रसा और एक प्रयोग एक मीश्र व एक वीस्रसा परिणत होवे ॥ २४ ॥ यदि प्रयोग परिणत हैं तो क्या मन प्रयोग परिणत वचन प्रयोग परिणत व कायप्रयोग परिणत हैं ? अहो गौतम ! इस में एक संयोगी ही, तीन संयोगी भांगे कहना. यदि मन प्रयोग

प्पभाएय अहे सत्तमाएय होज्जा ५ । अहवा रयणप्पभाएय वालुयप्पभाएय, पंकप्पभाएय १ । जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए, अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा रयणप्पभाएय पंकप्पभाएय धूमाएय होज्जा, १॥ एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्ह, तिय संजोगो भणिओ तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाएय तमाएय अहे सत्तमाएय

॥ अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाएय, वालुयप्पभाएय, पंकप्पभाएय, वा रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय वालुयप्पभाएय, धूमप्पभाएय होज्जा. वा रयणप्पभाएय, सक्करप्पभाएय, वालुयप्पभाएय, अहे सत्तमाएय होज्जा ४॥ णप्पभाएय सक्करप्पभाएय, पंकप्पभाएय, धूमप्पभाएय होज्जा एवं रयण-

प्रभा शर्करा प्रभा में उत्पन्न होवे यावत् रत्न प्रभा तमतम प्रभा में उत्पन्न होवे यों द्विसंयोगी अथवा रत्न प्रभा में शर्करा प्रभा में वालु प्रभा में यावत् रत्न प्रभा में शर्करा प्रभा में तमतम प्रभा में रत्न प्रभा में वालु प्रभा में पंक प्रभा में यावत् रत्न प्रभा में वालु प्रभा में तमतम प्रभा में अथवा प्रभा में पंक प्रभा में, धूम्र प्रभा में यों रत्न प्रभा पृथ्वी की साथ सब तीन संयोगी भांगे कहना यावत् रत्न प्रभा में तम प्रभा में तमतम प्रभा में कहना. यों १५ भांगे हुए. अब चतुष्क संयोगी भांगे कहते हैं

शब्दार्थ

क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव ग० गुरुत्व को ह० शीघ्र आ० आते हैं गो० गौतम पा० प्राणातिपात से मु० मृषावाद से अ० अदत्तादान मे० मैथुन प० परिग्रह को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ पे० राग दो० द्वेष क० कलह अ० कलंक चढाना पे० चुगली र० रति अ० अरति प० परपरिवाद मा० कपट मि० मिथ्यादर्शन शल्य ए० ऐसे ख० निश्चय जी० जीव ग० गुरुत्व को ह० शीघ्र आ० आते हैं ॥ १ ॥ भं० भगवन् जी० जीव ल० लघुत्व ह० शीघ्र आ० आते हैं गो० गौतम पा० प्राणातिपात

सूत्र

कहणं भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवाएणं, मुसावाएणं, आदिन्न, मेहुण, परिग्गह, कोह, माण, माया, लोह, पेज्ज, दोस, कलह, अब्भक्खाण, पेसुन्न, रति, अरति, परपरिवाए, मायामोस, मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥ १ ॥ कहणं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ?

भावार्थ

आठवे उद्देशे के अंत में वीर्य का वर्णन किया है. और जीव वीर्य से भारी होता है इसलिये आगे गुरुत्व का अधिकार चलता है. अहो भगवन् ! अधोगति गमनरूप गुरुत्व किस तरह से जीव प्राप्त करे ? अहो गौतम ! १ प्राणातिपात-जीव का अतिपात से, २ मृषावाद-असत्य बोलने से ३ अदत्तादान-चोरी करने से ४ मैथुन से ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान-कलंक चढाने से १४ पैशुन्य-चुगली करने से १५ रति अरति १६ परपरिवाद अन्य का

पंकप्पभाएय, धूमप्पभाएय, तमाएय होज्जा, अहवा रयणप्पभाएय जाव धूमप्पभाएय अहे सत्तमाएय होज्जा । अहवा रयणप्पभाएय, सक्करप्पभाएय, वालुयप्पभाएय, पंकप्पभाएय, तमाएय, अहे सत्तमाएय होज्जा । अहवा रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय, वालुयप्पभाएय, धूमप्पभाएय, तमाएय अहे सत्तमाएय, होज्जा, अहवा रयणप्पभाएय, सक्करप्पभाएय पंकप्पभाएय धूमप्पभाएय तमाएय अहे सत्तमाएय होज्जा अहवारयणप्पभाएय वालुयप्पभाएय, जाव अहे सत्तमाएय होज्जा ६ । अहवा रयणप्पभाएय, सक्करप्पभाएय, जाव अहे सत्तमाए होज्जा १६४ ॥ १६ ॥ एयस्सणं भंते ! रयणप्पभा पुढवि णेरइय पवेसणगस्स, सक्करप्पभा पुढवि नेरइय पवेसणगस्स, जाव अहे सत्तमा पुढवि

प्रभा, शर्कर प्रभा वालु प्रभा पंक प्रभा धूम्र प्रभा तम प्रभा. अथवा २ रत्न प्रभा शर्कर प्रभा वालु प्रभा पंक प्रभा, धूम्र प्रभा तमतम प्रभा. ३ रत्न प्रभा शर्कर प्रभा वालु प्रभा पंक प्रभा तम प्रभा तमतम प्रभा ४ रत्न प्रभा शर्कर प्रभा वालु प्रभा धूम्र प्रभा तम प्रभा तमतम प्रभा ५ रत्न प्रभा शर्कर प्रभा पंक प्रभा धूम्रप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा६ रत्नप्रभा वालुप्रभा पंकप्रभा धूम्रप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा यों उत्कृष्ट पद के ६४ भांगे होते हैं॥१६॥अहो भगवन्! इन रत्नप्रभा, शर्करप्रभा वालुप्रभा आदि सातों नरक के प्रवेशन में किसकी

विष क० कितनेप्रकारका गो० गौतम च० चारप्रकारका वि० वृश्चिक जा० जाति आशीविष मं० मेंडक जाति आशीविष उ० सर्पजाति आशीविष म० मनुष्य जा० जाति आशीविष ॥ २ ॥ वि० वृश्चिक जा० जाति आशीविषका भं० भगवन् के० कितना वि० विषय प० प्ररूपा गो० गौतम प० प्रभु वि० वृश्चिक जा० जाति आशीविष अ० अर्धभरत प० प्रमाणमात्र बों० शरीर वि० विष वि०

तंजहा—जाइआसीविसाय, कम्म आसीविसाय, ॥ १ ॥ जाइ आसीविसाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—विच्छुयजाइ आसीविसे, मंडुक्कजाइ आसीविसे उरगजाइ आसीविसे मणुस्सजाइ आसीविसे, ॥ २ ॥ विच्छुयजाइ आसीविसस्सणं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! पभूणं विच्छुय जाइ आसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपरिगयं

मे मरकर देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे और वहां अपर्याप्तावस्था में आशीविष होवे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जाति आशीविष के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! जाति आशीविष के चार भेद कहे हैं १ वृश्चिक जाति आशीविष २ मेंडक जाति आशीविष ३ सर्प जाति आशीविष व ४ मनुष्य जाति आशीविष ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! वृश्चिक जाति आशीविष का कितना विषय कहा ? अहो गौतम ! अर्ध

दो भंते! तिरिक्ख जोणिए पुच्छा ? गंगेया! एगिंदिएसुवा होजा जाव पंचिंदिएसुवा होजा ५ । अहवा एगे एगिंदिएसु, एगे बेइंदिएसु होजा । एवं जहा णेरइय पवेसणए तहा तिरिक्खजोणिय पवेसणएवि भाणियव्वो जाव असंखेजा॥ १८॥ उक्कोसा भंते! तिरिक्खजोणिय पुच्छा ? गंगेया ! सव्वेवि ताव एगिंदिएसु होजा । अहवा एगिंदिएसु य बेइंदिएसुय होजा । एवं जहा णेरइया संचारिया तहा तिरिक्ख जोणियावि संचारियव्वा, एगिंदिया अमुयंतेसु दुयसंजोगो, तियसंजोगो, चउक्कसंजोगो, पंचसंजोगोय भाणियव्वो जाव

तिर्यंच योनि प्रवेशनक यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक प्रवेशनक. अहो भगवन् ! एक जीव तिर्यंच योनि में उत्पन्न होता क्या एकेन्द्रिय में उत्पन्न होवे यावत् पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होवे ? अहो गांगेय ! एकेन्द्रिय में यावत् पंचेन्द्रियमें उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! दो जीव तिर्यंच योनि में उत्पन्न होवे क्या एकेन्द्रिय में उत्पन्न होवे यावत् पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होवे ? अहो गांगेय ! एकेन्द्रिय में उत्पन्न होवे यावत् पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होवे. अथवा एक एकेन्द्रिय में एक द्विइन्द्रिय में वगैरह सब भांगे नारकी जैसे असंख्यात बोल तक कहना. विशेष में नरक में उत्पन्न होने के सात स्थान हैं और तिर्यंच में उत्पन्न होने के पांच स्थान हैं. नरक में असंख्यात जीव उत्पन्न होते हैं. तिर्यंच में एकेन्द्रियमें अनंत व द्विइन्द्रियादि में असंख्यात जीव उत्पन्न होते हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! उत्कृष्ट जीव तिर्यंच योनि में कैसे उत्पन्न होते हैं ? अहो गांगेय ! सब जीव एके-

मणुस्स पवेसणएणं पवेसमाणे किं समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु होज्जा ? गंगेया ! समुच्छिम मणुस्सेसुवा होज्जा, गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसुवा होज्जा, दो भंते! मणुस्सा पुच्छा ? गंगेया ! समुच्छिम मणुस्सेसुवा होज्जा गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसुवा होज्जा अहवा एगे समुच्छिम मणुस्सेसु होज्जा, एगे गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु होज्जा । एवं एएणं कमेणं जहा नेरइय पवेसणए तहा मणुस्स पवेसणएवि भाणियव्वे, एवं जाव दस ॥ संखेज्जाइं भंते ! मणुस्स पुच्छा ? गंगेया ! समुच्छिम मणुस्सेसुवा होज्जा गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसुवा होज्जा, अहवा एगे समुच्छिम मणुस्सेसु संखेज्जा गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु होज्जा, अहवा दो समुच्छिम मणुस्सेसु संखेज्जा गब्भवक्कं-

शन के दो भेद कहे हैं १ संमूर्च्छिम मनुष्य प्रवेशन २ गर्भज मनुष्य प्रवेशन. अहो भगवन् ! एक मनुष्य प्रवेशन मे मनुष्य में उत्पन्न होवे तो क्या संमूर्च्छिम में उत्पन्न होवे या गर्भज में उत्पन्न होवे ? अहो गांगेय ! संमूर्च्छिम में उत्पन्न होवे गर्भज में भी उत्पन्न होवे अथवा एक संमूर्च्छिम में एक गर्भज में इसी क्रम से जैसे नारकी का कहा वैसे ही संख्यात तक कहना. अहो भगवन् ! संख्यात मनुष्य प्रवेशन मे क्या संमूर्च्छिम में उत्पन्न होते हैं या गर्भज में उत्पन्न होते हैं ? अहो गांगेय ! संमूर्च्छिम मनुष्य में होवे अथवा गर्भज मनुष्य में होते हैं अथवा एक संमूर्च्छिम में संख्यात गर्भज में अथवा दो संमूर्च्छिममें संख्यात गर्भजमें यावत्

सूत्र

गस्स वाणमंतरदेव पवेसणगस्स जोइसियदेव पवेसणगस्स, वेमाणियदेव पवेसणगस्स, कयरे २ जाव विसेसाहियावा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे वेमाणिय देवपवेसणए, भवणवासिदेव पवेसणए असंखेज्जगुणे, वाणमंतरदेव पवेसणए असंखेज्जगुणे, जोइसियदेव पवेसणए संखेज्जगुणे ॥ २६ ॥ एयस्सणं भंते ! णेरइय पवेसणगस्स, तिरिक्ख जोणिय पवेसणगस्स मणुस्स पवेसणगस्स, देव पवेसणगस्स कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे मणुस्स पवेसणए, णेरइय पवेसणए असंखेज्जगुणे, देव पवेसणए असंखेज्जगुणे, तिरिक्ख जोणिय पवेसणए असंखेज्जगुणे ॥ २७ ॥

भावार्थ

संयोगी भांगे कहते हैं ज्योतिषी, भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी भवनपति वैमानिक, ज्योतिषी वाणव्यंतर वैमानिक अथवा ज्योतिषी भवनपति वाणव्यंतर वैमानिक में उत्पन्न होवे ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! इन भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक देव प्रवेशन में से कौन किन से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है ? अहो गांगेय ! सब से थोडे वैमानिक देव इस से भवनपति देव असंख्यात गुने, इस से वाणव्यंतर देव असंख्यात गुने इस से ज्योतिषी देव संख्यात गुने ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! ...
देव प्रवेशन में से कौन किन से अल्प बहुत ...

सूत्र

रसइकाइया सेसा जहा णेरइया जाव संतरंपि वेमाणिया उववज्जंति, निरंतरंपि वेमाणिया उववज्जंति ॥ संतरंपि नेरइया उव्वट्टंति निरंतरंपि नेरइया उव्वट्टंति एवं जाव थणिय कुमारा णो संतरं पुढविकाइया उव्वट्टंति निरंतरं पुढवी काइया उव्वट्टंति, एवं जाव वणस्सइ काइया, सेसा जहा णेरइया, णवरं जोइसिया वेमाणिया चयंति अभिलावो जाव संतरंपि वेमाणिया चयंति निरंतरंपि वेमाणिया चयंति ॥ २८ ॥ सओ भंते! णेरइया उववज्जंति, असतो भंते! णेरइया उववज्जंति? गंगेया! सओ णेरइया उववज्जंति णो असतो णेरइया उववज्जंति, एवं जाव वेमाणिया ॥ सओ भंते! णेरइया

भावार्थ

सहित वाणव्यंतर उद्वर्तते हैं या निरंतर उद्वर्तते हैं अंतर सहित ज्योतिषी चवते हैं या निरंतर चवते हैं, व अंतर सहित वैमानिक चवते हैं या निरंतर वैमानिक चवते हैं? अहो गांगेय! अंतर सहित नारकी उत्पन्न होते हैं और निरंतर उत्पन्न होते हैं यावत् अंतर सहित स्थनित कुमार उत्पन्न होते हैं निरंतर स्थनित कुमार उत्पन्न होते हैं पृथ्वीकाय अंतर उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु निरंतर उत्पन्न होते हैं यावत् वनस्पति काय निरंतर उत्पन्न होते हैं यावत् अंतर सहित वैमानिक उत्पन्न होते हैं व निरंतर उत्पन्न होते हैं. अंतर सहित नारकी उद्वर्तते हैं निरंतर नारकी उद्वर्तते हैं ऐसे ही स्थनित कुमार तक कहना. और पृथ्वीकाय यावत्

सूत्र

गर्भ असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए जाव उववज्जंति णो, असयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ॥ एवं जाव थणिय कुमारा ॥ ३२ ॥ सयं भंते! पुढवीकाइया पुच्छा ? गंगेया ! सयं पुढवी काइया उववज्जंति णो असयं जाव उववज्जंति ॥ से केणट्ठेणं जाव उववज्जंति ? गंगेया ! कम्मोदएणं कम्मगुरुयत्ताए कम्मभारियत्ताए कम्मगुरुयसंभारियत्ताए सुभासुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभासुभाणं कम्माणं विवागेणं सुभासुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं पुढवी काइया जाव उववज्जंति, णो असयं पुढवी काइया जाव उववज्जंति सेतेणट्ठेणं जाव उववज्जंति

भावार्थ

शुभ कर्म के विपाक से व शुभ कर्म के फल विपाक से असुरकुमार स्वयं असुरकुमारपने में उत्पन्न होते हैं. परंतु परवशपनासे नहीं उत्पन्न होते हैं वैसे ही स्थनित कुमार तक जानना ॥ ३२ ॥ पृथ्वीकाय स्वयं पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते इनकी पृच्छा करते हैं ? अहो गांगेय! पृथ्वीकाय स्वयं पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं परंतु परवशपना से नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहते हो ? अहो गांगेय! कर्मोदय से, कर्मों की गुरुता से, कर्मों के वजन से, कर्मों की गुरुता से व वजन से, शुभाशुभ कर्मों के उदय से, शुभाशुभ कर्मों के विपाक से व शुभाशुभ कर्मों के फल विपाक से पृथ्वीकाय स्वयं उत्पन्न होते

शब्दार्थ सातवा उ० आकाशान्तर ज० जैसे त० तनुवात ए० ऐसे ग० गुरुलघु घ० घनवात घ० घनोदधि पु० पृथ्वी दी० द्वीप स० सागर वा० क्षेत्र ॥ ४ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् किं० क्या ग० गुरु जा० यावत् अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु से० वह के०

सूत्र घणवाए, सत्तमे घणोदही, सत्तमा पुढवी, उवासंतराइं सव्वाइं जहा सत्तमे उवासंतरे। जहा तणुवाए एवं गरुयलहुए घणवाय घणउदहि, पुढवी, दीवाय, सागरा, वासा, ॥ ४ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं गरुया जाव अगरुलहुया ? गोयमा! नो गुरुया, नोलहुया, गुरुयलहुयावि, अगरुयलहुयावि । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! वेउव्विय

भावार्थ आकाशान्तर जैसे कहना. अर्थात् जैसे सातवा आकाशान्तर गुरु, लघु, व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरुलघु है वैसेही इस का जानना. जैसे तनुवात का कहा वैसेही घनवात, घनोदधि, पृथ्वी, द्वीप, सागर व भरतादि क्षेत्र का जानना अर्थात् जैसे तनुवात गुरुलघु है वैसेही उक्त सब पदार्थ गुरुलघु हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी क्या गुरु, लघु, गुरुलघु या अगुरुलघु हैं ? अहो गौतम ! गुरु भी नहीं हैं, लघु भी नहीं हैं, परंतु गुरुलघु व अगुरुलघु हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी गुरु व लघु नहीं हैं परंतु गुरुलघु व अगुरुलघु हैं ? अहो गौतम ! वैक्रेय व तेजस शरीर की अपेक्षा से नारकी गुरुलघु हैं परंतु

णं असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए जाव उववज्जंति णो, असयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति, से तेणट्टेणं जाव उववज्जति ॥ एवं जाव थणिय कुमारा ॥ ३२ ॥ सयं भंते ! पुढवीकाइया पुच्छा ? गंगेया ! सयं पुढवी काइया उववज्जंति णो असयं जाव उववज्जंति ॥ से केणट्टेण जाव उववज्जंति ? गंगेया ! कम्मोदएणं कम्मगुरुयत्ताए कम्मभारियत्ताए कम्मगुरुयसंभारियत्ताए सुभासुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभासुभाणं कम्माणं विवागेणं सुभासुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं पुढवी काइया जाव उववज्जति, णो असयं पुढवी काइया जाव उववज्जंति सेतेणट्टेणं जाव उववज्जंति

शुभ कर्म के विपाक से व शुभ कर्म के फल विपाक से असुरकुमार स्वयं असुरकुमारपने में उत्पन्न होते हैं. परंतु परवशपने नहीं उत्पन्न होते हैं ऐसे ही स्थनित कुमार तक जानना ॥ ३२ ॥ पृथ्वीकाय स्वयं पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते इसकी पृच्छा करते हैं ? अहो गांगेय! पृथ्वीकाय स्वयं पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं परंतु परवशपना से नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहते हो ? अहो गांगेय! कर्मोदय से, कर्मों की गुरुता से, कर्मों के वजन से, कर्मों की गुरुता से व वजन से, शुभाशुभ कर्मों के उदय से, शुभाशुभ कर्मों के विपाक से व शुभाशुभ कर्मों के फल विपाक से पृथ्वीकाय स्वयं उत्पन्न होते

पं० पांचप्रकारका आ० मति ज्ञान सु० श्रुतज्ञान ओ० अवधि ज्ञान म० मनःपर्यव ज्ञान के० केवल ज्ञान से० वह किं० कैसे आ० मतिज्ञान च० चारप्रकारका उ० अवग्रह ई० ईहा अ० अवाय धा० धारणा ए० ऐसे रा० रायप्रसेणी में जो० जो ना० ज्ञान के भे० भेद त० तैसे इ० यहां भा० कहना जा० यावत् के० केवलज्ञान ॥ ६ ॥ अ० अज्ञान भं० भगवन् क० कितनाप्रकारका गो० गौतम ति० तीन

सूत्र

तंजहा - आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे, केवलनाणे ॥ से किं तं आभिणिबोहिय नाणे ? आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे प० तंजहा- उग्गहे, ईहा, अवाय, धारणा. एवं जहा रायप्पसेणीए, जो नाणाणं भेओ तहेव इह भाणियव्वो, जाव से त्तं केवल नाणे ॥ ६ ॥ अण्णाणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

भावार्थ

अहो भगवन् ! ज्ञान के कितने भेद कहे ! अहो गौतम ! ज्ञान के पांच भेद कहे हैं. १ मति ज्ञान २ श्रुत ज्ञान, ३ अवधि ज्ञान, ४ मनःपर्यव ज्ञान और ५ केवल ज्ञान आभिनिबोधिक ( मति ) ज्ञान क्या है ? मति ज्ञान के चार भेद कहे हैं ? अवग्रह सो सामान्यपना से वस्तु को ग्रहण करना २ ईहा सो ग्रहण किये हुवे को विचारना ३ अवाय सो ग्रहण किये हुवे को निश्चित करना और ४ धारना उक्त ग्रहण किये हुवे को धार कर रखना. इन में अवग्रह के दो भेद अर्थावग्रह व व्यंजनावग्रह इत्यादि पांचों ज्ञान का कथन रायप्रसेणी सूत्र से जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! अज्ञान के कितने भेद कहे हैं ? अहो

गोयमा ! पंचविहा प० तं० आभिणिबोहियाणाणलद्धी जाव केवलनाणलद्धी ॥ अन्नाणलद्धीणं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! तिविहा प० तं० मइअण्णाणलद्धी सुयअण्णाणलद्धी, विभंग णाणलद्धी । दंसणलद्धीणं भंते ! कतिविहा प० ? गोयमा ! तिविहा प० तं० सम्मदंसणलद्धी, मिच्छादंसणलद्धी सम्मामिच्छा दंसणलद्धी। चरित्तलद्धीणं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा सामाइय चरित्तलद्धी, छेदोवट्ठावणियलद्धी, परिहारविसुद्धि चरित्तलद्धी, सुहुमसंपराय चरित्तलद्धी, अहक्खायलद्धी । चरित्ताचरित्तलद्धीणं भंते ! कइविहा प० गोयमा !

भावार्थ

भोग लब्धि ९ वीर्य लब्धि व १० इन्द्रिय लब्धि. ज्ञान लब्धि के पांच भेद मतिज्ञान लब्धि यावत् केवल ज्ञान लब्धि. अज्ञान लब्धि के तीन भेद मति अज्ञान लब्धि यावत् विभंग ज्ञान लब्धि. दर्शन लब्धि के तीन भेद समदर्शन लब्धि, मिथ्या दर्शन लब्धि व समामिथ्या दर्शन लब्धि. चारित्र लब्धि के पांच भेद सामायिक चारित्र लब्धि जो सावद्य विरतिरूप. इस के दो भेद १ इत्वर सो अल्प काल रहे. यह भरत इरवत क्षेत्र में प्रथम व अंतिम तीर्थंकरों के समय में आरोपित होता है. २ यावज्जीव का सो शेष बाइस तीर्थंकर के समय में व महाविदेह क्षेत्र में होता है. २ पूर्व संयम का व्यवच्छेद कर जिस की

जाव संजोएत्तारो भवंति,एएणं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं,उवज्झायवेयावच्चेहिं, थेरवेयावच्चेहिं, तवस्सीवेयावच्चेहिं, गिलाणवेयावच्चेहिं, सेह वेयावच्चेहिं, कुलवेयावच्चेहिं, गणवेयावच्चेहिं, संघवेयावच्चेहिं साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति, एएसिणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, से तेणट्ठेणं तंचेव जाव साहू ॥१७॥ सोइंदिय वसट्टेणं भंते ! जीवे किं बंधइ, एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ ॥ एवं चक्खिदियवसट्टेवि, जाव फासिंदियवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ॥ २१ ॥ तएणं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठा सेसं जहा देवाणंदा तहेव पव्वइए जाव सव्व दुक्खप्प-

भावार्थ

और स्वतः को, अन्यको व उभय को धार्मिक कार्य में जोडते हैं और भी उद्यमी जीव आचार्य, उपाध्याय स्थविर, तपस्वी, ग्लानि, नव दीक्षित, कुल, गण, व साधु की वैयावृत्य में आत्मा को जोडनेवाले होते हैं. इस से वे जीवों उद्यमी अच्छे हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय में वश होनेवाला जीव क्या बांधता है ? अहो जयंती! जैसे क्रोधका कहा वैसेही सब कहना, और श्रोत्रेन्द्रिय जैसे शेष सब इन्द्रियों का जानना ॥१९॥ अब जयंती श्रमणोपासिका भगवंत श्री महावीर स्वामी की धर्मकथा सुनकर हृष्ट तुष्ट हुई वगैरह सब

शब्दार्थ

क० कात्यायन गोत्रीय नं० उनकी पास ह० शीघ्र आ० आया त० तब भ० भगवान् गो० गौतम खं० खंदक क०कात्यायन गोत्रीय अ०नजदीक आ०आयाहुवा जा०जानकर खि०शीघ्र अ०उठकर खि०शीघ्र प० सन्मुख जाकर जे० जहां खं० खंदक क०कात्यायन गोत्रीय ते०तहां उ०आकर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा व० बोले हे० अहो खं० खंदक सा० स्वागतम् सु० सुस्वागतं अ० योग्य आगमन सा० स्वागतम अ० योग्य आगमन से० वह तु० तम को खं० खंदक सा० श्रावस्ती न० नगरी में पिं०

सूत्र

णं भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं अदूरमागयं जाणेत्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेइ २ त्ता, खिप्पामेव पच्चुगच्छइ पच्चुगच्छइत्ता जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी हंखंदया ! सागयं खंदया ! सुसागयं खंदया ! अणुरागयं खंदया ! सागयमणुरायं खंदया ! सेणूणं तुमं खंदया, सावत्थीए णयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसा-

भावार्थ

स्कंदक परिव्राजक की सन्मुख गये, और सन्मुख जाकर स्कंदक परिव्राजक को ऐसा बोले अहो स्कंदक तुम्हारा आगमन श्रेष्ट है, तुम्हारा आगमन अनुपम है, तुम्हारा आगमन शोभन व अनुपम है. अहो स्कंदक ! श्रावस्ती नगरी में श्री महावीर के वचन सुनने को रसिक पिंगलक नामक निर्ग्रंथने क्या ऐसे प्रश्नों पूछे थे कि अंत सहित लोक है, या अंत रहित लोक है, यावत् किस मरण से संसार की वृद्धि व हीनता

धम्मा ना० नाम र० रत्नप्रभा गो०गोत्र ए० ऐसे ज० जैसे जी० जीवाभिगम में प० प्रथम ने०नारकी उ० उद्देशा सो० वह णि० निर्विशेष भा० कहना जा० यावत् अ० अल्पाबहुत्व ॥ १२ ॥ ३ ॥

सूत्र

एवं जहा जीवाभिगमे पढमो णेरइय उद्देसओ सो णिरवसेसो भाणियव्वो जाव अप्पा-बहुगत्ति॥२॥सेवं भंते भंतेत्ति॥दुवालसम सयस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥१२॥३॥

रायगिहे जाव एवं वयासी दो भंते! परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति एगयओ

भावार्थ

नाम व शर्करप्रभा गोत्र ३ तीसरी का सीला नाम व वालुप्रभा गोत्र ४ चौथी का अंजना नाम व पंकप्रभा गोत्र ५ पांचवी का रिठा नाम व धूम्रप्रभा गोत्र ६ छठीका मघा नाम व तमप्रभा गोत्र और ७ सातवी का माघवती नाम व तमतमा गोत्र वगैरह सब कथन जीवाभिगम सूत्र के प्रथम नरक उद्देशे में जिसना कहा वह सब जानना. यावत् सब से थोडे सातवी नरक के नेरिये उस से छठी नरक के नेरिये असंख्यातगुने, उस से पांचवी नरक के नेरिये असंख्यातगुने. यों क्रम से पहिली नरक के नेरिये असंख्यातगुने. अहो भगवन् आप के वचन सत्य है यह बारहवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ ३ ॥ ❁

तीसरे उद्देशे में पृथ्वी का कथन किया. वह पुद्गलात्मक होने से आगे पुद्गल का अधिकार कहते हैं. राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषदा वांदने को आइ, धर्मोपदेश सुनकर पीछीगइ. उस समय में श्री गौतम स्वामीने भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार

भवंति. पंचहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति. पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ छहा कज्जमाणे छप्परमाणु पोग्गला भवंति ॥ ५ ॥ सत्त भंते ! परमाणु पोग्गला पुच्छा ? गोयमा सत्तपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव सत्तविहावि कज्जइ दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ

टुकडे और चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो प्रदेशात्मक स्कंध एक, तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक और एक परमाणु पुद्गल अथवा तीन दो प्रदेशात्मक स्कंध, चार टुकडे करते एक २ परमाणु पुद्गल के तीन और तीन प्रदेशात्मक स्कंध का एक, अथवा एक २ परमाणु पुद्गल के दो टुकडे और द्विप्रदेशात्मक स्कंध के दो टुकडे, पांच भाग में एक २ परमाणु के चार और द्विप्रदेशात्मक स्कंध का एक और छ भाग में भिन्न छ परमाणु पुद्गल ॥ ५ ॥ सात परमाणु पुद्गल की पृच्छा अहो गौतम ! सात परमाणु पुद्गल मीलकर सात प्रदेशात्मक स्कंध होता है. और उस के टुकडे करते दो यावत् सात टुकडे होते हैं. दो टुकडे करते एक

पुच्छा ? गोयमा ! णाणी नो अण्णाणी, अत्थेगइया तिण्णाणी अत्थेगइया चउणाणी जे तिणाणी ते आभिणिबोहियणाणी, सुयणाणी, मणपज्जवणाणी, जे चउणाणी ते आभिणिबोहियणाणी, सुयणाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवणाणी । तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा ? णाणीवि, अण्णाणीवि मणपज्जवणाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । केवलणाणलद्धियाणं भंते ! जीवा किंणाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णाणी नो अण्णाणी. नियमा एग णाणी केवलणाणी तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि, केवलणाणवज्जाइं

भावार्थ लब्धिवाले मति, श्रुत, अवधि अथवा मतिश्रुत मनःपर्यव ऐसे तीन ज्ञान अथवा मति श्रुत अवधि व मनःपर्यव ऐसे चार ज्ञानवाले हैं इस के अलब्धिक जीवों में चार ज्ञान तीन अज्ञान की भजना है केवल ज्ञान लब्धिक जीवों में एक केवलज्ञान की नियमा है इस के अलब्धिक में केवलज्ञान छोडकर चार ज्ञान व तीन अज्ञान की भजना है. अज्ञान लब्धि वाले जीवों में ज्ञान नहीं है परंतु अज्ञान है इन में तीन अज्ञान की भजना है इस के अलब्धिक में पांच ज्ञान की भजना है जैसे अज्ञान की लब्धि अलब्धि कही वैसे ही मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान की लब्धि अलब्धि जानना. विभंग ज्ञान की लब्धि के जीवों में तीन अज्ञान

ख० कहा ख० खंदक म० मेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भं० भगवान् म० महावीर उ० उत्पन्न णा० ज्ञान द० दर्शन युक्त अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली ती० अतीत प० वर्तमान अ० अनागत वि० विज्ञानक स० सर्वज्ञ स० सर्वदर्शी जे० जिनने म० मुझे ए० यह अर्थ त० तुमारा र० हृदय भाव ह० शीघ्र अ० कहा ज० जिससे अ० मैं जा० जानताहूं खं० खंदक ॥ १२ ॥ त० तब खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय भं० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले ग० जावे गो० गौतम

से भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी एवं खलु खंदया ! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए, समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली, तीय पच्चुप्पण्ण मणागय वियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी, जेणं ममएसअट्ठे तवताव सुकडे हव्वमक्खाए जओणं अहं जाणामि खंदया ? ॥ १२ ॥ तएणं से खंदए गसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी. गच्छामोणं गोयमा ? तव धम्मायरियं

महावीर स्वामी है. वे इन्द्रादिक के वंदनीक पूजनीक, रागादि शत्रु को जीतनेवाले, रहित, व अतीत, अनागत व वर्तमान के ज्ञानी सर्वज्ञ, सर्वदर्शी है. इनोंने मुझे यह ये पहिले बतलाया. उन के कथनसेही मैं यह जानता हूं ॥ १२ ॥ क बोले की अहो गौतम ! मैं तुम्हारे धर्माचार्य धर्मोपदेशक श्री श्रमण भगवंत महा-

भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति । छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ । सत्तहा कज्जमाणे सत्तपरमाणुपोग्गला भवंति ॥ ६ ॥ अट्ठ परमाणुपोग्गला पुच्छा ? गोयमा! अट्ठ पदेसिएखंधे भवइ, जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ सत्त पदेसिएखंधे भवइ, अहवा-एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ छप्पएसिएखंधे भवइ, अहवा-एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ पंचपदेसिएखंधे भवइ अहवा दो

परमाणु पुद्गल और तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध. पांच टुकडे करते एक तरफ चार परमाणु पुद्गल और एक तरफ तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक. अथवा तीन परमाणु पुद्गल के तीन और दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध छ करते पांच परमाणु पुद्गल के पांच और द्विप्रदेशात्मक स्कंध का एक, सात टुकडे करते सात परमाणु पुद्गल के सात ॥ ६ ॥ अब आठ परमाणु पुद्गल की पृच्छा करते हैं. अहो गौतम ! आठ प्रदेशात्मक स्कंध होता है और उस के भी यावत् आठ टुकडे होते हैं. दो टुकडे करते एक परमाणु पुद्गल और सात प्रदेशात्मक स्कंध एक. द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक और छ प्रदेशात्मक स्कंध एक, तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक और

पोग्गला एगयओ दो [illegible] देसियखंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले
एग [illegible] भा भवंति, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ,
वंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु
[illegible]सियखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला
[illegible]खंधे एगयओ तिपदेसियखंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणु
एगयओ तिण्णि दुपदेसियाखंधा भवंति छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणु
[illegible]गला [illegible] एगयओ तिपदेसियखंधे भवति अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला
[illegible] छहा कज्जमाणे एगयओ छपरमाणुपोग्गला

[illegible]प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो
चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. पांच टुकडे
करो तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध
व तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. छ टुकडे करने पांच
चार परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. सात

मूल

पोग्गला एगयओ दो तिपदेसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा-चत्तारि दुपदेसियाखंधा भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ तिपदेसिएखंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ तिण्णि दुपदेसियाखंधा भवंति छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणु पोग्गला, एगयओ तिपदेसिएखंधे भवति अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति । सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छपरमाणुपोग्गला

भावार्थ

चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो दो प्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. पांच टुकडे करने चार परमाणु पुद्गल एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. छ टुकडे करते पांच परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. सात

पंचनाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए, आभिणिबोहियणाण सागारोवउत्ताणं भंते ! चत्तारि नाणाइं भयणाए। एवं सुयनाण सागारोवउत्तावि, ओहिनाण सागारोवउत्ता जहा ओहिनाण लद्धिया। मणपज्जवनाण सागारोवउत्ता जहा मणपज्जवनाण लद्धिया॥ केवलणाणसागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया॥ मइअण्णाण सागारोवउत्ताणं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए, एवं सुयअण्णाणसागारोवउत्तावि, विभंगनाणसागारोवउत्ताणं तिण्णि अण्णाणाइं नियमा। अणागारोवउत्ताण भंते ! जीवा किण्णाणी अण्णाणी ? पंचणाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। एवं चक्खुदंसण अचक्खुदंसण अणागारोवउत्तावि, नवरं चत्तारि नाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। ओहिदंसण अणागारोवउत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! नाणीवि, अण्णाणीवि, जे नाणी ते अत्थेगइया तिनाणी, अत्थेगइया चउनाणी, जे तिनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी,

भावार्थ ज्ञान श्रुतज्ञान अवधि व मनःपर्यव ज्ञान में चार ज्ञान की भजना. केवलज्ञान साकारोपयुक्त में केवल ज्ञान की नियमा. मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान के साकारोपयुक्त में तीन अज्ञान की भजना विभंग ज्ञान के साकारोपयुक्त में तीन अज्ञान की नियमा. अनाकारोपयुक्त में पांच ज्ञान तीन अज्ञान की भजना. चक्षु

सूत्र

पोग्गला एगयओ दो तिपदेसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा-चत्तारि दुपदेसियाखंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ तिपदेसिएखंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ तिण्णि दुपदेसियाखंधा भवंति छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणु पोग्गला, एगयओ तिपदेसिएखंधे भवति अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छपरमाणुपोग्गला

भावार्थ

चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो दो प्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. पांच टुकडे करते चार परमाणु पुद्गल एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. छ टुकडे करते पांच परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. सात

सूत्र

तिण्णि तिपदेसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ छप्पएसिए खंधे भवति, अहवा-एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा-एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति, अहवा-एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा एगयओ तिपदेसिए खंधे भवति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपदेसिए

भावार्थ

देशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक एक प्रदेशात्मक अथवा तीन तीन प्रदेशात्मक तीन स्कंध चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक छ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदे-

अहवा नकारवेइ करंतं नाणुजाणइ कायसा ॥ एगविहं तिविहेणं पडिक्कमगाणे नकरेइ मणसा वयसा कायसा । अहवा नकारवेइ मणसा वयसा कायसा । अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ॥ एगविहं दुविहेणं पडिक्कममाणं नकरेइ मणसा वयसा, । अहवा नकरेइ मणसा कायसा । अहवा नकरेइ वयसा कायसा । अहवा नकारवेइ मणसा वयसा । अहवा नकारवेइ मणसा कायसा। अहवा नकारवेइ वयसा कायसा अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा, अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा, अहवा करंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा, ॥ एगविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ मणसा, अहवा न करेइ वयसा, अहवा ण करेइ कायसा । अहवा न कारवेइ

भावार्थ नहीं काया मे २६ करावे नहीं अनुमोदे नहीं मन मे २७ करावे नहीं अनुमोदे नहीं वचन मे २८ करावे नहीं अनुमोदे नहीं काया मे. एक करन तीन योग मे प्रतिक्रमता हुवा २९ करे नहीं मन मे वचन से व काया मे ३० करावे नहीं मन मे वचन मे व काया मे ३१ अनुमोदे नहीं मन मे वचन मे, व काया मे एक करन दो योग मे प्रतिक्रमता हुवा ३२ करे नहीं मन मे वचन मे ३३ करे नहीं मन मे काया मे ३४ करे नहीं वचन मे काया मे ३५ करावे नहीं मन मे वचन मे ३६ करावे नहीं मन मे काया मे ३७

सूत्र

दुपदेसिएखंधे एगयओ छप्पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखंध, एगयओ पचपदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपदेसिएखंध, एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिण्णि तिपदेसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि दुपदेसियाखंधा एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपदेसियाखंधा एगयओ दो तिपदेसियाखंधा भवंति, । पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ छप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला

भावार्थ

चारटुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक सात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक छ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल तीन"प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन दो प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा

सूत्र

एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला, एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ चत्तारि दुपदेसिया खंधा भवंति, । सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छपरमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा-एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा

भावार्थ

द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार परमाणु पुद्गल और दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल, दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा दो परमाणु पुद्गल चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध. सात टुकडे करते छ परमाणु पुद्गल और चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा पांच परमाणु पुद्गल, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, चार परमाणु पुद्गल तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध. आठ टुकडे करने सात परमाणु पुद्गल और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा

मूल

खंधे, एवं जाव अहवा एगयओ दसपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा दो संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पदेसिएखंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखंधा, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ दसपदे-

भावार्थ

स्कंध, तीन टुकडे करने से दो परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक परमाणु पुद्गल, एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध व एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक परमाणु पुद्गल एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक दश प्रदेशात्मक स्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध.

सूत्र

पएसिए खंधे भवइ, अहवा दो असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे भवति एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दस पएसिए खंधे एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दो असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो असंखेज्ज पदेसिया खंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्ज पएसिए खंधे

भावार्थ

एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक परमाणु पुद्गल एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. अथवा एक परमाणु पुद्गल दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध यावत् एक दश प्रदेशात्मक स्कंध दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध दो असं-

अर्थ इ० इच्छते हैं किं० क्या पु० फीर जे० जो इ० ये स० श्रमणोपासक भ० होते हैं ते० उन को णो० नहीं क० कल्पता है इ० यह प० पन्नरह क० कर्मादान स० स्वयं क० करना का० कराना क० करते अ० अन्य को स० अच्छा जानना तं० वह ज० जैसे इं० अंगार कर्म व० वन कर्म सा० शकट कर्म भा०

सूत्र भिण्णेहिं, गोणेहिं, तसपाण विवज्जिएहिं, वित्तेहिं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति. एएवि ताव एवं इच्छंति किमंग पुण जे इमे समणोवासगा भवंति. तेसिं णो कप्पंति इमाइं पण्णरसकम्मादाणाइं सयंकरेत्तएवा, कारवेत्तएवा, करंतंवा अण्णं समणुजाणेत्तए

भावार्थ जिन में त्रस प्राणी की हिंसा होवे ऐसा व्यापार नहीं करते हैं. इस प्रकार आजीविक पंथवाले आचार पालते हुवे विचरते हैं. उक्त आजीविकमतानुसारी ऐसा धर्म पालने को इच्छते हैं तो फीर जो श्रावक हैं उन का तो कहना ही क्या. उन को पन्नरह कर्मादान करने का, अन्य से कराने का व करते को अनुमोदने का नहीं कल्पता है १. अंगार कर्म-अग्निविषय व्यापार करना, ईटपाकादि करना सो अंगार कर्म २ वनादि कटवाकर अथवा बीज रोपणादि व्यापार करना सो वन कर्म ३ शकटादि वाहन बनाकर बिकना सो भाडी कर्म ४ वृषभ, ऊंट, अश्वादि भाडे देना सो भाडी कर्म ५ हल कोदालादिक से भूमि फोडना [illegible] हाथी दांत के दांत का व्यापार करना सो दंतवाणिज्य कर्म ७ लाख चपडी आदिका [illegible] केशवाले जीवों का व्यापार सो केशवाणिज्य

असंखेज्ज पएसिए खंधे भवइ, अहवा संखेज्जा असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, असंखेज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति ॥ १० ॥ अणंताणं भंते ! परमाणुपोग्गला जाव किं भवंति ? गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव दसहावि संखेज्जहा असंखेज्जहा अणंतहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा दो अणंतपदेसिया खंधा भवंति, । तिहाकज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ, जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असंखेज्ज

भावार्थ त्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, संख्यात संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा संख्यात असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. असंख्यात टुकडे करने से असंख्यात परमाणु पुद्गल होते हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! अनंत परमाणु पुद्गल एकत्रित होने से क्या होता है ? अहो गौतम ! अनंत परमाणु पुद्गल मीलने से अनंत प्रदेशात्मक स्कंध होता है. उन के विभाग करने से दो तीन यावत् दश संख्यात असंख्यात व अनंत विभाग होते हैं. दो विभाग करने से एक परमाणु पुद्गल

.. .. सत्व स० संयम से सं० यतना करना अ० इस अ० अर्थ केलिये णो० नहीं किं० किंचित् प० प्रमाद करना ॥ २१ ॥ त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का ए० ऐसा ध० धर्म उ० उपदेश स० सम्यक् सं० अंगीकार किया त० उस आ० आज्ञाको त० जैसे ग० जावे चि० रहे नि० बैठे तु० सोवे भुं० भोजनकरे भा० बोले उ० सदाहोवे पा० प्राणभू भूत जी० जीव स०सत्व सं०संयम मं०यत्नकरे अ०इस अ० अर्थ में णो० नहीं प० प्रमादकरे

सूत्र

संजमेणं संजमियव्वं. अस्सिंचणं अट्ठे णोकिंचि पमाइयव्वं. ॥ २१ ॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जइ, तमाणाए तहगच्छइ, तहचिट्ठइ, तहनिसीयइ, तहतुयट्टइ, तहभुंजइ तह भासइ, तहउट्ठाएइ तहपाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमेइ, अस्सिंचणं अट्ठे णोपमायइ ॥ २२ ॥

भावार्थ

व यत्नापूर्वक बोलना. ऐसे ही उद्यमवन्त बनकरके प्राणभूत जीव व सत्व में संयम पालना. इस में किंचिन्मात्र प्रमाद करना नहीं ॥ २१ ॥ तब कात्यायन गोत्रीय खंदकने श्रमण भगवान् महावीर का ऐसा धार्मिक उपदेश सुनकर उसे सम्यक् प्रकारसे अंगीकार किया. और उनकी आज्ञामें यत्ना पूर्वक जाना, खडे रहना, बैठना, सोना, भोजन करना, बोलना व सावध रहना ऐसे करने लगे. सावध होकर प्राणभूत जीव सत्व की रक्षा कर संयम पालने लगे ...

षडकसंजोगी जाव असंखेज्ज संजोगी. एए सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव अणंताणंपि भाणियव्वं, णवर एक्कं अणंतगं अब्भहियं भाणियव्वं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्ज पएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा संखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति, असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ असंखेज्जा दुपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, जाव अहवा एगयओ असंखेज्जा संखेज्जपएसिया

भावार्थ

प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन अनंत प्रदेशात्मक स्कंध चार विभाग करने से तीन परमाणु पुद्गल एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध इसी क्रम से चार पांच यावत् संख्यात संयोग जैसे असंख्यात का कहा वैसे ही कहना विशेष में यहां अनंत बोल कहना. यावत् संख्यात संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा संख्यात असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध. अथवा संख्यात अनंत प्रदेशात्मक स्कंध, असंख्यात विभाग करने से असंख्यात परमाणु पुद्गल एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध, असंख्यात द्विप्रदेशात्मक स्कंध यावत् असंख्यात संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध असं-

सूत्र

दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न भ० होता है ॥ ५ ॥ क० कितने प्रकारके दे० देवलोक प० प्ररूपे गो० गौतम च० चार प्रकार के दे० देवलोक प० प्ररूपे भ० भवनवासी जा० यावत् वे० वैमानिक देव से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ ८ ॥ ५ ॥

स० श्रमणोपासक भं० भगवन् त० तथा रूप स० श्रमण मा० माहण को फा० फासुक ए० एषनीक अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम प० देता हुवा किं० क्या क० करे गो० गौतम ए०

देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥ ५ ॥ कइविहाणं भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता तंजहा-भवणवासी जाव वेमाणिया देवा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ अट्ठमसए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ८ ॥ ५ ॥ × ×

समणोवासगस्सणं भंते ! तहारूवं समणंवा माहणंवा फासुएसणिज्जेणं असण-पाण खाइम साइमेणं पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ? गोयमा ! एगंतसो से निज्जरा

भावार्थ

देवपने उत्पन्न होते हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! देवलोक कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! चार प्रकार के देवलोक कहे हैं भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह आठवा शतक का पांचवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ८ ॥ ५ ॥

श्रमणोपासक का ... अधिकार

पोग्गलपरियट्टे, तेया पोग्गलपरियट्टे, कम्मापोग्गलपरियट्टे, मण पोग्गलपरियट्टे वइ पोग्गलपरियट्टे, आणापाणु पोग्गलपरियट्टे ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते! कइविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते? गोयमा! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते तंजहा ओरालिय पोग्गलपरियट्टे, वेउव्विय पोग्गलपरियट्टे जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ १४ ॥ एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स केवइया ओरालिय पोग्गल-परियट्टा अतीता? गोयमा! अणंता, केवइया पुरक्खडा? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा

भावार्थ

पुद्गल परावर्त, कार्माण पुद्गल परावर्त, मन पुद्गल परावर्त, वचन पुद्गल परावर्त व श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! नारकी को कितने पुद्गल परावर्त कहे हैं? अहो गौतम! नारकी को सात पुद्गल परावर्त कहे हैं ऐसे ही यावत् सातों पुद्गल परावर्त वैमानिक तक जानना. ॥ १४ ॥ अहो भगवन्! एक २ नारकी को कितने उदारिक पुद्गल परावर्त अतीत काल में हुए? अहो गौतम! अतीत काल में एक २ नारकी को उदारिक के अनंत पुद्गल परावर्त हुए क्यों कि अतीत काल व जीव दोनों अनादि हैं. अहो भगवन्! एक २ नारकी आगे कितने उदारिक पुद्गल परावर्त करेंगे? अहो गौतम! जो दूर भव्य

सूत्र

केवइया पुरक्खडा? अणंता । एवं जाव वेमाणियाणं ॥ एवं वेउव्वियपोग्गलपरि-यट्टावि, एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टावि जाव वेमाणियाणं एवं एए पोहत्तिया सत्तचउव्वीस दंडगा ॥ १६ ॥ एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अतीता? गोयमा! णत्थि एक्कोवि । केवइया पुरक्खडा? नत्थि एक्कोवि ॥ एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया ओरालियपोग्गल परियट्टा एवं चेव. एवं जाव थणिय कुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते ॥

भावार्थ

उदारिक पुद्गल परावर्त किए? अहो गौतम! सब नारकीने अतीत काल में अनंत पुद्गल परावर्त किये. अहो भगवन्! आगे कितने उदारिक पुद्गल परावर्त करेंगे? अहो गौतम! अनंत पुद्गल परावर्त करेंगे ऐसे ही वैमानिक तक जानना. जैसे उदारिक का कहा वैसे ही वैक्रेय आदि सब पुद्गल परावर्त का जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन्! एक २ नारकीने नारकीपने कितने उदारिक पुद्गल परावर्त अतीत काल में किए? अहो गौतम! एक भी नहीं किया क्योंकि नारकी में उदारिक शरीरका अभाव है. अहो भगवन्! आगामिक काल में कितने करेंगे? अहो गौतम! आगामिक काल में एकभी नहीं करेंगे. क्योंकि नरक में उदारिक शरीर नहीं है. अहो भगवन्! एक २ नारकी असुर कुमारपने कितने उदारिक पुद्गल परावर्त किये? अहो गौतम! एक नारकीने असुर कुमारपने एकभी पुद्गल परावर्त किया नहीं है और करेंगे

मूल

पत्ते, एवं जाव थणियकुमारस्स, एवं पुढविकाइयस्सवि, एवं जाव वेमाणियस्स सव्वेसिं एक्को गमओ ॥ १८ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवइया वेउव्वियपोग्गल परियट्टा अतीता ? अणंता. केवइया पुरक्खडा ? एगुत्तरिया जाव अणंता. एवं जाव थणियकुमारत्ते. पुढवीकाइयत्ते पुच्छा, णत्थि एक्कोवि केवइया पुरक्खडा ? णत्थि एक्कोवि. एव जत्थ वेउव्विय सरीरं अत्थि तत्थ एगुत्तरियाओ, जत्थ णत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥ १९ ॥ तेयापोग्गल परियट्टा कम्मापोग्गल परियट्टा सव्वत्थ एगुत्तरिया भाणियव्वा॥

भावार्थ

स्थावरके पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का जानना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! एक नारकीने नारकीपने अतीत काल में कितने वैक्रेय पुद्गल परावर्त किये ? अहो गौतम ! अनंत पुद्गल परावर्त किये और आगामिक काल में कितनेक करेंगे, कितनेक नहीं करेंगे. जो करेंगे वे एक दो तीन यावत् संख्यात, असंख्यात व अनंत करेंगे ऐसे ही स्थनित कुमारतक कहना. पृथ्वीकाया में वैक्रेय शरीर नहीं होने से वैक्रेय पुद्गल परावर्त नहीं है अब जिन को वैक्रेय शरीर है उन को नारकी जैसे कहना और जिन को वैक्रेय शरीर नहीं है उन को पृथ्वीकाया जैसे

मूल

अणंता भाणियव्वा; जस्स नत्थि तस्स दोवि णत्थि भाणियव्वा, जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते॥ केवइया आणापाणु पोग्गल परियट्टा अतीता?अणंता। केवइया पुरक्खडा? अणता ॥२१॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ओरालिय पोग्गल परियट्टे ? ओरालिय पोग्गल परियट्टे गोयमा!जंणं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालिय सरीरपाउग्गाइं दव्वाइं ओरालिय सरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं, निविट्ठाइं, अभिणिविट्ठाइं, अभिसमण्णागयाइं परियागयाइं परिणामियाइं, णिज्जिण्णाइं णिसिरियाइं णिसिट्ठाइं भवति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ ओरालिय पोग्गलपरियट्टे

भावार्थ

पृथ्वी कायावने बहुत नारकीने अतीत काल में अनंत उदारिक पुद्गल परावर्त किये और आगामीक कालमें करेंगे ऐसे ही मनुष्य तक जानना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे कहना. ऐसे ही सातों पुद्गल परावर्त जानना. उन में जिनको जो है उनको अतीत व अनागत काल में अनंत पुद्गल परावर्त कहना. ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक पुद्गल परावर्त किस तरह कहा गया है ? अहो गौतम ! उदारिक शरीर में रहा हुवा जीवने उदारिक शरीर के योग्य द्रव्य उदारिक शरीरपने ग्रहण किये, बांधे, स्पर्शे, किये, रखे, पीलाये, परिणमाये, निर्जराये, व छोडे इस से उदारिक पुद्गल परावर्त कहा गया. ऐसे ही

जले जो० अग्नि झि० जले ॥ ११ ॥ अ० गृह भं० भगवन् झि० जलता किं० क्या अ० गृह झि० जले कु० भीत्ति झि० जले क० तट्टी झि० जले था० स्थंभ झि०जले व० मोभ झि० जले वं० वंश झि० जले म० निवा झि० जले व० रसी झि० जले छि० किलिंज झि० जले छा० छादन झि० जले जो० अग्नि झि० गो० गौतम नो० नहीं अ० गृह झि० जले नो० नहीं कु० भीत्ति झि० जले जा० यावत् छा० छादन

सूत्र

नो पदीवचंपए झियाइ, जोई झियाइ ॥ ११ ॥ अगारस्सणं भंते ! झियायमाणस्स किं अगारे ज्झियाइ, कुड्डाज्झियाइ, कडणाज्झियाइ, धारणाज्झियाइ, वलहरणेझियाइ, वंसाज्झियाइ, मल्लाज्झियाइ वग्गाज्झियाइ छित्तराज्झियाइ, छाणेज्झियाइ, जोईज्झियाइ ? गोयमा ! नो अगारे ज्झियाइ, नो कुड्डाज्झियाइ जाव नो छाणाज्झियाइ,

भावार्थ

दीपक की शिखा जलती है, बत्ती जलती है, तेल जलता है, दीपक का ढक्कन जलता है, अथवा दीपक की ज्योति जलती है ? अहो गौतम ! दीपक नहीं जलता है यावत् दीपक का ढक्कन भी नहीं जलता है परंतु दीपक की ज्योति ( अग्नि ) जलती है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! अग्नि से जलता हुवा गृह क्या गृह जलता है, छपर जलता है, भित्ति जलती है, तट्टी जलती है, स्थंभ जलता है, उपर की कडीयों जलती है, वंशादि आच्छादन जलता है अथवा अग्नि जलती है ऐसा कहना ? अहो गौतम ! गृह नहीं

गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्ट निव्वत्तणा काले, तेया पोग्गलपरियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालिय पोग्गलपरियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे आणापाणु पोग्गल परियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपोग्गल परियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वइपोग्गल परियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वेउव्विय पोग्गल परियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ॥ २४ ॥ एएसिणं भंते ! ओरालिय पोग्गल परियट्टाणं जाव आणापाणु पोग्गल परियट्टाणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेउव्विय पोग्गल परियट्टा, वइपोग्गल परियट्टा अणंतगुणा, मणपोग्गल

भावार्थ

पुद्गल परावर्त निवर्तन काल क्यों कि कार्माण पुद्गल बहुत सूक्ष्म परमाणु से बनते हैं एक भव में बहुत ग्रहण होते हैं सब नरकादि पर्याय में रहनेवाले और समय में ग्रहण करते हैं इस से तेजस पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना, इस से उदारिक पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना इस से श्वासोश्वास पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना इस से मन पुद्गल परावर्तन काल अनंत गुना इस से वचन पुद्गल परावर्तन काल अनंत गुना इस से वैक्रेय पुद्गल परावर्तन काल अनंत गुना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! इन उदारिक यावत् श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त में कौन किस से अल्प यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा वैक्रेय पुद्गल

शब्दार्थ

कौनसा रस क० कौनसा स्पर्श प० प्ररूपा गो० गौतम पं० पांच वर्ण दु० दोगंध पं० पांचरस च० चार स्पर्श प० प्ररूपा ॥१॥ अ० अथ भं० भगवन् को० क्रोध को० कोप रो० रोप दो० द्वेप अ० अक्षमा सं० संज्वलन क० कलह चं० रौद्रहोना भं० भांडना वि० विवाद करना ए० इन का क० कौनसा वर्ण जा० यावत् क० कौनसा स्पर्श गो० गौतम पं० पांचवर्ण पं० पांचरस दु० दोगंध च० चार स्पर्श प० प्ररूपा भरल शब्दार्थ

सूत्र

परिग्गहे, एसणं कइवण्णं,कइगंधे, कइरसे, कइफासे, पण्णत्ते? गोयमा! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते ॥१॥ अह भंते कोहे, कोवे,रोसे,दोसे, अक्खमा, संजलणे, कलहे, चंडिक्के,भंडणे,विवादे,एसण कइवण्णे जाव कइफासे प०? गोयमा! पंचवण्णे,पंचरसे दुगंधे, चउफासे पण्णत्ते ॥२॥ अह भंते! माणे,मदे,दप्पे,थंभे,गव्वे, अणुक्कोसे परपरिवाए;उक्कोसे,

भावार्थ

स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछनेलगे कि अहो भगवन् प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन व परिग्रह इन पांच पापस्थान में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पाते हैं? अहो गौतम ये पापस्थान पुद्गल रूप होने से पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व चार स्पर्श यों १६ बोल पाते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन्! क्रोध, कोप, रोष, द्वेष, अक्षमा, संज्वलन, कलह, चांडालपना, भंडन और विवाद इन में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श कहे हैं? अहो गौतम! पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस चार स्पर्श कहे हुवे हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! मान ( अहंकार रखना ) मद (नशा ज्यों छके) दर्प (डरता रहे,) ४ स्थंभ (स्थंभ

शब्दार्थ

कौनसा रस क० कौनसा स्पर्श प० मरूपा गो० गौतम पं० पांच वर्ण दु० दोगंध पं० पांचरस च० चार स्पर्श प० मरूपा ॥१॥ अ० अथ भं० भगवन् को० क्रोध को० कोप रो० रोप दो० द्वेप अ० अक्षमा सं० संज्वलन क० कलह चं० गैद्रहोना भं० भांडना वि० विवाद करना ए० इन का क० कौनसा वर्ण जा० यावत क० कौनसा स्पर्श गो० गौतम पं० पांचवर्ण पं० पांचरस दु० दोगंध च० चार स्पर्श प० मरूपा सरल शब्दार्थ

सूत्र

परिग्गहे, एसणं कइवण्णे,कइगंधे, कइरसे, कइफासे, पण्णत्ते? गोयमा! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते ॥१॥ अह भंते कोहे, कोवे,रोसे,दोसे, अक्खमा, संजलणे, कलहे, चंडिके,भडणे,विवादे,एसण कइवण्णं जाव कइफासे प०? गोयमा! पंचवण्णे,पंचरसे दुगंधे, चउफासे पण्णत्ते ॥२॥ अह भंते! माणे,मदे,दप्पे, थंभे,गव्वे, अणुक्कोसे परपरिवाए; उक्कोसे,

भावार्थ

स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछनेलगे कि अहो भगवन् प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन व परिग्रह इन पांच पापस्थान में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पाते हैं? अहो गौतम ये पापस्थान पुद्गल रूप होने से पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व चार स्पर्श यों १६ बोल पाते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन्! क्रोध, कोप, रोप, द्वेप, अक्षमा, संज्वलन, कलह, चांडालपना, भंडन और विवाद इन में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श कहे हैं? अहो गौतम! पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस चार स्पर्श कहे हुवे हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! मान (अहंकार रखना) मद (नशो ज्यों छके) दर्प (डरता रहे,) ४ स्थंभ (स्थंभ

सूत्र

अह भंते ! लोभे, इच्छा, मुच्छा, कंखा, गेही, तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, आसासणया, पत्थासणया, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मरणासा, नंदिरागे, एसणं कइवण्णे ४ पण्णत्ते? गोयमा ! जहेव कोहे ॥ ५ ॥ अह भंते ! पेज्जे दोसे, कलहे जाव मिच्छादंसणसल्ले एसणं कइवण्णे ४ प०? जहेव कोहे तहेव जाव चउफासे ॥ ६ ॥ अह भंते ! पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसण सल्लविवेगे एसणं कइवण्णे जाव कइफासे पण्णत्ते ?. गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे अफासे, पण्णत्ते ॥ ७ ॥ अह भंते ! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मिया, परिणामिया,

भावार्थ

कांक्षा, गृद्धि, तृष्णा, भेध, अभेध, आशामनता (अन्य के अर्थ की आशा) प्रार्थना, लाल्पनता, कामाशा भोगाशा, जीविताशा, मरणाशा, नंदीराग समृद्धि होने से हर्ष इन में अहो भगवन् ! कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श कहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! क्रोध जैसे १६ बोल इस में कहे हैं. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! राग द्वेष कलह यावत् मिथ्या दर्शन शल्य में कितने वर्ण गंध रस स्पर्श कहे हैं ? अहो गौतम ! क्रोध जैसे १६ बोल कहे हुवे हैं. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! प्राणातिपात विरमण यावत् परिग्रह विरमण, क्रोध का त्याग यावत् मिथ्या दर्शन शल्यका त्याग में कितने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श कहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! वर्ण, गंध,

शब्दार्थ

ते० उस काल ते० उस समय में रा० राजगृह न० नगर व० वर्णन युक्त गु० गुणशिल चे० चैत्य व० वर्णन युक्त जा० यावत् पु० पृथ्वीशिलापट्ट त० उस गु० गुणशिल चे० चैत्य की अ० नजदीक अ०

मूत्र

तहा आहारगंपि तेयगंपि कम्मगंपि भाणियव्वं एक्केक्के चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं भंते ! कम्मगसरीरेहिंतो कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठम सयस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ८ ॥ ६ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे वण्णओ गुणसिलए चेइए वण्णओ, जाव पुढवी सिलावट्टओ तस्सणं गुणसिलयस्सणं चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति

भावार्थ

वैक्रेय शरीर, बहुत जीव एक वैक्रेय शरीर और बहुत जीव बहुत वैक्रेय शरीर ऐसे दंडक जानना. ऐसे ही आहारक तेजस व कार्माण का जानना. उदारिक शरीर सिवा अन्य चार शरीरों की घात नहीं हो सकती है इससे इन में क्वचित् तीन व क्वचित् चार क्रियाओं लगती हैं. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह आठवा शतक का छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ८ ॥ ६ ॥

छठे उद्देश में क्रिया का स्वरूप कहा. इस में भी प्रद्वेषिकी क्रिया के कारन भूत अन्यतीर्थिको का विवाद कहते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नाम का नगर था. उस का वर्णन उववाइ सूत्र से जानना. उस की ईशान कोन में गुणशील नामक उद्यान यावत् पृथ्वीशिलापट्ट था. उस गुणशील नामक

सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदही, पुढवी ॥ छट्ठे उवासंतरे अवण्णे ॥ तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी एयाइं अट्ठफासाइं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं ॥ १२ ॥ जंबूद्दीवे दीवे जाव सयभुरमणे समुद्दे सोहम्मे कप्पे जाव ईसिप्पब्भारा पुढवी, णेरइयावासा जाव वेमाणियावासा एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते ! कइवण्णा जाव कइफासा पण्णत्ता ? गोयमा ! वेउव्वियतेयाइं पडुच्च पंचवण्णा दुगंधा पंचरसा अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मग पडुच्च पंचवण्णा दुगंधा पंचरसा चउफासा पण्णत्ता,

भावार्थ

घनवात का तनुवात व घनोदधि का व सातवी पृथ्वी का जानना. छट्ठा आकाशांतर में वर्णादि नहीं है और छट्ठा तनुवात, घनवात, घनोदधि व पृथ्वी में पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श ऐसे बीस बोल कहे हैं इस तरह जैसे सातवी नरक का कहा वैसे पहिली नरक तक जानना ॥ १२ ॥ जम्बूद्वीप यावत् स्वयंभूरमण समुद्र, सौधर्म देवलोक यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी, नरकावास यावत् वैमानिक आवास इन सब में आठ स्पर्श जानना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने वर्णादि कहे हैं ? अहो गौतम ! वैक्रेय तेजस आश्री पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श कहे हैं और कार्माण आश्री पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व

सूत्र

पडुच्च जहा णेरइयाणं, वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा णेरइया॥१४॥धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए एए सव्वे अवण्णा जाव अफासा णवरं पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे अट्ठफासे पण्णत्ते ॥१५॥ णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए एयाणि जाव चउफासाणि ॥१६॥ कण्ह लेस्साणं भंते ! कइवण्णा पुच्छा ? गोयमा ! दव्वलेस्सं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, भावलेस्सं पडुच्च अवण्णा एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ १७ ॥ सम्मदिट्ठी ३, चक्खुदंसणे ४, आभिणिबोहियणाणे, ५ जाव विभंगणाणे, आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा एयाणि अवण्णाणि४,॥१८॥ओरालियसरीरे जाव तेयग

भावार्थ

का नारकी जैसे कहना ॥ १४ ॥ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय काल व जीव इन के वर्णादि नहीं है और पुद्गलास्तिकाय में पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श ऐसे बीस बोल होते हैं ॥ १५ ॥ ज्ञानावरणीय यावत् अंतराय में पांच वर्ण यावत् चार स्पर्श कहे हैं ॥ १६ ॥ कृष्ण लेश्या में अहो भगवन् ! कितने वर्णादि कहे हुवे हैं ? अहो भगवन् ! द्रव्य लेश्या आश्री पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श कहे हुवे हैं भावलेश्या आश्री वर्णादि रहित है. ऐसे ही शुक्ल लेश्या तक जानना ॥ १७ ॥ सम्यग्-दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, व मिश्र दृष्टि, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन व केवल दर्शन, आभिनिबोधिक

वि० विचरते हैं ॥ १ ॥ त० तब ते० वे अ० अन्यतीर्थिक, जे० जहां थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० तहां उ० आकर ते० उन थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० बोले तु० तुम अ० आर्य ति० त्रिविध ति० त्रिविध से अ० असंयति अ० अविरति अ०रहित ज० जैसे स० सातवा शतक में बि० दूसरा

झाणकोट्ठोवगया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा जाव विहरंति ॥ २ ॥ तएणं ते अण्णउत्थिया जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता ते थेरे भगवंते एवं वयासी तुब्भेणं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं असंजय, अविरय, अप्पडिहय जहा सत्तमसए बिइओ उद्देसओ जाव एगंतबालायावि भवह ॥ तएणं थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केणं कारणेणं अज्जो अम्हे तिविहं तिविहेणं असंजय

भावार्थ

साथ ध्यानासन में ध्यान करके संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरते थे ॥ १ ॥ उस समय में वे अन्य तीर्थिकों उन स्थविर भगवंत की पास आकर ऐसा बोले कि अहो आर्यों ! तुम तीन करन तीन योग से अविरति, असंयति व प्रत्याख्यान से पाप कर्म का नाश नहीं करनेवाले हो वगैरह सातवा शतक का दूसरा उद्देशा जैसे कहना यावत् तुम एकान्त बाल हो. फीर स्थविरोंने पुछा कि अहो आर्यों ! हम किस कारन से तीन करन तीन योग से अविरति असंयति यावत् एकान्त बाल हैं. ! फीर अन्य-तीर्थिक ऐसे बोले कि अहो आर्यों ! तुम अदत्त ग्रहण करते हो, अदत्त भोगते हो और अदत्त का

सूत्र

तीयद्धा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता, एवं जाव अणागयद्धावि सव्वद्धावि ॥ २० ॥ जीवेणं भंते! गब्भं वक्कममाणे कइवण्णं कइगंधं कइरसं कइफासं परिणामं परिणमइ? गोयमा! पंचवण्णं दुगंधं पंचरसं अट्ठफासं परिणामं परिणमइ ॥ २१ ॥ कम्मओणं भंते! जीवे णो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ कम्मओणं जए णो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ? हंता गोयमा! कम्मओणं तंचेव जाव परिणमइ, णो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ दुवालसमसयस्सय पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ५ ॥ * ॥

भावार्थ

काल व सर्व काल वर्णादि रहित हैं ॥ २० ॥ अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता जीव कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के परिणाम को परिणमता है? अहो गौतम! पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के परिणाम को परिणमता है ॥ २१ ॥ अब जीव कर्म की विचित्रता बताते हैं. अहो भगवन्! जीव कर्म से नरकादि गति में जाता है व बिना कर्म नहीं जाता है अथवा कर्म से नरकादि गतिरूप विभक्ति भाव को परिणमता है और बिना कर्म से क्या नहीं परिणमता है? अहो गौतम! जीव कर्म से नरकादि गति में जाता है और विभाग रूप नरक तिर्यंच मनुष्य व देव वगैरह नाना प्रकार के रूपपना को परिणमता है. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का पांचवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ १२ ॥ ५ ॥

धारी गं० गंधधारी आ० आभरणधारी रा० राहु दे० देवके ण० नव ना० नाम प० प्ररूपे तं० वह ज० जैसे सिं० शृंगाटक अ० अटिल ख० खत्रक ख० खरक द० दर्दुर म० मकर म० मत्स्य क० कच्छप क० कृष्णसर्प ॥ १ ॥ रा० राहु दे० देवके प० पांच वि० विमान कि० कृष्ण नी० नील लो० लोहित हा० हारिद्र सु० शुक्ल अ० है का० काला रा० राहु का विमान खं० काजल जैसा अ० है नी० नीला रा० राहु का विमान ला० तूम्बक जैसा अ० है लो० लोहित रा० राहु का विमान मं० मजिठ जैसा अ०

वरमल्लधरे, वरगंधधरे, वराभरणधारी; राहुस्सणं देवस्स णव णामधेज्जा पण्णत्ता॥ तंजहा- सिंघाडए, जडिलए, खत्तए, खरए, दद्दुरे, मगरे, मच्छे, कच्छभे, कण्हसप्पे ॥ १ ॥ राहुस्सणं देवस्स पंच विमाणा पण्णत्ता तंजहा- किण्हा नीला लोहिया हालिद्दा सुक्किल्ला ॥ अत्थि कालए राहुविमाणे खंजण वण्णाभे पण्णत्ते ॥ अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते ॥ अत्थिणं लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठवण्णाभे

उन का यह कथन असत्य है. अहो गौतम ! मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि राहू एक महर्द्धिक व महा ऐश्वर्यवन्त देव है, श्रेष्ठ वस्त्र, माला गंध व आभरण का धारन करनेवाला है. राहू के नव नाम कहे हैं. १ शृंगाटक २ जटिल ३ खत्रक ४ खरक ५ दर्दुर ६ मकर ७ मच्छ ८ कच्छ और ९ कृष्ण सर्प

शब्दार्थ त्रिविध ति० त्रिविध से अ० असंयत अ० अविरत जा० यावत् ए० एकान्त बा० बाल भ० होवे त० तब ते० वे अ० अन्यतीर्थिक ते० उन थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० बोले तु० तुम अ०

सूत्र तिविहेणं असंजय जाव एगंत बालायावि भवामो ॥ तएणं तेअण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी-तुज्झेणं अज्जो ! दिज्जमाणे अदिण्णे, पडिग्गाहिज्जमाणे अपडिग्गहिए, निसिरिज्जमाणे अणिसिट्ठे तुज्झेणं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थणं अंतरा केइ अवहरिज्जा गाहावइस्सणं तं भंते ! णो खलु तं तुज्झे, तएणं तुज्झे अदिण्णं गिण्हह जाव अदिण्णं साइज्जह, तएणं तुज्झे अदिण्णं गिण्हमाणा जाव एगंत बालायावि भवह ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-नो

भावार्थ सो दीया नहीं कहा जावे, लेने लगा सो लीया नहीं कहा जावे, और पात्र में डालने लगा सो डाला नहीं कहा जावे, और भी अहो आर्य ! तुम को गृहस्थ आहारादि देनेलगा परंतु पात्र में गया नहीं इतने में कोई पुरुष उस आहार को ले जावे तो वह आहार गृहस्थ का गया परंतु तुम्हारा नहीं गया. इस से तुम अदत्त ग्रहण करने वाले यावत् अदत्त का आस्वादन करने वाले हो. और इस तरह अदत्त ग्रहण करते यावत् अदत्त का आस्वादन करते तुम असंयति अविरति यावत् एकान्त बाल होते हो. फीर स्थविर भगवन्त उन अन्य तीर्थिकों को ऐसा बोले कि अहो आर्यों ! हम अदत्त नहीं ग्रहण करते हैं अदत्त नहीं

शब्दार्थ पारणा करने चं० चंद्र लेश्या को प० पश्चिम से आ० आवृतकर पु० पूर्व में वी० जावे त० तब प० पश्चिम में चं० चंद्र उ० देखावे पु० पूर्व में रा० राहु ए० ऐसे ज० जैसे प० पश्चिम में दो० दो आ० आलापक त० तैसे दा० दक्षिण उ० उत्तर में दो० दो आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे उ० ईशान कौन में दा० नैऋत्य में दो० दो आ० आलापक ए० ऐसे दा० अग्नि उ० वायव्य में दो०दो आ०आलापक भा० कहना जा० यावत त० तब उ० वायव्य में चं० चंद्र उ० देखावे दा० अग्नि में राहु ज० जब

सूत्र राहू आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा, विउव्वमाणेवा, परियारेमाणेवा, चंदलेस्सं पच्चाच्छिमेणं आवरेत्ताण पुरच्छिमेणं वीईवयइ, तदाणं पच्चाच्छिमेणं चंदे उवदंसेति पुरच्छिमेणं राहू॥ एवं जहा पुरच्छिमेणं पच्चाच्छिमेणय दो आलावगा भणिया तहा दाहिणेणय उत्तरेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं उत्तर पुरच्छिमेणं, दाहिण पच्चाच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं दाहिण पुरच्छिमेणं, उत्तर पच्चाच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा

भावार्थ वैक्रेय करते व परिचारणा करते चंद्रकी कान्ति को पश्चिम में ढककर पूर्व में राहू जाता है तब पश्चिम में चंद्र दीखता है और पूर्व में राहू दीखता है. जैसे पूर्व पश्चिम के दो आलापक कहे वैसे ही दक्षिण उत्तर के दो आलापक जानना. ऐसे ही उत्तर पूर्व [ ईशान ] व नैऋत्य और अग्नि व वायव्य के दो २ आलापक जानना. यावत् वायव्य कौन में चंद्र दीखता है और अग्नि कौन में राहू दीखता है. आते, जाते वैक्रेय

शब्दार्थ
आश्रय करके चं० चंद्र लेश्या को प० पश्चिम में आ० आवरित कर पु० पूर्व में दी० दीखे तब रा० राहु प० पश्चिम में जे० जब पूर्व में चं० चंद्र उ० देखावे पु० पूर्व में रा० राहु प० ऐसे ज० जैसे प० पश्चिम में दो० दो आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे उ० ईशान आलापक ए० ऐसे दा० दक्षिण उ० उत्तर में दो० दो आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे उ० ईशान कोन में रा० नैऋत्य में दो० दो आ० आलापक ए० ऐसे दो० अग्नि उ० वायव्य में दो० दो आ० आला- पक भा० कहना आ० प० तब व० तब उ० वायव्य में चं० चंद्र उ० दिखावे दा० अग्नि में राहु ज० तब

मूल
राहु आगच्छमाणेवा, गच्छमाणेवा, विउव्वमाणेवा, परियारेमाणेवा, चंदलेस्सं पुरच्छिमेणं आवरेत्ताणं पच्चच्छिमेणं वाईवयइ, तयाणं पच्चच्छिमेणं चंदे उवदंसेति पुरच्छिमेणं राहू॥ एवं जहा पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भणिया तहा दाहिणेणय उत्तरेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं उत्तर पुरच्छिमेणं, दाहिण पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं दाहिण पुरच्छिमेणं, उत्तर पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा

भावार्थ
वैक्रिय करते व परिचारणा करते कांति को पश्चिम से ढककर पूर्व में राहु जाता है तब पश्चिम में चंद्र दीखता है और पूर्व में राहु दीखता है जैसे पूर्व पश्चिम के दो आलापक कहे वैसे ही दक्षिण उत्तर के दो आलापक जानना ऐसे ही उत्तर पूर्व [ईशान] व नैऋत्य और अग्नि व वायव्य के दो २ आलापक जानना. यावत् वायव्य कोन में चंद्र दीखता है और अग्नि कोन में राहु दीखता है. आते, जाते वैक्रिय

प्रकार का प० प्ररूपा आ० आगम सु० श्रुत आ० आज्ञा धा० धारणा जी० जीत ज० जैसे से० वह त० तहां आ० आगम सि० होवे आ० आगम से व० व्यवहार प० रखे णो० नहीं से० वह त० तहां आ० आगम सि० होवे ज० जैसे त० तहां सु० श्रुत से व० व्यवहार प० रखे णो० नहीं से० वह त० तहां सु० श्रुत सि० होवे ज० जैसे त० तहां आ० आज्ञा सि० होवे आ० आज्ञा से व० व्यवहार प० रखे णो० नहीं त० तहां आ० आज्ञा सि० होवे ज० जैसे त० तहां धा० धारणा सि० होवे धा० धारणा से

मूल — गोयमा! पंचविहे ववहारे पण्णत्ते, तंजहा-आगमे, सुए, आणा, धारणा, जीए ॥ जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेण ववहारं पट्ठवेज्जा ॥ णोय से तत्थ आगमे सिया जहा से तत्थ सुए सिया, सुएणं ववहारं पट्ठवेज्जा ॥ णोय से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा णोय से तत्थ आणा सिया जहा से तत्थ

भावार्थ — प्रत्यनीक ॥ ३ ॥ जो प्रत्यनीकपना का त्याग करते हैं वे शुद्ध व्यवहार पाल सकते हैं. अहो भगवन्! व्यवहार के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! व्यवहार के पांच भेद कहे हैं. १ जिस से पदार्थ जाना जावे सो आगम व्यवहार २ सुना जावे सो श्रुत ३ आदेश कर देवे सो आज्ञा ४ धारण कर रखे सो धारणा और आचार (परंपराकी रीति) सो जीत व्यवहार. इन में से केवलज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानी, चउदह पूर्वधर व दशपूर्वधर इन का व्यवहार सो आगम व्यवहार. इस में प्रथम आलोचनादि केवल

गाहणा करते चं० चंद्र लेश्या को प० पश्चिम में आ० आवर्तकर पु० पूर्व में वी० जाते ज० तब प० पश्चिम में चं० चंद्र उ० दिखाते पु० पूर्व में रा० राहु ए० ऐसे ज० जैसे प० पश्चिम में दो० दो आ० आलापक भ० ऐसे दा० दक्षिण उ० उत्तर में दो० दो आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे उ० ईशान कौन में दा० नैऋत्य में दो० दो आ० आलापक ए० ऐसे दा० अग्नि उ० वायव्य में दो०दो आ० आलापक भा० कहना जा० यावत् त० तब उ० वायव्य में चं० चंद्र उ० दिखाते दा० अग्नि में राहु ज० जब

मूल

राहू आगच्छमाणेवा, गच्छमाणेवा, विउव्वमाणेवा, परियारेमाणेवा, चंदलेस्सं पञ्चच्छिमेणं आवरेत्ताणं पुरच्छिमेणं वीईवयइ, तदाणं पञ्चच्छिमेणं चंदे उवदंसेति पुरच्छिमेणं राहू॥ एवं जहा पुरच्छिमेणं पञ्चच्छिमेणय दो आलावगा भणिया तहा दाहिणेणय उत्तरेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं उत्तर पुरच्छिमेणं, दाहिण पञ्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं दाहिण पुरच्छिमेणं, उत्तर पञ्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा

भावार्थ

हैं तब राहु ... वैक्रिय करते परिचारणा करते चंद्रमा को पश्चिम में ढककर पूर्व में राहु जाता है तब पश्चिम में चंद्र दीखता है और पूर्व में राहु दीखता है जैसे पूर्व पश्चिम के दो आलापक कहे वैसे ही दक्षिण उत्तर के दो आलापक जानना. ऐसे ही उत्तर पूर्व [ ईशान ] व नैऋत्य और अग्नि व वायव्य के दो २ आलापक जानना. यावत् वायव्य कौन में चंद्र दीखता है और अग्नि कौन में राहु दीखता है. आते, जाते वैक्रिय

शब्दार्थ जा० यावत् क० कितने भं० भगवन् अ० अनुत्तर विमान प० कहे गो० गौतम पं० पांच अ० अनुत्तर विमान प० कहे तं० वह ज० यथा वि० विजय जा० यावत् स० सर्वार्थसिद्ध ॥ १ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मा० मारणान्तिक स० समुद्घात से म० मरकर जे० जो भ०' योग्य इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में ती०तीस नि० नरकावास में स० लक्ष अ० अन्यतर नि० नरकावास में ने०नारकीपने उ०उत्पन्न होने को मे० अथ भं० भगवन् त० वहां आ० आहारकरे प० परिणमावे स० शरीर बं० बांधे गो०

सूत्र पण्णत्ता? गोयमा! पंच अणुत्तर विमाणा पण्णत्ता,तंजहा विजए जाव सव्वट्ठसिद्धे॥ १॥ जीवेणं भंते ! मारणांतिय समुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता जे भाविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु अन्नयरंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, सेणं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा बंधेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए तत्थगएचेव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा

भावार्थ विमान की पृच्छा करते हैं. अहो भगवन् ! अनुत्तर विमान कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! अनुत्तर विमान पांच कहे हैं उन के नाम १ विजय २ वैजयंत ३ जयंत ४ अपराजित ५ सर्वार्थ सिद्ध ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मारणान्तिक समुद्घातसे मरकरके जो जीव इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासे में से किसी नरकावास में नारकीपने उत्पन्न होने योग्य होवे, वह जीव क्या वहां गया हुवा वहां के पुद्गलों का

अर्थ

मनुष्य क्षेत्र के म० मनुष्य व० कहते हैं रा० राहु चं० चंद्र का वं० वमन कीया ज० जब रा० राहु आ० आते जा० यावत् प० परिचारना करते चं० चंद्र लेश्या को अ० नीचे स० चारों बाजु आ० आवर्त कर चि० रहे त० तब म० मनुष्य क्षेत्र में म० मनुष्य व० कहते हैं रा० राहु से चं० चंद्र घ० ग्रस्त हुआ ॥ ३ ॥ कि० कितने प्रकार का भं० भगवन् रा० राहु प० प्ररूपा गो० गौतम दु० दो रा० राहु प०

सूत्र

राहू आगच्छमाणेवा ४ चंदलेस्सं आवरेत्ताणं पच्चोसक्काइ तदाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एवं खलु राहुस्सणं चंदे वंते ॥ एवं जयाणं राहू आगच्छमाणेवा जाव परियारेमाणेवा चंदलेस्स अहे सपक्खिं सपडिदिसिं आवरेत्ताणं चिट्ठइ, तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे, एवं २ ॥ ३ ॥ कतिविहेण भंते ! राहू पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे राहू पण्णत्ते, तंजहा-धुवराहूय, पव्वराहूय ॥ तत्थणं

भावार्थ

लोक में मनुष्यों कहते हैं कि राहूने चंद्र का वमन किया. और जब राहू जाते आते, वैक्रेय करते व परिचारणा करते चंद्र की कान्ति को नीचे, बाजुपर व चारों दिशि में ढक कर रहता है तब मनुष्य लोक में कहा जाता है कि राहूने चंद्र ग्रहण किया ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! राहू कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! राहू दो कहे हैं. धुव राहू कि जो चंद्र की साथ सदैव रहता है और पर्व राहू पूर्णिमा वगैरह. पर्व तिथियों में

शब्दार्थ यावत् प० पन्नरवे में प० पन्नरवा भाग च० चरम समय में चं० चंद्र वि० खुला भ० होवे अ० अवशेष स० समय में चं० चंद्र र० आच्छादित वि० खुला भ० होवे ॥ ४ ॥ त० तहाँ जे० जो प० पर्वराहु ज० जघन्य छ० छमास में उ० उत्कृष्ट बा० बीयालीस मा० मास चं० चंद्र का अ० अडतालीस सं० वर्ष सू० सूर्य का ॥ ५ ॥ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है चं० चंद्र स० शशी चं० चंद्र जो० ज्योतिषीन्द्र जो० ज्योतिषी राजा का मि० मृगांक वि० विमान में कं० मनोहर दे० देव कं०

सूत्र विरत्तेवा भवइ ॥ तामेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे २ चिट्ठइ, तं पढमाए पढम भागं जाव पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं चरम समए चंदे विरत्ते भवइ अवसेसे समए चंदे रत्तेवा विरत्तेवा भवइ ॥४॥ तत्थणं जे से पव्वराहू से जहण्णेणं छण्हं मासाणं उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स ॥५॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चंदे ससी ? गोयमा ! चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे, कंता देवा, कंताओ

भावार्थ काल अर्थात् पूर्णिमा को चंद्र विरक्त (खुला) दीखता है और शेष सब तिथियों में चंद्र आच्छादित व अनाच्छादित रहता है ॥ अब जो पर्व राहु है वह जघन्य छमास उत्कृष्ट बीयालीस मास में चंद्र को आच्छादित करता है और सूर्य को जघन्य छमास उत्कृष्ट ४८ संवत्सर में आच्छादित करता है ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! चंद्र को शशी क्यों कहा ? अहो गौतम ! ज्योतिषीन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्र को मृगांकवाला

शब्दार्थ गौतम अ० कितनेक त० वहां रहे हुवे आ० आहारकरे प० परिणमावे स० शरीर बं० बांधे अ० कितनेक त० वहां से प० पीछा फीरकर इ० यहां आ० आवे आ० आकर दो० दूसरीवार मा० मारणान्तिक स० समुद्घात स० करे स० करके इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीके ती० तीस नि० नरकावास स० लक्ष अ० अन्य ने० नारकीपने उ० उत्पन्न होने को त० उस प० पीछे आ० आहारकरे प० परिणमावे स० शरीर बं० बांधे ए० ऐसे जा० यावत् अ० नीचे स० सातवी पु० पृथ्वी ॥ २ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मा०

सूत्र बंधेज्जा, अत्थेगइए तत्थपडिनियत्तइ तओ पडिनियत्तित्ता इह मागच्छइ मागच्छइत्ता दोच्चंपि मारणंतिय समुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास सय सहस्सेसु अण्णयरंसि निरयावासंसि णेरइयत्ताए उववज्जित्ताए॥ तओ पच्छा आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरं वा बंधेज्जा, एवं जाव अहे सत्तमा

भावार्थ आहार करता है, उन को खल रसपने परिणमाता है व शरीर उत्पन्न करता है ? अहो गौतम ! कितनेक जीव वहां रहे हुवे आहार करते हैं, उसे खल रसपने परिणमाते हैं, व शरीर बांधते हैं. और कितनेक जीव उस नरकावास से अथवा मारणान्तिक समुद्घात से पीछे फीरते हैं और जहां अपने शरीर हैं वहां आते हैं. आकर दूसरी वक्त मारणान्तिक समुद्घात से मरकर इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासे में से किसी नरकावास में उत्पन्न होते हैं, फीर आहार करते हैं, खल रसपने परिणमाते हैं

शब्दार्थ

राजा को क० कितनी अ० अग्रमहिषी प० कही ज० जैसे द० दशवे शतक में जा० यावत् णो० नहीं मे० मैथुन सेवने को सू० सूर्य त० तैसे ॥ ८ ॥ चं० इंद्र सू० सूर्य भं० भगवन् जो० ज्योतिषी रा० राजा के० कैसे का० काम भोग प० भोगते वि० विचरते हैं गो० गौतम ज० जैसे के० कोई पु० पुरुष प० प्रथम जो० यौवन उ० उ० ।। प० प्रथम जो० यौवन उ० उत्थान ब० बलवाली भा० भार्या स० साथ अ० थोडा काल में वि० विवाह करके अ० अर्थ ग० गवेषणा को सो० सोलह वा० वर्ष वि०

सूत्र

पण्णत्ताओ ? जहा दसमसए जाव णो चेवणं मेहुणवत्तियं ॥ सूरस्सवि तहेव ॥८॥ चंदिम सूरियस्सणं भंते ! जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भव-माणा विहरंति ? गोयमा ! से जहाणामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाण बलत्थे पढम जोव्वणुट्ठाण बलत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्त विवाहकज्जे अत्थगवेसणत्ताए सोलसवास विप्पवासिए सेणं तओ लट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि णियगं गिहं हव्वमागए, ण्हाए

भावार्थ

अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र ज्योतिषी के राजा चंद्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो गौतम ! इस का सब वर्णन दशवे शतक में से जानना. यावत् सभा में मैथुन सेवने को समर्थ नहीं है वहां तक कहना और सूर्य का भी वैसे ही जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र, चंद्र, सूर्य, कैसे कामभोग भोगते हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष यौवन के उदय से साथ बलवाली भार्या की साथ

बंधइ, पुरिसो बंधइ, णपुंसगो बंधइ, इत्थीओ बंधंति, पुरिसा बंधंति, णपुंसगा बंधंति, णोइत्थिणोपुरिसोणोणपुंसगो बंधइ ? गोयमा ! णो इत्थी बंधइ, णो पुरिसो बंधइ जाव णो णपुंसगा बंधंति ॥ पुव्वपडिवण्णए पडुच्च अवगयवेदा बंधंति, पडिवज्जमाणए पडुच्च अवगयवेदो वा बंधइ, अवगयवेदा वा बंधंति, ॥ जइ भंते! अवगयवेदो वा बंधइ, अवगयवेदा वा बंधंति, तं भंते ! किं इत्थिपच्छाकडो बंधइ, पुरिसपच्छाकडो बंधइ, णपुंसगपच्छाकडोबंधइ, इत्थिपच्छाकडा बंधंति, पुरिसपच्छाकडा बंधंति, णपुंसगपच्छा-

भावार्थ

केवली एक स्त्री व एक पुरुष है. इस के विरह का संभव होने से असंयोगी चार व द्विसंयोगी चार ऐसे आठ विकल्प होते हैं. १ एक मनुष्य बांधे २ एक मनुष्यणी बांधे ३ बहुत मनुष्य बांधे, और ४ बहुत मनुष्यणी बांधे. द्वीसंयोगी चार भांगे १ एक मनुष्य एक मनुष्यणी २ एक मनुष्य बहुत मनुष्यणी ३ बहुत मनुष्य व एक मनुष्यणी और ४ बहुत मनुष्य बहुत मनुष्यणी. अब वेद की अपेक्षा से प्रश्न करते हैं अहो भगवन ! ईर्यापथिक क्रिया का बंध क्या एक स्त्री करे, एक पुरुष करे, एक नपुंसक करे, बहुत स्त्री, करे, बहुत पुरुष करे, बहुत नपुंसक करे अथवा नो स्त्री नो पुरुष नो नपुंसक बंध करे ? अहो गौतम ! ईर्यापथिक क्रिया का बंध स्त्री करे नहीं यावत् बहुत नपुंसक करे नहीं. पूर्व प्रतिपन्न आश्री विगत [illegible] हैं. और वर्तमान काल आश्री विगतवेदवाला बांधता है अथवा विगतवेद वाले बांधते

शब्दार्थ

अविरक्त म० मनानुकूल स० साथ इ० इष्ट स० शब्द फ० स्पर्श जा० यावत् पं० पांच प्रकार के मा० मनुष्य के का० काम भोग प० भोगवते वि० विचरता है ता० उस गो० गौतम पु० पुरुष वि० रतिसमय पं के० कैसा सा० सातासुख प० भोगवता वि० विचरता है उ० उदार स० आयुष्यवन्त गो० गौतम पु० पुरुष का० काम भोग से वा० वाणव्यंतर दे० देवका अ० अनंत गुणा वि० श्रेष्ठ का० काम भोग वा० वाणव्यंतर दे० देवके का० काम भोग से अ० असुर कुमार व० वर्जकर भ० भवनवासी दे० देवका अ०

सूत्र

विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सातसोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ? उरालं समणाउसो! तस्सणं गोयमा! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणतगुणविसिट्ठतराचेव कामभोगा, वाणमतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंद वज्जियाणं भवणवासीण देवाणं एत्तो अणतगुणविसिट्ठतराचेव कामभोगा, असुरिंद वज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं एत्तो अणतगुण विसिट्ठतराचेव काम भोगा, असुर कुमाराण देवाणं कामभोगेहिंतो

भावार्थ

दर वंशवाली यावत् कान्तांत, अनुरक्त, अविरक्त, व पति के मन को अनुकूल ऐसी भार्या की साथ इष्ट शब्द यावत् स्पर्श ऐसे पांच प्रकार के मनुष्य के कामभोग भोगता हुआ रहे. अहो गौतम! पुरुष वेद के विकार का जो उपशम उस काल के अंत में अर्थात् वीर्य क्षरणरति समय में वह पुरुष कैसा सुख अनुभवे? अहो भगवन्! वह पुरुष उदार सुख अनुभवे. तब अहो गौतम! उस पुरुष के कामभोगों से

शब्दार्थ मारणान्तिक में स० मरकर जे० जो भ० योग्य च० चौसठ अ० असुरकुमार वास स० लक्ष अ० अन्यतर अ० असुरकुमार वास में अ० असुरकुमार पने उ० उत्पन्न होने को ज० जैसे ने० नारकी त० तैसे भा० कहना जा० यावत् थ० स्थनित कुमार ॥ ३ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मा० मारणान्तिक स० करके जे० जो भ० योग्य अ० असंख्यात पु० पृथ्वी कायिक वा० वास स० लक्ष अ० अन्यतर पु० पृथ्वीकायिक वा० वास में पु० पृथ्वीकायपने उ० उत्पन्न होने को से० अथ भं० भगवन् मं० मेरु प० पर्वत

सूत्र पुढवी ॥ २ ॥ जीवेणं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए जे भविए चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए जहा नेरइया तहा भाणियव्वा जाव थणियकुमारा ॥ ३ ॥ जीवेणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहए २ जे भविए असंखेज्जेसु पुढविकाइया वास- सयसहस्सेसु अन्नयरंसि पुढविकाइयावासंसि पुढवि काइयत्ताए उववज्जित्तए सेणं

भावार्थ और शरीर बांधते हैं, ऐसे ही सातवी पृथ्वीतक का जानना ॥ २ ॥ असुरकुमार यावत् स्थनित कुमार में उत्पन्न होकर आहार करने का, रस परिणमाने का व शरीर बांधने का नारकी जैसे कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! मारणान्तिक समुद्घात से मरकर जो जीव पृथ्वीकायिक के असंख्यात स्थान में से किसी स्थान में उत्पन्न होने योग्य होता है वह मेरु पर्वत की पूर्व दिशा में कितना दूर जाता है और किस स्थान मात्र

भावार्थ

ज्योतिषीन्द्र जो० ज्योतिषी राजा ए० इस प्रकार का का० काम भोग प० अनुभवते वि० विचरते हैं॥१२॥५॥

मूलार्थ

ते० उस काल ते० उस समय में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले के० कितना म० बडा भं० भगवन् लो० लोक प० प्रज्ञप्त गो० गौतम म० बडा म० बडा लो० लोक प० प्ररूपा पु० पूर्व में अ० असंख्यात जो० योजन को० कोडा कोडी दा० दक्षिण में अ० असंख्यात ए० ऐसे प० पश्चिम में ए० ऐसे उ० उत्तर में

सूत्र

दुवालसमस्स सयस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ६ ॥ * *

तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी के महालएणं भंते ! लोए पण्णत्ते ? गोयमा ! महइमहालए लोए पण्णत्ते, पुरच्छिमेणं असंखेज्जाओ जोअण कोडा कोडीओ दाहिणेणं असंखेज्जाओ एवं चेव, एवं पच्चच्छिमेणवि, एवं उत्तरेणवि, एवं

भावार्थ

राजा चंद्र, सूर्य के कामभोग अनुभव करते हैं. अहो गौतम ! ज्योतिषी के इन्द्र चंद्र, सूर्य ऐसे कामभोग भोगते हुए विचरते हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार यावत् विचरने लगे यह बारहवा शतक का छठा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥१२॥६॥

छठे उद्देशे में चंद्रादिक के अधिकार कहे चंद्रादिक लोक में होने से लोक के अंत में जीवों के जन्म जरा मरण की स्पर्शना करते हैं. उस काल उस समय में भगवान् गौतम स्वामी श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! लोक कितना बडा कहा है ? अहो

णकडाय, पुरिसपच्छाकडाय, णपुंसगपच्छाकडाय बंधंति ? गोयमा ! इत्थीप- वि बंधइ, पुरिसपच्छाकडोवि बंधइ, णपुंसगपच्छाकडोवि बंधइ, इत्थीपच्छाकडा वि, पुरिसपच्छाकडावि बंधंति, णपुंसगपच्छाकडावि बंधंति, अहवा इत्थीपच्छाक- डोय पुरिसपच्छाकडोयबंधइ, १२ एवं एए छव्वीस भंगा भाणियव्वा जाव अहवा इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय णपुंसगपच्छाकडाय बंधंति ॥ तं भंते ! किं

भावार्थ

एक नपुंसक पश्चात कृत और ४ बहुत पुरुष पश्चात कृत बहुत नपुंसक पश्चात कृत अब तीन संयोगी कहते हैं १ एक स्त्री एक पुरुष एक नपुंसक २ एक स्त्री एक पुरुष बहुत नपुंसक ३ ... नपुंसक ४ बहुत स्त्री एक पुरुष एक नपुंसक ५ बहुत स्त्री बहुत पुरुष एक नपुंसक ६ ... नपुंसक ७ एक स्त्री बहुत पुरुष बहुत नपुंसक और ८ बहुत स्त्री, बहुत पुरुष व बहुत नपुंसक २६ भांग में क्या बांधे ? अहो गौतम ! एक स्त्री पश्चात कृत, एक पुरुष पश्चात् कृत व एक नपुंसक ऐसे ही २६ भांग स जानना यावत बहुत स्त्री, बहुत पुरुष बहुत नपुंसक पश्चात् कृत किया का तीन काल आश्री आठ विकल्प का प्रश्न करते हैं १ गत काल में बंधा ... और अनागत में बंधेगा २ गत काल में बंधा, वर्तमान में बंधता है व अनागत में

उक्कोसेणं अयासहस्सं पक्खिवेज्जा, ताओणं तत्थ पउर गोयराओ पउरपाणीयाओ जहण्णेणं एगाहंवा दुयाहंवा तियाहंवा, उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा, ॥ अत्थिणं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केइ परमाणु पोग्गलमेत्तेवि पएसे जेणं तासिं अयाण उच्चारेणवा, पासवणेणवा, खेलेणवा, सिंघाणेणवा, वंतेणवा पित्तेणवा पूएणवा, सुक्केणवा,सोणिएणवा,चम्मेहिंवा, रोमेहिंवा, सिंगेहिंवा, खुरेहिंवा, णहेहिंवा अणिक्कंत पुव्वे भवइ ? णोइणट्ठे समट्ठे, होज्जाइणं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केइ परमाणुपोग्गल मेत्तेवि पएसे जेण तासिं अयाणं उच्चारेणवा जाव णहेणवा अणिक्कंत पुव्वे णोचेवणं

यावत् सहस्र बकारियों भरदेवे. उनके लिये घास पाणी वगैरह की वहां पहुलता होवे. उस वाडे में उन बकारियों को जघन्य एकदिन दोदिन तीन दिन यावत् उत्कृष्ट छमास तक रखे. अब अहो गौतम ! उस वाडे का कोईभी प्रदेश ऐसा रह सकता है कि जो बकरी उचार, प्रस्रवण, खेकार, सिंघाण ( नाक-कांपन्ड ) वमन, पित्त, राध, शुक्र, रुधिर, चर्म, रोम, शृंग, खुर, व नख से नहीं स्पर्श हुवा होवे ? अहो भगवन्! यह अर्थ समर्थ नहीं होसकता है क्यों की वह वाडाका सब भाग बकारियों के मूत्र यावत् नख से स्पर्शाता है. वैसे ही इस महालोक की परमाणु जितनी जगह नहीं कि जहां जीव के जन्म जरा मरण न

यत्ताए उववण्ण पुव्वे ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा, अणंतखुत्तो ॥ ४ ॥ सव्व जीवाविणं भंते ! इमंसि रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरया तंचेव जाव अणंतखुत्तो ॥ ५ ॥ अयण्ण भंते ! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसाए एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा, एवं जाव धूमप्पभाए। अयण्णं भंते! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे णिरयावास सयसहस्से एगमेगंसि सेसं तंचेव अयण्णं भंते ! जीवे अहे सत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महइ महालएसु महाणिरएसु एगमेगंसि णिरयावासंसि सेसं जहा रयण-प्पभाए ॥ ६ ॥ अयण्ण भंते ! जीवे चउसट्ठी असुरकुमारावास सयसहस्सेसु एग-

भावार्थ

पने, नरकपने व नारकीपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! यह जीव रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से एक २ नरकावास में पृथ्वीकाय यावत् वनस्पतिकायापने व नारकीपने अनेकवार यावत् अनंतवार पहिले उत्पन्न हुवा ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सब जीव पहिले इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस लाख नरकावास में से एक २ नरकावास में पृथ्वीकायापने यावत् नारकीपने पहिले उत्पन्न हुवे ? हां गौतम ! अनेकवार व अनंतवार उत्पन्न हुवे. ॥ ५ ॥ जैसे रत्नप्रभा के दो आलापक कहे वैसे ही शर्कर प्रभा के २५ लाख नरकावास के दो आलापक जानना ऐसे ही वालुप्रभा के १५ लाख, पंकप्रभा के

जाव अत्थेगइए न बंधी न बंधइ नबंधिस्सइ ॥ गहणागरिसं पडुच्च अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ एवं जाव अत्थेगइए नबंधी बंधइ बंधिस्सइ, णो चेवणं नबंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगइए नबंधी नबंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगइए न बंधी नबंधइ नबंधि- स्सइ ॥ तं भंते ! किं साइयं सपज्जवसियं बंधइ, साइयं अपज्जवसियं बंधइ, अणाइयं

भावार्थ

नहीं किया वर्तमान में उपशान्त मोह होने से बांधता है. और अनागत में भी बंध करेगा ६ क्षीण मोह नहीं होने से गतकाल में बंध नहीं किया. वर्तमान में क्षीण मोह होने से बांधता है और अनागत में शैलेशी पना को प्राप्त होने से बंध नहीं करेगा ७ किसी भव्य जीव ने गतकाल में बंध नहीं कीया, वर्तमान में नहीं बंधता है अनागत में क्षपक होगा तब बंध करेगा ८ अभव्य जीव ने गतकाल में नहीं बंधा वर्तमान में नहीं बंधता है व अनागत में बंधेगाभी नहीं क्योंकी यह प्रथम गुणस्थान नहीं छोडता है. अब एक भव आश्री ईर्यापथिक कर्म पुद्गल का ग्रहण रूप आकर्ष सो ग्रहणाकर्ष उस आश्री किसी दीर्घ आयुष्य वाले केवलज्ञानी ने गतकाल में ईर्यापथिक क्रिया का बंध किया, वर्तमान में करते हैं और अनागत में करेंगे २ केवल ज्ञानी ने गत काल में ईर्यापथिक क्रिया का बंध किया. वर्तमान में करते हैं, और अनागत में शैलेशीपना से नहीं करेगा. ३ कोई जीव उपशम श्रेणी पर चढकर पीछा पड़ा उसने गतकाल में बंध किया, वर्तमान में नहीं बंधता है और

सूत्र

गंसि बेइंदियावासंसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइ काइयत्ताए बेइंदियत्ताए उववण्ण-
पुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो ॥ सव्वजीवाणंवि एवं चेव ॥ एवं जाव मणुस्सेसु,
णवरं तेइंदिएसु जाव वणस्सइ काइयत्ताए, तेइंदियत्ताए चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए, एवं पंचि
दिय तिरिक्खजोणिएसु पंचिंदिय तिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए सेसं
जहा बेइंदियाणं, वाणमंतरजोइसिय सोहम्मीसाणाय जहा असुरकुमाराणं ॥ ९ ॥
अयण्णं भंते ! जीवे सणंकुमारकप्पे बारससु विमाणावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि

भावार्थ

हुवा. ऐसे ही सब जीवों का कहना. जैसे पृथ्वीकाया के दो आलापक कहे वैसे ही अप तेऊ, वायु व वनस्पति के दो २ आलापक कहना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! असंख्यात बेइन्द्रिय के वास में से एक २ वास में यह जीव पृथ्वीकाया यावत् वनस्पति काया पने व बेइन्द्रिय पने क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकवार व अनंत वार उत्पन्न हुवा ऐसे ही सब जीवों का कहना. जैसे बेइन्द्रिय का कहा वैसे ही तेइन्द्रिय यावत् मनुष्य तक कहना विशेष में तेइन्द्रिय में तेइन्द्रियपने, चौरेन्द्रिय में चौरेन्द्रिय पने, तिर्यंच पंचेन्द्रिय में तिर्यंच पंचेन्द्रियपने और मनुष्य में मनुष्यपने कहना. वाणव्यंतर, ज्योतिषी व सौधर्म ईशान का असुर कुमार जैसे कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! यह जीव सनत्कुमार देवलोक के बारह हजार विमान में से एकेक विमान में पृथ्वीकायापने यावत् वनस्पतिकायापने देवपने देवीपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? अहो

सूत्र

॥ १२ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, घायगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए, उववण्ण पुव्वे? हंता गोयमा! जाव अणंतखुत्तो सव्व जीवाविणं भंते! एवंचेव ॥ १३ ॥ अयण्णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए, जाव सत्थवाहत्ताए उववण्ण पुव्वे? हंता गोयमा! असतिं जाव अणंत खुत्तो ॥ सव्वजीवाण एवंचेव ॥ १४ ॥ अयण्णं भंते! जीवे सव्व जीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए, भाइल्लगत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसुत्ताए, उववण्णपुव्वे? हंता गोयमा! जाव अणंतखुत्तो ॥ एवं सव्वजीवावि जाव अणंत

भावार्थ

भाई, भगिनी, भार्या, पुत्र, पुत्री व पुत्रवधूपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा? हां गौतम! अनेकवार यावत् अनंतवार उत्पन्न हुवा ॥ १२ ॥ अहो भगवन्! यह जीव सब जीवों के शत्रु, वैरी, घातक, वधक, प्रत्यनीक, व अमित्रपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा? हां गौतम! अनेकवार यावत् अनंतवार. जैसे एक जीवका कहा वैसे सब जीवोंका जानना ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! यह जीव सब जीवों के राजा, युवराज, यावत् सार्थवाहपने पहिले क्या उत्पन्न हुवा? हां गौतम! अनेकवार यावत् अनंतवार उत्पन्न हुवा. ऐसे ही सब जीवों का जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन्! यह जीव सब जीवों के दास, प्रेषक, भृत्यक, भागीदार, भोग पुरुष, शिष्य व द्वेष्यपने

सूत्र

जाव अणुत्तरोववाइयाणं, जहा नेरइयाणं, णवरं जस्स जा ठिई सा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयाणं, सव्वबंधे एक्कंसमयं, देसबंधे जहण्णेणं एकतीससागरोवमाइं तिसमयऊणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयऊणाइं ॥ २१ ॥ वेउव्वियससरीरप्पओग बंधंतरेणं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंताओ जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो, एवं

भावार्थ

हो सातवी तमतमा पृथ्वी तक का जानना. विशेष में जिनको जितनी जघन्य स्थिति होवे उन में तीन समय कम कहना और उत्कृष्ट स्थितिवाले में एक समय कम कहना. पंचेन्द्रिय तिर्यंच व मनुष्य का वायुकाय जैसे कहना. असुरकुमार, नागकुमार यावत् अनुत्तरोपपातिकका नारकी जैसे कहना. उन में जिन को जितनी स्थिति होवे उन को उतनी कहना. अनुत्तरोपपातिकका सर्व बंध एक समय का देश बंध जघन्य तीन समयकम एकतीस सागरोपम उत्कृष्ट एक समयकम तेतीस सागरोपम का जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! वैक्रेय शरीर प्रयोग बंधका अंतर कितने कालका कहा. अहो गौतम ! सर्व बंधका अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट अनंत काल, अनंत अवसर्पिणी. उत्सर्पिणी यावत् आवलिकाका असंख्यातवा भाग, क्यों कि कोई जीव उदारिक शरीर में से वैक्रेय शरीरी हुवा और पहिले समय में सर्वबंध होवे फीर दूसरे समय में देशबंध होकर कालकर जावे और वहां से देव नारकी में वैक्रेय शरीर में सर्व बंध होवे इस अपेक्षा

गो० गौतम उ० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां अ० अर्चनीय वं० वंदनीय पू० पूजनीय स० सत्कार करने योग्य स० सन्मान करने योग्य दि० दिव्य स० सत्य स० सत्य अवपात स० सन्निहित पा० प्रातिहार्य भ० होवे से० वहां से अ० अंतर उ० उद्धर्त कर सि० सिझे बु० बुझे जा० यावत् अं० अंतकरे ह० हां सि० सिझे जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ १ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक ए० ऐसे जा० यावत् वि० बिसरीरी म०

अणंतरं चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ? हंता गोयमा ! उववज्जेज्जा ॥ सेणं तत्थ अच्चिय वंदिय पूइय सक्कारिय सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरयावि भवेज्जा ? हंता भवेज्जा ॥ सेणं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा, जाव अंतकरेज्जा ? हंता सिज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा ॥ १ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डिए एवं चेव जाव बिसरी-

भावार्थ ● दो शरीरवाले नाग में उत्पन्न होवे ? हां गौतम ! उत्पन्न होवे. वहां अर्चनीय, वंदनीय, पूजनीय, सत्कार योग्य, सन्मान योग्य, सेवा योग्य, दीव्य, सत्य, स्वप्नादि से सत्य सेवा बतानेवाला व इष्ट देवता के समान रहकर कार्य करनेवाला देवाधिष्ठित क्या होता है ? हां गौतम ! वह नाग ऐसा ही होता है. अहो भगवन् ! क्या वह नाग वहां से अंतर रहित मनुष्य गति में जाकर सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ? हां गौतम ! वह सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महा ऐश्वर्यवंत देव दो शरीरी मणि ( पृथ्वीकाया विशेष ) में क्या उत्पन्न होता है ? अहो

शब्दार्थ भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पृ० पृथ्वी की अ० नीचे गा० गृह स० सन्निवेश नो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ ॥ ३ ॥ अ० है भं० भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की अ० नीचे उ० उदार व० बद्दल सं० स्नेह उत्पन्न होवे स० पुद्गल होवे वा० वर्षा वा० वर्षे हं० हां अ० है ति० तीनों प० करे दे० देव प० करे अ० असुर ना० नाग कुमार ॥ ४ ॥ अ० हैं भं० भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीकी अ०नीचे बा०बादर थ०स्थनित शब्द हं०हां अ०है ति०तीनों प० करे ॥ ५ ॥ अ० है भं० भगवन्

सूत्र इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गामाइवा, जाव सण्णिवेसाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥ ३ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे उराला वलाहया संसेयंति समुच्छंति, वासं वासंति ? हंता अत्थि तिण्णिवि पकरेंति देवावि पकरेइ असुरोवि, नागोवि, ॥ ४ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बादरे थणियसद्दे ? हंता अत्थि तिण्णिवि पकरेंति ॥ ५ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयण-

भावार्थ सन्निवेश क्या है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की नीचे बडे बद्दल उत्पन्न होते हैं व वर्षा वर्षाते हैं ? हां गौतम अहो भगवन् ! वहां क्या देव, असुर व नाग वर्षाते हैं ? हां गौतम ! तीनों वर्षा वर्षाते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी नीचे क्या बादर स्थनित शब्द है ! हां गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी नीचे बादर स्थनित शब्द है और उसे असुर, नाग व देव ऐसे तीनों जातिवाले करते हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या इस रत्नप्रभा पृथ्वी

निर्गुणी णि॰ मर्यादाविना के णि॰ प्रत्याख्यान रहित पो॰ पोषध उ॰ उपवास का॰ काल के अवसर में का॰ काल करके इ॰ इस र॰ रत्नप्रभा पु॰ पृथ्वी में उ॰ उत्कृष्ट सा॰ सागरोपम ठि॰ स्थिति वाले ण॰ नरक में णे॰ नारकीपने उ॰ उत्पन्न होवे स॰ श्रमण भ॰ भगवन्त म॰ महावीर वा॰ कहते हैं उ॰ उत्पन्न होवे उ॰ उत्पन्न हुवा व॰ कहना ॥ ४ ॥ अ॰ अब भं॰ भगवन् सी॰ सिंह न॰ उपायु ज॰ जैसे उ॰ उत्सर्पिणी उ॰ उद्देशा में जा॰ यावत् प॰ परस्पर णि॰ निःशील प॰ ऐसे ही जा॰ यावत् व॰ कहना

**सूत्र** णिम्मेरा, णिप्पच्चक्खाण पोसहोववासा कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठिइयंसि णरगंसि णेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ? समणे भगवं महावीरे वागरेइ उववज्जमाणे उववण्णेत्ति वत्तव्वं सिया ॥ ४ ॥ अह भंते ! सीहे वग्घे जहा उस्सप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे एएणं णिस्सीला एवं चेव जाव वत्तव्वं सिया ॥ ५ ॥ अह भंते ! ढंके कंके पिलए मद्गुए सिखीए एएणं णिस्सीला

**भावार्थ** शील, व्रत, गुण मर्यादा प्रत्याख्यान व पौषधोपवास रहित काल करे तो इस रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्कृष्ट एक सागरोपम की स्थिति में क्या नरक में नारकीपने उत्पन्न होवे ? श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने उत्तर दिया कि उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न हुए भी हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सिंह, व्याघ्र वगैरह जो सातवें शतक के छठे उद्देश में कहे वैसे वे शीलादि व्रत प्रत्याख्यान रहित यावत् नरक में उत्पन्न होते हैं ॥ ६ ॥ अहो

कायव्वा सेसं तं चेव ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय मणुस्साणय जहा वाउकाइयाणं; असुरकुमार नागकुमार जाव सहस्सार देवाणं एएसिं जहा रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं,नवरं सव्वबंधंतरं जस्स जा ठिई जहन्निया सा अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा सेसं तं चेव ॥२४॥ जीवस्सणं भंते आणयदेवत्ते नो आणय देवत्ते पुच्छा ? गोयमा!

भावार्थ

और उत्पन्न होवे हैं इस से दो समय कम ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि अंतर्मुहूर्त के अनेक भेद होते हैं और उत्कृष्ट का पहिले जैसे कहना देश बंधका अंतर का जघन्य अंतर्मुहूर्त रत्नप्रभामें से देश बंधवाला नारकी चवकर तिर्यंच में अंतर्मुहूर्त तक रहकर फीर रत्नप्रभा में उत्पन्न होवे वहां दूसरे समय में देश बंधक होवे और उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति काल जैसे. ऐसे ही सातवी पृथ्वी तक का जानना. उस में जिन को जितनी स्थिति होवे उस से एक अंतर्मुहूर्त अधिक जघन्य सर्व बंध का काल जानना, शेष पहिले जैसे कहना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य का वायुकाय जैसे कहना. असुरकुमार नागकुमार यावत् सहस्रारदेवलोकतक में रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी जैसे जानना. सर्व बंध का अंतर में जघन्य जितनी स्थिति होवे उस से एक अंतर्मुहूर्त अधिक जानना. ॥ २४ ॥ आणत देवलोक में सर्वबंध का अंतर जघन्य प्रत्येक वर्ष अधिक अठारह सागरोपम क्योंकि इन में से चवकर प्रत्येक वर्ष पर्यंत मनुष्य में रहे सिवाय फीर यहां उत्पन्न नहीं होसकता

से० वह के० कैसे भं० भगवन् भ० भविक द्रव्यदेव भ० भविक द्रव्यदेव गो० गौतम जे० जो भ० भविक पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव में उ० उत्पन्न होने वाले से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है १० भविक द्रव्यदेव से० वह के० कैसे न० नरदेव गो० गौतम जे० जो रा० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती उ० उत्पन्न स० समस्त च० चक्ररत्न प० प्रधान ण० नवनिधि स० समृद्धि को० कोश ब० बत्तीस रा० राजा व० प्रधान म० मार्ग अ० सेवा करने वाले सा० सागर मे०



भवियदव्वदेवा ? भवियदव्वदेवा गोयमा ! जे भविय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएवा मणुस्सेवा देवेसु उववज्जित्तए से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ भवियदव्वदेवा ॥ से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ नरदेवा ? नरदेवा गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरंत चक्कवट्टी उप्पन्न समत्त चक्करयणप्पहाणा णवणिहि पइणो समिद्धकोसा, बत्तीसं रायवर सहस्साणुयायमग्गा, सागरवर मेहलाहिवतिणो मणुस्सिंदा, से तेणट्टेणं जाव



४ देवाधिदेव भं० ५ भावदेव ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! भविकद्रव्य देव क्यों कहा गया ? अहो गौतम ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच व मनुष्य में रहा का आयुष्य बांधकर देवलोक में उत्पन्न होने को योग्य होता है वह भविक द्रव्यदेव कहाता है अहो भगवन् ! नरदेव किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! जो समस्त भरत क्षेत्र का राजा, चारों दिशा का चक्रवर्ती, चक्ररत्नादि सात एकेन्द्रिय व सेनापति आदि सात पंचेन्द्रिय

शब्दार्थ के० कैसे भा० भावदेव गो० गौतम जे० जो भ० भवनपति वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक दे० देव दे० देवगति णा० नाम गो० गोत्र क० कर्म वे० वेदते हैं से० वह ते० इसलिये जा० यावत् भा० भावदेव ॥ २ ॥ सरल शब्दार्थ

सूत्र वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया देवा देवगइनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति से तेणट्ठेणं जाव भावदेवा ॥ २ ॥ भवियदव्वदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति- किं णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-मणुस्स देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णेरइएहिंतो उववज्जंति तिरि-मणु-देवेहिंतो उववज्जंति ॥ भेदो जहा वक्कंतीए, सव्वेसु उववातेयव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, णवरं असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमिग अंतरदीव सव्वट्ठ

भावार्थ अरिहंत भगवंत होते हैं वे देवाधिदेव कहाते हैं. अहो भगवन्! भावदेव किसे कहते हैं? अहो गौतम! जो भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषि व वैमानिक देव देवगति, नाम, गोत्र के कर्म वेदते हैं वे भावदेव कहाते हैं. यह दूसरा लक्षण द्वार हुवा ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! भविक द्रव्य देव कहां से उत्पन्न होते हैं क्या नरक से उत्पन्न होते हैं तिर्यंच, मनुष्य व देव में से उत्पन्न होते हैं ! अहो गौतम ! भविक द्रव्य देव नरक में से, तिर्यंच में से, मनुष्य व देव में से उत्पन्न होते हैं. इसका विशेष खुलासा पन्नवणा के छठा पद में कहा है वैसे कहना यावत् अनुत्तर विमान तक के देव उत्पन्न होते हैं. परंतु असंख्यात वर्ष की स्थितिवाले अकर्म

सूत्र

कम्मस्स उदएणं तेया सरीर प्पओग बंधे ॥ ३३ ॥ तेया सरीर प्पओग बंधेणं भंते ! किं देस बंधे सव्व बंधे? गोयमा! देसबंधे नो सव्वबंधे॥ तेया सरीर प्पओग बंधेणं भंते ! कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! दुविहे प० तं० अणाइए वा अपज्जवसिए, अनाइए वा सपज्जवसिए॥३४॥तेयासरीर प्पओग बंधंतरेणं भंते! कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! अणाइयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं ॥ ३५ ॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं तेया सरीरस्स देसबंधगाणं, अबंधगाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा तेया सरीरस्स अबंधगा, देसबंधगा

भावार्थ

किस कर्म के उदय से होता है ? अहो गौतम ! वीर्य सयोग, सद् द्रव्य, यावत् आयुष्य प्रत्ययिक तेजस शरीर नाम कर्म के उदय से तेजस शरीर प्रयोगबंध होता है ॥ ३३ ॥ अहो भगवन् ! क्या वह देशबंध है या सर्वबंध है ? अहो गौतम ! देशबंध है परंतु सर्वबंध नहीं है. अहो भगवन् ! तेजस शरीर प्रयोग बंध की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! उस के दो भेद अनादि अपर्यवसित, अनादि सपर्यवसित. ॥ ३४ ॥ अहो भगवन् ! इस का अंतर कितने काल का कहा ? अहो गौतम ! दोनों भेद में से किसी का अंतर नहीं है. ॥ ३५ ॥ अहो भगवन् ! तेजस शरीर देशबंधक व अबंधक में से कौन किस से अल्प

देवेसु उववाएयव्वा, पज्जत्ता भेदेणं जाव सव्वट्ठसिद्ध त्ति। धम्मदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति-किं नेरइएहिंतो एवं वक्कंती भेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठ सिद्ध त्ति, णवरं तमा, अहे सत्तमाए तेउवाउ असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमिग अंतर-दीवग वज्जेसु। देवाहिदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइएहिंतो उववज्जंति पुच्छा? गोयमा! णेरइएहिंतो उववज्जंति, णो तिरि णो मणु देवेहिंतो उववज्जंति जइ णेरइए एवं तिसु पुढवीसु उववज्जंति सेसाओ खोडेयव्वाओ, जइ देवेहिंतो वेमाणिएसु

भावार्थ उत्पन्न होते हैं [illegible] से उत्पन्न होते हैं यावत् वैमानिक में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! [illegible] सर्वार्थसिद्ध में से उत्पन्न होते हैं वगैरह सब पन्नवणा के [illegible] जानना अहो भगवन्! धर्मदेव क्या नरक यावत् देवगति में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! नरक यावत् देवगति में से उत्पन्न होते हैं इन की सब उत्पत्ति पन्नवणा सूत्रानुसार जानना परंतु तमः, सातवी पृथ्वी, तेउ वायु, असंख्यात वर्ष वाले अकर्म भूमि व अंतरद्वीप के मनुष्य में से धर्मदेव नहीं होसकते हैं अहो भगवन्! देवाधिदेव कहां से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! नरक व देवलोक में से देवाधिदेव उत्पन्न होते हैं परंतु मनुष्य तिर्यंच में से नहीं उत्पन्न होते हैं. नारकी में से रत्नप्रभा, शर्कर प्रभा व वालुप्रभा इन तीन नरक में से उत्पन्न होते हैं और देवलोक में से सर्वार्थ सिद्ध तक के सब

शब्दार्थ आयुष्य बंध प० प्ररूपा गो० गौतम छ० छ प्रकार का जा० आयुष्यबंध जा० जातिनाम निधत्त आ० आयुष्यबंध ग० गतिनाम निधत्त आ० आयुष्यबंध ठि० स्थितिनाम निधत्त आ० आयुष्यबंध ओ० अवगाहन नाम निधत्त आ० आयुष्यबंध प० प्रदेश नाम निधत्त आ० आयुष्यबंध अ० अनुभाग नाम

सूत्र अगणी पुढवीय अगणि पुढवीसु ॥ आउतेउ वणस्सइ, कप्पुवरिमि कण्हराईसु ॥ १० ॥ कइविहेणं भंते ! आउयबंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तंजहा--जाइनाम निहत्ताउए, गतिनाम निहत्ताउए, ठिइनाम निहत्ताउए,

भावार्थ में बादर अपकाय, बादर अग्निकाय व बादर वनस्पतिकाय नहीं है यह विशेषता है. नवग्रैवेयक से ईषत् प्राग्भार पृथ्वीतक वर्णन नहीं किया है, परंतु इस का निषेध जानना. तमस्काय वैसेही सौधर्मादि पांच देवलोक में अग्निकाय व पृथ्वीकाय का प्रश्न, सातों पृथ्वीयों में अग्निकाय का प्रश्न, और उपर के देवलोक में अपकाय, तेउकाय व वनस्पतिकाय का प्रश्न कहा है. ॥ १० ॥ पृथिव्यादि जीव आयुष्य सहित होते हैं इसलिये आयुष्य का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! आयुष्य का बंध कितने प्रकार का कहा ? अहो गौतम ! आयुष्य का बंध छ प्रकार का कहा है. एकेन्द्रियादि पांच प्रकार के जातिरूप नामकर्म की उत्तर प्रकृति विशेष अथवा जीव परिणामकी साथ प्रतिसमय कर्म पुद्गलका अनुभव के लिये जो आयुष्य बांधनेमें आवे सो जाति नाम निधत्त आयुष्य २ नरकादिगति का आयुष्यबंध करे सो गति नाम निधत्त आयुष्य ३

मूल

माई ॥ ३ ॥ भविय दव्वदेवाणं भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! एगत्तंपि पभू विउव्वित्तए पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए ॥ एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवं जाव पंचिंदियरूवं वा, पुहुत्तं विउव्वमाणे एगिंदिय रूवाणिवा जाव पंचिंदिय रूवाणिवा, ताइं संखेज्जाणिवा असंखेज्जाणिवा, संबद्धाणिवा असंबद्धाणिवा, सरिसाणिवा असरिसाणिवा विउव्वित्तए विउव्वित्ता तओ पच्छा अप्पणो जहिच्छियाइं कज्जाइं करेंति एवं णरदेवावि एवं धम्मदेवावि ॥ देवाहिदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! एगत्तंपि पभू विउव्वित्तए पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए, णो चेवणं संपत्तीए,

भावार्थ

स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! भविक द्रव्य देव एक अथवा अनेक रूप वैक्रेय करने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! एक अथवा अनेक रूप वैक्रेय करने को भविक द्रव्य देव समर्थ है ? एक रूप वैक्रेय करते एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय के रूप का वैक्रेय करे और अनेक रूप वैक्रेय करते एकेन्द्रिय के रूपों यावत् पंचेन्द्रिय के रूपों संख्यात व असंख्यात संबद्ध या असंबद्ध, सदृश या असदृश ऐसे वैक्रेय करने को समर्थ है. और अपना इच्छित कार्य ... अथवा अनेक वैक्रेय करने में समर्थ है

कम्मस्स उदएणं नाणावरणिज्जकम्मा सरीरप्पओगबंधे ॥ ३७ ॥ दरिसणावरणिज्ज-कम्मा सरीरप्पओगबंधेणं भंते ? कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! दंसण पडिणीय-याए एवं जहा नाणावरणिज्जं नवरं दंसण नाम घेयव्वं, जाव दंसण विसंवायणा जोगेणं दंसणावरणिज्जकम्मा सरीरप्पओगणामाए कम्मस्स उदएणं जाव प्पओगबंधे

नाम क० कर्म के उ० उदय से ना० ज्ञानावरणीय क०ःकर्म शरीर प्रयोग बंध ॥ ३७ ॥ द०दर्शनावरणीय क० कर्म शरीर प्रयोग बंध भं० भगवन् क० किस क० कर्म से उ० उदय से गो० गौतम दं० दर्शन प्रत्यनीक ए० ऐसे ज० जैसे ना० ज्ञानावरणीय न० विशेष दं० दर्शन ना० नाम घे० रखना जा० यावत् दं० दर्शन वि० विसंवादन जो० योग से दं० दर्शनावरणीय क० कर्म शरीर प्रयोग नाम क० कर्म के उ० उदय से जा० यावत् प० प्रयोग बंध ॥ ३८ ॥ सा० शाता वेदनीय क०कर्म शरीर प्रयोग बंध भं०भगवन्

सो ज्ञानांतराय, से ज्ञान अथवा ज्ञानी का प्रद्वेष करे, ज्ञान अथवा ज्ञानी की हीलना करे और ज्ञान का व्यभिचार बतलावे इन छ कारन से ज्ञानावरणीय कार्माण शरीर नाम कर्म के उदय से ज्ञानावरणीय कार्माण शरीर प्रयोग बंध होता है ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! दर्शनावरणीय कार्माण शरीर प्रयोग बंध किस कर्म के उदय से होता है ? अहो गौतम दर्शन ( चक्षुदर्शनादि ) अथवा दर्शनी की प्रतिकूलता से, दर्शन अथवा दर्शनीकी निन्दा करने से, दर्शन में अंतराय देनेसे, दर्शन का प्रद्वेष करने से, दर्शन की असातना करने से,

प्रकाशक राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी

[illegible] उववज्जंति, [illegible], देवेसु उववज्जंति ॥ जइ देवेसु उववज्जंति किं [illegible] पुच्छा? गोयमा! [illegible] देवेसु उववज्जंति, [illegible], [illegible] देवेसु उववज्जंति, [illegible] उववज्जंति, जाव [illegible] अणंतरं उववज्जंति [illegible] जाव अंतं करेंति [illegible] भंते! अणंतरं [illegible] उववज्जंति? गोयमा! [illegible] जाव अंतं करेंति [illegible] भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा? [illegible] अणुत्तरकुमारगणं उव्वट्टणा [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] भंते! [illegible] केव-

[illegible] में उत्पन्न होते हैं? अहो भगवन्! [illegible] कहां उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! नरक, [illegible] में उत्पन्न होते हैं, [illegible] में उत्पन्न होते हैं, [illegible] में उत्पन्न होते हैं [illegible] सिद्ध बुद्ध यावत् मुक्त [illegible] उत्पन्न होते हैं [illegible] होते हैं? अहो गौतम! [illegible] होते हैं। अहो भगवन्! [illegible] कहां उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! [illegible] बहुत से [illegible] होते हैं, अहो भगवन्! [illegible] कहां उत्पन्न होते हैं? अहो [illegible] अंत करते हैं, अहो भगवन्! [illegible]

शब्दार्थ निधत्त आ० आयुष्यबंध ॥ ११ ॥ पूर्ववत् ॥ ११-१२ ॥ ल० लवण स० समुद्र किं० क्या उ० ऊंचापानी

सूत्र ओगाहणा नामनिहत्ताउए, पएसनामनिहत्ताउए, अणुभागनामनिहत्ताउए, दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ ११ ॥ जीवेणं भंते ! किं जाइनामनिहत्ता जाव अनुभाग नामनिहत्ता ? गोयमा ! जाइ नामनिहत्तावि जाव अणुभागनामनिहत्तावि, दंडओ जाव वेमाणियाणं । जीवाणं भंते ! किं जाइनाम निहत्ताउया जाव अणुभागनाम निहत्ताउया ? गोयमा ! जाइनामनिहत्ताउयावि जाव अणुभागनामनिहत्ता-

भावार्थ एक भव में रहने का काल का बंध सो स्थितिनामनिधत्त आयुष्य बंध ४ औदारिकादि शरीर प्रमाण का बंध सो अवगाहना नाम निधत्त आयुष्य बंध ५ आयुष्य कर्म के तथाविध प्रणित जो प्रदेश का बंध सो प्रदेश नाम निधत्त आयुष्य बंध, और ६ आयुष्य द्रव्य का विपाक सो अनुभाग नाम निधत्त आयुष्य बंध. यह छप्रकार का आयुर्बंध चौवीस ही दंडक में पाता है. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! एक जीवने एकेन्द्रियादि जातिका बंध किया उसे जाति नाम निधत्त क्या कहना ? अहो गौतम ! जिसने जातिनाम का बंध किया उसे जातिनामनिधत्त कहना जाति नामनिधत्त जैसे गति, स्थिति, अवगाहना, प्रदेश व अनुभाग के छ दंडक जानना. अहो भगवन् ! अनेक जीवोंने जिस प्रकार एकेन्द्रियादि जाति नाम का बंध किया उसे क्या जाति नाम निधत्त आयुष्य कहना ? अहो गौतम ! अनेक जीवोंने जाति

सूत्र

दवियाता, कसायाता, जोगायाता, उवओयाता, णाणत्ता, दंसणाया, चरित्ताया, वीरियाता ॥ १ ॥ जस्सणं भंते ! दवियाता तस्सणं कसायाता, जस्स कसायाता तस्स दवियाता ? गोयमा ! जस्स दवियाता तस्स कसायाता सियअत्थि सियणत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाता णियमं अत्थि ॥ जस्सणं भंते ! दवियाता तस्स जोगाता एवं जहा दवियाता कसायाता भणिया तहा दवियाता जोगायायावि भाणि-

भावार्थ

१ त्रिकालानुगामी उपसर्जनी कृत कषायादि पर्यायरूप आत्मा सो द्रव्य आत्मा २ क्रोधादि कषाय विशिष्ट आत्मा सो कषाय आत्मा यह आत्मा अनुपशान्त कषायवंतको होता है ३ मन प्रभृति व्यापार रूप जो योग वह जिस का प्रधान आत्मा है सो योगात्मा यह योगवंत जीवों को होता है. ४ साकार अनाकार भेद से उपयोग जिन को प्रधान है सो उपयोग आत्मा यह संसार व सिद्ध दोनों को होता है ५ ज्ञान विशेष उपसर्जनी कृत दर्शनादि आत्मा सो ज्ञानात्मा यह सम्यग्दृष्टि को होता है ६ ऐसे ही दर्शन आत्मा का जानना परंतु दर्शनात्मा सब जीवों को होता है ७ चारित्र आत्मा विरती को होता है और ८ उत्थानादि वीर्यरूप आत्मा सो वीर्यात्मा ॥ १ ॥ अब इन आठों आत्मा का परस्पर संयोग बताते हैं. अहो भगवन् ! जिस को द्रव्य आत्मा है उस को क्या कषाय आत्मा है अथवा जिस को कषाय आत्मा है उसको क्या द्रव्य आत्मा है ? अहो गौतम ! जिसको द्रव्य आत्मा है उसको कषाय आत्मा

सूत्र

अत्थ, जस्सणं दंसणाता तस्स दवियाता णियमं अत्थि ॥ जस्स दवियाता तस्स चरित्ताया भयणाए जस्स पुण चरित्ताता तस्स दवियाता णियमं अत्थि ॥ एवं वीरियाता एवि समं ॥ २ ॥ जस्सणं भंते ! कसायाता तस्स जोगाया पुच्छा ? गोयमा ! जस्स कसायाता तस्स जोगाता णियमं अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाता सिय

भावार्थ

उन दोनों को अविनाभूत संबंध है. अहो भगवन् ! जिस को द्रव्यात्मा है उस को क्या ज्ञानात्मा और ज्ञानात्मा वाले को क्या द्रव्यात्मा है ? अहो गौतम ! जिस को द्रव्य आत्मा है उस को ज्ञानात्मा की भजना है क्यों की सम्यग् दृष्टि को ज्ञानात्मा होता है और जो समदृष्टि होते हैं उन को ज्ञानात्मा व द्रव्यात्मा दोनों होते हैं मिथ्या दृष्टि को मात्र द्रव्य आत्मा होता है और ज्ञानात्मा वाले को द्रव्यात्मा की नियमा है क्यों की ज्ञानमय आत्मा है. जिस को द्रव्यात्मा होता है उस को दर्शनात्मा निश्चयही होता है और जिस को दर्शनात्मा होता है उस को द्रव्यात्मा निश्चय ही होता है क्यों कि दोनों अविनाभूत हैं. द्रव्य आत्मा वाले को चारित्र आत्मा की भजना है क्यों कि विरति द्रव्यात्मा को चारित्र है और अविरति व सिद्धको चारित्र नहीं है और चारित्र आत्मा वाले को द्रव्यात्मा निश्चयही है क्यों की द्रव्यात्मा विना चारित्र नहीं ग्रहण किया जासकता है. द्रव्य आत्मा वाले को वीर्यात्मा की भजना है और वीर्यात्मा वाले को द्रव्यात्मा की नियमा है, सिद्ध में द्रव्यात्मा है परंतु करण वीर्य का अभाव है और संसारी

शब्दार्थ — स० श्रमणोपासक भं० भगवन् त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण फा० फासुक ए० शुद्ध अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम प० देता किं० क्या ल० प्राप्त करे गो० गौतम स० श्रमणोपासक त० तथारूप स० श्रमण को जा० यावत् प० देता त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को स० समाधि

सूत्र — समणोवासयस्सणं भंते ! पुव्वामेव वणप्फइ समारंभे पच्चक्खाए सेय पुढविं खणमाणे अण्णयरस्स रुक्खस्स मूलं छिंदेज्जा, सेणं भंते ! वयं अतिचरति ? णो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अइवायाए आउट्टइ ॥ ६ ॥ समणोवासएणं भंते ! तहारूवं समणंवा माहणंवा फासुएसणिज्जेणं असणपाण खाइम साइमेणं पडिलाभेमाणे किं लभइ ? गोयमा समणोवासएणं तहारूवं समणं वा जाव पडिलाभेमाणे तहारूवस्स

भावार्थ — को वनस्पति काया का समारंभ करने का प्रत्याख्यान पहिले से ही है परंतु पृथ्वीकाय के समारंभ का प्रत्याख्यान नहीं है. अब पृथ्वीकाय को खोदते हुवे वृक्ष का मूल छेदा जावे तो क्या उनको व्रतभंग होवे? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है. क्यों कि वनस्पति की हिंसामें उनका संकल्प नहीं है. ॥६॥ अहो भगवन्! श्रमणोपासक तथारूप श्रमणको फासुक एषणिक आहार, पान, खादिम व स्वादिम देते हुवे क्या प्राप्त करे ? अहो गौतम ! श्रमणोपासक तथारूप श्रमण माहण को अशनादि देते हुवे को समाधि ( सुख ) उत्पन्न करे. और इस तरह

सूत्र

भाणियव्वा जहा दवियाताए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगाताएवि उवार-

छाहिं समं भाणियव्वा जस्स णाणाया तस्स दंसणाया णियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए ॥ जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि

भावार्थ

जैसे कषाय आत्मा को चारित्रात्मा क्वचित् है कषायी साधुवत् और कषायात्मा को चारित्रात्मा नहीं भी है संसारीवत्. चारित्रात्मा को कषायात्मा की भजना है क्यों की उपशांत व क्षीण कषायी को चारित्र है परंतु कषाय नहीं है. और सकषायी अनगार को कषाय व चारित्र दोनों होते हैं. कषायात्मा व योगात्मा का जैसे कहा वैसे कषायात्मा व वीर्यात्मा का जानना अर्थात् कषायात्मा को वीर्यात्मा अवश्यमेव होता है और वीर्यात्माको कषायात्मा की भजना है क्यों कि कषाय मात्र दशवा गुणस्थान पर्यंत है यह कषायात्मा को साथ छ आत्मा का कहा. जैसे कषायात्मा की वक्तव्यता कही वैसे ही योगात्मा की वक्तव्यता उपर के पांच आत्मा की साथ कहना अर्थात् योगात्मा को उपयोगात्मा अवश्यमेव होता है और उपयोगात्माको योग आत्मा की भजना अयोगी सयोगीवत्. समदृष्टि योगात्मा को ज्ञानात्मा होता है और मिथ्यादृष्टि योगात्मा को ज्ञानात्मा नहीं होता है, और सयोगी ज्ञानात्मा को योगात्मा होता है और अयोगी ज्ञानात्मा को योगात्मा नहीं है इस से दोनों की परस्पर भजना है. योगात्मा को दर्शनात्मा नियमा है दर्शन शून्य आत्मा नहीं होने से और दर्शनात्मा को योगात्मा की भजना है अयोगी अवस्था में. योगात्मा को

वि० विराध धर्म गो० गौतम म० मैंने पु० पुरुष स० सर्व आराधक प० प्ररूपा त० तहां जे० जो च० चौथा पु० पुरुष जा० से० वह पु० पुरुष अ० अशीलवन्त अ० अश्रुतवन्त अ० अनुपरत अ० अविज्ञात धर्म गो० गौतम म० मैंने पु० पुरुष स० सर्व विराधक प० प्ररूपा ॥ १ ॥ क० कितनेक प्रकार की भं० भगवन् आ० आराधना प० प्ररूपी गो० गौतम ति० तीन प्रकार की आ० आराधना प० प्ररूपी तं० वह

शीलवं सुयवं उवरए विण्णायधम्मे एसणं गोयमा ! मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते ४ तत्थणं जे से चउत्थे पुरिसजाए सेणं पुरिसे असीलवं असुतवं अणुवरए अविण्णाय धम्मे एसणं गोयमा! मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते॥ १॥कइविहाणं भंते! आराहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तंजहा नाणाराहणा,

ज्ञानवंत है वह पाप से निवर्ता नहीं परंतु धर्म का स्वरूप उनोंने जाना है इन से वह ज्ञानादि धर्म रूप में देश विराधक हुवा जो तीसरा भांगावाला क्रियावंत व ज्ञानवंत है वह पाप से निवर्ता है, और उसके स्वरूप धर्म भी जाना है. अहो गौतम ! वह पुरुष सर्वाराधक होता है और जो चौथा भांगावाला मिथ्या दृष्टि है वह पुरुष पाप से निवर्ता नहीं है और उनोंने धर्म का स्वरूप जाना नहीं है अहो गौतम ! वैसा पुरुष सर्व विराधक होता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! आराधना कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! आराधना तीन प्रकार की कही. १ मतिज्ञानादि पांचों ज्ञान की

सूत्र

सियआया, १ सियणोआया, २ सियअवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय ३, सिय आयाय णो आयाय ४, सियआयाय णो आयाओय ५, सियआयाओय णो आयाय ६, सिय-आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ७, सिय आयाय अवत्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय ८, सिय आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ९, सिय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १०, सिय णो आयाय अवत्तव्वाइं

भावार्थ

मीला हुवा द्विप्रदेशात्मक स्कंध आत्मा इति अनात्मा इति होने से आत्मा की अवक्तव्यता है और ६ एक देश असद्भाव पर्यायवाला है और दूसरा देश उभय पर्यायवाला है इस से नो आत्मा की अवक्तव्यता होती है. इस से अहो गौतम ! उक्त छ भांगे द्विप्रदेशिक स्कंध आश्री कहे हैं. अहो भगवन् ! आत्मा त्रिप्रदेशिक स्कंध है या अन्य त्रिप्रदेशिक स्कंध है ? अहो गौतम ! त्रिप्रदेशिक स्कंध में तेरह भांगे होते हैं. १ त्रिप्रदेशिक स्कंध क्वचित् आत्मा २ क्वचित् अनात्मा ३ क्वचित् अवक्तव्य ४ क्वचित् एक वचन मे आत्मा और क्वचित् एक वचन से अनात्मा ५ क्वचित् आत्मा एक वचन से अनात्मा अनेक वचन मे ६ क्वचित् आत्मा पृथक्त्व वचन मे अनात्मा एक वचन से ७ क्वचित् एक वचन से आत्मा इति अनात्मा इति एक वचन में अवक्तव्य ८ क्वचित् अनेक वचन से आत्मा इति अनात्माइति एक वचन में आत्मा अवक्तव्य ९ क्वचित् एक वचन में आत्माइति अनात्माइति आत्मा पृथक्त्व वचन में अवक्तव्य १० एक

... क्रिया क० करे ॥ ४ ॥ स०
श्रमणोपासक को भं० भगवन् पु० पहिले त० त्रस प्राण का स० समारंभ का प० प्रत्याख्यान भ० होवे
पु० पृथ्वी का स० समारंभ में अ० अप्रत्याख्यान भ० होवे से० वह पु० पृथ्वी को ख० खोदता
हुआ अ० किसी त० त्रसप्राणी को वि० हणे से० उन को भं० भगवन् तं० उस व० व्रत में अ० अतिक्रमे
नो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य नो० नहीं त० उन का अ० अतिपात में आ० वर्तना है ॥५॥ पृथ्वी ॥३॥

सूत्र

याहिगरणवत्तियं च ण तस्स नो ईरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ से तेणट्ठेणं ॥४॥ समणोवासगस्सणं भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाए भवइ, पुढवि समारंभे अपच्चक्खाए भवइ सेय पुढविं खणमाणे अण्णयरं तसं पाणं विहिंसेज्जा, सेणं भंते तं वयं अइचरइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ नो खलु से तस्स अइवायाए आउट्टइ ॥५॥

भावार्थ

अधिकरणिकी क्रिया प्रत्ययिकी सांपरायिक क्रिया उस को लगती है परंतु ईर्यापथिक क्रिया नहीं लगती है. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! श्रावक को त्रसप्राण के समारंभ का प्रत्याख्यान पहिले से ही है परंतु पृथ्वीकायादिक के समारंभ का प्रत्याख्यान नहीं है. यदि पृथ्वीकाय खोदते हुवे श्रावक किसी त्रसप्राणी की हिंसा करे तो क्या वह व्रतभंग करता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् श्रावक के व्रतका भंग नहीं होता है. क्यों कि उस को त्रसवध का संकल्प नहीं था ॥५॥ श्रावक

सब्भाव पज्जवा तिपदेसिए खंधे आयाए णो आयाओय ५, देसा आदिट्ठा सब्भाव पज्जवा, देसे आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाओय णो आयाए ६, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभय पज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाए अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ७, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभय पज्जवा तिपदेसिए खंधे आयाए अवत्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय ८, देसा आदिट्ठा सब्भाव पज्जवा, देसे आदिट्ठे तदुभय पज्जवे, तिपदेसिए खंधे आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय। एए तिण्णि भगा ९ ॥ देसे

स्वपर्याय अनेक देश आश्री स्वपर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा ६ अनेक देश आश्री सद्भाव पर्याय एक देश आश्री पर पर्याय तीन प्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा ७ देश आश्री स्वपर्याय और देश आश्री उभयपर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध एक वचन में आत्मा नो आत्मा इति एकवचनमें अवक्तव्य ८ एक देश आश्री स्वपर्याय और अनेक देश आश्री उभय पर्याय दोनों से आत्मा अवक्तव्य है ९ अनेक देश आश्री स्वपर्याय एक देश आश्री उभय पर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा अवक्तव्य १० देश आश्री परपर्याय देश आश्री उभय पर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध नो आत्मा अवक्तव्य ११ देश आश्री परपर्याय अनेक देश

भंते ! कइविहा ? एवं चेव तिविहावि ॥ एवं चरित्ताराहणावि ॥ २ ॥ जस्सणं भंते उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा ? गोयमा ! जस्स उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा, जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा जहण्णा वा अजहण्णमणुक्कोसा वा । जस्सणं भंते! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा, जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया

भावार्थ

आराधक सकाइ तक युक्त ऐसे ही चारित्र आराधक के भी तीन भेद होते हैं १. उत्कृष्ट चारित्र आराधक यथाख्यात चारित्र होवे मध्यम चारित्राराधक सामायिकादि में मध्यस्थ परिणामी होवे और ३ जघन्य चारित्राराधक सामायिकादि चारित्र शिथिलता पूर्वक पाले ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जिस को उत्कृष्ट ज्ञान आराधना होती है उस को क्या उत्कृष्ट दर्शन आराधना होती है अथवा जिस को उत्कृष्ट दर्शन आराधना होती है उस को क्या उत्कृष्ट ज्ञान आराधना होती है ? अहो गौतम ! जिस को उत्कृष्ट ज्ञान आराधना होती है उस को उत्कृष्ट दर्शन आराधना और मध्यम दर्शन आराधना होती है और जिस को उत्कृष्ट दर्शन आराधना होती है उस को जघन्य, उत्कृष्ट व मध्यम ज्ञान आराधना होती है अहो भगवन् ! जिस को उत्कृष्ट ज्ञान आराधना होती है उस को क्या चारित्र आराधना

सूत्र

तंचेव जाव णो आयातिय ॥ आया भंते ! चउप्पदेसिए खंधे अण्णं पुच्छा ? गोयमा! चउप्पदेसिए खंधे सिय आया १, सिय णो आया २, सिय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ३, सिय आयाय णो आयाय ४, सिय आयाय अवत्तव्वं ४, सिय णो आयाय अवत्तव्वं ४, सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १६; सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्वाइं आयाय णो आयाय १७. सिय आयाय णो आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १८, सिय आयाओय णो आयाय

भावार्थ

कदाचित् आत्मा नो आत्मा के एकवचन बहुवचन के ४, कदाचित् आत्मा अवक्तव्य के एकवचन अनेकवचन के ४, कदाचित् नो आत्मा अवक्तव्य के एकवचन अनेकवचन के ४, यों १८ भांगे हुए १६ कदाचित् आत्मा, नो आत्मा व अवक्तव्य एकवचन में १७ कदाचित् आत्मा नो आत्मा एकवचन में और अवक्तव्य अनेक वचन में १८ कदाचित् आत्मा एकवचन नो आत्मा बहुवचन और अवक्तव्य एकवचन और १९ कदाचित् आत्मा बहुवचन नो आत्मा व अवक्तव्य एक वचन में यों १९. भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से चतुष्क प्रदेशिक स्कंध में उक्त १९ भांगे पाते हैं ? अहो गौतम ! १ स्वपर्याय आश्री आत्मा २ पर पर्याय आश्री नो आत्मा ३ उभय पर्याय आश्री अवक्तव्य ४ देश से स्वपर्याय देश से पर पर्याय ऐसे चार भांगे, स्वपर्याय व उभय पर्याय के एक वचन बहु वचन के चार भांगे, ऐसे ही परपर्याय व उभय पर्याय के चार भांगे मीलकर १९ भांगे होते हैं

। भंते ! चउप्पदेसिए खंध अण्ण पुच्छा ? गोयमा!
आय अवत्तव्वं, आयातिय णो आया णो आया २, सिय अवत्तव्वं आयातिय णो आया-
आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे ? आय ४, सिय आयाय अवत्तव्वं ४, सिय णो आयाय
आयाय अवत्तव्वं, आयातिय णो आय णोय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १६;
चउप्पदेसिए खंधे सिय आया सिय भंगा उच्चारेयव्वा जाव णो आयातिय । ? आयाय णो आयायं १७. सिय आयाय
खंधे ? गोयमा ! पंच पदेसिए खंध सिय णो आयातिय १८, सिय आयाओय णो आयाय
णो आयातिय ३, सिय, आयाय णो ४, क्वचित् आत्मा अवक्तव्य के एकवचन अनेकवचन के ४,
अवत्तव्व ४, सिय सजोगे एक्को न पडइ के ४, यों १८ भांगे हुए १६ क्वचित् आत्मा, नो आत्मा व
गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स एकवचन में और अवक्तव्य अनेक वचन में १८ क्वचित् आत्मा
और १९ क्वचित् आत्मा बहुवचन नो आत्मा व अवक्तव्य

भावार्थ

पर्याय चतुष्क प्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा अवक्तव्य इस कारन से चतुष्क प्रदेशिक स्कंध में उक्त १९ भांगे पाते
भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! आत्मा पांच प्रदेशिक स्कंध क्या पर पर्याय आश्री नो आत्मा ३ उभय पर्याय आश्री
शिक स्कंध में क्वचित् आत्मा क्वचित् नो आत्मा क्वचित् चार भांग, स्वपर्याय व उभय पर्याय के एक वचन
किस कारन से कहा है कि पांच प्रदेशिक स्कंध में स्वपर्याय के चार भांग मीलकर १९ भांग होते हैं
पर पर्याय में नो आत्मा उभय पर्याय में अवक्तव्य देश

अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतं करेइ, अत्थेगइए कप्पोवएसुवा कप्पातीतएसुवा उववज्जइ ॥ उक्कोसियाणं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं एवं चेव ॥ उक्कोसियाणं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता एवं चेव, णवरं अत्थेगइए कप्पातीतएसु उववज्जइ ॥ मज्झिमिएणं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ? गोयमा अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ, तच्चंपुण भवग्गहणं णाइक्कमइ ॥ मज्झिमियंणं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता एवं चेव

भावार्थ

है उस को उत्कृष्ट, मध्यम व जघन्य चारित्र आराधना होती है और जिस को उत्कृष्ट चारित्र आराधना है उस को निश्चय ही उत्कृष्ट दर्शन आराधना होती है. अहो भगवन् ! उत्कृष्ट ज्ञान आराधनावाला कितने भव में सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ? अहो गौतम ! कितनेक उसी भव में सीझे कितनेक दूसरे भव में सीझे यावत् अंतकरे और कितनेक कल्प में अथवा कल्पातीत में उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! उत्कृष्ट दर्शन आराधना वाला कितने भव में सीझे ? अहो गौतम ! उत्कृष्ट ज्ञान आराधना जैसे कहना. अहो भगवन् ! उत्कृष्ट चारित्र आराधना वाला कितने भव में सीझे यावत् अंत करे ? अहो गौतम !

# * त्रयोदश शतकम् *

पुढवीदेस मणंतर पुढवी आहारमेव उववाए; भासा कम्मणगारे, केया घडिया समुग्घाए ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवइया णिरयावास सयसहस्सा पण्णत्ता ?

बारहवे शतक के अंत में आत्म स्वरूप का कथन किया आत्मा पृथिव्यादि आधीन है इसलिये इस तेरहवे शतक के प्रारंभ में पृथ्वी का कथन करते हैं. इस शतक के दश उद्देशे कहे हैं १ पृथ्वी उद्देशे में नरक ( पृथिव्यादि ) का कथन २ देवता की प्ररूपणा ३ अंत आहारादिक का कथन ४ पृथ्वी गत वक्तव्यता ५ नरकादिक के आहार की प्ररूपणा ६ नरकादिक का उत्पात ७ भाषा का अर्थ ८ कर्मों का अर्थ ९ भावितात्मा अनगार और १० समुद्घात. अब इन में से प्रथम उद्देशा कहते हैं राजगृही नगरी के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! पृथ्वियों कितनी कहीं ? अहो गौतम ! पृथ्वियों सात कहीं, जिन के नाम रत्नप्रभा यावत् तमतमा सब तम प्रभा ॥१॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने लाख नरकावास कहे हैं ? अहो

शब्दार्थ

ज्ञानी भं० भगवन् म० मनुष्य जे० जो भ० भव्य भ० भवग्रहण से सि० सिझने को जा० यावत् अं० अंत करने को ॥ ७ ॥ जे० जो अ० असंज्ञी पा० प्राणी पु० पृथ्वीकाया जा० यावत् व० वनस्पति काया छ० छठा ए० कोई त० त्रस ए० ये अं० अंध मू० मूढ त० अंधकार में रहे हुवे त० तम प० पडल

सूत्र

भंते ! से खीणभोगी सेसं जह छउमत्थस्स ॥ केवलीणं भंते ! मणूसे जे भाविए तेणं चेव भवग्गहणेणं एवं जहा परमाहोहिए जाव महापज्जवसाणे भवइ ॥ ७ ॥ जे इमे भंते ! असण्णिणो पाणा पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया छट्ठा एगइया तसा, एएणं अंधा मूढा समप्पविट्ठा, तम पडल मोहजाल पलिच्छण्णा, अकामनिकरणं वेयणं वेदतीति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा ! जे इमे असण्णिणो पाणा पुढवि

भावार्थ

और इस तरह भोगों को त्यजते हुवे महा निर्जरा व महा पर्यवसान करते हैं. परम अवधि ज्ञानी जैसे केवल ज्ञानी का जानना ॥७॥ अहो भगवन् ! जो असंज्ञी पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पति कायिक और अन्य कोई त्रस प्राणी अंध, मूढ, अंधकार में प्रविष्ट, ज्ञानावरणीय के पडल रूप मोहजाल से ढके हुवे हैं वे अकामनिकरण वेदना वेदते हैं ऐसा क्या कहना ? हां गौतम ! अंध, मूढ, अंधकार में प्रविष्ट व ज्ञानावरणीय के पडल का मोहजाल से आच्छादित असंज्ञी पृथ्वी कायिक यावत् कोई त्रस प्राणी अकामनिकरण

सूत्र

एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति, एवं सुक्कपक्खियावि, एवं सण्णीवि, एवं असण्णीवि, एवं भवसिद्धियावि, एवं अभवसिद्धिया, आभिणिबोहियणाणी सुअणाणी, ओहिणाणी, मइअण्णाणी सुअ अण्णाणी; विभंगणाणी एवं चेव, चक्खुदंसणी ण उववज्जंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति, एवं ओहिदंसणीवि, एवं आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गह सण्णोवउत्तावि, इत्थीवेदगा न उववज्जंति, पुरिसवेदगा न उववज्जंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा नपुंसगवेदगा उववज्जंति, एवं कोहकसायी जाव लोभ कसायी, सोइंदिय उवउत्ता न उववज्जंति एवं जाव फासिंदियोवउत्ता ण

भावार्थ

होते हैं. ऐसे ही अवधि दर्शनी, आहार संज्ञा वाले, भयसंज्ञा वाले, मैथुन संज्ञा वाले, परिग्रह संज्ञा वाले का जानना. स्त्री वेदी, पुरुष वेदी उत्पन्न नहीं होते हैं क्यों की नरक में दोनों वेद नहीं हैं. जघन्य एक दो तीन चार उत्कृष्ट संख्याते नपुंसक वेदी. ऐसे ही क्रोध कषायी यावत् लोभ कषायी का जानना. श्रोत्रेन्द्रिय वाले यावत् स्पर्शेन्द्रिय वाले उत्पन्न नहीं होते हैं नोइन्द्रिय वाले जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट

चत्तारि भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसा किं दव्वं पुच्छा ? गोयमा ! सियदव्वं सिय दव्वदेसे अट्ठवि भंगा भाणियव्वा, जाव सियदव्वाइंच दव्व देसाय जहा चत्तारि भणिया, एवं पंच छ सत्त जाव संखेज्जा असंखेज्जा ॥ अणंता भंते !

भावार्थ

हुआ द्रव्यांतर संबंध उत्पन्न होवे तब द्रव्य देश है, ३ जब तीनों पृथक होकर रहे अथवा एक अणु अ.ग दो प्रदेशात्मक स्कंध अलग ऐसे रहे तब द्रव्यों है, जब तीनों ही स्कंधपने को अनागत अथवा दो द्वयणुक एकका केवलद्रव्यांतर की साथ संबंध तब द्रव्य देशों है ५ जब दो परमाणु द्वयणुकपने परिणमे और एक द्रव्यांतर साथ संबंधी अथवा एक केवली रहा अथवा दोनों द्रव्यपने परिणमे द्रव्यांतर साथ संबंधी होवे तब द्रव्य और द्रव्य देशों है ६ जब एक द्रव्यरहा और दोनों द्रव्य साथ संबंधी हुए तब द्रव्य देशों है ७ जब वे दोनों द्रव्यका भेद कर रहे एक द्रव्यांतर साथ संबंध कर रहा तब द्रव्यों द्रव्यदेश कहना यों तीन प्रदेशी परमाणु में सात विकल्प होते हैं और आठवा विकल्प नहीं पाता है, अहो भगवन् ! चार पुद्गलास्तिकाय के प्रदेशों क्या द्रव्य हैं वगैरह आठों प्रश्न करना. अहो गौतम ! चारों प्रदेशों में चार होने से दो दो अलग होकर दोनों तरफ बहुवचन मीलने से आठों ही विकल्प पाते हैं जिन में सात विकल्प जैसे तीन परमाणु के कहे वैसेही होते हैं और आठवा दोका एक स्कंध और दो दूसरास्कंध होनेसे बहुत द्रव्य बहुत प्रदेशों होते हैं जैसे चार प्रदेशों में आठ विकल्प कहे वैसे ही पांच छ सात

मूल

तित्थेउसु णरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं संखेज्जा णेरइया उव्वट्टंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उव्वट्टंति, एवं जाव सण्णी असण्णी ण उव्वट्टंति जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिन्निवा उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्टंति एवं जाव सुअअण्णाणी विभंगणाणी ण उव्वट्टंति चक्खुदंसणी ण उव्वट्टंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खु दंसणी उव्वट्टंति, एवं जाव लोभ कसायी, सोइंदियोवउत्ता ण उव्वट्टंति, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता ण उव्वट्टंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा णो इंदियोवउत्ता उव्वट्टंति, मणजोगी ण उव्वट्टंति, एवं वइजोगीवि, जहण्णेणं

भावार्थ

उत्कृष्ट संख्यात कापुत लेश्या वाले उद्वर्तते हैं. ऐसे ही संज्ञी तक कहना. असंज्ञी नहीं उत्पन्न होते हैं. जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात भवसिद्धिक उद्वर्तते हैं ऐसे ही श्रुत अज्ञानी तक जानना. विभंग ज्ञानी नहीं उद्वर्तते हैं क्यों की उद्वर्तन काल में विभंग ज्ञान नहीं होता है. चक्षुदर्शनी नहीं उद्वर्तते है. जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात अचक्षुदर्शनी उद्वर्तते हैं ऐसे ही लोभ कषायी पर्यंत जानना. श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय नहीं उद्वर्तते हैं. जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात नोइन्द्रिय उद्वर्तते हैं. मनयोगी और वचन

सूत्र

पंचेर पज्जत्ता पण्णत्ता, केवइया चरिमा पण्णत्ता, केवइया अचरिमा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज्ज वित्थडेसु णरएसु संखेज्जा णेरइया पण्णत्ता, संखेज्जा काउलेस्सा पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा सण्णी पण्णत्ता, असण्णी सिय अत्थि सिय णत्थि, जइ अत्थि जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण संखेज्जा पण्णत्ता, संखेज्जा भवसिद्धिया पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा परिग्गहसण्णोवउत्ता पण्णत्ता, इत्थिवेदगा णत्थि, पुरिसवेदगा णत्थि, संखेज्जा णपुंसग वेदगा पण्णत्ता, एवं कोह कसायीवि, माण कसायी जहा असण्णी एवं जाव लोभ कसायी, संखेज्जा सोइंदियोवउत्ता एवं जाव फासिंदियोवउत्ता, नो

भावार्थ

में संख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास में संख्यात नारकी, संख्यात कापुत लेश्यावाले ऐसे ही संख्यात संज्ञी पर्यंत जानना. असंज्ञी कदाचित् होते हैं कदाचित् नहीं होते हैं यदि होते हैं तब जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात कहे हैं संख्यात भवसिद्धिक यावत् संख्यात परिग्रह संज्ञावाले हैं. स्त्रीवेदी पुरुष वेदी नहीं हैं संख्यात नपुंसक वेदी हैं ऐसे ही क्रोध कषायी. मान कषायी, माया व लोभ कषायी असंज्ञी जैसे जानना. संख्यात श्रोत्रेन्द्रियवाले यावत् स्पर्शेन्द्रियवाले हैं नो इन्द्रिय असंज्ञी जैसे जानना. संख्यात

चत्तारि भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसा किं दव्वं पुच्छा ? गोयमा ! सियदव्वं सिय दव्वदेसे अट्ठवि भंगा भाणियव्वा, जाव सियदव्वाइंच दव्व देसाय जहा चत्तारि भणिया, एवं पंच छ सत्त जाव संखेज्जा असंखेज्जा ॥ अणंता भंते !

भावार्थ

हुआ द्रव्यांतर संबंध उपगत होवे तब द्रव्य देश है. ३ जब तीनों पृथक होकर रहे अथवा एक अणु अ ग दो प्रदेशात्मक स्कंध अलग ऐसे रहे तब द्रव्यों है, जब तीनों ही स्कंधपने को अनागत अथवा दो द्वयणु भूत एकका केवलद्रव्यांतर की साथ संबंध तब द्रव्य देशों है ५ जब दो परमाणु द्वयणुरूपने परिणमे और एक द्रव्यांतर साथ संबंधी अथवा एक केवलही रहा अथवा दोनों द्रव्यपने परिणमे द्रव्यांतर साथ संबंधी होवे तब द्रव्य और द्रव्य देशो है ६ जब एक द्रव्यरहा और दोनों द्रव्य साथ संबंधी हुए तब द्रव्य देशों है ७ जब वे दोनों द्रव्यका भेद कर रहे एक द्रव्यांतर साथ संबंध कर रहा तब द्रव्यों द्रव्यदेश कहना यों तीन प्रदेशो परमाणु में सात विकल्प होते हैं और आठवा विकल्प नहीं पाता है. अहो भगवन् ! चार पुद्गलास्तिकाय के प्रदेशों क्या द्रव्य हैं वगैरह आठों प्रश्न करना. अहो गौतम ! चारों प्रदेशों में चार होने से दो दो अलग होकर दोनों तरफ बहुवचन मीलने से आठों ही विकल्प पाते हैं जिन में सात विकल्प जैसे तीन परमाणु के कहे वैसेही होते हैं और आठवा दोका एक स्कंध और दो दूसरा स्कंध होनेसो बहुत द्रव्य बहुत प्रदेशों होते हैं जैसे चार प्रदेशों में आठ विकल्प कहे वैसे ही पांच छ सात

मूल

णिरयावाससयसहस्से पण्णत्ते सेसं जहा पंकप्पभाए ॥ १२ ॥ अहे सत्त-माएणं भंते ! पुढवीए कइ अणुत्तरा महतिमहालया महाणिरया वासापण्णत्ता ? गोयमा ! पंच अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे ॥ सेणं, भंते ! किं संखेज्ज वित्थडा असंखेज्ज वित्थडा ? गोयमा ! संखेज्ज वित्थडेय असंखेज्जवित्थडाय ॥ अहे सत्तमाएणं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महति महालया जाव महाणिरएसु संखेज्ज वित्थडे णरए एगसमएणं केवइया एवं जहा पंकप्पभाए, णवरं तिसु णाणेसु ण उववज्जंति, ण उव्वट्टंति, पण्णत्ताएसु तहेव अत्थि ॥ एवं असंखेज्ज वित्थडेसुवि, णवरं असंखेज्जा

भावार्थ

भगवन् ! तम पृथ्वी में कितने नरकावास कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच कम एक लाख नरकावास कहे हैं शेष सब पंक प्रभा जैसे जानना ॥१२॥ नीचे की सातवी पृथ्वी में कितने बडे महा नरकावास कहे हैं अहो गौतम ! पांच अनुत्तर नरकावास कहे हैं. अहो भगवन् ! क्या वे संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ? अहो गौतम ! संख्यात योजन के विस्तारवाले और असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं. इन का सब अधिकार पंक प्रभा जैसे कहना परंतु वे तीन ज्ञान में उत्पन्न नहीं होते हैं वैसे ही तीन ज्ञान में चवते नहीं हैं. असंख्यात योजन के विस्तारवाले में असंख्यात

सूत्र

संखेज्ज वित्थडा णरया किं सम्मद्दिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया ? गोयमा ! सम्मद्दिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया मिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया सम्मामिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिय विरहिया ॥ एवं असंखेज्ज वित्थडेसुवि तिण्णि गमगा भाणियव्वा ! एवं सक्करप्पभाएवि । एवं जाव तमाएवि ॥ अहे सत्तमा एणं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव संखेज्ज वित्थडे णरए किं सम्मद्दिट्ठी णेरइया पुच्छा ? गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी णेरइया ण उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी णेरइया

भावार्थ

वास में से संख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास क्या समदृष्टि से अविरहित हैं, मिथ्यादृष्टि से अविरहित हैं या समभिथ्यादृष्टि से अविरहित हैं ? अहो गौतम ! समदृष्टि नारकी से अविरहित हैं, मिथ्या दृष्टि नारकी से अविरहित हैं और समभिथ्यादृष्टि नारकी से विरहित, अविरहित दोनों प्रकार के नरकावास रहे हुवे हैं. संख्यात योजन के विस्तारवाले नारकी जैसे असंख्यात योजन के विस्तारवाले नारकी का कहना. जैसे रत्नप्रभा का कहा वैसे ही शर्करप्रभा यावत् तमप्रभातक का जानना. सातवी तमतमप्रभा के पांच अनुत्तर नरकावास में यावत् संख्यात विस्तारवाले में नारकी क्या समदृष्टि उत्पन्न होते हैं वगैरह

सिप्पंडेसु असुर कुमारावासेसु एगसमएणं केवइया असुरकुमारा उववज्जंति केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति, केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव वागरणं, णवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति, णपुंसग वेदगा ण उववज्जंति, सेसं तंचेव ॥ उव्वट्टंतगावि तहेव, णवरं असण्णी उव्वट्टंति, ओहिणाणी ओहिदंसणीय ण उव्वट्टंति, सेसं तंचेव पण्णत्ताएसु तहेव णवरं संखेज्जगा इत्थी वेदगा पण्णत्ता, एवं पुरिसवेदगावि, णपुंसगवेदगा णत्थि कोह कसायी सिय अत्थि सिय

योजन के विस्तार वाले हैं और असंख्यात योजन के विस्तार वाले भी हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन्! असुरकुमार के चौसठ लाख आवास में से संख्यात योजन वाले आवास में एक समय में कितने असुरकुमार देव उत्पन्न होते हैं, कितने तेजो लेश्यावाले उत्पन्न होते हैं कितने कृष्णपाक्षिक उत्पन्न होते हैं? वगैरह ३९ बोलों जो रत्नप्रभा आश्री पूछे हैं वे यहांपर भी जानना. उन का उत्तर भी वैसे ही जानना परंतु विशेष इतना कि इन में दो वेद उत्पन्न होते हैं नपुंसक नहीं उत्पन्न होते हैं. उद्वर्तन प्रश्न में भी वैसे ही कहना परंतु असंज्ञी उद्वर्तते हैं अवधिज्ञानी व अवधि दर्शनी नहीं उद्वर्तते हैं. तीसरा प्रश्न विद्यमानता का भी वैसे ही कहना परंतु इन में संख्यात स्त्री वेदी कहे, ऐसे पुरुष वेदी. नपुंसक वेदी नहीं. क्रोध कषाय वाले हैं और वाले नहीं भी हैं जब हैं तब जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात कहे हैं ऐसे

मूत्र

तिण्णि गमगाय, णवरं तिसुवि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा, ओहिणाणीय ओहिदंसणी संखेज्जा चयंति, सेसं तंचेव एवं जहा सोहम्मवत्तव्वया भाणिया तहा ईसाणे छग्गमगा भाणियव्वा सणंकुमारेवि एवंचेव णवरं इत्थीवेदगा ण उववज्जंति, तेसु पण्णत्तेसुय ण भण्णंति असण्णी तिसुवि गमएसु ण भण्णंति सेसं तंचेव ॥ एवं जाव सहस्सारो णाणत्त विमाणेसु लेस्सासुय सेसं तंचेव ॥ आणय पाणएसुणं भंते ! कप्पेसु केवइया विमाणावाससया पण्णत्ता ? चत्तारि विमाणावास सया पण्णत्ता ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्जा पुच्छा ? गोयमा !

भावार्थ

विस्तार के तीन गमा संख्यात जैसे कहना वहां पर संख्यात के स्थान असंख्यात कहना. परंतु अवधिज्ञानी व अवधि दर्शनी संख्यात चवते हैं. जैसे सौधर्म देवलोक का कहा वैसे ही ईशान में संख्यात असंख्यात के छ गमा कहना. सनत्कुमार में वैसे ही जानना परंतु स्त्रीवेद वहां नहीं उत्पन्न होते हैं. विद्यमान अवस्था में भी नहीं होता है. असंज्ञी तीनों गमा में नहीं है. ऐसे ही सहस्रार तक कहना. मात्र लेश्या और विमानों में भिन्नता रही हुई है. ईशान देवलोक में २८ लाख, सनत्कुमार में १२ लाख, माहेन्द्र में ८ लाख, ब्रह्म में ४ लाख, लंतक में ५० हजार, महाशुक्र में ४० हजार, और सहस्रार में ६ हजार. वैसे ही सौधर्म ईशान में तेजोलेश्या, सनत्कुमार, माहेन्द्र व ब्रह्म देवलोक में पद्म लेश्या और उपर एक शुक्ल लेश्या. अहो भगवन् ! आणत प्राणत में कितने विमान कहे हैं ? अहो गौतम ! आणत प्राणत में ४०० विमान कहे हैं. अहो

मूल

गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्ज-वित्थडाय ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडाय असंखेज्जवित्थडाय ॥ पंचसुणं भंते! अणुत्तरविमाणेसु संखेज्ज वित्थडे विमाणे एगसमए केवइया अणुत्तरोववाइया उववज्जंति, केवइया सुक्कलेस्सा उववज्जंति पुच्छा? गोयमा ! पंचसुणं अणुत्तर विमाणेसु संखेज्ज वित्थडेसु अणुत्तर विमाणे एगसमएणं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा अणुत्तरोववाइया उववज्जंति, एवं जहा गेविज्जग विमाणेसु संखेज्ज वित्थडेसु णवरं कण्ह पक्खिया अभवसिद्धिया तिसु अण्णाणेसु एए ण उववज्जंति, ण चयंति, णवि पण्णत्ताए भाणियव्वा अचरिमावि खोडिज्जंति, जाव संखेज्जा चरिमा पण्णत्ता, सेसं तंचेव

भावार्थ

अनुत्तर विमान कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! अनुत्तर विमान पांच कहे हैं. अहो भगवन् ! क्या वे संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ? अहो गौतम ! संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं व असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं. अहो भगवन् ! पांच अनुत्तर विमान में संख्यात योजन के विस्तारवाले विमान में कितने अनुत्तरोपपातिक उत्पन्न होते हैं कितने शुक्ल लेश्यावाले उत्पन्न होते हैं वगैरह पृच्छा ? अहो गौतम ! पांचों अनुत्तर विमानों में संख्यात योजन के विस्तारवाले अनुत्तर विमान में एक समय में जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट संख्यात अनुत्तरोपपातिक उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही

पहपामममाणा कालमासे कालंकिच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, से कहमेयं भंते ! एवं? गोयमा ! जेणं से बहुजणो अण्णमण्णस्स एवं आइक्खंति जाव उववत्तारो भवंति जे ते एव माहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु अहंपुण गोयमा! एव माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणंसमएणं वेसालीनाम नगरी होत्था । वण्णओ तत्थणं वेसालीए नगरीए वरुणे नामं नागनत्तुए परिवसइ, अड्ढे जाव

शब्दार्थ प्ररूपते हैं ब० बहुत अ० अन्यतर उ० मोटा सं० संग्राम में अ० सन्मुख प० हणाते का० काल के अवसर में का० काल करके अ० किसी दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न होवे से० वह क० कैसे गो० गौतम अ० मैं आ० कहता हूं जा० यावत् प० प्ररूपता हूं ए० ऐसे ख० खलु गो० गौतम ते० उसकाल ते० उस समय में वि० विशाला न० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त त० तहां वे० विशाला न० नगरी में व० वरुण ना० नाम का ना० नाग का न० पौत्र व० रहता है अ० ऋद्धिवाला जा० यावत् अ० अपराभूत स० श्रमणोपासक अ०

कर के किसी देवलोक में उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जो ऐसा कहते हैं उन का कथन मिथ्या है. परंतु मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि उस काल उस समय में विशाला नामक नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ सूत्र जैसा करना. उस विशाला नगरी में वरुण नामक नागका पौत्र रहता था. वह बहुत ऋद्धिवंत यावत् अपराभूत था. वह जीव अजीव का

सूत्र

तेचेव ॥ १० ॥ सेणूणं भंते ! कण्हलेस्से णील जाव सुक्कलेस्से भवित्ता, कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति ? हंता गोयमा! एवं जहेव णेरइएसु पढमे उद्देसए तहेव भाणियव्वं, णीललेस्साएवि जहेव णेरइयाणं,जहा णील लेस्साए एवं जाव पम्हलेस्सेसु सुक्कलेस्सेसु एवं चेव, णवरं लेस्सट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु विसुज्झमाणेसु सुक्कलेस्सं परिणमइ, परिणमइत्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति. से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तेरसम सयस्सय वितिओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ २ ॥ + +

भावार्थ

कहना परंतु अनुत्तर विमान में मात्र एक समदृष्टिवाले उत्पन्न होते हैं, समदृष्टिवाले चवते हैं और समदृष्टि-वाले पाते हैं. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कृष्णलेशी नीललेशी यावत् शुक्ललेशी होकर क्या पुनः कृष्ण लेश्यावाले देवपने उत्पन्न होवे ? हां गौतम ! उत्पन्न होवे. इस का विशेष खुलासा पहिला नरक उद्देशा में कहा है. ऐसे ही शेष पांचों लेश्या का जानना. विशेष में इतना कि लेश्या के स्थानक में विशुद्ध होता हुवा शुक्लेश्या के परिणामपने परिणमे. [illegible] शुक्ल लेश्यावाले देव में उत्पन्न होवे. अहो गौतम इसलिये [illegible] सत्य है. यह तेरहवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा. ॥ १३ ॥ २ ॥

शब्दार्थ यावत् दे० देवलोक प० परिग्रह ते० वे म० मनुष्य प० पहुंचे स० आयुष्यवन्त श्रमण ए० ऐसे अ० अठाईस अं० अंतर द्वीप स० स्वकीय मे आ० लंबे वि० चौडे भा० कहना न० विशेष दी० द्वीप का उ०

सूत्र उसो एवं अट्ठावीसवि अंतरद्दीवा सएणं २ आयाम विक्खंभेणं भाणियव्वा नवरं दीवे २ उद्देसो ॥ एवं सव्वेवि एए अट्ठावीसं उद्देसगा ॥ सेवं भंते !

भावार्थ अंतरद्वीप कहा है. इस का सब अधिकार एक रुक द्वीप जैसे कहना ॥ १ ॥ ४ ॥ यों ही वैषाणिक द्वीप का कहना परंतु इतना विशेष दक्षिण पश्चिम चरिमान्त कहना ॥ १ ॥ ५ ॥ उत्तर पश्चिम के चरिमांत से लांगुलिक द्वीप ॥ १ ॥ ६ ॥ ( यह प्रथम चौक हुवा ) ऐसे ही उत्तर पूर्व के चरिमांत से लवण समुद्र में चार सो योजन अवगाह कर जावे वहां चार सो योजन का लम्बा चौडा हय-कर्ण द्वीप कहा है ॥ १ ॥ ७ ॥ दक्षिण पूर्व चरिमांत से लवण समुद्र में जावे वहां चार सो योजन का गज कर्ण द्वीप ॥१॥८॥ दक्षिण पश्चिम चरिमान्त से गो कर्ण द्वीप ॥ १ ॥ ९ ॥ उत्तर पश्चिम चरिमांत से शष्कुल द्वीप ॥ १ ॥१०॥ ( यह दूसरा चौक हुवा ) ऐसे ही आदर्श मुख द्वीप ॥ १ ॥ ११ ॥ मेंढ मुख द्वीप ॥ १ ॥ १२ ॥ अयो मुख द्वीप॥१॥१३॥ गो मुख द्वीप॥१॥१४॥ (यह तीसरा चौक हुवा) उक्त चारों लवण समुद्र में पांच सो योजन जावे तब पांच सो योजन के लम्बे चौडे आवे ) अश्वमुख द्वीप ॥१॥१५॥ हस्ती मुख द्वीप ॥१॥ १६ ॥ सिंह मुख द्वीप ॥ १ ॥ १७ ॥ व्याघ्र मुख द्वीप ॥ १ ॥ १८ ॥ ( यह चौथा चौक हुवा, लवण समुद्र में छ सो

शब्दार्थ

स० सात र० रत्नप्रभा जा० यावत् अ० अधो स० सातवी ॥ १ ॥ अ० अधो स० सातवी भं० भगवन् पु० पृथ्वी में पं० पांच अ० अनुत्तर म० बहुत बडे जा० यावत् अ० अप्रतिष्ठान न० नरक छ० छठी त० तमा पु० पृथ्वी न० नरक से म० बहुत लंबे म० बहुत चौडे म० बहुत आकाश वाले म० बडे शून्य स्थानक णो० नहीं म० महाप्रवेश णो० नहीं आ० आकीर्ण णो० नहीं आ० आकुल णो० नहीं अ०

सूत्र

रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ अहे सत्तमाएणं भंते ! पुढवीए पंच अणुत्तरा महति महालया जाव अप्पइट्ठाणे तेणं णरगा छट्ठीए तमाए पुढवीए णरएहिंतो महत्तरा चेव, महाविच्छिण्णतरा चेव, महोवासंतरा चेव महापातिरिक्कतरा चेव णो तहा महा पवेसणतरा चेव णो आइण्णतरा चेव णो आउलतरा चेव, णो अणोमाणतरा चेव ४, तेसुणं

भावार्थ

पृथ्वी कितनी कही हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कही हैं, जिन के नाम रत्नप्रभा यावत् सातवी तमतम प्रभा ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! सातवी पृथ्वी में पांच अनुत्तर बडे नरकावास कहे हैं वगैरह अप्रतिष्ठान तक कहना. वे पांचों नरकावासाओं छठी तमा पृथ्वी के नरकावासाओं से लम्बाइ व चौडाइ में बहुत बडे हैं बहुत विस्तारवाले, बहुत आकाश अवकाशवाले और बहुत शून्य स्थानकवाले हैं; छठी नरक में जैसे जीवों का महा प्रवेश है वैसा इस में नहीं है अत्यंत आकीर्ण नहीं है अत्यंत आकुल नहीं है व अत्यंत संकीर्ण नहीं है. उस नरक में रहे हुवे नारकी छठी तमा में रहे हुवे नारकी से वेदनीयादिक आयुष्य की

पदार्थ

जाना जी० जीवाजीव जा० यावत् प० देता हुवा छ० छठ छठ मे अ० अंतर रहित त०तप कर्म से अ० आत्मा को भा० भावता हुवा वि०विचरता है त० तब से०वह व० वरुण ना० नाग का पौत्र अ० एकदा रा० राजा की आज्ञा से ग० ज्ञाति की आज्ञा में ब० बलात्कार से र० रथमुशल संग्राम में आ० आज्ञा कराया हुवा छ० छठ मे अ० अठम अ० बढाकर कु० कौटुम्बिक को स० बोलाकर प० ऐसा व०बोले खि० शीघ्र भो० अहो दे० देवानुप्रिय चा० चारघंटवाला अ०अश्वरथ जु० युक्त उ० तैयार करो ह० अश्व ग०

मूल

अपरिभूए, समणोवासए अभिगय जीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणे तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ तएणं से वरुणे नागनत्तुए अण्णया कयाइं रायाभियोगेणं, गणाभियोगेणं, बलाभियोगेणं, रहमुसले संगामे आणत्तेसमाणे छट्ठभत्तिए अट्ठमभत्तं अणुवड्ढेइ अणुवड्ढेइत्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दावेइत्ता एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव

भावार्थ

जाननेवाला श्रमणोपासक यावत् अतिथि को अशनादि देता हुवा छठछठ का निरंतर तप करके आत्मा को भावता हुआ विचरता था. उस समय में नाग नप्तृक वरुण को राजा की आज्ञासे, गणकी आज्ञामे व बलात्कार से रथमुशल संग्राम में जाने का हुआ. इस तरह आज्ञा होने से छठ भक्त तप का अष्टम भक्त तप किया और अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बोलाकर ऐसा कहा कि अहो देवानुप्रिय ! चार घण्ट वाला

पदार्थ

स० सातवी पु० पृथ्वी के न० नरका वास से णो० नहीं म० बहुत लम्बे म० बहुत चौडे म० [illegible] वाले आ० आकीर्ण ते० उस ण० नरक में ण० नारकी अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी के णे० नारकी से अं० अल्प कर्म वाले अ० अल्पक्रिया वाले णो० नहीं म० महाकर्म वाले म० महाक्रिया वाले म० महर्द्धिक म० महाद्युति वाले णो० नहीं अ० अल्पऋद्धि वाले णो० नहीं अ० अल्पद्युति वाले छ० छठी त० तमा पु० पृथ्वी के ण० नरका वास पं० पांचवी धू० धूम्रप्रभा पु० पृथ्वी के ण० नरका वास से म०

मूल

णो तहा महत्तरा चेव महाविच्छिण्णतरा चेव ४, महप्पवेसणतरा चेव आइण्णतरा चेव ४, तेसुणं णरएसु णेरइया अहे सत्तमाए पुढवीणेरइएहिंतो अप्पकम्मतरा चेव अप्पकिरियतरा चेव; ४ णो तहा महाकम्मतरा चेव महाकिरियतरा चेव ४, महिड्डियतरा चेव, महाजुत्तियतरा चेव, णो तहा अप्पिड्डियतरा चेव णो तहा अप्पजुत्तियतरा चेव॥ छट्ठीएणं तमाए पुढवीए णरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए णेरइएहिंतो महत्तरा

भावार्थ

नरकावासों से लम्बाइ चौडाइ में बहुत बडे नहीं हैं, बहुत विस्तृत नहीं हैं, अवकाशवाले नहीं है व शून्य नहीं हैं परंतु बहुत मनुष्यवाले, आकीर्ण, आकुल व अत्यंत संकीर्ण हैं. उन नरक में नारकी सातवी नरक के नारकी से अल्प कर्मवाले, अल्प क्रियावाले, अल्प आश्रव व अल्प वेदनावाले हैं परंतु महा कर्म, क्रिया, आश्रव व वेदनावाले नहीं हैं. महा ऋद्धिवाले व महा द्युतिवाले हैं. परंतु अल्प ऋद्धिवाले व अल्प द्युति-

शब्दार्थ केवली श्राविका के० केवली उपासक के० केवली उपासीका त० तत्पाक्षिक श्रावक श्राविका त० तत्पाक्षिक उपासक त० तत्पाक्षिक उपासीका के० केवली प० प्ररूपा ध० धर्म ल० प्राप्त होवे स० सूनने को गो० गौतम अ० अश्रुत केवली जा० यावत् त० तत्पाक्षिक उपासीका अ० कितनेक के० केवली प० प्ररूपा ध० धर्म को नो० नहीं ल० प्राप्त करे स० सूनने को से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० अश्रुत जा० यावत् नो० नहीं ल० प्राप्त करे स० सूनने को गो० गौतम ज० जिसको ना० ज्ञाना

सूत्र केवलिसावियाएवा, केवलिउवासगस्सवा केवलिउवासियाएवा, तप्पक्खियस्सवा, तप्पक्खिय सावगस्सवा, तप्पक्खिय सावियाएवा, तप्पक्खिय उवासगस्सवा, तप्पक्खिय उवासियाएवा, केवलि पण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ? गोयमा ! असोच्चाणं केवलिस्सवा जाव तप्पक्खिय उवासियाएवा, अत्थेगइए केवलि पण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगइए केवलि पन्नत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ,

भावार्थ जिनोंने धर्म प्रतिपादक प्राकृत वचन का श्रवण किये विना ही केवल ज्ञानकी प्राप्ति की उन्हे असोच्चा केवली कहते हैं और सुनने से केवल ज्ञानादिक की प्राप्ति हुइ उसे सोच्चाकेवली कहते हैं. इस तरह दोनों केवलीका वर्णन इस उद्देशे में करते हैं. राजगृह नगरके गुणशील नामक उद्यानमें श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कारकर श्रीगौतमस्वामी पूछनेलगे कि अहो भगवन्! असोच्चा केवली, असोच्चा केवली के श्रावक,

शब्दार्थ ना० यावत् र० रत्नप्रभा जा० यावत् णो० नहीं त० वैसे म० महर्द्धिक अ० अल्पद्युति वाले ॥२॥ सरल शब्दार्थ

मूल पुढवीओ परोप्परं भण्णति जाव रयणप्पभात्ति जाव णो तहा महिड्डियतरा चेव अप्पजुत्तिय-तराचेव ॥२॥ रयणप्पभा पुढवी णेरइयाणं भंते ! केरिसयं पुढवीफासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं एवं जाव अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइया एवं आउफासं एवं जाव वणस्सइ फास ॥ ३ ॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभा पुढवी दोच्चं सक्करप्पभं पुढविं पणिहाय सव्व महंतिया बाहल्लेणं सव्व खुड्डिया सव्वंतेसु,

भावार्थ वैसे ही जानना. ऐसे ही सातों नरक का परस्पर जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसा पृथ्वी स्पर्श अनुभवते हुवे विचरते हैं ? अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमनोज्ञ पृथ्वी स्पर्श अनुभवते हुवे रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी विचरते हैं. ऐसे ही सातवी नरक तक जानना. पृथ्वी स्पर्श जैसे अप्काय, तेउकाय, वायुकाय व वनस्पतिकाया का स्पर्श कहना. यह दूसरा द्वार हुवा ॥ ३ ॥ अब तीसरा महत्वद्वार कहते हैं. यह रत्नप्रभा पृथ्वी पृथ्वीपिंड में दूसरी शर्करप्रभा पृथ्वी आश्री सब से बडी है क्यों कि रत्नप्रभा का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है और शर्करप्रभा का एक लाख बत्तीस हजार योजन का पृथ्वी पिंड है, और परिधि में रत्नप्रभा पृथ्वी शर्करप्रभा आश्री सब से छोटी

१ नरकों में तेजस्काय सम्बन्धी सूत्र है परन्तु साक्षात नहीं है.

सूत्र गोयमा ! जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिम हेट्ठिलेसु खुड्डगपयरेसु एत्थणं तिरिय मज्झे अट्ठ पएसिए रुयए पण्णत्ते, जओणं इमाओ दसदिसाओ पवहंति तंजहा पुरच्छिमा, पुरच्छिमदाहिणा,

भावार्थ अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशांतर का असंख्यातवा भाग उल्लंघ कर जावे वहां लोक का मध्य भाग लम्बाइ में कहा है. अहो भगवन् ! अधो लोक का आयाम मध्य कहां कहा है ? अहो गौतम! चौथी पंक प्रभा पृथ्वी के आकाशांतर के साधिक अर्ध भाग अवगाह कर जावे वहां अधो लोक का आयाम मध्य कहा है. क्यों कि रूचक प्रदेश से ९०० योजन नीचे ऊर्ध्व लोक रहा है. वह सात राजु से कुच्छ अधिक है. उस का मध्य चौथी पांचवी पृथ्वी के मध्य का आकाशांतर ऊर्ध्व से अधिक उल्लंघ कर जावे जब आता है. अहो भगवन् ! ऊर्ध्व लोक का आयाम मध्य कहां कहा है ? अहो गौतम ! रूचक प्रदेश से नव सो योजन जावे तब ऊर्ध्व लोक आता है. वह सात राजु से न्यून है, सनत्कुमार व माहेन्द्र देव लोक की उपर रिष्ट विमान प्रस्तर में ऊर्ध्व लोक का आयाम मध्य कहा है. अहो भगवन् ! तीर्च्छा लोक का मध्य भाग कहां कहा है ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के बहुत मध्य भाग में मेरु पर्वत रहा हुवा है. इस की मध्य में रत्नप्रभा पृथ्वी की ऊपर रत्न काण्ड के नीचे सब से छोटे दो प्रतर हैं. इन दोनों की मध्य में तीर्च्छालोक का मध्य कहा है. यहां आठ रुचक प्रदेश कहे हैं. इन से दश दिशाओं

शब्दार्थ सुनने को से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है तं० उस को जा० यावत् नो० नहीं ल० प्राप्त करे स० सुनने को ॥ १ ॥ सरल शब्दार्थ ॥

धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए ॥ से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, तंचेव जाव नोलभेज्ज सवणयाए ॥ १ ॥ असोच्चाणं भंते ! केवलिस्सवा जाव तप्पक्खिय उवासियाएवा केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ? गोयमा ! असोच्चाणं केवलिस्सवा जाव अत्थेगइए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, अत्थेगइए केवलंबोहिं नो बुज्झेज्जा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! जाव नो बुज्झेज्जा ? गोयमा ! जस्सणं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भेण असोच्चा केव-लिस्सवा जाव केवलबोहिं बुज्झेज्जा, जस्सणं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे

भावार्थ क्रिया होवे उनको ऐसा लाभ नहीं मील सकता है. इस कारन से अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि कितनेक को लाभ प्राप्त होता है और कितनेक को लाभ नहीं प्राप्त होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! असोचा केवली यावत् स्वयं बुद्ध की उपासिकाओं के वचन सुनकर कोई शुद्ध सम्यक्त्व अनुभवे ? अहो गौतम ! कितनेक असोचा केवली यावत् स्वयं बुद्ध की उपासिकाओं के वचन सुनकर शुद्ध सम्यक्त्व अनुभवे और कितनेक अनुभवे नहीं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक अनुभवे और कितनेक अनुभवे नहीं ? अहो गौतम ! जिनोंने दर्शनावरणीय का क्षयोपशम किया है उनको शुद्ध सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है

सूत्र

किं पवहा, कइ पएसादिया, कइ पएसविच्छिण्णा, कइ पएसिया किं पज्जवसिया, किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! अग्गीयीणं दिसा रुयगादिया, रुयगप्पवहा, एगपदेसादिया, एगपदेसविच्छिण्णा, अणुत्तरा, लोगं पडुच्च असंखेज्ज पदेसिया, अलोगं पडुच्च अणंत पदेसिया, लोगं पडुच्च सादिया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च सादिया अपज्जवसिया छिण्णमुत्तावलि संठिया पण्णत्ता जमा जहा इंदा णेरई जहा अग्गेयी एवं जहा इंदा तहा दिसा चत्तारि ॥ जहा अग्गेयी तहा चत्तारि-विदिसाओ । विमलाणं भंते !

भावार्थ

आदि है, कहां से चली है, कितने प्रदेश आदि में है, कितने प्रदेश की विस्तारवाली है, कितने प्रदेशात्मक है, कहां उस का अंत है और कैसे संस्थान वाली है ? अहो गौतम अग्नेयी दिशा की रुचक से आदि है, रुचक से चली है, एक प्रदेश की आदि है, एक प्रदेश की विस्तीर्ण है, विदिशा की उत्तरोत्तर वृद्धि नहीं होती है, लोक आश्री असंख्यात प्रदेशात्मक अलोक आश्री अनंत प्रदेशात्मक, लोक आश्री आदि अंतसहित है अलोक आश्री आदि सहित अंतरहित है और छेद हुवे मुक्तावलिकार जैसे है. जैसे एन्द्री दिशा का कहा वैसे ही शेष सब दिशा का जानना. और जैसे अग्नेयी का कहा वैसे ही विदिशा का जानना. अहो भगवन् ! विमला दिशा की कहां आदि है वगैरह प्रश्न की अग्नेयी जैसे पृच्छा करते हैं. अहो गौतम ! विमला दिशा की रुचक से आदि है, रुचक से विमला दिशा नीकली है, चार प्रदेश की

सूत्र

जोग वइ जोग काय जोग, जेयावण्णे तहप्पगारा चलसभावा सव्वेते धम्मत्थिकाए, पवत्तंति, गतिलक्खणेणं धम्मत्थिकाए ॥ अहम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तइ गोयमा ! अहम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाणणिसीयणतुयट्टणमणस्सय एगत्तीभाव करणया जेयावण्णे तहप्पगारा थिरसभावा सव्वेते अहम्मत्थिकाए पवत्तंति, ठाणलक्खणेणं अहम्मत्थिकाए ॥ आगासत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं अजीवाणय किं पवत्तइ गोयमा ! आगासत्थिकाएणं जीवदव्वाणय अजीवदव्वाणय भायणभूए एगेण वि से

भावार्थ

लक्षणवाली है. अहो भगवन् ! अधर्मास्तिकाया से जीवों को क्या प्रवर्तन होता है ? अहो गौतम ! अधर्मास्तिकाया से जीवों को खडे रहना, बैठना, सोना, मन का एकत्व भाव करना और ऐसे अन्य सब स्थिर स्वभाववाले कार्य होते हैं क्यों कि अधर्मास्तिकाया का लक्षण स्थिर का है. अहो भगवन् ! आकाशास्तिकाया से जीवों को क्या प्रवर्तन होता है ? अहो गौतम ! आकाशास्तिकाय जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य को भाजनभूत है. एक आकाशास्तिकाय प्रदेश, एक परमाणु, दो परमाणु, सो परमाणु, क्रोड, सो क्रोड, क्रोड सहस्र परमाणुओं से भराहुवा रहता है. जैसे एक कमरे में दीपक किया उस का प्रकाश उस कमरे में होता है, फीर दूसरा दिया किया उस का प्रकाश भी उस में ही आता है, यों हजारों

सूत्र

छट्ठंछट्ठेणं अनिखित्तेणं तवो कम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आयावण भूमीए, आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए, पगइउवसंतयाए, पगइपयणुकोह-माण माया लोभयाए, मिउमद्दवसंपन्नयाए, अल्लीणमाए, भद्दयाए, विणीययाए अन्नया कयाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं २ अल्लीण-याए, तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोह मग्गण गवेसणं करेमाणस्स विभंगे नामं अन्नाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभंगनाण समुप्पन्नेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं जाणइ पासइ, सेणं तेणं

भावार्थ

केवल ज्ञानावरणीय का क्षय हुवा है वे केवली प्रणित धर्म यावत् केवल ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ॥१०॥ कोई बाल तपस्वी निरंतर छठ छठ के उपवास करता होवे, दिन में सूर्य की सन्मुख दोनों हाथ ऊंचे रखकर सूर्य के ताप की आतापना करता हो, वह स्वभाव से भद्रिक, उपशांत कषायवाला, क्रोध, मान, माया व लोभ को पतला करनेवाला, कोमल स्वभावी, निराभिमानी हो, भोगोपभोग में लीन न होवे, प्रकृति का नम्र होवे, इस तरह बाह्याभ्यांतर तप करते किसी वक्त तप करते शुभ अध्यवसाय परिणामों की निर्मलता से लेश्या की विशुद्धि से विभंग ज्ञान को आवरण करनेवाले कर्मों का क्षयोपशम होवे. फीर

सूत्र

मणजोग-वइजोग-कायजोग,आणा पाणूणंच गहणं पवत्तंति,गहण लक्खणेणं पोग्गलत्थि काए ॥ ८ ॥ एगे भंते ! धम्मत्थिकायप्पएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहण्णपदे तिहिं, उक्कोसपदे छहिं ॥ केवइएहिं अहम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे? गोयमा ! जहण्णपदे चउहिं उक्कोसपदे सत्तहिं ॥ केवइएहिं आगासत्थिकायप्पएसेहिं

भावार्थ

लेना होता है. क्यों की पुद्गलास्तिकाया का ग्रहण लक्षण है. ॥ ८ ॥ अब अस्तिकाय प्रदेश स्पर्शन द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाया के प्रदेश से स्पर्शा हुवा है? अहो गौतम ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश जघन्य तीन धर्मास्तिकाय प्रदेशको स्पर्शा हुवा है. लोक के अंत में निकुटरूप जहां एकधर्मास्तिकायादि प्रदेशन बहुत अल्प है अन्य प्रदेश साथ स्पर्शना होवे. भूमि आसन्न कमरा के खुने का एक प्रदेश को दो बाजु दो और एक नीचेयों तीनप्रदेश होवे वैसेही धर्मास्तिकाया के प्रदेश को जघन्य पना मे धर्मास्तिकाया के तीन प्रदेशो स्पर्श हुवे रहे हैं. और उत्कृष्ट पद से छ प्रदेश स्पर्श हुवे रहे हैं किसी एकप्रदेश के उपर, नीचे व चारों दिशा के चार पाँछ प्रदेश स्पर्शकर रहे हुवे हैं. अहो भगवन्! एक धर्मास्ति काया का प्रदेश अधर्मास्तिकाया के कितने प्रदेश से स्पर्शा हुवा है ? अहो गौतम ! जघन्यपद से चार से स्पर्शे उत्कृष्ट पदसे सातसे स्पर्शे. पहिले जो तीन व छ कहे हैं उसमें जो धर्मास्तिकायाका प्रदेश स्पर्शने को वही अधर्मास्ति काया के स्थान होने से अधिक लियागया है अहो भगवन्! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने आकाशास्तिकाय प्रदेश से

शब्दार्थ अस्तिभाव को अ० अस्ति भाव व० कहते हैं स० सर्व न० नास्तिभाव को न० नास्ति त्ति० ऐसा व० कहते हैं तं० उस को ने० ज्ञान से तु० तुम दे० देवानुप्रिय ए० यह अर्थ स० स्वयं प० विचारो त्ति० ऐसा करके ॥ ७ ॥ पूर्ववत् ॥ ६ ॥ त० तब से० वह का० कालोदायी स० श्रमण भ० भगवन्त म०

भगवं महावीरे एवं जहा नियंठुद्देसए जाव भत्तपाणं पडिदंसेइ२ त्ता, समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नच्चासण्णे जाव पज्जुवासेइ ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणंसमएणं समणे भगवं महावीरे महा कहा पडिवण्णे यावि होत्था, कालोदाईय तं देसं हव्वमागए कालोदाइत्ति समणे भगवं महावीरे कालोदाइं एवं वयासी-से नूणं ते कालोदाई अण्ण या कयाइं एगयओ सहियाणं समुवागयाणं तहेव जाव सेकहमेयं मण्णे एवं से नूणं

भावार्थ ऐसा कहा कि गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी हैं वगैरह जैसा दूसरे शतक में निर्ग्रंथ उद्देशे में वर्णन है वैसा यहां जानना. और श्री गौतम स्वामीने श्रमण भगवन्त महावीर को भक्तपान बताकरके वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना की ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी परिषदा में धर्मोपदेश करते हुवे प्रवर्तते थे. वहां कालोदाई भी आया. उस समय में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी कालोदायी को ऐसा बोले कि अहो कालोदायी ! एकदा तुम सब मीलकर परस्पर ऐसा वार्तालाप करते थे कि श्रमण ज्ञात पुत्रने पंचास्तिकाय अरूपी है यावत् यह किस तरह है

सूत्र

मणजोग-वइजोग कायजोग,आणा पाणूणंच गहणं पवत्तंति,गहण लक्खणेणं पोग्गलत्थि काए ॥ ८ ॥ एगे भंते ! धम्मत्थिकायप्पएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहण्णपदे तिहिं, उक्कोसपदे छहिं ॥ केवइएहिं अहम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे? गोयमा ! जहण्णपदे चउहिं उक्कोसपदे सत्तहिं ॥ केवइएहिं आगासत्थिकायप्पएसेहिं

भावार्थ

लेना होता है. क्यों की पुद्गलास्तिकाया का ग्रहण लक्षण है. ॥ ८ ॥ अब अस्तिकाय प्रदेश स्पर्शन द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाया के प्रदेश से स्पर्शा हुवा है? अहो गौतम ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश जघन्य तीन धर्मास्तिकाय प्रदेशको स्पर्शा हुवा है. लोक के अंत में निकुटरूप भरी एक धर्मास्तिकायादि अनंतर बहुत अतर है अन्य प्रदेश साथ स्पर्शना होवे. भूमि आसन्न कमरा के खुने का एक प्रदेश को दो बाजु दो और एक नीचेयों तीनप्रदेश होवे वैसेही धर्मास्तिकाया के प्रदेश को जघन्य पद मे धर्मास्तिकाया के तीन प्रदेशों स्पर्श हुवे रहे हैं. और उत्कृष्ट पद मे छ प्रदेश स्पर्श हुवे रहे हैं किसी एकप्रदेश के ऊपर, नीचे व चारों दिशा के चार पांच प्रदेश स्पर्शकर रहे हुवे हैं. अहो भगवन्! एक धर्मास्ति काया का प्रदेश अधर्मास्तिकाया के कितने प्रदेशों स्पर्शा हुवा है ? अहो गौतम ! जघन्यपद मे चार से स्पर्शा उत्कृष्ट पद मे सात से स्पर्शे. पहिले जो तीन व छ कहे हैं उनमें जो धर्मास्तिकायाका प्रदेश स्पर्शने का वही अधर्मास्ति काया के स्थान होने से अधिक मिलाया है अहो भगवन्! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने आकाशास्तिकाय प्रदेश मे

सूत्र

सुपलेस्साए ॥ सेणं भंते ! कइसु नाणेसु होज्जा, गोयमा ! तिसु आभिणिबोहिय नाण सुयनाण, ओहिनाणेसु होज्जा. सेण भंते ! किं सजोगी होज्जा, अजोगीहोज्जा ? गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा, जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा, वइजोगी, कायजोगीवा होज्जा ? गोयमा ! मणजोगी होज्जा, वइजोगी होज्जा, कायजोगीवा होज्जा । सेणं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा, अणागारोवउत्ते होज्जा ? गोयमा ! सागरोवउत्तेवा होज्जा, अणागारोवउत्तेवा होज्जा ॥ सेण भंते कयरंमि संघयणे होज्जा ? गोयमा ! वइरोसभ नारायण संघयणे होज्जा ॥ सेणं भंते ! कयरंमि संठाणे होज्जा? गोयमा! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे होज्जा ॥ सेणं

भावार्थ

करते हैं. अहो भगवन् ! विभंग ज्ञानी से अवधि ज्ञानी बनकर चारित्र अंगीकार करनेवाला कितनी लेश्याओं से संयुक्त होता है ? अहो गौतम ! तेजो, पद्म व शुक्ल ऐसी तीन लेश्याओं सहित होवे. अहो भगवन् ! वह कितने ज्ञान में होवे ? अहो गौतम ! वह मति, श्रुत व अवधि ऐसे तीन ज्ञान में होवे. अहो भगवन् ! क्या वह सयोगी होवे या अयोगी होवे ? अहो गौतम ! सयोगी होवे परंतु अयोगी होवे नहीं. अहो भगवन् ! यदि सयोगी होवे तो क्या मन योगी वचन योगी या काय योगी होवे ? अहो गौतम ! मनयोगी, वचन योगी व काय योगी होवे. अहो भगवन् ! क्या वह साकारोपयुक्त होवे या अनाकारोप

सूत्र

भंते ! अहम्मत्थि कायप्पएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहण्णपदे चउहिं उक्कोसपदे सत्तहिं ॥ केवइएहिं अहम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहण्णपदे तिहिं उक्कोसपदे छहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ १० ॥ एगे भंते ! आगासत्थि कायप्पएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा !

भावार्थ

र्मास्तिकाय प्रदेश को कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य चार उत्कृष्ट सात. अहो भगवन् ! कितने अधर्मास्तिकाया के प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य तीन उत्कृष्ट छ शेष सब धर्मास्तिकाया जैसे कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! एक आकाशास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मा-स्तिकाया के प्रदेश से स्पर्शा हुवा है ? अहो गौतम ! आकाशास्तिकाया को धर्मास्तिकाया कदाचित् स्पर्शी हुई है और कदाचित् नहीं स्पर्शी हुई है क्यों की आकाशास्तिकाया के दो भेद कहे हैं लोकाकाश व अलोकाकाश. लोकाकाश में धर्मास्तिकाया है और अलोकाकाश में धर्मास्तिकाया नहीं है इस से कद-चित् स्पर्शी हुई है और कदाचित् स्पर्शी हुई नहीं है. जब धर्मास्तिकाया स्पर्शी हुई है तब जघन्य एक प्रदेश से स्पर्शी है लोकान्त में रहा हुवा आकाश प्रदेश पर धर्मास्तिकाया का प्रदेशावन, कदाचित् दो धर्मास्तिकाया प्रदेश, वक्रगति आकाश प्रदेशको दो धर्मास्तिकाया के प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं और तीन प्रदेश का भी स्पर्श होता है वह अलोकाकाश केवल प्रदेश के आगे का, नीचे का

सूत्र

कायप्पदेसे केवइएहिं धम्मत्थिकाय पुच्छा ? जहण्णपदे चउहिं, उक्कोसपदे सत्तहिं ॥ एवं अधम्मत्थिकायप्पदेसेहिंवि॥ केवइएहिं आगासत्थिकाय पुच्छा? सत्तहिं ॥ केवइएहिं जीवत्थि सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ १२ ॥ एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पदेसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पदेसेहिं ; एवं जहेव जीवत्थिकायस्स ॥ १३ ॥ दो भंते ! पोग्गलत्थि-कायप्पदेसा केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पदेसेहिं पुट्ठा ? गोयमा ! जहण्णपदे छहिं उक्को-

भावार्थ

अनंत प्रदेशों से स्पर्श हुवा है, ऐसे ही पुद्गलास्तिकाया का जानना, और वैसे ही कालका भी कथन कहना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! एक जीवास्तिकाय प्रदेश को कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश स्पर्शकर रहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य चार उत्कृष्ट सात धर्मास्तिकाय प्रदेश, अधर्मास्तिकाय के भी जघन्य चार उत्कृष्ट सात प्रदेश स्पर्शकर रहे हैं, आकाशास्तिकाय के सात प्रदेश रहे हैं और शेष [illegible] सब धर्मास्ति[illegible]स्तिकाय जैसे कहना. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! एक पुद्गलास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश से स्पर्श हुवा है ? अहो गौतम ! जैसे जीवास्तिकाया का कहा वैसे ही यहाँ कहना. ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! दो पुद्गलास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश से स्पर्श हुवे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य छ उत्कृष्ट बारह प्रदेश स्पर्श हुवे हैं. +

+ यहाँपर [illegible] अवगाह कर रहा हुवा है उस एक [illegible] प्रदेश को भी [illegible] से छः स्पर्श, चार [illegible]

सूत्र

भंते ! किं सकसाई होज्जा अकसाई होज्जा ? गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा, जइ सकसाई होज्जा, सेणं भंते ! कइसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! चउसु संजलण कोह माण माया लोभेसु होज्जा ॥ तस्सणं भंते ! केवइया अज्झवसाणा प० ? गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा प० ॥ तेणं भंते ! किं पसत्था अप्पसत्था ? गोयमा ! पसत्था नो अप्पसत्था ॥ सेणं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्डमाणेहिं अणंतेहिं नेरइय भवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ अणंतेहिं तिरिक्ख जोणिय

भावार्थ

वह सकषायी होता है या अकषायी होता है ? अहो गौतम ! सकषायी होता है परंतु अकषायी नहीं होता है. अहो भगवन्! जब सकषायी होता है तब कितनी कषायों में होता है ? अहो गौतम! संज्वलन क्रोध, मान, माया, व लोभ में होवे. अहो भगवन् ! उस को कितने अध्यवसाय कहे हैं. ? अहो गौतम ! उस को असंख्यात अध्यवसाय कहे हैं. अहो भगवन् ! क्या वे प्रशस्त हैं या अप्रशस्त हैं.? अहो गौतम वे प्रशस्त हैं परंतु अप्रशस्त नहीं हैं. अहो भगवन् ! उन प्रशस्त अध्यवसायों से अनागत काल के नारकी के भव से आत्मा को अलग करे, अनंत तिर्यंच के भव से आत्मा को अलग करे, अनंत मनुष्य के भव से अलग करे, अनंत देव भव से आत्मा को अलग करे, यों चारों गति का संधन करे, नरक तिर्यंच मनुष्य व देवता इस नामकी चारों नाम कर्म की मूल व उत्तर प्रकृतियों और इस समान अन्य प्रकृतियों को

मूल

उक्कोसपदे सत्तरसहिं, एवं अहम्मत्थि कायपदेसेहिंवि ॥ केवइएहिं, आगासत्थि सत्तरसहिं ॥ सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ एवं एएणं गमएणं भाणियव्वा जाव दस, णवरं जहण्णपदे दोण्णि पक्खिवियव्वा उक्कोसेणं पंच ॥ चत्तारि पोग्गलत्थि कायपएसे॰ जहण्णपदे दसहिं उक्कोसपदे बावीसाए ॥ पंच पोग्गलत्थिकाय॰ जहण्णपदे बारसहिं उक्कोसपदे सत्तावीसाए ॥ छ पोग्गल॰ जहण्णपदे चउद्दसहिं उक्कोसेणं बत्तीसाए ॥ सत्तपोग्गल॰ जहण्णपदे सोलसहिं उक्कोसपदे सत्ततीसाए ॥ अट्ठपोग्गल॰ जहण्णपदे अट्ठारसहिं उक्कोसपदे बायालीसाए॥ णवपोग्गल॰ जहण्णपदे

भावार्थ

स्पर्शे हुवे हैं. अवगाहनावाले तीन प्रदेश, तीन नीचे के अथवा उपर के प्रदेश और दो दोनों बाजु के यों आठ प्रदेश, उत्कृष्ट पद में सत्तरह सो अवगाहे हुवे तीन, उपर के तीन, नीचे के तीन, तीन पूर्व के, तीन पश्चिम के एक उत्तर व एक दक्षिण के यों सत्तरह हुवे. अधर्मास्तिकाय का भी वैसे ही जानना. आकाशास्तिकाय के सत्तरह प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं शेष सब धर्मास्तिकाया जैसे कहना. इस क्रम से पांच छ सात यावत् दस तक कहना; विशेषता इतनी की जघन्य पद में पूर्वोक्त जघन्य पद से दो अधिक कहना और उत्कृष्ट पद में पांच अधिक कहना. जैसे चार पुद्गलास्तिकाय प्रदेश में जघन्य दस उत्कृष्ट बावीस

शब्दार्थ समर्थ का० कालोदायिन् ए० इन पो० पुद्गलास्तिकाया में रू० रूपीकायामें अ० अजीव काया में न० समर्थ के० कोई आ० बैठने को जा० यावत् तु० निद्रालेने को ॥ ७ ॥ ए० इन पो० पुद्गलास्तिकाया में रू० रूपीकाया में अ० अजीव काया में जी० जीव पा० पाप क० कर्म पा० पापफल वि० विपाक सं० संयुक्त क० करे नो० नहीं ए० यह अर्थ स० समर्थ का० कालोदायी जी० जीवास्तिकाया अ० अरूपी काया में जी० जीव पा० पापकर्म पा० पापफल वि० विपाक सं० संयुक्त क० करे हं० हां क० करे ॥ ८ ॥ ए०

सूत्र ट्टित्तएवा ? नो इणट्ठे समट्ठे । कालोदाई ! एएसिणं पोग्गलत्थिकायंसि रूवीकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तएवा जाव तुयट्टित्तएवा ॥ ७ ॥ एएसिणं भंते ! पोग्गलत्थिकायंसि रूवीकायंसि अजीवकायंसि जीवाणं पावाणं कम्माणं पावफलविवाग संजुत्ता कज्जंति? णो इणट्ठेसमट्ठे । कालोदाइ! एयंसिणं जीवत्थिकायंसि अरूवीकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावफल विवाग संजुत्ता कज्जंति ? हंता कज्जंति ॥ ९ ॥

भावार्थ अहो कालोदायिन ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं अर्थात् अरूपी अजीव काय में बैठने को यावत् निद्रा लेने को कोई समर्थ नहीं हैं. परंतु रूपी अजीव पुद्गलास्तिकाय में क्रियाओं करने को समर्थ हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! इस रूपी अजीव पुद्गलास्तिकाय में क्या जीवों पापकर्म के फल विपाक से संयुक्त होते हैं ? अहो कालोदायिन ! यह अर्थ योग्य नहीं है. परंतु अरूपी जीवास्तिकायमें जीवों पापकर्मके फल विपाकसे संयुक्त

मूल

उक्कोसपदे सत्तरसहिं, एवं- अहम्मत्थि कायपदेसेहिंवि ॥ केवइएहिं, आगासत्थि सत्तरसहिं ॥ सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ एवं एएणं गमएणं भाणियव्वा जाव दस, णवरं जहण्णपदे दोण्णि पक्खिवियव्वा उक्कोसेणं पंच ॥ चत्तारि पोग्गलत्थि कायप्पदेसे॰ जहण्णपदे दसहिं उक्कोसपदे बावीसाए ॥ पंच पोग्गलत्थिकाय॰ जहण्णपदे बारसहिं उक्कोसपदे सत्तावीसाए ॥ छ पोग्गल॰ जहण्णपदे चउदसहिं उक्कोसेणं बत्तीसाए ॥ सत्तपोग्गल॰ जहण्णपदे सोलसहिं उक्कोसपदे सत्ततीसाए ॥ अट्ठपोग्गल॰ जहण्णपदे अट्ठारसहिं उक्कोसपदे बायालीसाए॥ णवपोग्गल॰ जहण्णपदे

भावार्थ

स्पर्श हुवे हैं. अवगाहनावाले तीन प्रदेश, तीन नीचे के अथवा उपर के प्रदेश और दो दोनों बाजु के यों आठ प्रदेश, उत्कृष्ट पद से सत्तरह सो अवगाहे हुवे तीन, उपर के तीन, नीचे के तीन, तीन पूर्व के, तीन पश्चिम के एक उत्तर व एक दक्षिण के यों सत्तरह हुवे. अधर्मास्तिकाय का भी वैसे ही जानना. आकाशास्तिकाय के सत्तरह प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं शेष सब धर्मास्तिकाया जैसे कहना. इस क्रम से पांच छ सात यावत् दश तक कहना; विशेषता इतनी की जघन्य पद में पूर्वोक्त जघन्य पद से दो अधिक कहना और उत्कृष्ट पद में पांच अधिक कहना. जैसे चार पुद्गलास्तिकाय प्रदेश में जघन्य दश उत्कृष्ट बावीस

होज्जा, जइ सकसाई होज्जा, सेणं भंते.! कइसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! चउसु संजलण-कोह-माण-माया-लोभेसु...



सूत्र पविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवर नाण दंसणे समुप्पज्जइ ॥ सेणं भंते ! केवलि पण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा पन्नवेज्जवा, परूवेज्जवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, णणत्थ एगणाएणवा, एगवागरणेणवा ॥ सेणं भंते ! पव्वावेज्जवा, मुंडावेज्जवा,? णो इणट्ठे समट्ठे, उवदेसं पुण करेज्जा ॥ सेणं भंते ! किं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ? हंता सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ॥ सेणं भंते ! किं उड्ढं होज्जा, अहे होज्जा, तिरियं होज्जा ? गोयमा ! उड्ढंवा होज्जा, अहेवा होज्जा, तिरियंवा होज्जा, उड्ढं

भावार्थ नहीं हुआ ऐसा अध्यवसाय विशेष में प्रवेश करे. अनंत विषय वाला, अनुत्तर, निर्व्याघात, निरावरण, संपूर्ण, अखंडित व ( ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय का क्षय होने से ) प्रधान केवल ज्ञान, केवल दर्शन को वह प्राप्त करे. फीर क्या वह केवलि प्ररूपित धर्म को शिष्य को सन्मुख ग्रहण करने केलिये क्या प्रकाशे, प्ररूपे, कहे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अर्थात् प्रकाशे, प्ररूपे व कहे भी नहीं. मात्र एक दृष्टान्त यथाविध आचारवना के एक प्रश्नोत्तर सिवाय कुछ नहीं बोल सकते हैं. अहो भगवन् ! रजोहरणादि द्रव्य लिंग [illegible] देवे. फिर ... नहीं कर के ... ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है.

मूल

अद्धासमए सिय पुट्ठे सिय णो पुट्ठे, जइ पुट्ठे णियमा अणंतेहिं ॥ १९ ॥ अहम्मत्थिकाएणं भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकाय० ? असंखेज्जेहिं, केवइएहिं अहम्म-त्थि० ? णत्थि एक्केणवि, सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ एव एएणं गमएणं सव्वे विसट्ठाणएणं णत्थि एक्केणवि पुट्ठा परट्ठाणेहिं आदिल्लएहिं तिहिं असंखेज्जएहिं भाणि-यव्वं ॥ पच्छिल्लएसु तिसु अणंता भाणियव्वा जाव अद्धा समओत्ति । केवइएहिं अद्धा समएहिं पुट्ठे ? णत्थि एक्केणवि ॥ २० ॥ जत्थणं भंते ! एगे धम्मत्थिकाय-

भावार्थ

से स्पर्शी हुई है क्यों की अनंत जीव के प्रदेश रहे हुए हैं वैसे ही पुद्गलास्तिकाय के भी अनंत प्रदेशों को स्पर्श कर रही है अद्धा समय कदाचित् स्पर्शे कदाचित् स्पर्शे नहीं क्यों की अढाइ द्वीप में ही मात्र काल रहा हुआ है. जब स्पर्शता है तब निश्चय ही अनंत प्रदेश से स्पर्शता है. ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! अधर्मा-स्तिकाय कितने धर्मास्तिकाय के प्रदेश से स्पर्शी हुई है? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेश से अधर्मास्तिकाय से स्पर्शी हुई है. शेष सब धर्मास्तिकाया जैसे जानना. इस क्रम से आकाशास्तिकाय यावत् अद्धा समय तक कहना. अपने स्थान आश्री अपना स्थान को एक भी नहीं स्पर्शे हुवे हैं, पर स्थान आश्री पहिले के तीन असंख्यात और पीछे के तीन के अनंत प्रदेश स्पर्शे हुवे हैं यावत् अद्धा समय, अद्धा समय से एक भी नहीं स्पर्शा हुआ है ॥ २० ॥ अब अवगाहना द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! जहां धर्मास्तिकाया

सूत्र

पविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवर नाण दंसणे समुप्पज्जइ ॥ सेणं भंते ! केवलि पण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा पन्नवेज्जवा, परूवेज्जवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, नणत्थ एगणाएणवा, एगवागरणेणवा ॥ सेणं भंते ! पव्वावेज्जवा, मुंडावेज्जवा,? णो इणट्ठे समट्ठे, उवदेसं पुण करेज्जा ॥ सेणं भंते ! किं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ? हंता सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ॥ सेणं भंते ! किं उड्ढं होज्जा, अहे होज्जा, तिरियं होज्जा ? गोयमा ! उड्ढंवा होज्जा, अहेवा होज्जा, तिरियंवा होज्जा, उड्ढं

भावार्थ

नहीं हुआ ऐसा अध्यवसाय विशेष में प्रवेश करे. अनंत विषय वाला, अनुत्तर, निर्व्याघात, निरावरण, संपूर्ण, अखंडित व (ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय का क्षय होने से) प्रधान केवल ज्ञान, केवल दर्शन को वह प्राप्त करे. फीर क्या वह केवलि प्रज्ञापित धर्म को शिष्य को सन्मुख ग्रहण करने केलिये क्या प्रकाशे, प्ररूपे, कहे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अर्थात् प्रकाशे, प्ररूपे व कहे भी नहीं. मात्र एक दृष्टांत तथाविध आचारना के एक प्रश्नोत्तर सिवाय कुछ नहीं बोल सकते हैं. अहो भगवन्! रजोहरादि द्रव्य लिंग रखकर क्या दीक्षा देवे, शिर लोच आदि कर के मुंडित करे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अर्थात् किसी को दीक्षा देवे नहीं व मुण्डित करे नहीं. मात्र इतना उपदेश करे कि अमुक की पास जाकर दीक्षा ले लो. अहो भगवन् ! क्या वह सीझे, बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ? अहो गौतम ! वे सीझे

पु० पृथ्वी काया उ० उत्पन्न होवे गं० गांगेय नो० नहीं अं० अंतर...



प्रकार के भं० भगवन् प० प्रवेशन प० प्ररूपा गं० गांगेय च० चार प्रकार के तं० वह ज० जैसे ने० नारकी प्रवेशन ति० तिर्यंच योनि प्रवेशन म० मनुष्य प्रवेशन दे० देव प्रवेशन ने० नारकी प्रवेशन भं० भगवन् क० कितने प्रकार का प० प्ररूपा गं० गांगेय स० सात प्रकार का तं० वह ज० जैसे र० रत्नप्रभा पृथ्वी ने० नारकी प्रवेशन जा० यावत् अ० अधो स० सातवी पृथ्वी ने० नारकी प्रवेशन॥३॥सरल शब्दार्थ

सूत्र

पण्णत्ते ? गंगेया ! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, तंजहा णेरइयपवेसणए, तिरिक्ख जोणिय पवेसणए, मणुस्स पवेसणए, देवपवेसणए ॥ णेरइयपवेसणएणं भंते ! कइ-विहे पण्णत्ते ? गंगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते तंजहा रयणप्पभापुढवीणेरइय पवेसणए जाव अहे सत्तमा पुढवी णेरइय पवेसणए॥३॥एगेण भंते ! णेरइए नेरइय पवेसणएणं

भावार्थ

॥ २ ॥ जीव मरकर गति में प्रवेश करते हैं इसलिये गति प्रवेशन रूप कहते हैं. अहो भगवन् ! प्रवेशन ( एक गति में से दूसरी गति में जाना ) के कितने भेद कहे ? अहो गांगेय ! चार प्रकार के प्रवेशन कहे हैं नारकी प्रवेशनक, तिर्यंच प्रवेशनक, मनुष्य प्रवेशनक, और देव प्रवेशनक. अहो भगवन् ! नारकी प्रवेशनक के कितने भेद कहे हैं ? अहो गांगेय ! नारकी प्रवेशनक के सात भेद हैं ? रत्नप्रभा नरक प्रवेशनक, शर्कराप्रभा नरक प्रवेशनक यावत् नीचे सातवी तमतमप्रभानरक प्रवेशनक ॥ ३ ॥ अहो

मूत्र

पओग परिणयाणं पुच्छा ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-पज्जत्तग असुर कुमार देव पंचिदिय पओग परिणया, अपज्जत्तग असुर कुमारदेव पंचिदिय पयोग परिणयाय एवं जाव पज्जत्तग थणिय कुमारदेव पंचिदिय पयोग परिणया, अपज्जत्तग थणिय कुमारदेव पंचिदिय पओग परिणयाय, ॥ एवं एएणं अभिलावेणं दुपएणं, भेएणं पिसायाय जाव गंधव्वदेव पंचिदिय पओग परिणयाय ॥ एवं पज्जत्तापज्जत्तग चंदविमान जोइसियदेव पंचिदिय पओग परिणया जाव पज्जत्ता पज्जत्तग तारा विमानदेव पंचिदिय पयोग परिणयाय ॥ पज्जत्तग सोहम्म कप्पोववण्णगदेव पंचिदिय पओग परिणया, अपज्जत्तग सोहम्म कप्पोववण्णगदेव पंचिदिय पओग परिणया ॥ एवं जाव पज्जत्ता पज्जत्तग अच्चुअकप्पोववण्णगदेव पंचिदिय पओग परिणयावि ॥ पज्जत्तगा पज्जत्तग हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जग कप्पातीयदेव पंचिदिय पओग परिणया जाव पज्जत्ता पज्जत्तग

भावार्थ

संमूर्च्छिम भुजपरिसर्प, गर्भज भुज परिसर्प, संमूर्च्छिम खेचर व गर्भज खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय इन सबके एक एक के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो २ भेद जानना. संमूर्च्छिम मनुष्य व गर्भज मनुष्य के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद जानना. दश भुवनपति, आठ वाणव्यंतर, पांच ज्योतिषी, बारह प्रकार के कल्पोत्पन्न

सूत्र उवरिमउवरिमं गेवेज्जग कप्पातीयदेव पंचिंदिय पओग परिणयावि ॥ एवं चेव पज्जत्ता पज्जत्तग विजय अणुत्तरोववाइय कप्पातीय वेमाणियदेव पंचिंदिय पओग परिणया जाव पज्जत्ता पज्जत्तग सव्वट्ठ सिद्धाणुत्तरोववाइय कप्पातीय वेमाणियदेव पंचिंदिय पओग परिणयाय ॥ ४ ॥ जे अपज्जत्तग सुहुम पुढवि काइय एगिंदियपओग परिणया ते ओरालियतेयाकम्मा सरीरप्पओग परिणया, जे पज्जत्त सुहुम पुढविकाइय एगिंदियप्पओग परिणया. ते ओरालिय तेया कम्मा सरीरप्पओग परिणया, एवं जाव पज्जत्तग चउरिंदियप्पओग परिणया ॥ णवरं जे पज्जत्तग बादर वाउ काइय एगिंदियप्पओग परिणया, ते ओरालिय वेउव्विय तेया कम्मा सरीरप्पओग परिणया सेसं तंचेव । जे अपज्जत्तग रयणप्पभा पुढवि नेरइय पंचिंदिय पयोग परिणया ते

भावार्थ वैमानिक व ग्रैवेयक व अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिक देव में सर्वार्थसिद्ध पर्यंत सब के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो २ भेद जानना ॥ ४ ॥ अब तीसरा दंडक शरीर आश्रित कहते हैं. जो अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय प्रयोग परिणत हैं. वे उदारिक, तेजस व कार्माण शरीर प्रयोग परिणत हैं. और पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय प्रयोग परिणत भी उदारिक, तेजस व कार्माण शरीर प्रयोग परिणत हैं.

मूल

एगे अहे सत्तमाए होज्जा ॥ अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगेसक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहे सत्तमाए होज्जा ॥ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए,

भावार्थ

भाग होते हैं. १ एक रत्न प्रभा में एक शर्कर प्रभा में एक वालु प्रभा में, एक पंक प्रभा में एक धूम्र-प्रभा में २ एक र० एक श० एक वा०एक पं० एक त०में३ एक र०एक श०एक वा० एक पं०एक तमतम प्रभा में ४ एक र० एक श० एक वा० एक धू० एक त० में ५ एक र० एक श०एक वा०एक धू०एक तमतमप्रभा में६एक र०एक श०एक वा०एक त० एक तमतमप्रभा में७एक र०एक श०एक पं०एक धू० एक त०८ एक र०एक श०एक पं०एक धू० एक तमतमप्रभा ९ एक एक र० एक श० एक पं० तमतमप्रभा में

सूत्र

सुहुम पुढवि काइय एगिंदिय पओग परिणया एवं चेव जे अपजत्ता बादर पुढविकाइय एगिंदिय पओग परिणया एवं चेव, एवं पजत्तगावि, एवं चउक्क-भेएणं जाव वणस्सइ काइय एगिंदिय पओग परिणया । जे अपजत्ता बेइंदिय पओग परिणया ते जिब्भिंदिय फासिंदिय पओग परिणया, जे पजत्ता बेइंदिय पओगपरिणया एवं चेव एवं जाव चउरिंदिय पओग परिणया नवरं एक्केकं इंदियं वड्डेयव्वं ॥ जे अपजत्ता रयणप्पभा पुढवि नेरइय पंचिंदिय पओग परिणया ते सोइंदिय चक्खिंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदिय पओग परिणया ॥ एवं पजत्तगावि एवं सव्वे भाणियव्वा ॥ तिरिक्खजोणिय पंचिंदिय पओग परिणया । मणुस्स पंचिंदिय पओग

भावार्थ

वैसे ही अप्काय, तेउकाय वाउकाय व वनस्पतिकाय में जानना. पर्याप्त व अपर्याप्त बेइन्द्रिय रसनेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रिय प्रयोग परिणत है. पर्याप्त व अपर्याप्त तेइन्द्रिय घ्राण, रसना व स्पर्शेन्द्रिय प्रयोग परिणत है. पर्याप्त व अपर्याप्त चतुरेन्द्रिय चक्षु, घ्राण, रसना व स्पर्शेन्द्रिय प्रयोग परिणत है. सातों नरक के नारकी, संमूर्च्छिम व गर्भज जलचर, चतुष्पद स्थलचर, उरपरिसर्प व भुजपरिसर्प स्थलचर, खेचर व मनुष्य के पर्याप्त व अपर्याप्त वैसे ही दश भुवनपति, आठ वाणव्यंतर, पांच ज्योतिषी, वैमानिक में सर्वार्थ सिद्ध तक

सूत्र

एगे अहे सत्तमाए होज्जा ॥ अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगेसक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे सक्करप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहे सत्तमाए होज्जा ॥ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए, एगे धूमप्पभाए, एगे तमाए, एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए, एगे वालुयप्पभाए, एगे पंकप्पभाए, एगे धूमप्पभाए,

भावार्थ

भांगे होते हैं. १ एक रत्न प्रभा में एक शर्कर प्रभा में एक वालु प्रभा में, एक पंक प्रभा में एक धूम्र-प्रभा में २ एक र० एक श० एक वा०एक पं० एक त०में३ एक र०एक श०एक वा० एक पं०एक तमतम प्रभा में ४ एक र० एक श० एक वा० एक धू० एक त० में ५ एक र० एक श०एक वा०एक धू०एक तमतमप्रभा में६एक र०एक श०एक वा०एक त० एक तमतमप्रभा में७एक र०एक श०एक पं०एक धू० एक त०८ एक र०एक श०एक पं०एक धू० एक तमतमप्रभा ९ एक एक र० एकश० एक पं० तमतमप्रभा में

संचारयव्वा जाव अहवा संखेज्जा तमाए संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा २ ३ १॥ अहवा एगे रय-
णप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए,
एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए,
... अहे सत्तमाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए
... रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा ।
...प्पभाए, संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एवं
... एगे रयणप्पभाए संखेज्जा

भंति

सूत्र

सेत्तं परिणया ॥ २३ ॥ तिण्णि भंते ! दव्वा किं पओग परिणया मीसापरिणया, वीससापरिणया ? गोयमा ! पओगपरिणया, मीसापरिणया, वीससा परिणया, अहवा- एगे पओग परिणए, दोमीसा परिणया, अहवेगे पओगपरिणए दोवीससा परिणया, अहवा- दोपओग परिणया एगे मीसापरिणए, अहवा- दोपओग परिणया, एगे वीससापरिणए अहवा- एगे मीसापरिणए दो वीससा परिणया, अहवा- दोमीसापरिणया एगे वीससापरिणए अहवा- एगे पओग परिणए, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥ २४ ॥ जइ पओगपरिणया किं मणप्पओगपरिणया, वयप्पओगपरिणया, कायप्प-

भावार्थ

स्वभाव परिणत एक आश्रय स्वभाव परिणत ऐसे बना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! क्या तीन पुद्गल प्रयोग परिणत, मिश्र परिणत व विस्रसा परिणत हैं ? अहो गौतम ! प्रयोग, मिश्र व विस्रसा तीनों परिणत हैं अथवा एक प्रयोग परिणत दो मिश्र परिणत, एक प्रयोग परिणत दो विस्रसा परिणत, दो प्रयोग परिणत, एक मिश्र परिणत, दो प्रयोग परिणत एक विस्रसा परिणत, एक मिश्र दो विस्रसा परिणत दो मिश्र एक विस्रसा और एक प्रयोग एक मिश्र व एक विस्रसा परिणत हैं ॥ २४ ॥ यदि प्रयोग परिणत हैं तो क्या मन प्रयोग परिणत वचन प्रयोग परिणत व कायप्रयोग परिणत हैं ? अहो गौतम ! इस में एक संयोगी तीन, तीन संयोगी भांगे करना. यदि मन प्रयोग

प्पभाएय अहे सत्तमाएय होज्जा ५ । अहवा रयणप्पभाएय वालुयप्पभाएय, पंकप्प-
भाएय १ । जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए, अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा
रयणप्पभाएय पंकप्पभाएय धूमाएय होज्जा, १॥ एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्ह, तिय
संजोगो भणिओ तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाएय तमाएय अहे सत्तमाएय
॥ अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाएय, वालुयप्पभाएय, पंकप्पभाएय,
वा रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय वालुयप्पभाएय, धूमप्पभाएय होज्जा.
वा रयणप्पभाएय, सक्करप्पभाएय, वालुयप्पभाएय, अहे सत्तमाएय होज्जा ४॥
णप्पभाएय सक्करप्पभाएय, पंकप्पभाएय, धूमप्पभाएय होज्जा एवं रयण-

प्रभा शर्करा प्रभा में उत्पन्न होवे यावत् रत्न प्रभा तमतम प्रभा में उत्पन्न होवे यों द्विसंयोगी
अथवा रत्न प्रभा में शर्करा प्रभा में वालु प्रभा में यावत् रत्न प्रभा में शर्करा प्रभा में तमतम प्रभा में
रत्न प्रभा में वालु प्रभा में पंक प्रभा में यावत् रत्न प्रभा में वालु प्रभा में तमतम प्रभा में अथवा
प्रभा में पंक प्रभा में, धूम्र प्रभा में यों रत्न प्रभा पृथ्वी की साथ सब तीन संयोगी भांगे कहना यावत्
रत्न प्रभा में तम प्रभा में तमतम प्रभा में करना. यों १५ भांगे हुए. अब चतुष्क संयोगी भांगे कहते हैं

सूत्र

पंकप्पभाएय, धूमप्पभाएय, तमाएय होज्जा, अहवा रयणप्पभाएय जाव धूमप्पभाएय अहे सत्तमाएय होज्जा । अहवा रयणप्पभाएय, सक्करप्पभाएय, वालुयप्पभाएय, पंकप्पभाएय, तमाएय, अहे सत्तमाएय होज्जा । अहवा रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय, वालुयप्पभाएय, धूमप्पभाएय, तमाएय अहे सत्तमाएय, होज्जा, अहवा रयणप्पभाएय, सक्करप्पभाएय पंकप्पभाएय धूमप्पभाएय तमाएय अहे सत्तमाएय होज्जा अहवारयणप्पभाएय वालुयप्पभाएय, जाव अहे सत्तमाएय होज्जा ६ । अहवा रयणप्पभाएय, सक्करप्पभाएय, जाव अहे सत्तमाए होज्जा १६४ ॥ १६ ॥ एयरसणं भंते ! रयणप्पभा पुढवि णेरइय पवेसणगस्स, सक्करप्पभा पुढवि नेरइय पवेसणगस्स, जाव अहे सत्तमा पुढवि

भावार्थ

प्रभा, शर्कर प्रभा वालु प्रभा पंक प्रभा धूम्र प्रभा तम प्रभा. अथवा २ रत्न प्रभा शर्कर प्रभा वालु प्रभा पंक प्रभा, धूम्र प्रभा तमतम प्रभा. ३ रत्न प्रभा शर्कर प्रभा वालु प्रभा पंक प्रभा तम प्रभा तमतम प्रभा ४ रत्न प्रभा शर्कर प्रभा वालु प्रभा धूम्र प्रभा तम प्रभा तमतम प्रभा ५ रत्न प्रभा शर्कर प्रभा पंक प्रभा धूम्रप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा ६ रत्नप्रभा वालुप्रभा पंकप्रभा धूम्रप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा यों उत्कृष्ट पद के ६४ भांगे होते हैं॥१६॥अहो भगवन्! इन रत्नप्रभा, शर्करप्रभा वालुप्रभा आदि सातों नरक के प्रवेशन में किसकी

शब्दार्थ

शीविष क० कितनेप्रकारका गो० गौतम च० चारप्रकारका वि० वृश्चिक जा० जाति आशीविष मं० मेंडक जाति आशीविष उ० सर्पजाति आशीविष म० मनुष्य जा० जाति आशीविष ॥ २ ॥ वि० वृश्चिक जा० जाति आशीविषका भं० भगवन् के० कितना वि० विषय प० प्ररूपा गो० गौतम प० प्रभु वि० वृश्चिक जा० जाति आशीविष अ० अर्धभरत प० प्रमाणमात्र बों० शरीर वि० विष वि०

तंजहा–जाइआसीविसाय, कम्म आसीविसाय, ॥ १ ॥ जाइ आसीविसाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा–विच्छुयजाइ आसीविसे, मेंडुक्कजाइ आसीविसे उरगजाइ आसीविसे मणुस्सजाइ आसीविसे, ॥ २ ॥ विच्छुयजाइ आसीविसस्सणं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! पभूणं विच्छुय जाइ आसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं

भावार्थ

मे सहस्रार देवलोक में देवतापने उत्पन्न होवे और वहां अपर्याप्तावस्था में आशीविष होवे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जाति आशीविष के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! जाति आशीविष के चार भेद कहे हैं १ वृश्चिक जाति आशीविष २ मेंडक जाति आशीविष ३ सर्प जाति आशीविष व ४ मनुष्य जाति आशीविष ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! वृश्चिक जाति आशीविष का कितना विषय कहा ? अहो गौतम ! अर्ध

सूत्र

से भंते! तिरिक्ख जोणिए पुच्छा ? गंगेया! एगिंदिएसुवा होज्जा जाव पंचिंदिएसुवा होज्जा ५ । अहवा एगे एगिंदिएसु, एगे बेइंदिएसु होज्जा । एवं जहा णेरइय पवेसणए तहा तिरिक्खजोणिय पवेसणएवि भाणियव्वो जाव असंखेज्जा ॥ १८ ॥ उक्कोसा भंते! तिरिक्खजोणिय पुच्छा ? गंगेया ! सव्वेवि ताव एगिंदिएसु होज्जा । अहवा एगिंदिएसुय बेइंदिएसुय होज्जा । एवं जहा णेरइया संचारिया तहा तिरिक्ख जोणियावि संचारियव्वा, एगिंदिया अमुयंतेसु दुयसंजोगो, तियसंजोगो, चउक्कसंजोगो, पंचसंजोगोय भाणियव्वो जाव

भावार्थ

तिर्यंच योनि प्रवेशनक यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक प्रवेशनक. अहो भगवन् ! एक जीव तिर्यंच योनि में उत्पन्न होता क्या एकेन्द्रिय में उत्पन्न होवे यावत् पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होवे ? अहो गांगेय ! एकेन्द्रिय में यावत् पंचेन्द्रियमें उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! दो जीव तिर्यंच योनि में उत्पन्न होते क्या एकेन्द्रिय में उत्पन्न होवे यावत् पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होवे ? अहो गांगेय ! एकेन्द्रिय में उत्पन्न होवे यावत् पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होवे. अथवा एक एकेन्द्रिय में एक द्वीन्द्रिय में वगैरह सब भांगे नारकी जैसे असंख्यात बोल तक कहना. विशेष में नरक में उत्पन्न होने के सात स्थान हैं और तिर्यंच में उत्पन्न होने के पांच स्थान हैं. नरक में असंख्यात जीव उत्पन्न होते हैं. तिर्यंच में एकेन्द्रियमें अनंत व द्वीन्द्रियादि में असंख्यात जीव उत्पन्न होते हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! उत्कृष्ट जीव तिर्यंच योनि में कैसे उत्पन्न होते हैं ? अहो गांगेय ! सब जीव एके-

शब्दार्थ स० समुद्घात तं० वह ज० जैसे वे० वेदना समुद्घात ए० ऐसे छा० छद्मस्थ समुद्घात णे० जानना ज० जैसे प० पन्नवणा में जा० यावत् आ० आहार स० समुद्घात से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् जा० यावत् विचरते हैं ॥ १३ ॥ १० ॥

सूत्र पण्णत्ता, तंजहा वेदणा समुग्घाए एवं छाउमत्थिय समुग्घाया णेतव्वा, जहा पण्णवणाए जाव आहारग समुग्घायत्ति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ तेरसम सयस्सय दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ १० ॥ सम्मत्त तेरसमं सयं ॥ १३ ॥

भावार्थ छ छद्मस्थ समुद्घात कहे १ वेदना समुद्घात २ कषाय समुद्घात ३ मारणांतिक समुद्घात ४ वैक्रेय समुद्घात ५ आहारक समुद्घात और तेजस समुद्घात. इन में वेदनीय समुद्घात असाता वेदनीय कर्म आश्री वेदनीय कर्म का शातन करे २ कषाय समुद्घात कषाय नामक चारित्र मोहनीय कर्म आश्री कशाय के पुद्गलशातन करे ३ मारणांतिक समुद्घात आयुःकर्म आश्री आयुः के पुद्गल शातन करे ४ वैक्रेय समुद्घात, आहारक समुद्घात और तेजस समुद्घात ये तीनों नाम कर्म आश्री जानना यह नाम कर्म के पुद्गलों का शातन करे. इन का विशेष वर्णन पन्नवणासूत्र के छत्तीसवे उद्देशे जैसे जानना. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यों कह कर विचरने लगे. यह तेरहवा शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ १३ ॥ १० ॥ यह तेरहवा शतक समाप्त हुवा ॥ १३ ॥

[illegible] उस कैसा पाया है?

[illegible] यथा गया [illegible] अनगार

[illegible] मेरे नमस्कार [illegible] कम-

[illegible] दुर्वमंशक्रियाणं

[illegible] नमस्कार हो [illegible]

[illegible] नमस्कार देवलोक की [illegible] और वहां उत्पन्न [illegible] देवलोक की [illegible] उत्पन्न होता है [illegible] उत्पन्न [illegible] अहो भगवन् ! [illegible]

मणुस्स पवेसणएणं पवेसमाणे किं समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु होज्जा ? गंगेया ! समुच्छिम मणुस्सेसुवा होज्जा, गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसुवा होज्जा, दो भंते! मणुस्सा पुच्छा ? गंगेया ! समुच्छिम मणुस्सेसुवा होज्जा गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसुवा होज्जा अहवा एगे समुच्छिम मणुस्सेसु होज्जा, एगे गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु होज्जा । एवं एएणं कमेणं जहा नेरइय पवेसणए तहा मणुस्स पवेसणएवि भाणियव्वे, एवं जाव दस ॥ संखेज्जाइं भंते ! मणुस्स पुच्छा ? गंगेया ! समुच्छिम मणुस्सेसुवा होज्जा गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसुवा होज्जा, अहवा एगे समुच्छिम मणुस्सेसु संखेज्जा गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु होज्जा, अहवा दो समुच्छिम मणुस्सेसु संखेज्जा गब्भवक्कं-

भावार्थ

शन के दो भेद कहे हैं १ संमूर्च्छिम मनुष्य प्रवेशन २ गर्भज मनुष्य प्रवेशन. अहो भगवन् ! एक मनुष्य प्रवेशन में मनुष्य में उत्पन्न होवे तो क्या संमूर्च्छिम में उत्पन्न होवे या गर्भज में उत्पन्न होवे ? अहो गांगेय ! संमूर्च्छिम में उत्पन्न होवे गर्भज में भी उत्पन्न होवे अथवा एक संमूर्च्छिम में एक गर्भज में इसी क्रम से जैसे नारकी का कहा वैसे ही संख्यात तक कहना. अहो भगवन् ! संख्यात मनुष्य प्रवेशन में क्या संमूर्च्छिम में उत्पन्न होते हैं. या गर्भज में उत्पन्न होते हैं ? अहो गांगेय ! संमूर्च्छिम मनुष्य में होवे अथवा गर्भज मनुष्य में होवे हैं अथवा एक संमूर्च्छिम में संख्यात गर्भज में अथवा दो संमूर्च्छिममें संख्यात गर्भजमें यावत्

र्थ

तरुण ब० बलवन्त जु० युगवाला जा० यावत् णि० निपुण सि० शिल्प शास्त्र अ० ग्रास्त्र आ० संकोचकर बा० हस्त प०पसारे प०पसार कर बा०हस्त आ० संकोचकरे वि० पसारी हुई मु०मुष्टि को सा० संकोचकरे सा० संकोचकर मु० मुष्टि को वि० पसारे उ० खुली अ० आंख को णि० बंधकरे णि० बंधकरी हुई अ०

सूत्र

गोयमा ! से जहा णामए केइ पुरिसे तरुणे बलवं जुगवं जाव णिउणसिप्पोवगए, आउंटियं बाहं पसारेज्जा, पसारियं बाहं आउंटेज्जा, विक्खिण्णिवा मुट्ठिं साहरेज्जा,

भावार्थ

गति है कैसा शीघ्रगति का विषय है ? अहो गौतम ! जैसे चौथा आरा का उत्पन्न कोई पुरुष युवान, बलवन्त यावत् शिल्प कलामें निपुण होता है वह संकुचित की हुई भुजाको लम्बी करे लम्बी की हुई भुजाको संकुचित करे, बंध मुष्टि को खुल्ली करे और खुल्ली मुष्टि को बंध करे, बंध चक्षु को खुली करे और खुली चक्षु बंध करे, उन की जैसी शीघ्र गति होती है वैसी नारकी की नहीं होती है परंतु इस से अधिक शीघ्र-गति से नारकी नरक में उत्पन्न होते हैं; क्यों कि नारकी एक समय दो समय अथवा तीन समय में विग्रह गति से उत्पन्न होते हैं * और संकुचन पसारण में असंख्यात समय व्यतीत होते हैं. यह नरक की

* भरत क्षेत्र की पूर्व दिशा का नारकी पश्चिम दिशा में उत्पन्न होता है तब एक समय में [illegible] दिशा में [illegible] होवे, दूसरे समय में [illegible] और तीसरे समय में [illegible] उत्पन्न होवे. क्योंकि [illegible]

[illegible]

सूत्र

होते संवेग ॥ ३ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं अणंतरोववण्णगा परंपरोववण्णगा, अणंतर परंपर अणुववण्णगा? गोयमा ! णेरइयाणं अणंतरोववण्णगावि परंपरोववण्णगावि अनंतर परंपर अणुववण्णगावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव अणंतर परंपर अणुववण्णगावि ? गोयमा ! जेण णेरइया पढमसमओववण्णगा तेणं नेरइया अणंतरोववण्णगा, जेणं णेरइया अपढम समओववण्णगा तेणं णेरइया परंपरोववण्णगा जेणं णेरइया विग्गहगइसमावण्णगा तेणं णेरइया अणंतर परंपर अणुववण्णगा, से तेणट्ठेणं जाव अणुववण्णगावि एवं णिरंतरं जाव वेमाणिया ॥ ४ ॥ अणंतरोववण्णगाणं भंते ! णेरइयाउय पकरेंति, तिरिक्खमणुस्स देवाउयं पकरेंति ?

भावार्थ

विग्रहगति करते चार समय लगते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अनंतर उत्पन्न हैं, परंपरा उत्पन्न हैं, अथवा अनंतर परंपरा दोनों अनुत्पन्न हैं ? अहो गौतम ! नारकी अनंतर उत्पन्न, परंपरा उत्पन्न व अनंतर परंपरा दोनों उत्पन्न नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि नारकी अनंतर उत्पन्न है यावत् अनंतर परंपरा उत्पन्न नहीं है ? अहो गौतम ! जो नारकी प्रथम समय में उत्पन्न होते हैं वे अनंतर उत्पन्न हैं, दूसरे समय में उत्पन्न होते हैं वे परंपरा उत्पन्न हैं और विग्रह गति से [illegible] होते हैं वे अनंतर परंपरा अनुत्पन्न हैं, ऐसे ही वैमानिक तक चौवीस दंडक का जानना ॥ ४ ॥ अब

धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति ॥ एएसिणं जीवाणं जागरियत्तं साहू से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाण जागरियत्तं साहू ॥ १६ ॥ बलियत्तं भंते! साहू दुब्बलियत्तं साहू? जयंती अत्थेगइयाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जाव साहू? जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति एएसिणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू,एएणं जीवा एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्ब-लियत्तस्स वत्तव्वया भाणियव्वा ॥ बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्वं जाव

भावार्थ

आत्मा को अधर्म से संयोजना करते हैं और जो जीव धर्मी, धर्मानुरागवाले, यावत् धर्म से आजीविका करनेवाले होते हैं वे जागते हुवे अच्छे हैं. वे जागते हुवे प्राणियों को अदुःख यावत् अपरितापना करते हैं और स्वतः को, अन्य को व उभय को अनेक धार्मिक संयोगों से जोडनेवाले होते हैं. वे जीवों जागते हुवे धर्म जागरणा जागते हैं; इस से इन जीवों का जागना अच्छा है ॥१६॥ अहो भगवन् क्या बलवान्! अच्छे या दुर्बल अच्छे? अहो जयंती! कितनेक जीवों बलवन्त अच्छे व कितनेक जीवों निर्बल अच्छे. अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है? अहो जयंती! जो जीवों अधर्मी, अधर्मानुरागी यावत् पूर्वोक्त प्रकार से जो अधर्मी जीवों हैं वे दुर्बल अच्छे हैं क्यों कि वे दुर्बल होने से प्राणों को दुःख

जाव उदएणं ॥ २ ॥ असुर कुमाराणं भंते ! कइविहे उम्मादे पण्णत्ते ? एवं जहेव णेरइयाणं णवरं देवेवासे महिड्ढियतराए चेव असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, सेणं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्सवा सेसं तंचेव से तेणट्ठेणं जाव उदएणं ॥ एवं जाव थणिय कुमाराण, पुढविकाइयाणं, जाव मणुस्साणं एएसिं जहा णेरइयाणं ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥ ३ ॥ अत्थिणं भंते ! पज्जण्णे कालवासी वुट्ठिकायं पकरेति ?

भावार्थ

अहो गौतम ! इन कारनों से नारकी दोनों उन्माद को प्राप्त होते हैं. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार को कितने उन्माद कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसे नारकी का कहा वैसे ही असुर कुमार का जानना. इस में महर्द्धिक देव अशुभ पुद्गल डाले इस से अशुभ पुद्गल प्रक्षेप कराया हुवा यक्षावेश से उन्माद और दूसरा मोहनीय कर्म के उदय से होता है. ऐसे ही स्थनित कुमार तक कहना. पृथ्वीकाया यावत् मनुष्य का नारकी जैसे कहना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का असुर कुमार जैसे कहना ॥ ३ ॥ मोहउदय से देव वृष्टि भी करते हैं. अहो भगवन् ! क्या मेघ वर्षा काल में वर्षा करता है अथवा इन्द्र वर्षा काल की तरह वृष्टि करता है ? हां गौतम ! वर्षा काल में वर्षा होती है और इन्द्र भी वर्षा करता है. अहो भगवन् ! जब शक्र देवेन्द्र वृष्टि करने का कामी होता है तब कैसे करता है ?

गोयमा ! पंचविहा प० तं० आभिणिबोहियाणाणलद्धी जाव केवलनाणलद्धी ॥ अन्नाणलद्धीणं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! तिविहा प० तं० मइअण्णाणलद्धी सुयअण्णाणलद्धी, विभंग णाणलद्धी । दंसणलद्धीणं भंते ! कतिविहा प० ? गोयमा ! तिविहा प० तं० सम्मदंसणलद्धी, मिच्छादंसणलद्धी सम्मामिच्छा दंसणलद्धी। चरित्तलद्धीणं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा सामाइय चरित्तलद्धी, छेदोवट्ठावणियलद्धी, परिहारविसुद्धि चरित्तलद्धी, सुहुमसंपराय चरित्तलद्धी, अहक्खायलद्धी । चरित्ताचरित्तलद्धीणं भंते ! कइविहा प० गोयमा !

भावार्थ

भोग लब्धि ९ वीर्य लब्धि व १० इन्द्रिय लब्धि. ज्ञान लब्धि के पांच भेद मतिज्ञान लब्धि यावत् केवल ज्ञान लब्धि. अज्ञान लब्धि के तीन भेद मति अज्ञान लब्धि यावत् विभंग ज्ञान लब्धि. दर्शन लब्धि के तीन भेद समदर्शन लब्धि, मिथ्या दर्शन लब्धि व समामिथ्या दर्शन लब्धि. चारित्र लब्धि के पांच भेद सामायिक चारित्र लब्धि जो सावद्य विरतिरूप. इस के दो भेद १ इत्वर सो अल्प काल रहे. यह भरत इरवत क्षेत्र में प्रथम व अंतिम तीर्थंकरों के समय में आरोपित होता है. २ यावज्जीव का सो शेष बाइस तीर्थंकर के समय में व महाविदेह क्षेत्र में होता है. २ पूर्व संयम का व्यवच्छेद कर जिस की

जाव संजोएत्तारो भवंति,एएणं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं,उवज्झायवेयावच्चेहिं, थेरवेयावच्चेहिं, तवस्सीवेयावच्चेहिं, गिलाणवेयावच्चेहिं, सेह वेयावच्चेहिं, कुलवेयावच्चेहिं, गणवेयावच्चेहिं, संघवेयावच्चेहिं साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति, एएसिणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, से तेणट्ठेणं तंचेव जाव साहू ॥१७॥ सोइंदिय वसट्टेणं भंते ! जीवे किं बंधइ, एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ ॥ एवं चक्खिदियवसट्टेवि, जाव फासिंदियवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ॥ २१ ॥ तएणं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठा सेसं जहा देवाणंदा तहेव पव्वइए जाव सव्व दुक्खप्प-

भावार्थ — और स्वतः को, अन्यको व उभय को धार्मिक कार्य में जोडते हैं और भी उद्यमी जीव आचार्य, उपाध्याय स्थविर, तपस्वी, ग्लानि, नव दीक्षित, कुल, गण, व साधु की वैयावृत्य में आत्मा को जोडनेवाले होते हैं. इस से वे जीवों उद्यमी अच्छे हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय में वश होनेवाला जीव क्या बांधता है ? अहो जयंती! जैसे क्रोधका कहा वैसेही सब कहना, और श्रोत्रेन्द्रिय जैसे शेप सब इन्द्रियों का जानना ॥१९॥ अब जयंती श्रमणोपासिका भगवंत श्री महावीर स्वामी की पासधर्म सुनकर हृष्ट तुष्ट हुई वगैरह सब

देवयं जाव पज्जुवासइ, सेणं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा ॥ तत्थणं जेसे अमायी सम्मद्दिट्ठी उववण्णए देवे, सेणं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासइत्ता वंदइ णमंसइ जाव पज्जुवासइ, सेणं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं णो वीईवएज्जा. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जाव णो वीईवएज्जा ॥ १ ॥ असुर कुमारेणं भंते ! महाकाए महासरीरे एवं चेव ॥ एवं देव दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणिए ॥ २ ॥ अत्थिणं भंते ! णेरइयाणं-सक्कारेइवा, सम्माणेइवा, किइकम्मेइवा, अब्भुट्ठाणेइवा, अंजलिपग्गहेइवा, आसणाभिग्गहेइवा, आसणाणुप्पदाणेइवा इंतस्स

भावार्थ वे भावितात्मा अनगार को देखकर वंदना पूजा, सत्कार, सन्मान करे नहीं, वैसे ही कल्याणकारी, मंगलकारी, देव तुल्य, ज्ञानवन्त माने नहीं और सेवा भक्ति करे नहीं. वे देवता भावितात्मा अनगार की बीच में होकर जा सकते हैं. और जो देव अमायी समदृष्टि होते हैं वे भावितात्मा अनगार को देखकर वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करने से भावितात्मा अनगार की बीच में होकर नहीं जाते हैं. अहो गौतम ! इस कारन से ऐसा कहा गया है कि, कितनेक देव व्यतिक्रमे और कितनेक देव व्यतिक्रमे नहीं॥१॥ अहो गौतम ! महा काया व महाशरीरवाला असुर कुमार देव का वैसे ही जानना. ऐसे ही देव दंडक वैमानिक तक कहना ॥ २ ॥. अहो भगवन् ! नारकी को परस्पर सत्कार, सन्मान देना, कृतिकर्म

सूत्र

पच्चुगच्छणया ठियस्सपज्जुवासणया गच्छंतस्स पडिसंसाहणता ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ ३ ॥ अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं सक्कारेइवा सम्माणेइवा जाव पडिसंसाहणया ? हंता अत्थि, जाव थणियकुमाराणं ॥ ४ ॥ पुढवीकाइयाणं जाव चउरिंदियाणं, एएसिं जहा णेरइयाणं ॥ ५ ॥ अत्थिणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं सक्कारेइवा जाव पडिसंसाहणया ? हंता अत्थि. णो चेवणं आसणाभिग्गहेइवा आसणाणुप्पदा- णेइवा ॥ ६ ॥ मणुस्साणं जाव वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥ ७ ॥ अप्पाड्ढि

भावार्थ

करना, आने पर खडे होना, हस्त जोडना, आसन का आमंत्रण करना, आसन बिछाना, आये हुवे की सन्मुख जाना, बैठेहुवे की सेवा भक्ति करना, और जाते हुवे को पहुंचाने का क्या है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् वैसा नहीं कर सकते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार देव को क्या परस्पर सत्कार सन्मान यावत् जाते हुवे को पहुंचाने का क्या है ? हां गौतम ! वैसा है. ऐसे ही स्थनित कुमार का जानना ॥ ४ ॥ पृथ्वीकायादि पांच स्थावर और द्विइन्द्रिय, तीइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का नारकी जैसे कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! पंचेंद्रिय तिर्यंच को सत्कार सन्मान यावत् जाते को पहुंचाने का क्या है ? हां गौतम ! वैसा है परंतु आसन की निमंत्रणा करने का व आसन बिछाने का तिर्यंच को नहीं होता है ॥ ६ ॥ मनुष्य, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का, असुर कुमार जैसे कहना ॥ ७ ॥

धम्मा ना० नाम र० रत्नप्रभा गो० गोत्र ए० ऐसे ज० जैसे जी० जीवाभिगम में प० प्रथम ने० नारकी उ० उद्देशा सो० वह णि० निर्विशेष भा० कहना जा० यावत् अ० अल्पाबहुत्व ॥ १२ ॥ ३ ॥

सूत्र

एवं जहा जीवाभिगमे पढमो णेरइय उद्देसओ सो णिरवसेसो भाणियव्वो जाव अप्पा-

बहुगंत्ति॥२॥सेवं भंते भंतेत्ति॥दुवालसम सयस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥१२॥३॥

रायगिहे जाव एवं वयासी दो भंते! परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति एगयओ

भावार्थ

नाम व शर्कर प्रभा गोत्र ३ तीसरी का सीला नाम व वालुप्रभा गोत्र ४ चौथी का अंजना नाम व पंकप्रभा गोत्र ५ पांचवी का रिठा नाम व धूम्रप्रभा गोत्र ६ छट्ठीका मघा नाम व तमप्रभा गोत्र और ७ सातवी का माघवती नाम व तमतमा गोत्र वगैरह सब कथन जीवाभिगम सूत्र के प्रथम नरक उद्देशे में जितना कहा वह सब जानना. यावत् सब से थोडे सातवी नरक के नेरिये उस से छठी नरक के नेरिये असंख्यातगुने, उस से पांचवी नरक के नेरिये असंख्यातगुने. यों क्रम से पहिली नरक के नेरिये असंख्यातगुने. अहो भगवन् आप के वचन सत्य है यह बारहवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ ३ ॥

तीसरे उद्देशे में पृथ्वी का कथन किया. वह पुद्गलात्मक होने से आगे पुद्गल का अधिकार कहते हैं. राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषदा वंदने को आइ, धर्मो पदेश सुनकर पीछीगइ. उस समय में श्री गौतम स्वामीने भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार

सूत्र

से तेणट्ठेणं एवं जाव थणियकुमारा॥ एगिंदिया जहा णेरइया॥ बेइंदियाणं भंते! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं जहा असुरकुमारे तहा बेइंदिएवि, णवरं जेणं वीईवएज्जा सेणं तत्थ झियाएज्जा? हंता झियाएज्जा, सेसं तंचेव जाव चउरिंदिया॥ पांचिंदिय तिरिक्ख जोणिएणं भंते! अगणिकाय पुच्छा? गोयमा! अत्थेगइए वीईवएज्जा, अत्थेगइए णो वीईवएज्जा,॥ से केणट्ठेणं भंते? गोयमा! पांचिंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा विग्गहगइ समावण्णगाय अविग्गहगइसमावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णए जहेव णेरइए जाव णो खलु तत्थ सत्थं कमइ॥ अविग्गह

भावार्थ

नहीं जा सकते हैं. और जो जा सकते हैं वे अग्निकाया में जलते नहीं हैं. अहो गौतम! इस कारन से कितनेक असुर कुमार अग्निकाया में जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. ऐसे ही स्तनित कुमार तक कहना. एकेन्द्रिय का नारकी जैसे कहना. बेइन्द्रिय का असुर कुमार जैसे कहना परंतु इन में जो अग्निकाया की बीच में होकर जाते हैं वे उस में जलते हैं. बेइन्द्रिय जैसे तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना. पंचेन्द्रिय तिर्यंच की पृच्छा? अहो गौतम! कितनेक जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. अहो भगवन्! किस कारन से कितनेक जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं?

सूत्र

से तेणट्ठेणं एवं जाव थणियकुमारा॥ एगिंदिया जहा णेरइया ॥ बेइंदियाणं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं जहा असुरकुमारे तहा बेइंदिएवि, णवरं जेणं वीईवएज्जा सेणं तत्थ झियाएज्जा ? हंता झियाएज्जा, सेसं तंचेव जाव चउरिंदिया ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएणं भंते ! अगणिकाय पुच्छा ? गोयमा ! अत्थेगइए वीईवएज्जा, अत्थेगइए णो वीईवएज्जा, ॥ से केणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा विग्गहगइ समावण्णगाय अविग्गहगइसमावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णए जहेव णेरइए जाव णो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥ अविग्गह

भावार्थ

नहीं जा सकते हैं. और जो जा सकते हैं वे अग्निकाया में जलते नहीं हैं. अहो गौतम ! इस कारन से कितनेक असुर कुमार अग्निकाया में जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. ऐसे ही स्तनित कुमार तक कहना. एकेन्द्रिय का नारकी जैसे कहना. बेइन्द्रिय का असुर कुमार जैसे कहना परंतु इन में जो अग्निकाया की बीच में होकर जाते हैं वे उस में जलते हैं. बेइन्द्रिय जैसे तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना. पंचेन्द्रिय तिर्यंच की पृच्छा ? अहो गौतम ! कितनेक जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं ?

सूत्र

से तेणट्ठेणं एवं जाव थणियकुमारा ॥ एगिंदिया जहा णेरइया ॥ बेइंदियाणं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं जहा असुरकुमारे तहा बेइंदिएवि, णवरं जेणं वीईवएज्जा सेणं तत्थ झियाएज्जा ? हंता झियाएज्जा, सेसं तंचेव जाव चउरिंदिया ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएणं भंते ! अगणिकाय पुच्छा ? गोयमा ! अत्थेगइए वीईवएज्जा, अत्थेगइए णो वीईवएज्जा, ॥ से केणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! पचिंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा विग्गहगइ समावण्णगाय अविग्गहगइसमावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णए जहेव णेरइए जाव णो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥ अविग्गह

भावार्थ

नहीं जा सकते हैं. और जो जा सकते हैं वे अग्निकाया में जलते नहीं हैं. अहो गौतम ! इस कारन से कितनेक असुर कुमार अग्निकाया में जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. ऐसे ही स्थनित कुमार तक कहना. एकेन्द्रिय का नारकी जैसे कहना. बेइन्द्रिय का असुर कुमार जैसे कहना परंतु इन में जो अग्निकाया की बीच में होकर जाते हैं वे उस में जलते हैं. बेइन्द्रिय जैसे तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना. पंचेन्द्रिय तिर्यंच की पृच्छा ? अहो गौतम ! कितनेक जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं ?

मूल

नियमा दुनाणी केवलनाणी. जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । एवं सुयनाणलद्धियावि ॥ तस्स अलद्धियावि जहा आभिणिबोहियनाणस्स अलद्धिया ॥ ओहिनाणलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा ! नाणी, नो अन्नाणी. अत्थेगइया तिनाणी अत्थेगइया चउनाणी; जे तिनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी । तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, ओहिनाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । मणपज्जवनाणलद्धियाणं

भावार्थ

वा अज्ञानी है ? अहो गौतम ! आभिनिबोधिक ज्ञानवाले ज्ञानी है परंतु अज्ञानी नहीं है इन में कितनेक जीव पाते मात्र दो ज्ञान कितनेक तीन और कितनेक चार ज्ञानवाले होते हैं इसलिये इन में चार ज्ञान की भजना कही है. केवल ज्ञान की प्राप्ति में अन्य ज्ञानों का व्यापार नहीं होता है इसलिये केवल ज्ञान नहीं ग्रहण किया है. इन के अलब्धिक में केवल ज्ञान की नियमा है केवल ज्ञान सिवाय अन्य ज्ञानों की उपस्थिति में परिणाम विषम ही होता है और तीन अज्ञान की भजना है. जैसे मति ज्ञान का कहा वैसे ही श्रुत ज्ञान के लब्धिक व अलब्धिक में कहना. अवधि ज्ञान की लब्धि में चार ज्ञान की भजना है उस की अलब्धि में अवधि ज्ञान छोडकर शेष चार ज्ञान और तीन अज्ञान की भजना है. मनःपर्यव ज्ञान की

सूत्र

जोइसियवेमाणिए जहा असुरकुमारे ॥ २ ॥ णेरइया दसट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा-अणिट्ठा सद्दा, अणिट्ठा रूवा, अणिट्ठा गंधा, अणिट्ठा रसा, अणिट्ठा फासा अणिट्ठागई, अणिट्ठाठिई, अणिट्ठे लायण्णे, अणिट्ठे जसोकित्ति, अणिट्ठे उट्ठाण कम्मबलवीरिय पुरिसक्कार परक्कमे ॥ ३ ॥ असुरकुमारा दसट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा-इट्ठा सद्दा, इट्ठा रूवा, जाव इट्ठे उट्ठाणकम्मबलवीरिय पुरिसक्कार परिक्कमे, एवं जाव थणियकुमारा ॥४॥ पुढवीकाइया छट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति तंजहा- इट्ठाणिट्ठ फासा, इट्ठाणिट्ठगई, एवं जाव परक्कमे ॥ एवं जाव वणस्सइ काइया ॥

भावार्थ

और कितनेक नहीं जा सकते हैं. तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे मनुष्य का कहना, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का असुरकुमार जैसे कहना ॥ २ ॥ नारकी दश स्थान अनुभवते हुवे विचरते हैं. १ अनिष्ट शब्द, २ अनिष्ट रूप, ३ अनिष्ट गंध, ४ अनिष्ट रस, ५ अनिष्ट स्पर्श, ६ अनिष्ट गति, ७ अनिष्ट स्थिति, ८ अनिष्ट लावण्य, ९ अनिष्ट यशोकीर्ति और १० अनिष्ट उत्थान कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम ॥३॥ असुरकुमार दश स्थान अनुभवते हुवे रहते हैं. इष्ट शब्द इष्ट रूप यावत् इष्ट उत्थान कर्म बल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रम. ऐसे ही स्थनित कुमार तक दश भुवनपतियों का जानना ॥ ४ ॥ पृथ्वीकाय छ स्थान

भवंति. चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति. पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ छहा कज्जमाणे छप्परमाणु पोग्गला भवंति ॥ ५ ॥ सत्त भंते ! परमाणु पोग्गला पुच्छा ? गोयमा सत्तपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव सत्ताविहावि कज्जइ दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ

दुकडे और चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो प्रदेशात्मक स्कंध एक, तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक और एक परमाणु पुद्गल अथवा तीन दो प्रदेशात्मक स्कंध, चार दुकडे करते एक २ परमाणु पुद्गल के तीन और तीन प्रदेशात्मक स्कंध का एक, अथवा एक २ परमाणु पुद्गल के दो टुकडे और द्विप्रदेशात्मक स्कंध के दो टुकडे, पांच भाग में एक २ परमाणु के चार और द्विप्रदेशात्मक स्कंध का एक और छ भाग में भिन्नर छ परमाणु पुद्गल ॥ ६ ॥ सात परमाणु पुद्गल की पृच्छा अहो गौतम ! सात परमाणु पुद्गल मीलकर सात प्रदेशात्मक स्कंध होता है. और उस के टुकडे करते दो यावत् सात टुकडे होते हैं. दो टुकडे करते एक

सूत्र

त्तएत्ता, पल्लंघेत्तएत्ता ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ देवेणं भंते ! महिड्डिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू तिरियं जाव पल्लंघेत्तएत्ता ? हंता पभू ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ चउद्दसम सयस्सय पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥ ५ ॥ • रायगिहे जाव एवं वयासी-णेरइयाणं भंते ! किमाहारा किं परिणामा किं जोणिया, किं ठिईया ? गोयमा ! णेरइयाणं पोग्गलाहारा पोग्गल परिणामा, पोग्गल जोणिया,

भावार्थ

तीच्छीं पर्वत अथवा तीच्छीं भिंति क्या उल्लंघने को समर्थ है ? हां गौतम ! वह उल्लंघने को समर्थ है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह चौदहवा शतक का पांचवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ ५ ॥

पांचवा उद्देशे में अग्नि कथा का कथन किया. छठे उद्देश में आहार का कथन करते हैं. राजगृही नगरी के गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पुछने लगे कि अहो भगवन् ! नरक के जीवों को कौनसा आहार है, आहार किये पीछे क्या परिणमन है, कैसी योनि ( उत्पत्ति स्थान ) है, और कैसी स्थिति है ? अहो गौतम ! नारकी को पुद्गल का आहार होता है पुद्गल का परिणमन होता है, शीत उष्णमय पुद्गल की योनि है, और आयुःकर्म रूप पुद्गल की स्थिति है. किस कारन से पुद्गल स्थिति होती है सो कहते हैं ज्ञानावरणियादि पुद्गल रूप को जाते हैं. नरक पना

सूत्र

णिरवसेसं ॥ ४ ॥ एवं सणंकुमारेवि, णवरं पासाय वडिंसओ छओअण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं तिण्णि जोअणसयाइं विक्खंभेणं मणिपेढिया तहेव अट्ठ जोअणिया, तीसेणं मणिपेढियाए उवरिं एत्थणं महेगं सीहासणं विउव्वइ सपरिवारं भाणियव्वं. तत्थणं सणंकुमार देविंदे देवराया बावत्तरिए सामाणिय साहस्सी-एहिं जाव चउहिं बावत्तरीहिं आयरक्खदेव साहस्सीहिय, बहूहिं सणंकुमार कप्पवा-सीहिं वेमाणिएहिं देवेहिय सद्धिं संपरिवुडे महया जाव विहरइ ॥ एवं जहा सणंकुमारे

भावार्थ

करनेवाली ऐसी दो सेना सहित अनेक प्रकार के नाट्य व गायन करते दीव्य भोग भोगवते हुवे रहते हैं. जैसे चमरेन्द्र का कहा वैसे ही ईशानेन्द्र का जानना ॥ ४ ॥ सनत्कुमार का भी वैसे ही कहना परंतु इस में प्रासाद छ सो योजन के ऊंचे और तीन सो योजन के चौडे कहना. मणि पीठिका आठ योजन की कही. उस मणि पीठिका पर एक बडा सिंहासन की विकुर्वणा करके वहां सनत्कुमार देवेन्द्र ७२ हजार सामानिक २८८००० आत्म रक्षक और बहुत सनत्कुमारवासी देवों सहित परवरा हुवा यावत् रहता है. ऐसे ही जैसे सनत्कुमार का कहा वैसे ही प्राणत तक का कहना परंतु परिवार वगैरह जिन को जितना होवे उतना

मूल

तिण्णि तिपदेसिया खंधा भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ छप्पएसिए खंधे भवति, अहवा-एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ, अहवा-एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति अहवा-एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा एगयओ तिपदेसिए खंधे भवति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपदेसिए

भावार्थ

प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक एक प्रदेशात्मक अथवा तीन तीन प्रदेशात्मक तीन स्कंध चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक छ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदे-

शब्दार्थ महावीर भ० भगवन्त गो० गौतम को आ० आमंत्रणकर ए० ऐसा ब० बोले चि० चिरकाल में मे० संबंधीत है मे० मुझ से गो० गौतम चि० चिरकाल से सं० प्रशंसा करता है मे० मेरी गो० गौतम चि० चिरकाल स प० परिचित है मे० मुझ से गो० गौतम चि० चिरकाल में जु० सेवाकी है मे० मेरी गो० गौतम चि० चिरकाल से अ० अनुसरता है मे० मुझ गो० गौतम चि० चिरकाल में अ० अनुकरण करता है मे० मुझ गो० गौतम अ० अंतर दे० देवलोक में अ० अंतर मा० मनुष्य का भ० भव में किं० क्या प० विशेष म० मरण का० काया का भे० भेद इ० यहां में चु० चवकर दो० दोनों तु० तुल्य

सूत्र आमंतेत्ता, एवं वयासी-चिरसंसिट्ठोसि मे गोयमा ! चिरसंथुतोसि मे गोयमा ! चिरपरिचितोसि मे गोयमा ! चिरजुसिओसि मे गोयमा ! चिराणुगओसिमे गोयमा ! चिराणुवत्तीसिमे गोयमा ! अणंतरं देवलोए अणंतरं माणुस्सए भवे किं परं मरणकायस्स

भावार्थ के गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का उपदेश सुनकर परिषदा पीछी गइ. उस समय में गौतम स्वामी को केवल ज्ञान की प्राप्ति नहीं होने से खेदित हुए जानकर उन को संतुष्ट करने के लिये श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ने गौतम स्वामी को बोलाये और कहा कि अहो गौतम ! तुम्हारा मेरी साथ बहुत काल से संबंध है, तुमने बहुत काल से मेरी प्रशंसा की है, बहुत काल से देखने आदि से मेरी साथ परिचय है, बहुत काल से सेवा करते तुम मेरे विश्वास पात्र बने हुवे हो, बहुत काल से मेरी

 १९४१

अहवा नकारवेइ करंतं नाणुजाणइ कायसा ॥ एगविहं तिविहेणं पडिक्कमगाणे नकरेइ मणसा वयसा कायसा । अहवा नकारवेइ मणसा वयसा कायसा । अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ॥ एगविहं दुविहेणं पडिक्कममाणं नकरेइ मणसा वयसा, । अहवा नकरेइ मणसा कायसा । अहवा नकरेइ वयसा कायसा । अहवा नकारवेइ मणसा वयसा । अहवा नकारवेइ मणसा कायसा। अहवा नकारवेइ वयसा कायसा अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा, अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा, अहवा करंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा, ॥ एगविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ मणसा, अहवा न करेइ वयसा, अहवा ण करेइ कायसा । अहवा न कारवेइ

भावार्थ

नहीं काया से २६ करावे नहीं अनुमोदे नहीं मन से २७ करावे नहीं अनुमोदे नहीं वचन से २८ करावे नहीं अनुमोदे नहीं काया से. एक करन तीन योग से प्रतिक्रमता हुवा २९ करे नहीं मन से वचन से व काया से ३० करावे नहीं मन से वचन से व काया से ३१ अनुमोदे नहीं मन से वचन से, व काया से एक करन दो योग से प्रतिक्रमता हुवा ३२ करे नहीं मन से वचन से ३३ करे नहीं मन से काया से ३४ करे नहीं वचन से काया से ३५ करावे नहीं मन से वचन से ३६ करावे नहीं मन से काया से ३७

भवंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुचइ-जाव पासंति ॥ २ ॥ कइ विहेणं भंते ! तुल्लए पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे तुल्लए पण्णत्ते, तंजहा-दव्वतुल्लए, खेत्ततुल्लए, कालतुल्लए, भवतुल्लए, भाव तुल्लए, संट्ठाण तुल्लए, ॥ ३ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ दव्व तुल्लए ? दव्व तुल्लए गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वओ तुल्ले परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गल वइरित्तस्स दव्वओ णो तुल्ले, दुपदेसिए खंधे दुपदेसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, दुपदेसिए खंधे दुपदेसिय वइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ णो तुल्ले, एवं जाव दसपएसिए । तुल्लसंखेज्ज पएसिए खंधे, संखेज्ज पएसियस्स

भावार्थ

मालुम हुई है इससे वे अपने जैसे अर्थ जानते हैं व देखते हैं. ॥२॥ अहो भगवन् ! तुल्य के कितने भेद कहे हैं. अहो गौतम ! तुल्य के छ भेद कहे हैं. १ द्रव्य तुल्य, २ क्षेत्र तुल्य, ३ काल तुल्य, ४ भव तुल्य ५ भाव तुल्य और ६ संठान तुल्य ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य तुल्य को द्रव्य तुल्य क्यों कहा ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल से परमाणु पुद्गल तुल्य है, और परमाणु पुद्गल से व्यतिरिक्त द्विप्रदेशात्मक स्कंध तुल्य नहीं है. द्विप्रदेशात्मक स्कंध द्विप्रदेशात्मक स्कंध की साथ द्रव्य से तुल्य है और द्विप्रदेशात्मक स्कंध अन्य की साथ तुल्य नहीं है ऐसे ही यावत् दश प्रदेशिक स्कंधका जानना. संख्यात प्रदेशिक स्कंधसे संख्यात प्रदेशिक

सूत्र

दुपदेसिएखंधे एगयओ छप्पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखंध, एगयओ पचपदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसियाखधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपदेसिएखंध, एगयओ तिपदेसिएखंध एगयओ चउप्पदेसिएखंध भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिण्णि तिपदेसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि दुपदेसियाखधा एगयओ चउप्पदेसिएखंध भवइ, अहवा एगयओ दो दुपदेसियाखधा एगयओ दो तिपदेसियाखधा भवंति, । पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ छप्पदेसिएखंध भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला

भावार्थ

चारटुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक सात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक छ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन दो प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा

सूत्र

लवसत्तमादेवा ? हंता अत्थि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ-लवसत्तमा देवा लवसत्तमा देवा? गोयमा! से जहा णामए केइ पुरिसे तरुणे जाव णिपुणसिप्पोवगए सालीणवा, वीहीणवा, गोधूमाणवा, जवाणवा, जवजवाणवा, पिकाणं परियातणं हरियाणं हरितकंडाणं तिक्खेणं णवपज्जवएणं असियएणं पडिसाहरिया, पडिसाहरिया पडिसंखिविया, पडिसंखिविया जाव इणामेवत्तिकट्टु सत्तलए लुएज्जा, जइणं गोयमा ! तेसिं देवाणं एवइयं कालं आउए वहुप्पं तओणं ते देवा तेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतंकरेंति ॥ से तेणट्ठेणं जाव लवसत्तमादेवा लवसत्तमादेवा ॥ ११॥

भावार्थ

है. अहो भगवन् ! लव सप्तम देव किस कारन से कहाये गये हैं ? अहो गौतम ! जैसे तरुण यावत् शिल्पकला में निपुण कोई पुरुष शाली, व्रीहि, गेहु, जव तथा जुआर को परिपक्व व काटने योग्य देखकर अति तीक्ष्ण बनाया हुवा दात्रादि शस्त्र मुष्टि में ग्रहण कर छेदे तो उस काल को एक लव कहते हैं. और ऐसे सात वक्त काटने से सात लव होते हैं. यदि उन देवताओं का साधु की अवस्था में आयुष्य अधिक होवे तो वे भी उसी साधु के भव में आयुष्य पूर्ण कर सिद्ध बुद्ध मुक्त यावत् सब दुःखों का अंत करे. अहो गौतम ! इसलिये उन को लव सप्तम देव कहे हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! अनुत्तरो-

सूत्र

एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला, एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ चत्तारि दुपदेसिया खंधा भवंति, । सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छपरमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा-एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा

भावार्थ

द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार परमाणु पुद्गल और दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल, दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा दो परमाणु पुद्गल चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध. सात टुकडे करते छ परमाणु पुद्गल और चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा पांच परमाणु पुद्गल, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, चार परमाणु पुद्गल तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध. आठ टुकडे करने सात परमाणु पुद्गल और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा

शब्दार्थ इ० इस भं० भगवन् र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी का स० शर्करप्रभा पु० पृथ्वी का के० कितना अ० अबाधा अं० अंतर प० प्ररूपा गो० गौतम अ० असंख्यात जो० योजन स० सहस्र अ० अबाधा अं० अंतर प० प्ररूपा स० शर्कर प्रभा भं० भगवन् पु० पृथ्वी का वा० बालुप्रभा पु० पृथ्वी का के० कितना ए० ऐसे ही ए० ऐसे जा० यावत् त० तमा अ० अधो स० सातवी का अ० अधो स० सातवी का भं० भगवन् पु० पृथ्वी का अ० अलोक का के० कितना अ० अबाधा अं० अंतर प० प्ररूपा गो० गौतम अ० असंख्यात जो० योजन स० सहस्र

सूत्र इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाएय पुढवीए केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवीए वालुयप्पभाएय पुढवीए केवइयं, एवं चेव ॥ एवं जाव तमाए अहे सत्तमाएय ॥ अहे सत्तमाएणं भंते ! पुढवीए अलोगस्सय केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं अबाहाए अंतरे

भावार्थ सातवे उद्देशे में तुल्यता रूप धर्म का कथन किया आठवे में अंतर का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी व शर्कर पृथ्वी का अबाधा से कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा व शर्कर प्रभा का अबाधा से असंख्यात योजन सहस्र का अंतर कहा. शर्करप्रभा व वालु प्रभा का अंतर ऐसे ही असंख्यात योजन सहस्र का जानना. यों तम प्रभा व तमतम प्रभा पर्यंत कहना. अहो भगवन् !

भरूपा अ० अशुद्ध प० भोगनेवाला स० सर्व स० सत्व हं० हननेवाला छे० छेदनेवाला भे० भेदनेवाला लुं० छेदकर वि० विशेष छेदकर उ० उपद्रव कर आ० आहार आ० आहार करे त० तहां इ० यह दु० द्वादश आ० आजीविक उ० उपासक भ० हैं तं० यह ज० जैसे ता० ताल ता० ताल पलम्ब उ० उबिह सं० संविह अ० अविविध उ० उदक ना० नामुदक न० नमुदक अ० अनुपालक सं० संखपालक अ० अयंपुल का०

सूत्र

थूलगस्स मेहुणस्सवि, परिग्गहस्स जाव करेंतं नाणुजाणइ कायसा॥एएखलु एरिसगा समणो वासगा भवंति नो खलु एरिसगा आजीवियो वासगाभवंति ॥ ४ ॥ आजीवियसमय रसणं अयमट्ठे पण्णत्ते अक्खीणपडिभोइणो, सव्वसत्ता से हंता, छेत्ता भेत्ता, लुंपित्ता विलुंपित्ता, उद्दवइत्ता आहार माहारेंति ॥ तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा

भावार्थ

४९ और अनागत काल के प्रत्याख्यान के ४९ सब मीलकर १४७ भांगे होते हैं. स्थूल प्राणातिपात के जैसे १४७ भांगे कहे वैसे ही स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान, स्थूल मैथुन व स्थूल परिग्रह के १४७ भांगे जानना. इस अनुसार जो व्रत पालनेवाले होते हैं वे ही श्रावक कहे जाते हैं. जैसे श्रमणोपासक के लक्षण कहे वैसे ही लक्षणवाले आजीविक पंथ के श्रमणोपासक नहीं होते हैं ॥ ३-४ ॥ गोशालक के सिद्धांत का ऐसा अर्थ कहा है कि जिन में जीवों का आयुष्य क्षय नहीं हुआ है ऐसा अफासुक भोगनेवाले असंयति सब सत्वों को मारकर, छेदकर, भेदकर, अंगोपांगादि छीनकर उपद्रव उपजाकर

शब्दार्थ

मा० माहेन्द्र का भं० भगवन् बं० ब्रह्मदेवलोक का के० कितना ए० ऐसे ही बं० ब्रह्मदेवलोक का भं० भगवन् लं० लंतक क० देवलोक का के० कितना ए० ऐसे ही लं० लंतक का भं० भगवन् म० महाशुक्र का के० कितना ए० ऐसे ही ए० ऐसे म० महाशुक्र कल्प का स० सहस्रार का ए० ऐसे स० सहस्रार का आ० आणत पा० प्राणत का ए० ऐसे आ० आणत पा० प्राणत का आरण अ० अच्युत का आ० आरण अ० अच्युत का गे० ग्रैवेयक विमान का ए० ऐसे गे० ग्रैवेयक विमान का अ० अनुत्तर विमान का अ० अनुत्तर विमान का भं० भगवन् ई० ईषत्प्राग् भार पृथ्वी का के० कितना पु० पृच्छा गो० गौतम

सूत्र

भंते लंतगस्सय कप्पस्स केवइयं ? एवं चेव ॥ लंतगस्सणं भंते ! महासुक्कस्स कप्पस्स केवइयं ? एवं चेव ॥ एवं महासुक्कस्सय कप्पस्स सहस्सारस्सय ॥ एवं सहस्सारस्स आणयपाणय कप्पाणं ॥ एवं आणयपाणयाणं, आरणच्चुयाणं कप्पाणं ॥ आरणच्चुयाणं गेवेज्जगविमाणाणय ॥ एवं गेविज्जगविमाणाणं अणुत्तरविमाणाणय ॥ अणुत्तर विमाणाणं भंते ! ईसिप्पब्भाराए पुढवीए केवइयं पुच्छा ? गोयमा ! दुवालसजोअणे

भावार्थ

सौधर्म ईशान व सनत्कुमार माहेन्द्र का भी वैसे ही जानना. सनत्कुमार माहेन्द्र व ब्रह्मलोक का, ब्रह्मलोक व लंतक, लंतक व महाशुक्र, महाशुक्र व सहस्रार, सहस्रार व आणत प्राणत, आणत प्राणत व आरण अच्युत का जानना. ऐसे ही आरण अच्युत व ग्रैवेयक विमान. ग्रैवेयक विमान व अनुत्तर विमान का

मूल

खंधे, एवं जाव अहवा एगयओ दसपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा दो संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पदेसिएखंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखंधा, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ दसपदे-

भावार्थ

स्कंध, तीन टुकडे करने से दो परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक परमाणु पुद्गल, एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध व एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक परमाणु पुद्गल एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक दश प्रदेशात्मक स्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध.

शब्दार्थ होगा से० वृक्ष त० तहां अ० अर्चनीय व० वंदनीय पू० पूजनीय ... करने योग्य स० सत्य स० सत्यावपात स० सन्निहित पा० प्रातिहार्य ला० लीपनकीया भ० पूजावाला भ० होगा से० वह भं० भगवन् त० वहां से उ० चवकर क० कहां ग० जावेगा क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेगा जा० यावत् अं० अंत करेगा ॥ २ ॥ ए० यह भं० भगवन् सा० शालवृक्ष की ल० लकडी उ० उष्ण से भेदाई जा० यावत् द० दावाग्नि ज्वाला से भेदाई का० काल

सूत्र सालरुक्खत्ताए पच्चायाहिति, सेणं तत्थ अच्चियवंदियपूइयसक्कारियसम्माणिय दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय पाडिहेरे लाउल्लोइयमहिएयावि भविस्सइ ॥ सेणं भंते ! तओहिंतो उव्वट्टित्ता कहिं गमिहिति कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतंकाहिइ ॥ २ ॥ एसणं भंते ! साललट्ठिया उण्हाभिहया जाव दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा जाव कहिं उववज्जिहिति ?

भावार्थ होगा और व दिव्य सत्यसेवा के फलदाता, प्रातिहार्यकर्मकरनेवाला होगा और उस की पीठिका गोमय से लींपकर खडु से पोतकर पूजित होवेगा. अहो भगवन् ! वह वहां से नीकलकर कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा, बुझेगा यावत् सब दुःखों का अंत करेगा ॥ २ ॥ सूर्य के ताप से यावत् दवाग्नि से हणाई हुई उस की लकडी का जीव काल के अवसर में काल कर

शब्दार्थ देव अ० अव्याबाध दे० देव गो० गौतम प० समर्थ ए० एकेक अ० अव्याबाध दे० देव की ए० एकेक पु० पुरुष की अ० आंख पांपण में दि० दिव्य दे० देव ऋद्धि दे० देव द्युति दे० देवानु भाव ब० बत्तीस प्रकार की न० नाटकविधि उ० बताने को णो० नहीं त० उस पु० पुरुष को किं० किंचित् आ० आबाध वा० व्याबाध उ० उत्पन्न करे छ० छेद करे सु० सूक्ष्म उ० देखावे से० वह ते० इसलिये जा० यावत् अ० अव्याबाध ॥ ८ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा पु० पुरुष का

सूत्र पभूणं एगमेगे अव्वाबाहे देवे एगमेगस्स पुरिसस्स एगमेगंसि अच्छिपत्तंसि दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुतिं, दिव्वं देवाणुभावं, दिव्वं बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसेत्तए णो चेवणं तस्स पुरिसस्स किंचि आबाहंवा वाबाहंवा उप्पाएइ छविच्छेदंवा करेइ, एसुहुमं चणं उवदंसेज्जा ॥ से तेणट्ठेणं जाव अव्वाबाहा ॥ ८ ॥ पभूणं

भावार्थ भगवन्! क्या अव्याबाध देव है? हां गौतम! अव्याबाध देव है. लोकांतिक देव में अव्याबाध देव कहे हैं. अहो भगवन्! अव्याबाध देव क्यों कहे? अहो गौतम! एक अव्याबाध देव एक २ पुरुष की भ्रमर पर दीव्य देवर्द्धि, दीव्य देव द्युति दीव्य देवानुभाव, और दीव्य बत्तीस प्रकार के नाटकों बताने को समर्थ है परंतु उस को किंचिन्मात्र भी बाधा, विबाधा, उत्पात व अवयवछेद नहीं करता है. इस प्रकार सूक्ष्म क्रिया करने में कुशल होने से अव्याबाध देव कहाये गये हैं ॥८॥ अहो भगवन्! शक्र देवेन्द्र

सूत्र

पएसिए खंधे भवइ, अहवा दो असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे भवति एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दस पएसिए खंधे एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दो असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो असंखेज्ज पदेसिया खंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्ज पएसिए खंधे

भावार्थ

एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक परमाणु पुद्गल एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. अथवा एक परमाणु पुद्गल दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध यावत् एक दश प्रदेशात्मक स्कंध दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध दो असं-

...जहा णेरइया ॥ बेइंदियाणं भंते! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं जहा असुरकुमारे तहा बेइंदिएवि, णवरं जेणं वीईवएज्जा सेणं तत्थ झियाएज्जा ? हंता झियाएज्जा, सेसं तंचेव जाव चउरिंदिया ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएणं भंते ! अगणिकाय पुच्छा ? गोयमा ! अत्थेगइए वीईवएज्जा, अत्थेगइए णो वीईवएज्जा, ॥ से केणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा विग्गहगइ समावण्णगाय अविग्गहगइसमावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णए जहेव णेरइए जाव णो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥ अविग्गह

नहीं जा सकते हैं. और जो जा सकते हैं वे अग्निकाया में जलते नहीं हैं. अहो गौतम ! इस कारन से कितनेक असुर कुमार अग्निकाया में जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. ऐसे ही स्थनित कुमार तक कहना. एकेन्द्रिय का नारकी जैसे कहना. बेइन्द्रिय का असुर कुमार जैसे कहना परंतु इन में जो अग्निकाया की बीच में होकर जाते हैं वे उस में जलते हैं. बेइन्द्रिय जैसे तेइन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय का जानना. पंचेन्द्रिय तिर्यंच की पृच्छा ? अहो गौतम ! कितनेक जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जा सकते हैं और कितनेक नहीं जा सकते हैं ?

सूत्र

परिणामिए सण्णिवाइए भावे, सण्णिवाइयस्स भावस्स; से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-भाव तुल्लए भाव तुल्लए ॥ ८ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-संठाण तुल्लए संठाण तुल्लए ? गोयमा ! परिमंडल संठाणे परिमंडलस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले, परिमंडलसंठाणे परिमंडलस्स संठाणवइरित्तस्स संठाणस्स संठाणओ णो तुल्ले ॥ एवं वट्टे, तंसे, चउरंसे, आयए ॥ समचउरंससंठाणे समचउरंसस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले, समचउरंसे संठाणे समचउरंसस्स संठाणवइरित्तस्स संठाणओ णो तुल्ले ॥ एवं जाव हुंडे ॥ से तेणट्ठेणं जाव संठाण तुल्लए संठाण तुल्लए ॥९॥

भावार्थ

पंशमिक की साथ तुल्य है, परिणामिक परिणामिक से तुल्य है और सन्निपात सन्निपात भाव से तुल्य है. अहो गौतम ! इस कारन से भाव तुल्य को भाव तुल्य कहा है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! संस्थान तुल्य को संस्थान तुल्य क्यों कहा ? अहो गौतम ! परिमंडल संस्थान परिमंडल संस्थान से तुल्य है इस से अन्य की साथ तुल्य नहीं है ऐसे ही वर्तुल, त्र्यंस, चौरस व लम्बगोल का जानना. समचतुस्र संस्थान समचतुस्र संस्थान से तुल्य है और इस से अन्य की साथ तुल्य नहीं है ऐसे ही हुंडक तक सब संस्थान का जानना. अहो गौतम ! इस कारन से संस्थान तुल्य को संस्थान तुल्य कहा गया है ॥ ९ ॥

मूल

अणंता भाणियव्वा; जस्स नत्थि तस्स दोत्रि णत्थि भाणियव्वा, जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते॥ केवइया आणापाणु पोग्गल परियट्टा अतीता? अणंता। केवइया पुरक्खडा? अणंता ॥२१॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ओरालिय पोग्गल परियट्टे ? ओरालिय पोग्गल परियट्टे गोयमा! जंणं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालिय सरीरपाउग्गाइं दव्वाइं ओरालिय सरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं, निविट्ठाइं, अभिणिविट्ठाइं, अभिसमण्णागयाइं परियागयाइं परिणामियाइं, णिज्जिण्णाइं णिसिरियाइं णिसिट्ठाइं भवंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ ओरालिय पोग्गलपरियट्टे

भावार्थ

पृथ्वी कायापने बहुत नारकीने अतीत काल में अनंत उदारिक पुद्गल परावर्त किये और आगामीक कालमें करेंगे ऐसे ही मनुष्य तक जानना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे कहना. ऐसे ही सातों पुद्गल परावर्त जानना. उन में जिनको जो है उनको अतीत व अनागत काल में अनंत पुद्गल परावर्त कहना. ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक पुद्गल परावर्त किस तरह कहा गया है ? अहो गौतम ! उदारिक शरीर में रहा हुवा जीवने उदारिक शरीर के योग्य द्रव्य उदारिक शरीरपने ग्रहण किये, बांधे, स्पर्शे, किये, रखे, पीलाये, परिणमाये, निर्जराये, व छोडे इस से उदारिक पुद्गल परावर्त कहा गया. ऐसे ही

शब्दार्थ

इ०इस भं०भगवन् र०रत्नप्रभा पु०पृथ्वी का स०शर्करप्रभा पु०पृथ्वीका के०कितना अ०अव्याबाध अं०अंतर प०प्ररूपा गो०गौतम अ०असंख्यात जो०योजन स०सहस्र अ०अबाधा अं०अंतर प०प्ररूपा स० शर्करप्रभा भं० भगवन् पु० पृथ्वी का वा० वालुप्रभा पु०पृथ्वी का के०कितना ए०ऐसे ही ए०ऐसे जा० यावत् त० तमा अ० अधो स० सातवी का अ० अधो स० सातवी का भं० भगवन् पु० पृथ्वी का अ० अलोक का के० कितना अ० अबाधा अं० अंतर प० प्ररूपा गो० गौतम अ० असंख्यात जो० योजन स० सहस्र

सूत्र

इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाएय पुढवीए केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवीए वालुयप्पभाएय पुढवीए केवइयं, एवं चेव ॥ एवं जाव तमाए अहे सत्तमाएय ॥ अहे सत्तमाएण भंते ! पुढवीए अलोगस्सय केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं अबाहाए अंतरे

भावार्थ

सातवे उद्देशे में तुल्यता रूप धर्म का कथन किया आठवे में अंतर का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी व शर्कर पृथ्वी का अबाधा से कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा व शर्करप्रभा का अबाधा से असंख्यात योजन सहस्र का अंतर कहा. शर्करप्रभा व वालु प्रभा का अंतर ऐसे ही असंख्यात योजन सहस्र का जानना. यों यावत् प्रभा व तमतम प्रभा पर्यंत कहना. अहो भगवन् !

जले जो० अग्नि झि० जले ॥ ११ ॥ अ० गृह भं० भगवन् झि० जलता किं० क्या अ० गृह झि० जले कु० भीत्ति झि० जले क० तट्टी झि० जले था० स्थंभ झि० जले व० मोभ झि० जले वं० वंश झि० जले म० निवा झि० जले व० रसी झि० जले छि० किलिंज झि० जले छा० छादन झि० जले जो० अग्नि झि० गो० गौतम नो० नहीं अ० गृह झि० जले नो० नहीं कु० भीत्ति झि० जले जा० यावत् छा० छादन

सूत्र

नो पदीवचंपए झियाइ, जोई झियाइ ॥ ११ ॥ अगारस्सणं भंते ! झियायमाणस्स किं अगारे ज्झियाइ, कुड्डाज्झियाइ, कडणाज्झियाइ, धारणाज्झियाइ, वलहरणेझियाइ, वंसाज्झियाइ, मल्लाज्झियाइ वग्गाज्झियाइ छित्तराज्झियाइ, छाणेज्झियाइ, जोईज्झियाइ ? गोयमा ! नो अगारे ज्झियाइ, नो कुड्डाज्झियाइ जाव नो छाणाज्झियाइ,

भावार्थ

दीपक की शिखा जलती है, बत्ती जलती है, तेल जलता है, दीपक का ढक्कन जलता है, अथवा दीपक की ज्योति जलती है ? अहो गौतम ! दीपक नहीं जलता है यावत् दीपक का ढक्कन भी नहीं जलता है परंतु दीपक की ज्योति ( अग्नि ) जलती है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! अग्नि से जलता हुवा गृह क्या गृह जलता है, छपर जलता है, भित्ति जलती है, तट्टी जलती है, स्थंभ जलता है, उपर की कडीयों जलती हैं, बंशादि आच्छादन जलता है अथवा अग्नि जलती है ऐसा कहना ? अहो गौतम ! गृह नहीं

इ॰इस भं॰भगवन् र॰रत्नप्रभा पु॰पृथ्वी का स॰शर्करप्रभा पु॰पृथ्वीका के॰कितना अ॰अव्याबाध अं॰ अंतर प॰प्ररूपा गो॰गौतम अ॰असंख्यात जो॰योजन स॰सहस्र अ॰अबाधा अं॰अंतर प॰प्ररूपा स॰ शर्कर प्रभा भं॰ भगवन् पु॰ पृथ्वी का वा॰ वालुप्रभा पु॰पृथ्वी का के॰कितना ए॰ऐसे ही ए॰ऐसे जा॰ यावत् त॰ तमा अ॰ अधो स॰ सातवी का अ॰ अधो स॰ सातवी का भं॰ भगवन् पु॰ पृथ्वी का अ॰ अलोक का के॰ कितना अ॰ अबाधा अं॰ अंतर प॰ प्ररूपा गो॰ गौतम अ॰ असंख्यात जो॰ योजन स॰ सहस्र

इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाएय पुढवीए केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं अबाहाए अंतर पण्णत्ते ॥ सक्क-रप्पभाएणं भंते ! पुढवीए वालुयप्पभाएय पुढवीए केवइयं, एवं चेव ॥ एवं जाव तमाए अहे सत्तमाएय ॥ अहे सत्तमाएणं भंते ! पुढवीए अलोगस्सय केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं अबाहाए अंतरे

सातवे उद्देशे में तुल्यता रूप धर्म का कथन किया आठवे में अंतर का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी व शर्कर पृथ्वी का अबाधा से कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा व शर्कर प्रभा का अबाधा से असंख्यात योजन सहस्र का अंतर कहा. शर्करप्रभा व वालु प्रभा का अंतर ऐसे ही असंख्यात योजन सहस्र का जानना. यों तम प्रभा व तमतम प्रभा पर्यंत कहना. अहो भगवन् !

गोयमा! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्ट निव्वत्तणा काले, तेया पोग्गलपरियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालिय पोग्गलपरियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे आणापाणु पोग्गल परियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपोग्गल परियट्टणिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वइपोग्गल परियट्ट णिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वेउव्विय पोग्गल परियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ॥ २४ ॥ एएसिणं भंते ! ओरालिय पोग्गल परियट्टाणं जाव आणापाणु पोग्गल परियट्टाणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा वेउव्विय पोग्गल परियट्टा, वइपोग्गल परियट्टा अणंतगुणा, मणपोग्गल

भावार्थ: पुद्गल परावर्त निवर्तन काल कहा कि कार्माण पुद्गल बहुत सूक्ष्म परमाणु से बनते हैं एक चक्र में बहुत ग्रहण होते हैं सब नारकादि पर्याय में अनेकबार और समय में ग्रहण करते हैं इस से तेजस पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना, इस से उदारिक पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना इस से श्वासोश्वास पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना इस से मन पुद्गल परावर्तन काल अनंत गुना इस से वचन पुद्गल परावर्तन काल अनंत गुना इस से वैक्रेय पुद्गल परावर्त काल अनंत गुना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! इन उदारिक यावत् श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त में कौन किस से अल्प यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा वैक्रेय पुद्गल

शब्दार्थ होगा से० उस्का म० महा अ० अर्चनीय वं० वंदनीय पू० पूजनीय स० सत्कार करने योग्य स० सत्य स० सत्योपपात स० सन्निहित पा० प्रतिहार्य ला० लीपनकीया म० पूजाताता भ० होगा से० वह भं० भगवन् त० वहां से उ० चलकर क० कहां ग० जावेगा क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेगा जा० यावत् अं० अंत करेगा ॥ १ ॥ ए० यह भं० भगवन् सा० शालवृक्ष की ल० लकडी उ० उष्ण से भेदाई जा० यावत् द० दावाग्नि ज्वाला से भेदाई का० काल

सूत्र सालज्झरवाए पच्चायाहिति, सेणं तत्थ अच्चियवंदियपूईयसक्कारियसम्माणिय दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय पाडिहेरे लाउल्लोइयमहिएयावि भविस्सइ ॥ सेणं भंते ! तओहिंतो उव्वट्टित्ता कहिं गमिहिति कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतंकाहिइ ॥ २ ॥ एसणं भंते ! साललट्ठिया उण्हाभिहया जाव दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा जाव कहिं उववज्जिहिति ?

भावार्थ होगा और व दीव्य सत्यसेवा के फलदाता, प्रतिहार्यकर्मकरनेवाला होगा और उस की पीठिका गोमय से लींपकर पांडु से पोतकर पूजित होवेगा. अहो भगवन् ! वह वहां से नीकलकर कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा, बुझेगा यावत् सब दुःखों का अंत करेगा॥२॥सूर्य के ताप से यावत् दवाग्नि से हणाई हुई उस की लकडी का जीव काल के अवसर में काल कर

शब्दार्थ

होगा मे० वह त० तहां अ० अर्चनीय वं० वंदनीय पू० पूजनीय स० सत्कार करने योग्य ... करने योग्य स० सत्य स० सत्योपपात म० सन्निहित पा० प्रतिहार्य ला० लीपनकीया म० पूजावाला भ० होगा से० वह भं० भगवन् त० वहां से उ० चवकर क० कहां ग० जावेगा क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेगा जा० यावत् अ० अंत करेगा ॥ २ ॥ ए० यह भं० भगवन् सा० शाल्मल की ल० लकडी उ० उष्ण से मेदाइ जा० यावत् द० दावाग्नि ज्वाला से मेदाइ का० काल

सूत्र

सालट्ठवल्लचाए पञ्चायाहिति, सेणं तत्थ अच्चियवंदियपूईयसक्कारियसम्माणिय दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय पाडिहेरं लाउल्लोइयमहिएयावि भविस्सइ ॥ सेणं भंते ! तओहिंतो उव्वट्टित्ता कहिं गमिहिति कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतंकाहिइ ॥ २ ॥ एसणं भंते ! सालट्ठिया उण्हाभिहया जाव दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा जाव कहिं उववज्जिहिति ?

भावार्थ

होगा और व दीव्य सत्यसेवा के फलदाता, प्रातिहार्यकर्मकरनेवाला होगा और उस की पीठिका गोमय से लीपकर खडु से पोतकर पूजित होवेगा. अहो भगवन् ! वह वहां से नीकलकर कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा, बुझेगा यावत् सब दुःखों का अंत करेगा॥२॥सूर्य के ताप से यावत् दवाग्नि से हणाई हुई उस की लकडी का जीव काल के अवसर में काल कर

शब्दार्थ कौनसा रस क० कौनसा स्पर्श प० प्ररूपा गो० गौतम पं० पांच वर्ण दु० दोगंध पं० पांचरस च० चार स्पर्श प० प्ररूपा ॥१॥ अ० अथ भं० भगवन् को० क्रोध को० कोप रो० रोप दो० द्वेप अ० अक्षमा सं० संज्वलन क० कलह चं० रौद्रहोना भं० भांडना वि० विवाद करना ए० इन का क० कौनसा वर्ण जा० यावत् क० कौनसा स्पर्श गो० गौतम पं० पांचवर्ण पं० पांचरस दु० दोगंध च० चार स्पर्श प० प्ररूपा सरल शब्दार्थ

सूत्र परिग्गहे, एसणं कइवण्णं, कइगंधे, कइरसे, कइफासे, पण्णत्ते? गोयमा! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते ॥१॥ अह भंते कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अक्खमा, सजलणे, कलहे, चंडिक्के, भंडणे, विवादे, एसण कइवण्णे जाव कइफासे प०? गोयमा! पंचवण्णे, पंचरसे दुगंधे, चउफासे पण्णत्ते ॥२॥ अह भंते! माणे, मदे, दप्पे, थंभे, गव्वे, अणुक्कोसे परपारिवाए; उक्कोसे,

भावार्थ स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछनेलगे कि अहो भगवन् प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन व परिग्रह इन पांच पापस्थान में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पाते हैं? अहो गौतम ये पापस्थान पुद्गल रूप होने से पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व चार स्पर्श यों १६ बोल पाते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन्! क्रोध, कोप, रोप, द्वेप, अक्षमा, संज्वलन, कलह, चांडालपना, भंडन और विवाद इन में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श कहे हैं? अहो गौतम! पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस चार स्पर्श कहे हुवे हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! मान ( अहंकार रखना ) मद (नशे ज्यों छके) दर्प (डरता रहे,) ४ स्थंभ (स्थंभ

शब्दार्थ यावत् का० काल के अवसर में का० काल कर के जा० यावत् क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम इ० यह जं० जंबूद्वीप में भा० भरत क्षेत्र में पा० पाटली पुत्र नगर में पा० पाटलीवृक्ष पने प० उत्पन्न होगा से० वह त० तहां अ० अर्चनीय वं० वंदनीय जा० यावत भ० होगा से० वह भं० भगवन् अ० पीछे स० चवकर से० शेष तं० तैसे जा० यावत् अं० अंत करेगा ॥ ५ ॥ तं० उस काल ते० उस समय में अ० अंबड प० परिव्राजक के स० सात सं० अंते वासी स० शत गि० ग्रीष्म काल में ग० जैसे उ०

सूत्र कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे पाडलिपुत्ते णयरे पाडलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति सेणं तत्थ अच्चियवंदिय जाव भविस्सइ ॥ सेणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता सेसं तंचेव जाव अंतं काहिति ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासीसया गिम्हकाल समयंसि एवं जहा उववा-

भावार्थ जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में पाटलिपुत्र नगर में पाटली वृक्षपने उत्पन्न होगा. वह अर्चित यावत् पूजित होगा और वहां से नीकलकर महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा, बुझेगा यावत् अंत करेगा ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में गंगा नदी के दोनों तरफ रहनेवाले अम्बड सन्यासी के सात सो शिष्य कंपिलपुर नगर से पाटली पुर नगर जाते रस्ते में साथ लिये. पानी खुटने में पानी के दातार के अभाव से गंगा नदी की रेती में सात सो ही अरिहंत सिद्ध आचार्य को नमस्कार

कइकिरिए ? एवं एसो जहा पढमो दंडओ तहा इमोवि अपरिसेसो भाणियव्वो जाव वेमाणिए णवरं मणुस्से जहा जीवे ॥ १३ ॥ जीवाणं भंते ! ओरालिय सरीराओ कइ किरिया ? गोयमा ! सिय तिकिरिया जाव सिय अकिरिया ॥ नेरइयाणं भंते ! ओरालिय सरीराओ कइकिरिया एवं एसोवि जहा पढमो दंडओ तहा भाणियव्वो जाव वेमाणिया णवरं मणुस्सा जहा जीवा ॥ १४ ॥ जीवाणं भंते ! ओरालिय सरीरेहिंतो कइ किरिया? गोयमा! तिकिरियावि, चउ पंचकिरियावि अकिरियावि ॥ नेरइयाणं भंते! ओरा-

भावार्थ

अहो भगवन् ! एक जीव को बहुत उदारिक शरीर से कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! क्वचित् तीन, क्वचित् चार व क्वचित् पांच क्रियाओं लगे और क्वचित् अक्रिय भी होवे. नारकीको तीन, चार व पांच क्रियाओं लगे ऐसे ही मनुष्य वर्जकर सब दंडक का जानना. मनुष्य में समुच्चय जीव जैसे कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! बहुत जीवों को उदारिक शरीर से कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम! क्वचित् तीन, चार व पांच क्रियाओं लगे. और अक्रिय भी होवे. अहो भगवन् ! नारकी को कितनी क्रिया लगे ? अहो गौतम ! जैसे प्रथम दंडक में कहा वैसे ही यहां जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! बहुत जीवों को बहुत उदारिक शरीर से कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! तीन, चार व पांच क्रियाओं लगे व अक्रिय होवे. अहो भगवन् ! उदारिक शरीर से नारकी को कितनी क्रियाओं लगे ?

सूत्र

छेदं पुण करेंति, एसुहुमं चणं पक्खिवेज्जा ॥ ९ ॥ अत्थिणं भंते ! जंभया देवा ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जंभया देवा जंभया देवा ? गोयमा ! जंभगाणं देवा णिचं पमुदित पक्कीलिया कंदप्परतिमोहण सीला, जेण ते देवे कुद्धे पासेज्जा, सेणं महंतं अयसं पाउणेज्जा, जेणं ते देवे तुट्ठे पासेज्जा सेणं महंतं जसं पाउणेज्जा, से तेणट्ठेणं गोयमा जंभगा देवा ॥ कइविहाणं भंते ! जंभगा देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा-अण्णजंभगा, पाणजंभगा,

भावार्थ

सूक्ष्म क्रिया करने में बहुत कुशल होता है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! क्या जृंभक देव हैं ? हां गौतम ! हैं. अहो भगवन ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जृंभक देव हैं ? अहो गौतम ! जृंभक देव नित्य प्रमुदित, हर्षवंत, क्रीडा सहित, केली सहित, व मोहन स्वभाववाले हैं. जिस को वे क्रुद्ध होकर देखे उस को बहुत अनर्थ करे. और जिस को तुष्ट होकर देखे उस को यश प्राप्त करावे. अहो गौतम ! इस कारन से जृंभक देव कहाये गये हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! जृंभक देव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! जृम्भक देव के दश भेद कहे हैं. अन्न जृंभक, पान जृंभक, वस्त्र जृंभक, लयन जृंभक, शयन जृं-

शब्दार्थ कौनसा रस क० कौनसा स्पर्श प० मरूपा गो० गौतम पं० पांच वर्ण दु० दोगंध पं० पांचरस च० चार स्पर्श प० मरूपा ॥१॥ अ० अथ भं० भगवन् को० क्रोध को० कोप रो० रोप दो० द्वेप अ० अक्षमा सं० संज्वलन क० कलह चं० रौद्रहोना भं० भांडना वि० विवाद करना ए० इन का क० कौनसा वर्ण जा० यावत् क० कौनसा स्पर्श गो० गौतम पं० पांचवर्ण पं० पांचरस दु० दोगंध च० चार स्पर्श प० मरूपा सरल शब्दार्थ

सूत्र परिग्गहे, एसणं कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे, पण्णत्ते? गोयमा! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते ॥१॥ अह भंते कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अक्खमा, संजलणे, कलहे, चांडिक्के, भंडणे, विवादे, एसणं कइवण्णे जाव कइफासे प०? गोयमा! पंचवण्णे, पंचरसे दुगंधे, चउफासे पण्णत्ते ॥२॥ अह भंते! माणे, मदे, दप्पे, थंभे, गव्वे, अणुक्कोसे परपरिवाए, उक्कोसे,

भावार्थ स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछनेलगे कि अहो भगवन् प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन व परिग्रह इन पांच पापस्थान में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पाते हैं? अहो गौतम ये पापस्थान पुद्गल रूप होने से पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व चार स्पर्श यों १६ बोल पाते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन्! क्रोध, कोप, रोप, द्वेप, अक्षमा, संज्वलन, कलह, चांडालपना, भंडन और विवाद इन में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श कहे हैं? अहो गौतम! पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस चार स्पर्श कहे हुवे हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! मान (अहंकार रखना) मद (नशो ज्यों छके) दर्प (डरता रहे,) ४ स्थंभ (स्थंभ

जाव पासइ ॥ १ ॥ अत्थिणं भंते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति ४ ? हंता अत्थि ॥ कयरे भंते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति जाव पभासंति ४ ? गोयमा ! जाइं इमाओ चंदिम सूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेस्साओ बहिया अभिनिस्सडओ पभासेंति एएणं गोयमा ! ते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला

भावार्थ

इस का कथन नववे उद्देशे में कहते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार छद्मस्थपना से अपने कर्म संबंधी कृष्णादि लेश्या को सूक्ष्म भाव से ज्ञान से जाने नहीं व दर्शन से देखे नहीं और उसे ही पुनः जीव के शरीर कर्म लेश्या सहित क्या जाने देखे ? हां गौतम ! भावितात्मा साधु जाने देखे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! वर्णादि सहित स्वरूपी कर्म लेश्या क्या प्रकाशती है ? हां गौतम ! प्रकाश करती है. अहो भगवन् ! कितने स्वरूपी उदारिक शरीरी जीव के कर्म लेश्यावाले पुद्गल प्रकाशते हैं ? अहो गौतम ! चंद्र सूर्य के विमान से जो लेश्या[1] समूह बाहिर नीकला वह प्रकाश करे. अहो गौतम ! इस से

१ यद्यपि इन में कर्म लेश्या नहीं है परन्तु चंद्र सूर्य के विमान में पृथ्वीकाय रूप सचेतनपना रहा हुवा है उस में से नीकलने के कारन से कर्म लेश्या ग्रहण की है.

जाव पासइ ॥ १ ॥ अत्थिणं भंते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति ४ ? हंता अत्थि ॥ कयरे भंते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति जाव पभासंति ४ ? गोयमा ! जाइं इमाओ चंदिम सूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेस्साओ बहिया अभिनिस्सडओ पभासंति एएणं गोयमा ! ते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला

भावार्थ इस का कथन नरवे उद्देशे में कहते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार छद्मस्थपना से अपने कर्म संबंधी कृष्णादि लेश्या को सूक्ष्म भाव में ज्ञान से जाने नहीं व दर्शन से देखे नहीं और उसे ही पुनः जीव के शरीर कर्म लेश्या सहित क्या जाने देखे ? हां गौतम ! भावितात्मा साधु जाने देखे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! वर्णादि सहित स्वरूपी कर्म लेश्या क्या प्रकाशती है ? हां गौतम ! प्रकाश करती है. अहो भगवन् ! कितने स्वरूपी उदारिक शरीरी जीव के कर्म लेश्यावाले पुद्गल प्रकाशते हैं ? अहो गौतम ! चंद्र सूर्य के विमान से जो लेश्या समुह बाहिर नीकला वह प्रकाश करे. अहो गौतम ! इस से

१ यद्यपि इन में कर्म लेश्या नहीं है परन्तु चंद्र सूर्य के विमान में पृथ्वीकाय रूप सचेतनपना रहा हुवा है उस में से नीकलने का कारन से कर्म लेश्या ग्रहण की है.

सूत्र

अह भंते! लोभे, इच्छा, गुेधा, कंखा, गेही, तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, आसासणया, पत्थासणया, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मरणासा, नंदिरागे, एसणं कइवण्णे ४ पण्णत्ते? गोयमा! जहेव कोहे ॥ ५ ॥ अह भंते! पेज्जे दोसे, कलहे जाव मिच्छादंसणसल्ले एसणं कइवण्णे ४ प०? जहेव कोहे तहेव जाव चउफासे ॥६॥ अह भंते! पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसण सल्लविवेगे एसणं कइवण्णे जाव कइफासे पण्णत्ते? गोयमा! अवण्णे, अगंधे, अरसे अफासे, पण्णत्ते ॥ ७ ॥ अह भंते! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मिया, परिणामिया,

भावार्थ

कांक्षा, गृद्धि, तृष्णा, भेद्य, अभेद्य, आशामनता (अन्य के अर्थ की आशा) प्रार्थना, लाल्पनता, कामाशा भोगाशा, जीविताशा, मरणाशा, नंदीराग समृद्धि होने से हर्ष इन में अहो भगवन्! कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श कहे हुवे हैं? अहो गौतम! क्रोध जैसे १६ बोल इस में कहे हैं. ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! राग द्वेष कलह यावत् मिथ्या दर्शन शल्य में कितने वर्ण गंध रस स्पर्श कहे हैं? अहो गौतम! क्रोध जैसे १६ बोल कहे हुवे हैं. ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! प्राणातिपात विरमण यावत् परिग्रह विरमण, क्रोध का त्याग यावत् मिथ्या दर्शन शल्यका त्याग में कितने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श कहे हुवे हैं? अहो गौतम! वर्ण, गंध,

सूत्र

तेयलेस्सं वीइवयइ, एवं एएणं अभिलावेणं तिमासपरियाए समणे णिग्गंथे असुर कुमाराणं देवाणं तेयलेस्सं वीइवयइ, चउमास परियाए समणे णिग्गंथे गहगण णक्खत्ततारारूवाणं जोइसियाणं देवाणं तेयलेस्सं वीइवयइ, पंचमास परियाए समणे णिग्गंथे चंदिम-सूरियाणं जोइसियाणं जोइसियराईणं तेयलेस्सं वीइवयइ; छम्मास परियाए समणे णिग्गंथे सोहम्मीसाणाणं देवाणं, सत्तमास परियाए सणंकुमार माहिंदाणं देवाणं, अट्ठमास परियाए समणे णिग्गंथे बंभलोगलंतगाणं देवाणं, तेयलेस्सं वीइवयइ, णवमास परियाए समणे णिग्गंथे महासुक्कसहस्साराणं देवाणं

भावार्थ

भवनपति देवों के सुख से अधिक सुख के भोक्ता होते हैं, तीन मास की पर्याय वाले असुरेन्द्र की तेजो लेश्या को अतिक्रमते हैं, चार मास की पर्याय वाले ग्रह नक्षत्र ताराओं की तेजो लेश्या को अतिक्रमते हैं पांच मास की पर्यायवाले ज्योतिषी के राजा चंद्र सूर्य की तेजो लेश्या को अतिक्रमते हैं, छ मास की पर्याय वाले सौधर्म ईशान देवलोक की तेजो लेश्या को अतिक्रमते, सात मास की पर्याय वाले सनत्कुमार माहेन्द्र, आठ मास की पर्यायवाले श्रमण निर्ग्रंथ ब्रह्मदेवलोक व लंतक, नव मास की पर्यायवाले श्रमण निर्ग्रंथ महाशुक्र व सहस्रार, दश मास की पर्यायवाले श्रमण निर्ग्रंथ आणत, प्राणत, आरण व अच्युत, अग्यारह मास की पर्यायवाले श्रमण निर्ग्रंथ ग्रैवेयक, बारह मास की पर्यायवाले श्रमण निर्ग्रंथ अनुत्तरो-

पासइ ॥ १ ॥ केवलीणं भंते ! आधोधियं जाणइ पासइ ? एवं चेव एवं परमा होहियं एवं केवलि एवं सिद्धं जाव जहाणं भंते ! केवली सिद्धं जाणइ पासइ, तहाणं सिद्धेवि सिद्धं जाणइ पासइ ? हंता ! जाणइ पासइ ॥ २ ॥ केवली भंते ! भासेज्जवा वागरेज्जवा ? हंता भासेज्जवा वागरेज्जवा । जहाणं भंते ! केवली भासेज्जवा वागरेज्जवा तहाणं सिद्धेवि भासेज्जवा वागरेज्जवा ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहाणं केवली भासेज्जवा वागरेज्जवा णो तहाणं सिद्धे भासेज्जवा वागरेज्जवा ? गोयमा ! केवलीणं सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार

भावार्थ

जैसे जाने देखे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! केवली मर्यादित क्षेत्र जाननेवाले अवधिज्ञानी को क्या जाने देखे? हां गौतम ! जैसे छद्मस्थ का कहा वैसे ही जानना. ऐसे ही परम अवधि ज्ञानी व केवल ज्ञानी व सिद्ध का जानना. जैसे केवली मर्यादित अवधि, परम अवधि केवल ज्ञानी व सिद्ध को जानते देखते हैं वैसे ही सिद्ध जानते व देखते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या केवली बोलते हैं ? हां गौतम ! केवली बोलते हैं. अहो भगवन् ! जैसे केवली बोलते हैं वैसे ही क्या सिद्ध बोलते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् सिद्ध नहीं बोलते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से जैसे केवली बोलते हैं वैसे सिद्ध

शब्दार्थ धारण करते चं० चंद्र लेश्या को प० पश्चिम में आ० आवरित कर पु० पूर्व में वी० जाते त० तब प० पश्चिम में चं० चंद्र उ० देखाते पु० पूर्व में रा० राहु ए० ऐसे ज० जैसे प० पश्चिम में दो० दो आ० आलापक ए० ऐसे दा० दक्षिण उ० उत्तर में दो० दो आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे उ० ईशान कोन में दा० नैऋत्य में दो० दो आ० आलापक ए० ऐसे दा० अग्नि उ० वायव्य में दो० दो आ० आलापक भा० कहना जा० यावत् न० नव उ० वायव्य में चं० चंद्र उ० दिखाते दा० अग्नि में राहु ज० जब

मूल राहू आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा, विउव्वमाणेवा, परियारेमाणेवा, चंदलेस्सं पच्चच्छिमेणं आवरेत्ताणं पुरच्छिमेणं वीईवयइ, तयाणं पच्चच्छिमेणं चंदे उवदंसेति पुरच्छिमेणं राहू॥ एवं जहा पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भणिया तहा दाहिणेणय उत्तरेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं उत्तर पुरच्छिमेणं, दाहिण पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं दाहिण पुरच्छिमेणं, उत्तर पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा

भावार्थ विकुर्वणा करते व परिचारणा करते, कांति को पश्चिम में ढककर पूर्व में राहु जाता है तब पश्चिम में चंद्र दीखता है और पूर्व में राहु दीखता है जैसे पूर्व पश्चिम के दो आलापक कहे वैसे ही दक्षिण उत्तर के दो आलापक जानना वैसे ही उत्तर पूर्व [ ईशान ] व नैऋत्य और अग्नि व वायव्य के दो २ आलापक जानना. एवंम् वायव्य कोन में चंद्र दीखता है और अग्नि कोन में राहु दीखता है. आते, जाते वैक्रिय

... कप्पं भंते ! सोहम्मं कप्पं सोहम्मे कप्पेत्ति जाणइ पासइ ? एवं चेव ॥ एवं ईसाणं, एवं जाव अच्चुयं ॥ केवलीणं भंते ! गेविज्जग विमाणे गेविज्जगविमाणेत्ति जाणइ पासइ ? एवं चेव ॥ एवं अणुत्तरविमाणेवि ॥ केवलीणं भंते ! ईसिप्पब्भारं पुढविं ईसिप्पब्भार पुढवीति जाणइ पासइ ? एवं चेव ॥ ५ ॥ केवलीणं भंते ! परमाणु पोग्गलं परमाणु पोग्गलेति जाणइ पासइ ? एवं चेव ॥ एवं दुपदेसियं खंधं, एवं जाव अणंत पदेसियं खंधं ॥ जहाणं भंते केवली अणंतपदेसिए खंधेत्ति जाणइ पासइ तहाणं सिद्धेवि अणंतं पदेसियं खंधं जाव पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ चउदसम सयस्सय दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥ १० ॥ सम्मत्तंय चउदसम सयं ॥ १४ ॥

भावार्थ

रत्नप्रभा पृथ्वी जाने देखे ? हां गौतम ! जाने देखे. ऐसे ही ईषत्प्रभा पृथ्वी पर्यंत सातवीं नरक पृथ्वी का जानना. जैसे नारकी का कहा. वैसे ही सौधर्म देवलोक यावत् अच्युत, ग्रैवेयक, अनुत्तर विमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का जानना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! केवली परमाणु पुद्गल को क्या परमाणु पुद्गल जाने देखे ? हां गौतम ! वैसे ही जानना. ऐसे ही द्विप्रदेशात्मक स्कंध, यावत् अनंत प्रदेशात्मक स्कंध का जानना. वैसे ही सिद्ध भी अनंत प्रदेशिक स्कंध को जाने देखे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह चौदहवा शतक का दसवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ १४ ॥ १० ॥ यह चौदहवा शतक संपूर्ण हुआ ॥ १४ ॥

तहां आ० आगम सि० होवे आ० आगम से व० व्यवहार प० रखे णो० नहीं से० वह त० तहां आ० आगम सि० होवे ज० जैसे त० तहां सु० श्रुत से व० व्यवहार प० रखे णो० नहीं से० वह त० तहां सु० श्रुत सि० होवे ज० जैसे त० तहां आ० आज्ञा सि० होवे आ० आज्ञा से व० व्यवहार प० रखे णो० नहीं त० तहां आ० आज्ञा सि० होवे ज० जैसे त० तहां धा० धारणा सि० होवे धा० धारणा से

सूत्र

गोयमा! पंचविहे ववहारे पण्णत्ते, तंजहा-आगमे, सुए, आणा, धारणा, जीए ॥ जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेण ववहारं पट्ठवेज्जा ॥ णोय से तत्थ आगमे सिया जहा से तत्थ सुए सिया, सुएणं ववहारं पट्ठवेज्जा ॥ णोय से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा णोय से तत्थ आणासिया जहा से तत्थ

भावार्थ

प्रत्यनीक ॥ ६ ॥ जो प्रत्यनीकपना का त्याग करते हैं वे शुद्ध व्यवहार पाल सकते हैं. अहो भगवन् ! व्यवहार के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! व्यवहार के पांच भेद कहे हैं. १ जिस से पदार्थ जाना जावे सो आगम व्यवहार २ सुना जावे सो श्रुत ३ आदेश कर देवे सो आज्ञा ४ धारण कर रखे सो धारणा और आचार ( परंपराकी रीति ) सो जीत व्यवहार. इन में से केवलज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानी, चउदह पूर्वधर व दशपूर्वधर इन का व्यवहार सो आगम व्यवहार. इस में प्रथम आलोचनादि केवल

शब्दार्थ अ० अपराभूत आ० आजीविक म० मत में ल० अर्थ प्राप्त कीया है ग० अर्थ ग्रहण कीया है पु० अर्थ पुछा है वि० अर्थ निश्चय कीया है अ० अस्थि मि० मिंज पे० प्रेम से रक्त म० आयुष्यवन्त श्रमण आ० आजीविक मत में अ० अर्थ अ० यह अर्थ प० परम अर्थ से० शेष अ० अनर्थ आ० आजीविक मत में अ० आत्मा को भा० भावती वि० विचरती है ॥ ३ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र च० चौवीस वा० वर्ष की प० पर्याय से हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी की कुं०

सूत्र यंसि लद्धट्ठा गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अट्ठिमिंज पेमाणुरागरत्ता, अयमाउसो ! आजीविय समए अट्ठे अयमट्ठे परमट्ठे, सेसे अणट्ठेत्ति ॥ आजीविय समएणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥ ३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं गोसाले मंखलिपुत्ते चउवीसवास परियाए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघ संपरि-

भावार्थ मत में मरूपित सिद्धांतों को उसने प्राप्त किया था, रत्न की तरह ग्रहण किया था, पूछकर निश्चय किया था, उस की हड्डी व हड्डियों की मिंजियों प्रेमानुराग से रक्त बनी हुई थी. धर्म चर्चा के प्रसंग वह यही कहती थी कि अहो आयुष्मन् ! आजीविक के शास्त्रों प्रयोजन मय हैं, वेही परमार्थ मुख के कारणभूत हैं, और शेष सब अनर्थ के हेतुभूत है. इस तरह आजीविक समय में स्वतः को भावती [ विचारती ] हुइ रहती थी ॥ ३ ॥ उस काल उस समय में मंखलिपुत्र गोशाला चौवीस वर्ष पर्यंत पर्याय पालकर हालाहला

धारणा करते चं० चंद्र लेश्या को प० पश्चिम में आ० आवरकर पु० पूर्व में वी० जाते न० तब प० पश्चिम में चं० चंद्र ड० देखावे पु० पूर्व में रा० राहु ए० ऐसे ज० जैसे प० पश्चिम में दो० दो आ० आलापक न० वैसे दा० दक्षिण उ० उत्तर में दो० दो आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे उ० ईशान कौन में ना० नैऋत्य में दो० दो आ० आलापक ए० ऐसे दा० अग्नि उ० वायव्य में दो०दो आ०आलापक भा० कहना जा० यावत् न० तब उ० वायव्य में चं० चंद्र उ० देखावे दा० अग्नि में राहु ज० जब

मूल

राहू आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा, विउव्वमाणेवा, परियारेमाणेवा, चंदलेस्सं पच्चच्छिमेणं आवरेत्ताणं पुरच्छिमेणं वीईवयइ, तदाणं पच्चच्छिमेणं चंदे उवदंसेति पुरच्छिमेणं राहू॥ एवं जहा पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भणिया तहा दाहिणेणय उत्तरेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं उत्तर पुरच्छिमेणं, दाहिण पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं दाहिण पुरच्छिमेणं, उत्तर पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा

भावार्थ

ईशान कौन व नैऋत्य कौन ऐसे जानना। राहु को पश्चिम में ढककर पूर्व में राहु जाता है तब पश्चिम में चंद्र दीखता है और पूर्व में राहु दीखता है जैसे पूर्व पश्चिम के दो आलापक कहे वैसे ही दक्षिण उत्तर के दो आलापक जानना. ऐसे ही उत्तर पूर्व [ईशान] व नैऋत्य और अग्नि व वायव्य के दो २ आलापक जानना. यावत् वायव्य कौन में चंद्र दीखता है और अग्नि कौन में राहु दीखता है. आते, जाते वैक्रिय

शब्दार्थ

अ० आठ प्रकार का पु० पूर्व गत म० मार्गदर्शन स० अपनी म० मतिदर्शन से नि० उद्धरे हैं गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र को उ० स्थापन करे ॥ ६ ॥ त० तब गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र ते० उस अ० अष्टांग म० महानिमित्त का के० कोइएक उ० उपदेश मात्र से स० सर्व पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व का इ० इन छ० छ अव्यभिचार रहित वा० प्रश्न वा० कहे तं० वह ज० जैसे ला० लाभ अ० अलाभ सु० सुख दु० दुःख जी० जीवित म० मरण ॥ ७ ॥ त० तब गो० गोशाला

सूत्र

साचरा अट्ठविहं पुव्वगयं मग्गदसमं सएहिं मइदंसणेहिं णिज्जूहिंति, सएहिं २ त्तित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्ठाइंसु ॥ ६ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं, इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइं वागरणाइं वागरइ, तंजहा-लाभं अलाभं सुहं दुक्खं जीवियं मरणं ॥ ७ ॥ तएणं से गोसाले मखलिपुत्ते

भावार्थ

अपनी २ बुद्धि पूर्वक पूर्वगत लक्षण मे श्रुत पर्याय में से नीकलकर मंखलीपुत्र गोशाला का आश्रय ग्रहण किया. अर्थात् उन के शिष्य बने ॥ ६ ॥ अब वह गोशाला उन अष्टांग महा निमित्त के उपदेश मात्र से सब प्राणि, भूत, जीव व सत्व छ कृत्य उल्लंघ नहीं सकते हैं ऐसा कहने लगा. जिन के नाम लाभ, अलाभ, सुख, दुःख जीवित और मरण ॥ ७ ॥ अब वह मंखली पुत्र गोशाला उक्त अष्टांग महा निमित्त में

शब्दार्थ: विचरता है से० वह क० कैसे ए० यह म० माने ॥ ९ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में सा० स्वामी स० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पीछी गई ॥ १० ॥ ते० उस काल में ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का जे० ज्येष्ठ अं० अंतेवासी इं० इन्द्र भूति अ० अनगार गो० गौतम गो० गोत्र में छ० छठछठ में ए० ऐसे ज० जैसे बि० दूसरा शतक में णि० निर्ग्रंथ उ० उद्देशा जा० यावत् अ० फीरते ब० बहुत मनुष्यों के स० शब्द णि० सुने ब० बहुत मनुष्य अ० अन्योन्य

सूत्र: निहरइ; ते कहमेयं मण्णे एवं ? ॥ ९ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समो-सढे जाव परिसा पडिगया ॥ १० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूईणामं अणगारे गोयम गोत्तेणं जाव छट्ठं छट्ठेणं एवं जहा बिइयसए णियंठुद्देसए जाव अडमाणे बहुजणसद्दं णिसामेइ बहुजणो अण्णम-

भावार्थ: गोशाला जिन मलापी यावत् प्रकाश करता हुवा विचरता है ॥ ९ ॥ उस काल उस समय में स्वामी पधारे यावत् परिषदा धर्मोपदेश सुनकर पीछी गइ ॥ १० ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर के ज्येष्ठ अंतेवासी गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति अनगार छठ २ की तपस्या का पारणा करते वगैरह जैसे दूसरे शतक के निग्रंथ उद्देशे में कहा वैसे फीरते हुवे बहुत मनुष्यों से ऐसा सुना कि बहुत मनुष्यों परस्पर ऐसा कहते है यावत् प्ररूपते है कि मंखली पुत्र गोशाला जिन मलापी यावत् प्रकाश करता हुवा विचरता

अर्थ मनुष्य क्षेत्र के म० मनुष्य व० कहते हैं रा० राहु चं० चंद्र का वं० वमन कीया ज० जब रा० राहु आ० आते जा० यावत् प० परिचारना करते चं० चंद्र लेश्या को अ० नीचे स० चारों बाजु आ० आवर्त कर चि० रहे त० तब म० मनुष्य क्षेत्र में म० मनुष्य व० कहते हैं रा० राहु से चं० चंद्र ग० ग्रस्त हुआ ॥ २ ॥ कि० कितने प्रकार का भं० भगवन् रा० राहु प० प्ररूपा गो० गौतम दु० दो रा० राहु प०

सूत्र राहू आगच्छमाणेवा ४ चंदलेस्सं आवरेत्ताणं पच्चोसक्कइ तदाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एवं खलु राहुस्सणं चंदे वंते ॥ एवं जयाणं राहू आगच्छमाणेवा जाव परियारेमाणेवा चंदलेस्स अहे सपक्खिं सपडिदिसिं आवरेत्ताणं चिट्ठइ, तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे, एवं २ ॥ ३ ॥ कतिविहेणं भंते ! राहू पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे राहू पण्णत्ते, तंजहा-धुवराहूय, पव्वराहूय ॥ तत्थणं

भावार्थ लोक में मनुष्यों कहते हैं कि राहूने चंद्र का वमन किया. और जब राहू जाते आते, वैक्रेय करते व परिचारणा करते चंद्र की कान्ति को नीचे, बाजुपर व चारों दिशि में ढक कर रहता है तब मनुष्य लोक में कहा जाता है कि राहूने चंद्र ग्रहण किया ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! राहू कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! राहू दो कहे हैं. धुव राहू कि जो चंद्र की साथ सदैव रहता है और पर्व राहू पूर्णिमा वगैरह, पर्व तिथियों में

शब्दार्थ जा० यावत् जि० जिन शब्द प० करता वि० विचरता है से० वह क० कैसे ए० यह भं० भगवन् ए० ऐसा इ० इच्छता हूं भं० भगवन् गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र का उ० पहिले से प० संबंध प० कहाया हुआ ॥ ११ ॥ गो० गौतमादि स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर भ० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले ज० जो गो० गौतम ब० बहुत ज० मनुष्य अ० अन्योन्य आ० कहते हैं गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् प० बोलते वि० विचरते हैं तं० वह मि० मिथ्या अ० मैं गो०

सूत्र समाणे विहरइ, से कहमेयं भंते ! एवं ? इच्छामिणं भंते ! गोसालस्स मंखलि पुत्तस्स उट्ठाणपरियाणियं परिकहियं ? ॥ ११ ॥ गोयमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी जंणं गोयमा ! से बहुजणे अण्णमण्णस्स एव माइक्खइ ४ एवं खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पगासमाणे विहरइ, तंणं मिच्छा

भावार्थ भगवन् ! यह किस तरह है ? मंखलीपुत्र गोशाला का जन्म से लगाकर आजतक सब संबंध सुनने को मैं इच्छता हूं ॥ ११ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने गौतम स्वामी को ऐसा कहा कि अहो गौतम ! तुमने बहुत मनुष्यों से ऐसा सुना है कि मंखलि पुत्र गोशाला-जिन, जिन-प्रलापी यावत्

शब्दार्थ दार प० रखे से० वह किं० क्या आ० कहा भं० भगवन् आ० आगमबलिक स० श्रमण णि० निर्ग्रंथ

सूत्र सुएणं, आणाए, धारणाए, जीएणं ॥ जहा २ से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा २ ववहारं पट्ठवेज्जा ॥ से किमाहु भंते ! आगमबलिया समणा निग्गंथा

भावार्थ है इस तरह समझाने पर अपना सब अतिचार कहे तो प्रायश्चित्त देवे. ऐसा प्रायश्चित्त सहर्ष ग्रहण करे तो अल्प काल में निर्वाण प्राप्त करे. अब श्रुत व्यवहार कहते हैं. अग्यारह अंग व नव पूर्व का जिनको ज्ञान होवे वे श्रुत व्यवहारी कहाते हैं. वे आलोचना करनेवाले का अभिप्राय जानने के लिये उस के मुख से तीन वार दोष कहने का कहे यदि तीनों वार एक सरिखा प्रकाश करे तो उसे शुद्ध समझे परंतु इस में भिन्नता मालूम पडे तो असत्य समझ कर उस को पहिले मृषावाद का प्रायश्चित्त देना फीर आलोचना का प्रायश्चित्त कहना. ३ आज्ञा व्यवहार. सूत्रार्थ के सेवन से महा गीतार्थ बने हुवे दो आचार्य जंघाबल की क्षीणता से विहार कर सके नहीं और अलग २ देशान्तर में रहे हुवे होवे, परस्पर एक दूसरे को मील सके नहीं. उस समय में उन में से कोई एक प्रायश्चित्त लेने को वांच्छे, और गीतार्थ शिष्य न होवे तो धारणा कुशल अगीतार्थ को अथवा शिष्य को सिद्धांत की भाषा से गूढार्थ अतिचार [illegible]

शब्दार्थ
स० तहां स० सरवण स० सन्निवेश में गो० गोबहुल मा० ब्राह्मण प० रहता था अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत रि० ऋग्वेद जा० यावत् सु० सुपरिनिष्ठित हो० था ॥ १५ ॥ त० उस गो० गोबहुल की गो० गोशाला हो० थी ॥ १६ ॥ त० तब से० वह मं० मंखलि मं० भिक्षुक भ० एकदा भ० भद्रा भा० भार्या गु० गर्भवती स० साथ चि० चित्र फ० पटिया ह० हस्त में मं० भिक्षावृत्ति से अ० आत्मा को भा० भावता पु० अनुक्रम से च० चलता गा० ग्रामानुग्राम दू० जाता जे० जहां स० सरवण

सूत्र
तत्थणं सरवणे सण्णिवेसे गोबहुले णामं माहणे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए ॥ रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिएयावि होत्था ॥ १५ ॥ तस्सणं गोबहुलस्स माहणस्स गोसालायावि होत्था ॥ १६ ॥ तएणं से मंखलिमंखणामं अण्णयाकयाइं भद्दाए भारियाए गुव्विणीए सद्धिं चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणु पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सण्णिवेसे जेणेव गोबहुलस्स

भावार्थ
में गोबहुल नामका ब्राह्मण रहता था वह ऋद्धिवंत यावत् अपरिभूत था. ऋग्वेद यावत् सुपरिनिष्ठित था ॥ १५ ॥ उस गोबहुल ब्राह्मण को गायों रहने की शाला ( ठाण ) थी ॥ १६ ॥ एकदा मंखली नामक मंख अपनी गर्भवती स्त्री भाव हस्त में चित्रित काष्ट के टुकडे से भीक्षा मांगता हुआ ग्रामानुग्राम फीरता हुवा सरवण सन्निवेश में गोबहुल ब्राह्मण की गोशाला में आया, वहां आकर गोबहुल ब्राह्मण की

शब्दार्थ यावत् प० पन्नरवे में प० पन्नरवा भाग च० चरम समय में चं० चंद्र वि० खुला भ० होवे अ० अवशेष स० समय में चं० चंद्र र० आच्छादित वि० खुला भ० होवे ॥ ४ ॥ त० तहां जे० जो प० पर्वराहु ज० जघन्य छ० छमास में उ० उत्कृष्ट बा० बीयालीस मा० मास चं० चंद्र का अ० अडतालीस सं० वर्ष सू० सूर्य का ॥ ५ ॥ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है चं० चंद्र स० शशी चं० चंद्र जो० ज्योतिपिन्द्र जो० ज्योतिषी राजा का मि० मृगांक वि० विमान में कं० मनोहर दे० देव कं०

सूत्र विरत्तेवा भवइ ॥ तामेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे २ चिट्ठइ, तं पढमाए पढम भागं जाव पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं चरम समए चंदे विरत्ते भवइ अवसेसे समए चंदे रत्तेवा विरत्तेवा भवइ ॥४॥ तत्थणं जे से पव्वराहू से जहण्णेणं छण्हं मासाणं उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स ॥५॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चंदे ससी ? गोयमा ! चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसिरण्णो मियंके विमाणे, कंता देवा, कंताओ

भावार्थ काल अर्थात् पूर्णिमा को चंद्र विरक्त (खुला) दीखता है और शेष सब तिथियों में चंद्र आच्छादित व अनाच्छादित रहता है ॥ अब जो पर्व राहु है वह जघन्य छमास उत्कृष्ट बीयालीस मास में चंद्र को आच्छादित करता है और सूर्य को जघन्य छमास उत्कृष्ट ४८ संवत्सर में आच्छादित करता है ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! चंद्र को शशी क्यों कहा ? अहो गौतम ! ज्योतिपीन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्र को मृगांकवाला

शब्दार्थ भार्या ण० नव मा० मास ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण अ० अर्ध अ० आठ रा० रात्रिदवस वी० व्यतीत होते सु० सुकुमार जा० यावत् प० प्रतिरूप दा० पुत्र का प० जन्म दीया त० तब त० उस दा० पुत्र के अ० माता पिता ए० अग्यारवा दि० दिवस वी० व्यतीत होने जा० यावत् बा० बारवे दि० दिवस में अ० इसरूप गो० गौण गु० गुणनिष्पन्न णा० नाम क० करे अ० हमारा इ० यह दा० पुत्र गो० गोबहुल मा० माहण की गो० गोशाला में जा० उत्पन्न हुवा तं० इसलिये हो० होओ अ० हमारा इ० इस दा० पुत्र का णा० नाम गो० गोशाला त० तब त० उस दा० पुत्र के अ० माता पिता णा० नाम क०

सूत्र भारिया णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमाल जाव पडिरूवं दारगं पयाता तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते जाव बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गोणं गुणणिप्फण्णं णामधेज्जं करेंति जम्हाणं अम्हं इमे दारए गोबहुलस्स माहणस्स गोसालए जाते, तं होऊणं अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जं 'गोसाले' गोसालेत्ति तएणं तस्स दारगस्स अम्मा-

भावार्थ भार्या को सवा नव मास पूर्ण होते सुकुमार यावत् प्रतिरूप पुत्र का जन्म हुआ. अग्यारवा दिन व्यतीत हुए पीछे बारवे दिन में उस पुत्र का गुणनिष्पन्न गोशाला नाम रखा. क्यों की गोशाला का जन्म गोबहुल ब्राह्मण

शब्दार्थ भार्या ण० नव मा० मास ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण अ० अर्ध अ० आठ रा० रात्रिदिवस वी० व्यतीत होते सु० सुकुमार जा० यावत् प० प्रतिरूप दा० पुत्र का प० जन्म दिया त० तब त० उस दा० पुत्र के अ० माता पिता ए० अग्यारवा दि० दिवस वी० व्यतीत होते जा० यावत् बा० बारवे दि० दिवस में अ० इसरूप गो० गौण गु० गुणनिष्पन्न णा० नाम क० करे अ० हमारा इ० यह दा० पुत्र गो० गोबहुल मा० माहण की गो० गौशाला में जा० उत्पन्न हुवा तं० इसलिये हो० होओ अ० हमारा इ० इस दा० पुत्र का णा० नाम गो० गोशाला त० तब त० उस दा० पुत्र के अ० माता पिता णा० नाम क०

सूत्र भारिया णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमाल जाव पडिरूवं दारगं पयाता तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते जाव बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गोणं गुणणिप्फण्णं णामधेज्जं करेंति जम्हाणं अम्हं इमे दारए गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए जाते, तं होऊणं अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जं 'गोसाले' गोसालेत्ति तएणं तस्स दारगस्स अम्मा-

भावार्थ भार्या को सवा नव मास पूर्ण होते सुकुमार यावत् प्रतिरूप पुत्र का जन्म हुआ. अग्यारवा दिन व्यतीत हुए पीछे बारहवे दिन में उस पुत्र का गुणनिष्पन्न गोशाला नाम रखा. क्यों की गोशाला का जन्म गोबहुल ब्राह्मण

शब्दार्थ

राजा को क० कितनी अ० अग्रमहिषी प० प्ररूपी ज० जैसे द० दशवे शतक में जा० यावत् णो० नहीं मे० मैथुन सेवने को पु० सूर्य त० तैसे ॥ ८ ॥ चं० चंद्र सू० सूर्य भं० भगवन् जो० ज्योतिषी रा० राजा के० कैसे का० काम भोग प० भोगते वि० विचरते हैं गो० गौतम ज० जैसे के० कोइ पु० पुरुष प० प्रथम जो० यौवन उ० उ० । ब० बलवाली प० प्रथम जो० यौवन उ० उत्थान ब० बलवाली भा० भार्या स० साथ अ० थोडा काल में वि० विवाह करके अ० अर्थ ग० गवेषणा को सो० सोलह वा० वर्ष वि०

मूल

पण्णत्ताओ ? जहा दसम सए जाव णो चेवणं मेहुणवत्तियं ॥ सूरस्सवि तहेव ॥८॥ चंदिम सूरियस्सणं भंते ! जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भव- माणा विहरंति ? गोयमा ! से जहाणामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाण बलत्थे पढम जोव्वणुट्ठाण बलत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्त विवाहकज्जे अत्थगवेसणत्ताए सोलसवास विप्पवासिए तेणं तओ लट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि णियगं गिहं हव्वमागए, ण्हाए

भावार्थ

अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र ज्योतिषी के राजा चंद्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो गौतम ! इन का सब वर्णन दशवे शतक में से जानना. यावत् सभा में मैथुन सेवने को समर्थ नहीं है यहां तक कहना और सूर्य का भी वैसे ही जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र, चंद्र, सूर्य, कैसे कामभोग भोगते हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष यौवन के उदय से प्राप्त बलवाली भार्या की साथ

शब्दार्थ

जीविते फ० फल वि० विजय गा० गाथापतिका ज० जिस गि० गृह० में व० तथारूप सा० साधु सा० साधुरूप को प० देता हुआ इ० ये पं० पांच दि० द्रव्य पा० प्रगट हुवे व० द्रव्य वृष्टि जा० यावत् अ० अहो दान घु० उद्घोषणा की ध० धन्य क० कृतार्थ क० कृत पुन्य क० कृत लक्षण क० कीया लो० लोक सु० अच्छा मास मा० मनुष्य का ज० जन्म जी० जीवित फ० फल विजय गा० गाथापति का ॥ २६ ॥ त० तब सं० वह गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र ब० बहुत मनुष्य अं० पास ए० यह अर्थ सो०

सूत्र

साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंचदिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तंजहा वसुधारावुट्ठा जाव अहोदाणे घुट्टे २, धण्णेणं कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे कयाणं लोया सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स विजयस्स २ ॥२६॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णको-ऊहल्ले जेणेव विजयस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता विजयस्स

भावार्थ

प्रगट हुए. इस से विजय गाथापति का जन्म धन्य, कृतार्थ, कृतपुन्यवाला कृतलक्षणवाला, इस लोक व परलोक में शुभफलवाला व सफल है. ॥ २६ ॥ उस समय में बहुत मनुष्यों से ऐसी वार्ता सुनकर मंखलि पुत्र गोशालक को संशय यावत् कौतुहल उत्पन्न हुवा और विजय गाथापति के गृह आया. वहां विजय गाथापति के गृह धन की वृष्टि पांच वर्णवाले पुष्प वगैरह पांच प्रकार की वस्तुओं व मुझे चल के गृह से

शब्दार्थ

अर्थ को णो॰ नहीं आ॰ आदर किया णो॰ नहीं प॰ अच्छा माना तु॰ शांत सं॰ रहा ॥ २८ ॥ त॰ तब अ॰ मैं गो॰ गौतम रा॰ राजगृह ण॰ नगर में प॰ नीकलकर णा॰ नालंदा बा॰ बाह्य की म॰ मध्य से जे॰ जहां तं॰ वणकर शाला ते॰ तहां उ॰ आकर दो॰ दूसरा मा॰ मास क्षमण उ॰ अंगीकार कर वि॰ विचरा ॥ २९ ॥ त॰ तब अ॰ मैं मा॰ मास क्षमण पा॰ पारणे में तं॰ वणकर सा॰ शाला से प॰ नीकलकर णा॰ नालंदा बा॰ बाहिर म॰ मध्य से जे॰ जहां रा॰ राजगृह ण॰ नगर जा॰ यावत्

सूत्र

एयमट्ठं णो आढामि णो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ॥ २८ ॥ तएणं अहं गोयमा ! रायगिहाओ णयराओ पडिणिक्खमामि २ त्ता, णालंदं बाहिरियं मज्झमज्झेण जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छामित्ता, दोचं मास- क्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ २९ ॥ तएणं अहं मासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिणिक्खमामि पडिणिक्खमामित्ता णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं

भावार्थ

॥ २७ ॥ अहो गौतम ! उस समय मैंने गोशाला के वचन का आदर किया नहीं; उन के वचन मैंने अच्छे जाने नहीं परंतु मौन रहा. ॥ २८ ॥ फीर अहो गौतम ! मैं राजगृह नगर में से नीकलकर नालंदिय पाडा के बाहिर मध्यबीच में से नीकलता हुवा तंतुवाय शाला में आया और दूसरा मास क्षमण कर के रहने लगा. ॥ २९ ॥ मास क्षमण के पारणे के दिन तंतुवाय शाला में से नीकल कर नालंदिय पाडा के

सूत्र

॥ १२ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, घायगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पचामित्तत्ताए, उववण्ण पुव्वे? हंता गोयमा! जाव अणंतखुत्तो सव्व जीवाविणं भंते! एवंचेव ॥ १३ ॥ अयण्णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए, जाव सत्थवाहत्ताए उववण्ण पुव्वे ? हंता गोयमा! असतिं जाव अणंत खुत्तो ॥ सव्वजीवाण एवंचेव ॥ १४ ॥ अयण्णं भंते! जीवे सव्व जीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए, भाइल्लगत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए, उववण्णपुव्वे ? हंता गोयमा! जाव अणंतखुत्तो ॥ एवं सव्वजीवावि जाव अणंत

भावार्थ

भाई, भगिनी, भार्या, पुत्र, पुत्री व पुत्रवधूपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा? हां गौतम! अनेकबार यावत् अनंतवार उत्पन्न हुवा ॥ १२ ॥ अहो भगवन्! यह जीव सब जीवों के शत्रु, वैरी, घातक, वधक, प्रत्यनीक, व अमित्रपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकबार यावत् अनंतवार. जैसे एक जीवका कहा वैसे सब जीवोंका जानना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! यह जीव सब जीवों के राजा, युवराज. यावत् सार्थवाहपने पहिले क्या उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकबार यावत् अनंतवार उत्पन्न हुवा. ऐसे ही सब जीवों का जानना ॥१४॥ अहो भगवन् ! यह जीव सब जीवों के दास, प्रेषक, भृत्यक, भागीदार, भोग पुरुष, शिष्य व द्वेष्यपने

शब्दार्थ गा० गाथापति के गि० गृह में अ० प्रवेश कीया त० तब से० वह सु० सुदर्शन गा० गाथापति ण० विशेष स० सर्व का० रसमय भो० भोजन से प० देवे से० शेष तं० वैसे जा० यावत् च० चौथा मा० मास क्षमण उ० अंगीकार कर वि० विचरता हूं ॥ ३२ ॥ ती० उस णा० नालंदा बा० बाहिर अ० नजदीक को० कोल्लाग स० सन्निवेश हो० था व० वर्णन युक्त ॥ ३३ ॥ त० तहां को० कोल्लाग स० सन्निवेश में ब० बहुल मा० माहण प० रहता था अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत रि० ऋग्वेद जा० यावत्

णे सुदंसणस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे तएणं से सुदंसणे गाहावई, णवरं ममं सव्वकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेति सेसं तंचेव, जाव चउत्थं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ ३२ ॥ तीसेणं णालिंदा बाहिरियाए अदूरसामंते एत्थणं कोल्लाएणामं सण्णिवेसे होत्था, सण्णिवेस वण्णओ ॥ ३३ ॥ तत्थणं कोल्लाए

सूत्र

भावार्थ कर विचरने लगा ॥ ३१ ॥ अहो गौतम ! तीसरे मासखमण के पारणे के दिन राजगृह नगर में सुदर्शन शेठ के गृह में मैंने प्रवेश किया. सुदर्शन गाथापति मुझे इच्छानुसार सकल रसमय भोजन देकर संतुष्ट हुवा शेष सब अधिकार विजय गाथापति जैसे जानना यावत् चौथा मासखमण कर के विचरने लगा. ॥ ३२ ॥ उस नालिंदा पाडा के बाहिर पास एक कोल्लाससन्निवेश था. वह वर्णन युक्त था ॥ ३३ ॥ उस कोल्लाग सन्निवेश में बहुल नामक ब्राह्मण रहता था. वह ऋद्धिवंत यावत् अपराभूत था और ऋग्वेद यावत्

सूत्र

जाव अणुत्तरोववाइयाणं, जहा नेरइयाणं, णवरं जस्स जा ठिई सा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयाणं, सव्वबंधे एक्कंसमयं, देसबंधे जहण्णेणं एकतीससागरोवमाइं तिसमयऊणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयऊणाइं ॥ २१ ॥ वेउव्वियसरीरप्पओग बंधंतरेणं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंताओ जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो, एवं

भावार्थ

हो सातवी तमतमा पृथ्वी तक का जानना. विशेष में जिनको जितनी जघन्य स्थिति होवे उन में तीन समय कम कहना और उत्कृष्ट स्थितिवाले में एक समय कम कहना. पंचेन्द्रिय तिर्यंच व मनुष्य का वायुकाय जैसे कहना. असुरकुमार, नागकुमार यावत् अनुत्तरोपपातिकका नारकी जैसे कहना. उन में जिन को जितनी स्थिति होवे उन को उतनी कहना. अनुत्तरोपपातिकका सर्व बंध एक समय का देश बंध जघन्य तीन समयकम एकतीस सागरोपम उत्कृष्ट एक समयकम तेतीस सागरोपम का जानना ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! वैक्रेय शरीर प्रयोग बंधका अंतर कितने कालका कहा. अहो गौतम ! सर्व बंधका अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट अनंत काल, अनंत अवसर्पिणी. उत्सर्पिणी यावत् आवलिकाका असंख्यातवा भाग, क्यों कि कोई जीव उदारिक शरीर में से वैक्रेय शरीरी हुवा और पहिले समय में सर्वबंध होवे फीर दूसरे समय में देशबंध होकर कालकर जावे और वहां से देव नारकी में वैक्रेय शरीर में सर्व बंध होवे इस अपेक्षा

मंखलि पुत्र तं० उस ति० तिलवृक्ष को पा० देखता है पा० देखकर म० मुझे व० वंदनकर न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोला ए० यह भं० भगवन् ति० तिलवृक्ष किं० क्या नि० निपजेगा णो० नहीं णि० निपजेगा ए० ये स० सात ति० तिल के पु० पुष्प जीव उ० चवकर क० कहां ग० जावेंगे क० कहां उ० उत्पन्न होंगे त० तब अ० मैं गो० गौतम गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र को ए० ऐसा व० बोला गो० गोशाला ए० यह ति० तिलवृक्ष णि० उत्पन्न होगा ए० ये स० सात ति० तिल पु० पुष्प जीव

माणे १ विहर ॥५४॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते तं तिलथंभं पासइ, पासइत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसइत्ता एवं वयासी-एसणं भंते ! तिलथंभए किं निप्फज्जिस्सइ णो निप्फज्जिस्सइ, एएय सत्ततिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ कहिं गच्छिहिंति कहिं उववज्जिहिंति ? तएणं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी गोसाला ! एसणं तिलथंभए निप्फज्जिस्सइ णो निप्फज्जिस्सइ एएय सत्त तिल पुप्फ-

[illegible] को देख कर मुझे वंदना नमस्कार करता हुआ ऐसा बोला कि अहो भगवन् ! यह तील-
[illegible] निपजेगा ? और ये सात तिलपुष्प के जीवों यहां से चवकर के
[illegible] अहो गौतम ! तब मैंने ऐसा कहा कि अहो गोशाला ! यह तिल

शीघ्र नदी के १।.

गो० गौतम उ० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां अ० अर्चनीय वं० वंदनीय पू० पूजनीय स० सत्कार करने योग्य स० सन्मान करने योग्य दि० दिव्य स० सत्य स० सत्य अवपात स० संनिहित पा० प्रातिहार्य भ० होवे स० वहां से अ० अंतर उ० चवकर जा० जितने बु० बुझे जा० यावत् अं० अंतकरे ह० हां सि० सिझे जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ १ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक ए० ऐसे जा० यावत् वि० विसरीरी म०

मूल अणंतरं चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ? हंता गोयमा ! उववज्जेज्जा ॥ सेणं तत्थ अच्चिय वंदिय पूइय सक्कारिय सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहियपाडिहेरयावि भवेज्जा ? हंता भवेज्जा ॥ सेणं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा, जाव अंतकरेज्जा ? हंता सिज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा ॥ १ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डीए एवं चेव जाव विसरी-

भावार्थ वंदनीय, सत्कार योग्य, सन्मान पात्र, सेवा योग्य, दिव्य, सत्य, सत्यादि से सत्य सेवा बतानेवाला व इष्ट संनिधि स पास रहकर कार्य करनेवाला देवाधिष्ठित क्या होता है ? हां गौतम ! वह नाग ऐसा ही होता है. अहो भगवन् ! क्या वह नाग वहां से अंतर रहित मनुष्य गति में जाकर सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ? हां गौतम ! वह सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महा ऐश्वर्यवंत देव दो शरीरी मणि (पृथ्वीकाया विशेष) में क्या उत्पन्न होता है ? अहो

शब्दार्थ गो॰ गौतम दि॰ दीव्य अ॰ वर्षा के व॰ बद्दल पा॰ उत्पन्न हुए त॰ तब से॰ वह दि॰ दिव्य अ॰ वर्षा के बद्दल खि॰ शीघ्र प॰ गर्जे वि॰ विद्युत् होवे णा॰ बहुल पानी नहीं णा॰ बहुल कर्दम नहीं प॰ जलशीकर र॰ रजरेणु वि॰ विनाशक दि॰ दीव्य स॰ सलिल उ॰ उदक व॰ वर्षा वा॰ हुई जे॰ जिस से ति॰ तिलवृक्ष आ॰ स्थिर हुवा वी॰ विशेष स्थिर हुवा प॰ उत्पन्न हुवा ब॰ मूलबंधाया त॰ तहां प॰ प्रतिस्थित स॰ सात ति॰ तिल पु॰ पुष्प जीव उ॰ चवकर त॰ तहां ति॰ तिलवृक्ष के ए॰ एक ति॰ तिलसिंग में

सूत्र सलेट्ठुयायं चेव उप्पाडेइ, उप्पाडेइत्ता एगंते एडेइ, एडेइत्ता तक्खणमेत्तं च गोयमा! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए, तएणं से दिव्वे अब्भवद्दलिए खिप्पामेव पतण तणाए खिप्पामेव विज्जुयाइ, खिप्पामेव णच्चोसगं णातिमट्टियं पविरलपप्फुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वसलिलोदगं वासं वासइ ॥ जेणं से तिलथंभए आसत्थे वी- सत्थए पच्चायाए बद्धमूले तत्थेव पतिट्ठिए तेय सत्ततिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ तस्सेव

भावार्थ शनैः पीछा जाने लगा. और तिलस्तंभ को समूल मिट्टि सहित नीकाल कर एकान्त में डाल दिया. अहो गौतम! तत्क्षण वहां दीव्य अभ्रवद्दल प्रगट हुवा. उस दीव्य मेघ से शीघ्र गर्जारव हुवा, बिजलियों चमकी, शीघ्र बहुत पानी की वर्षा हुई नहीं, बहुत कादव हुवा नहीं, पानी की फुंवार पडी, रजरेणु दबगइ, दीव्य नदी के पानी जैसी वर्षा हुई, रसादिगुण सहित वह तिलस्थंभ स्थिर हुवा, बहुत स्थिर हुवा, वृक्ष को

शब्दार्थ

आ० सूर्य ते० तेज से त० तपना छ० छट्ठ म० चारों बाजु भ० उत्पन्न होवे पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व द० दया केलिये प० पडती हुई त० वहां मु० वारंवार प० मूके ॥४७॥ त० तब मैं० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी को पा० देखकर म० मेरी अं० पास से म० धीमे धीमे प० पीछा जाकर ज० जहां वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी ते० तहां उ० आकर वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी को ए० ऐसा व० बोला किं० क्या भ० तुम मु० मुनि म० यति उ० अथवा जू० यूका म०

सूत्र

अभिणिस्सवेति पाणभूयजीवसत्तदयट्ठयाए, पडियं पडियाओ २ तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चोरुभइ ॥ ४७ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं पासइ, पासइत्ता ममं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कइत्ता जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता वेसियायणं बालतवस्सिं एवं वयासी-किं भवं मुणी मुणीए उदाहु जूया सेज्जायरए ? तएणं से वेसियायणे बाल-

भावार्थ

के ताप से तप्त यूकाओं उन के बालों में से चारों तरफ नीचे गिरती थी. प्राण, भूत, जीव व सत्त्व की दया देख कर उन नीचे गीरी हुई यूकाओं को उठाकर अपने मस्तक में वारंवार रखता था ॥ ४७ ॥ वहां पर मंखलीपुत्र गोशाला वैशायन बाल तपस्वी को देखकर शनैः २ मेरी पास से पीछे गया. और वैशायन बाल तपस्वी की पास जाकर ऐसा बोला क्या तू मुनि तपस्वी है, यति है, कदाग्रही है अथवा यूकाओं का

शब्दार्थ

निर्गुणी णि० मर्यादाबिना के णि० प्रत्याख्यान रहित पो० पोषध उ० उपवास का० काल के अवसर में का० काल करके इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में उ० उत्कृष्ट सा० सागरोपम ठि० स्थिति वाले ण० नरक में णे० नारकीपने उ० उत्पन्न होवे स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर वा० कहते हैं उ० उत्पन्न होवे उ० उत्पन्न हुवा व० कहना ॥ ४ ॥ अ० अथ भं० भगवन् सी० सिंह व० व्याघ्र ज० जैसे उ० उत्सर्पिणी उ० उद्देशा में जा० यावत् प० पराशर णि० निःशील ए० ऐसे ही जा० यावत् व० कहना

सूत्र

णिम्मेरा, णिप्पच्चक्खाण पोसहोववासा कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठिइयंसि णरगंसि णेरइयत्ताए उववज्जेजा ? समणे भगवं महावीरे वागरेइ उववज्जमाणे उववण्णेत्ति वत्तव्वं सिया ॥ ४ ॥ अह भंते ! सीहे वग्घे जहा उस्सप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे एएसिं णिस्सीला एवं-चेव जाव वत्तव्वं सिया ॥ ५ ॥ अह भंते ! ढंके कंके विलए मड्डुए सिखीए एएणं णिस्सीला

भावार्थ

शील, व्रत, गुण मर्यादा प्रत्याख्यान व पौषधोपवास रहित काल करे तो इस रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्कृष्ट एक सागरोपमकी स्थिति में क्या नरकमें नारकीपने उत्पन्न होवे ? श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने उत्तर दिया कि उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न हुए भी हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सिंह, व्याघ्र वगैरह जो सातवें शतक के छठे उद्देश में कहे वैसे वे शीलादि व्रत प्रत्याख्यान रहित यावत् नरक में उत्पन्न होते हैं ॥ ५ ॥ अहो

शब्दार्थ ते॰ तेजस स॰ समुद्घात स॰ करके स॰ सात आठ प॰ पद प॰ पीछा जाकर गो॰ गोशाला मं॰ मखलि पुत्र के व॰ वध केलिये स॰ शरीर ते॰ तेज णि॰ निकाला ॥ ४२ ॥ त॰ तब अ॰ मैं गो॰ गौतम गो॰ गोशाला मं॰ मंखलिपुत्र की अं॰ अनुकंपा अर्थ वे॰ वैश्यायन बा॰ बालतपस्वी की उ॰ ऊष्ण ते॰ तेजो लेश्या प॰ दूर करने को अं॰ बीच में सी॰ शीतल ते॰ तेजो लेश्या णि॰ णिकाली जा॰ जिस से म॰ मेरी सी॰ शीतल ते॰ तेजो लेश्या से वे॰ वैश्यायन बा॰ बालतपस्वी की उ॰ ऊष्ण ते॰ तेजोलेश्या प॰ दूरहुइ

सूत्र हणइ, समोहणइत्ता सत्तट्ठ पयाइ पचोसक्कइ २ त्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वहाए सरीरगं तेयं णिसिरइ ॥ ४९ ॥ तएणं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलि पुत्तस्स अणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स सा उसिण तेयलेस्सा तेय पडिसाहरणट्ठयाए, एत्थणं अतरा अहं सीयलियं तेयलेस्सं णिसिरामि, जाए सा ममं सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स सा उसिणतेयलेस्सा पडिहया

भावार्थ नीकलकर तेजस समुद्घात बनाइ. सात, आठ पांव पीछे जाकर मंखलीपुत्र गोशाला के वध के लिये शरीर में से तेजो लेश्या नीकाली ॥ ४९ ॥ अहो गौतम ! उस समय मंखली पुत्र गोशाला की दया के लिये वैश्यायन बाल तपस्वी की ऊष्ण तेजो लेश्या के तेज का संहारन करनेको बीच में मैंने शीतल लेश्या नीकाली जिस से वैशायन बाल तपस्वी की ऊष्ण लेश्याका घात हुवा. अर्थात् यह लेश्या दूर हुई॥५०॥मेरी

कायव्वा सेसं तं चेव ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियं मणुस्साणय जहा वाउकाइयाणं; असुरकुमार नागकुमार जाव सहस्सार देवाणं एएसि जहा रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं,नवरं सव्वबंधंतरं जस्स जा ठिई जहन्निया सा अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा सेसं तं चेव ॥२४॥ जीवस्सणं भंते आणयदेवत्ते नो आणय देवत्ते पुच्छा ? गोयमा!

भावार्थ जीव उत्पन्न होते हैं इस से दो समय कम ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि अंतर्मुहूर्त के अनेक भेद होते हैं और उत्कृष्ट का पहिले जैसे कहना देश बंधका अंतर का जघन्य अंतर्मुहूर्त रत्नप्रभामें से देश बंधवाला नारकी चवकर तिर्यंच में अंतर्मुहूर्त तक रहकर फीर रत्नप्रभा में उत्पन्न होवे वहां दूसरे समय में देश बंधक होवे और उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति काल जैसे. ऐसे ही सातवी पृथ्वी तक का जानना. उस में जिन को जितनी स्थिति होवे उस से एक अंतर्मुहूर्त अधिक जघन्य सर्व बंध का काल जानना, शेष पहिले जैसे कहना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य का वायुकाय जैसे कहना. असुरकुमार नागकुमार यावत् सहस्रारदेवलोकतक में रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी जैसे जानना. सर्व बंध का अंतर में जघन्य जितनी स्थिति होवे उस से एक अंतर्मुहूर्त अधिक जानना. ॥ २४ ॥ आणत देवलोक में सर्वबंध का अंतर जघन्य प्रत्येक वर्ष अधिक अठारह सागरोपम क्योंकि इन में से चवकर प्रत्येक वर्ष पर्यंत मनुष्य में रहे सिवाय फीर वहां उत्पन्न नहीं होसकता

शब्दार्थ बोला से० वह म० जाना ए० यह भ० भगवन् ॥ ५२ ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र को ए० ऐसा व० बोला तु० तुम गो० गोशाला वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी को पा० देखकर म० मेरी अं० पास से स० धीमे धीमे प० पीछा जाकर जे० जहां वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी ते० तहां उ० जाकर वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी को ए० ऐसा व० बोले कि० क्या भ० तुम मु० मुनि मु० यति उ० अथवा जू० यूका से० शय्यान्तर त० तब से० वह वे० वैश्यायन बा० बालतपस्वी त० तुमारा ए० इस अर्थ णो० नहीं आ० आदर किया णो० नहीं प० अच्छा जाना तु० शान्त मं० रहे त०

सूत्र भगवं ! गयगयमेयं भगवं ! ॥ ५२ ॥ तएणं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-तुमणं गोसाला ! वेसियायण बालतवस्सिं पासइ, पासइत्ता ममं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कइ जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छइ उवा-गच्छइत्ता वेसियायणे बालतवस्सिं एवं वयासी-किं भवं मुणी मुणीए उदाहु जुया सेज्जायरए ॥ तएणं से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्ठं णो आढाइ णो परि-

भावार्थ मंखली पुत्र गोशाला मुझे ऐसा बोला कि अहो भगवन् ! यह यूकाशय्यांतर आप को ऐसा क्यों कहता है कि मैंने जाना. अहो भगवन् ! मैंने जाना ॥ ५२ ॥ अहो गौतम ! उस समय मैं मंखली पुत्र गोशाला को ऐसा बोला कि अहो गोशाला ! वैश्यायन बालतपस्वी को देखकर तुम मेरी पास से शनैः नीकलकर

शब्दार्थ

से० वह के० कैसे भं० भगवन् भ० भविक द्रव्यदेव भ० भविक द्रव्यदेव गो० गौतम जे० जो भ० भविक पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव में उ० उत्पन्न होने वाले से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है १० भविक द्रव्यदेव से० वह के० कैसे न० नरदेव गो० गौतम जे० जो रा० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती उ० उत्पन्न स० समस्त च० चक्ररत्न प० प्रधान ण० नवनिधि स० समृद्धि को० कोश ब० बत्तीस रा० राजा व० प्रधान म० सहस्र अ० सेवा करने वाले सा० सागर मे०

मूल

भवियदव्वदेवा ? भवियदव्वदेवा गोयमा ! जे भविय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएवा मणुस्सेवा देवेसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ भवियदव्वदेवा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नरदेवा ? नरदेवा गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरंत चक्कवट्टी उप्पण्ण सम्मत्त चक्करयणप्पहाणा णवणिहि पइणो समिद्धकोसा, बत्तीसं रायवर सहस्साणुयायमग्गा, सागरवर मेहिलाहिवतिणो मणुस्सिंदा, से तेणट्ठेणं जाव

भावार्थ

४ देवाधिदेव भं० ५ भावदेव ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! भविकद्रव्य देव क्यों कहा गया ? अहो गौतम ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य में इनों का आयुष्य बांधकर देवलोक में उत्पन्न होने को योग्य होता है वह भविक द्रव्यदेव कहाता है अहो भगवन् ! नरदेव किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! जो समस्त भरत क्षेत्र का राजा, चारों दिशा का चक्रवर्ती, चक्ररत्नादि सात एकेन्द्रिय व सेनापति आदि सात पंचेन्द्रिय

मि० मुझ प० छोडकर अ० यह मि० मिथ्यावादी भ० होवो त्ति० ऐसा कर के म० धाम धाम प० पीछा जाकर जे० जहां से० वह ति० तिल का वृक्ष ते० तहां उ० आकर जा० यावत ए० एकांत में ए० डाले त० तत्क्षण गो० गोशाला दि० दीव्य अ० वर्षा के बद्दल पा० उत्पन्न हुवे त० तब से० वह दि० दीव्य अ० वर्षा के बद्दल खि० शीघ्र तं० तैसे जा० यावत ति० तिलके वृक्ष की ए० एक ति० तिलसींग में से स० सात ति० तिल प० उत्पन्न हुवे, तं० इसलिये गो० गोशाला से० वह ति० तिलका वृक्ष णि० उत्पन्न

रोयसि, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे ममं पणिहाय अयंणं मिच्छावादी भवउत्ति कट्टु ममं अंतियाओ सणियं सणियं पचोसक्काइ, पचोसक्काइत्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता जाव एगंतमंते एडेसि, तक्खणमेत्तं गोसाला ! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए, तएणं से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव तंचेव जाव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्ततिला पच्चायाता तं एमणं

तेरी श्रद्धा प्रतीति व रुचि हुइ नहीं और इस तरह श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं होने से मैं मिथ्यावादी होऊं ऐसा विचार कर मेरी पास से तू शनैः २ पीछा गया और तिल स्तंभ की पास जाकर उसे मूल में से उखेड कर अलग डाल दिया. अहो गोशाला ! उसी क्षण में दीव्य अभ्रबद्दल हुए और उस में पानी पडा यावत् तिलस्तंभ की एक तिल फली में सात तिलपने उत्पन्न हुए. अहो गौतम !

शब्दार्थ

मे तं० उस ति० तिलकी सींग को खु० तोडकर क० हथेली में स० सात तील प० नीकाले ॥ ५९ ॥ त० तब त० उस गो० गोशाला को ते० उन स० सात तिल ग० गीनते अ० ऐसा अ० चितवन आ० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे ख० खलु स० सर्व जीव प० परिवर्तन प० परिहार प० परिहरते हैं ॥ ६० ॥ ए० यह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र का प० परिवर्तन ॥ ६१ ॥ ए० यह गो० गौतम गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र का म० मेरी अ० पास से आ० आत्मा से अ० अवक्रमण प० प्ररूपा ॥ ६२ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र ए० एक स० नख सहित कु० उडद पिं० पिण्ड से

सूत्र

लंसि सत्ततिले पप्फोडेइ ॥ ५९ ॥ तएणं तस्स गोसालस्स ते सत्ततिले गणेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु सव्वजीवावि पउट्ट परिहारं परिहरंति ॥६०॥ एसणं गोयमा! ~~गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स पउट्टे~~॥६१॥ एसणं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ममं अनियाओ आयाओ अवक्कमणे पण्णत्ते ॥ ६२ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते एगाए सणयाए कुम्मासपिंडियाए एगेणय वियडासएणं

भावार्थ

और उस की फली तोडकर सातों तिल अलग किये ॥ ५९ ॥ इस तरह सात तिल गिनते हुवे गोशाला को ऐसा अध्यवसाय हुवा कि सब जीव मरकर उस ही योनि में उत्पन्न होते हैं ॥ ६० ॥ अहो गौतम ! मंखली पुत्र गोशाला का यह परिवर्तनवाद जानना ॥ ६१ ॥ अहो गौतम ! यही मंखली पुत्र गोशाला का मेरी पास से दूर होने का कहा ॥ ६२ ॥ अब मंखली पुत्र गोशाला मुष्टि प्रमाण उडीद के

शब्दार्थ के० कैसे भा० भावदेव गो० गौतम जे० जो भ० भवनपति वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक दे० देव दे० देवगति णा० नाम गो० गोत्र क० कर्म वे० वेदते हैं से० वह ते० इसलिये जा० यावत् भा० भावदेव ॥ २ ॥ सरल शब्दार्थ

सूत्र वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया देवा देवगइनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति से तेणट्ठेणं जाव भावदेवा ॥ २ ॥ भवियदव्वदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति- किं णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-मणुस्स देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णेरइएहिंतो उववज्जंति तिरि-मणु-देवेहिंतो उववज्जंति ॥ भेदो जहा वक्कंतीए, सव्वेसु उववातेयव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, णवरं असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमिग अंतरदीव सव्वट्ठ

भावार्थ अरिहंत भगवंत होते हैं वे देवाधिदेव कहाते हैं. अहो भगवन्! भावदेव किसे कहते हैं? अहो गौतम! जो भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषि व वैमानिक देव देवगति, नाम, गोत्र के कर्म वेदते हैं वे भावदेव कहाते हैं. यह दूसरा लक्षण द्वार हुआ ॥ २ ॥ अहो भगवन्! भविक द्रव्य देव कहां से उत्पन्न होते हैं क्या नरक से उत्पन्न होते हैं तिर्यंच, मनुष्य व देव में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! भविक द्रव्य देव नरक में से, तिर्यंच में से, मनुष्य व देव में से उत्पन्न होते हैं. इसका विशेष खुलासा पन्नवणा के छठा पद में कहा है वैसे कहना यावत् अनुत्तर विमान तक के देव उत्पन्न होते हैं. परंतु असंख्यात वर्ष की स्थितिवाले अकर्म

कहता वि० विचरता है ॥६४॥ त० तब सा० वह म० बहुतबडी प० परिषदा स० जैसे सि० शिव जा० यावत् प० पीछी गई ॥ ६५ ॥ त० तब सा० श्रावस्ती ण० नगरी के सिं० शृंगाटक जा० यावत् ब० बहुत मनुष्य अ० अन्योन्य जा० यावत् प० प्ररूपते हैं दे० देवानुप्रिय गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र जि० जिन जि० जिन प्रलापी वि० विचरता है तं० वह मि० मिथ्या स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० प्ररूपते हैं त० उस गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र का

सूत्र पुरो जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ । गोसालेणं मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी जाव पगासमाणे विहरइ ॥ ६४ ॥ तएणं सा महइ महालिया महच्च परिसा जहा सिवे जाव पडिगया ॥ ६५ ॥ तएणं सावत्थीए णयरीए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्सजाव परूवेइ-जेणं देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी विहरइ तं मिच्छा ॥ समणे भगवं महावीरे एवमा-

भावार्थ जिन जिन प्रलापी यावत् जिन शब्द प्रकाश करनेवाला नहीं है परंतु अजिन होने पर जिन का प्रलाप करता हुआ विचरता है ॥ ६४ ॥ और वह बडी परिषदा पीछी गई जिस का कथन शिवराजर्षि जैसे कहना ॥ ६५ ॥ अब श्रावस्ती नगरी के शृंगाटक यावत् महापथ में बहुत मनुष्यों परस्पर ऐसा

पास ए० यह अ० अर्थ सो० सुनकर णि० अवधार कर आ० क्रोधायमान हुवा जा० यावत् मि० देदीप्यमान हुवा आ० आतापना भू० भूमि से प० उतर कर सा० श्रावस्ती ण० नगरी की म० मध्य से जे० जहां हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी की कुं० कुंभकार की आ० दुकान ते० वहां उ० आकर कुं० कुंभकारिणी की कुं० कुंभकार की० दुकान में आ० आजीविक सं० संघ से पं० घेराया हुवा म० बहुत अ०

सूत्र

समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासमाणे विहरइ ॥६५॥ तएणं गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभइत्ता सावत्थिं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं

भावार्थ

प्रलापी नहीं है परंतु अजिन व अजिन प्रलापी है और श्री श्रमण भगवंत महावीर जिन व जिन प्रलापी है. ॥ ६६ ॥ बहुत मनुष्यों की पास से ऐसा सुनकर मंखली पुत्र गोशाला आसुरक्त हुवा यावत् दांत पीसने लगा और आतापना भूमि में से आकर श्रावस्ती नगरी की बीच में होता हुवा हालाहला कुंभकारी

सूत्र

भाणियव्वा जहा दवियाताए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगाताएवि उवरि-
ल्लाहिं समं भाणियव्वा जस्स णाणाया तस्स दंसणाया णियमं अत्थि, जस्स पुण
दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए ॥ जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि

भावार्थ

जैसे कषाय आत्मा को चारित्रात्मा क्वचित् है कषायी साधुवत् और कषायात्मा को चारित्रात्मा नहीं भी है संसारीवत्. चारित्रात्मा को कषायात्मा की भजना है क्यों की उपशांत व क्षीण कषायी को चारित्र है परंतु कषाय नहीं है. और सकषायी अनगार को कषाय व चारित्र दोनों होते हैं. कषायात्मा व योगात्मा का जैसे कहा वैसे कषायात्मा व वीर्यात्मा का जानना अर्थात् कषायात्मा को वीर्यात्मा अवश्यमेव होता है और वीर्यात्माको कषायात्मा की भजना है क्यों कि कषाय मात्र दशवा गुणस्थान पर्यंत है यह कषायात्मा की साथ छ आत्मा का कहा. जैसे कषायात्मा की वक्तव्यता कही वैसे ही योगात्मा की वक्तव्यता उपर के पांच आत्मा की साथ कहना अर्थात् योगात्मा को उपयोगात्मा अवश्यमेव होता है और उपयोगात्माको योग आत्मा की भजना अयोगी सयोगीवत्. समदृष्टि योगात्मा को ज्ञानात्मा होता है और मिथ्यादृष्टि योगात्मा को ज्ञानात्मा नहीं होता है, और सयोगी ज्ञानात्मा को योगात्मा होता है और अयोगी ज्ञानात्मा को योगात्मा नहीं है इस से दोनों की परस्पर भजना है. योगात्मा को दर्शनात्मा नियमा है दर्शन शून्य आत्मा नहीं होने से और दर्शनात्मा को योगात्मा की भजना है अयोगी अवस्था में. योगात्मा को

शब्दार्थ पावत् उ० ऊंच नी० नीच म० मध्य जा० यावत् अ० फीरते हा० हालाहला कुं० कुंभकारी की अ० नजदीक से वी० गया ॥ ६९ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र आ० आनंद थे० स्थविर को हा० हाला हला कुं० कुंभकारिणी के कुं० कुंभकारावासकी अ० नजदीक वी० जाते पा० देखे पा० देखकर ए० ऐसा व० बोला ए० आव आ० आनंद इ० यहां ए० एक म० बडा उ० दृष्टान्त णि० सुन ॥ ७० ॥ त० तब से० वह आ० आनंद थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र से ए० ऐसा

सूत्र तहेव जाव उच्चणीय मज्झिम जाव अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीईवयइ ॥ ६९ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीईवयमाणं पासइ, पासइत्ता एवं वयासी-एहि ताव आणंदा ! इओ, एगं महं उवमियं णिसामेह ॥ ७० ॥ तएणं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्तेसमाणे जेणेव हालाहलाए कुभका-

भावार्थ कुंभकार की दुकान की पास आते थे. ॥ ६९ ॥ मंखली पुत्र गोशाला आनंद स्थविर को हालाहला कुंभकारी की कुंभकार शाला की पास जाते हुवे देखकर ऐसा बोला कि अहो आनंद ! तुम यहां आओ, मैं तुम को एक बडी उपमा (दृष्टांत) कहूं ॥ ७० ॥ अब मंखलीपुत्र गोशाला आनंद स्थविर को ऐसा

वि० विहार धर्म गो० गौतम भं० भंते पु० पुरुष म० सर्व आराधक प० प्ररूपा त० तहां जे० जो च० चौथा पु० पुरुष आर० से० वह पु० पुरुष अ० अशीलवन्त अ० अश्रुतवन्त अ० अनुपरत अ० अविज्ञात धर्म गो० गौतम भं० भंते पु० पुरुष स० सर्व विराधक प० प्ररूपा ॥ १ ॥ क० कितनेक प्रकार की भं० भगवन् आ० आराधना प० प्ररूपी गो० गौतम ति० तीन प्रकार की आ० आराधना प० प्ररूपी तं० वह

चउत्थे पुरिसजाए से णं पुरिसे अशीलवं असुतवं अणुवरए अविण्णायधम्मे एसणं गोयमा! मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते ४ तत्थणं जे से चउत्थे पुरिसजाए सेणं पुरिसे असीलवं असुतवं अणुवरए अविण्णाय धम्मे एसणं गोयमा! मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते॥ १॥कइविहाणं भंते! आराहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तंजहा नाणाराहणा,

ज्ञानवन्त है वह पाप से निवर्ता नहीं परंतु धर्म का स्वरूप उनोंने जाना है इन से वह ज्ञानादि पंथ रूप में देश विराधक हुवा जो तीसरा भांगावाला क्रियावंत व ज्ञानवंत है वह पाप से निवर्ता है, और उसने श्रुत धर्म भी जाना है. अहो गौतम ! वह पुरुष सर्वाराधक होता है और जो चौथा भांगावाला शिल व श्रुत रहित है वह पुरुष पाप से निवर्ता नहीं है और उनोंने धर्म का स्वरूप जाना नहीं है अहो गौतम ! वैसा पुरुष सर्व विराधक होता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! आराधना कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! आराधना तीन प्रकार की कही. १ ज्ञानाराधना-ज्ञानादि पांचों ज्ञान की

शब्दार्थ

कालवाली अ० अटवि में अ० प्रवेश किया किया॥७२॥ त० तब से० उन व० वणिकों का तीं० उस अ० ग्राम रहित छि० पथरहित दी० दीर्घकालवाली अ० अटवि का किं० थोडाभाग को अ० नहीं प्राप्तहोते पु० पहिले ग० लियाहुवा उ० पानी अ० अनुक्रम से प० भोगवते खी० संपूर्ण हुवा त० तब ते० वे व० वणिक खी० क्षीण उदकवाले त० तृष्णा से प० पराभवपाये अ० अन्योन्य स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय अ० अपन इ० इस अ० ग्रामरहित जा० यावत् अ० अटवि का किं० किंचित् दे० देशको अ० प्राप्तहोते पु० पहिले

सूत्र

॥७२॥ तएणं तेसिं वणियाणं तीसे अगामियाए अणोहियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए किंचिदेसं अणुप्पत्ताणं समाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे २ खीणे ॥ तएणं से वणिया खीणोदगासमाणा तण्हाए परिब्भवमाणा अण्णमण्णे सद्दावेंति सद्दावेत्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए किंचिदेसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं

भावार्थ

पास पानी साथ लेकर ग्राम नहीं होवे वैसी, पहाडों व वृक्षों से भरपूर, रस्ता मालूम पडे नहीं वैसी बडी अटवि में पैठे. ॥ ७२ ॥ अब ऐसी ग्राम रहित, रस्ता बिना की व बहुत लम्बी अटवी में थोडा गये पीछे वणिकों की पास पहिले लिया हुवा पानी भोगते हुवे क्षीण होगया. अब उन की पास पानी नहीं होने से तृषा से पीडित होते हुवे परस्पर बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! अपन इस ग्राम रहित यावत् महान अटवि के

सूत्र

सियआया, १ सियणोआया, २ सियअवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय ३, सिय आयाय णो आयाय ४, सियआयाय णो आयाओय ५, सियआयाओय णो आयाय ६, सिय-आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ७, सिय आयाय अवत्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय ८, सिय आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ९, सिय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १०, सिय णो आयाय अवत्तव्वाइं

भावार्थ

मीला हुवा द्विप्रदेशात्मक स्कंध आत्मा इति अनात्मा इति होने से आत्मा की अवक्तव्यता है और ६ एक देश असद्भाव पर्यायवाला है और दूसरा देश उभय पर्यायवाला है इस से नो आत्मा की अवक्तव्यता होती है. इस से अहो गौतम ! उक्त छ भांगे द्विप्रदेशिक स्कंध आश्री कहे हैं. अहो भगवन् ! आत्मा त्रिप्रदेशिक स्कंध है या अन्य त्रिप्रदेशिक स्कंध है ? अहो गौतम ! त्रिप्रदेशिक स्कंध में तेरह भांगे होते हैं. १ त्रिप्रदेशिक स्कंध क्वचित् आत्मा २ क्वचित् अनात्मा ३ क्वचित् अवक्तव्य ४ क्वचित् एक वचन से आत्मा और क्वचित् एक वचन से अनात्मा ५ क्वचित् आत्मा एक वचन से अनात्मा अनेक वचन से ६ क्वचित् आत्मा पृथक्त्व वचन से अनात्मा एक वचन से ७ क्वचित् एक वचन से आत्मा इति अनात्मा इति एक वचन में अवक्तव्य ८ क्वचित् अनेक वचन से आत्मा इति अनात्माइति एक वचन में आत्मा अवक्तव्य ९ क्वचित् एक वचन में आत्माइति अनात्माइति आत्मा पृथक्त्व वचन में अवक्तव्य १० एक

मे० श्रेय दे० देवानुप्रिय अ० हम को इ० इस वल्मीक की च० चौथी व० शिला भि० भेदने को अ० अपिच इ० इस में उ० उत्तम म० महर्घ्य म० महामर्यादनवाला म० महायोग्य उ० प्रधान व० वज्ररत्न अ० प्राप्त करेंगे त० उस समय ते० उन व० वणिकों में ए० एक व० वणिक हि० हितकाकामी सु० सुख का कामी प० पथ्य का कामी अ० अनुकंपा वाला णि० निश्रेय वाला हि० हित सु० सुख नि० निश्रेय के का० इच्छक ते० उन व० वणिकों को ए० ऐसा व० बोला ए० ऐसा दे० देवानुप्रिय अ० अपन को इ० इस व० वल्मीक की प० प्रथम व० शिला भि० भेदने से उ० उदार उ० उदकरत्न

सूत्र खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स चउत्थंपि वप्पं भिंदित्तए अवियाइं इत्थं उत्तमं महग्घं महत्थं महरिहं उरालं वइररयणं अस्सादेस्सामो ॥ तएणं तेसिं वणियाणं एगे वणिए हियकामए, सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए, णिस्सेयसिए हियसुहणिस्सेसकामए तं वणिए एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्सवम्मीयस्स पढमाए वप्पाए भिण्णाए उरालं उदगरयणे जाव तच्चाए वप्पाए

भावार्थ वज्ररत्न की प्राप्ति होगी. उस समय उन वणिकों में से हित, सुख, पथ्य की इच्छावाला, अनुकंपावाला, मोक्ष का वांच्छक व हित, सुख व मोक्ष का वांच्छक एक वणिक उन अन्य सब वणिकों को बोला कि ... अपन को उदक रत्न की प्राप्ति हुई यावत्

शब्दार्थ चारों तरफ स० देखाया हुवा खि० शीघ्र भं० भंड म० पात्र उ० उपकरण आ० लेकर ए० एक आ० प्रहार कू० कूट का आ० प्रहार भा० भस्म क० किया हुवा हो० था ॥ ७७ ॥ त० उस में जे० जो से० वह व० वणिक ते० उन व० वणिकों का हि० हित इच्छने वाला जा० यावत् हि० हित सु० सुख नि० कल्याण का० इच्छने वाला से० वह अ० अनुकंपा सहित दे० देवता से म० भंड सहित म० पात्र उ० उपकरण आ० लेकर णि० स्वतः के ण० नगर में सा० पहुंचाया ॥ ७८ ॥ ए० ऐसे ही आ० आनंद त० तेरा ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण णा० ज्ञातपुत्रने उ० उदार प० पर्याय आ० प्राप्त

सूत्र सव्वेणं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोयासमाणा खिप्पामेव भंडमत्तो-वगरण मायाए एगाहच्चं कूडाहच्चं भासिरासीकयायावि होत्था ॥ ७७ ॥ तत्थणं जे से वणिए तेसिं वणियाणं हियकम्मए जाव हियसुहणिस्सेसकामए सेणं अणुकंपियाए देवताए सभंडमत्तोवगरण मायाए णियगं णयरं साहिए ॥ ७८ ॥ एवामेव आणंदा ! तववि धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं णायपुत्तेणं उराले परियाए

भावार्थ सब वणिक अपने भंडोपकरण सहित कूटाकार समान भस्मीभूत होगये ॥ ७७ ॥ अब उन में से जो अन्य वणिक हित, सुख, पथ्य यावत् कल्याण का कामी था उन की अनुकंपा करके देवताने भंडोपकरण सहित उन को अपने गांव पहुंचा दिया ॥ ७८ ॥ अहो आनंद ! वैसे ही तेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक श्रमण

सूत्र

ब्भाव पज्जवा तिपदेसिए खंधे आयाए णो आयाओय ५, देसा आदिट्ठा सब्भाव पज्जवा, देसे आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाओय णो आयाए ६, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभय पज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाए अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ७, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभय पज्जवा तिपदेसिए खंधे आयाए अवत्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय ८, देसा आदिट्ठा सब्भाव पज्जवा, देसे आदिट्ठे तदुभय पज्जवे, तिपदेसिए खंधे आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय। एए तिण्णि भंगा ९ ॥ देसे

भावार्थ

स्वपर्याय अनेक देश आश्री परपर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा ६ अनेक देश आश्री सद्भाव पर्याय एक देश आश्री पर पर्याय तीन प्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा ७ देश आश्री स्वपर्याय और देश आश्री उभयपर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध एक वचन में आत्मा नो आत्मा इति एकवचनसे अवक्तव्य ८ एक देश आश्री स्वपर्याय और अनेक देश आश्री उभय पर्याय दोनों से आत्मा अवक्तव्य है ९ अनेक देश आश्री स्वपर्याय एक देश आश्री उभय पर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा अवक्तव्य १० देश आश्री परपर्याय देश आश्री उभय पर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध नो आत्मा अवक्तव्य ११ देश आश्री परपर्याय अनेक देश

शब्दार्थ वणिक का हि० हित का कामी जा० यावत् नि० निश्रेय का कामी अ० अनुकंपा से दे० देवता ने स० भंड सहित जा० यावत् सा० पहुंचाया ॥ ८० ॥ तं० इसलिये ग० जा तु० तुम आ० आनंद ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण णा० ज्ञातपुत्र को ए० यह अ० बात प० कहो ॥ ८१ ॥ त० तब से० वह आ० आनंद थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र से ए० ऐसा वु० कहाया भी० डरा जा० यावत् सं० भयभीत वाला गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र की अं० पास से ह० हालाहला कुं० कुंभकारिणी के कुं० कुंभकार की आ० दुकान में से प० नीकलकर सि० शीघ्र तु० त्वरित सा० श्रावस्ति न० नगरी की

सूत्र तेसिं वणियाणं हियकामए जाव णिस्सेसकामए अणुकंपियाए देवयाए सभंड जाव साहिए ॥ ८० ॥ तं गच्छहणं तुमं आणंदा ! धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स णायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि ॥ ८१ ॥ तएणं से आणंदे थेरे गोसालेण मंखलि-पुत्तेणं एवं वुत्तसमाणे भीए जाव संजायभए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अतियाओ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमइत्ता सिग्घं तुरियं

भावार्थ परंतु अहो आनंद ! जैसे उस देवताने अनुकंपा से हित यावत् कल्याण इच्छनेवाला उस वणिक की रक्षा की थी वैसे मैं तेरी रक्षा करूंगा ॥ ८० ॥ अहो आनंद ! तू तेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक की पास जा और इस बात को कहे ॥ ८१ ॥ मंखली पुत्र गोशाला से ऐसा सुनने से आनंद स्थविर डरे यावत् भय

मते ! वियाहिया ? एवं चेव निविहावि ॥ एवं चरित्ताराहणावि ॥ २ ॥ जस्सणं भंते उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा ? गोयमा ! जस्स उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसा वा, अजहण्णमणुक्कोसावा, जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा जहण्णावा अजहन्नमणुक्कोसावा । जस्सणं भंते! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा, जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया

भावार्थ

आराधक होवे इस पुष्ट पंथे ही चारित्र आराधक के भी तीन भेद होते हैं १ उत्कृष्ट चारित्र आराधक यथाख्यात चारित्र होवे मध्यम चारित्राराधक सामायिकादि में प्रशस्त परिणामी होवे और ३ जघन्य चारित्राराधक सामायिकादि चारित्र शिथिलता पूर्वक पाले ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जिस को उत्कृष्ट ज्ञान आराधना होती है उस को क्या उत्कृष्ट दर्शन आराधना होती है अथवा जिस को उत्कृष्ट दर्शन आराधना होती है उस को क्या उत्कृष्ट ज्ञान आराधना होती है ? अहो गौतम ! जिस को उत्कृष्ट ज्ञान आराधना होती है उस को उत्कृष्ट दर्शन आराधना और मध्यम दर्शन आराधना होती है और जिस को उत्कृष्ट दर्शन आराधना होती है उस को जघन्य, उत्कृष्ट व मध्यम ज्ञान आराधना होती है अहो भगवन् ! जिस को उत्कृष्ट ज्ञान आराधना होती है उस को क्या चारित्र आराधना

सूत्र

तंचेव जाव णो आयातिय ॥ आया भंते ! चउप्पदेसिए खंधे अण्णं पुच्छा ? गोयमा! चउप्पदेसिए खंधे सिय आया १, सिय णो आया २, सिय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ३, सिय आयाय णो आयाय ४, सिय आयाय अवत्तव्वं ४, सिय णो आयाय अवत्तव्वं ४, सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १६; सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्वाइं आयाय णो आयाय १७, सिय आयाय णो आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १८, सिय आयाओय णो आयाय

भावार्थ

कदाचित् आत्मा नो आत्मा के एकवचन बहुवचन के ४, कदाचित् आत्मा अवक्तव्य के एकवचन अनेकवचन के ४, कदाचित् नो आत्मा अवक्तव्य के एकवचन अनेकवचन के ४, यों १२ भांग हुए १६ कदाचित् आत्मा, नो आत्मा व अवक्तव्य एकवचन में १७ कदाचित् आत्मा नो आत्मा एकवचन में और अवक्तव्य अनेक वचन में १८ कदाचित् आत्मा एकवचन नो आत्मा, बहुवचन और अवक्तव्य एक वचन और १९ कदाचित् आत्मा बहुवचन नो आत्मा व अवक्तव्य एक वचन में यों १९ भांग पाते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से चतुष्क प्रदेशिक स्कंध में उक्त १९ भांग पाते हैं ? अहो गौतम ! १ स्वपर्याय आश्री आत्मा २ पर पर्याय आश्री नो आत्मा ३ उभय पर्याय आश्री अवक्तव्य ४ देश से स्वपर्याय देश से पर पर्याय एसे चार भांग, स्वपर्याय व उभय पर्याय के एक वचन बहु वचन के चार भांग, ऐसे ही परपर्याय व उभय पर्याय के चार भांग मीलकर १९ भांग होते हैं

भंते ! चउप्पदेसिए खंध अण्णे पुच्छा ? गोयमा!

आय अवत्तव्वं, आयातिय णो आया मंणो आया २, सिय अवत्तव्वं आयातिय णो आया-
आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे आय अवत्तव्वं, आयातिय णो आय ४, सिय आयाय अवत्तव्वं ४, सिय णो आयाय
चउप्पदेसिए खंधे सिय आया सिय णोय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १६;
भंगा उच्चारयव्वा जाव णो आयातिय । से आयाय णो आयायं १७. सिय आयाय
खंधे ? गोयमा ! पंच पदेसिए खंधे सिय णो आयातिय १८, सिय आयाओय णो आयाय
णो आयातिय ३, सिय, आयाय णो ६, सिय
अवत्तव्व ९, सिय सजोगे एक्को न पडइ
गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स

भावार्थ

पर्याय चतुष्क प्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा अवक्तव्य क्वचित् आत्मा अवक्तव्य के एकवचन अनेकवचन के ४, के ४, यों १२ भांगे हुए १६ क्वचित् आत्मा, नो आत्मा व एकवचन में चार अवक्तव्य अनेक वचन में १८ क्वचित् आत्मा और १९ क्वचित् आत्मा बहुवचन नो आत्मा व अवक्तव्य
भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! आत्मा पांच प्रदेशिक स्कंध इस कारन से चतुष्क प्रदेशिक स्कंध में उक्त १९ भांगे पाते
शिक स्कंध में क्वचित् आत्मा क्वचित् नो आत्मा क्वचित् पर पर्याय आश्री नो आत्मा ३ उभय पर्याय आश्री
किस कारन से कहा है कि पांच प्रदेशिक स्कंध में स्व- चार भांग, स्वपर्याय व उभय पर्याय के एक वचन
पर पर्याय से नो आत्मा उभय पर्याय से अवक्तव्य देश- र्याय के चार भांग मीलकर १९ भांग होते हैं

सूत्र

संखेज्ज वित्थडा णरया किं सम्मद्दिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया, मिच्छद्दिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया ? गोयमा ! सम्मदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया मिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया सम्मामिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिय विरहियाः। एवं असंखेज्ज वित्थडेसुवि तिण्णि गमगा भाणियव्वा ! एवं सक्करप्पभाएवि । एवं जाव तमाएवि ॥ अहे सत्तमाएणं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव संखेज्ज वित्थडे णरए किं सम्मद्दिट्ठी णेरइया पुच्छा ? गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी णेरइया ण उववज्जंति, मिच्छद्दिट्ठी णेरइया

भावार्थ

वास में से संख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास क्या समदृष्टि से अविरहित हैं, मिथ्यादृष्टि से अविरहित हैं या समामिथ्यादृष्टि से अविरहित हैं ? अहो गौतम ! समदृष्टि नारकी से अविरहित हैं, मिथ्यादृष्टि नारकी से अविरहित हैं और समामिथ्यादृष्टि नारकी से विरहित, अविरहित दोनों प्रकार के नरकावास रहे हुवे हैं. संख्यात योजन के विस्तारवाले नारकी जैसे असंख्यात योजन के विस्तारवाले नारकी का कहना. जैसे रत्नप्रभा का कहा वैसे ही शर्कर प्रभा यावत् तम प्रभातक का जानना. सातवी तमतमप्रभा के पांच अनुत्तर नरकावास में यावत् संख्यात विस्तारवाले में नारकी क्या समदृष्टि उत्पन्न होते हैं वगैरह

सूत्र

ज्जेसु असुर कुमारावासेसु एगसमएणं केवइया असुरकुमारा उववज्जंति केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति, केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव वागरणं, णवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति, णपुंसग वेदगा ण उववज्जंति, सेसं तंचेव ॥ उव्वट्टंतगावि तहेव, णवरं असण्णी उव्वट्टंति, ओहिणाणी ओहिदंसणीय ण उव्वट्टंति, सेसं तंचेव पण्णत्ताएसु तहेव णवरं संखेज्जगा इत्थी वेदगा पण्णत्ता, एवं पुरिसवेदगावि, णपुंसगवेदगा णत्थि कोह कसायी सिय अत्थि सिय

भावार्थ

योजन के विस्तार वाले हैं और असंख्यात योजन के विस्तार वाले भी हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन्! असुरकुमार के चौसठ लाख आवास हैं उन में संख्यात योजन वाले आवास में एक समय में कितने असुरकुमार देव उत्पन्न होते हैं, कितने तेजो लेश्यावाले उत्पन्न होते हैं कितने कृष्णपाक्षिक उत्पन्न होते हैं? वगैरह ३९ प्रश्नों जो रत्नप्रभा आश्री पूछे हैं वे यहांपर भी जानना. उस का उत्तर भी वैसे ही जानना परंतु विशेषता इतनी कि इस में दो वेद उत्पन्न होते हैं नपुंसक नहीं उत्पन्न होते हैं. उद्वर्तन प्रश्न में भी वैसे ही कहना परंतु असंज्ञी उद्वर्ते हैं अवधिज्ञानी व अवधि दर्शनी नहीं उद्वर्ते हैं. तीसरा गमा विद्यमानता का भी वैसे ही कहना परंतु इस में संख्यात स्त्री वेदी कहे, ऐसे पुरुष वेदी. नपुंसक वेदी नहीं. क्रोध कषाय वाले हैं और वाले नहीं भी हैं जब हैं तब जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात कहे हैं ऐसे

शब्दार्थ पूर्वदिशा के अ० देश के स० सर्वानुभूति अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत ध० धर्माचार्य के अ० अनुराग से ए० इस बात को अ० नहीं श्रद्धता उ० उठकर जे० जहां गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र ते० वहां उ० आकर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र को ए० ऐसा व० बोला जे० जो केइ गो० गोशाला त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास से ए० एक भी आ० आर्य ध० धार्मिक सु० सुवचन णि० सुनता है से० वह भी तं० उसे वं० वंदना है ण० नमस्कार करता

सूत्र उट्ठेइत्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी जेवि ताव गोसाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं णिसामेइ सेवि ताव तं वंदइ णमंसइ जाव कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासइ ॥ किमंग पुण तुमं गोसाला ! भगवया

भावार्थ धर्म के सम्यक्त्व योग से तू नष्ट, भ्रष्ट हुआ है. अब मेरे से तुझे सुख नहीं है ॥ ९६ ॥ उस काल उस समय में पूर्व दिशा के देश का महावीर स्वामी का शिष्य प्रकृति भद्रिक यावत् विनीत सर्वानुभूति अनगार धर्म के अनुराग से इस अर्थ को नहीं श्रद्धता हुवा अपने स्थान से उठा, और जहां गोशाला था वहां गया. वहां आकर उस को ऐसा बोला कि अहो गोशाला ! जो कोई तथारूप श्रमण माहण की पास से पास एक आर्य धर्म के सुवचन अवधारते हैं वे भी उन को वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करते हैं; तो

शब्दार्थ म० मनुष्य के ए० एक रुक द्वी० द्वीप प० प्ररूपा गो० गौतम जं० जम्बूद्वीप में मं० मेरु पर्वत की दा० दक्षिण में चु० चुल्लहिमवन्त वा० वर्षधर प० पर्वत की उ० ईशान कोन के च० चरमान्त से ल० लवण समुद्र की उ० ईशान कोन में ति० तीन जो० योजनशत उ० अवगाहकर ए० तहां दा० दक्षिण के ए० एकरुक मनुष्य के ए० एक रुक द्वीप प० प्ररूपा ति० तीन जो० योजन श० शत आ० लंबा चौडा न० नव ए०गुण

सूत्र नामं दिवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवं-तस्स वासहर पव्वयस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं उत्तरपुरच्छिमेणं तिण्णि जोयण सयाइं उग्गाहित्ता एत्थणं दाहिणिल्लाणं एगूरुय मणुस्साणं एगूरुय दीवे नामं दीवे प० ॥ तिण्णि जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं नवएगूणवन्ने जोयणसए

भावार्थ ६. राजग्रही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के एकरुक मनुष्यों का एकरुक नामक द्वीप कहां है ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत की दक्षिण में भरत क्षेत्र की मर्यादा करनेवाला चुल्लहिमवंत नामक पर्वत है उस की ईशान कोन में से लवण समुद्र में तीनसो योजन जावे वहां दक्षिण दिशा के एक रुक मनुष्यों का एक रुक नामक द्वीप रहा हुवा है. यह तीन सो योजन का लम्बा चौडा व नवसो गुनपचास योजन की परिधि वाला है. इस द्वीप में एक पद्मवर वेदिका व एक वनखंड चारों तरफ

शब्दार्थ

अनगार गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र के त० तप ते० तेजसे प० पीडित जे० जहां स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० वहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को ति० तीन बार वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर स० स्वयमेव पं० पांच म० महाव्रत की आ०आराधना की स० साधु स० साध्वी को ख० खमाके खा० खमाकर आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण स० समाधि प्राप्त आ० अनुक्रम से का० काल किया ॥ १०२ ॥ त० तब मं० वह गो० गोशाला सु० सुनक्षत्र अ० अनगार को त० तप तेजसे प० पीडितकर के त० तीसरी वक्तभी स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को उ० ऊंचनीच

सूत्र

तवेणं तेएणं परितावेए समाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ णमंसइ, णमंसइत्ता सयमेव पंचमहव्वयाइं आरुहेइ, आरुहेइत्ता समणाय समणीओय खामेइ, खामेइत्ता आलोइय पडिकंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए ॥ १०२ ॥ तएणं से गोसाले

भावार्थ

वंत महावीर स्वामी की पास गये और उनको तीन वार वंदना नमस्कार कर स्वयमेव पांच महा व्रत की आराधना कर साधु साध्वीयों को खमाकर आलोचना प्रतिक्रमण करके सामाधि प्राप्त बना हुवा काल को

सूत्र

गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्ज-वित्थडाय ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडाय असंखेज्जवित्थडाय ॥ पंचगुणं भंते! अणुत्तरविमाणेसु संखेज्ज वित्थडे विमाणे एगसमए केवइया अणुत्तरोववाइया उववज्जंति,केवइया सुक्कलेस्सा उववज्जंति पुच्छा? नहव,गोयमा ! पंचसुणं अणुत्तर विमाणेसु संखेज्ज वित्थडेसु अणुत्तर विमाणे एगसमएणं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा अणुत्तरोववाइया उववज्जंति, एवं जहा गेविज्जग विमाणेसु संखेज्ज वित्थडेसु णवरं कण्ह पक्खिया अभवसिद्धिया तिसु अण्णाणेसु एए ण उववज्जंति, ण चयंति, णवि पण्णत्ताए भाणियव्वा अचरिमावि खोडिज्जंति, जाव संखेज्जा चरिमा पण्णत्ता, सेसं तंचेव

भावार्थ

अनुत्तर विमान कितने कहे हैं ! अहो गौतम ! अनुत्तर विमान पांच कहे हैं. अहो भगवन् ! क्या वे संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ! अहो गौतम ! संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं व असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं. अहो भगवन् ! पांच अनुत्तर विमान में संख्यात योजन के विस्तारवाले विमान में कितने अनुत्तरोपपातिक उत्पन्न होते हैं कितने शुक्ल लेश्यावाले उत्पन्न होते हैं वगैरह पृच्छा ! अहो गौतम! पांचों अनुत्तर विमानों में संख्यात योजन के विस्तारवाले अनुत्तर विमान में एक समय में जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट संख्यात अनुत्तरोपपातिक उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही

शब्दार्थ पा० मत ए० ऐसे गो० गोशाला जा० यावत् णो० नहीं अ० अन्य ॥ १०४ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर से ए० ऐसा वु० बोलाया आ० आसुरक्त ते० तेजस स० समुद्घात स० करके स० सात आठ प० पांव प० पीछा जाकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर का व० वध के लिये स० शरीर में से ते० तेज णि० नीकाला ॥ १०५ ॥ ज० जैसे वा० वात उ० उत्कलिक वा० वायु मं० मंडलिक से० पर्वत को कु० कुटको थं० स्तंभ को आ० स्खलना पाता

सूत्र एवं गोसाला ! जाव णो अण्णा ॥ १०४ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तेसमाणे आसुरुत्ते तेयासमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइत्ता सत्तटुपयाइं पचोसक्कइ, पचोसक्कइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगंसि तेयं णिस्सरइ ॥ १०५ ॥ से जहा णामए वाउक्कलियाइवा वाय मंडलियाइवा सेलंसिवा कुड्डंसिवा थंभंसिवा आवरिज्जमाणावा धूभंसि णिवारिज्जमाणावा

भावार्थ मत कर. ऐसा करना तुझे योग्य नहीं है. अहो गोशाला ! यह तेरी छाया है अन्य कुच्छ भी नहीं है ॥ १०४ ॥ जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ऐसा कहा तब मंखली पुत्र गोशाला आसुरक्त यावत् कोपित हुवा, तेजस समुद्घात करके सात आठ पांव पीछा गया और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का वधके लिये तेज नीकाला ॥ १०५ ॥ जैसे वातोत्कलिका अथवा मंडलिका वायु शैल, कूट व स्तंभ से स्खलना पाता

सूत्र

तेचेव ॥ १० ॥ सेणूणं भंते ! कण्हलेस्से णील जाव सुक्कलेस्से भवित्ता, कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति ? हंता गोयमा! एवं जहेव णेरइएसु पढमे उद्देसए तहेव भाणियव्वं, णीललेस्साएवि जहेव णेरइयाणं,जहा णील लेस्साए एवं जाव पम्हलेस्सेसु सुक्कलेस्सेसु एवं चेव, णवरं लेस्साट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु विसुज्झमाणेसु सुक्कलेस्सं परिणमइ, परिणमइत्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति. से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तेरसम सयस्सय वितिओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ २ ॥ + +

भावार्थ

कहना परंतु अनुत्तर विमान में मात्र एक समदृष्टिवाले उत्पन्न होते हैं, समदृष्टिवाले चवते हैं और समदृष्टि वाले जाते हैं. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कृष्णलेशी नीललेशी यावत् शुक्लेशी होकर क्या पुनः कृष्ण लेश्यावाले देवपने उत्पन्न होवे ? हां गौतम ! उत्पन्न होवे. इस का विशेष खुलासा पहिला नरक उद्देशा में कहा है. ऐसे ही सब पांचों लेश्या का जानना. विशेष में इतना कि लेश्या के स्थानक में विशुद्ध होता हुवा शुक्लेश्या के परिणामपने परिणमे. ... लेश्यावाले देव में उत्पन्न होवे. अहो गौतम इसलिये ... सत्य है. यह तेरहवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा. ॥ १३ ॥ २ ॥

शब्दार्थ हुवा स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ के स० शरीर को कि० किंचित् अ० अबाधा वि० व्याबाध उ० उत्पन्न करने को छ० चर्म छेद क० करने को ॥ ११२ ॥ त० तब आ० आजीविक थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र को स० श्रमण निर्ग्रंथ से ध० धार्मिक प० प्रतिचोयणा से प० चोयणा कराता हुवा ध० धार्मिक प० प्रतिसारणा कराता हुवा ध० धार्मिक प० प्रत्युपकार से प० प्रत्युपकार कराता हुवा अ० अर्थ हे० हेतु जा० यावत् की० करता आ० आसुरक्त जा० यावत् मि० दांत पीसता हुवा स० श्रमण

सूत्र मिसिमाणे णो संचाएइ ॥ समणाणं णिग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएत्तए छविच्छेदं वा करेत्तए ॥ ११२ ॥ तएणं ते आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं समणेहिं णिग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएज्जमाणं धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणं धम्मियेणं पडोयारेणं पडोयारिज्जमाणं अट्ठेहिय हेऊहिय जाव कीरमाणं आसुरुत्तं जाव मिसिमिसेमाणे समणाणं णिग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि

प्रश्न, हेतु यावत् व्याकरण से उत्तर रहित किया, तब वह आसुरक्त यावत् क्रोधित हुवा; परंतु श्रमण निर्ग्रन्थों को किंचिन्मात्र बाधा पीड़ा उत्पन्न कर सका नहीं, वैसे ही चर्मछेद भी कर सका नहीं ॥ ११२ ॥ अब श्रमण निर्ग्रंथों मंखली पुत्र गोशाला की साथ धर्म की चोयणा, प्रतिचोयणा प्रतिसारणा, धर्ममय प्रतिवचन से उपकार करनेपर और उन को हेतु प्रश्न, यावत् व्याकरण से उत्तर देने में असमर्थ करने पर

सूत्र

जोग वइ जोग काय जोग, जेयावण्णे तहप्पगारा चलसभावा सव्वेते धम्मत्थिकाए, पवत्तंति, गतिलक्खणेणं धम्मत्थिकाए ॥ अहम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तइ गोयमा ! अहम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाणणिसीयणतुयट्टणमणस्सय एगत्तीभाव करणया जेयावण्णे तहप्पगारा थिरसभावा सव्वेते अहम्मत्थिकाए पवत्तंति, ठाणलक्खणेणं अहम्मत्थिकाए ॥ आगासत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं अजीवाणय किं पवत्तइ गोयमा ! आगासत्थिकाएणं जीवदव्वाणय अजीवदव्वाणय भायणभूए एगेण वि से

भावार्थ

लक्षणवाली है. अहो भगवन् ! अधर्मास्तिकाया से जीवों को क्या प्रवर्तन होता है ? अहो गौतम ! अधर्मास्तिकाया से जीवों को खडे रहना, बैठना, सोना, मन का एकत्व भाव करना और ऐसे अन्य सब स्थिर स्वभाववाले कार्य होते हैं क्यों कि अधर्मास्तिकाया का लक्षण स्थिर का है. अहो भगवन् ! आकाशास्तिकाया से जीवों को क्या प्रवर्तन होता है ? अहो गौतम ! आकाशास्तिकाय जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य को भाजनभूत है. एक आकाशास्तिकाय प्रदेश, एक परमाणु, दो परमाणु, सो परमाणु, क्रोड, सौ क्रोड, क्रोड सहस्र परमाणुओं से भराहुवा रहता है. जैसे एक कमरे में दीपक किया उस का प्रकाश उस कमरे में होता है, फीर दूसरा दिया किया उस का प्रकाश भी उस में ही आता है, यों हजारों

सूत्र

छट्ठंछट्ठेणं अनिखित्तेणं तवो कम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आयावण भूमीए, आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए, पगइउवसंतयाए, पगइपयणुकोह-माण माया लोभयाए, मिउमद्दवसंपन्नयाए, अल्लीणमाए, भद्दयाए, विणीययाए अन्नया कयाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं २ अलीण-याए तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोह मग्गण गवेसणं करेमाणस्स विभंग नामं अन्नाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभंगनाण समुप्पन्नेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं जाणइ पासइ, सेणं तेणं

भावार्थ

केवल ज्ञानावरणीय का क्षय हुआ है वे केवली प्रणित धर्म यावत् केवल ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ॥१०॥ कोई बाल तपस्वी निरंतर छठ छठ के उपवास करता होवे, दिन में सूर्य की सन्मुख दोनों हाथ ऊंचे रखकर सूर्य के ताप की आतापना करता हो, वह स्वभाव से भद्रिक, उपशांत कषायवाला, क्रोध, मान, माया व लोभ को पतला करनेवाला, कोमल स्वभावी, निरभिमानी हो, भोगोपभोग में लीन न होवे, प्रकृति का नम्र होवे, इस तरह बाह्याभ्यांतर तप करते किसी वक्त तप करते शुभ अध्यवसाय परिणामों की निर्मलता से लेश्या की विशुद्धि से विभंग ज्ञान को आवरण करनेवाले कर्मों का क्षयोपशम होवे. फीर

मणजोग-वइजोग कायजोग,आणा पाणूणंच गहणं पवत्तंति,गहण लक्खणेणं पोग्गलत्थि काए ॥ ८ ॥ एगे भंते ! धम्मत्थिकायप्पएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहण्णपदे तिहिं, उक्कोसपदे छहिं ॥ केवइएहिं अहम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे? गोयमा ! जहण्णपदे चउहिं उक्कोसपदे सत्तहिं ॥ केवइएहिं आगासत्थिकायप्पएसेहिं

लेना होता है. क्यों की पुद्गलास्तिकाया का ग्रहण लक्षण है. ॥ ८ ॥ अब अस्तिकाय प्रदेश स्पर्शन द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाया के प्रदेश से स्पर्शा हुवा है ? अहो गौतम ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश जघन्य तीन धर्मास्तिकाय प्रदेशको स्पर्शा हुवा है. लोक के अंत में निकुटरूप जहां एक धर्मास्तिकायादि प्रदेशन बहुत अल्प है अन्य प्रदेश साथ स्पर्शना होवे. भूमि आमख कमरा के खुने का एक प्रदेश को दो बाजु दो और एक नीचेयों तीनप्रदेश होवे वैसेही धर्मास्तिकाया के प्रदेश को जघन्य पना मे धर्मास्तिकाया के तीन प्रदेशों स्पर्श हुवे रहे हैं. और उत्कृष्ट पद से छ प्रदेश स्पर्श हुवे रहे हैं किसी एकप्रदेश के उपर, नीचे व चारों दिशा के चार पांछ प्रदेश स्पर्शकर रहे हुवे हैं. अहो भगवन्! एक धर्मास्ति काया का प्रदेश अधर्मास्तिकाया के कितने प्रदेश से स्पर्शा हुवा है ? अहो गौतम ! जघन्यपद से चार से स्पर्शे उत्कृष्ट पदसे सातसे स्पर्शे. पहिले जो तीन व छ कहे हैं उसमें जो धर्मास्तिकायाका प्रदेश स्पर्शने को वही अधर्मास्ति काया के स्थान होने से अधिक लियागया है अहो भगवन्! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने आकाशास्तिकाय प्रदेश से

सूत्र

विभंगनाणेणं समुप्पन्नेणं जीवेवि जाणइ अजीवेवि जाणइ, पासंडत्थे सारंभे सपरिग्गहे संकिलिस्समाणेवि जाणइ, विसुज्झमाणेवि जाणइ सेणं पुव्वामेव सम्मत्तं पडिवज्जइ, समणधम्मं रोएइ २, चरित्तं पडिवज्जइ २, लिंगं पडिवज्जइ, ॥ तस्सणं तेहिं मिच्छत्त-पज्जवेहिं, परिहायमाणेहिं २, सम्मदंसण पज्जवेहिं वड्ढमाणेहिं २, से विभंगे अन्नाणे सम्मत्त परिग्गहिए खिप्पामेव ओही परावत्तइ ॥ ११ ॥ सेणं भंते ! कइसु लेस्सासु होज्जा ? गोयमा ! तिसु विसुद्ध लेस्सासु होज्जा, तं० तेउलेस्साए पम्हलेस्साए,

भावार्थ

अर्थ चेष्टा के ज्ञान सन्मुख होकर विचार करता हुवा, धर्म ज्ञान का पक्ष सहित निर्णय करता हुवा इस तरह धर्मालोचना करता हुवा विभंग ज्ञान की प्राप्ति होवे. वह बाल तपस्वी उन विभंग ज्ञान से जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग और उत्कृष्ट असंख्यात हजार योजन जाने देखे. ऐसा विभंग ज्ञानी जीव व अजीव को जाने. पाखंडियों के व्रत आरंभ व परिग्रह युक्त जाने, संक्लेशमान होता हुवा जाने. अल्प विशुद्धमानपने से अल्प विशुद्धमान भी जाने. जब सम्यक्त्व भाव को प्राप्त होवे तब सम्यक्त्व प्रतिपन्न होवे सम्यक्त्वी बना हुवा सत्य साधु धर्म की श्रद्धना करे, साधु के चिन्ह धारन करे उस के दोष रहे हुवे मिथ्यात्व के पर्याय समय २ कमी होते होते सम्यक्त्व के पर्याय बढते रहे. जब वह विभंग ज्ञानी सम्यक्त्वी होता है तब उस का विभंग ज्ञान अवधि ज्ञान के रूप में होता है ॥ ११ ॥ अब इन में लेश्या के चोरों का निरूपन

मणजोग-वइजोग कायजोग,आणा पाणूणंच गहणं पवत्तंति,गहण लक्खणेणं पोग्गलत्थि काए ॥ ८ ॥ एगे भंते ! धम्मत्थिकायप्पएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहण्णपदे तिहिं, उक्कोसपदे छहिं ॥ केवइएहिं अहम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे? गोयमा ! जहण्णपदे चउहिं उक्कोसपदे सत्तहिं ॥ केवइएहिं आगासत्थिकायप्पएसेहिं

लेना होता है. क्यों की पुद्गलास्तिकाया का ग्रहण लक्षण है. ॥ ८ ॥ अब अस्तिकाय प्रदेश स्पर्शन द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाया के प्रदेश से स्पर्शा हुवा है ? अहो गौतम ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश जघन्य तीन धर्मास्तिकाय प्रदेशको स्पर्शा हुवा है. लोक के अंत में निकुटरूप जहां एकधर्मास्तिकायादि प्रदेश बहुत अल्प हैं अन्य प्रदेश साथ स्पर्शना होवे. भूमि आसन्न कमरा के खुने का एक प्रदेश को दो बाजु दो और एक नीचेयों तीनप्रदेश होवे वैसेही धर्मास्तिकाया के प्रदेश को जघन्य पद में धर्मास्तिकाया के तीन प्रदेशों स्पर्श हुवे रहे हैं. और उत्कृष्ट पद में छ प्रदेश स्पर्श हुवे रहे हैं किसी एकप्रदेश के ऊपर, नीचे व चारों दिशा के चार पांच प्रदेश स्पर्शकर रहे हुवे हैं. अहो भगवन्! एक धर्मास्तिकाया का प्रदेश अधर्मास्तिकाया के कितने प्रदेशों स्पर्शा हुवा है ? अहो गौतम ! जघन्यपद में चार से स्पर्शा उत्कृष्ट सात से स्पर्शे. पहिले जो तीन व छ कहे हैं उनमें जो धर्मास्तिकायाका प्रदेश स्पर्शने को वही अधर्मास्तिकाया के स्थान होने से अधिक लिया गया है अहो भगवन्! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने आकाशास्तिकाय प्रदेश से

सूत्र

सुक्कलेस्साए ॥ सेणं भंते ! कइसु नाणेसु होज्जा, गोयमा ! तिसु आभिणिबोहिय नाण सुयनाण, ओहिनाणेसु होज्जा. सेणं भंते ! किं सजोगी होज्जा, अजोगीहोज्जा ? गोयमा! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा, जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा, वइजोगी, कायजोगीवा होज्जा ? गोयमा ! मणजोगी होज्जा, वइजोगी होज्जा, कायजोगीवा होज्जा । सेणं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा, अणागारोवउत्ते होज्जा ? गोयमा ! सागरोवउत्तेवा होज्जा, अणागारोवउत्तेवा होज्जा ॥ सेण भंते कयरंमि संघयणे होज्जा ? गोयमा ! वइरोसभ नारायण संघयणे होज्जा ॥ सेणं भंते !कयरंमि संठाणे होज्जा? गोयमा! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे होज्जा ॥ सेणं

भावार्थ

करते हैं. अहो भगवन् ! विभंग ज्ञानी से अवधि ज्ञानी बनकर चारित्र अंगीकार करनेवाला कितनी लेश्याओं से संयुक्त होता है ? अहो गौतम ! तेजो, पद्म व शुक्ल ऐसी तीन लेश्याओं सहित होवे. अहो भगवन् ! वह कितने ज्ञान में होवे ? अहो गौतम ! वह मति, श्रुत व अवधि ऐसे तीन ज्ञान में होवे. अहो भगवन् ! क्या वह सयोगी होवे या अयोगी होवे ? अहो गौतम ! सयोगी होवे परंतु अयोगी होवे नहीं. अहो भगवन् ! यदि सयोगी होवे तो क्या मन योगी वचन योगी या काय योगी होवे ? अहो गौतम ! मनयोगी, वचन योगी व काय योगी होवे. अहो भगवन् ! क्या वह साकारोपयुक्त होवे या अनाकारोप

सूत्र

भंते! कयरंमि उच्चत्ते होज्जा? गो०! जहन्नेणं सत्तरयणीए उक्कोसेणं पंचधणुसइए होज्जा॥ सेणं भंते! कयरंमि आउए होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं साइरेगट्ठवासाउए उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउए होज्जा॥ सेणं भंते! किं सवेदए होज्जा, अवेदए होज्जा? गोयमा! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा॥ जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेदएहोज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, पुरिसनपुंसगवेदए होज्जा, नपुंसगवेदए होज्जा? गोयमा! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदएहोज्जा, नो नपुंसगवेदए होज्जा, पुरिसनपुंसगवेदएवा होज्जा, ॥ सेणं

भावार्थ

युक्त होवे? अहो गौतम! साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त होवे. अहो भगवन्! उस को कौनसा संहनन होवे? अहो गौतम! उस को वज्रऋषभ नाराच संहनन होवे. अहो भगवन्! उस को कौनसा संस्थान होवे? अहो गौतम! छ संस्थान में से कोई भी एक संस्थान होवे अहो भगवन्! उस की ऊंचाई कितनी होवे? अहो गौतम! जघन्य सात हाथ उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य. अहो भगवन्! उस का कितना आयुष्य रहा? अहो गौतम! जघन्य आठ वर्ष से अधिक उत्कृष्ट पूर्व क्रोड. अहो भगवन्! क्या वह सवेदी या अवेदी होता है? अहो गौतम! वह सवेदी होता है परंतु अवेदी नहीं होता है. यदि सवेदी होता है तो क्या स्त्री वेदी, पुरुष वेदी, पुरुष नपुंसक वेदी या नपुंसक वेदी होता है? अहो गौतम! पुरुष वेदी की व पुरुष नपुंसक वेदी का होवे परंतु स्त्री वेदी व नपुंसक वेदी का होवे नहीं. अहो भगवन्! क्या

कायंप्पदेसे केवइएहिं धम्मत्थिकाय पुच्छा ? जहण्णपदे चउहिं, उक्कोसपदे सत्तहिं ॥ एवं अधम्मत्थि कायप्पदेसेहिंवि॥ केवइएहिं आगासत्थिकाय पुच्छा? सत्तहिं ॥ केवइएहिं जीवात्थि सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ १२ ॥ एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पदेसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पदेसेहिं ; एवं जहेव जीवत्थिकायस्स ॥ १३ ॥ दो भंते ! पोग्गलत्थि॰ कायप्पदेसा केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पदेसेहिं पुट्ठा ? गोयमा ! जहण्णपदे छहिं उक्को॰

अनंत प्रदेशों से स्पर्श हुवा है, ऐसे ही पुद्गलास्तिकाया का जानना, और वैसे ही कालको भी कथन कहना॥११॥अहो भगवन् ! एक जीवास्तिकायप्रदेश को कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश स्पर्शकर रहे हैं? अहो गौतम! जघन्य चार उत्कृष्ट सात धर्मास्तिकाय प्रदेश, अधर्मास्तिकाय के भी जघन्य चार उत्कृष्ट सात प्रदेश स्पर्शकर रहे हैं, आकाशास्तिकाय के सात प्रदेश रहे हैं और शेष सब धर्मास्तिकाय जैसे कहना. ॥ १२ ॥ अ हो भगवन् ! एक पुद्गलास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश से स्पर्श हुवे रहा है ? अहो गौतम ! जैसे जीवास्तिकाय का कहा वैसे ही यहां कहना. ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! दो पुद्गलास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश से स्पर्श हुवे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य छ उत्कृष्ट बारह प्रदेश स्पर्श हुवे हैं.+

+ [illegible]

शब्दार्थ उद्वर्ते पु० पृच्छा गो० गौतम नो० नहीं सं० अंतर सहित पु० पृथ्वी काया उ० उद्वर्ते नि० निरंतर पु० पृथ्वी काया उ० उद्वर्ते ए० ऐसे जा० यावत् व० वनस्पतिकाय णो० नहीं सं० अंतर सहित उ० उद्वर्ते नि० निरंतर प० उद्वर्ते सं० अंतर सहित भं० भगवन् बे० बेइन्द्रिय उ० उद्वर्ते नि० निरंतर बे० बेइन्द्रिय उ० उद्वर्ते गं० गांगेय सं० अंतर सहित बे० बेइन्द्रिय उ० उद्वर्ते नि० निरंतर बे० बेइन्द्रिय उ० उद्वर्ते ए० ऐसे जा० यावत् वा० वाणव्यंतर सं० अंतर सहित भं० भगवन् जो० ज्योतिषी च० चवे पु० पृच्छा गं० गांगेय सं० अंतर सहित च० चवे नि० निरंतर च० चवे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ २ ॥ क० कितने

सूत्र निरंतरं पुढवीकाइया उव्वट्टंति एवं जाव वणस्सइ काइया णो संतरं उव्वट्टंति निरंतरं उव्वट्टंति ॥ संतरं भंते ! बेइंदिया उव्वट्टंति निरंतरं बेइंदिया उव्वट्टंति ? गंगेया ! संतरंपि बेइंदिया उव्वट्टंति, निरंतरंपि बेइंदिया उव्वट्टंति. एवं जाव वाणमंतरा ॥ संतरं भंते ! जोइसिया चयंति पुच्छा ? गंगेया ! संतरंपि जोइसिया चयंति, निरंतरंपि जोइसिया चयंति ॥ एवं जाव वेमाणिया ॥ २ ॥ कइविहेणं भंते ! पवेसणए

भावार्थ उद्वर्तते हैं ऐसे ही वनस्पति काया तक जानना. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, यावत् वाणव्यंतर अंतर सहित उद्वर्तते हैं और निरंतर भी उद्वर्तते हैं. अहो भगवन् ! क्या ज्योतिषी अंतर सहित चवते हैं या निरंतर चवते हैं ? अहो गांगेय ज्योतिषी अंतर सहित चवते हैं और निरंतर भी चवते हैं. ऐसे ही वैमानिक का जानना

मो० योजन स० सहस्र आ० लंबा वि० चौडा दो० दो जो० योजन स० लाख प० पैंसठ स० सहस्र छ० छ स० बत्तीस जो० योजन स० शत किं० किंचित् वि० विशेषाधिक प० परिधि ए० एक पा० कोट स० सारी बाजु स० घेराया हुवा पा० कोट दि० देढ जो० योजन स० शत उ० ऊर्ध्व उ० उंचपने ए० ऐसे च० चमर चंचा रा० राज्यधानी व० वक्तव्यता भा० कहना स० सभा रहित जा० यावत् च० चार पा० प्रासाद पंक्ति॥ २ ॥ च० चमर च० चमर भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा च० चमर चंचा आ०

किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं ॥ सेणं एगाए पागारेणं सव्वओ समंता समंपरिक्खित्ते, सेणं पागारे दिवड्ढं जोअणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं ॥ एवं चमरचंचा रायहाणी वत्तव्वया भाणियव्वा सभाविहूणा जाव चत्तारि पासाय पंतीओ ॥ २ ॥ चमरेणं भंते ! असुरिंदे असुरराया चमरचंचे आवासे वसहिं उवेइ ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ सेकेणं खाइणं

भावार्थ योजन से किंचित् अधिक की परिधि कही है. उस की दिशा विदिशा की चारों तरफ एक कोट है. वह कोट १५० योजनका ऊंचा कहा है. इस प्रकार चमरचंचा राज्यधानी की वक्तव्यता कही. इस में सुधर्मा सभा, उपपात सभा, अभिषेक सभा, अलंकार सभा, और व्यवसाय सभा ये पांच सभाओं नहीं है. यावत् चार प्रासाद पंक्ति कही है, इन प्रासाद पंक्ति में ३४१ विमान कहे हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! चमर असुरेन्द्र चमरचंचा आवास में क्या वसकर रहता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं

प्रकार के भं० भगवन् प० प्रवेशन प० प्ररूपा गं० गांगेय च० चार प्रकार के तं० वह ज० जैसे ने० नारकी प्रवेशन ति० तिर्यंच योनि प्रवेशन म० मनुष्य प्रवेशन दे० देव प्रवेशन ने० नारकी प्रवेशन भं० भगवन् क० कितने प्रकार का प० प्ररूपा गं० गांगेय स० सात प्रकार का तं० वह ज० जैसे र० रत्नप्रभा पृथ्वी ने० नारकी प्रवेशन जा० यावत् अ० अधो स० सातवी पृथ्वी ने० नारकी प्रवेशन॥३॥सरल शब्दार्थ

सूत्र

पण्णत्ते ? गंगेया ! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, तंजहा णेरइयपवेसणए, तिरिक्ख जोणिय पवेसणए, मणुस्स पवेसणए, देवपवेसणए ॥ णेरइयपवेसणएणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गंगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते तंजहा रयणप्पभापुढवीणेरइय पवेसणए जाव अहे सत्तमा पुढवी णेरइय पवेसणए॥३॥एगेण भंते ! णेरइए नेरइय पवेसणएणं

भावार्थ

॥ २ ॥ जीव मरकर गति में प्रवेश करते हैं इसलिये गति प्रवेशन रूप कहते हैं. अहो भगवन् ! प्रवेशन ( एक गति में से दूसरी गति में जाना ) के कितने भेद कहे ? अहो गांगेय ! चार प्रकार के प्रवेशन कहे हैं नारकी प्रवेशनक, तिर्यंच प्रवेशनक, मनुष्य प्रवेशनक, और देव प्रवेशनक. अहो भगवन् ! नारकी प्रवेशनक के कितने भेद कहे हैं ? अहो गांगेय ! नारकी प्रवेशनक के सात भेद हैं ? रत्नप्रभा नरक प्रवेशनक, शर्कराप्रभा नरक प्रवेशनक यावत् नीचे सातवी तमतमप्रभानरक प्रवेशनक ॥ ३ ॥ अहो [illegible]

शब्दार्थ

विचरते हैं अ० अन्यत्र व० वसति में उ० आते हैं ए० ऐसे गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का च० चमर चंचा आ० आवास के० केवल कि० क्रीडा र० रति प० निमित्त अ० अन्यत्र व० वसति को उ० जाते हैं से० वह ते० इसलिये जा० यावत् आ० आवास से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ ३ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर अ० एकदा रा० राजगृह न० नगर से गु० गुणशील से जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ ४ ॥ ते० उस काल

मूल

उवेति, एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचे आवासे केवलं किड्डारतिपत्तियं अण्णत्थपुण वसहिं उवेति, से तेणट्ठेणं जाव आवासे सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरति ॥ ३ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाइं रायगिहाओ णयराओ गुणसिलाओ जाव विहरइ ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं

भावार्थ

विनोद भोगते हुए विचरते हैं. परंतु वहां पर निवास नहीं करते हैं. अहो गौतम ! ऐसे ही चमर असुरेन्द्र चमर चंचा आवास में केवल क्रीडा व रति सुख भोगने को ही आता है. उन के निवास स्थान अन्य होते हैं. अहो गौतम ! इसी कारन से चमर चंचा आवास कहे है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर तप संयम से आत्मा को भावते हुवे भगवान् गौतम स्वामी विचरने लगे ॥ ३ ॥ श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी राजगृह नगर के गुणशील उद्यान से अन्यदा अन्य देश में विहार किया

होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ॥ एवं एक्केका पुढवी छड्डेयव्वा जाव अहवा एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा॥५॥ तिण्णि भंते ! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहे सत्तमाए होज्जा? गंगेया रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहवा अहे सत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए

भावार्थ

वालुप्रभा में ८ एक शर्करप्रभा में एक पंकप्रभा में ९ एक शर्करप्रभा में एक धूम्र प्रभा में १० एक शर्कर प्रभा में एक तम प्रभा में ११ एक शर्कर प्रभा में एक तम तम प्रभा में १२ एक वालु प्रभा में एक पंक प्रभा में १३ एक वालु प्रभा में एक धूम्रप्रभा में १४ एक वालु प्रभा में एक तम प्रभा में १५ एक वालु प्रभा में एक तम तम प्रभा में १६ एक पंक प्रभा में एक धूम्रप्रभा में १७ एक पंक प्रभा में एक तम प्रभा में १८ एक पंक प्रभा में एक तम तम प्रभा में १९ एक धूम्र प्रभा में एक तम प्रभा में २० एक धूम्र प्रभा में एक तम तम प्रभा में और २१ एक तम प्रभा में एक तम तम प्रभा में उत्पन्न होवे. इस तरह दो जीव के बहाइस भांग कहे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! तीन जीव नरक प्रवेशन से प्रवेशन करते हुवे क्या रत्न प्रभा में उत्पन्न होवे यावत् नीचे सातवी नरक में उत्पन्न होवे ? अहो गांगेय ! यहां असंयोगी सात भांग [illegible]

शब्दार्थ श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वांदू ण० नमस्कार करूं जा० यावत् प० पर्युपासना करूं ॥ ७ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर उ० उदायन र० राजा को अ० इसरूप अ० चिन्तवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा जा० जानकर चं० चंपा ण० नगरी के पु० पूर्णभद्र चे० चैत्य से प० नीकलकर पु० पूर्वानुपूर्व च० चलते गा० ग्रामानुग्राम जा० यावत् वि० विचरते जे० जहां सिं० सिंधु सो० सौवीर ज० देश वी० वीतिभद्र ण० नगर जे० जहां मि० मृगवन उ० उद्यान ते० तहां उ० आकर

सूत्र मेणं जाव विहरेज्जा, तओणं अहं समणं भगवं महावीरं वंदेज्जा णमंसेज्जा, जाव पज्जुवासेज्जा ॥ ७ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे उदायणस्स रण्णो अयमेयारूवं अज्झत्थियं जाव समुप्पण्णं विजाणित्ता; चंपाओ णयरीओ पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं जाव विहरमाणे जेणेव सिंधुसोवीरे जणवये, जेणेव वीइभये णयरे, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ.

भावार्थ श्री श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करूं ॥ ७ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी उदायन राजा का मनोगत संकल्प जानकर चंपा नगरी के पूर्णभद्र उद्यान में से

शब्दार्थ आ० आत्मा म० मन अ० अन्य म० मन गौ० गौतम ज० जैसे भा० भाषा त० वैसे म० मन जा०

सूत्र अण्णे मणं ? णो आता मणे अण्णे मणे ? गोयमा ! जहा भासा तहा मणेवि, जाव णो अजीवा ॥ १० ॥ पुव्विं भंते ! मणे, मणिज्जमाणे मणे, एवं जहेव भासा ॥ ११ ॥ पुव्विं भंते ! मणे भिज्जइ, मणिज्जमाणे मणे भिज्जइ, मण समयवीइक्कंते मणे भिज्जइ ? एवं जहेव भासा ॥ १२ ॥ कइविहेणं भंते ! मणे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे मणे पण्णत्ते, तंजहा-सच्चे जाव असच्चा मोसे ॥ १३ ॥ आया भंते !

भावार्थ होने से मन का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! क्या आत्मा मन है या अन्य मन है ? अथवा नो आत्मा मन है या अन्य मन है ? अहो गौतम ! जैसे भाषा का कहा वैसे ही मन का जानना ॥१०॥ अहो भगवन् ! मनन पहिले मन, मनन करने लगे जब मन, अथवा मनन का समय व्यतीत हुवे पीछे मन ? अहो गौतम ! जैसे भाषा का कहा वैसे ही मन का जानना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! पहिले मन भेदा जाता है, मनन करते मन भेदा जाता है अथवा मनन समय व्यतीत हुए पीछे मन भेदा जाता है ? अहो गौतम ! जैसे भाषा का कहा वैसे ही मन का जानना ॥ १२ ॥ अहो गौतम ! मन के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! मन के चार भेद कहे. सत्य मन, मृषा मन, सत्य मृषा, व असत्य मृषा मन ॥ १३ ॥

शब्दार्थ मरण भं० भगवन् क० कितने प्रकार का प० प्ररूपा गो० गौतम पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य आवीचिक मरण खे० क्षेत्र आवीचिक मरण का० काल आवीचिक मरण भ० भव आवीचिक मरण भा० भाव आवीचिक मरण ॥ २० ॥ सरल शब्दार्थ.

मूत्र पंडियमरणे ॥ १९ ॥ आवीचियमरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-दव्वावीचियमरणे, खेत्तावीचियमरणे, कालावीचियमरणे, भवावीचिय मरणे, भावावीचियमरणे, ॥ २० ॥ दव्वावीचिय मरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-णेरइय दव्वावीचियमरणे, तिरिक्खजोणिय दव्वावीचियमरणे, मणुस्सदव्वावीचियमरणे, देवदव्वावीचियमरणे, ॥ २१ ॥

भावार्थ भोगते हैं वह आत्यंतिक मरण है ४ बाल मृत्यु अविरति जीव का और ५ पंडित मरण सब विरति जीव का ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! आवीचिक मरण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! आवीचिक मरण के पांच भेद कहे हैं. १ द्रव्य आवीचिक मृत्यु २ क्षेत्र आवीचिक मृत्यु, ३ काल आवीचिक मृत्यु ४ भव आवीचिक मृत्यु और ५ भाव आवीचिक मृत्यु ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य आवीचिक मृत्यु के कितने भेद हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य आवीचिक मृत्यु के चार भेद कहे हैं. नारकी द्रव्य आवीचिक [illegible] आवीचिक मरण और देव आवीचिक मृत्यु ॥ २१ ॥ अहो भगवन्!

अ० अन्यदा क० कदापि स० साधु णि० निर्ग्रन्थों से मि० मिथ्यात्व वि० अंगीकार करेंगे अ० कितनेक को आ० आक्रोशकरेंगे उ० उपहास करेंगे णि० पृथक् करेंगे णि० निर्भर्त्सना करेंगे बं० बांधेंगे णि० रुंधन करेंगे अ० कितनेक का छ० चर्मछेद क० करेंगे अ० कितनेक को प० मारेंगे अ० कितनेक को उ० पीडा करेंगे अ० कितनेक के व० वस्त्र प० पात्र कं० कंबल पा० रजोहरण अ० छेदेंगे वि० विशेष छेदेंगे भि० भेदेंगे अ० कितनेक के भ० भक्तपान वो० नष्ट करेंगे अ० कितनेक का णि० नगर रहित क० करेंगे



विमलवाहणे राया अण्णयाकयायि समणेहिं णिग्गंथेहिं मिच्छ विप्पडिवज्जेहिंति, अत्थेगइए आउसिहिंति, अत्थेगइए उवहसिहिंति, अत्थेगइए णिच्छोडेहिंति, अत्थेगइए णिब्भच्छेहिंति, अत्थेगइए बंधेहिंति, अत्थेगइए णिरुंभेहिंति, अत्थेगइयाणं छविच्छेदं करेहिंति अत्थेगइए पमारेहिंति अत्थेगइयाणं उद्दवेहिंति अत्थेगइयाणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंच्छणं आच्छिंदिहिंति, विच्छिंदिहिंति, भिंदिहिंति, अत्थेगइयाणं भत्तपाणं वोच्छिंदिहिंति, अत्थेगइयाणं णिण्णारे करेहिंति, अत्थेगइए णिव्वि-



कितनेक साधुओं को आक्रोश करेगा, कितनेक साधुओं का हास्य करेगा, कितनेक साधुओं की शिष्य शाखा का नाश करेगा, कितनेक साधुओं को दुर्वचन से निर्भर्त्सना करेगा, कितनेक साधुओं को बंधन से बांधेगा, कितनेक साधुओं का रुंधन करेगा, कितनेक का चर्म छेद करेगा, कितनेक को मार मारेगा, कितनेक को उपद्रव करेगा, कितनेक के वस्त्र, पात्र, कंबल, रजोहरण फाडेगा तोडेगा, कितनेक साधुओं को

सूत्र

णेरइयखेत्ते वट्टमाणा जाइं दव्वाइं णेरइयाउयत्ताए; एवं जहेव दव्वावीचियमरणे तहेव खेत्तावीचियमरणेवि; एवं जाव भावावीचिय मरणे ॥ २३ ॥ ओहि मरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा-दव्वोहिमरणे, खेत्तोहिमरणे जाव भावोहिमरणे दव्वोहिमरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-णेरइयदव्वोहिमरणे जाव देवदव्वोहिमरणे ॥२४॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-णेरइय दव्वोहिमरणे ? गोयमा ! जंणं णेरइया णेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति जंणं णेरइया ताइं दव्वाइं अणागए काले पुणोवि मरिस्संति से

भावार्थ

कहते हैं ! अहो गौतम ! नरक क्षेत्र में रहे हुवे नारकी जिन द्रव्यों को नरक के आयुष्यपने वगैरह द्रव्य आवीचिक मरण जैसे कहना. और ऐसे ही काल, भव और भाव आवीचिक मरण का जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! अवधि मरण के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम ! अवधि मरण के पांच भेद कहे हैं ? द्रव्य अवधि, क्षेत्र अवधि यावत् भाव अवधि. अहो भगवन् ! द्रव्य अवधि मरण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य अवधि मरण के चार भेद कहे हैं. नारकी द्रव्य अवधि मरण यावत् देव द्रव्य अवधि मरण ॥ २४ ॥ अहो भगवन् नारकी द्रव्य अवधि मरण किस कारन से कहा गया है ? अहो गौतम !

शब्दार्थ

रा० राजाने स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थों में मि० मिथ्यात्व वि० अंगीकृत किया तं० इसलिये से० श्रेय दे० देवानुप्रिय अ० हम को वि० विमल वाहन रा० राजा को ए० इस बात की वि० विज्ञप्ति करने को तं० ऐसा क० करके अ० परस्पर की अं० पास ए० इस अ० बात प० सुनकर जे० जहां वि० विमल वाहन रा० राजा तें० वहां उ० आकर क० करतल प० परिग्रहीत वि० विमल वाहन रा० राजा को ज० जय वि० विजय से व० बधाये व० बधाकर ए० ऐसा व० बोलेंगे ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ में

सूत्र

वाहणे राया समणेहिं णिग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवण्णे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं विमलवाहणं रायं एयमट्ठं विण्णवेत्तिए त्तिकट्टु, अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणेत्ता जेणेव विमलवाहणे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता करयलपरिग्गहियं विमलवाहणं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेंतित्ता एवं वदिस्सहिंति एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणेहिं णिग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवण्णा,

भावार्थ

है श्रावक किनके को देश बाहिर करता है. अहो देवानुप्रिय ! यह अपन को श्रेय नहीं है, वैसे ही विमल वाहन राजा, देश, सेना, वाहन, पुर व अंतःपुर को कल्याणकारी नहीं है. इसलिये अहो देवानुप्रिय ! विमलवाहन राजा के पास जाना और उन को विज्ञप्ति करना अपन को श्रेय है ऐसा करकर परस्पर ऐसी बात सुनी. और विमल वाहन राजा की पास सब गये. वहां दोनों हाथ

शब्दार्थ राजेश्वर जा० यावत् स० सार्थवाह प० प्रभृति से ए० यह अ० बात की वि० विज्ञप्ति की हुई णो० नहीं ध० धर्म णो० नहीं त० तप मि० मिथ्या विनय से ए० इस अ० बात प० सुनी ॥ १७६ ॥ त० उस स० शतद्वार ण० नगर की ब० बाहिर उ० उत्तरपूर्व दि० दिशा में ए० यहां सु० सुभूमि भाग उ० उद्यान भ० होगा स० सर्वऋतु में व० वर्णन योग्य ॥ १७७ ॥ ते० उस का० काल तं० उस स० समय में वि० विमल नाथ अ० अरिहंत के प० प्रतिशिष्य सु० सुमंगल अ० अनगार जा० जाति संपन्न ज० जैसे

सूत्र तेहिं बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईहिं एयमट्ठं विण्णत्तेसमाणे णो धम्मोत्ति णोतवोत्ति मिच्छाविणएणं एयमट्ठं पडिसुणेहिं ॥ १७६ ॥ तस्सणं सयदुवारस्स णयरस्स बाहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थणं सुभूमिभागे उज्जाणे भविस्सइ, सव्वोत्तुय वण्णओ ॥ १७७ ॥ तेणं कालेणं तेण समएण विमलस्स अरहओ पउप्पए सुमंगले णामं अणगारे जाइसंपण्णे जहा धम्मघोसस्स वण्णओ जाव

भावार्थ श्वर यावत् सार्थवाह प्रमुखने ऐसा कहा तब उसने इस में धर्म नहीं है. इस में तप नहीं है ऐसी बुद्धि सहित मिथ्याविनय ( असत्य देखाव ) से इस बात को सुनी ॥ १७६ ॥ उस शतद्वार नगर की बाहिर सुभूमिभाग नाम का एक उद्यान होगा, वह सब ऋतु को वर्णन योग्य होगा ॥१७७॥ उस काल उस समय में श्री विमलनाथ अरिहंत के प्रतिशिष्य सुमंगल अनगार जाति संपन्न वगैरह धर्मघोष अनगार जैसे वर्णनवाले

सूत्र

वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति तेणं णेरइया ताइं दव्वाइं अणागए काले णो पुणोवि मरिस्संति से तेणट्ठेणं जाव मरणे ॥ २८ एवं तिरिक्ख, मणुस्सदेवे ॥ एवं खेत्ताइंतिय मरणेवि ॥ एवं जाव भावाइंतिय मरणेवि ॥ २९ ॥ बाल मरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुवालसविहे पण्णत्ते, तंजहा-वलयमरणे जहा खंदए जाव गिद्धपिट्ठे ॥ ३० ॥ पंडियमरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-पाओवगमणेय, भत्तपच्चक्खाणेय ॥ ३१ ॥ पाओवगमणेणं

भावार्थ

द्रव्य आत्यंतिक मरण. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी द्रव्य आत्यंतिक मरण कहा गया है ? अहो गौतम ! नरक में वर्तमान नारकी जिन द्रव्यों को ग्रहण कर मरते हैं. उन द्रव्यों को ग्रहण किये बिना अनागत में मरेंगे इसलिये नरक द्रव्य आत्यंतिक मरण कहा है. ॥ २८ ॥ ऐसे ही तिर्यंच मनुष्य व देव का जानना. और ऐसे ही क्षेत्र आत्यंतिक यावत् भावात्यंतिक मरण का जानना. ॥२९॥ अहो भगवन् ! बाल मरण के कितने भेद कहे हैं ? अहो भगवन् ! बाल मरण के बारह भेद कहे हैं. वलय मरणादि से लगा कर गृध्रपृष्ठ तक स्कंधक में कहा वैसे ही यहां सब कहना. ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! पंडित मरण के कितने भेद कहे हैं. अहो गौतम ! पंडित मरण के दो भेद कहे हैं. १ पादोपगमन और २ भक्त प्रत्याख्यान ॥ ३१ ॥ अहो

दंदीप्यमान स० सुमंगल अ० अनगार के र० रथ सि० मस्तकपे णो० चलावेगा ॥ १८० ॥ त० तब से० वह सु० सुमंगल अ० अनगार वि० विमल वाहन र० राजा से णो० चलाया म० शनैः उ० उठकर दो० दूसरी वक्त उ० ऊर्ध्व बाहा प० रखकर जा० यावत आ० आतापना लेते वि० विचरेगा ॥ १८१ ॥ त० तब से० वह वि० विमल वाहन रा० राजा सु० सुमंगल अ० अनगार को दो० दूसरी वक्त भी र० रथ सि० मस्तक से चो० चलावेगा ॥ १८२ ॥ त० तब से० वह सु० सुमंगल अ० अनगार वि० विमल वाहन र० राजा से दो० दूसरी

सिरेमाणे सुमंगलं अणगारं रहसिरेणं णोल्लावेहिंति ॥ १८० ॥ तएणं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा रहसिरेणं णोल्लाविए समाणे सणियं २ उट्ठेहिंति उट्ठेइत्ता दोच्चंपि उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ जाव आयावेमाणे विहरिस्सइ ॥ १८१ ॥ तएणं से विमलवाहणे राया सुमंगलं अणगारं दोच्चंपि रहसिरेणं णोल्लावेहिंति ॥ १८२ ॥ तएणं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा दोच्चंपि रहसिरेणं

भावार्थ अग्र भाग से रथ फीरावेगा ॥ १८० ॥ विमलवाहन राजा से इस तरह रथ फीराने से पृथक् होने पर अनगार धीरे धीरे खडे होवे और ऊर्ध्व भुजा रख कर आतापना लेते हुवे विचरेंगे ॥ १८१ ॥ फीर समर्थ होने पर राजा दूसरी वक्त भी रथ फीरावेगा ॥ १८२ ॥ सुमंगल अनगार दूसरी वक्त भी इस प्रकार से सहन करेंगे।

सूत्र

एवं अमुयं तेसु जहा चउण्हं चउक्कसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयण-प्पभाए धूमप्पभाए तमाए, अहे सत्तमाए होज्जा २० । अहवा रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, पंकप्पभाए, धूमप्पभाए होज्जा ॥ अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए, तमाए होज्जा ॥ अहवा रयणप्पभाए, जाव पंकप्पभाए अहे सत्तमाए होज्जा ३ ॥ अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए, धूमप्पभाए, तमाए होज्जा, एवं रयणप्पभ अमुयं तेसु जहा पंचण्हं पंचसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए, तमाए अहे सत्तमाए होज्जा १५ ॥ अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए,

भावार्थ

रत्नप्रभा में, शर्करप्रभा में वालुप्रभा में पंकप्रभामें उत्पन्न होवे अथवा रत्नप्रभा में शर्करप्रभा में वालुप्रभा में धूम्र प्रभा में यावत् रत्न प्रभा में शर्कर प्रभा में वालु प्रभा में तमतम प्रभा में अथवा रत्न प्रभा शर्कर प्रभा पंक प्रभा धूम्र प्रभा यों चार संयोगी सब भांगे यावत् रत्न प्रभा धूम्र प्रभा, तम प्रभा व तमतम प्रभातक कहना. अब पांच संयोगी रत्न प्रभा, शर्कर प्रभा, वालु प्रभा पंक प्रभा धूम्र प्रभा, यों सब यावत् रत्न प्रभा पंक प्रभा धूम्र प्रभा तम प्रभा तमतम प्रभा, यों पांच संयोगी १५ भांगे होते हैं. अब छ संयोगी १ रत्न

 १३१२

स० सहन किया ख० क्षमा जा० यावत् अ० अहियासा त० यदि ते० तुझे म० उस समय मु० सुनक्षत्र अ० अनगारने प० समर्थ हो० होकर स० सम्यक् प्रकार से स० सहन किया जा० यावत् अ० अहियासा ज० यदि ते० तुझे त० उस समय स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर प० समर्थ हो० होकर जा० यावत् अ० सहन किया तं० इस से णो० नहीं अ० मैं त० तैसा स० सम्यक् प्रकार से स० सहन करूंगा जा० यावत् अ० अहियासूंगा अ० मैं ते० तुझे स० अश्वसहित स० रथसहित स० सारथी सहित ए० एक घाव से ए० एक अ० प्रहार कू० कूट प्रहार से भ० भस्म क० करूंगा ॥ १८३ ॥ त० तब से० वह वि०

पभूणावि होऊणं सम्म सहियं खमियं तितिक्खियं अहियासियं, जइ ते तदा सुणक्खत्तेणं अणगारेणं पभूणावि होऊणं सम्म सहियं खमियं जाव अहियासियं. जइ ते तदा समणेणं भगवया महावीरेण पभूणावि जाव अहियासियं ॥ तं णो खलु अहं तहा सम्मं सहिस्सं जाव अहियासिस्सं, अहं ते णवरं सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेज्जामि ॥ १८३ ॥ तएणं से विमलवाहणे

यावत् यहां छद्मस्थपना में ही काल कर गया. उस समय सर्वानुभूति अनगार तेरे पर तेजोलेश्या डालने में समर्थ होने पर भी उन्होंने सम्यक् प्रकार से सहन किया, क्षमा यावत् अहियासा, सुनक्षत्र अनगारने भी समर्थ होने पर सहन किया और महावीर स्वामीने भी समर्थ होने पर सहन किया; परंतु मैं सम्यक् प्रकार से सहन करूंगा नहीं और तुझे अश्व, रथ, सारथि सहित भस्म करूंगा ॥ १८३ ॥ सुमंगल अन-

शब्दार्थ ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १३ ॥ ८ ॥

रा० राजगृही में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले से० वह ज० जैसे के० कोइ पु० पुरुष के० रज्जु घ० घडा ग० ग्रहण कर ग० जावे ए० ऐसे अ० अनगार भा० भावितात्मा के० रज्जुवाला घ० घडा कि० कृत ह० हस्त अ० आप उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० जावे हं० हां उ० जावे अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा के० कितने प० समर्थ के० रज्जु वाला घ० घडा कि० कृत्यहस्त रू० रूप वि० विकुर्वणा

सूत्र तेरसमसयस्सय अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ ८ ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी से जहा णामए केइ पुरिसे केयाघडियं गहाय गच्छेज्जा एवामेव अणगारेवि भावियप्पा केयाघडियाकिच्चहत्थगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ? हंता गोयमा ! जाव समुप्पएज्जा । अणगारेणं भंते ! भावियप्पा

भावार्थ विशेष वर्णन पन्नवणा सूत्र के तेत्तीसवे उद्देशे में कहा है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह तेरहवा शतक का आठवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १३ ॥ ८ ॥

आठवे उद्देशे में कर्म प्रकृति कही. कर्म क्षय से वैक्रेय लब्धि होती है इसलिये आगे वैक्रेय का कथन करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामीको वंदना नमस्कारकर श्री गौतम स्वामी प्रश्न पूछने लगे कि अहो भगवन् ! जैसे कोई पुरुष रस्सी बांधकर घटिका लेकर चले वैसे ही भावितात्मा अनगार

भस्म क० कर के क० कहां ग० जावेगा क० कहां उ० उत्पन्न होगा० गो० गौतम सु० सुमंगल अ० अनगार वि० विमलवाहन रा० राजा को स० अश्वसहित जा० यावत् भा० भस्म क० करके ब० बहुत छ० छठ अ० अठम द० दश दु० बारह जा० यावत् वि० विचित्र त० तपकर्म से अ० आत्मा को भा० भावते ब० बहुत वा० वर्ष सा० साधु की प० पर्याय पा० पालेंगे मा० मास की सं० संलेखना स० साठभक्त अ० अनशन जा० यावत् छे० छेदकर आ० आलोचित प० प्रतिक्रमण वाला स० समाधि मरण उ० ऊर्ध्व चं०

ससारहियं तहेणं तेएणं जाव भासरासिं करेहिति ॥ १८५ ॥ सुमंगलेणं भंते ! अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव भासरासिं करेत्ता कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! सुमंगलेणं अणगारेणं विमलवाहणं रायं सहयं जाव भासरासिं करेत्ता बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालस जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणिहिति, बहू २ त्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं

सात आठ पांव पीछा जाकर अश्व, रथ व सारथि सहित विमलवाहन राजा को भस्म करेगा ॥ १८५ ॥ अहो भगवन् ! विमलवाहन राजा को भस्म करके सुमंगल अनगार काल के अवसर में काल करके कहां उत्पन्न होंगे ? अहो गौतम ! विमलवाहन राजा को भस्म किये पीछे बहुत छठ, अठम, दश, द्वादश

शब्दार्थ अ० जैसे अ० मैंने ॥ १९४ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ द० दृढ प्रतिज्ञ के० केवली की अं० पास से ए० यह अ० बात सो० सुनकर णि० अवधारकर भी० डरे त० त्रासपाये त० भसित हुवे सं० संसारभय से उ० उद्विग्न द० दृढ प्रतिज्ञ के० केवली को वं० वंदना करेंगे ण० नमस्कार करेंगे त० उस ठा० स्थान की आ० आलोचना करेंगे नि० निंदा करेंगे जा० यावत् प० अंगीकार करेंगे ॥ १९५ ॥ त० तब द० दृढ प्रतिज्ञ के० केवली ब० बहुत वा० वर्ष के० केवली प० पर्याय पा० पालकर अ० अपना आ० आयुष्य शेष जा० जानकर भ० भक्त प्रत्याख्यान करेंगे ए० ऐसे ज० जैसे उ०

सूत्र जहाणं अहं ॥ १९४ ॥ तएणं ते समणा णिग्गंथा दढपइण्णस्स केवलिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया तत्था तसिया संसारभय उव्विग्गा दढ्पइण्ण केवलिं वंदिहिंति णमंसिहिंति तस्स ठाणस्स आलोइएहिंति निंदिहिंति जाव पडिवज्जेहिंति ॥ १९५ ॥ तएणं दढपइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलपरियागं पाउणिहिंति २ त्ता अप्पाणं आउसेसं जाणित्ता भत्तपच्चक्खाहिंति, एवं जहा उववाइए जाव सव्वदुक्खाणमंतं

भावार्थ गतिक संसार में परिभ्रमण किया वैसा परिभ्रमण मत करो ॥ १९४ ॥ उस समय में दृढ प्रतिज्ञ केवली की पास से ऐसा सुनकर अवधार कर श्रमण निर्ग्रंथ डरे, त्रास पाये, संसार से उद्विग्न बने और दृढ प्रतिज्ञ केवली को वंदना नमस्कार कर उस की आलोचना, निंदा यावत् प्रतिक्रमण करने लगे ॥ १९५ ॥

सूत्र

कइणं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचइंदिया पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदिए जाव फासिंदिए ॥ १० ॥ कइणं भंते ! जोए पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तंजहा-मणजोए, वयजोए, कायजोए ॥ ११ ॥ जीवेणं भंते ओरालिय सरीरं निव्वत्तेमाणे किं अहिकरणी अहिगरणं ? गोयमा ! अधिगरणी अधिगरणंपि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अधिगरणीवि अधिगरणंपि ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि ॥ पुढवीकाइएणं भंते ! ओरालिय सरीरं णिव्वत्तिए

भावार्थ

इन्द्रियों कितनी कहीं ? अहो गौतम ! इन्द्रियों पांच कहीं श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! योग कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! योग तीन कहे हैं. मन योग, वचन योग और काया योग ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीरवाला जीव क्या अधिकरणी है, या अधिकरण है ? अहो गौतम ! अधिकरणी भी है और अधिकरण भी है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि उदारिक शरीरवाला जीव अधिकरणी है और अधिकरण भी है ? अहो गौतम ! अविरति आश्री. इसलिये ऐसा कहा गया है कि उदारिक शरीरवाला जीव अधिकरणी है और अधिकरण भी है. ऐसे ही पृथ्वीकायादि पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय,

धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति ॥ एएसिणं जीवाणं जागरियत्तं साहू से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाण जागरियत्तं साहू ॥ १६ ॥ बलियत्तं भंते! साहू दुब्बलियत्तं साहू? जयंती अत्थेगइयाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जाव साहू? जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति एएसिणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू,एएणं जीवा एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलियत्तस्स वत्तव्वया भाणियव्वा ॥ बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्वं जाव

भावार्थ आत्मा को अधर्म से संयोजना करते हैं और जो जीव धर्मी, धर्मानुरागवाले, यावत् धर्म से आजीविका करनेवाले होते हैं वे जागते हुवे अच्छे हैं. वे जागते हुवे प्राणियों को अदुःख यावत् अपरितापना करते हैं और स्वतः को, अन्य को व उभय को अनेक धार्मिक संयोगों से जोडनेवाले होते हैं. वे जीवों जागते हुवे धर्म जागरणा जागते हैं; इस से इन जीवों का जागना अच्छा है ॥१६॥ अहो भगवन् क्या बलवान् अच्छे या दुर्बल अच्छे? अहो जयंती! कितनेक जीवों बलवन्त अच्छे व कितनेक जीवों निर्बल अच्छे. अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है? अहो जयंती! जो जीवों अधर्मी, अधर्मानुरागी यावत् पूर्वोक्त प्रकार से जो अधर्मी जीवों हैं वे दुर्बल अच्छे हैं क्यों कि वे दुर्बल होने से प्राणों को दुःख

शब्दार्थ श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० णमस्कार कर ए० ऐसा व० बोला जं० जो भ० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा तु० आप को ए० ऐसा व० बोला स० सत्य ए० यह अ० अर्थ हं० हां स० सत्य ए० यह अ० अर्थ ॥ ६ ॥ स० शक्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा किं० क्या स० सम्यग्वादी मि० मिथ्यावादी गो० गौतम स० सम्यग्वादी णो० नहीं मि० मिथ्यावादी ॥ ७ ॥ स० शक्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा किं० क्या स० सत्य भा० भाषा भा० बोलते हैं मो० मृषा

सूत्र भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता एवं वयासी-जंणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया तुब्भे एवं वदति सच्चेणं एसमट्ठे ? हंता सच्चेणं ॥ ६ ॥ सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया किं सम्मावादी मिच्छावादी? गोयमा ! सम्मावादी णो मिच्छावादी ॥७॥ सक्केणं भंते! देविंदे देवराया किं सच्चं भासं भासइ, मोसं भासं भासइ, सच्चा मोसं

भावार्थ उसी दिशि में चले गये ॥ ५ ॥ भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र देवराजाने आपको जो बात कही, वह क्या सत्य है ? हां गौतम ! वह बात सत्य है ॥६॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र क्या सम्यक्वादी है या मिथ्यावादी है ? अहो गौतम ! वह सम्यक्वादी है परंतु मिथ्यावादी नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र देवराजा क्या सत्य भाषा बोलता है, मिथ्या भाषा बोलता है, सत्यमृषा भाषा बोलता है या असत्य मृषा भाषा बोलता है ? अहो

शब्दार्थ ण० नहीं है अ० अचैतन्यकृत क० कर्म आ० कष्टकारी व० वध के लिये हो० होते हैं सं० संकल्प व० वध के लिये हो० होते हैं म० मरणांत से० अथ व० वध के लिये हो० होते हैं त० तैसे तै० वे पो० पुद्गल प० परिणमते हैं ण० नहीं है अ० अचैतन्यकृत क० कर्म ते० इसलिये जा० यावत् क० कर्म क० करते हैं ए० ऐसे ण० नारकी को ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक को ॥ १६ ॥ २ ॥ *

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितनी भं० भगवन् क० कर्म प्रकृतियों प० प्ररूपी

सूत्र णत्थि अचेयकडा कम्मा ॥ समणाउसो ! आयंके से वहाए होंति, संकप्पे सेवहाए होंति, मरणंते से वहाए होंति, तहा तहाणं ते पोग्गला परिणमंति, णत्थि अचेयकडा कम्मा ॥ से तेणट्ठेणं जाव कम्मा कज्जंति ॥ एवं णेरइयाणवि, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ सोलसमस्स वितिओ उद्देसो सम्मत्तो॥१६॥२॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-कइणं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ

भावार्थ जीव को मरणांतिकादि कारण होवे उस प्रकार पुद्गल परिणमे इसलिये अचैतन्य कृत कर्म नहीं. परंतु चैतन्य कृत कर्म करता है. इसलिये यावत् कर्म करे. यह कथन नरक से लगाकर वैमानिक पर्यंत चौवीस दंडक का जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह सोलहवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ १६ ॥ २ ॥ • ० ०

दूसरे उद्देशे में कर्म का कथन किया. आगे भी उस का ही विशेष वर्णन करते हैं. राजगृह नगर के

शब्दार्थ

म० महावीर अ० अन्यदा क० कदापि रा० राजगृह ण० नगर के गु० गुणशील चे० उद्यान से प० नीकलकर ब० बाहिर ज० जनपद वि० विहार वि० विचरने लगे ॥ ३ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में उ० उल्लुकातीर ण० नगर हो० था त० उस उ० उल्लुकातीर ण० नगर की ब० बाहिर उ० ईशान कोन में ए० यहां ए० एक जम्बू चे० उद्यान ॥ ४ ॥ अ० अनगार भा० भावितात्मा छ० छठ के

सूत्र

भगवं महावीरे अण्णयाकयायि रायगिहाओ णयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमइत्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ २ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयातीरे णाम णयरे होत्था, वण्णओ ॥ तस्सण उल्लुयातीरस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थण एगजम्बुए णाम चेइए होत्था, वण्णओ ॥४॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव एगजम्बुए समोसढे जाव परिसा पडिगया ॥४॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं

भावार्थ

प स्वामी विचरनेलगे. ॥ २ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर राजगृह नगरके गुणशील न में से नीकलकर बाहिर विचरने लगे ॥३॥ उस काल उस समय में उल्लुया तीर नाम का नगर था वर्णनयोग्य था. उस उल्लुका तीर नगर की बाहिर ईशान कोन में एकजंबुक नाम का उद्यान था. ॥ ॥ ४ ॥ उस समय में श्रमण भगवंत महावीर एकदा पूर्वानुपूर्वि चलते ग्रामानुग्राम विचरते यावत्

शब्दार्थ प्रश्न वा० व्याकरण पु० पूछकर सं० संभ्रांत वं० वंदन से वं० वंदना कर ता० उसी दि० दीव्य जा० यान विमानमें दु० आरूढ होकर जा० जिस दिशी से पा० प्रगट हुआ ता० उसी दिशि में प० पीछा गया ॥ २ ॥ भं० भगवन् भ० भगवान गो० गौतमने स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले अ० अन्यदा भं०भगवन् स०शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा दे० आपको वं० वंदना करता है ण० नमस्कार करता है जा० यावत् प० पर्युपासना करता है किं० क्या भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा दे० देवानुप्रिय को अ० आठ सं० संक्षिप्त प० प्रश्नोत्तर

सूत्र वागरणया ८, जाव हंता पभू इमाइं अट्ठ उक्खित्त पसिणवागरणाइं पुच्छइ सं भंतिय वंदणएणं वंदइ वंदइत्ता तमेव दिव्वं जाण विमाणं दुरूहइ दुरूहइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ २ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी अण्णदाणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं वंदइ णमंसइ जाव पज्जुवासइ ॥ किण्णं भंते ! सक्के देविंदे

भावार्थ करने का, वैक्रेय करने का और परिचारणा करने का यों आठ आलापक करना. ऐसे आठ आलापक वाले प्रश्नों पुछकर संभ्रांत वंदना नमस्कार कर उन ही यान विमान में बैठकर जिस दिशा से आया था वहां पीछा गया ॥ २ ॥ इस समय भगवंत गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! जब शक्र देवेन्द्र देवराजा आते हैं. तब आपको वंदना नमस्कार यावत्

जाव संजोएत्तारो भवंति,एएणं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं,उवज्झायवेयावच्चेहिं, थेरवेयावच्चेहिं, तवस्सीवेयावच्चेहिं, गिलाणवेयावच्चेहिं, सेह वेयावच्चेहिं, कुलवेयावच्चेहिं, गणवेयावच्चेहिं, संघवेयावच्चेहिं साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति, एएसिणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, से तेणट्ठेणं तंचेव जाव साहू ॥१७॥ सोइंदिय वसट्टेणं भंते ! जीवे किं बंधइ, एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ ॥ एवं चक्खिंदियवसट्टेवि, जाव फासिंदियवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ॥ २१ ॥ तएणं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठा सेसं जहा देवाणंदा तहेव पव्वइए जाव सव्व दुक्खप्प-

भावार्थ

और स्वतः को, अन्यको व उभय को धार्मिक कार्य में जोडते हैं और भी उद्यमी जीव आचार्य, उपाध्याय स्थविर, तपस्वी, ग्लानि, नव दीक्षित, कुल, गण, व साधु की वैयावृत्य में आत्मा को जोडनेवाले होते हैं. इस से वे जीवों उद्यमी अच्छे हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय में वश होनेवाला जीव क्या बांधता है ? अहो जयंती! जैसे क्रोधका कहा वैसेही सब कहना, और श्रोत्रेन्द्रिय जैसे शेष सब इन्द्रियों का जानना ॥१९॥ अब जयंती श्रमणोपासिका भगवंत श्री महावीर स्वामी की पासधर्म सुनकर हृष्ट तुष्ट हुई वगैरह सब

शब्दार्थ

दे० देव को ए० ऐसा व० कहा प० परिणमते हुवे पो० पुद्गल णो० नहीं प० परिणत अ० अपरिणत प० परिणमते हैं ति० ऐसा पो० पुद्गल णो० नहीं प० परिणत अ० अपरिणत त० तब से० उस मा० मायी स० सम्यग्दृष्टि उ० उत्पन्नक दे० देवने तं० उस मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उत्पन्नक देव को ए० ऐसा व० कहा प० परिणमते हुवे पो० पुद्गल प० परिणत णो० नहीं अ० अपरिणत प० परिणमते हैं ति० ऐसा

सूत्र

मायीमिच्छदिट्ठीउववण्णए देवे तं अमायीसम्मदिट्ठीउववण्णयं देवं एवं वयासी परिणममाणा पोग्गला णो परिणया, अपरिणया परिणमंतीति पोग्गला णो परिणया अपरिणया ॥ तएणं से अमायीसम्मद्दिट्ठीउववण्णए देवे तं मायीमिच्छदिट्ठीउववण्णगं देवं एवं वयासी परिणममाणापोग्गला परिणया णो अपरिणया परिणमंतीति पोग्गला

भावार्थ

दूसरा अमायी सम्यग्दृष्टि है. जो मायी मिथ्यादृष्टि देव है उसने अमायी सम्यग्दृष्टिवाले देव को ऐसा कहा कि परिणमते हुए पुद्गलों परिणत नहीं है क्यों कि अतीतकाल व वर्तमान काल का विरोध है. और जो पुद्गल परिणमते हैं वे पुद्गल परिणत नहीं है परंतु अपरिणत है. तब अमायीसम्यग्दृष्टि उत्पन्नकदेवने ऐसा कहा कि परिणमते हुवे पुद्गल परिणत हैं परंतु अपरिणत नहीं हैं और जो पुद्गल परिणमते हैं वे परिणत हैं परंतु अपरिणत नहीं हैं यदि परिणाम से परिणत पना न होवे तो सदैव

महा स्वप्न पा० देखकर प० जाग्रत होती है तं० तद्यथा ग० गज उ० ऋषभ सी० सिंह जा० यावत् सि० शिखा ॥ ९ ॥ च० चक्रवर्ती की माता भं० भगवन् च० चक्रवर्ती ग० गर्भ में व० आते क० कितने म० महा स्वप्न पा० देख कर प० जाग्रत होती है गो० गौतम च० चक्रवर्ती की मा० माता च० चक्रवर्ती जा० यावत् ए० इन ची० चौदह म० महास्वप्न ए० ऐसे ति० तीर्थंकरकी माता जा० यावत् सि० शिखा ॥ १० ॥ वा० वासुदेव माता जा० यावत् व० उत्पन्न होते ए० इन च० चउदह म० महा स्वप्न में से

चउद्दस महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति, तंजहा गय, उसभ, सीह जाव सिहिंच ॥ ९ ॥ चक्कवट्टिमायरोणं भंते ! चक्कवट्टिंसि गब्भं वक्कममाणंसि कइमहासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति ? गोयमा ! चक्कवट्टिमायरो चक्कवट्टिंसि जाव वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं एवं तित्थगर मायरो जाव सिहिंच ॥ १० ॥ वासुदेव मायरो जाव वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे सत्त महासुविणे

भा ...१३ रत्नराशि और १४ अग्निशिखा ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! चक्रवर्ती गर्भ में आते चक्रवर्ती की मा० ! कितने स्वप्न देखती है ? अहो गौतम ! उक्त चौदह स्वप्न देखती है परंतु चक्रवर्ती की माता कुछ मंद स्वप्न देखती है ॥ १० ॥ वासुदेव की माता वासुदेव गर्भ में आते उक्त चउदह महा स्वप्न में

शब्दार्थ

श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ने छ० छद्मस्थ का० काल में अं० अंतिम रात्रि में इ० ये द० दश म० महा स्वप्न पा० देखकर प० जाग्रत हुए तं० तद्यथा ए० एक म० महा घो० घोर रूप दि० दिप्ति धारन करने वाला ता० ताल पिशाच को सु० स्वप्न में प० पराजित पा० देखकर प० जाग्रत हुए ए० एक म० बडा सु० शुक्ल प० पांखवाला पुं० पुंस्कोकिल ए० एक म० बडा चि० चित्र विचित्र प० पांखों वाला पुं० पुंस्कोकिल सु० स्वप्न में पा० देख कर प० जाग्रत हो ए० एक म० बडी दा० मालाका युगल स०

सूत्र

समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसि इमे दस महासुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, तंजहा-एगं चणं महं घोररूवं दित्तधरतालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं सुक्किल पक्खगं पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं चित्तविचित्त पक्खगं पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ताणं

भावार्थ

हुए स्वप्नों का कथन करते हैं. श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी छद्मस्थ अवस्था की अंतिम रात्रि में दश स्वप्नों देखकर जागृत हुवे १ एक बडा घोररूपवाला ताल पिशाच को स्वप्न में पराजित करके जागृत हुए, २ एक बडा शुक्ल पांखोंवाला पुंस्कोकिल को स्वप्न में देखकर जागृत हुवे ३ एक बडा चित्र विचित्र पांखोंवाला पुंस्कोकिल को स्वप्न में देखकर जागृत हुवे ४ एक बडी रत्नों की माला युगल को स्वप्न में देखकर जागृत हुए ५ एक बडा श्वेत गायों का वर्ग स्वप्न में देखकर जागृत हुए ६ सुगंधित

सूत्र

पच्चुगच्छणया ठियस्सपज्जुवासणया गच्छंतस्स पडिसंसाहणता ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ ३ ॥ अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं सक्कारेइवा सम्माणेइवा जाव पडिसंसाहणया ? हंता अत्थि, जाव थणियकुमाराणं ॥ ४ ॥ पुढवीकाइयाणं जाव चउरिंदियाणं, एएसिं जहा णेरइयाणं ॥ ५ ॥ अत्थिण भंत ! पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं सक्कारेइवा जाव पडिसंसाहणया ? हता अत्थि. णो चेवणं आसणाभिग्गहेइवा आसणाणुप्पदा-णेवा ॥ ६ ॥ मणुस्साणं जाव वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥ ७ ॥ अप्पाड्डि

भावार्थ

करना, आने पर खडे होना, हस्त जोडना, आसन का आमंत्रण करना, आसन बिछाना, आये हुवे की सन्मुख जाना, बैठेहुवे की सेवा भक्ति करना, और जाते हुवे को पहुंचाने का क्या है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् वैसा नहीं कर सकते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार देव को क्या परस्पर सत्कार सन्मान यावत् जाते हुवे को पहुंचाने का क्या है ? हां गौतम ! वैसा है. ऐसे ही स्थनित कुमार का जानना ॥ ४ ॥ पृथ्वीकायादि पांच स्थावर और द्विइन्द्रिय, तीइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का नारकी जैसे कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! पंचेंद्रिय तिर्यंच को सत्कार सन्मान यावत् जाते को पहुंचाने का क्या है ? हां गौतम ! वैसा है परंतु आसन की निमंत्रणा करने का व आसन बिछाने का तिर्यंच को नहीं होता है ॥ ६ ॥ मनुष्य, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का असुर कुमार जैसे कहना ॥ ७ ॥

सूत्र

जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ जेसिं पियणं जीवाणं सरीरेहिंतो तलफले णिव्वत्तिए तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ५ जेवियसे जीवा अहे वीससाए, पच्चोवयमाणस्स उग्गहे वट्टति, तेवियणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ६ ; ॥ ६ ॥ पुरिसेणं भंते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणेवा पवाडेमाणेवा कइकिरिए ? गोयमा ! जावंचणं से पुरिसे रुक्खस्स मूलं पचालेइवा पवाडेइवा, तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ जेसिंपियणं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले णिव्वत्तिए जाव बीए णिव्वत्तिए तेविणं जीवा काइयाए

भावार्थ

प्राणों की घात करता है वहांलग उस पुरुष को चार क्रियाओं कही हैं क्योंकी उस पुरुष के योग से उसकी घात नहीं हुई है. जिन जीवों के शरीर से ताल बना हुवा है उन जीवों को कायिकादि चार क्रियाओं लगती है. और जिन जीवों के शरीर से तालफल बना हुवा है उन जीवों को कायिकादि पांच क्रियाओं लगती है. और जो जीवों स्वभाव से ही नीचे आते हैं उन जीवों को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष वृक्ष के मूल को चलाता व नीचे डालता किनती क्रियाओं करे ? अहो गौतम ! जहां लग वह पुरुष वृक्ष के मूल को चलाता व नीचे गिराता है,

सूत्र

एगयओ दुपदेसिएखंधे भवति, अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणु पोग्गला भवंति ॥७॥ णव भंते ! परमाणु पोग्गला पुच्छा ? गोयमा ! जाव णवहा कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ एवं एकेक्कं संचारिएहिं जाव अहवा एगयओ चउप्पदेसिए खंधे, एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा- एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दो चउप्पदेसिया खंधा भवंति. अहवा- एगयओ दुपदेसिए एगयओ तिपदेसिए एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ. अहवा-

भावार्थ

टुकडे करने छ परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध होता है आठ टुकडे करने आठ परमाणु पुद्गल होते है ॥ ७ ॥ अब नव परमाणु पुद्गल की पृच्छा करते हैं. अहो गौतम ! नव प्रदेशात्मक स्कंध होता है और दो यावत् नव टुकडे होते हैं दो टुकडे करने एक परमाणु पुद्गल एक आठ प्रदेशात्मक स्कंध होता है ऐसे एकेक बढाना यावत् अथवा एक चार प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध होता है. तीन टुकडे करने दो परमाणु पुद्गल एक सात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक छ

सूत्र

साए पच्चोवयमाणस्स उग्गहे वट्टंति तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं पुट्ठा ॥ ९ ॥ पुरिसेणं भंते ! रुक्खस्स कंदं पचा० ? गोयमा ! जाव चणं से पुरिसे जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे जेसिंवियणं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले णिव्वत्तिए जाव बीए णिव्वत्तिए ते विण जीवा पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥ १० ॥ अहण भंते ! से कंदे जाव चणं से कंदे अप्पणो जाव चउहिं पुट्ठे, जेसिंवियणं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले णिव्वत्तिए खंधे णिव्वत्तिए जाव चउहिं पुट्ठा, जेसिंवियणं जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे णिव्वत्तिए, तेविणं जीवा जाव पंचहिं पुट्ठा ; जेविए से जीवा अहे वीससाए पच्चोवय जाव

भावार्थ

रहे हैं वे कायिकादि पांच क्रियाओं से स्पर्शे हुवे हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! वृक्ष के कंद चलाते व नीचे गिराते कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! जब लग वह पुरुष कंद चलाता है यावत् पांच क्रियाओं. जिन जीवों के शरीर से मूल यावत् बीज बना हुवा है उन जीवों को भी पांच क्रियाओं लगे. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! वह कंद अपनी गुरुता से नीचे आवे तो कितनी क्रियाओं लगे ? वगैरह पूर्वोक्त जैसे यावत् चार क्रियाओं लगे जिन जीवों के शरीर से कंद बना हुवा है उन जीवों को भी पांच क्रियाओं लगती है. और स्वभाव से नीचे आते यावत् पांच क्रियाओं लगे. जैसे कंद का कहा वैसे ही बीज का

सूत्र

भुंजमाणे विहरइ ॥ जाहेणं ईसाणे देविंदे देवराया दिव्वाइं जहा सक्के तहा ईसाणेवि णिरवसेसं ॥ ५ ॥ एवं सणंकुमारेवि, णवरं पासाय वडिंसओ छजोअण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं तिण्णि जोअणसयाइं विक्खंभेणं मणिपेढिया तहेव अट्ठ जोअणिया, तीसेणं मणिपेढियाए उवरिं एत्थणं महेगं सीहासणं विउव्वइ सपरिवारं भाणियव्वं. तत्थणं सणंकुमारे देविंदे देवराया बावत्तरिए सामाणिय साहस्सी-एहिं जाव चउहिं बावत्तरीहिं आयरक्खदेव साहस्सीहिय, बहूहिं सणंकुमार कप्पवा-सीहिं वेमाणिएहिं देवेहिय सद्धिं संपरिवुडे महया जाव विहरइ ॥ एवं जहा सणंकुमारे

भावार्थ

करनेवाली ऐसी दो सेना सहित अनेक प्रकार के नाट्य व गायन करते दीव्य भोग भोगवते हुवे रहते हैं. जैसे शक्रेन्द्र का कहा वैसे ही ईशानेन्द्र का जानना ॥ ५ ॥ सनत्कुमार का भी वैसे ही कहना परंतु इस में प्रासाद छ सो योजन के ऊंचे और तीन सो योजन के चौडे कहना. मणि पीठिका आठ योजन की कही. उस मणि पीठिका पर एक बडा सिंहासन की विकुर्वणा कर के वहां सनत्कुमार देवेन्द्र ७२ हजार सामानिक २८८००० आत्म रक्षक और बहुत सनत्कुमारवासी देवों सहित परवरा हुवा पावत् रहता है. ऐसे ही जैसे सनत्कुमार का कहा वैसे ही प्राणत तक का कहना परंतु परिवार वगैरह जिन को जितना होवे उतना

सूत्र

किरियावि, ॥ पुढवीकाइयावि ॥ एवं जाव मणुस्सा ॥ एवं वेउव्विय सरीरेणवि दोदंडगा, णवरं जस्स अत्थि वेउव्वियं एवं जाव कम्मग सरीरं ॥ एवं सोइंदियं जाव फासिंदियं ॥ एवं मणजोगं वइजोगं कायजोगं, जस्स जं अत्थि तं भाणियव्वं, एते एगत्तपुहत्तेणं छव्वीस दंडगा ॥ १६ ॥ कइविहेण भंते ! भावे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे भावे पण्णत्ते, तंजहा-उदइए उवसमिए जाव सण्णिवाइए ॥ सेकिंतं उदइए भावे ? उदइए भावे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-ओदइए उदयणिप्फण्णेय । एवं एएणं

भावार्थ

॥ १५॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीर बनाने वाले जीवों को कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! तीन चार पांच क्रियाओं लगे वैसे ही पृथ्वी काय यावत् मनुष्य का जानना. ऐसे ही वैक्रेय शरीर के भी एक जीव व अनेक जीव आश्री दो दंडक कहे हैं. विशेषता इतनी कि जिन को जितने शरीर हैं उन के उतने कहना. ऐसे ही कार्माण शरीर तक कहना. ऐसे ही श्रोतेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय का जानना. मनयोगी, वचन योगी व काया योगी का भी वैसे ही जानना. ॥१६॥ अहो भगवन् ! भाव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! भाव के छ भेद कहे हैं औदयिक भाव, औपशमिक भाव यावत् सन्निपातिक भाव. अहो

सूत्र

[illegible] तिपदेसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ [illegible] खंधे भवति, अहवा-एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ पंच पदेसिए खंधे भवइ, अहवा-एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ [illegible] खंधे, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा [illegible] परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति अहवा-एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा एगयओ तिपदेसिए खंधे भवति। छहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपदेसिए

भावार्थ

[illegible] स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल [illegible] चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक [illegible] अथवा तीन तीन प्रदेशात्मक तीन स्कंध चार टुकडे करने तीन परमाणु पुद्गल एक छ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदे-

जं तं एवं माहंसु मिच्छंते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवं पल्वेमि एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासगा वालपंडिया, जस्सणं एगपाणेवि दंडे णिक्खित्ते सेणं णो एगंतबालेत्ति वत्तव्वंसिया ॥ ४ ॥ जीवाणं भंते ! वाला पंडिया बालपंडिया ? गोयमा ! जीवा बालावि पंडियावि बालपंडियावि, णेरइयाणं पुच्छा, गोयमा ! णेरइया बाला, णो पंडिया णो बालपंडिया ॥ एवं चउरिंदियाणं, पंचिंदियातिरिक्ख पुच्छा, गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया बाला, णो पंडिया, बालपंडियावि

तरह है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थिक जो ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि श्रमण पंडित, श्रमणोपासक बाल पंडित व एक भी जीव की घात का जिसने परिहार नहीं किया वह एकांत बाल है वह मिथ्या है मैं इस कथन को ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि श्रमण पंडित, श्रमणोपासक बालपंडित, और जिसने एक प्राणिकी भी घात का भी परिहार किया है वह एकांत बाल नहीं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव बाल, पंडित व बालपंडित हैं ? अहो गौतम ! जीव बाल, पंडित व बाल पंडित हैं. नारकी की पृच्छा ! नारकी बाल हैं परन्तु पंडित व बाल पंडित नहीं हैं. ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यंत कहना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा !

सूत्र

दुपदेसिएखंधे एगयओ छप्पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखंधे, एगयओ पचपदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपदेसिएखंधे, एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिण्णि तिपदेसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि दुपदेसियाखंधा एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपदेसियाखंधा एगयओ दो तिपदेसियाखंधा भवंति, । पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ छप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला

भावार्थ

चारटुकडे करने तीन परमाणु पुद्गल एक सात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक छ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन दो प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा

एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ एगयओ पंचपएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखंधे, एगयओ चउप्पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ दो निपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा पंच दुपदेसिया खंधा भवंति । छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला

भ.वार्थ

दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध. पांच टुकडे करते चार परमाणु पुद्गल एक छ प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा दो परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध. दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल, तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा पांच द्विप्रदेशात्मक स्कंध. छ टुकडे करते पांच परमाणु पुद्गल और पांच प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा चार परमाणु पुद्गल, एक

मणपोग्गल परियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगुत्तारिया, विगलिंदिएसु णत्थि, वइ पोग्गल परियट्टा एवं चेव, णवरं एगिंदिएसु णत्थि भाणियव्वा ॥ आणापाणु पोग्गल परियट्टा सव्वत्थ एगुत्तारिया एवं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥ २० ॥ णेरइयाणं भंते ! णेरइयत्ते केवइया ओरालिय पोग्गल परियट्टा अतीता ? णत्थि, केवइया पुरक्खडा ? णत्थि एक्कोवि ॥ एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥ पुढवीकाइयत्ते पुच्छा ? अणंता केवइया पुरक्खडा ? अणंता एवं मणुस्सत्ते, वाणमंतर जोइसिय वेमाणियत्ते जहा णेरइयत्ते. एव सत्तवि पोग्गल परियट्टा भाणियव्वा, जत्थ अत्थि तत्थ अतीतावि पुरक्खडावि

भावार्थ

वैमानिक तक सब दंडक का कहना ॥ १९ ॥ तेजस व कार्माण पुद्गल का वर्णन सब को जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात व अनंत कहना. मन पुद्गल परावर्त सब पंचेन्द्रिय में होता है वचन पुद्गल परावर्त एकेन्द्रिय वर्ज कर सब जीव में है और श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त सब जीवों में जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात अनंत तक जानना.॥२०॥ अहो भगवन् ! बहुत नारकीने नारकीपने अतीतकाल में कितने उदारिक पुद्गल परावर्त किये ? अहो गौतम ! बहुत नारकीने अतीत में नहीं किये और आगामिक काल में नहीं करेंगे क्यों की उदारिक शरीर उन में नहीं हैं ऐसे ही स्थनित कुमार तक जानना.

सूत्र

परिणामिए सण्णिवाइए भावे, सण्णिवाइयस्स भावस्स; से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-भाव तुल्लए भाव तुल्लए ॥ ८ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-संठाण तुल्लए संठ्ठण तुल्लए ? गोयमा ! परिमंडल संठाणे परिमंडलस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले, परिमंडलसंठाणे परिमंडलस्स संठाणवइरित्तस्स संठाणस्स संठाणओ णो तुल्ले ॥ एवं वट्टे, तंसे, चउरंसे, आयए ॥ समचउरंससंठाणे समचउरंसस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले, समचउरंसे संठाणे समचउरंसस्स संठाणवइरित्तस्स संठाणओ णो तुल्ले ॥ एवं जाव हुंडे ॥ से तेणट्ठेणं जाव संठाण तुल्लए संठाण तुल्लए ॥९॥

भावार्थ

पंशमिक की साथ तुल्य है, परिणामिक परिणामिक से तुल्य है और सन्निपात सन्निपात भाव से तुल्य है. अहो गौतम ! इस कारन से भाव तुल्य को भाव तुल्य कहा है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! संस्थान तुल्य को संस्थान तुल्य क्यों कहा ? अहो गौतम ! परिमंडल संस्थान परिमंडल संस्थान से तुल्य है इस से अन्य की साथ तुल्य नहीं है ऐसे ही वर्तुल, त्र्यंश, चौरस व लम्बगोल का जानना. समचतुस्र संस्थान समचतुस्र संस्थान से तुल्य है और इस से अन्य की साथ तुल्य नहीं है ऐसे ही हुंडक तक सब संस्थान का जानना. अहो गौतम ! इस कारन से संस्थान तुल्य को संस्थान तुल्य कहा गया है ॥ ९ ॥

अणंता भाणियव्वा; जस्स नत्थि तस्स दोवि णत्थि भाणियव्वा, जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते॥ केवइया आणापाणु पोग्गल परियट्टा अतीता? अणंता। केवइया पुरक्खडा? अणंता ॥२१॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ओरालिय पोग्गल परियट्टे ? ओरालिय पोग्गल परियट्टे गोयमा! जंणं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालिय सरीरपाउग्गाइं दव्वाइं ओरालिय सरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं, निविट्ठाइं, अभिणिविट्ठाइं, अभिसमण्णागयाइं परियागयाइं परिणामियाइं, णिज्जिण्णाइं णिसिरियाइं णिसिट्ठाइं भवति. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ ओरालिय पोग्गलपरियट्टे

भावार्थ पृथ्वी कायावने बहुत नारकीने अतीत काल में अनंत उदारिक पुद्गल परावर्त किये और आगामीक कालमें करेंगे ऐसे ही मनुष्य तक जानना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे कहना. ऐसे ही सातों पुद्गल परावर्त जानना. उन में जिनको जो है उनको अतीत व अनागत काल में अनंत पुद्गल परावर्त कहना. ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक पुद्गल परावर्त किस तरह कहा गया है ? अहो गौतम ! उदारिक शरीर में रहा हुवा जीवने उदारिक शरीर के योग्य द्रव्य उदारिक शरीरपने ग्रहण किये, बांधे, स्पर्शे, किये, रखे, मील्याये, परिणमाये, निर्जराये, व छोडे इस से उदारिक पुद्गल परावर्त कहा गया. ऐसे ही

गोयमा! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्ट निव्वत्तणा काले, तेया पोग्गलपरियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालिय पोग्गलपरियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे आणापाणु पोग्गल परियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपोग्गल परियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वइपोग्गल परियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वेउव्विय पोग्गल परियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ॥ २४ ॥ एएसिणं भंते ! ओरालिय पोग्गल परियट्टाणं जाव आणापाणु पोग्गल परियट्टाणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा वेउव्विय पोग्गल परियट्टा, वइपोग्गल परियट्टा अणंतगुणा, मणपोग्गल

भावार्थ

पुद्गल परावर्त निवर्तन काल कहा कि कार्माण पुद्गल बहुत सूक्ष्म परमाणु से बनते हैं एक समय में बहुत ग्रहण होते हैं सब नरकादि पदमें रहनेवाले जीव समयर में ग्रहण करते हैं इस से तेजस पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना, इस से उदारिक पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना इस से श्वासोश्वास पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना इस से मन पुद्गल परावर्तन काल अनंत गुना इस से वचन पुद्गल परावर्तन काल अनंत गुना इस से वैक्रेय पुद्गल परावर्त काल अनंत गुना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! इन उदारिक यावत् श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त में कौन किस से अल्प यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा वैक्रेय पुद्गल

सूत्र

जाव वेमाणिए ॥१॥ सिद्धेणं भंते ! सिद्ध भावेणं किं पढमे अपढमे?
अपढमे ॥ २ ॥ जीवाणं भंते ! जीवभावेणं किं पढमा अपढमा ? गोयमा ! णो
पढमा अपढमा ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ३ ॥ सिद्धाणं पुच्छा ? गोयमा !
पढमा णो अपढमा ॥ ४ ॥ आहारएणं भंते ! जीवे आहारभावेणं किं पढमे अपढमे?
गोयमा ! णो पढमे अपढमे ॥ एवं जाव वेमाणिए ॥५॥ पोहत्तिएवि एवं चेव ॥६॥
अणाहारएणं भंते ! जीवे अणाहारभावेणं पुच्छा ? गोयमा ! सिय पढमे सिय अपढमे

भावार्थ

चौबीस दंडक का जानना. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! सिद्ध सिद्धभाव से क्या प्रथम है या अप्रथम है ? अहो गौतम ! सिद्ध सिद्धभाव से अप्रथम है परंतु प्रथम नहीं है. यह एक आश्री कहा अब अनेक आश्री कहते हैं. अहो भगवन् ! बहुत जीव जीवभाव से क्या प्रथम हैं या अप्रथम हैं ? अहो गौतम ! प्रथम नहीं हैं परंतु अप्रथम हैं, ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ३ ॥ सिद्ध प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! आहारक जीव आहारभाव से क्या प्रथम है या अप्रथम है ? अहो गौतम ! प्रथम नहीं है परंतु अप्रथम है, ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ५ ॥ बहुत जीवों का भी वैसे ही जानना. ॥६॥ अहो भगवन्! अनाहारक जीव क्या अनाहार भाव से प्रथम है या अप्रथम है? अहो गौतम ! स्यात प्रथम व स्यात् अप्रथम है अर्थात् कितनेक जीवों की अनाहारक होने की आदि है सिद्धवत् और

सूत्र

पुहत्तेणं पढमे णो अपढमे ॥ १६ ॥ सकसायी कोहकसायी जाव लोभकसायी एगत्तेणं पुहत्तेण जहा आहारए, अकसायी जीवे सिय पढमे सिय अपढमे, एवं मणुस्सेवि, सिद्धे पढमे णो अपढमे ॥ पुहत्तेणं जीवा मणुस्सा पढमावि अपढमावि, सिद्धा पढमा णो अपढमा ॥ १७ ॥ णाणी एगत्त पुहत्तेणं जहा सम्मद्दिट्ठी, आभिणिबोहियणाणी जाव मणपज्जवणाणी एगत्तपुहत्तेणं एवंचेव. णवरं जस्सजं अत्थि, केवलणाणी जीवे मणुस्से सिद्धेय एगत्तपुहत्तेणं पढमा णो अपढमा ॥ अण्णाणी मइ अण्णाणी सुयअण्णाणी विभंगणाणी एगत्तपुहत्तेणं जहा आहारए

भावार्थ

आश्री प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है ॥ १६ ॥ सकषायी क्रोधकषायी यावत् लोभ कषायी एक अनेक आश्री आहारक जैसे जानना. अकषायी जीव व मनुष्य एक आश्री स्यात् प्रथम स्यात् अप्रथम है अनेक आश्री जीव मनुष्य प्रथम भी हैं और अप्रथम भी हैं सिद्ध आश्री प्रथम है परंतु अप्रथम नहीं है. सिद्ध प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं ॥ १७ ॥ ज्ञानी का एक आश्री समदृष्टि जैसे कहना. आभिनिबोधिक ज्ञानी यावत् मनःपर्यव ज्ञानी का एक व अनेक आश्री भी ऐसे ही कहना. केवल ज्ञानी जीव मनुष्य व सिद्ध में एक अनेक आश्री प्रथम हैं परंतु अप्रथम नहीं हैं. मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी विभंग ज्ञानी का

पुरंदरे एवं जहा जहा सोलसमसए बिइय उद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेण आगओ णवरं एत्थं आभिओगावि अत्थि जाव बत्तीसइविहं नट्टविहं उवदंसेइ. उवदंसेइत्ता जाव पडिगए॥२॥भंतेत्ति भगवं गोयमे! समणं भगवं महावीरं जाव एवं वयासी जहा तइय सए ईसाणस्स तहेव कूडागारसाला दिट्ठंतो तहेव, पुव्वभव पुच्छा जाव अभिसमण्णागया, गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे हत्थि-णाउरे णामं णयरे होत्था वण्णओ, सहसंबणे उज्जाणे वण्णओ॥३॥तत्थणं हत्थिणाउरे

भावार्थ धारन करनेवाला शक्र देवेन्द्र देवराजा जैसे सोलहवे शतक के दूसरे उद्देशे में वर्णन किया वैसे यान विमान मे आया. विशेष में यहां पर आभियोगिक देवों भी थे यावत् बत्तीसप्रकार के नाटक बतलाकर यावत् पीछा गया ॥२॥ भगवान गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को यावत् ऐसा बोले अहो भगवन् ! वगैरह जैसे तीसरे शतक में ईशानेन्द्र का कथन वैसे ही कूटाकारशाला के दृष्टांत से पूर्वभाव की पृच्छा यावत् प्राप्त हुआ. श्रमण भगवंत महावीरने गौतमादि श्रमण निर्ग्रंथों को कहा कि अहो गौतम ! उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में हस्तिनापुर नगर था. वह वर्णन योग्य था. उस की ईशान कौन में सहस्राम्र उद्यानथा

**शब्दार्थ** होगा मे० वृक्ष त० तहां अ० अर्चनीय वं० वंदनीय पू० पूजनीय स० सत्कार करने योग्य स० सन्मान करने योग्य स० सत्य स० सत्योपपात म० सान्निहित पा० प्रतिहार्य ला० लीपनकीया म० पूजावाला भ० होगा से० वह भं० भगवन् त० वहां से उ० चवकर क० कहां ग० जावेगा क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेगा जा० यावत् अ० अंत करेगा ॥ ३ ॥ ए० यह भं० भगवन् सा० शाल्मल की ल० लकडी उ० ऊष्ण से भेदाइ जा० यावत् द० दावाग्नि ज्वाला से भेदाइ का० काल

**सूत्र** सालरुक्खत्ताए पच्चायाहिति, सेणं तत्थ अच्चियवंदियपूईयसक्कारियसम्माणिय दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय पाडिहेरे लाउल्लोइयमहिएयावि भविस्सइ ॥ सेणं भंते ! तओहिंतो उव्वट्टित्ता कहिं गमिहिति कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतंकाहिइ ॥ ३ ॥ एसणं भंते ! सालल्लट्ठिया उण्हाभिहया जाव दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा जाव कहिं उववज्जिहिति ?

**भावार्थ** होगा और व दीव्य सत्यमेवा के फलदाता, प्रातिहार्यकर्मकरनेवाला होगा और उस की पीठिका गोमय से लींपकर पांडु से पोतकर पूजित होवेगा. अहो भगवन् ! वह वहां से नीकलकर कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा, बुझेगा यावत् सब दुःखों का अंत करेगा॥३॥सूर्य के ताप से यावत् दवाग्नि से हनाइ हुई उस की लकडी का जीव काल के अवसर में काल कर

सूत्र

जहा एक्कारसमसए सुदंसणे तहेव णिग्गओ जाव पज्जुवासइ ॥ ६ ॥ तएणं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियस्स सेट्ठिस्स धम्मकहा जाव परिसा पडिगया ॥ ७ ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी मुणिसुव्वयस्स जाव णिसम्म हट्ठ तुट्ठ उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेइत्ता मुणिसुव्वय जाव एवं वयासी-एवमेयं भंते! जाव से जहेयं तुब्भे वदह, जं णवर देवाणुप्पिया! णेगमट्ठ सहस्सं आपुच्छामि, जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेमि तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं पव्वयामि ॥८॥ अहासुहं जाव मापडिबंधं ॥ ९ ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी जाव पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता जेणेव हत्थिणापुरे णयरे जेणेव सए गिहे तेणेव

भावार्थ

अधिकार कहा वैसे ही अपने गृह से नीकला यावत् पर्युपासना करने लगा ॥६॥ तब मुनिसुव्रत अरिहंतने कार्तिक श्रेष्ठि को धर्म कथा कही यावत् परिषदा पीछी गइ ॥ ७ ॥ उस समय में मुनि सुव्रत अरिहंत की पास में धर्मकथा सुनकर कार्तिक शेठ बहुत हृष्ट तुष्ट हुवे, अपने स्थान से उठे, और उठकर मुनि सुव्रत अरिहंत को ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! जैसे आप कहते हैं वैसे ही है. विशेष में अहो देवानुप्रिय ! मेरे एक हजार आठ गुमास्ते को पुछकर व ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापकर फीर आप की पास दीक्षा अंगीकार करूंगा ॥ ८ ॥ अहो देवानुप्रिय ! आप को सुख होवे वैसे करो विलम्ब मत करो ॥ ९ ॥ फीर

पासइ ॥ १ ॥ केवलीणं भंते ! आधोधियं जाणइ पासइ ? एवं चेव एवं परमा होहियं एवं केवलिं एवं सिद्धं जाव जहाणं भंते ! केवली सिद्धं जाणइ पासइ, तहाणं सिद्धेवि सिद्धं जाणइ पासइ ? हंता ! जाणइ पासइ ॥ २ ॥ केवली भंते ! भासेज्जवा वागरेज्जवा ? हंता भासेज्जवा वागरेज्जवा । जहाणं भंते ! केवली भासेज्जवा वागरेज्जवा तहाणं सिद्धेवि भासेज्जवा वागरेज्जवा ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ जहाणं केवली भासेज्जवा वागरेज्जवा णो तहाणं सिद्धे भासेज्जवा वागरेज्जवा ? गोयमा ! केवलीणं सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार

भावार्थ

जैसे जाने देखे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! केवली मर्यादित क्षेत्र जाननेवाले अवधिज्ञानी को क्या जाने देखे? हां गौतम ! जैसे छद्मस्थ का कहा वैसे ही जानना. ऐसे ही परम अवधि ज्ञानी व केवल ज्ञानी व सिद्ध का जानना. जैसे केवली मर्यादित अवधि, परम अवधि केवल ज्ञानी व सिद्ध को जानते देखते हैं वैसे ही सिद्ध जानते व देखते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या केवली बोलते हैं ? हां गौतम ! केवली बोलते हैं. अहो भगवन् ! जैसे केवली बोलते हैं वैसे ही क्या सिद्ध बोलते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् सिद्ध नहीं बोलते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से जैसे केवली बोलते हैं वैसे सिद्ध

असणं पाणं खाइमं साइमं जहा गंगदत्तो जाव मित्तणाइ जाव परिजणेणं जेट्ठ पुत्तं णेगमट्ठसहस्सेणय समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव रवेणं हत्थिणापुरं णयरं मज्झंमज्झेणं जहा गंगदत्तो जाव आलित्तेणं भंते ! लोए पलित्तेणं भंते ! लोए आलित्तपलित्तेणं भंते ! लोए जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ ॥ इच्छामिण भंते ! णेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावियं, मुंडावियं जाव माइक्खियं तएणं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं णेगमट्ठ सहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावेइ जाव धम्ममातिक्खति एवं देवाणुप्पिया गंतव्वं एवं चिट्ठियव्वं जाव संजमियव्वं ॥१३॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं संपडिवज्जइ-तमाणाए तहा गच्छइ जाव सजमइ ॥ १४ ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठ

भावार्थ
मित्र ज्ञाति यावत् परिजन सहित ज्येष्ठ पुत्र व एक हजार आठ गुमास्ते मार्ग में चलते हुवे सब ऋद्धि व वादत्रों सहित हस्तिनापुर नगर की बीच में गंगदत्त जैसे यावत् अहो भगवन् ! यह लोक आलिप्त, पलित, आलिप्त पलिप्त है यावत् अनुगामी होगा. अहो भगवन् ! एक हजार आठ गुमास्ते सहित मैं स्वमेव प्रव्रजित होने, मुंडित होने, यावत् कहने की इच्छाता हूं तब मुनि सुव्रत अरिहंतने एक हजार आठ गुमास्ते सहित कार्तिक श्रेष्ठी को प्रव्रजित किया यावत् उपदेश दिया कि ऐसे बैठना ऐसे संयम पालना ॥ १३ ॥ फीर एक हजार आठ गुमास्ते सहित कार्तिक श्रेष्ठीने मुनिसुव्रत अरिहंत का ऐसा धार्मिक उपदेश सम्यक्

सूत्र

किंचि आणत्तंगा पाणत्तंगा एवं जहा इंदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया जाव तत्थणं जे ते उवउत्ता ते जाणंति पासंति आहारेंति, से तेणट्ठेणं णिक्खेवो भाणियव्वो ॥ ८ ॥ कइविहेणं भंते ! बंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे बंधे पण्णत्ते तंजहा-दव्वबंधेय भावबंधेय ॥ ९ ॥ दव्वबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-पओगबंधेय वीससाबंधेय ॥ १० ॥ वीससाबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते, मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सादीयवीससाबंधेय अणा-

भावार्थ

रहे हुवे हैं ? हां माकंदिय पुत्र ! भावितात्मा अनगार को यावत् अवगाह कर रहे हुवे हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरित किये हुवे पुद्गलों तथा उन के भेद वर्णादि विशेष पुद्गलों वगैरह जैसे पन्नवणा पद में पहिले उद्देश में कहा वैसे ही यहां वैमानिक पर्यंत जानना. यावत् वहां जो उपयोग युक्त है वह जाने देखे व आहार करे वहां तक कहना. अहो माकंदिय पुत्र ! इसलिये ऐसा कहा है ॥८॥ अहो भगवन् ! बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! बंध के दो भेद कहे हैं. १ द्रव्य बंध और २ भाव बंध ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य बंध के दो भेद कहे हैं. १ प्रयोग बंध और २ वीस्रसा बंध ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! वीस्रसा बंध के

सूत्र

केवलीणं भंते ! सोहम्मं कप्पं सोहम्म कप्पेति जाणइ पासइ ? एवं चेव ॥ एवं ईसाणं, एवं जाव अच्चुयं ॥ केवलीणं भंते ! गेविज्जग विमाणं गेविज्जगविमाणेति जाणइ पासइ ? एवं चेव ॥ एवं अणुत्तरविमाणेवि ॥ केवलीण भंते ! ईसिपब्भारं पुढविं ईसिपब्भार पुढवीति जाणइ पासइ? एवं चेव॥५॥केवलीण भंते! परमाणु पोग्गलं परमाणु पोग्गलेति जाणइ पासइ? एवं चेव॥एवं दुपदेसियं खंधं, एवं जाव अणंत पदेसियं खंधं ॥ जहाणं भंते केवली अणंतपदेसिए खंधेति जाणइ पासइ तहाणं सिद्धेवि अणंतं पदेसियं खंधं जाव पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ चउद्दसम सयस्सय दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥१४॥१०॥ सम्मत्तंय चउद्दसम सयं॥१४॥

भावार्थ

रत्नप्रभा पृथ्वी जाने देखे ? हां गौतम ! जाने देखे. ऐसे ही शर्कर प्रभा पृथ्वी यावत् सातवी तमस्तमा पृथ्वी का जानना. जैसे नारकी का कहा, वैसे ही सौधर्म ईशान यावत् अच्युत, ग्रैवेक, अनुत्तर विमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का जानना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! केवली परमाणु पुद्गल को क्या परमाणु पुद्गल जाने देखे ? हां गौतम ! वैसे ही जानना. ऐसे ही द्विप्रदेशात्मक स्कंध, यावत् अनंत प्रदेशात्मक स्कंध का जानना. वैसे ही सिद्ध भी अनंत प्रदेशिक स्कंध को जाने देखे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह चौदहवा शतक का दशवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ १४ ॥ १० ॥ यह चौदहवा शतक संपूर्ण हुआ ॥ १४ ॥

सूत्र

मागंदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तंजहा-मूलपगडिबंधेय, उत्तरपगडिबंधेय ॥ १५ ॥ णेरइयाणं भंते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कइविहे भावबंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता दुविहे भावबंधे पण्णत्ते तंजहा-मूलपगडिबंधेय, उत्तर पगडिबंधेय ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ णाणावरणिज्जेणं जहा दंडओ भणिओ एवं जाव अंतराइयं भाणियव्वो ॥ १६ ॥ जीवाणं भंते ! पावे कम्मे जेय कडे जाव जेय कज्जिस्सइ अत्थियाइं तस्स केइ णाणत्ते ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवाणं पावे कम्मे जेय कडे जाव जेय कज्जिस्सइ अत्थियाइं केइ णाणत्ते ? मागंदियपुत्ता ! से जहा णामए केइपुरिसे धणुं परामुसइ, परामुसइत्ता उसुं परामुसइ २ त्ता ठाणं

भावार्थ

मूल प्रकृतिबंध व उत्तर प्रकृतिबंध. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को ज्ञानावरणीय कर्म के कितने भाव बंध कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! दो भाव बंध कहे हैं ! मूलप्रकृतिबंधव उत्तर प्रकृति बंध. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. जैसे ज्ञानावरणीय का दंडक कहा वैसे ही अंतराय तक का दंडक कहना. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! जिन जीवोंने पापकर्म किये हैं और जो जीवों पापकर्म करेंगे उन में क्या भिन्नता है ? हां माकंदियपुत्र ! उन में भिन्नता है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जिन जीवोंने पापकर्मों

शब्दार्थ रा० राहु आ० आते ग० जाते वि० विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते चं० चंद्र लेश्या को आ० आवरण करता चि० रहे त० तब म० मनुष्य क्षेत्र के म० मनुष्य व० कहते हैं रा० राहु चं० चंद्र को गि० ग्रहण करता है ज० जब रा० राहु आ० आते चं० चंद्र लेश्या आ० आवर्त कर पा० पास में वी० जावे त० तब म० मनुष्य क्षेत्र के म० मनुष्य व० कहते हैं चं० चंद्रने रा० राहु की कु० कुक्षी भि० भेदी ज० जब रा० राहु आ० आते चं० चंद्र लेश्या को आ० आवर्तकर प० पीछा फीरे त० तब म०

सूत्र एवं चेव जाव तदाणं उत्तर पच्चच्छिमेणं चंदे उवदंसति दाहिण पुरच्छिमेणं राहू ॥ जदाणं राहू आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा विउव्वमाणेवा परियारेमाणेवा चंदलेस्सं आवरे माणे २ चिट्ठइ, तदाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति एवं खलु राहू चंदं गिण्हइ ॥ एवं जदाणं राहू आगच्छमाणेवा ४ चंदलेस्सं आवरेत्ताणं पासेणं वीईवयइ तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिण्णाए ॥ एवं जदाणं

भावार्थ करते व परिचारणा करते जब राहू चंद्र की कांति को ढकता है तब मनुष्य लोक में मनुष्यों बोलते हैं कि राहू चंद्र को ग्रहण करता है. जब राहू जाते, आते, वैक्रेय करते, परिचारणा करते चंद्रकी कान्ति का आवरण कर पास से जाता है तब मनुष्य लोक में मनुष्य कहते हैं कि चंद्र राहू की कुक्षि में गया. ऐसे ही राहू जाते, आते, वैक्रेय करते व परिचारणा करते चंद्र की कान्ति को ढक कर पीछा जाता है तब मनुष्यों

मागंदियपुत्ता ! असंखेज्जइ भागं आहारेंति अणंतभागं णिज्जरेंति ॥ १९ ॥ चविायाणं भंते ! केइ तेसु णिज्जरापोग्गलेसु आसइत्तएवा जाव तुयट्टित्तएवा ? णो इणट्ठे समट्ठे अणाहारमेयं वुइयं समणाउसो ! एव जाव वेमाणियाणं ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥१८॥३॥ • •

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव भगवं गोयमे एवं वयासी- अह भंते ! पाणाइवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणाइवाए विरमणे जाव मिच्छादंसण

व अनंत भागकी निर्जरा करते हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! उन निर्जरित पुद्गलों में कोई बैठने को यावत् सोने को क्या समर्थ है ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो श्रमण ! यह अनाधार कहा गया है. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह आठारहवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १८ ॥ ३ ॥ :o; :o; :o;

तीसरे उद्देशे में निर्जरा की व्याख्या कही. चौथे उद्देशे में पाप की व्याख्या करते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पुछने लगे कि अहो भगवन् ! प्राणातिपात मृषावाद यावत् मिथ्या दर्शन शल्य, प्राणा-

शब्दार्थ अ० अपराभूत आ० आजीविक म० मत में ल० अर्थ प्राप्त कीया है ग० अर्थ ग्रहण कीया है पु० अर्थ पुछा है वि० अर्थ निश्चय कीया है अ० अस्थि मि० मिंज पे० प्रेम से रक्त म० आयुष्यमन्त श्रमण आ० आजीविक मत में अ० अर्थ अ० यह अर्थ प० परम अर्थ से० शेष अ० अनर्थ आ० आजीविक मत में अ० आत्मा को भा० भावती वि० विचरती है ॥ ३ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र च० चौवीस वा० वर्ष की प० पर्याय से हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी की कुं०

सूत्र यंसि लद्धट्ठा गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अट्ठिमिंज पेमाणुरागरत्ता, अयमाउसो ! आजीविय समए अट्ठे अयमट्ठे परमट्ठे, सेसे अणट्ठेत्ति ॥ आजीविय समएणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥ ३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं गोसाले मंखलिपुत्ते चउवीसवास परियाए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघ संपरि-

भावार्थ मत में मरूपित सिद्धांतों को उसने प्राप्त किया था, रत्न की तरह ग्रहण किया था, पृच्छा कर निश्चय किया था, उस की हड्डी व हड्डियों की मिंजियों प्रेमानुराग से रक्त बनी हुई थी. धर्म चर्चा के प्रसंग वह यही कहती थी कि अहो आयुष्मन् ! आजीविक के शास्त्रों प्रयोजन मय हैं, वेही परमार्थ सुख के कारणभूत हैं, और शेष सब अनर्थ के हेतुभूत है. इस तरह आजीविक समय में स्वतः को भावती [ विचारती ] हुइ रहती थी ॥ ३ ॥ उस काल उस समय में मंखलिपुत्र गोशाला चौवीस वर्ष पर्यंत पर्याय पालकर हालाहला

सूत्र

गोयमा ! पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले पुढवीकाइए जाव वणस्सइकाइए सव्वेय बादरबोंदिधरा कडेवरा एएणं दुविहा जीवदव्वाय अजीवदव्वाय जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छा दंसणसल्ल विवेगे धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए जाव परमाणुपोग्गले सेलेसिपडिवण्णए अणगारे एएणं दुविहा जीवदव्वाय अजीवदव्वाय जीवाणं परिभोगत्ताए णो हव्वमागच्छंति; से तेणट्ठेणं जाव णो हव्वमागच्छंति ॥ १ ॥ कइणं भंते ! कसाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता तंजहा कसायपदं णिरवसेसं भाणियव्वं जाव णिज्जरेंति लोभेणं ॥ २ ॥ कइणं भंते!

भावार्थ

बादर शरीर धारन करनेवाले द्विइन्द्रियादिक ये सब जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य ऐसे दो भेदवाले होते हैं. वे जीवों के परिभोग के लिये आते हैं. प्राणातिपात विरमण यावत् मिथ्या दर्शन शल्य का त्याग धर्मास्तिकाया अधर्मास्तिकाया यावत् परमाणु पुद्गल, शैलेशी प्रतिपन्न अनगार इन के जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य ऐसे दो भेद जीव परिभोग के लिये नहीं आते हैं. इस से ऐसा कहा गया है यावत् कितनेक परिभोग के लिये नहीं आते हैं ॥ १ ॥ परिभोग कषायवंत को होता है इसलिये कषाय का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! कषाय के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! चार कषाय कही वगैरह कषाय पद कहना यावत्

शब्दार्थ रा० राहु आ० आते ग० जाते वि० विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते चं० चंद्र लेश्या को आ० आवरण करता चि० रहे त० तब म० मनुष्य क्षेत्र के म० मनुष्य व० कहते हैं रा० राहु चं० चंद्र को गि० ग्रहण करता है ज० जब रा० राहु आ० आते चं० चंद्र लेश्या आ० आवर्त कर पा० पास से वी० जावे त० तब म० मनुष्य क्षेत्र के म० मनुष्य व० कहते हैं चं० चंद्रने रा० राहु की कु० कुक्षी भि० भेदी ज० जब रा० राहु आ० आते चं० चंद्र लेश्या को आ० आवर्तकर प० पीछा फीरे त० तब म०

सूत्र एवं चेव जाव तदाणं उत्तर पच्चच्छिमेणं चंदे उवदंसेति दाहिण पुरच्छिमेणं राहू ॥ जदाणं राहू आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा विउव्वमाणेवा परियारमाणेवा चंदलेस्सं आवरे माणे २ चिट्ठइ, तदाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति एवं खलु राहू चंदं गिण्हइ ॥ एवं जदाणं राहू आगच्छमाणेवा ४ चंदलेस्सं आवरेत्ताणं पासेणं वीईवयइ तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एवं खलु चंदेण राहुस्स कुच्छी भिणाए ॥ एवं जदाणं

भावार्थ करते व परिचारणा करते जब राहु चंद्र की कांति को ढकता है तब मनुष्य लोक में मनुष्यों बोलते हैं कि राहु चंद्र को ग्रहण करता है. जब राहु जाते, आते, वैक्रेय करते, परिचारणा करते चंद्रकी कान्ति का आवरण कर पास से जाता है तब मनुष्य लोक में मनुष्य कहते हैं कि चंद्र राहु की कुक्षि में गया. ऐसे ही राहु जाते, आते, वैक्रेय करते व परिचारणा करते चंद्र की कान्ति को ढक कर पीछा जाता है तब मनुष्य

शब्दार्थ विचरता है से० वह क० कैसे ए० यह म० माने ॥ ९ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में सा० स्वामी स० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पीछी गई ॥ १० ॥ ते० उस काल में उ० उस समय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का जे० ज्येष्ठ अं० अंतेवासी इं० इन्द्र भूति अ० अनगार गो० गौतम गो० गोत्र मे छ० छठछठ से ए० ऐसे ज० जैसे बि० दूसरा शतक में णि० निर्ग्रंथ उ० उद्देशा जा० यावत् अ० फीरते ब० बहुत मनुष्यों के स० शब्द णि० सुने ब० बहुत मनुष्य अ० अन्योन्य

सूत्र निहरइ; ते कहमेयं मण्णे एवं ? ॥ ९ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समो-सढे जाव परिसा पडिगया ॥ १० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूईणामं अणगारे गोयम गोत्तेणं जाव छट्ठं छट्ठेणं एवं जहा बिईयसए णियंठुद्देसए जाव अडमाणे बहुजणसद्दं णिसामेइ बहुजणो अण्णम-

भावार्थ गोशाला जिन मलापी यावत् प्रकाश करता हुवा विचरता है ॥ ९ ॥ उस काल उस समय में स्वामी पधारे यावत् परिषदा धर्मोपदेश सुनकर पीछी गइ ॥ १० ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर के ज्येष्ठ अंतेवासी गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति अनगार छठ २ की तपस्या का पारणा करते वगैरह जैसे दूसरे शतक के निर्ग्रंथ उद्देशे में कहा वैसे फीरते हुवे बहुत मनुष्यों से ऐसा सुना कि बहुत मनुष्यों परस्पर ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि मंखली पुत्र गोशाला जिन मलापी यावत् प्रकाश करता हुवा विचरता

शब्दार्थ

अर्थ को णो० नहीं आ० आदर किया णो० नहीं प० अच्छा माना तु० शांत सं० रहा ॥ २८ ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम रा० राजगृह ण० नगर में प० नीकलकर णा० नालंदा बा० बाहर की म० मध्य से जे० जहां तं० वणकर शाला ते० तहां उ० आकर दो० दूसरा मा० मास क्षमण उ० अंगीकार कर वि० विचरा ॥ २९ ॥ त० तब अ० मैं मा० मास क्षमण पा० पारणे में तं० वणकर शा० शाला से प० नीकलकर णा० नालंदा बा० बाहिर म० मध्य से जे० जहां रा० राजगृह ण० नगर आ० यावत्

सूत्र

एयमहं णो आढामि णो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ॥ २८ ॥ तएणं अहं गोयमा ! रायगिहाओ णयराओ पडिणिक्खमामि २ त्ता, णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छामित्ता, दोच्चं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ २९ ॥ तएणं अहं मासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिणिक्खमामि पडिणिक्खमामित्ता णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं

भावार्थ

॥ २७ ॥ अहो गौतम ! उस समय मैंने गोशाला के वचन का आदर किया नहीं; उन के वचन मैंने अच्छे जाने नहीं परंतु मौन रहा. ॥ २८ ॥ फीर अहो गौतम ! मैं राजगृह नगर में से नीकलकर नालंदिय पाडा के बाहिर मध्यबीच में से नीकलता हुवा तंतुवाय शाला में आया और दूसरा मास खमन कर के रहने लगा. ॥ २९ ॥ मास खमण के पारणे के दिन तंतुवाय शाला में से नीकलकर नालंदिय पाडा के

॥ १२ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, घायगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पचामित्तत्ताए, उववण्ण पुव्वे? हंता गोयमा! जाव अणंतखुत्तो सव्व जीवाविणं भंते! एवंचेव ॥ १३ ॥ अयण्णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए, जाव सत्थवाहत्ताए उववण्ण पुव्वे ? हंता गोयमा! असतिं जाव अणंत खुत्तो ॥ सव्वजीवाण एवंचेव ॥ १४ ॥ अयण्ण भंते! जीवे सव्व जीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए, भाइल्लगत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए, उववण्णपुव्वे? हंता गोयमा! जाव अणंतखुत्तो ॥ एवं सव्वजीवावि जाव अणंत

भाई, भगिनी, भार्या, पुत्र, पुत्री व पुत्रवधूपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा? हां गौतम! अनेकवार यावत् अनंतवार उत्पन्न हुवा ॥ १२ ॥ अहो भगवन्! यह जीव सब जीवों के शत्रु, वैरी, घातक, वधक, प्रत्यनीक, व अमित्रपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा? हां गौतम! अनेकवार यावत् अनंतवार. जैसे एक जीवका कहा वैसे सब जीवोंका जानना ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! यह जीव सब जीवों के राजा, युवराज, यावत् सार्थवाहपने पहिले क्या उत्पन्न हुवा? हां गौतम! अनेकवार यावत् अनंतवार उत्पन्न हुवा. ऐसे ही सब जीवों का जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन्! यह जीव सब जीवों के दास, प्रेषक, भृत्यक, भागीदार, भोग पुरुष, शिष्य व द्वेषपने

शब्दार्थ

गा० गाथापति के गि० गृह में अ० प्रवेश कीया त० तब से० वह सु० सुदर्शन गा० गाथापति ण० विशेष स० सर्व का० रसमय भो० भोजन से प० देवे से० शेष तं० जैसे जा० यावत् च० चौथा मा० मास खमण उ० अंगीकार कर वि० विचरता हूं ॥ ३२ ॥ ती० उस णा० नालंदा बा० बाहिर अ० नजदीक को० कोल्लाग स० सन्निवेश हो० था व० वर्णन युक्त ॥ ३३ ॥ त० तहां को० कोल्लाग सं० सन्निवेश में ब० बहुल मा० माहण प० रहता था अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत रि० ऋग्वेद जा० यावत्

सूत्र

णे सुदंसणस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे तएणं से सुदंसणे गाहावई, णवरं ममं सव्वकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेति सेसं तंचेव, जाव चउत्थं मासक्खमणं उव॰ संपज्जित्ताणं विहरामि ॥ ३२ ॥ तीसेणं णालिंदा बाहिरियाए अदूरसामंते एत्थणं कोल्लाएणामं सण्णिवेसे होत्था, सण्णिवेस वण्णओ ॥ ३३ ॥ तत्थणं कोल्लाए

भावार्थ

कर विचरने लगा ॥ ३१ ॥ अहो गौतम ! तीसरे मासखमण के पारणे के दिन राजगृह नगर में सुदर्शन शेठ के गृह में मैंने प्रवेश किया. सुदर्शन गाथापति मुझे इच्छानुसार सकल रसमय भोजन देकर संतुष्ट हुवा शेष सब अधिकार विजय गाथापति जैसे जानना यावत् चौथा मासखमण कर के विचरने लगा. ॥३२॥ उस नालिंदा पाडा के बाहिर पास एक कोल्लागसन्निवेश था. वह वर्णन युक्त था ॥ ३३ ॥ उस कोल्लाग सन्निवेश में बहुल नामक ब्राह्मण रहता था. वह ऋद्धिवंत यावत् अपराभूत था और ऋग्वेद यावत्

सूत्र

पणिहाणे पण्णत्ते, तंजहा-वइपणिहाणेय कायपणिहाणेय, एवं जाव चउरिंदियाणं, सेसाणं तिविहे जाव वेमाणियाणं ॥५॥ कइविहेणं भंते! दुप्पणिहाणे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा-मणदुप्पणिहाणे वइदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे,जहेव पणिहाणेणं दंडओ भणिओ तहेव दुप्पणिहाणेणवि भाणियव्वो॥ ६ ॥ कइविहेणं भंते! सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा मणसुप्पणिहाणे, वइ सुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ॥ मणुस्साणं भंते कइविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ? एवंचेव ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥७॥ तएणं समणे भगवं महावीरे जाव बहिया

भावार्थ

तक को तीनों प्रणिधान हैं ॥५॥ अहो भगवन् ! कितने दुष्प्रणिधान कहे हैं ? अहो ! गौतम ! तीन दुष्प्रणिधान कहे हैं. तद्यथा-१. मनदुष्प्रणिधान २ वचन दुष्प्रणिधान व ३ काया दुष्प्रणिधान. वगैरह जैसे प्रणिधान का दंडक कहा वैसे ही दुष्प्रणिधान का दंडक कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! कितने सुप्रणिधान कहे हैं ? अहो गौतम ! तीन सुप्रणिधान कहे हैं. तद्यथा १ मन सुप्रणिधान २ वचन सुप्रणिधान और ३ काया सुप्रणिधान. अहो भगवन् ! मनुष्य को कितने सुप्रणिधान कहे हैं ? अहो गौतम ! मनुष्यों को तीनों सुप्रणिधान कहे हैं. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं ऐसा कहकर श्री गौतम स्वामी विचरने लगे ॥ ७ ॥

सूत्र

समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे जाव हियए ण्हाए जाव सरीर सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता. पातविहारचारेणं रायगिहं णयरं जाव णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता, तेसिं अण्णउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीईवयति ॥ १३ ॥ तएणं से अण्णउत्थिया मंडुयं समणोवासयं अदूरसामंते वीईवयमाणं पासइ, पासइत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविउप्पकडा इमंचणं मद्दुए समणोवासए अम्हं अदूरसामंतेणं

भावार्थ

ग्राम विचरते यावत् पधारे परिषदा यावत् पर्युपासना करने लगी ॥१२॥ मंडुक श्रमणोपासकने जब यह बात सुनी तब वह हर्षित हुवा, तुष्ट हुवा यावत् स्नान किया यावत् अलंकृत शरीरवाला हुवा और अपने गृह से नीकलकर पांव से चलता हुवा राजगृह से यावत् नीकलकर उन अन्य तीर्थिकों की पास से जाता था ॥१३॥ तब वे अन्यतीर्थिक मंडुक श्रमणोपासक को पास में जाता हुवा देखकर परस्पर ऐसा बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! अपन को यह बात समझ में नहीं आती है और यह मंडुक श्रमणोपासक नजीक में जा रहा है इस से अहो देवानुप्रिय ! मंडुक श्रमणोपासक को यह बात पूछना अपन को श्रेय है. ऐसा करके परस्पर यह बात सुनकर मंडुक श्रमणोपासक की पास गये और उन से ऐसा बोले-अहो मंडुक ! तेरे धर्माचार्य धर्मोपद-

समणोवासगाणं भवसि, जेणं तुमं एयमट्ठं णजाणइ णपासइ? तएणं मंडुए समणो-वासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-अत्थिणं आउसो ! वाउयाए वाति ? हंता मंडुया ! वाति ॥ तुब्भेणं आउसो वाउयस्स वायमाणस्स रूवं पासह ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं आउसो ! घाणसहगया पोग्गला ? हंता अत्थि, तुब्भेणं आउसो ! घाणसहगयाणं पोग्गलाणं रूवं पासह ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं आउसो ! अरणिसहगए अगणिकाए ? हंता अत्थि । तुब्भेणं आउसो ! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं आउसो समुद्दस्स

भावार्थ मंडुक श्रमणोपासक उन अन्यतीर्थिकों को ऐसा बोले कि अहो आयुष्मन् ! क्या वायु चलता है ? हां मंडुक वायु चलता है, अहो आयुष्मन् ! तुम चलते हुवे वायु का रूप क्या देखते हो ? अहो मंडुक ! हम चलते हुवे वायु का रूप नहीं देखते हैं. घ्राणसहगत पुद्गलों हैं क्या ? हां मंडुक ! घ्राणसहगत पुद्गलों हैं. अहो आयुष्मन् ! क्या तुम घ्राणसहगत पुद्गलों का रूप देखते हो ? यह अर्थ योग्य नहीं है, अर्थात् घ्राणसहगत पुद्गलों का रूप हम नहीं देखते हैं. अहो आयुष्मन् ! क्या अरणि सहगत अग्नि है ? हां मंडुक ! अरणिसहगत अग्निकाय है. अहो आयुष्मन् ! तुम क्या अरणि सहगत अग्नि-

मो० गौतम य० उत्पन्न होवे से० वह त० वहां अ० अर्चनीय वं० वंदनीय पू० पूजनीय स० सत्कार करने योग्य स० सन्मान करने योग्य दि० दिव्य स० सत्य स० सत्य अवपात स० संनिहित पा० प्रातिहार्य भ० होवे त० वहां से अ० अंतर उ० निकल कर सि० सिझे बु० बुझे जा० यावत् अं० अंतकरे ह० हां गो० सिझे जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ १ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक ए० ऐसे जा० यावत् वि० विसरीरी म०

अंतरं चयं चइत्ता विग्गहेसु नागेसु उववज्जेज्जा ? हंता गोयमा ! उववज्जेज्जा ॥ से णं तत्थ अच्चिय वंदिय पूइय सक्कारिय सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरेयावि भवेज्जा ? हंता भवेज्जा ॥ से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा, जाव अंतं करेज्जा ? हंता सिज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा ॥ १ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डिए एवं चेव जाव विसरी-

**भावार्थ**

वंदनीय, सत्कार योग्य, सन्मान योग्य, सेवा योग्य, दीव्य, सत्य, स्वप्नादि से सत्य सेवा बतानेवाला व इष्ट अर्थ के पास रहकर कार्य करनेवाला देवाधिष्ठित क्या होता है ? हां गौतम ! वह नाग ऐसा ही होता है. अहो भगवन् ! क्या वह नाग वहां से अंतर रहित मनुष्य गति में जाकर सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ? हां गौतम ! वह सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महा ऐश्वर्यवंत देव दो शरीरी मणि ( पृथ्वीकाया विशेष ) में क्या उत्पन्न होता है ? हां

शब्दार्थ

गो० गौतम दि० दीव्य अ० वर्षा के व० बद्दल पा० उत्पन्न हुए त० तब से० वह दि० दिव्य अ० वर्षा के बद्दल खि० शीघ्र प० गर्जे वि० विद्युत् होवे ण० बहुत पानी नहीं णा० बहुत कर्दम नहीं प० जलशीकर र० रजरेणु वि० विनाशक दि० दीव्य स० सलिल उ० उदक व० वर्षा वा० हुई जे० जिस से ति० तिलवृक्ष आ० स्थिर हुवा वी० विशेष स्थिर हुवा प० उत्पन्न हुवा व० मूलबंधाया त० तहां प० प्रतिस्थित स० सात ति० तिल पु० पुष्प जीव उ० चवकर त० तहां ति० तिलवृक्ष के ए० एक नि० तिलसिंग में

सूत्र

सलेहुयायं चेव उप्पाडेइ, उप्पाडेइत्ता एगंते एडेइ, एडेइत्ता तक्खणमेत्तं च गोयमा! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए, तएणं से दिव्वे अब्भवद्दलिए खिप्पामेव पतण तणाए खिप्पामेव विज्जुयाइ, खिप्पामेव णच्चोसगं णातिमट्टियं पविरलपप्फुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वसलिलोदगं वासं वासइ ॥ जेणं से तिलथंभए आसत्थे पी- सत्थए पच्चायाए बद्धमूले तत्थेव पतिट्ठिए तेय सत्ततिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ तस्सेव

भावार्थ

शनैः पीछा जाने लगा. और तिलस्तंभ को समूल मिट्टि सहित नीकाल कर एकान्त में डाल दिया. अहो गौतम! तत्क्षण वहां दीव्य अभ्रवद्दल प्रगट हुवा. उस दीव्य मेघ से शीघ्र गर्जारव हुवा, विजलियों चमकी, शीघ्र बहुत पानी की वर्षा हुई नहीं, बहुत कादव हुवा नहीं, पानी की फुंवार पडी, रजरेणु दबगइ, दीव्य नदी के पानी जैसी वर्षा हुई, रसादिगुण सहित वह तिलस्थंभ स्थिर हुवा, बहुत स्थिर हुवा, उदय को

वयासी-पभूणं भंते ! मंडुए समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं जाव पव्वइत्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवं जहेव संखे तहेव अरुणाभे जाव अंतंकरेहिति ॥ १८ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डिए जाव महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू अण्णमण्णेणं सद्धिं संगामं संगामित्तए ? हंता पभू ॥ ताओणं भंते ! बोंदीओ किं एग जीव फुडाओ अणेग जीव फुडाओ ? गोयमा ! एग जीव फुडाओ णो अणेग जीव फुडाओ तेसिणं भंते ! बोंदीणं अंतरा किं एग जीव फुडा अणेग जीव फुडा ? गोयमा ! एग जीव फुडा णो अणेग जीव फुडा ॥ १९ ॥ पुरिसेणं भंते ! अंतरं हत्थेणवा

भावार्थ यहां पर करना यावत् अरुणाभ विमान में उत्पन्न होकर वहां से महाविदेह क्षेत्र में सीझेगा बुझेगा यावत् अंत करेगा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महासुख वाला देवता सहस्ररूपों का वैक्रेय करके परस्पर संग्राम करने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! देव सहस्ररूपों का वैक्रेय करके परस्पर संग्राम करने में समर्थ है. अहो भगवन् ! उन शरीरों को क्या एक जीव स्पर्शा हुवा है या अनेक जीव स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! एक जीव स्पर्शा हुवा है. अहो भगवन् ! उन शरीरों की बीच में क्या एक जीव स्पर्शा हुवा है या अनेक जीव स्पर्शे हुवे हैं ? अहो गौतम ! एक जीव स्पर्शा हुवा है परंतु अनेक जीव स्पर्शे हुवे नहीं हैं.

सूत्र

पभू देवेणं भंते! महिड्डीए एवं धायइखंडदीवं जाव हंता पभू ॥ एवं जाव रुयगवरं दीवं जाव हंता पभू ॥ तेणं परं वीईवएज्जा णो चेवणं अणुपरियट्टिज्जा ॥ २२ ॥ अत्थिणं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति ? हंता अत्थि । अत्थिणं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेण पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ? हंता अत्थि॥ अत्थिणं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ? हंता अत्थि ॥ २३ ॥ कयरे भंते !

भावार्थ

महानुभव वाला देव क्या लवण समुद्र को अनुपर्यटन करके आनेको समर्थ है ? हां गौतम ! समर्थ है. ऐसे ही धातकी खंड द्वीप यावत् रुचकद्वीप का जानना. इस के आगे के द्वीप को उल्लंघने में समर्थ है परंतु उनकी पर्यटना करने में समर्थ नहीं है. ॥२२॥ अहो भगवन् ! ऐसे क्या देवों है कि जो अनंत पापकर्मांश जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांचसो वर्ष में खपावे ? हां गौतम ! ऐसे देवों हैं. अहो भगवन् ! ऐसे देवों क्या है कि जो अनंत पापकर्मांश एक दो तीन उत्कृष्ट पांच हजार वर्ष में खपावे ! हां गौतम ! है. अहो भगवन् ! क्या ऐसे देव है कि जो अनंत पापकर्मांश जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच लाख वर्ष में खपावे !

शब्दार्थ आ० सूर्य ते० तेज से त० तपना छ० षट्पद म० चारोंतरफ भ० इधरसे होती पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व द० दया केलिये प०पड़ी हुइ त०वहां मु० वारंवार प० मूके ॥ ४७ ॥ त०तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र वे० वेश्यायन बा० बालतपस्वी को पा० देखकर म० धीमे धीमे प० पीछा जाकर ज० जहां वे० वेश्यायन बा० बालतपस्वी ते० तहां उ० आकर वे० वेश्यायन बा० बालतपस्वी को ए०ऐसा व०बोला किं०क्या भ० तुम मु० मुनि म० यति उ० अथवा जू० यूका स०

सूत्र अभिणिस्सवेति पाणभूयजीवसत्तदयट्ठयाए पडियाओ २ तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चोरुभइ ॥ ४७ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं पासइ, पासइत्ता ममं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कइत्ता जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता वेसियायणं बालतवस्सिं एवं वयासी-किं भवं मुणी मुणीए उदाहु जूया सेज्जायरए ? तएणं से वेसियायणे बाल-

भावार्थ के ताप से तप्त यूकाओं उन के बालों में से चारों तरफ नीचे गिरती थी. प्राण, भूत, जीव व सत्त्व की दया देख कर उन नीचे गिरी हुई यूकाओं को उठाकर अपने मस्तक में वारंवार रखता था ॥ ४७ ॥ वहां पर मंखलीपुत्र गोशाला वेशायन बाल तपस्वी को देखकर शनैः २ मेरी पास से पीछे गया. और वैशायन बाल तपस्वी की पास जाकर ऐसा बोला क्या तू मुनि तपस्वी है, यति है, कदाग्रही है अथवा यूकाओं का

देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, एवं एएणं अभिलावेणं बंभलोगं-तगा देवा अणंत कम्मंसे तिहिं वाससहस्सेहिं, महासुक्कसहस्सारगा देवा अणंते चउहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, आणयपाणयआरणअच्चुयगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, हेट्ठिमगेवेज्जगादेवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससयसहस्सेणं खवयंति, मज्झिमगेवेज्जगा देवा दोहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति, उवरिमगेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे तिहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति, विजयवेजयंतजयंतअपरा-जियगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति, सव्वट्ठसिद्धगा

भावार्थ व ईशान देवलोक के देवता अनंत पापकर्मांश एक हजार वर्ष में में खपावे, सनत्कुमार व माहेन्द्र देवलोक के देवता दो हजार वर्ष में खपावे, ब्रह्मलोक व लांतक देवलोक के देवता अनंत पापकर्मांश तीन हजार वर्ष में महाशुक्र व सहस्रार देवलोक के देवता चार हजार वर्ष में, आनत प्राणत आरण व अच्युत देवलोक के देवता अनंत पापकर्मांश पांच हजार वर्ष में, नीचे की ग्रैवेयक के देवों दो लाख वर्ष में खपावे, ऊपर की ग्रैवेयक के देवता तीन लाख वर्ष में खपावे, विजय वैजयंत जयंत व अपराजित के देवता चार हजार वर्ष में और सर्वार्थ

सूत्र

एवा परियावज्जेजा, तस्सणं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! अणगारस्सणं भावियप्पणो जाव तस्सणं इरियावहिया किरिया कज्जइ, णो संपराइया किरिया कज्जइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? जहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो णिखित्तो ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ १ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ ॥ २ ॥ तेणं कालेणं तेणं

भावार्थ

अहो भगवन् ! युग प्रमाण [ चार हाथ ] भूमि देखकर चलते हुवे भावितात्मा अनगार के पांव नीचे कोई मुर्गी के बचे, बटेर के बचे, व कीडियों के बचे परितापना पावे तो उस अनगार को क्या ईर्यापथिक क्रिया होवे या संपरायिक क्रिया होवे ? अहो गौतम ! युगप्रमाण भूमि आगे देखते हुवे भावितात्मा अनगार के पांव की नीचे कोई मुर्गी के बचे, बटेर के बचे, व कीडियों के बचे परितापना पावे तो उन अनगार को ईर्यापथिक क्रिया होवे परंतु संपरायिक क्रिया होवे नहीं. अहो भगवन् ! ऐसा किस कारन से कहा गया है ? अहो गौतम ! जैसे सातवे शतक में संवृत उद्देशे में कहा वैसे ही यहां जानना. यावत् कषाय विच्छेद होने से ईर्या पथिक क्रिया लगे. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यावत् विचरने लगे ॥ १ ॥ फीर श्रमण भगवंत भी विचरने लगे ॥ २ ॥ उस काल उस समय में

शब्दार्थ

प० कहते वि० विचरते हैं ॥ ६६ ॥ त० तब गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र ब० बहुत मनुष्य की अं० पास ए० यह अ० अर्थ सो० सुनकर णि० अवधार कर आ० क्रोधायमान हुवा जा० यावत् मि० देदीप्यमान हुवा आ० आतापना भू० भूमि से प० उतर कर सा० श्रावस्ती ण० नगरी की म० मध्य से जे० जहां हा० हालाहला कुं० कुंभकारीणी की कुं० कुंभकार की आ० दुकान ते० तहां उ० आकर कुं० कुंभकारीणी की कुं० कुंभकार की० दुकान में आ० आजीविक सं० संघ से सं० घेराया हुवा म० बहुत अ०

सूत्र

समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासमाणे विहरइ ॥६५॥ तएणं गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभइत्ता सावत्थिं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं

भावार्थ

प्रलापी नहीं है परंतु अजिन व अजिन प्रलापी है और श्री श्रमण भगवंत महावीर जिन व जिन प्रलापी है. ॥ ६६ ॥ बहुत मनुष्यों की पास से ऐसा सुनकर मंखली पुत्र गोशाला आसुरक्त हुवा यावत् दांत पीसनेलगा और आतापना भूमि में से आकर श्रावस्ती नगरी की बीच में होता हुवा हालाहला कुंभकारी

केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंत बालायावि भवामो ? ॥ तएणं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी-तुम्भेणं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणं पेचेह अभिहणह जाव उद्दवेह, तएणं तुब्भे पाणे पेचमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं जाव एगंतबालायावि भवह ॥ ७ ॥ तएणं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी णो खलु अज्जो ! अम्हे रीयं रीयमाणा पाणा पेचेमो, जाव उद्दवेमो, अम्हेणं अज्जो ! रीयं रीयमाणा कायं च जोयं च रीयं च पडुच दिस्सा पदिस्सा वयामो, तएणं अम्हे दिस्सा २ वयमाणा पदिस्सा वयमाणा २ णो पाणे पेचेमो

यावत् एकांत बाल हैं ? तब अन्य तीर्थिकोंने ऐसा उत्तर दिया कि अहो आर्यों ! तुम चलते हुवे प्राणोंको आक्रमते हो, हणते हो यावत् मारते हो. इस तरह प्राणियोंको आक्रमते, हणते यावत् मारते हुवे तुम करन तीन योग से एकांत बाल हो ॥ ७ ॥ तब भगवान् गौतम उन अन्यतीर्थिकों को ऐसा बोले अहो आर्यों ! गमन करते हुवे हम प्राणियों आतिक्रमते नहीं है यावत् उपद्रव नहीं करते हैं परंतु चलते हुवे काया योग, व परिभ्रमण आश्री देख २ कर चलते हैं. इस तरह देख २ कर चलते हम प्राणियों को आतिक्रमते नहीं है यावत् उपद्रव नहीं करते हैं. प्राणियों को नहीं आतिक्रमते यावत उपद्रव नहीं करते

सूत्र

भाणियव्वा जहा दवियाताए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगाताएवि, उवार-ल्लाहिं समं भाणियव्वा जस्स णाणाया तस्स दंसणाया णियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए ॥ जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि

भावार्थ

जैसे कषाय आत्मा को चारित्रात्मा कदाचित् है कषायी साधु रत् और कषायात्मा को चारित्रात्मा नहीं भी है संसारीरत. चारित्रात्मा को कषायात्मा की भजना है क्यों की उपशांत व क्षीण कषायी को चारित्र है परंतु कषाय नहीं है. और सकषायी अनगार को कषाय व चारित्र दोनों होते हैं. कषायात्मा व योगात्मा का जैसे कहा वैसे कषायात्मा व वीर्यात्मा का जानना अर्थात् कषायात्मा को वीर्यात्मा अवश्यमेव होता है और वीर्यात्माको कषायात्मा की भजना है क्यों कि कषाय मात्र दशवा गुणस्थान पर्यंत है यह कषायात्मा की साथ छ आत्मा का कहा. जैसे कषायात्मा की वक्तव्यता कही वैसे ही योगात्मा की वक्तव्यता उपर के पांच आत्मा की साथ कहना अर्थात योगात्मा को उपयोगात्मा अवश्यमेव होता है और उपयोगात्माको योग आत्मा की भजना अयोगी सयोगीरत. समदृष्टि योगात्मा को ज्ञानात्मा होता है और मिथ्यादृष्टि योगात्मा को ज्ञानात्मा नहीं होता है, और सयोगी ज्ञानात्मा को योगात्मा होता है और अयोगी ज्ञानात्मा को योगात्मा नहीं है इस से दोनों की परस्पर भजना है. योगात्मा को दर्शनात्मा नियमा है … आत्मा नहीं होने से और दर्शनात्मा को योगात्मा की भजना है अयोगी अवस्था में. योगात्मा को

सूत्र

जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ॥ १० ॥ गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी सुट्ठुणं तुम्हं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहुणं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, अत्थिणं गोयमा ! ममं बहवे अंतेवासी समणा णिग्गंथा छउमत्था जेणं णो पभू एयं वागरणं वागरेत्तए जहाणं तुमं, तं सुट्ठुणं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहुणं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी ॥ ११ ॥ तएणं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तसमाणे हट्ठ तुट्ठ समणं भगवं

भावार्थ

और वंदना नमस्कार कर नम्रासन से यावत् पर्युपासना करने लगे. ॥ १० ॥ श्रमण भगवंत महावीरने गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थों को ऐसा कहा अहो गौतम ! तुमने अन्यतीर्थिकों को जो ऐसा उत्तरदिया सो अच्छा किया श्रेष्ठ किया. अहो गौतम ! मेरे बहुत छद्मस्थ श्रमण निर्ग्रन्थ हैं कि जो तेरे जैसे उत्तर देने में समर्थ नहीं हैं. इस से तुमने अन्यतीर्थिको जो उत्तरदिया सो अच्छा किया ॥ ११ ॥ अब श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ऐसा बोले तब भगवान गौतम हृष्ट तुष्ट हुवे और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना

शब्दार्थ पावत् उ० ऊंच नी० नीच म० मध्य जा० यावत् अ० फीरते हा० हालाहला कुं० कुंभकारी की अ० नजदीक से वी० गया ॥ ६९ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र आ० आनंद थे० स्थविर को हा० हाला हला कुं० कुंभकारिणी के कुं० कुंभकारावासकी अ० नजदीक वी० जाते पा० देखे पा० देखकर ए० ऐसा व० बोला ए० आव आ० आनंद इ० यहां ए० एक म० बडा उ० दृष्टान्त णि० सून ॥ ७० ॥ त० तब से० वह आ० आनंद थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र से ए० ऐसा

सूत्र तहेव जाव उच्चणीय मज्झिम जाव अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीईवयइ ॥ ६९ ॥ तएण से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीईवयमाणं पासइ, पासइत्ता एवं वयासी-एहि ताव आणंदा ! इओ, एगं महं उवमियं णिसामेह ॥ ७० ॥ तएणं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्तेसमाणे जेणेव हालाहलाए कुभका-

भावार्थ कुंभकार की दुकान की पास जाते थे. ॥ ६९ ॥ मंखली पुत्र गोशाला आनंद स्थविर को हालाहला कुंभकारी की कुंभकार शाला की पास जाते हुवे देखकर ऐसा बोला कि अहो आनंद ! तुम यहां आओ, मैं तुम को एक बडी उपमा (दृष्टांत) कहूं ॥ ७० ॥ जब मंखलीपुत्र गोशाला आनंद स्थविर को ऐसा

सूत्र

पदेसियं ॥ १४ ॥ परमाहोहिएणं भंते ! मणूसे परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणइ तं समयं पासइ, जं समयं पासइ तं समयं जाणइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ परमाहोहिएणं मणूसे परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणइ णो तं समयं पासइ, जं समयं पासइ णो तं समयं जाणइ ? गोयमा ! सागारेसे णाणे भवइ, अणागारेसे दंसणे भवइ से तेणट्ठेणं जाव णो तं समयं जाणइ, एवं जाव अणंत पएसियं ॥ १५ ॥ केवलीणं भंते ! मणूसे जहा परमाहोहिए तहा केवलीवि, जाव अणंतपएसियं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ अट्ठारसम्मस्स अट्ठमो उद्देसो ॥ १८ ॥ ८ ॥

भावार्थ

परमाणु पुद्गल जाने देखे? अहो गौतम! जैसे छद्मस्थका कहा वैसे ही अनंत प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहना॥१४॥ अहो भगवन् ! परम अवधिज्ञान वाला मनुष्य परमाणु पुद्गल को जिस समय जानते हैं उस ही समय क्या देखते हैं, जिस समय देखते हैं उस ही समय क्या जानते हैं? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन्! किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है? अहो गौतम! ज्ञान साकार है और दर्शन अनाकार है इस से जिस समय में जाने उस समय में देखे नहीं और जिस समय में देखे उस समय में जाने नहीं ऐसे ही अनंत प्रदेशिक स्कंध तक कहना.॥१५॥ अहो भगवन्! केवली मनुष्य वगैरह जैसे परम अवधिज्ञानीका कहा वैसे ही केवली का कहना यावत् अनंत प्रदेशिक. अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं यह अठारहवा शतकका आठवा उद्देशा संपूर्ण ॥१८॥८॥

शब्दार्थ

कालवाली अ० अटवि में अ० प्रवेश किया किया ॥७२॥ त० तब तेरा उन व० वणिकों का तीं० उस अ० ग्राम रहित छि० पथरहित दी० दीर्घकालवाली अ० अटवि का किं० थोडाभाग को अ० नहीं प्राप्तहोते पु० पहिले गं० लियाहुवा उ० पानी अ० अनुक्रम मे प० भोगवते खी० संपूर्ण हुवा त० तब ते० वे प० वणिक खी० क्षीण उदकवाले त० तृष्णा से प० पराभवपाये अ० अन्योन्य स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय अ० अपन इ० इस अ० ग्रामरहित जा० यावत् अ० अटवि का किं० किंचित् दे० देशको अ० प्राप्तहोते पु० पहिले

सूत्र

॥७२॥ तएणं तेसिं वणियाण तीसे अगामियाए अणोहियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए किंचिदेसं अणुप्पत्ताणं समाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे २ खीणे ॥ तएण ते वणिया खीणोदगासमाणा तण्हाए परिब्भवमाणा अण्णमण्णे सद्दावेंति सद्दावेत्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए किंचिदेसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं

भावार्थ

भात पानी साथ लेकर ग्राम नहीं होवे वैसी, पहाडों व वृक्षों से भरपूर, रस्ता मालूम पडे नहीं वैसी बडी अटवि में पैठे. ॥ ७२ ॥ अब ऐसी ग्राम रहित, रस्ता विना की व बहुत लम्बी अटवी में थोडा गये पीछे वणिकों की पास पहिले लिया हुवा पानी भोगते हुवे क्षीण होगया. अब उन की पास पानी नहीं होने से तृषा से पीडित होते हुवे परस्पर बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय! अपन इस ग्राम रहित यावत् महान अटवि के

रायगिहे जाव एवं वयासी अणगारेणं भंते! भावियप्पा असिधारंवा खुरधारंवा ओगाहेज्जा ? हंता ओगाहेज्जा ॥ सेणं तत्थ छिज्जेज्जवा भिज्जेज्जवा ? णो इणट्ठे समट्ठे णो खलु तत्थ सत्थं कमइ, एवं जहा पंचमसए परमाणु पोग्गले वत्तव्वया जाव अणगारेणं भंते! भावियप्पा उदावत्तंवा जाव णो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥ १ ॥ परमाणुपोग्गलेणं भंते! वाउयाएणं फुडे वाउयाएवा परमाणुपोग्गलेणं फुडे? गोयमा! परमाणुपोग्गले वाउयाएणं फुडे णो वाउयाए पोग्गलेणं फुडे । दुपदेसिएणं भंते!

नववे उद्देशे में भवि द्रव्य का कथन किया. अब भविद्रव्य अनगार का कथन करते हैं. राजगृह नगर में यावत् गौतम स्वामी ऐसा बोले अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार असिधारा अथवा क्षुरधारा को क्या अवगाहे अर्थात् उस पर क्या चल सके ? हां गौतम ! खड्गधारा या क्षुरधारा पर चल सके. वे क्या वहां छेदावे भेदावे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. उन को शस्त्र नहीं अतिक्रमता है क्यों कि वैक्रियलब्धि से चलते हैं. ऐसे ही सब पांचवे शतक में परमाणु पुद्गल की वक्तव्यता कही वैसे ही यहां कहना यावत् भावितात्मा अनगार पानी से आवर्ते यावत् वहां भी शस्त्र अतिक्रमे नहीं. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल क्या वायुकाया से स्पर्शे अथवा वायुकाया परमाणु पुद्गल से स्पर्शे ? अहो

सूत्र

सियआया, १ सियणोआया, २ सियअवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय ३, सिय आयाय णो आयाय ४, सियआयाय णो आयाओय ५, सियआयाओय णो आयाय ६, सिय-आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १, सिय आयाय अवत्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय ८, सिय आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ९, सिय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १०, सिय णो आयाय अवत्तव्वाइं

भावार्थ

मीला हुवा द्विप्रदेशात्मक स्कंध आत्मा इति अनात्मा इति होने से आत्मा की अवक्तव्यता है और ६ एक देश असद्भाव पर्यायवाला है और दूसरा देश उभय पर्यायवाला है इस से नो आत्मा की अवक्तव्यता होती है. इस में अहो गौतम ! उक्त छ भांगे द्विप्रदेशिक स्कंध आश्री कहे हैं. अहो भगवन् ! आत्मा त्रिप्रदेशिक स्कंध है या अन्य त्रिप्रदेशिक स्कंध है ? अहो गौतम ! त्रिप्रदेशिक स्कंध में तेरह भांगे होते हैं. १ त्रिप्रदेशिक स्कंध कथंचित् आत्मा २ कथंचित् अनात्मा ३ कथंचित् अवक्तव्य ४ कथंचित् एक वचन में आत्मा और कथंचित् एक वचन से अनात्मा ५ कथंचित् आत्मा एक वचन से अनात्मा अनेक वचन मे ६ कथंचित् आत्मा पृथक्त्व वचन में अनात्मा एक वचन से ७ कथंचित् एक वचन से आत्मा इति अनात्मा इति एक वचन में अवक्तव्य ८ कथंचित् अनेक वचन से आत्मा इति अनात्माइति एक वचन में आत्मा अवक्तव्य ९ कथंचित् एक वचन में आत्माइति अनात्माइति आत्मा पृथक्त्व वचन में अवक्तव्य १० एक

कसायअंबिलमहुराइं, फासओ कक्खड मउय गुरुय लहुय सीय उसिण णिद्ध लुक्खाइं, अण्णमण्ण बद्धाइं अण्णमण्ण पुट्ठाइं जाव अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ अत्थिणं भंते ! सोहम्मस्स कप्पस्स अहे, एवं चेव ॥ एवं जाव ईसिप्पभाराए पुढवीए ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥४॥ तएण समणे भगवं महावीरे बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ * ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे णयरे होत्था, वण्णओ, तत्थणं वाणियगामे णयरे सोमिले-णामं माहणे परिवसइ, अड्डे जाव अपरिभूए, रिउव्वेय जाव सुपरिणिट्ठिए पचण्हं

श्वेत, गंध से सुरभिगंधवाले व दुरभिगंधवाले रस से तिक्त कटुक, कपायले, अम्बट व मधुर रसवाले; स्पर्श से कर्कश, मृदु, गुरु लघु, शीत, ऊष्ण, स्निग्ध व रूक्ष स्पर्शवाले द्रव्य परस्पर बंधे हुवे, परस्पर स्पर्शे हुवे यावत् परस्पर मीले हुवे क्या रहते हैं ? हां गौतम! रहते हैं. ऐसे ही नीचे की सातवी पृथ्वी तक कहना. सौधर्म देवलोक यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का भी ऐसे ही जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यों कहकर विचरने लगे ॥ ४ ॥ फीर श्रमण भगवंत महावीर बाहिर विचरने लगे. उस काल उस समय में वाणिज्य ग्राम नाम का नगर था. उस वाणिज्य ग्राम नगर में सोमिल ब्राह्मण रहता था. वह ऋद्धिवंत यावत्

सूत्र

आयातिय णो आयानिय ११, सिय णो आयाओय अवत्तव्वं आयानिय णो आया- तिय १२, सिय आयाय, णो आयाय अवत्तव्वं आयानिय णो आयानिय १३, ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ तिपदेसिए खंधे सिय आया एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्वं आयानिय णो आयातिय ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णो आया, तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं आयानिय णो आयातिय ॥ देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे तिपदेसिए खंधे आयातिय णो आयातिय ४, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसा आदिट्ठा अस-

भावार्थ

वचन में आत्मा इति नोआत्मा इति कदाचित नो आत्मा एकवचन में अवक्तव्य ११ अनेक वचनमें आत्मा इति नोआत्मा इति एक वचन में आत्मा अवक्तव्य है १२ एक वचन में आत्मा इति यहां बहुवचन अवक्तव्य और १३ कदाचित आत्मा एक वचन में. अहो भगवन ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि तीन प्रदेशिक स्कंध आत्मा है यावत् एकवचन में आत्मा, नो आत्मा, व अवक्तव्य ऐसे तेरह भांगे पाते हैं. ? अहो गौतम ! अपनी पर्यायापेक्षा आत्मा, परपर्यायापेक्षा नोआत्मा, उभय पर्यायापेक्षा आत्मा नोआत्मा ४ देश आश्री स्वपर्याय देश आश्री परपर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा इति ५ एक देश आश्री

शब्दार्थ चारों तरफ स० देखाया हुवा खि० शीघ्र भं० भंड म० पात्र उ० उपकरण आ० लेकर ए० एक आ० प्रहार कू० कूट का आ० प्रहार भा० भस्म क० किया हुवा हो० था ॥ ७७ ॥ त० उस में जे० जो से० वह व० वणिक ते० उन व० वणिकों का हि० हित इच्छने वाला जा० यावत् हि० हित सु० सुख नि० कल्याण का० इच्छने वाला से० वह अ० अनुकंपा सहित दे० देवता से स० भंड सहित म० पात्र उ० उपकरण आ० लेकर णि० स्वतःके ण० नगर में सा० पहुंचाया ॥ ७८ ॥ ए० ऐसे ही आ० आनंद त० तेरा ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण णा० ज्ञातपुत्रने उ० उदार प० पर्याय आ० प्राप्त

सूत्र सप्पेणं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोयासमाणा खिप्पामेव भंडमत्तो-वगरण मायाए एगाहच्चं कूडाहच्चं भासिरासीकयायावि होत्था ॥ ७७ ॥ तत्थणं जे से वणिए तेसिं वणियाणं हियकम्मए जाव हियसुहणिस्सेसकामए सेणं अणुकंपि-याए देवताए सभंडमत्तोवगरण मायाए णियगं णयरं साहिए ॥ ७८ ॥ एवामेव आणंदा ! तवति धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं णायपुत्तेणं उराले परियाए

भावार्थ सब वणिक अपने भंडोपकरण सहित कूटाकार समान भस्मीभूत होगये ॥ ७७ ॥ अब उन में से जो अन्य वणिक हित, सुख, पथ्य यावत् कल्याण का कामी था उन की अनुकंपा करके देवताने भंडोपकरण सहित उन को अपने गांव पहुंचा दिया ॥ ७८ ॥ अहो आनंद ! वैसे ही तेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक श्रमण

सूत्र

भाणियव्वा ॥ १३ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु णरएसु किं सम्मदिट्ठी णेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी णेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छादिट्ठी णेरइया उववज्जंति ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी णेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी णेरइया उववज्जंति, णो सम्मामिच्छादिट्ठी णेरइया उववज्जंति ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज्ज वित्थडेसु णरएसु किं सम्मदिट्ठी णेरइया उव्वट्टंति ? एवं चेव ॥ १४ ॥ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु

भावार्थ

उत्पन्न होते हैं और चवते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में क्या समदृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं, मिथ्यादृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं या समामिथ्यादृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! समदृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं मिथ्यादृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं परंतु समामिथ्यादृष्टि नारकी नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से क्या समदृष्टि नारकी उद्वर्तते हैं मिथ्यादृष्टि नारकी उद्वर्तते हैं या सम मिथ्यादृष्टि नारकी उद्वर्तते हैं ? अहो गौतम ! जैसे उत्पन्न होने का कहा वैसे ही उद्वर्तने का जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरका-

शब्दार्थ होकर का० काल के अवसर में का० काल कि० करके अ० किसी देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न हुआ अ० मैं उ० उदाइ णा० नामक कुं० कुंडिकायनीक अ० अर्जुन गो० गौतम पुत्र का स० शरीर विं० छोड कर गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र का स० शरीर में अ० प्रवेश किया अ० प्रवेश करके इ० यह सा० सातवा प० पउट्ट परिहार अ० अंगीकार किया ॥ ८८॥ जे० जो आ० आयुष्मन् का० काश्यप अ० हमारे स० मत में के० कोइ सि० सीझे सि० सीझते हैं सि० सीझेंगे स० सब ते० वे च० चौरासी म० महाकल्प स० लक्ष म० सात दी० द्वीप स० सात सं० संजूथ स० सात स० संज्ञी ग० गर्भ स० सात

सूत्र किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे, अहं णं उदाई णामं कुंडियायणीए अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहामित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसामित्ता इमं सत्तम पउट्टपरिहारं परिहरामि ॥८८॥ जेवियाइं आउसो ! कासवा ! अम्हं समयंसि केइ सिज्झिसुवा सिज्झितिवा सिज्झिस्संतिवा सव्वे ते चउरासीइ महाकप्पसयसहस्साइं सत्तदिव्वे, सत्त संजूहे,

भावार्थ पने उत्पन्न हुआ है. कुंडिकायन गोत्रीय उदाइ नामवाले मैंने अर्जुन गौतमपुत्र का शरीर छोडकर मंखलीपुत्र गोशाला के शरीर में प्रवेश किया है. इस तरह प्रवेश करते मैंने सातवा शरीर धारन किया है ॥ ८८ ॥ अहो आयुष्मन् काश्यप ! जो कोई गत काल में सिद्ध हुवे, वर्तमान में सीझते हैं और अनागत

इज्जंति, जेसिं पियणं जीवाणं ते जीवा एवं माहिज्जंति तेसिं
णो विण्णाएणाणत्ते ॥ ८ ॥ तेणं भंते! जीवा
? किं णेरइएहिंतो उववज्जंति एवं जहा वक्कंतीए पुढवी
हा भाणियव्वो ॥ ९ ॥ तेसिं णियणं भंते! जीवाणं केवइयं काले
मा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वास सहस्साइं
भंते! जीवाणं कइ समुग्घाया पण्णत्ता? गोयमा! तओ

हो गौतम! वे प्राणातिपात करे, मृषावाद बोले, अदत्तादान ग्रहण करे
जो जीवों पृथ्वी कायिक संबंधी घात करे वे जीवों भी वैसे ही कहाये
ज्ञान नहीं है कि इनने हम को मारा यह हमारा घातक है॥८॥अब उत्पत्तिद्वार
जीवों कहां से उत्पन्न होते हैं? क्या नरक से मरकर उत्पन्न होते हैं, तिर्यंच से,
गौतम! जैसे पन्नवणा के छठे पद में पृथ्वी काया की उत्पत्ति की वक्तव्यता
९॥ अब दशवा स्थितिद्वार, अहो भगवन्! उन जीवों की कितनी स्थिति कही?
उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की ॥१०॥ अग्यारहवा, समुद्घात द्वार—अहो भगवन्!

सूत्र

संखेज वित्थडा णरया किं सम्मादिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया, मिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया ? गोयमा ! सम्मदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया मिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया सम्मामिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिय विरहियावा एवं असंखेज वित्थडेसुवि तिण्णि गमगा भाणियव्वा ! एवं सक्करप्पभाएवि । एवं जाव तमाएवि ॥ अहे सत्तमा एणं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव संखेज वित्थडे णरए किं सम्मदिट्ठी णेरइया पुच्छा ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी णेरइया ण उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी णेरइया

भावार्थ

वास में से संख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास क्या समदृष्टि से अविरहित हैं, मिथ्यादृष्टि से अविरहित हैं या समामिथ्यादृष्टि से अविरहित हैं ? अहो गौतम ! समदृष्टि नारकी से अविरहित हैं, मिथ्या दृष्टि नारकी से अविरहित हैं और समामिथ्यादृष्टि नारकी से विरहित, अविरहित दोनों प्रकार के नरकावास रहे हुवे हैं. संख्यात योजन के विस्तारवाले नारकी जैसे असंख्यात योजन के विस्तारवाले नारकी का कहना. जैसे रत्नप्रभा का कहा वैसे ही शर्कर प्रभा यावत् तम प्रभातक का जानना. सातवी तमतम-प्रभा के पांच अनुत्तर नरकावास में यावत् संख्यात विस्तारवाले में नारकी क्या समदृष्टि उत्पन्न होते हैं वगैरह

**शब्दार्थ** धनुष्य म० सहस्र उ० उंडी ए० इस गं० गंगा की आ० लम्बाइ से स० सात गं० गंगा ए० एक म० महागंगा स० सात म० महागंगा सा० वह ए० एक सा० सादीन गंगा स० सात सा० सादीनगंगा सा० वह ए० एक म० मृत्यु गंगा स० सात म० मृत्यु गंगा सा० वह ए० एक लो० लोहितगंगा स० सात लो० लोहितगंगा सा० वह ए० एक अ० अवंतिगंगा स० सात अ० अवंतिगंगा सा० वह ए० एक प० परमावती ए० ऐसे ही स० अनुक्रम से ए० एक गं० गंगा स० लक्ष स० गनरह स० हजार छ०

**सूत्र** माणेणं सत्तगंगाओ, एगा महागंगा सत्तमहागंगाओ सा एगा सादीणगंगा, सत्तसादीणगंगाओ सा एगा मच्चुगंगा, सत्तमच्चुगंगाओ सा एगा लोहियगंगा, सत्त लोहियगंगाओ सा एगा अवंतीगंगा, सत्त अवंतीगंगाओ सा एगा परमावती, एवामेव सपुव्वावरेणं एगंगंगासयसहस्सं सत्तरसयसहस्सा छच्चगुणपण्णं गंगासया भवंतीति

**भावार्थ** जहां जाकर समस्त प्रकार से समाप्तपने को पाई है, वहां गंगा का मार्ग पांच सो योजन का लम्बा, अर्धा योजन का चौडा व पांचसो धनुष्य का ऊंडा है. ऐसी सात गंगा एकत्रित करने से एक महा गंगा होती है, सात महा गंगा की एक सादीन गंगा, सात सादीन गंगा की एक मृत्यु गंगा, सात मृत्यु गंगा की एक लोहित गंगा, सात लोहितगंगा की एक अवन्ती गंगा, सात अवन्ती गंगा की एक परमावती

सूत्र

उववज्जंति, सम्मामिच्छदिट्ठी णेरइया णउववज्जंति, एवं उव्वट्टंतिवि, अविराहिए जहेव रयणप्पमाए ॥ एवं असंखेज्ज वित्थडेसु तिण्णि गमा ॥१५॥ से णूणं भंते ! कण्ह-लेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता, कण्हलेस्से णेरइएसु उववज्जंति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव उववज्जति ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ कण्हलेस्से जाव उववज्जंति ? गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु संकिलिस्समाणेसु कण्हलेस्सं परिणमइ कण्हलेस्सं परिणममाणेसु कण्हलेस्सेसु णेरइएसु उववज्जंति से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ॥ सेणूणं भंते ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता णीललेस्सेसु

भावार्थ

पृच्छा ? अहो गौतम ! समदृष्टि नहीं उत्पन्न होते हैं, मिथ्यादृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं, समामिथ्यादृष्टि नारकी नहीं उत्पन्न होते हैं, ऐसे ही उद्वर्तन व अविराहित का जानना. संख्यात योजन के विस्तार वाले में जैसे तीन गमा कहे वैसे ही असंख्यात योजन के विस्तार वाले में तीन गमा जानना. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! कृष्णलेशी, नीललेशी यावत् शुक्लेशी होकर क्या कृष्णलेशी नारकी में उत्पन्न होते हैं ? हां गौतम ! कृष्णलेशी यावत् उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहते हो ? अहो गौतम! लेश्या स्थान के भेद में निर्मलता व मलिनता को प्राप्त होते हैं. इस तरह अशुद्ध लेश्या परिणमते कृष्ण

मूल

वित्थडेसु असुर कुमारावासेसु एगसमएणं केवइया असुरकुमारा उववज्जंति केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति, केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव वागरणं, णवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति, णपुंसग वेदगा ण उववज्जंति, सेसं तंचेव ॥ उव्वट्टंतगावि तहेव, णवरं असण्णी उव्वट्टंति, ओहिणाणी ओहिदंसणीय ण उव्वट्टंति, सेसं तंचेव पण्णत्ताएसु तहेव णवर संखेज्जगा इत्थी वेदगा पण्णत्ता, एवं पुरिसवेदगावि, णपुंसगवेदगा णत्थि कोह कसायी सिय अत्थि सिय

भावार्थ

योजन के विस्तार वाले हैं और असंख्यात योजन के विस्तार वाले भी हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन्! असुरकुमार के चौसठ लाख आवास हैं सो संख्यात योजन वाले आवास में एक समय में कितने असुरकुमार देव उत्पन्न होते हैं, कितने तेजो लेश्यावाले उत्पन्न होते हैं कितने कृष्णपाक्षिक उत्पन्न होते हैं? वगैरह ३९ बोलों जो रत्नप्रभा आश्री पूछे हैं वे यहांपर भी जानना. उस का उत्तर भी वैसे ही जानना परंतु विशेषता इतनी कि इस में दो वेद उत्पन्न होते हैं नपुंसक नहीं उत्पन्न होते हैं. उद्वर्तन प्रश्न में भी वैसे ही कहना परंतु असंज्ञी उद्वर्ते हैं अवधिज्ञानी व अवधि दर्शनी नहीं उद्वर्ते हैं. तीसरा गमा विद्यमानता का भी वैसे ही कहना परंतु इस में संख्यात स्त्री वेदी कहे, ऐसे पुरुष वेदी. नपुंसक वेदी नहीं. क्रोध कषाय वाले होवे और कदाचित नहीं भी होवे जब होवे तब जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात कहे हैं ऐसे

शब्दार्थ वा० वर्ष इ० यह स० सातवा प० शरीर परावर्त प० किया ए० ऐसे आ० आयुष्मन् का० काश्यप ए० एक ते० तेत्तीस व० वर्ष सु० इस में स० सात प० शरीर प० परावर्त भ० होते हैं ति० ऐसा अ० कहा ॥ ९३ ॥ तं० इसलिये मु० अच्छा आ० आयुष्मन् म० मुझे ए० ऐसा व० बोला सा० साधु गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र म० मेरा ध० धर्म का अं० शिष्य है गो० गौतम ॥ ९४ ॥ त० तब स० श्रमण भ०

सूत्र पउट्टपरिहारं परिहरामि ॥ एवामेव आउसो ! कासवा ! एगेणं तेत्तीसेणं वाससएणं सत्तपउट्टपरिहारा परिहारिया भवंतीति मक्खाया ॥ ९३ ॥ तं सुठुणं आउसो ! कासवा ! ममं एवं वयासी साधुणं आउसो ! कासवा ! ममं एवं वयासी गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी गोयमा ! गोयमा ! ॥ ९४ ॥ तएणं समणे भगवं

भावार्थ धृव, निश्चल, धारन करने योग्य यावत् क्षुधा, तृषा, शीत, ऊष्णादिक परिषह व उपसर्ग सहन करने वाला शरीर देखकर इस में प्रवेश किया. यहां पर सोल्ह वर्ष पर्यंत शरीर परावर्तन करूंगा. अहो आयुष्मन् काश्यप ! इस तरह एक सो तेत्तीस वर्ष में सात शरीर परावर्तन होते हैं ॥ ९३ ॥ इस लिये अहो आयुष्मन् काश्यप ! ठीक है. अहो आयुष्मन् काश्यप ! अच्छा है कि तुम मुझे ऐसा कहते हो मंखलीपुत्र गोशाला मेरा धर्म का शिष्य है ॥ ९४ ॥ तब श्री श्रमण भगवंत महावीर मंखली पुत्र गोशाला को

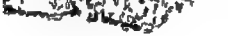

सूत्र

महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ४ ॥ सिय भंते ! णेरइया महासवा अप्पकिरिया, महावेयणा महाणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ५ ॥ सिय भंते ! णेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ६ ॥ सिय भंते ! णेरइया महासवा, अप्पकिरिया, अप्पवेयणा, महाणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥७॥ सिय भंते! णेरइया महासवा, अप्पकिरिया, अप्पवेयणा, अप्पणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ८ ॥ सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा, महा किरिया, महावेयणा, महाणिज्जरा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ९ ॥ सिय भंते! ते णेरइया ! अप्पा-

भावार्थ

है ? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥४॥ अहो भगवन्! क्या नारकी महा आश्रव, अल्प क्रिया, महा वेदना व महानिर्जरा वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी महा आश्रव, अल्प क्रिया, महा वेदना व अल्प निर्जरा वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! नारकी महा आश्रव, अल्प क्रिया, अल्प वेदना, व महा निर्जरावाले क्या हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! नारकी महा आश्रव, अल्प क्रिया, अल्प वेदना, व अल्प निर्जरावाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अल्प आश्रव, महा क्रिया, महा वेदना व महा निर्जरावाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ

सूत्र

दिसा किमादिया पुच्छा ? जहा अग्गेयी। गोयमा! विमलाणं दिसा रुयगादीया रुयगप्पवहा, चउप्पदेसादिया, दुपदेसाविच्छिण्णा, अणुत्तरा लोगं पडुच सेसं जहा अग्गेयी णवरं रुयग संठिया एवं तमावि ॥ ७ ॥ किमियं भंते! लोएत्ति पवुचइ गोयमा! पंचत्थिकाया, एसणं एवइए लोएत्ति पवुचइ, धम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ॥ धम्मत्थिकाएणं भंते! जीवाणं किं पवत्तइ ? गोयमा! धम्मत्थिकाएणं जीवाणं आगमण गमण भासुम्मेस मण

भावार्थ

आदिवाली है, दो प्रदेश की विस्तीर्ण है, अनुत्तर है, लोक आश्री असंख्यात प्रदेशात्मक है, अलोक आश्री अनंत प्रदेशात्मक है, लोक आश्री सादि सान्त है अलोक आश्री सादि अनंत है और रुचक के संस्थान वाली है. ऐसे ही तमादिशा का अधिकार जानना ॥ ७ ॥ अब प्रवर्तन द्वार कहते हैं. अहो भगवन्! यह लोक है ऐसा क्यों कहा ? अहो गौतम! धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय व पुद्गलास्तिकाय यों पंचास्तिकाय रूप लोक है. अहो भगवन्! धर्मास्तिकाया में जीवों का क्या प्रवर्तन होता है ? अहो गौतम! धर्मास्तिकाया में जीवों का आगमन, गमन, बोलना, उन्मेष, मन योग, वचन योग, काया योग और अन्य भी ऐसे सब चलन व हलनादि प्रवर्तते हैं क्यों कि धर्मास्तिकाय गति

शब्दार्थ म० महावीर स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ को आ० आमंत्रण कर ए० ऐसा व० बोला आ० अहो अ० आर्य गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र म० मेरा व० वध के लिये स० शरीर में से ते० तेज णि० नीकाला सं० हइ अ० समर्थ प० पूरा सो० सोलह ज० देश को अं० अंग वं० वंग म० मगध म० मलय मा० मालव अ० अच्छ व० वत्स को० कोच्छ पा० पाढ ला० लाढ व० वज्री मो० मोली का० काशी को० कोशल को अ० आघात मं० भोगवाले के घा० घात के लिये व० वध के लिये उ० जलाने के लिये भा० भस्म

सूत्र

त्ति ! समणे भगवं महावीरे समणे णिग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी जावइएणं अज्जो ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरीरगंसि तेयं णिसट्टे सेणं अलाहि पज्जंते सोलसण्ह जणवयाणं, तंजहा अंगाणं, वंगाणं, मगहाणं, मलयाणं, मालवगाणं, अच्छाणं, वच्छाणं, कोच्छाणं, पाढाणं, लाढाणं, वज्जीणं, मोलीणं, कासीणं, कोस-

भावार्थ शीतल मृत्तिका के पानी से अपने गात्रों को सींचता हुवा रहने लगा * ॥ १.१.४ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी श्रमण निर्ग्रन्थों को बुलाकर बोले कि अहो आर्यों ! मंखलीपुत्र गोशालाने मेरे वध के लिये जो तेजो लेश्या नीकाली थी वह यदि अपने पूर्णरूप से प्रकट होती तो १ अंग २ वंग ३ मगध ४ मलय ५ मालव ६ अच्छ ७ वच्छ ८ कोच्छ ९ पाढ १० लाढ ११ वज्री १२ मोली १३ काशी १४ कोशल

* मद्यपान पीने से व तेजोलेश्या के प्रतिघात से उक्त क्रियाओं करता है,

सूत्र

पुण्णे मग्गंति माणुत्रा, कोडिगणणवि पुण्णे कोडिसहस्संति माणुत्रा, अवगाहणा लक्खणेणं आगासत्थिकाए । जीवत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तइ ? गोयमा ! जीवत्थि काएणं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियणाण पज्जवाणं, अणंताणं सुअणाण पज्जवाणं, जहा बितियसए अत्थिकाय उद्देसए जाव उवओगं गच्छंति, उवओग लक्खणेणं जीवे ॥ पोग्गलत्थिकाए पुच्छा ? गोयमा ! पोग्गलत्थिकाएणं, जीवाणं ओरालिय वेउव्विय-आहारग-तेया कम्मा, सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदिय,

भावार्थ

दीपक का प्रकाश भी उसी कमरे में आ जाता है वैसे ही एक आकाश प्रदेश में परमाणुओं का समावेश होता है क्योंकि आकाशास्तिकाया का लक्षण अवगाहना है. अहो भगवन् ! जीवास्ति-काया से जीवों को क्या प्रवर्तन होता है ? अहो गौतम ! जीवास्तिकाया से अनंत आभिनिबोधिक ज्ञान के पर्याय, अनंत श्रुतज्ञान के पर्याय वगैरह सब कथन दूसरे शतक के अस्तिकाय उद्देशे में से जानना. यावत् उपयोग लक्षण वाला जीव है. अहो भगवन् ! पुद्गलास्तिकाया से जीवों को क्या प्रवर्तन है ? अहो गौतम ! पुद्गलास्तिकाया से जीवों को उदारिक, वैक्रिय, आहारिक, तेजस् व कार्माण शरीर, श्रोते-न्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय, मनयोग, वचनयोग, काययोग और श्वासोश्वास का

शब्दार्थ म० महावीर स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ को आ० आमंत्रण कर ए० ऐसा व० बोला जा० जो अ० आर्य गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र म० मेरा व० वध के लिये स० शरीर में से ते० तेज णि० नीकाला सं० वह अ० समर्थ प० पूरा सो० सोलह ज० देश को अं० अंग वं० वंग म० मगध म० मलय मा० मालव अ० अच्छ व० वत्स को० कोच्छ पा० पाढ ला० लाढ व० वज्री मो० मोली का० काशी को० कोशल को अ० आघात थं० घेरानेके घा० घात के लिये व० वध के लिये उ० जलाने के लिये भा० भस्म

सूत्र

त्ति ! समणे भगवं महावीरे समणे णिग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी जावइएणं अज्जो ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरिरगंसि तेयं णिसट्ठे सेणं अलाहि पज्जंते सोलसण्ह जणवयाणं, तंजहा अंगाणं, वंगाणं, मगहाणं, मलयाणं, मालवगाणं, अच्छाणं, वच्छाणं, कोच्छाणं, पाढाणं, लाढाणं, वज्जीणं, मोलीणं, कासीणं, कोस-

भावार्थ शीतल मृत्तिका के पानी से अपने गात्रों को सींचता हुवा रहने लगा * ॥ ११४॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी श्रमण निर्ग्रन्थों को उद्देशकर बोले कि अहो आर्यो ! मंखलीपुत्र गोशालाने मेरे वध के लिये जो तेजो लेश्या नीकाली थी वह यदि अपने पूर्णरूप में प्रकट होती तो १ अंग २ वंग ३ मगध ४ मलय ५ मालव ६ अच्छ ७ वच्छ ८ कोच्छ ९ पाढ १० लाढ ११ वज्री १२ मोली १३ काशी १४ कोशल

* मद्यपान पीने से व तेजोलेश्या के प्रतिघात से उक्त क्रियाओं करता है,

सूत्र

मणजोग-वइजोग-कायजोग,आणा पाणूणंच गहणं पवत्तंति,गहण लक्खणेणं पोग्गलत्थि काए ॥ ८ ॥ एगे भंते ! धम्मत्थिकायप्पएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहण्णपदे तिहिं, उक्कोसपदे छहिं ॥ केवइएहिं अहम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे? गोयमा ! जहण्णपदे चउहिं उक्कोसपदे सत्तहिं ॥ केवइएहिं आगासत्थिकायप्पएसेहिं

भावार्थ

लेना होता है. क्यों की पुद्गलास्तिकाया का ग्रहण लक्षण है. ॥ ८ ॥ अब अस्तिकाय प्रदेश स्पर्शन द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाया के प्रदेश से स्पर्शा हुवा है? अहो गौतम ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश जघन्य तीन धर्मास्तिकाय प्रदेशको स्पर्शा हुवा है. लोक के अंत में निष्कुटरूप जहां एक धर्मास्तिकायादि प्रदेशन बहुत अल्प है अन्य प्रदेश साथ स्पर्शना होवे. भूमि आसन्न कमरा के खुने का एक प्रदेश को दो बाजु दो और एक नीचेयों तीनप्रदेश होवे वैसेही धर्मास्तिकाया के प्रदेश को जघन्य पना में धर्मास्तिकाया के तीन प्रदेशो स्पर्श हुवे रहे हैं. और उत्कृष्ट पद से छ प्रदेश स्पर्श हुवे रहे हैं किसी एकप्रदेश के उपर, नीचे व चारों दिशा के चार पांच प्रदेश स्पर्शकर रहे हुवे हैं. अहो भगवन्! एक धर्मास्ति काया का प्रदेश अधर्मास्तिकाया के कितने प्रदेश से स्पर्शा हुवा है ? अहो गौतम ! जघन्यपद से चार से स्पर्शे उत्कृष्ट पद से सात से स्पर्शे. पहिले जो तीन व छ कहे हैं उसमें जो धर्मास्तिकायाका प्रदेश स्पर्शने का वही अधर्मास्ति काया के स्थान होने से अधिक लिया गया है अहो भगवन्! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने आकाशास्तिकाय प्रदेश से

शब्दार्थ

चरिम म० महाशिला कं० कंटक संग्राम अ० मैं इ० इस ओ० अवसर्पिणी के चो० चौवीस ति० तीर्थंकर में से च० चरिम ति० तीर्थंकर सि० सीझूंगा जा० यावत् अं० अंत करूंगा ॥११६॥ जं० यद्यपि अ० आर्य गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र सी० शीतल म० मृत्तिका पा० पानी से आ० मीट्टि से मीश्र उ० पानी से गा० गात्रों को प० सींचन करता हुआ वि० विचरता है त० उस व० पाप को भी व० छीपाने के लिये इ० ये च० चार पा० पान च० चार अ० अपान प० प्ररूपता है से० अथ किं० क्या पा० पान पा०

सूत्र

महासिलाकंटए संगामे ॥ अहं च णं इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थंकराणं चरिमे तित्थंकरे सिज्झिस्सं जाव अंतं करेस्सं ॥ ११६ ॥ जंपिय अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टिया पाणएणं आयंचणि उदएणं गायाइं परिसिंचमाणे विहरइ, तस्सविणं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं चत्तारि पाणगाइं चत्तारि अपाणगाइं पण्णवेइ ॥ सेकिंतं पाणए ? पाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा गोपुट्ठए, हत्थ-

भावार्थ

४ चरिम अंजली ५ चरिम पुष्कल संवर्त महामेघ ६ चरिम सेचानक गंधहस्ती ७ चरिम महा शिला कंटक संग्राम और ८ इस अवसर्पिणी में चौवीस तीर्थंकरों में मैं चरिम तीर्थंकर होकर सिद्ध बुद्ध मुक्त होऊंगा यावत् सब दुःखों का अंत करूंगा ॥ ११६ ॥ और भी अहो आर्यो ! मंखली पुत्र गोशाला मृत्तिका मीश्रित शीतल जल से अपने गात्रों को सींचता हुवा विचरता है. इस पाप को छिपाने के लिये

सूत्र

पुट्ठे ? गोयमा ! सत्तहिं ॥ केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! अणंतेहिं ॥ केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! अणंतेहिं ॥ केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ? सिय पुट्ठे सिय णो पुट्ठे, जइ पुट्ठे णियमं अणंतेहिं ॥ ९ ॥ एगे

भावार्थ

हुवा है ? अहो गौतम ! सात प्रदेश से स्पर्शा हुवा है क्यों कि लोकान्त में भी अलोकाकाश विद्यमान है. अहो भगवन् ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश से कितने जीवास्तिकाय प्रदेश स्पर्श हुवे हैं ? अहो गौतम ! अनंत जीवास्तिकाय प्रदेश स्पर्श हुवे हैं, क्यों कि एक धर्मास्तिकाय प्रदेश के तीनों तरफ अनंत जीव के प्रदेश रहे हुवे हैं. अहो भगवन् ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश को कितने पुद्गलास्तिकाय प्रदेश स्पर्श हुवे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पुद्गलास्तिकाय प्रदेश स्पर्श हुवे हैं जीवास्तिकाय प्रदेशवत्. अहो भगवन् ! एक धर्मास्तिकाय को कितना अद्धा ( काल ) स्पर्शा हुवा है ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाय प्रदेश को काल कदाचित् स्पर्शा हुवा है और कदाचित् स्पर्शा हुवा नहीं है क्यों कि काल मात्र अढाइ द्वीप में है इस से अढाइ द्वीप में स्पर्श कर रहा है और अढाइ द्वीप सिवाय अन्यत्र काल स्पर्श कर नहीं रहा है. जो स्पर्श कर रहा है वह अनंत स्पर्श कर रहा है. क्यों कि तीनों काल के समय अनंत हैं वैसे ही वर्तमान समय अनंत द्रव्य का आलिंगन होने से अनंत द्रव्य के अनंत समय को स्पर्शता है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! एक धर्म-

शब्दार्थ लेकर ण० नहीं पा० पानी पि० पीवे ए० यह था० स्थासपानक कि० क्या त० त्वचा पानक जे० जो अ० आम्र अं० अंबाडा ज० जैसे प० पयोगपद में जा० यावत् बो० बोर ति० तिंदुक त० कच्ची आ० कच्ची आ० थोडापीडे प० विशेष पीडे न० नहीं पा० पानी पि० पीना है से० वह त० त्वचा पानक से० अथ किं० क्या सं० संबली पानक क० चने की फली मु० मुग फली मा० उडद की फली त० नवीन आ० कच्ची आ० मुख में आ० थोडा डाले प० विशेष डाले ण० नहीं पा० पानी पि० पीवे से० वह सिं०

सूत्र अंबाडगंवा जहा पओगपदे जाव बोरुंवा तिंदुयंवा तरुणगं आमगंवा आसिगंसि आविसलेइ वा, पवालेतिवा ण य पाणियं पिवइ, से तं तयापाणए से किं तं संबलिपाणए ? संबलिपाणए जेणं कलसंगलियंवा, मुग्गसंगलियंवा मासंसंगलियंवा, सिंबलिसंगलियंवा, तरुणियं आमियं आसिगंसि आवीसलेइवा, पवालेइवा, ण य पाणियं पिवइ, सेतं सिंबलिपाणए ॥ से किं तं सुद्धापाणए ? सुद्धापाणए जेणं छम्मासं सुद्धखाइमं खाइ

भावार्थ पानी कहा जाता है. त्वचा पानी किसे कहते हैं ? आम्र, अम्बड वगैरह जैसे पन्नवणा के सोलहवे पद में कहा वैसे यावत् बोरका, टिंबरूका पानी तुर्त का नीकला कच्चा मुख में रखे, थोडा स्पर्श करे विशेष स्पर्श करे परंतु पीवे नहीं यह त्वचा पानी हुवा. फली का पानी किसे कहते हैं ? जो चने की फली, मुंग की फली, उडद की फली, व सेवले की फली इन फलियों के पानी को तरुणपना में, अभिनवपना में

सूत्र

एक्को, केवइया अहम्मत्थिकाय० ? एक्को, केवइया आगासत्थिकाय० ? एक्को, केवइया जीवत्थि० ? अणंता ॥ एवं जाव अद्धा समया ॥ २६ ॥ जत्थणं भंते ! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ? णत्थि एक्कोवि, केवइया अहम्म- त्थि ? असंखेज्जा, केवइया आगासत्थि ? असंखेज्जा, केवइया जीवत्थिकाय ? अणंता ॥ एवं जाव अद्धासमया ॥ २७ ॥ जत्थणं भंते ! अहम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय० ? असंखेज्जा, केवइया अहम्मत्थि० णत्थि एक्कोवि, सेसं

भावार्थ

प्रदेश अवगाह कर रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! एक, अधर्मास्तिकाय एक, आकाशास्तिकाय एक, जीवा- स्तिकाय अनंत, पुद्गलास्तिकाय अनंत, और अद्धा समय अनंत तक कहना ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! जहां संपूर्ण धर्मास्तिकाय अवगाह कर रही है वहां कितने धर्मास्तिकाय प्रदेश अवगाह कर रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! एक भी प्रदेश अवगाह कर नहीं रहे हुवे हैं, अधर्मास्तिकाया के असंख्यात प्रदेश अवगाह कर रहे हुवे हैं, आकाशास्तिकाया के असंख्यात प्रदेश अवगाह कर रहे हुवे हैं, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्ति- काय व अद्धा समय के अनंत प्रदेश अवगाह कर रहे हुवे हैं ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! जहां अधर्मास्ति- काया है वहां पर धर्मास्तिकाया के कितने प्रदेश हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेश हैं, अधर्मास्ति-

शब्दार्थ

प० प्रकाश मान वि० विचर कर इ० इस ओ० अवसर्पिणी में च० चौवीस ति० तीर्थंकरों में च० चरिम ति० तीर्थंकर सि० सिद्ध जा० यावत् स० सब दुःख प० रहित इ० ऋद्धि स० समुदाय से म० मेरा स० शरीर का णी० नीहारन क० करना ॥ १३३ ॥ त० तब ते० वे आ० आजीविक थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र का ए० यह अर्थ वि० विनय से प० सुना ॥ १३४ ॥ त० तब त० उस गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र को स० सात रात्रि प० परिणमते प० प्राप्त होते स० सम्यक्त्व अ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुआ णो० नहीं अ० मैं जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत्

सूत्र

गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासमाणे विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमे तित्थगरे सिद्धे जाव सव्वदुक्ख-प्पहीणे ॥ इड्ढी सक्कारसमुदएणं ममं सरीरगस्स णीहरणं करेह ॥ १३३ ॥ तएणं ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥ १३४ ॥ तएणं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि पडिलद्ध सम्म

भावार्थ

यावत् महापद में बडे २ शब्दों से ऐसा बोलना कि अहो देवानुप्रिय ! मंखली पुत्र गोशाला जिन जिन प्रलापी यावत् जिन शब्द का प्रकाश करते हुवे विचर कर इस अवसर्पिणी के चौवीस तीर्थंकरों में चरिम तीर्थंकर सिद्ध बुद्ध यावत् सब दुःख के अंतकर्ता हुए. और ऋद्धि सत्कार समुदाय से मेरा शरीर का निहारन करना ॥ १३३ ॥ आजीविक स्थविरोंने मंखलीपुत्र गोशाला की इस बात विनय पूर्वक अंगीकार की ॥ १३४ ॥ अब मंखलीपुत्र गोशाला को सात रात्रिपरिणमते हुए सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई

मो० योजन स० सहस्र आ० लंबा वि० चौडा दो० दो जो० योजन स० लाख प० पैंसठ स० सहस्र छ० छ ब० बत्तीस जो० योजन स० शत कि० किंचित् वि० विशेषाधिक प० परिधि ए० एक पा० कोट स० चारों बाजु स० घेराया हुवा पा० कोट दि० देढ जो० योजन स० शत उ० ऊर्ध्व उ० उच्चपने ए० ऐसे च० चमर चंचा रा० राज्यधानी व० वक्तव्यता भा० कहना स० सभा रहित जा० यावत् च० चार पा० प्रासाद पंक्ति ॥ २ ॥ च० चमर च० चमर भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा च० चमर चंचा आ०

किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं ॥ सेणं एगाए पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, सेणं पागारे दिवड्ढं जोअणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं ॥ एवं चमरचंचा रायहाणी वत्तव्वया भाणियव्वा सभाविहूणा जाव चत्तारि पासाय पंतीओ ॥ २ ॥ चमरेणं भंते ! असुरिंदे असुरराया चमरचंचे आवासे वसहिं उवेइ ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ सेकेणं खाइणणं

योजन से किंचित् अधिक की परिधि कही है. उस की दिशा विदिशा की चारों तरफ एक कोट है. वह कोट १५० योजनका ऊंचा कहा है. इस प्रकार चमरचंचा राज्यधानी की वक्तव्यता कही. इस में सुधर्मा सभा, उत्पात सभा, अभिषेक सभा, अलंकार सभा, और व्यवसाय सभा ये पांच सभाओं नहीं है. यावत् चार प्रासाद पंक्ति कही है, इन प्रासाद पंक्ति में ३४१ विमान कहे हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! चमर असुरेन्द्र चमरचंचा प्रासाद में क्या बसकर रहता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं


भावार्थ

शब्दार्थ प्रिय गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् वि० विचरने को ए० यह गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र स० मानु का घातक जा० यावत् छ० छद्मस्थ में का० कालगत स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत वि० विचरते हैं स० शपथ से प० छूटने का क० करके दो० दूसरी वक्त पू० पूजा स० सत्कार थि० स्थिर क० करने को गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र को वा० बांये पांव से मु० छोडकर हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी की कुं० कुंभकार शाला में दु० द्वारकपाट अ० खोलकर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र के स० शरीर को सु० सुगंधित गं० गंधोदक से ण्हा० स्नान कराया तं० वैसे ही म० बडी इ० ऋद्धि स० सत्कार स० समुदय

सूत्र विहरिए ॥ एसणं गोसाले चेव मखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए ॥ समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, सवहपडिमोक्खमणगं करेंति, करेंतित्ता, दोच्चंपि पूयासक्कारथिरीकरणट्ठयाए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुंबेयंति २ त्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवारवयणाई अवगुणंति २ त्ता, गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेंति तं चेव

भावार्थ पूजा सत्कार व सन्मान के लिये मंखलीपुत्र गोशाला के बांये पांव से रस्सी छोडकर हालाहला कुंभकारिणी के कुंभकारशाला के द्वार खोल दिये; मंखली पुत्र गोशाला के शरीर को सुगंधित पानी से

शब्दार्थ

शा० था व० वर्णन यो० पृ० पृथ्वी शिलापट्ट त० उस सा० शाल कोष्टक चे० उद्यान की अ० पास ए० यहां म० बडा मा० मालुय कच्छ हो० था कि० कृष्ण कि० कृष्णावभास जा० यावत् नि० निकुरंबभूत प० पत्रवाले पु० पुष्पवाले फ० फलवाले ह० हरे सि० शोभायमान सि० लक्ष्मी से अ० अतीव उ० शोभते हुवे चि० था ॥ १३८ ॥ त० उस में० मिंढिक ग्राम ण० नगर में रे० रेवती गा० गाथापति की स्त्री प० रहतीथी अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूता ॥ १३९ ॥ त० तब

सूत्र

सालकोट्ठए चेइए होत्था, वण्णओ. पुढवीसिलापट्टओ तस्सणं सालकोट्ठगस्स चेइयस्स अदूरसामंते एत्थणं महेगे मालुयाकच्छएयावि होत्था किण्हे किण्होभासे जाव निकुरंबभूए पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगेरिज्जमाणे सिरीए अईव २ उवसो० भेमाणे २ चिट्ठइ ॥ १३८ ॥ तत्थणं मेंढियगामे णयरे रेवतीणामं गाहावइणी परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया ॥ १३९ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया

भावार्थ

कौन में शाल कोष्टक नाम का उद्यान था. वह वर्णन युक्त था. यहां पर पृथ्वीशिलापट्ट था. उस शाल-कोष्टक उद्यान की पास मालुका नामक कच्छ (वृक्षों का समुह) था. यह कृष्ण, कृष्णावभास यावत् निकुरंबभूत पत्र, पुष्प, फल और हरित से अतीव शोभता हुवा था ॥ १३८ ॥ उस मिंढिक ग्राम नगर में रेवती नामक गाथापतिनी रहती थी. वह ऋद्धिवंत यावत् अपरिभूता थी ॥ १३९ ॥ अथ एकदा श्री

शब्दार्थ

विचरते हैं अ० अन्यत्र व० वसति में उ० आते हैं ए० ऐसे गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा रा च० चमर चंचा आ० आवास के० केवल कि० क्रीडा र० रति प० निमित्त अ० अन्यत्र व० वसति को उ० जाते हैं से० वह ते० इसलिये जा० यावत् आ० आवास से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ ३ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर अ० एकदा रा० राजगृह न० नगर में गु० गुणशील से जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ ४ ॥ ते० उस काल

सूत्र

उवेंति, एवामेव गोयमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचे आवासे केवलं किड्डारतिपत्तियं अण्णत्थपुण वसहिं उवेंति, से तेणट्ठेणं जाव आवासे सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरति ॥ ३ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाइं रायगि-हाओ णयराओ गुणसिलाओ जाव विहरइ ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं

भावार्थ

विश्राम भोगते हुए विचरते हैं. परंतु वहां पर निवास नहीं करते हैं. अहो गौतम! ऐसे ही चमर असुरेन्द्र चमर चंचा आवास में केवल क्रीडा व रति सुख भोगने को ही आता है. उन के निवास स्थान अन्य होते हैं. अहो गौतम! इसी कारन से चमर चंचा आवास कहे है. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर तप संयम से आत्मा को भावते हुए भगवान् गौतम स्वामी विचरने लगे ॥ ३ ॥ श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी राजगृह नगर में से गुणशील उद्यान [illegible] अन्यत्र देश में विहार किया करते

शब्दार्थ तपतेज से अ० पराभव पाया हुवा अं० अंदर छ० छमास में पि० पित्तज्वर प० परिगत शरीरवाला दा० दाह व्युत्क्रान्त छ० छद्मस्थ में का० काल क० करेंगे ॥ १५१ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर के अं० शिष्य सी० सिंह अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत मा० मालुया कच्छ की अ० पास छ० छट्ठछट्ठ के अ० निरंतर उ० ऊर्ध्व बा० बाहा से जा० यावत् वि० विचरताथा त० तब त० उस सी० सिंह अ० अनगार को झा० ध्यान में व० रहते अ०

सूत्र समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगय सरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थेचेव कालं करेस्संति ॥ १५१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सीहे णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूर सामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं २ उड्ढं बाहाओ जाव विहरइ ॥ १५२ ॥ तएणं तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था

भावार्थ मरण भी करेंगे. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र ये चारों वर्ण ऐसा बोलने लगे कि मंखलीपुत्र गोशाला के तप तेजसे पराभव पाये हुवे महावीर स्वामी पित्तज्वर व दाहसे छ मासमें काल करेंगे॥१५१॥उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर के अंतेवासी प्रकृति भद्रिक यावत् प्रकृति विनित सींह नामक अनगार मालुयाकच्छ की पास निरंतर छठ्ठकी तपस्या करते हुवे ऊर्ध्व बाहा यावत् विचरते थे ॥१५२॥

सूत्र

सिय कालएय णीलएय लोहियगाय हालिद्दगेय ३, सिय कालएय णीलगाय लोहियगेय हालिद्दगेय ४, सिय कालगाय णीलएय लोहियगेय हालिद्दगेय ५ ॥ एएपंच भंगा ॥ सिय कालएय णीलएय लोहियएय सुक्किल्लएय, एत्थवि पंच भंगा ॥ एवं कालगणीलगहालिद्दसुक्किल्लएसुवि पंच भंगा ॥ कालगलोहियहालिद्द सुक्किल्लएसुवि पंच भंगा ॥ णीललोहियहालिद्दसुक्किल्लएसुवि पंच भंगा ॥ एव मेते चउक्कसंजोएणं पणवीसं भंगा ॥ जइ पचवण्णे कालएय णीलएय लोहियएय

भावार्थ

लाल पीला व शुक्ल में सात भांगे यों तीन संयोगी ७० भांगे होते हैं. यदि चार वर्ण होवे तो स्यात् काला, हरा, लाल व पीला २ स्यात् काला, हरा, लाल एक वचन और पीला अनेक वचन ३ स्यात् काला, हरा एक वचन लाल अनेकवचन पीला एकवचन ४ स्यात् काला एक वचन हरा अनेक लाल व पीला एक वचन ५ स्यात् काला अनेक हरा लाल व पीला एक यों पांच भांगे वैसे ही स्यात् काला हरा लाल व शुक्ल उस में भी पांच, ऐसे ही काला, हरा, पीला व शुक्ल इन में पांच भांगे, काला, लाल, पीला व शुक्ल में पांच भांगे. हरा, लाल, पीला व शुक्ल में पांच भांगे. यों चार संयोगी पचीस भांगे हुवे. यदि पांच वर्ण होवे तो काला, हरा, लाल, पीला व शुक्ल यों एक ही

सूत्र

सिय कालएय णीलएय लोहियगाय हालिद्दगेय ३, सिय कालएय णीलगाय लोहियगेय हालिद्दगेय ४, सिय कालगाय णीलएय लोहियगेय हालिद्दगेय ५ ॥ एएपंच भंगा ॥ सिय कालएय णीलएय लोहियएय सुक्किलएय, एत्थवि पंच भंगा ॥ एवं कालगणीलगहालिद्दसुक्किलएसुवि पंच भंगा ॥ कालगलोहियहालिद्द सुक्किलएसुवि पंच भंगा ॥ णीललोहियहालिद्दसुक्किलएसुवि पंच भंगा ॥ एव मेते चउक्कसंजोएणं पणवीसं भंगा ॥ जइ पचवण्णे कालएय णीलएय लोहियएय

भावार्थ

लाल पीला व शुक्र में सात भांगे यों तीन संयोगी ७० भांगे होते हैं. यदि चार वर्ण होवे तो स्यात् काला, हरा, लाल व पीला २ स्यात् काला, हरा, लाल एक वचन और पीला अनेक वचन ३ स्यात् काला, हरा एक वचन लाल अनेकवचन पीला एकवचन ४ स्यात् काला एक वचन हरा अनेक लाल व पीला एक वचन ५ स्यात् काला अनेक हरा लाल व पीला एक यों पांच भांगे वैसे ही स्यात् काला हरा लाल व शुक्ल उस में भी पांच, ऐसे ही काला, हरा, पीला व शुक्ल इन में पांच भांगे, काला, लाल, पीला व शुक्ल में पांच भांगे. हरा, लाल, पीला व शुक्ल में पांच भांगे. यों चार संयोगी पचीस भांगे हुवे. यदि पांच वर्ण होवे तो काला, हरा, लाल, पीला व शुक्ल यों एक ही

शब्दार्थ

अ० पीछे भ० वैठकर म० बडे २ श० शब्द से कु० कुहु प० रुदन किया ॥ १४३ ॥ अ० आर्य स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को आ० आमंत्रण कर ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसा अ० आर्य म० मेरा अं० शिष्य सी० सिंह अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक स० सब भा० कहना जा० यावत् प० रुदन किया तं० इसलिये ग० जावो अ० आर्य तु० तुम सी० सिंह अ० अनगार को स० बोलावो ॥ १४४ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ स० श्रमण भ० भगवंत म०

सूत्र

विलइत्ता, महया महया सद्देणं कुहुकुहुस्स परुन्ने ॥ १४३ ॥ अज्जोत्ति, समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी एवं खलु अज्जो ! ममं अंतेवासी सीहे णामं अणगारे पगइभद्दए तंचेव सव्वं भाणियव्वं जाव परुन्ने तं गच्छहणं अज्जो ! तुब्भे सीहं अणगारं सद्दह ॥ १४४ ॥ तएणं ते समणा निग्गंथा

भावार्थ

[illegible] कंठ से यावत् रुदन किया ॥ १४३ ॥ श्रमण भगवंत महावीरने श्रमण निर्ग्रंथों को बोलाकर ऐसा कहा कि, अहो आर्यो ! मेरा अंतेवासी प्रकृति भद्रिक सिंह अनगार [illegible] कंठ से यावत् रुदन कर रहा है इसलिये अहो आर्यो ! तुम जाओ और सिंह अनगार को बोलाओ ॥ १४४ ॥ [illegible] के [illegible]

सूत्र

णीलगाय लोहियगाय हालिद्दगाय सुक्किलगाय ५, सिय कालगाय, णीलगाय, लोहि...
एय हालिद्दएय सुक्किलएय ६, एवं एए छ भंगा भाणियव्वा, एवमेते सव्वेवि एक्कग
दुयगातियगचउक्कगसंजोग पंचग संजोगेसु एवं छासीयं भंगसयं भवंति ॥ गंधा
जहा पंचपएसियस्स ॥ रसा जहा एयस्स चेव वण्णा ॥ फासा जहा चउप्पएसियस्स
॥ ६ ॥ सत्त पएसिएणं भंते ! खंधे कइवण्णे ? जहा पंचपएसिए जाव सिय
चउफासे पण्णत्ते जइ एगवण्णे-एवं एगवण्णदुवण्ण तिवण्णा जहा छप्पएसियस्स,
जइ चउवण्णे-सिय कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय १, सिय कालएय.

भावार्थ

कहना. यों एक संयोगी ५ द्विसंयोगी ४० तीन संयोगी ८० चार संयोगी ५५ और पांच संयोगी ६
सब १८६ भांगे जानना गंध के छ पांच प्रदेशिक जैसे कहना. रस के १८६ वर्ण जैसे कहना और स्पर्श
के ३६ भांगे चार प्रदेशी जैसे कहना. यों वर्ण के १८६ गंध के ६ रस के १८६ और स्पर्श के ३६ सब
मीलकर ४१४ भांगे हुए ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सात प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श पाते
हैं ? अहो गौतम ! सात प्रदेशिक स्कंध में पांच वर्ण, दो गंध पांच रस व चार स्पर्श वगैरह जैसे पंच
प्रदेशिक स्कंध जैसे कहना. एक वर्ण दो वर्ण और तीन वर्ण का छ प्रदेशिक स्कंध जैसे पांच, चालीस

सूत्र

५, सिय कालएय, णीलएय, लोहियगाय हालिद्दएय सुक्किल्लगाय ६, सिय कालएय णीलएय लोहियगाय हालिद्दगाय सुक्किल्लएय ७, सिय कालएय णीलगाय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय ८, सिय कालएय, णीलगाय, लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लगाय ९, सिय कालगेय णीलगाय लोहियएय हालिद्दगाय सुक्किल्लगेय १०, सिय कालएय णीलगाय लोहियगाय हालिद्दएय सुक्किल्लएय ११, सियकालगाय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय १२, सिय कालगाय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लगाय १३, सिय कालगाय णीलएय लोहियएय हालिद्दगाय सुक्किल्लएय १४,

भावार्थ

स्यात् काला हरा एक लाल अनेक पीला शुक्ल एक ६ स्यात् काला हरा एक लाल अनेक पीला एक शुक्ल अनेक ७ स्यात् काला नीला एक लाल पीला अनेक व शुक्ल एक ८ स्यात् काला एक हरा अनेक लाल पीला शुक्ल एक ९ स्यात् काला एक हरा अनेक लाल पीला एक और शुक्ल अनेक १० स्यात् काला एक हरा अनेक लाल एक पीला अनेक शुक्ल एक ११ स्यात् काला एक हरा लाल अनेक पीला शुक्ल एक १२ स्यात् काला अनेक हरा, लाल, पीला व शुक्ल एक १३ स्यात काला अनेक हरा लाल पीला एक शुक्ल अनेक १४ स्यात काला अनेक हरा लाल एक पीला अनेक शुक्ल एक १५ स्यात काला अनेक हरा

शब्दार्थ

अ० कितनेक दे० देवों की अ० अठारह सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० कही त० उस में स० सर्वानुभूति दे० देव की अ० अठारह सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी से० अब स० सर्वानुभूति देव ता० उस दे० देवलोक में आ० आयुष्यक्षय में जा० यावत् म० महाविदेह वा० क्षेत्र में सि० सीझेंगे जा० यावत् अं० अंत करेंगे ॥ १८९ ॥ ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय के अं० शिष्य को० कोशल जा० देशका सु० सुनक्षत्र अ० अनगार प० प्रकृति भ० भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह भं०

सूत्र

वण्णे ॥ तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं सव्वाणुभूईस्सवि देवस्स अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता,सेणं सव्वाणुभूई देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति ॥ १९ ॥ एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कोसल जाणवए सुणक्खत्ते-णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए सेणं भंते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं

भावार्थ

उत्पन्न हुआ. उस में कितनेक देवताओं की अठारह सागरोपम की स्थिति कही. वहां पर सर्वानुभूति अनगार की अठारह सागरोपम की स्थिति कही. वह सर्वानुभूति देव वहां से आयुष्य, स्थिति व भव क्षय से चवकरके यावत् महाविदेह क्षेत्र में सिझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ १८९ ॥ अहो भगवन् ! आपके अंतेवासी प्रकृति भद्रिक यावत् विनित कोशल देश के सुनक्षत्र अनगार मंखली पुत्र

सूत्र

लोहियएय, हालिद्दगाय २, एवं जहेव सत्तपएसिए जाव सिय कालगाय णीलगाय लोहियगाय, हालिद्दगाय १६ ॥ एए सोलस भंगा ॥ एवमेते पंच चउक्क संजोगा एवमेते असीति भंगा ॥ जइ पंचवण्णे-सिय कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किलएय, एवं एएणं कमेणं भंगा उच्चारेयव्वा जाव सिय कालएय णीलगाय लोहियगाय हालिद्दगाय सुक्किलएय १५; एसो पण्णरसमो भंगो, सिय कालगाय णीलगेय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किलएय १६. सिय कालगाय णीलगेय लोहियएय

भावार्थ

कहा वैसे ही कहना यावत् कदाचित चार स्पर्श होवे यदि एक वर्ण होवे आठों प्रदेश काले वगैरह एक दो तीन वर्ण का सात प्रदेशिक स्कंध जैसे कहना यदि चार वर्ण होवे तो १ स्यात् काला, हरा, लाल व पीला एक २ स्यात काला, हरा लाल एक पीला अनेक ऐसे ही जैसे सात प्रदेशों का कहा वैसे ही कहना यावत् स्यात काला हरा लाल व पीला अनेक वचन यों सोलह भांग करना ऐसे ही काला हरा, लाल व शुक्ल यों पांच चार संयोगी करना. प्रत्येक चार संयोगी में सोलह २ भांग जानना. सब मीलकर ८० भांग चार वर्ण के हुवे. यदि पांच वर्ण होवे तो काला हरा, लाल पीला व श्वेत एक वचन यों अनुक्रम से जैसे पहिले भांगे कहे वैसे ही १५ भांगे करना यावत् स्यात् काला एक हरा, लाल, पीला

पदार्थ आ० आत्मा म० मन अ० अन्य म० मन गो० गौतम ज० जैसे भा० भाषा त० वैसे म० मन जा०

सूत्र अण्णे मणं ? णो आता मणे अण्णे मणे ? गोयमा ! जहा भासा तहा मणेवि, जाव णो अजीवा ॥ १० ॥ पुव्विं भंते ! मणे, मणिज्जमाणे मणे, एवं जहेव भासा ॥ ११ ॥ पुव्विं भंते ! मणे भिज्जइ, मणिज्जमाणे मणे भिज्जइ, मण समयवीइक्कंते मणे भिज्जइ ? एवं जहेव भासा ॥ १२ ॥ कइविहेणं भंते ! मणे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे मणे पण्णत्ते, तंजहा-सच्चे जाव असच्चामोसे ॥ १३ ॥ आया भंते !

भावार्थ होने से मन का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! क्या आत्मा मन है या अन्य मन है ? अथवा नो आत्मा मन है या अन्य मन है ! अहो गौतम ! जैसे भाषा का कहा वैसे ही मन का जानना ॥१०॥ अहो भगवन् ! मनन पहिले मन, मनन करने लगे जब मन, अथवा मनन का समय व्यतीत हुवे पीछे मन ? अहो गौतम ! जैसे भाषा का कहा वैसे ही मन का जानना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! पहिले मन भेदा जाता है, मनन करते मन भेदा जाता है अथवा मनन समय व्यतीत हुए पीछे मन भेदा जाता है ! अहो गौतम ! जैसे भाषा का कहा वैसे ही मन का जानना ॥ १२ ॥ अहो गौतम ! मन के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! मन के चार भेद कहे. सत्य मन, मृषा मन, सत्य मृषा, व असत्य मृषा मन ॥ १३ ॥

सूत्र

पदेसियस्स ॥ पंचवण्णावि तहेव णवरं बत्तीसइभोवि भंगो भण्णइ. एवमेते एक्कग दुयगतियग चउक्कग पंचग संजोएसु दोण्णि सत्ततीसं भंगसयं भवंति ॥ गंधा जहा णवपदेसियस्स ॥ रसा जहा एयस्स चेव वण्णा फासा जहा चउप्पदेसियस्स ॥ जहा दसपदेसिओ, एवं संखेज्जपएसिओ एव असंखेज्जपएसिओवि सुहुमपरिणओ अणंत पएसिओ एवं चेव, ॥१०॥ बादरपरिणएणं भंते! अणंतपदेसिए खंधे कइवण्णे? एवं जाव अट्ठारसमे सए जाव सिय अट्ठफासे पण्णत्ते वण्णगंधरसा जहा दसपदेसियस्स॥ जइ चउफासे

भावार्थ

कहना यावत् चार स्पर्श यदि एक वर्ण होवे तो एक वर्ण के पांच भांगे दो वर्ण के द्विसंयोगी ४०, तीन संयोगी ८०, चार संयोगी ८० भांगे होवे. यदि पांच वर्ण होवे तो ३२ भांगे पूर्वोक्त जैसे जानना और ३२ वा स्यात् काला, हरा, लाल, पीला व श्वेत सब अनेक वचन क्यों कि दश प्रदेशिक स्कंध है. वर्ण के सब मिलकर २३७ भांगे होते हैं. गंध के ६ रस के २३७ वर्ण जैसे और स्पर्श के ३६ चतुष्क प्रदेशिक स्कंध जैसे कहना. यह दश प्रदेशी स्कंध के ५१६ भांगे हुवे. ऐसे ही संख्यात प्रदेशिक व असंख्यात प्रदेशिक का जानना. सूक्ष्म परिणत अनंत प्रदेशिक स्कंध का भी वैसे ही कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! बादर परिणत अनंत प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श कहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! जैसे

शब्दार्थ

काल के मा० अवसर में का० कालकर उ० ऊर्ध्व चं० चंद्र सू० सूर्य जा० यावत् आ० आणत पा० प्राणत क० देवलोक वी० उल्लंघ कर अ० अच्युत क० देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न हुआ त० वहां अ० कितनेक दे० देवता की बा० बावीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी त० वहां सु० सुनक्षत्र दे० देव की बा० बावीस सा० सागरोपम की से० शेष ज० जैसे स० सर्वानुभूति जा० यावत् अं० अंतकरेंगे ॥ १६० ॥ ए० ऐसे दे० देवानुप्रियका अं० अंतेवासी कु० कुशिष्य गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र से० वह भं० भगवन् का० काल के अवसर में का० काल करके क० कहां ग० गया क० कहां उ०

सूत्र

समाहिपत्ते कालमासे कालंकिच्चा उड्ढं चंदिम सूरिय जाव आणयपाणयारणकप्पे वीईवइत्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं सुणक्खत्तस्सवि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं, सेसं जहा सव्वाणुभूइस्स जाव अंतं काहिति ॥ १६० ॥ एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले णामं मंखलिपुत्ते सेणं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते कालमासे कालंकिच्चा कहिंगए कहिं उववण्णे ? एवं खलु

भावार्थ

उल्लंघकर अच्युत देवलोक में देवतापने उत्पन्न हुए. वहां पर कितनेक देवताओं की बावीस सागरोपमकी स्थिति कही जिस में सुनक्षत्र देवकी भी बावीस सागरोपम की स्थिति कही. शेष सब सर्वानुभूति अनगार जैसे यावत् अंत करेंगे ॥ १६० ॥ अहो भगवन् ! आप का अंतेवासी कुशिष्य मंखली पुत्र गोशाला

सूत्र

सव्वे गुरुए सव्वेसीए सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए ४, एत्थवि बत्तीसं भंगा. एवं सव्वेते पंचफासे, अट्ठावीसं भगसयं भवंति ॥ जइ छप्फासे-सव्वेकक्खडे सव्वे गुरुए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे १, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसालुक्खा २, एव जाव सव्वेकक्खडे सव्वेगुरुए देसासीया देसाउसिणा देसाणिद्धा देसालुक्खा ॥ एए सोलस भंगा ॥ सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे एत्थवि सोलस भंगा ॥ सव्वे मउए सव्वे गुरुए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे एत्थवि सोलस भंगा ॥ सव्वे मउए

भावार्थ

स्पर्श के सब मीलकर १२८ भांगे पांच स्पर्श के होवे यदि छ स्पर्श होवे तो सर्व कर्कश, सर्व गुरु देश शीत देश उष्ण देश स्निग्धदेश रूक्ष २ सर्व कर्कश सर्व गुरु देश शीत देश उष्ण देश स्निग्ध एक देश रूक्ष अनेक वचनांत ऐसेही यावत् सर्व कर्कश सर्व गुरु देश शीत, देश उष्ण, देश स्निग्ध व देश रूक्ष अनेक यों सोलह भांगे करना. सर्व कर्कश सर्व लघु देश शीत देश उष्ण देश स्निग्ध व देश रूक्ष के भी सोलह भांगे जानना. सर्वमृदु सर्वगुरु देश शीत देश उष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष के भी सोलह भांगे करना और सर्व मृदु सर्व लघु देश शीत देश उष्ण देश स्निग्ध व देशरूक्ष के भी सोलहभांगे करना. यों कर्कश गुरुके चौसठभांगे

सूत्र

णिद्धा देसा लुक्खा ॥ एए चउसट्ठि भंगा ॥ सव्वे गुरुए सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसेसीए देसे उसिणे जाव सव्वे लहुए सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा सीया देसा उसिणा ॥ एए चउसट्ठि भंगा ॥ सव्वे सीए सव्वेणिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए जाव सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसागरुया देसा लहुया एवमेते चउसट्ठि भंगा॥सव्वे ते छप्फासे तिण्णि चउरासिया भंगसया भवंति ३८४ ॥ जइ सत्तफासे सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे कक्खडे देसे गुरुए

भावार्थ

ऊष्ण यों चौसठ भांगे कहना. सब शीत सब स्निग्ध देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देश लघु यावत् सब ऊष्ण सब रूक्ष देश कर्कश देश मृदु देश गुरु व देश लघु के चौसठ भांगे कहना. छ स्पर्श के सब मीलकर तीन सो चौरासी भांगे होते हैं. यदि सात स्पर्श होवे तो १ सब कर्कश, देश गुरु देश लघु देश शीत देश ऊष्ण, देश स्निग्ध देश रूक्ष २ सब कर्कश देश गुरु देश लघु देश शीत देश ऊष्ण एक वचन देश स्निग्ध देशरूक्ष अनेकवचनांत यों चार भांगे कहना. ४ सब कर्कश देशगुरु देश लघु देश शीत एक वचन देश ऊष्ण अनेक वचन देश स्निग्ध व देश रूक्ष एक ५सब कर्कशदेश गुरु देश लघु देश शीत अनेक वचन देश ऊष्ण

सूत्र

देसा गुरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसेणिद्धे देसे लुक्खे एगत्ति सोलस भंगा भाणियव्वा ॥ एव मेते चउसट्ठि भंगा कक्खडेणसमं ॥ सव्वे मउए देसेगुरुए देसेलहुए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे ॥ एवं मउएणवि चउसट्ठि भंगा भाणियव्वा ॥ सव्वे गुरुए देसेकक्खडे देसेमउए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसे लुक्खे, एवं गुरुएणवि चउसट्ठि भंगा कायव्वा २ ॥ सव्वे लहुए देसे कक्खडे देसेमउए देसेसीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसेलुक्खे, एवं लहुएणविसमं चउसट्ठि भंगा कायव्वा ॥ सव्वेसीए देसेकक्खडे देसेमउए देसेगुरुए देसेलहुए देसेणिद्धे देसे

भावार्थ

कर्कश की साथ कहना. सब मृदु देश गुरु देश लघु देश शीत देश ऊष्ण, देश स्निग्ध और देश रूक्ष ऐसे मृदु के भी ६४ भांगे. सब गुरु देश कर्कश देश मृदु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष ऐसे गुरु के ६४ भांगे. सब लघु देश कर्कश देश मृदु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष यों लघु की साथ ६४ भांगे, सब शीत, देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देश लघु देश स्निग्ध देश रूक्ष यों शीत की साथ ६४ भांगे, सर्व ऊष्ण देश कर्कश, देश मृदु देश गुरु देश लघु देश स्निग्ध देश रूक्ष यों ऊष्ण

शब्दार्थ मरण भं० भगवन् क० कितने प्रकार का प० प्ररूपा गो० गौतम पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य आवीचिक मरण खे० क्षेत्र आवीचिक मरण का० काल आवीचिक मरण भ० भव आवीचिक मरण भा० भाव आवीचिक मरण ॥ २० ॥ सरल शब्दार्थ.

सूत्र

पंडियमरणे ॥ १९ ॥ आवीचियमरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-दव्वावीचियमरणे, खेत्तावीचियमरणे, कालावीचियमरणे, भवावीचिय मरणे, भावावीचियमरणे, ॥ २० ॥ दव्वावीचिय मरणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-णेरइय दव्वावीचियमरणे, तिरिक्खजोणिय दव्वावीचियमरणे, मणुस्सदव्वावीचियमरणे, देवदव्वावीचियमरणे, ॥ २१ ॥

भावार्थ भोगते हैं वह आत्यंतिक मरण है ४ बाल मृत्यु अविरति जीव का और ५ पंडित मरण सर्व विरति जीव का ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! आवीचिक मरण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! आवीचिक मरण के पांच भेद कहे हैं. १ द्रव्य आवीचिक मृत्यु २ क्षेत्र आवीचिक मृत्यु, ३ काल आवीचिक मृत्यु ४ भव आवीचिक मृत्यु और ५ भाव आवीचिक मृत्यु ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य आवीचिक मृत्यु के कितने भेद हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य आवीचिक मृत्यु के चार भेद कहे हैं. नारकी द्रव्य आवीचिक मरण, तिर्यंच आवीचिक मृत्यु, मनुष्य आवीचिक मृत्यु और देव आवीचिक मृत्यु ॥ २१ ॥ अहो भगवन्!

सूत्र

देसे णीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४ देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए, देसे गुरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, एए चत्तारि चउक्का सोलस भंगा ॥ देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे, देसे णिद्धे देसे लुक्खे ॥ एवं एते गुरुएणं एगत्तेणं पुहत्तेण सोलस भंगा कायव्वा ॥ देसे कक्खडे देसे मउए देसा गुरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे एए सोलस भंगा कायव्वा ॥ देसे कक्खडे देसे मउए देसा गुरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे

भावार्थ

देश स्निग्ध देश रूक्ष एक ४ देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देश लघु एक देश शीत देश ऊष्ण अनेक देश स्निग्ध व देश रूक्ष ४ यों चार चौक के सोलह भांगे हुवे देश कर्कश देश मृदु देश गुरु एक देश लघु अनेक देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष ४ यों गुरु एक अनेक के सोलह भांगे जानना. देश कर्कश, देश मृदु देश गुरु अनेक देश लघु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष यों सोलह भांगे करना. देश कर्कश देश मृदु एक देश गुरु देश लघु अनेक देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध व देश रूक्ष यों

शब्दार्थ

दे० देवसेन ॥ १६८ ॥ त० तब त० उस म० महापद्म र० राजाका दो० दूसरा णा० नाम भ० होगा दे० देवसेन ॥ १६९ ॥ त० तब त० उस दे० देवसेन को अ० अन्यदा से० श्वेत सं० शंखतल स० समान च० चारदांतवाला ह० हस्तीरत्न स० होगा ॥ १७० ॥ त० तब से० वह दे० देवसेन रा० राजा से० श्वेत सं० शंखतल वि० विमल स० समान च० चारदांतवाला ह० हस्तीरत्नपे दु० आरूढहोता स० शतद्वार ण० नगर की म० मध्य में अ० वारंवार अ० आवेंगे णि० नीकलेंगे ॥ १७१ ॥ त० तब स०

सूत्र

दोच्चेवि णामधेज्जे देवसेणेति ॥१६८॥ तएणं तस्स महापउमस्स रण्णो दोच्चेवि णामधेज्जे भविस्सइ देवसेणेति॥१६९॥तएणं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णयाकयाइं सेते संखतलविमलसण्णिगासे चउद्दंतेहत्थिरयणे समुप्पज्जिस्सइ ॥१७०॥ तएणं से देवसेणे राया सेयं संखतलविमलसण्णिगासं चउद्दंतहत्थिरयणं दुरूढेसमाणे सततुवारं णयरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं २ अभिजाहितिय णिज्जाहिंतिय॥१७१॥तएणं सततुवारे णयरे बहवे राईसर जाव

भावार्थ

दो देव सेना कर्म करते हैं तब अपना महापद्म राजा का दूसरा नाम देवसेन होगा ॥ १६८ ॥ उस से महापद्म का दूसरा नाम देवसेन होगा ॥ १६९ ॥ अब एकदा उस महापद्म राजा को शंखतल समान श्वेत चार दांतवाला हस्ती रत्न प्राप्त होगा ॥ १७० ॥ वह महापद्म राजा शंखतल समान श्वेत चार दांतवाला हस्ति रत्न पर आरूढ होकर शतद्वार नगर की बीच में होकर वारंवार गमनागमन करेंगे ॥ १७१ ॥ तब

सूत्र

पण्णत्ते तंजहा-दव्वपरमाणु, खेत्तपरमाणु कालपरमाणु भावपरमाणु ॥ दव्वपरमाणूणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-अच्छेज्जे अभेज्जे अडज्झे अगेज्झे॥ खेत्तपरमाणूणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते ? तंजहा-अणड्ढे, अमज्झे, अपएसे, अविभागे ॥ कालपरमाणु पुच्छा ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-अवण्णे अगंधे अरसे अफासे ॥ भावपरमाणूणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते ॥ सेवं भंते !

भावार्थ

चार भेद कहे हैं. १ द्रव्य परमाणु २ क्षेत्र परमाणु, काल परमाणु, व भाव परमाणु. अहो भगवन् ! द्रव्य परमाणु के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य परमाणु के चार भेद कहे हैं. १ अछेद्य २ अभेद्य ३ अदाह्य और ४ अग्राह्य. अहो भगवन् ! क्षेत्र परमाणु के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! क्षेत्र परमाणु के चार भेद कहे हैं. १ अर्ध रहित २ मध्य रहित ३ प्रदेश रहित और ४ विभाग रहित. अहो भगवन् ! काल परमाणु के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! काल परमाणु के चार भेद कहे हैं. १ वर्ण रहित २ गंध रहित, ३ रस रहित व ४ स्पर्श रहित. अहो भगवन् ! भाव परमाणु के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! चार भेद कहे हैं. १ वर्ण सहित २ गंध सहित ३ रस सहित व ४ स्पर्श सहित

सूत्र

॥ १ ॥ पुढवीकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए पुढवीए अंतरा समोहए, जे भविए ईसाणेकप्पे पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए ॥ एवं चेव जाव ईसिप्पभाराए उववाएयव्वो ॥ २ ॥ पुढवीकाइएणं भंते ! सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पुढवीए अंतरा समोहए, समोहइत्ता जेभविए सोहम्मे जाव ईसिप्पभाराए ॥ एवं एएणं कमेणं जाव तमाए । अहे सत्तमाए पुढवीए अंतरा समोहए समोहइत्ता जे भविए सोहम्मं कप्पे जाव ईसिप्पब्भाराए उववाएयव्वो ॥ ३ ॥ पुढवीकाइएणं भंते !

भावार्थ

॥ १ ॥ अहो भगवन ! इस रत्नप्रभा व शर्कर प्रभा की बीच में पृथ्वीकाया मारणांतिक समुद्घात से काल करके ईशान देवलोक में पृथ्वी कायापने उत्पन्न होवे वगैरह पूर्वोक्त जैसे यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वीकाया में उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ अहो भगवन ! शर्कर प्रभा व वालु प्रभा की बीच में पृथ्वी काया मारणांतिक समुद्घात करके सौधर्म देवलोक में पृथ्वीकायापने उत्पन्न होने योग्य होवे वगैरह इस क्रम से छठी तमा व सातवी तमतमा पृथ्वी की बीच में पृथ्वीकाया मारणांतिक समुद्घात करके सौधर्म देवलोक में पृथ्वीकायापने उत्पन्न होवे वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे कहना यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी में उत्पन्न होवे ॥ ३ ॥ सौधर्म ईशान व सनत्कुमार माहेन्द्र की बीच में

शब्दार्थ अ० अन्यदा क० कदापि स० साधु णि० निर्ग्रन्थों से पि० मिथ्यात्व पि० अंगीकार करेंगे अ० कितनेक को आ० आक्रोशकरेंगे उ० उपहास करेंगे णि० पृथक् करेंगे णि० निर्भर्त्सना करेंगे बं० बांधेंगे णि० रुंधन करेंगे अ० कितनेक का छ० चर्मछेद क० करेंगे अ० कितनेक को प० मारेंगे अ० कितनेक को उ० पीडा करेंगे अ० कितनेक के व० वस्त्र प० पात्र कं० कंबल पा० रजोहरण अ० छेदेंगे वि० विशेष छेदेंगे भि० भेदेंगे अ० कितनेक के भ० भक्तपान वो० नष्ट करेंगे अ० कितनेक का णि० नगर रहित क० करेंगे

सूत्र विमलवाहणे राया अण्णयाकयायि समणेहिं णिग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवज्जेहिति, अत्थेगइए आउसिहिति, अत्थेगइए उवहसिहिति, अत्थेगइए णिच्छोडेहिति, अत्थेगइए णिब्भच्छेहिति, अत्थेगइए बंधेहिति, अत्थेगइए णिरुंभेहिति, अत्थेगइयाणं छविच्छेदं करेहिति अत्थेगइए पमारेहिति अत्थेगइयाणं उद्दवेहिति अत्थेगइयाणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंच्छणं आच्छिंदिहिति, विच्छिंदिहिति, भिंदिहिति, अत्थेगइयाणं भत्तपाणं वोच्छिंदिहिति, अत्थेगइयाणं णिण्णगरे करेहिति, अत्थेगइए णिव्वि-

भावार्थ कितनेक साधुओं को आक्रोश करेगा, कितनेक साधुओं का हास्य करेगा, कितनेक साधुओं की शिष्य शाखा का नाश करेगा, कितनेक साधुओं को दुर्वचन से निर्भर्त्सना करेगा, कितनेक साधुओं को बंधन से बांधेगा, कितनेक साधुओं का रुंधन करेगा, कितनेक को चर्म छेद करेगा, कितनेक को मार मारेगा, कितनेक को उपद्रव करेगा, कितनेक के वस्त्र, पात्र, कंबल, रजोहरण फाडेगा तोडेगा, कितनेक साधुओं को

सूत्र

॥ १ ॥ पुढवीकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए पुढवीए अंतरा समोहए, जे भविए ईसाणेकप्पे पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए ॥ एवं चेव जाव ईसिप्पभाराए उववाएयव्वो ॥ २ ॥ पुढवीकाइएणं भंते ! सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पुढवीए अंतरा समोहए, समोहइत्ता जेभविए सोहम्मे जाव ईसिप्पभाराए ॥ एवं एएणं कमेणं जाव तमाए । अहे सत्तमाए पुढवीए अंतरा समोहए समोहइत्ता जे भविए सोहम्मं कप्पे जाव ईसिप्पब्भाराए उववाएयव्वो ॥ ३ ॥ पुढवीकाइएणं भंते !

भावार्थ

॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा व शर्कर प्रभा की बीच में पृथ्वीकाया मारणांतिक समुद्घात से काल करके ईशान देवलोक में पृथ्वी कायापने उत्पन्न होवे वगैरह पूर्वोक्त जैसे यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वीकाया में उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ अहो भगवन ! शर्कर प्रभा व वालु प्रभा की बीच में पृथ्वी काया मारणांतिक समुद्घात करके सौधर्म देवलोक में पृथ्वीकायापने उत्पन्न होने योग्य होवे वगैरह इस क्रम से छठी तमा व सातवी तमतमा पृथ्वी की बीच में पृथ्वीकाया मारणांतिक समुद्घात करके सौधर्म देवलोक में पृथ्वीकायापने उत्पन्न होवे वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे कहना यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी में उत्पन्न होवे ॥ ३ ॥ सौधर्म ईशान व सनत्कुमार माहेन्द्र की बीच में

सूत्र

प्पभाए पुढवीए घणोदधिघणोदधिवलएसु आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, सेसं तंचेव एवं एएहिं चेव अंतरे समोहत्ताओ जाव अहे सत्तमाए पुढवीए घणोदधिघणोदधि वलएसु आउकाइयत्ताए उववाएयव्वो, एवं जाव अणुत्तरविमाणाणं ईसिप्पभाराए पुढवीए अंतरा समोहए जाव अहे सत्तमाए घणोदधि घणोदधिवलएसु उववाएयव्वो ॥ ६ ॥ वाउकाइयाएणं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए पुढवीए अंतरा समोहए समोहइत्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउकाइयत्ताए उववज्जित्तए एवं जहा सत्तरसमए वाउकाइयउद्देसएसु तहा इहवि, णवरं अंतरेसु समोहणा वेयव्वो

भावार्थ

शेष पूर्वोक्त जैसे यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी के घनोदधि के घनोदधि वलय में अप्कायापने उत्पन्न होने तक कहना. और इसी तरह सनत्कुमार माहेन्द्र व ब्रह्मदेवलोक यावत् अनुत्तरविमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी के बीच का अप्काय का सातवी पृथ्वी के घनोदधि के घनोदधि वलय में अप्कायापने उत्पन्न होने का कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा व शर्करप्रभा के बीच का वायुकाया मारणांतिक समुद्घात से काल कर के सौधर्म देवलोक में वायुकाय पने उत्पन्न होने योग्य होवे वह क्या वहां उत्पन्न होकर आहार करे अथवा आहार करके उत्पन्न होवे? अहो गौतम! इस का जैसे सत्तरहवे शतक में

शब्दार्थ

भ० जैसे अ० मैंने ॥ १९४ ॥ त० तब तं० वे स० श्रमण णि० निर्ग्रंथ द० दृढ प्रतिज्ञ के० केवली की अं० पास से ए० यह अ० बात सो० सुनकर णि० अवधारकर भी० डरे त० त्रासपाये तं० भयित हुवे सं० संसारभय से उ० उद्विग्न द० दृढप्रतिज्ञ के० केवली को वं० वंदना करेंगे ण० नमस्कार करेंगे त० उस ठा० स्थान की आ० आलोचना करेंगे नि० निंदा करेंगे जा० यावत् प० अंगीकार करेंगे ॥ १९५ ॥ त० तब द० दृढ प्रतिज्ञ के० केवली ब० बहुत वा० वर्ष के० केवली प० पर्याय पा० पालकर अ० अपना आ० आयुष्य शेष जा० जानकर भ० भक्त प्रत्याख्यान करेंगे ए० ऐसे ज० जैसे उ०

सूत्र

जहाणं अहं ॥ १९४ ॥ तएणं ते समणा णिग्गंथा दढपइण्णस्स केवलिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चाणिसम्म भीया तत्था तसिया संसारभय उव्विग्गा दढ पइण्ण केवलिं वंदिहिंति णमंसिहिंति तस्स ठाणस्स आलोइएहिंति निंदिहिंति जाव पडिवज्जेहिंति ॥ १९५ ॥ तएणं दढपइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलपरियागं पाउणिहिंति २ त्ता अप्पाणं आउसेसं जाणित्ता भत्तपच्चक्खाहिंति, एवं जहा उववाइए जाव सव्वदुक्खाणमंतं

भावार्थ

गतिरूप संसार में परिभ्रमण किया वैसा परिभ्रमण मत करो ॥ १९४ ॥ उस समय में दृढ प्रतिज्ञ केवली की पास से ऐसा सुनकर अवधार कर श्रमण निर्ग्रंथ डरे, त्रास पाये, संसार से उद्विग्न बने और दृढ प्रतिज्ञ केवली को वंदना नमस्कार कर उस की आलोचना, निंदा यावत् प्रतिक्रमण करने लगे ॥ १९५ ॥ फीर दृढप्रतिज्ञ कुमार बहुत वर्ष पर्यंत केवली पर्याय पाल कर और अपना आयुष्य शेष जानकर भक्त

सूत्र

ओरालिय सरीरस्स जाव कम्मग सरीरस्स आहारसण्णाए जाव परिग्गहसण्णाए ॥ कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए ॥ सम्मदिट्ठीए मिच्छादिट्ठीए सम्मामिच्छादिट्ठीए ॥ आभिणिबोहियणाणस्स जाव केवलणाणस्स, मइअण्णाणस्स सुअअण्णाणस्स विभंग णाणस्स, एवं ॥ आभिणिबोहियणाणविसयस्सणं भंते! कइविहे बंधे पण्णत्ते जाव केवल णाणविसयस्सवि, मति अण्णाणविसयस्स, सुअअण्णाण विसयस्स, विभंगणाणविसयस्स एएसिं पदाणं तिविहे बंधे पण्णत्ते, सव्वेते चउवीसदंडगा भाणियव्वा, णवरं जाणि यव्वं जस्स जं अत्थि जाव वेमाणिए ॥ विभंगणाणविसयस्स कइविहे बंधे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे पण्णत्ते तंजहा-जीवप्पओग बंधे अणंतर बंधे परंपर बंधे ॥ मेवं

भावार्थ

शरीर आहार संज्ञा यावत परिग्रह संज्ञा का जानना. कृष्णलेश्या यावत् शुक्ल लेश्या, समदृष्टि मिथ्यादृष्टि व सम मिथ्यादृष्टि आभिनिबोधिक ज्ञान यावत् केवल ज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुत अज्ञान व विभंग ज्ञान का कहना. ऐसे ही आभिनिबोधिक ज्ञान के विषय के कितने बंध कहे हैं यावत् केवल ज्ञान विषय के कितने बंध कहे हैं? तीन भेद कहे हैं. मतिअज्ञान विषय, श्रुत अज्ञान विषय और विभंग ज्ञान विषय के भी तीन भेद कहे हैं. वे पद चौबीस दंडक पर लगाना यावत् अहो भगवन्! विभंगज्ञान विषय के कितने बंध कहे हैं?

मूल

सेसं तंचेव ॥ ३ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं अणंतरोववण्णगा परंपरोववण्णगा, अणंतर परंपर अणुववण्णगा? गोयमा ! णेरइयाणं अणंतरोववण्णगावि परंपरोववण्णगावि अनंतर परंपर अणुववण्णगावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव अणंतर परंपर अणुववण्णगावि ? गोयमा ! जेण णेरइया पढमसमओववण्णगा तेणं नेरइया अणंतरोववण्णगा, जेण णेरइया अपढम समओववण्णगा तेणं णेरइया परंपरोववण्णगा जेणं णेरइया विग्गहगइसमावण्णगा तेणं णेरइया अणंतर परंपर अणुववण्णगा, से तेणट्ठेणं जाव अणुववण्णगावि एवं णिरंतरं जाव वेमाणिया ॥ ४ ॥ अणंतरोववण्णगाणं भंते ! णेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खमणुस्स देवाउयं पकरेंति ?

भावार्थ

विग्रहगति करते चार भाग लगते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी अनंतर उत्पन्न हैं, परंपरा उत्पन्न हैं, अथवा अनंतर परंपरा दोनों अनुत्पन्न हैं ? अहो गौतम ! नारकी अनंतर उत्पन्न, परंपरा उत्पन्न व अनंतर परंपरा दोनों उत्पन्न नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि नारकी अनंतर उत्पन्न है यावत् अनंतर परंपरा उत्पन्न नहीं है ? अहो गौतम ! जो नारकी प्रथम समय में उत्पन्न होते हैं वे अनंतर उत्पन्न हैं, दूसरे समय में उत्पन्न होते हैं वे परंपरा उत्पन्न हैं और विग्रह गति में वर्तते हैं वे अनंतर परंपरा अनुत्पन्न हैं. ऐसे ही वैमानिक तक चौवीस दंडक का जानना ॥ ४ ॥ अहो

सूत्र

निवा ओसप्पिणीतिवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ३ ॥ एएसुणं भंते पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु अत्थि उस्सप्पिणीतिवा ओसप्पिणीतिवा ? हंता अत्थि ॥ ४ ॥ एएसुणं पंचसु महाविदेहेसु णेवत्थि ओसप्पिणीतिवा उस्सप्पिणीतिवा, अवट्ठिएणं तत्थकाले पण्णत्ते? समणाउसो ! ॥५॥ एएसुणं भंते ! पंचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवेंति? णो इणट्ठे समट्ठे ॥६॥ एएसुण पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु पुरिम पच्छिमगा दुवे अरहंता भगवंतो पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवेंति, अवसेसाणं अरहंता भगवंतो चाउज्जाम धम्मं पण्णवयंति एएसुणं पंचसु महाविदेहेसु अरहंता

भावार्थ

भूमि में क्या उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् वहां अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नहीं है. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच भरत एरवत में क्या अवसर्पिणी उत्सर्पिणी है ? हां है. ॥ ४ ॥ अहो आयुष्मन्त श्रमणों ! इन पांच महाविदेह क्षेत्र में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल नहीं है परंतु अवस्थित काल है. अहो भगवन ! इन पांच महाविदेह क्षेत्र में जो अरिहंत भगवंत होते हैं वे क्या प्रतिक्रमण सहित पांच महाव्रत रूप धर्म प्ररूपते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् नहीं प्ररूपते हैं. ॥ ६ ॥ अहो गौतम ! इन पांच भरत एरवत में पहिले छेले दो अरिहंत भगवंत प्रतिक्रम सहित पांच महाव्रत प्ररूपते हैं, शेष सब चार याम रूप धर्म कहते हैं ? इन पांच महाविदेह क्षेत्र में अरिहंत भगवंत चार

सूत्र

कइणं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचइंदिया पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदिए जाव फासिंदिए ॥ १० ॥ कइणं भंते ! जोए पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तंजहा-मणजोए, वयजोए, कायजोए ॥ ११ ॥ जीवेणं भंते ओरालिय सरीरं णिव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी अधिकरणं ? गोयमा ! अधिगरणी अधिगरणंपि ॥ से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अधिगरणीवि अधिगरणंपि ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्टेणं जाव अधिगरणंपि ॥ पुढवीकाइएणं भंते ! ओरालिय सरीरं णिव्वत्तेमाणे

भावार्थ

इन्द्रियों कितनी कहीं ? अहो गौतम ! इन्द्रियों पांच कहीं श्रोतेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! योग कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! योग तीन कहे हैं, मन योग, वचन योग और काया योग ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीरवाला जीव क्या अधिकरणी है, या अधिकरण है ? अहो गौतम ! अधिकरणी भी है और अधिकरण भी है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि उदारिक शरीरवाला जीव अधिकरणी है और अधिकरण भी है ? अहो गौतम ! अविरति आश्री. इसलिये ऐसा कहा गया है कि उदारिक शरीरवाला जीव अधिकरणी है और अधिकरण भी है. ऐसे ही पृथ्वीकायादि पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय,

सूत्र

जिणपरियाए तावइयाए संखेज्जाइं आगमेस्साणं चरमतित्थगरस्स तित्थे अणुसिज्जिस्सइ ॥ १२ ॥ तित्थं भंते ! तित्थे तित्थंकरे तित्थे ? गोयमा ! अरहा ताव णियमं तित्थंकरेति; तित्थं पुण चाउवण्णाइण्णे समणसंघे, तंजहा-समणा समणीओ सावगा सावियाओ ॥ १३ ॥ पवयणं भंते ! पवयण पावयणं पवयणं ? गोयमा ! अरहा ताव णियमं पावयणी पवयणं, पुण दुवालसंगे गणिपिडगे, तंजहा-आयारो जाव दिट्ठिवाओ ॥ १४ ॥ जे इमे भंते ! उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा णाया कोरव्वा एए अस्सिं धम्मे ओगाहइ, ओगाहइत्ता अट्ठविहं कम्मरयमलं पवाहिंति २ त्ता

भावार्थ

की जितनी जिन पर्याय उतना संख्यात काल पर्यंत आगामिक चरम तीर्थंकर का तीर्थ रहेगा ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! तीर्थ को तीर्थ कहना या तीर्थंकर को तीर्थ कहना ? अहो गौतम ! अरिहंत तीर्थ करनेवाले हैं. और साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका इन चारों वर्णों से आकीर्ण श्रमणसंघ तीर्थ है ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! शास्त्रों को प्रवचन कहना या शास्त्र कर्ता को प्रवचन कहना ? अहो गौतम ! अरिहंत प्रवचनी हैं, क्योंकि वे शास्त्र के उपदेष्टा हैं और द्वादशांग गणिपिडग ही प्रवचन हैं. जिन के नाम. आचारांग यावत् दृष्टिवाद ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! जो उग्रकुलवाले, भोगकुलवाले, राजा के कुलवाले, इक्ष्वाग के

सूत्र

चारणाय जंघाचारणाय ॥ १ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-विज्जाचारणाय ? विज्जाचारणाय गोयमा ! तस्सणं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तओकम्मेणं विज्जाएसु उत्तरगुणलद्धिखममाणस्स विज्जाचारणलद्धी णाम लद्धी समुप्पज्जइ, से तेणट्ठेणं जाव विज्जाचारणा, विज्जाचारणा ॥ २ ॥ विज्जाचारणस्सणं भंते ! कहं सीहागई कहं सीहेगइविसए पण्णत्ते ? गोयमा अयण्णं जंबुद्दीवेदीवे जाव किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं देवेणं महिड्ढीए जाव महेसक्खे जाव इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं

भावार्थ

में गमन करे सो विद्याचारण और २ जंघा शक्ति विशेष से जो आकाश में गमन करे सो जंघा चारण ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! विद्याचारण क्यों कहा गया है ? अहो गौतम ! अंतर रहित छठ २ का तप करने से, पूर्वगत श्रुत विशेष से उत्तरगुण सिद्ध विशुद्धादिक से विद्याचारण नामक लब्धि प्राप्त होवे इस से अहो गौतम ! विद्या चारण लब्धि कही ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! विद्याचारण की कैसी शीघ्रगति और कैसा शीघ्रगति विषय है ? अहो गौतम ! एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा इस जम्बूद्वीप को तीन लाख सोलह हजार दो सो सत्ताइस योजन से कुच्छ अधिक परिधि है, उसे कोई महा ऋद्धि वन्त यावत् महा ऐश्वर्यवन्त देवता तीन चपटी बजाने जितनी देर में तीन वक्त प्रदक्षिणा देकर शीघ्र आजाता है.

शब्दार्थ श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोला जं० जो भ० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा तु० आप को ए० ऐसा व० बोला स० सत्य ए० यह अ० अर्थ हं० हां स० सत्य ए० यह अ० अर्थ ॥ ६ ॥ स० शक्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा किं० क्या स० सम्यग्वादी मि० मिथ्यावादी गो० गौतम स० सम्यग्वादी णो० नहीं मि० मिथ्यावादी ॥ ७ ॥ स० शक्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा किं० क्या स० सत्य भा० भाषा भा० बोलते हैं मो० मृषा

सूत्र भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता एवं वयासी-जंणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया तुब्भे एवं वदाति सच्चेणं एसमट्ठे ? हंता सच्चेणं ॥ ६ ॥ सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया किं सम्मावादी मिच्छावादी? गोयमा ! सम्मावादी णो मिच्छावादी ॥७॥ सक्केणं भंते! देविंदे देवराया किं सच्चं भासं भासइ, मोसं भासं भासइ, सच्चा मोसं

भावार्थ उसी दिशि में चले गये ॥ ५ ॥ भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र देवराजाने आपको जो बात कही, वह क्या सत्य है ? हां गौतम ! वह बात सत्य है ॥६॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र क्या सम्यक्त्वादी है या मिथ्यावादी है ? अहो गौतम ! वह सम्यक्त्वादी है परंतु मिथ्यावादी नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र देवराजा क्या सत्य भाषा बोलता है, मिथ्या भाषा बोलता है, सत्यमृषा भाषा बोलता है या असत्य मृषा भाषा बोलता है ? अहो

सूत्र

पडिणियत्तइत्ता इहमागच्छइ; मागच्छइत्ता इहं चेइयाइं वंदइ विज्जाचारणस्सणं गोयमा ! तिरियं एवइए गतिविसए पण्णत्ते ॥ ४ ॥ विज्जाचारणस्सणं भंते ! उड्ढं केवइए गतिविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! सेणं इओ एगेण उप्पाएणं णंदणवणे समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ,वंदइत्ता बितिएणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेइ २ त्ता, तहिं चेइयाइ वंदइ, वंदइत्ता तओ पडिणियत्तइ २ त्ता इहमागच्छइ २ त्ता इहं चेइयाइं वंदइ, विज्जाचारणस्सणं गोयमा ! उड्ढं एवइयं गइविसए प० ॥ ५ ॥ सेण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ णत्थितस्स आरा-

भावार्थ

विश्राम करे वहां पर भी उक्त रीति से चैत्यवंदन करके वहां से पीछा यहां पर अपने स्थान आवे, और यहां पर भी उक्त रीति से चैत्य वंदन करे. अहो गौतम ! विद्याचारण का तीर्च्छा इतना विषय कहा है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! विद्याचारणका ऊर्ध्व कितना विषय कहा है ? अहो गौतम ! विद्याचारण एक उत्पात में यहां से उडकर मेरु पर्वत के नंदनवन में विश्राम करे वहां भी ज्ञानी के गुणका गुणानुवाद करे. वहां से दूसरे उत्पात में पंडगवन में समवसरण करे, वहां पर भी ज्ञानी के गुणों का गुणानुवाद करे और वहां से पीछा अपने स्थान आवे. अहो गौतम ! विद्याचारण का ऊर्ध्व गमन का इतना विषय कहा है ॥ ५ ॥ वह उस स्थान की आलोचना प्रतिक्रमण किये विना काल कर जावे तो

सूत्र

जाव उदएणं ॥ २ ॥ असुर कुमाराणं भंते ! कइविहे उम्मादे पण्णत्ते ? एवं जहेव णेरइयाणं णवरं देवेवासे महिड्डियतराए चेव असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, सेणं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्सवा सेसं तंचेव से तेणट्ठेणं जाव उदएणं ॥ एवं जाव थणिय कुमाराणं, पुढवि काइयाणं, जाव मणुस्साणं एएसिं जहा णेरइयाणं ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥ ३ ॥ अत्थिणं भंते ! पज्जण्णे कालवासी वुट्ठिकायं पकरेति ?

भावार्थ

अहो गौतम ! इन कारनों से नारकी दोनों उन्माद को प्राप्त होते हैं. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार को कितने उन्माद कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसे नारकी का कहा वैसे ही असुर कुमार का जानना. इस में महर्द्धिक देव अशुभ पुद्गल डाले इस से अशुभ पुद्गल प्रक्षेप कराया हुवा यक्षावेश से उन्माद और दूसरा मोहनीय कर्म के उदय से होता. है. ऐसे ही स्थनित कुमार तक कहना. पृथ्वीकाया यावत् मनुष्य का नारकी जैसे कहना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का असुर कुमार जैसे कहना ॥ ३ ॥ मोहउदय से देव वृष्टि भी करते हैं. अहो भगवन् ! क्या मेघ वर्षा काल में वर्षा करता है अथवा इन्द्र वर्षा काल की तरह वृष्टि करता है ? हां गौतम ! वर्षा काल में वर्षा होती है और इन्द्र भी वर्षा करता है. अहो भगवन् ! जब शक्र देवेन्द्र वृष्टि करने का कामी होता है तब कैसे करता है ?

सूत्र

सेणं इओ एगेणं उप्पाएणं रुयगवरेदीवे समोसरणं करेइ, करेइत्ता चेइयाइं वंदइ, वंदइत्ता तओ पडिणियत्तमाणे बितिएणं उप्पाएणं णंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ २ त्ता, तहिं चेइयाइं वंदइ २ त्ता इहं हव्वमागच्छइ, इहं चेइयाइं वंदइ ॥ जंघाचारणस्सणं गोयमा ! तिरियं एवइए गइविसए पण्णत्ते ॥१॥ जंघाचारणस्सणं भंते ! उड्ढं केवइए गतिविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! सेणं इओ एगेणं पंडगवणे समोसरणं करेइ २ त्ता, तहिं चेइयाइं वंदइ २ त्ता तओ पडिणियत्तमाणे बितिएणं उप्पाएणं णंदणवणे समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ २ त्ता इह मागच्छइ २ त्ता

भावार्थ

ज्ञानी के ज्ञान का गुणानुवाद करे, वहां से पीछे आते दूसरे उत्पात में आठवा नंदीश्वर वर द्वीप में आवे वहां समवसरण कर के ज्ञानी के ज्ञान का गुणानुवाद करे और वहां से यहां आवे यहां आकर फीर ज्ञानी के ज्ञान का गुणानुवाद करे. अहो गौतम ! जंघाचारण का यह तीर्च्छा विषय कहा है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जंघाचारण का ऊर्ध्व कितना गति विषय कहा ? अहो गौतम ! एक उत्पात से यहां से उडकर पंडगवन में विश्राम करे, वहां ज्ञानी के ज्ञान का गुणानुवाद करे, वहां से पीछा आते दूसरे उत्पात में नंदनवन में आवे वहां ज्ञानी के ज्ञान का गुणानुवाद कर के यहां आवे और यहां ज्ञानी के ज्ञान का

शब्दार्थ

ण० नहीं है अ० अचैतन्यकृत क० कर्म आ० कष्टकारी व० वध के लिये हो० होते हैं सं० संकल्प व० वध के लिये हो० होते हैं म० मरणांत से० अथ व० वध के लिये हो० होते हैं त० तैसे तं० वे पो० पुद्गल प० परिणमते हैं ण० नहीं है अ० अचैतन्यकृत क० कर्म तं० इसलिये जा० यावत् क० कर्म क० करते हैं ए० ऐसे णे० नारकी को ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक को ॥ १६ ॥ २ ॥ *

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितनी भं० भगवन् क० कर्म प्रकृतियों प० प्ररूपी

सूत्र

णत्थि अचेयकडा कम्मा ॥ समणाउसो ! आयंके से वहाए होंति, संकप्पे सेवहाए होंति, मरणंते से वहाए होंति, तहा तहाणं ते पोग्गला परिणमंति, णत्थि अचेयकडा कम्मा ॥ से तेणट्ठेणं जाव कम्मा कज्जंति ॥ एवं णेरइयाणवि, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ सोलसमस्स वितिओ उद्देसो सम्मत्तो॥ १६॥२॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-कइणं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ

भावार्थ

जीव को मरणांतिकादि कारण होवे उस प्रकार पुद्गल परिणमे इसलिये अचैतन्य कृत कर्म नहीं. परंतु चैतन्य कृत कर्म करता है. इसलिये यावत् कर्म करे. यह कथन नरक से लगाकर वैमानिक पर्यंत चौबीस दंडक का जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह सोलहवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ १६ ॥ २ ॥

दूसरे उद्देशे में कर्म का कथन किया. आगे भी उस का ही विशेष वर्णन करते हैं. राजगृह नगर के

सूत्र

वेमाणिया ॥ ५ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं आइड्ढीए उव्वट्टंति, परिड्ढीए उव्वट्टंति ? गोयमा ! आइड्ढीए उव्वट्टंति, णो परिड्ढीए उव्वट्टंति, एवं जाव वेमाणिया, णवरं जोइसिया वेमाणिया चयंतीति अभिलावो ॥६॥ णेरइयाणं भंते ! किं आयकम्मणा उववज्जंति परकम्मणा उववज्जंति ? गोयमा ! आयकम्मणा उववज्जंति, णो परकम्मणा उववज्जंति; एवं जाव वेमाणिया ॥ एवं उव्वट्टणा दंडओ ॥ ७ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं आयप्पओगेणं उववज्जंति परप्पओगेणं उववज्जंति ? गोयमा ! आयप्पओगेणं

भावार्थ

वैमानिक पर्यंत कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी क्या आत्मऋद्धि ( आत्म बल ) से उद्वर्तते हैं या परऋद्धि से उद्वर्तते हैं ? अहो गौतम ! नारकी आत्मऋद्धि से उद्वर्तते हैं परंतु अन्यकी ऋद्धि से नहीं उद्वर्तते हैं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत चौवीस दंडक का जानना. विशेष में ज्योतिषी वैमानिक को चवना कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी स्वतः के कर्म से उत्पन्न होते हैं अन्य के कर्म से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नारकी स्वतः के कर्म से उत्पन्न होते हैं परंतु अन्य के कर्म से नहीं उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. ऐसे ही उद्वर्तने का भी दंडक कहना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी स्वतः के प्रयोग से उत्पन्न होते या पर प्रयोग से उत्पन्न होते ? अहो गौतम ! नारकी स्वतः

सूत्र अव्वत्तव्वग संचिया॥से तेणट्ठेणं गोयम ! जाव अव्वत्तव्वग संचियात्ति॥ एवं जाव थणिय कुमारा ॥ पुढवीकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुढवीकाइया णो कतिसंचिया अकति संचिया णो अव्वत्तव्वग संचिया ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जाव णो अव्वत्तव्वग संचिया ? गोयमा ! पुढवीकाइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति, से तेणट्ठेणं जाव णो अव्वत्तव्वग संचिया ॥ एवं जाव वणस्सइकाइया ॥ बेइंदिया जाव वेमाणिया जहा णेरइया ॥ सिद्धाणं पुच्छा ? गोयमा ! सिद्धाकति संचिया णो अकति संचिया अव्वत्तव्वग संचियात्ति ॥ से केणट्ठेणं भंते ! जाव अव्वत्तव्वग संचियात्ति ?

भावार्थ संचित नहीं है परंतु अकति संचित है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कति संचित नहीं है अकति संचित है और अवक्तव्य संचित नहीं है. अहो गौतम ! पृथ्वीकाया असंख्यात प्रवेश से प्रवेश करते हैं इस से अकति संचित है परंतु कतिसंचित व अवक्तव्य संचित नहीं है. ऐसे ही वनस्पति काया पर्यंत कहना. बेइन्द्रिय से यावत् वैमानिक पर्यन्त नारकी जैसे कहना. अहो भगवन्! क्या सिद्ध कति संचित है अकति संचित है कि अवक्तव्य संचित है ? अहो गौतम! सिद्ध कति संचित हैं परंतु अकति संचित नहीं है और अवक्तव्य संचित है. अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहागया यावत् सिद्ध अवक्तव्य संचित

शब्दार्थ

म० महावीर अ० अन्यदा क० कदापि रा० राजगृह ण० नगर के गु० गुणशील चे० उद्यान से प० नीकलकर ब० बाहिर ज० जनपद वि० विहार वि० विचरने लगे ॥ ३ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में उ० उल्लुकातीर ण० नगर हो० था त० उस उ० उल्लुकातीर ण० नगर की ब० बाहिर उ० ईशान कोन में ए० यहां ए० एक जम्बू चे० उद्यान ॥ ४ ॥ अ० अनगार भा० भावितात्मा छ० छठ के

सूत्र

भगवं महावीरे अण्णयाकयावि रायगिहाओ णयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमइत्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ ३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयातीरे णाम णयरे होत्था, वण्णओ ॥ तस्सणं उल्लुयातीरस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थणं एगजंबुए णाम चेइए होत्था, वण्णओ ॥४॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयावि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव एगजंबुए समोसढे जाव परिसा पडिगया ॥४॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं

भावार्थ

स्वामी विचरते थे. ॥ २ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर राजगृह नगर के गुणशील न में से नीकलकर बाहिर विचरने लगे ॥३॥ उस काल उस समय में उल्लुका तीर नाम का नगर था वर्णनीय था. उस उल्लुका तीर नगर की बाहिर ईशान कोन में एकजंबुक नाम का उद्यान था. ॥ ॥ ४ ॥ उस समय में श्रमण भगवंत महावीर एकदा पूर्वानुपूर्वि चलते ग्रामानुग्राम विचरते पाद

मूल

ज्जियावि ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवीकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुढवी काइया णो छक्क समज्जिया, णो णोछक्कसमज्जिया, णो छक्केणय णो छक्केणय समज्जिया २, छक्केहिय समज्जियावि. छक्केहिय णो छक्केणय समज्जियावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! जाव समज्जियावि ? गोयमा ! जेणं पुढवीकाइया णेगेहिं छक्केहिं पवेसणगं पविसंति तेणं पुढवीकाइया छक्केहिं समज्जिया, जेणं पुढवीकाइया णेगेहिं छक्केहिं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं पचएण पवेसणएणं पविसंति ॥ तेणं पुढवीकाइया छक्केहिय णो छक्केणय समज्जिया; से तेणट्ठेणं जाव समज्जियावि

भावार्थ

कुमार पर्यंत कहना पृथ्वी काया की पृच्छा ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया छक्क समार्जित नहीं है, नो छक्क समार्जित भी नहीं है, छक्क नो छक्क व भी समार्जित भी नहीं है परंतु बहुत छक्क से और बहुत छक्क नो छक्क से समार्जित हैं. अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया यावत् समार्जित हैं? अहो गौतम! जो पृथ्वी काया अनेक छक्क से प्रवेश करते हैं व बहुत छक्क से समार्जित हैं और जो पृथ्वी काया बहुत छक्क से प्रवेश करते हैं और उपर जघन्य एक दो तीन यावत् पांच से प्रवेश करते हैं व बहुत छक्क व नो छक्क से समार्जित हैं. ऐसेही वनस्पति काया पर्यंत कहना. बेइन्द्रिय से वैमानिक पर्यंत और सिद्ध वगैरह सब नारकी

सूत्र

छक्केहिय समज्जियाणं कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढवीकाइया छक्केहिय समज्जिया, छक्केहिय णो छक्केणय समज्जिया संखेज्जगुणा ॥ एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । बेइंदियाणं जाव वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥ एएसिणं भंते ! सिद्धाणं छक्कसमज्जियाणं णो छक्कसमज्जियाणं जाव छक्केहिय णो छक्केणय समज्जियाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोव सिद्धा छक्केहिय णो छक्केणय समज्जिया, छक्केहिय समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केणय णो छक्केणय समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा, णो छक्का समज्जिया संखेज्जगुणा ॥ ११ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं बारस समज्जिया णो बारस समज्जिया

भावार्थ

विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे पृथ्वी काया बहुत छक्क समार्जित इस से बहुत छक्क नो छक्क समार्जित संख्यात गुना, ऐसे ही वनस्पतिकाया तक कहना. बेइन्द्रिय से वैमानिक पर्यंत नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् ! इन छक्क समार्जित, नो छक्क समार्जित यावत् बहुत छक्क समार्जित में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे सिद्ध बहुत छक्क नो छक्क समार्जित इस से बहुत छक्क समार्जित संख्यात गुने इस से छक्क नो छक्क संख्यातगुने इस से छक्क समार्जित संख्यातगुने इस से नो छक्क समार्जित संख्यातगुने ॥११॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी? बारह

सूत्र

साए पच्चोवयमाणस्स उग्गहे वट्टंति तेविणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं पुट्ठा ॥ ९ ॥ पुरिसेणं भंते ! रुक्खस्स कंदं पचा० ? गोयमा ! जावं चणं से पुरिसे जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे जेसिंपियणं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले णिव्वत्तिए जाव बीए णिव्वत्तिए ते विण जीवा पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥ १० ॥ अहेणं भंते ! से कंदे जावं चणं से कंदे अप्पणो जाव चउहिं पुट्ठे, जेसिंपियणं जीवाण सरीरेहिंतो मूले णिव्वत्तिए खंधे णिव्वत्तिए जाव चउहि पुट्ठा, जेसिंपियणं जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे णिव्वत्तिए, तेविणं जीवा जाव पंचहिं पुट्ठे ; जेविए से जीवा अहे वीससाए पच्चोवय जाव

भावार्थ

रहे हैं वे कायिकादि पांच क्रियाओं से स्पर्शे हुवे हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! वृक्ष के कंद चलाते व नीचे गिराते कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! जब लग वह पुरुष कंद चलाता है यावत् पांच क्रियाओं. जिन जीवों के शरीर से मूल यावत् बीज बना हुवा है उन जीवों को भी पांच क्रियाओं लगे. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! वह कंद अपनी गुरुता से नीचे आवे तो कितनी क्रियाओं लगे ? वगैरह पूर्वोक्त जैसे यावत् चार क्रियाओं लगे जिन जीवों के शरीर से कंद बना हुवा है उन जीवों को भी पांच क्रियाओं लगती हैं. और स्वभाव से नीचे आते यावत् पांच क्रियाओं लगे. जैसे कंद का कहा वैसे ही बीज का

सूत्र

णेरइया बारसएणं णो बारसएणं समज्जिया ॥ जेणं णेरइया णेगेहिं बारसएहिं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया बारसएहिं समज्जिया ॥ जेणं णेरइया णेगेहिं बारसएहिं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएण पविसंति तेणं णेरइया बारसएहिय णोबारसएणय समज्जिया ॥ सेतेणट्ठेणं जाव समज्जियावि ॥ एवं जाव थणियकुमारा॥ पुढवीकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुढवीकाइया णो बारसएसमज्जिया णो णोबारसएणय समज्जिया, णो बारसएय णो बारसएणय समज्जिया, बारसएहिं समज्जिया बारसएहिय णो बारसएणय समज्जिया ॥ से केणट्ठेणं भंते ! जाव सम-

भावार्थ

बारह प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे बहुत बारह से समार्जित हैं और जो नारकी बहुत बारह और अन्य जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट अग्यारह प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे बहुत बारह व नोबारह समार्जित हैं. इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् समार्जित हैं. ऐसे ही स्तनित कुमारपर्यंत जानना. पृथ्वीकाया की पृच्छा ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया बारह समार्जित, नो बारह समार्जित और बारह समार्जित नो बारह समार्जित नहीं है परंतु बहुत बारह समार्जित व बहुत बारह समार्जित व नो बारह समार्जित है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् नो बारह समार्जित है ? अहो गौतम जो पृथ्वी काया

सूत्र

भुंजमाणे विहरइ ॥ जाहेणं ईसाणे देविंदे देवराया दिव्वाइं जहा सक्के तहा ईसाणेवि णिरवसेसं ॥ ४ ॥ एवं सणंकुमारेवि, णवरं पासाय वडिंसओ छजोअण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं तिण्णि जोअणसयाइं विक्खंभेणं मणिपेढिया तहेव अट्ठ जोअणिए, तीसेणं मणिपेढियाए उवरिं एत्थणं महेगं सीहासणं विउव्वइ सपरिवारं भाणियव्वं. तत्थणं सणंकुमारे देविंदे देवराया बावत्तरिए सामाणिय साहस्सी-एहिं जाव चउहिं बावत्तरीहिं आयरक्खदेव साहस्सीहिय, बहूहिं सणंकुमार कप्पवा-सीहिं वेमाणिएहिं देवेहिय सद्धिं संपरिवुडे महया जाव विहरइ ॥ एवं जहा सणंकुमारे

भावार्थ

करनेवाली ऐसी दो सेना सहित अनेक प्रकार के नाट्य व गायन करते दीव्य भोग भोगवते हुवे रहते हैं. जैसे शक्रेन्द्र का कहा वैसे ही ईशानेन्द्र का जानना ॥ ४ ॥ सनत्कुमार का भी वैसे ही कहना परंतु इस में प्रासाद छ सो योजन के ऊंचे और तीन सो योजन के चौडे कहना. मणि पीठिका आठ योजन की कही. उस मणि पीठिका पर एक बडा सिंहासन की विकुर्वणा करके वहां सनत्कुमार देवेन्द्र ७२ हजार सामानिक २८८००० आत्म रक्षक और बहुत सनत्कुमारवासी देवों सहित परवरा हुवा यावत् रहता है. ऐसे ही जैसे सनत्कुमार का कहा वैसे ही प्राणत तक का कहना परंतु परिवार वगैरह जिन को जितना होवे उतना

मूल

चुलसीतिहिय णो चुलसीतिएय समज्जिया ? गोयमा ! णेरइया चुलसीतिसमज्जियावि जाव चुलसीतिहिय णो चुलसीतिहिगसमज्जियावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ जाव समज्जियावि ? गोयमा ! जेणं णेरइया चुलसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया चुलसीतिसमज्जिया, जेणं णेरइया जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीति पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया णो चुलसीति समज्जिया, जेणं णेरइया चुलसीतिएणं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया चुलसीतिएणय णो चुलसीतिएय सम-

भावार्थ

भगवन् ! क्या नारकी १ चौरासी से समार्जित हैं. २ नो चौरासी से समार्जित हैं, ३ चौरासी नो चौरासी से समार्जित हैं ४ बहुत चौरासी से समार्जित हैं या ५ बहुत चौरासी बहुत नो चौरासी से समार्जित हैं ? अहो गौतम ! नारकी में पांचों भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया यावत् नो चौरासी समार्जित हैं ? अहो गौतम ! जो नारकी चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं. वे नारकी चौरासी समार्जित हैं जो नारकी जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट त्रियासी तक प्रवेश करते हैं वे नारकी नो चौरासी समार्जित हैं, जो नारकी चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं और उपर जघन्य एक

सरीरणिव्वत्तिएमाणा कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पंच किरियावि, ॥ पुढवीकाइयावि ॥ एवं जाव मणुस्सा ॥ एवं वेउव्विय सरीरेणवि दोदंडगा, णवरं जस्स अत्थि वेउव्वियं एवं जाव कम्मग सरीरं ॥ एवं सोइंदियं जाव फासिंदियं ॥ एवं मणजोगं वइजोगं कायजोगं, जस्स जं अत्थि तं भाणियव्वं, एते एगत्तपुहत्तेणं छव्वीस दंडगा ॥ १६ ॥ कइविहेण भंते ! भावे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे भावे पण्णत्ते, तंजहा-उदइए उवसमिए जाव सण्णिवाइए ॥ सेकिंतं उदइए भावे ? उदइए भावे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-ओदएय उदयणिप्फण्णेय । एवं एएणं

भावार्थ — ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीर बनाने वाले जीवों को कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! तीन चार पांच क्रियाओं लगे ऐसे ही पृथ्वी काय यावत् मनुष्य का जानना. ऐसे ही वैक्रेय शरीर के भी एक जीव व अनेक जीव आश्री दो दंडक कहे हैं. विशेषता इतनी कि जिन को जितने शरीर हैं उन को उतने कहना. ऐसे ही कार्माण शरीर तक कहना. ऐसे ही श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय का जानना. मनयोगी, वचन योगी व काया योगी का भी वैसे ही जानना. ॥१६॥ अहो भगवन् ! भाव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! भाव के छ भेद कहे हैं औदयिक भाव, औपशमिक भाव यावत् सन्निपातिक भाव. अहो

सूत्र चुलसीतिहिय णो चुलसीतिएय समज्जिया ? गोयमा ! णेरइया चुलसीतिसमज्जियावि जाव चुलसीतिहिय णो चुलसीतिहियसमज्जियावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव समज्जियावि ? गोयमा ! जेणं णेरइया चुलसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया चुलसीतिसमज्जिया, जेणं णेरइया जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीति पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया णो चुलसीति समज्जिया, जेणं णेरइया चुलसीतिएणं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया चुलसीतिएणय णो चुलसीतिएय सम-

भावार्थ भगवन् ! क्या नारकी १ चौरासी से समार्जित हैं. २ नो चौरासी से समार्जित हैं, ३ चौरासी नो चौरासी से समार्जित हैं ४ बहुत चौरासी से समार्जित हैं या ५ बहुत चौरासी बहुत नो चौरासी से समार्जित हैं ? अहो गौतम ! नारकी में पांचों भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया यावत् नो चौरासी समार्जित हैं ? अहो गौतम ! जो नारकी चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं. वे नारकी चौरासी समार्जित हैं जो नारकी जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट तियासी तक प्रवेश करते हैं वे नारकी नो चौरासी समार्जित हैं, जो नारकी चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं और उपर जघन्य एक

केणट्ठेणं भंते ! जाव समज्जिया ? गोयमा ! जेणं सिद्धा चुलसीइएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं सिद्धा चुलसीतिसमज्जिया, जेणं सिद्धा जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीतिएणय पवेसणएणं पविसंति तेणं सिद्धा णो चुलसीति समज्जिया, जेणं सिद्धा चुलसीइएणं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं सिद्धा चुलसीतिय णो चुलसीतिएय समज्जिया से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया ॥ एएसिणं भंते ! णेरइयाणं चुलसीतिसमज्जियाणं णो चुलसीतिसमज्जियाणं सव्वेसिं अप्पाबहुगं जहा छक्क समज्जियाणं जाव

समार्जित हैं, नो चोरासी समार्जित हैं, चोरासी नो चोरासी समार्जित हैं, परंतु बहुत चोरासी व बहुत चोरासी बहुत नो चोरासी समार्जित नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् समार्जित है ? अहो गौतम ! जो सिद्ध चोरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे सिद्ध चोरासी समार्जित हैं, जो सिद्ध जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट त्र्यासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे सिद्ध नोचोरासी समार्जित हैं, जो सिद्ध चोरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं और जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट त्र्यासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे सिद्ध चोरासी नो चोरासी समार्जित हैं अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् समा-

भंते ! एवं ? गोयमा ! जंणं ते अण्णउत्थिया एवं माइक्खंति जाव वत्तव्वंसिया जे ते एवं माहंसु मिच्छते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! जाव परूवेमि एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासगा बालपंडिया, जस्सणं एगपाणेवि दंडे णिक्खित्ते सेणं णो एगंतबालेत्ति वत्तव्वंसिया ॥ ४ ॥ जीवाणं भंते ! बाला पंडिया बालपंडिया ? गोयमा ! जीवा बालावि पंडियावि बालपंडियावि, णेरइयाणं पुच्छा, गोयमा ! णेरइया बाला, णो पंडिया णो बालपंडिया ॥ एवं चउरिंदियाणं, पंचिंदियतिरिक्ख पुच्छा, गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया बाला, णो पंडिया, बालपंडियावि

तरह है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थिक जो ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि श्रमण पंडित, श्रमणोपासक बाल पंडित व एक भी जीव की घात का जिसने परिहार नहीं किया वह एकांत बाल है वह मिथ्या है मैं इस कथन को ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि श्रमण पंडित, श्रमणोपासक बालपंडित, और जिसने एक प्राणिकी भी घात का भी परिहार किया है वह एकांत बाल नहीं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव बाल, पंडित व बालपंडित हैं ? अहो गौतम ! जीव बाल, पंडित व बाल पंडित हैं. नारकी की पृच्छा ! नारकी बाल हैं परंतु पंडित व बाल पंडित नहीं हैं. ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यंत कहना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा !

## ॥ एकविंशतितम शतकम् ॥

सूत्र

सालिकल अयसिवंसे, इक्खु दब्भेय अब्भतुलसीय ॥ अट्ठ ते दसवग्गा असीति पुण होंति उद्देसा ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी अह भंते ! साली वीही गोधूम जाव जवजवाणं एएसिणं भंते ! जीवा मूलत्ताए वक्कमंति तेणं भंते ! जीवा कओहिंतो

भावार्थ

बीसवे शतक में संख्यात आश्री कथन किया. वनस्पति जीवों की संख्या नहीं होने से आगे इन का प्रश्न पूछते हैं. इस शतक के अस्सी उद्देशे कहे हैं. १ शाली धान्यका २ कल ( चने ) धान्यका ३ अलसी का ४ वंशादि पर्व ५ इक्षवादि ६ दर्भ ७ एक वृक्ष में दूसरा विजातीय वृक्ष विशेष उत्पन्न होवे सो अध्यारोहक ८ तुलसी प्रमुख वनस्पति. ये आठ वर्ग कहे एक २ वर्ग के १ मूल, २ कंद, ३ स्कंध, ४ त्वचा, ५ शाखा, ६ प्रवाल, ७ पत्र ८ पुष्प ९ फल और १० बीज यों दश २ उद्देशे कहे सब मीलकर अस्सी उद्देशे हुवे ॥ १ ॥ अब पहिला उद्देशा का वर्णन करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में गौतम ऐसे बोले शाली, व्रीहि, गोधूम यावत् यव में जो जीवों मूलपने उत्पन्न होते हैं वे जीव कहां से उत्पन्न होते हैं ? क्या वे नारकी में से उत्पन्न होते हैं तिर्यंच मनुष्य व देव वगैरह जैसे पन्नवणा के छठे पद में उत्पाद कहा वैसे ही यहां पर कहना. यहां पर नारकी में से उत्पन्न होवे नहीं परंतु तिर्यंच मनुष्यमें से उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! वे जीवों एक समय में कितने उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य एक

शब्दार्थ महावीर भ० भगवन्त गो० गौतम को आ० आमंत्रणकर ए० ऐसा व० बोले चि० चिरकाल से म० संबंधीत है मे० मुझ से गो० गौतम चि० चिरकाल से सं० प्रशंसा करता है मे० मेरी गो० गौतम चि० चिरकाल से प० परिचित है मे० मुझ में गो० गौतम चि० चिरकाल में जु० सेवाकी है मे० मेरी गो० गौतम चि० चिरकाल से अ० अनुसरता है मे० मुझे गो० गौतम चि० चिरकाल में अ० अनुकरण करता है मे० मुझ गो० गौतम अ० अंतर दे० देवलोक में अ० अंतर मा० मनुष्य का भ० भव में कि० क्या प० विशेष म० मरण का० काया का भे० भेद इ० यहां से चु० चवकर दो० दोनों तु० तुल्य

सूत्र आमंतेत्ता, एवं वयासी-चिरसंसिट्ठोसि मे गोयमा ! चिरसंथुतोसि मे गोयमा ! चिरपरिचितोसि मे गोयमा ! चिरजुसिओसि मे गोयमा ! चिराणुगओसिमे गोयमा ! चिराणुवत्तीसिमे गोयमा ! अणंतरं देवलोए अणंतरं माणुस्सए भवे किं परं मरणकायस्स

भावार्थ के गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का उपदेश सुनकर परिषदा पीछी गइ. उस समय में गौतम स्वामी को केवल ज्ञान की प्राप्ति नहीं होने से खेदित हुए जानकर उन को संतुष्ट करने के लिये श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ने गौतम स्वामी को बोलाये और कहा कि अहो गौतम ! तुम्हारा मेरी साथ बहुत काल से संबंध है, तुमने बहुत काल से मेरी प्रशंसा की है, बहुत काल से देखने आदि से मेरी साथ परिचय है, बहुत काल से सेवा करते तुम मेरे विश्वास पात्र बने हुवे हो, बहुत काल से मेरी

सूत्र

जहा उप्पलुद्देसए; एवं वेदेंति वेदगाएवि; उदएवि; उदीरणाएवि ॥ ४ ॥ तेणं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा नील काउ छब्बीसं भंगा ॥ ५ ॥ दिट्ठी जाव वेइंदिया जहा उप्पलुद्देसए ॥६॥ तेणं भंते ! साली वीही गोधूम जाव जवजवग मूलगजीवे कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥ ७ ॥ तेणं भंते ! साली वीही गोधून जाव जवजवग मूलग जीवे पुढवी जीवे पुणरवि साली वीही जाव जवजवगमूलग जीवेचि केवइयं कालं सेवेज्जा, केवइयं कालं गतिरागतिं करेज्जा, एवं जहा उप्पलुद्देसए, एएणं अभिलावेणं जाव

भावार्थ

परंतु बंधक हैं. ऐसे ही ज्ञानावरणीयादि कर्म वेदते हैं, उदय में आते हैं और उदीरते भी हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे जीव कृष्ण लेश्यावाले हैं, नील लेश्यावाले हैं या कापोत लेश्यावाले वगैरह के छब्बीस भांगे जानना ॥ ५ ॥ दृष्टि बेइन्द्रिय जैसे उत्पल उद्देशा जैसे कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! शालीव्रीहि गोधूम यावत् यव में मूल में के जीवों कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! शाली व्रीहि, गेहूं यावत् जुवारी के जीव पृथ्वीकाया में उत्पन्न होकर पुनः शाली व्रीहि यावत् जुवार के मूल में जीवपने कितना काल तक सेवे अर्थात् बीच का कितना

सूत्र

णाणावरणिज्जे जाव अंतराइये वट्टमाणस्स जाव जीवाया ॥ एवं कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए, सम्मदिट्ठीए ३, एवं चक्खुदंसणे ४, आभिणिबोहियणाणे ५, मइअण्णाणे ३, आहारसण्णाए ४, एवं ओरालिय सरीरे ५, एवं मणजोए ३, सागारोवओगे २ वट्टमाणस्स अण्णे जीवे अण्णे जीवाया ॥ से कहमेयं भंते ! एवं? गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे सच्चेव जीवाया।

भावार्थ

जीवों को जीव अन्य है व जीवात्मा अन्य है इस तरह यावत् पराक्रम में रहने वाले जीवों को जीव अन्य है व जीवात्मा अन्य, नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देव में जीव अन्य व जीवात्मा अन्य, ज्ञानावरणीय यावत् अंतराय में जीव अन्य व जीवात्मा अन्य, ऐसे ही कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या, समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि व समामिथ्यादृष्टि, चक्षुदर्शनादि चार दर्शन, मतिज्ञानादि पांच ज्ञान, मति अज्ञानादि तीन अज्ञान आहारसंज्ञादि चार संज्ञा, उदारिक शरीरादि पांच शरीर मनयोगादि तीन योग और साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त में रहने वाले जीवों को जीव अन्य है, व जीवात्मा अन्य है तो अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थिकों का उपर्युक्त कथन मिथ्या है. मैं इस तरह कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि

सूत्र

सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ पढमवग्गस्स बिइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ २ ॥ एवं खंधोवि उद्देसो णेतव्वो ॥ पढम वग्गस्स तइओ ॥ १ ॥ ३ ॥ एवं तयाएवि उद्देसो णेयव्वो ॥ पढमवग्गस्स चउत्थो ॥ १ ॥ ४ ॥ सालेवि उद्देसो णेयव्वो ॥ पढम वग्गस्स पंचमो ॥ १ ॥ ५ ॥ पवालेवि उद्देसो भाणियव्वो ॥ पढम वग्गस्स छट्ठो ॥ १ ॥ ६ ॥ पत्तेवि उद्देसो भाणियव्वो पढम वग्गस्स सत्तमो ॥ १ ॥ ७ ॥ एए सत्तवि उद्देसा अपरिसेसं जहा मूले तहा णेयव्वा ॥ एवं पुप्फेवि उद्देसओ णवरं देवो उववज्जइ, जहा उप्पलुद्देसे, चत्तारिलेस्साओ, असीइभंगा, ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असं-

भावार्थ

यह प्रथम वर्ग का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ १ ॥ २ ॥ ऐसे कंद में भी कहना यह प्रथम वर्ग का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ १ ॥ ३ ॥ ऐसे ही त्वचा का उद्देशा विशेषता रहित कहना ॥ १ ॥ ४ ॥ ऐसे ही शाखा का भी उद्देशा विशेषता रहित कहना ॥ १ ॥ ५ ॥ ऐसे ही कोंपलों का विशेषता रहित कहना ॥ १ ॥ ६ ॥ ऐसे ही पत्र का भी कहना ॥ १ ॥ ७ ॥ ऐसे ही पुष्प का उद्देशा कहना परंतु विशेषता इतनी कि पुष्प में देवताओं आकर भी उत्पन्न होते हैं इसलिये लेश्या चार पाती हैं, जिन से एक वचन व बहुवचन ऐसे लेश्या के ८० भांगे होते हैं, अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट

सूत्र

हिंतो उववज्जंति ॥ एवं मूलादीया दस उद्देसगा भाणियव्वा जहेव सालीणं णिरव सेसं तहेव ॥ बितिओ वग्गो सम्मत्तो ॥ २ ॥ एक्कवीसए सयस्सय बितिओ वग्गो ॥ २१ ॥ २ ॥ • •

अह भंते ! अयसि-कुसुंभ-कोद्दव-कंगु-रालग-वराग-कोद्दु-सासण - सरिसव - मूलग बीयाणं एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, तेणं भंते ! जीवा कओहिंतो उवव-ज्जंति एवं एत्थवि मूलादीया दस उद्देसा जहेव सालीणं णिरवसेसं तहेव भाणि-यव्वं ॥ तइओ वग्गो सम्मत्तो ॥ २१ ॥ ३ ॥ •

अह भंते ! वंस-वेणु-कणग-कक्कावंस-चारुवंस-दंडा-कुडा - विमा-चंडा-वेलुया-कल्लाणीणं एए

भावार्थ

निरवशेष कहना. यह दूसरा वर्ग समाप्त हुवा. यह इक्कीसवा शतक का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा॥२१॥२॥

अहो भगवन् ! अलसी, कसुंबे, कोद्रव, कांगणी, राल, वराग, कोठी, सासन, और सरिसव व मूलबीज इन में जो जीव मूलपने उत्पन्न होते हैं वे जीवों कहां से उत्पन्न होते हैं ? ऐसे ही यहां पर मूलादि दश उद्देशे जैसे शाली का कहे वैसे ही कहना. यह तीसरा वर्ग समाप्त हुवा. यह इक्कीसवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २१ ॥ ३ ॥ • •

अहो भगवन् ! बांस, वेणु, कनग, दंण्ड, कण्ड, वेलुक और कल्याणी इन में जो जीव मूलादि दश

सूत्र

तंजहा-कालत्तेवा जाव सुक्किलत्तेवा, सुब्भिगंधत्तेवा, दुब्भिगंधत्तेवा, तित्तत्तेवा जाव महुरत्तेवा, कक्खडत्तेवा जाव लुक्खत्तेवा से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव चिट्ठित्तए ॥७॥ सच्चेवणं भंते! से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता पभू रूविं विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तए ? गोयमा ! अहमेयं जाणामि जाव जंणं तहागयस्स जीवस्स, अरूविस्स, अकम्मस्स, अरागस्स, अवेदस्स, अमोहस्स, अलेसस्स, असरीरस्स ताओ सरीराओ विप्पमुक्कस्स णो एवं पण्णायाति. तंजहा कालत्तेवा जाव लुक्खत्तेवा से तेणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तएवा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति !

भावार्थ

लेश्या वाले, व शरीर से रहित जीव को कालापना यावत् शुक्लपना, सुरभिगंधपना व दुरभिगंधपना, तिक्तपना यावत् मधुरपना कर्कशपना यावत् रूक्षपना का ज्ञान होता है इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् रहता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! वही जीव पहिला अरूपी होकर फीर रूपीका वैक्रेय कर रहने को क्या समर्थ होता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि वही जीव पहिले अरूपी होकर रूपी का वैक्रेय कर रहने में समर्थ नहीं है? अहो गौतम! मैं ऐसा जानता हूं यावत् तैसे रूप, कर्म, राग, वेदना, मोह, लेश्या, शरीर व उस शरीर से रहित जीव को कालापना

सूत्र

अह भंते! सेडिय-भंतिय-दब्भकोतिय दब्भकुस-पव्वग-पोइदवल अज्जुण-आसाढगरोहि यसमु अवक्खीरभुस-एरंड-कुरु-कुंदकरकर-सुंठ-विभंग-महुरण-थुयरगसिप्पिय सुकुलि तणाणं. एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, एवं एत्थवि उद्देसगा णिरवसेसं जहेव वंस वग्गो ॥ छट्ठो वग्गो ॥ ६ ॥ इक्कवीसइसय छट्ठो ॥ २१ ॥ ६ ॥

अह भंते! अब्भोरुह वायण हरितग तदुलेज्जय तणुवत्थुल पोरग मज्जारयाइ-बिल्लियाल करग-चिप्पलिय-दविसोत्थिय कसाय मंडुक्कि मूलग सरिसव अबल साग जियंतगाणं

भावार्थ

अहो भगवन्! सेडिय भंतिक, दर्भ, कुश, पर्वग, पोइद, इक्षु, अर्जुन आषाढक, रोहित, समु, अवक्षीर, भुस, एरंड, कुरुकुंद, करकर सुंठ, विभंग महुरण, थुयुग, शिल्पिक, सुकुलि आपाति विशेष वनस्पति इन में जो जीव मूलपने उत्पन्न होते वगैरह जैसे वंशवर्ग कहा वैसे ही यहां पर भी सब उद्देशे कहना. यह छठा वर्ग संपूर्ण हुआ. यह इक्कीसवा शतक का छठा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ २१ ॥ ६ ॥ ०

अहो भगवन्! अभ्ररुह, वायस, हरितक, तंदुल, तनु, वथुओ, पोरक, मार्जारक, दक, पीपलकंद, सरिसव, कषाय, मंडुकी, मूलक, सरिसव, अंबल साग और जियंतक इनमें जो जीवों मूलपने उत्पन्न होते हैं

सूत्र

खेज्जइ भागं सेसं जहा सालीणं, एवे एए दस उद्देसा ॥ बावीसइमस्स पढमोवग्गो ॥ २२ ॥ १ ॥ :०; :०; :०;

अह भंते ! णिवंबजंबुकोसंबसाल अंकोल पीलु सेलु सहइ मोयइ मालुय बउल पलास करंज पुत्तंजीव गरिट्ठ वहेलग हरिय गभल्लाय उंबरि भरिय खीराणि धायइ पियाल पूतियणं णारगसण्हंणपासिय सीसव अयसि पुण्णागणागरुक्ख सीवण्ण असोगाणं एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ॥ एवं मूलादीया दस उद्देसाकायव्वा णिरवसेसं जहा तालवग्गो ॥ बितिओवग्गो सम्मत्तो ॥ २२ ॥ २ ॥ :०: :०:

भावार्थ

की. शेष सब अधिकार शाली धान्य जैसे कहना. यों बावीसवे शतक के प्रथम वर्ग में दश उद्देशे संपूर्ण हुवे. यह बावीसवा शतक का प्रथम उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २२ ॥ १ ॥

अहो भगवन् ! नींब, आम्र, जाम्ब, कोशंब, शाली, अंकोल, पीलू, शेलू, शल्यकी, मोद की, मालती बकुल, बउल, पलाश, करंज, जीवापुत्र, अरिठा, बहेडा, हरडे भिलावा, उंबर भेरडी, रायणी धावडी पियंगु, पूति चारगवण, नपासी, सीसव, अलसी, पुन्नाग, नागवृक्ष, सिवन व अशोक, इन में जो जीव मूलपने उत्पन्न होते हैं वगैरह सब कथन जैसे तालवृक्ष का कहा वैसे ही कहना यों बावीस वे शतक के दूसरे वर्ग में दश उद्देशे संपूर्ण हुवे. ॥ २२ ॥ २ ॥

## ॥ त्रयोविंशतितम शतकम् ॥

णमो सुअदेवयाए भगवईए ॥ आलुय लोहीअवए, पाढातह मास वण्णिवल्लीय; पंचेते दस वग्गा, पण्णासं होंति उद्देसा ॥१॥ रायगिहे जाव एवं वयासी अह भंते ! आलुय मूलग सिंगवेर हालिद्द रुरुक चारिय जीरू छीर विराली किट्टिक कुंदुक्कण्ण कडसु मधुपयलइ महुसिंगी णिरुहा सप्प सुगंधा छिन्नरुहा वीयरुहाणं, एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति एवं मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा वंसवग्ग सरिसा, णवरं परिमाणं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा

पाचीन वे शतक में प्रत्येक वनस्पतिका कथन किया, अब साधारण वनस्पति का कथन करते हैं. यहां पर प्रारंभ में श्रुतदेवता को नमस्कार करने के लिए भगवती श्रुत देवता को नमस्कार होवो. अब इस के वर्ग व उद्देशे कहते हैं ! आलू मूलादि साधारण शरीर वनस्पति विशेष ... काय के अंतक मधूति अनंत कायके पाठा मसूर और ... उद्देशे होने से इस शतक ...

सूत्र

परिणामिए सण्णिवाइए भावे, सण्णिवाइयस्स भावस्स; से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुचइ-भाव तुल्लए भाव तुल्लए ॥ ८ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ-संठाण तुल्लए संठाण तुल्लए ? गोयमा ! परिमंडल संठाणे परिमंडलस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले, परिमंडलसंठाणे परिमंडलस्स संठाणवइरित्तस्स संठाणस्स संठाणओ णो तुल्ले ॥ एवं वट्टे, तंसे, चउरंसे, आयए ॥ समचउरंससंठाणे समचउरंसस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले, समचउरंस्स संठाणे समचउरंसस्स संठाणवइरित्तस्स संठाणओ णो तुल्ले ॥ एवं जाव हुंडे ॥ से तेणट्ठेणं जाव संठाण तुल्लए संठाण तुल्लए ॥९॥

भावार्थ

पंशमिक की साथ तुल्य है, परिणामिक परिणामिक से तुल्य है और सन्निपात सन्निपात भाव से तुल्य है. अहो गौतम ! इस कारन से भाव तुल्य को भाव तुल्य कहा है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! संस्थान तुल्य को संस्थान तुल्य क्यों कहा ? अहो गौतम ! परिमंडल संस्थान परिमंडल संस्थान से तुल्य है इस से अन्य की साथ तुल्य नहीं है ऐसे ही वर्तुल, त्र्यंश, चौरस व लम्बगोल का जानना. समचतुस्र संस्थान समचतुस्र संस्थान से तुल्य है और इस से अन्य की साथ तुल्य नहीं है ऐसे ही हुंडक तक सब संस्थान का जानना. अहो गौतम ! इस कारन से संस्थान तुल्य से संस्थान तुल्य कहा गया है ॥ ९ ॥

सूत्र

वग्गो सम्मत्तो ॥ २३ ॥ २ ॥ (-) (-) (-) (-)

अह भंते ! आयकाय कुहुण कुंदुरुक्क उव्वेहलियसफासज्जा छत्ता वंसाणिय कुराणं, एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए एवं एत्थवि मूलादिया दस उद्देसगा णिरवसेसं जहा आलुवग्गो सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ तइओ वग्गो सम्मत्तो ॥ २३ ॥ ३॥ (!)

अह भंते ! पाढामिय वालुंकि महुररसा रायवल्ली पउमा मोढरि दंति चंडीण, एए-सिणं जे जीवा मूलादिया दस उद्देसगा आलुयवग्गसरिसा, णवरं ओगाहणा जहा वल्लीणं, सेसं तंचेव सेवं भंते ! २ त्ति चउत्थो वग्गो सम्मत्तो ॥ २३ ॥ ४ ॥

भावार्थ

यावत् बीज पने उत्पन्न हुवे यों दशों उद्देश जैसे आलुके कहे वैसे ही कहना. परंतु अवगाहना ताल वर्ग जैसे कहना. यह तेवीसवा शतक का दूसरा वर्ग समाप्त हुवा ॥ २३ ॥ २ ॥

अहो भगवन् ! आयकाय, अनंतकाय, कुहुण, कुंदुरुक्क, उवेहलिक, सफा, सज्जा, छत्रा, वंशाणिक, कुरु इन सब अनंतकाय में जो जीव मूलपने उत्पन्न होवे यों मूलादि दश उद्देश आलु वर्ग जैसे कहना. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यह तेवीसवा शतक का तीसरा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २३ ॥ ३ ॥

अहो भगवन् ! पाठामृग, वालुका, मधुररसा, रायवल्ली, पद्मा, मोढरी, दन्ती, चण्डी, इन में जो जीव मूलपने उत्पन्न होवे इत्यादि पूर्ववत् दश उद्देश जैसे आलु के कहे वैसे ही कहना परंतु अवगाहना वेली

णित्ता पच्छा उववज्जिज्जा, सव्वेण समोहणमाणे पुव्विं उववज्जिज्जा पच्छा संपाउणेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा ॥ १ ॥ पुढवीकाइयाणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव समोहए समोहएत्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढवी एवं चेव ईसाणेवि ॥ एवं अच्चुयगेवेज्ज विमाणे अणुत्तर विमाणे ईसिप्पभाराएय एवं चेव ॥ २ ॥ पुढवी काइयाणं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए समोहए समोहएत्ता जे भविए सोहम्मकप्पे पुढवी एवं जहा रयणप्पभाए पुढवीकाइओ उववाइओ; एवं सक्करप्पभाए पुढवी काइओ उववाएयव्वो, जाव ईसिप्पभाराए, एवं जहा रयणप्पभाए वत्तव्वया भणिया

उत्पन्न होवे और सर्व से समुद्घात करते पहिले उत्पन्न होवे पीछे आहार करे इसलिये ऐसा कहा गया है. यावत् उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में पृथ्वी काया मारणांतिक समुद्घात करके ईशान देवलोक में पृथ्वी कायापने उत्पन्न होवे तो क्या पहिले उत्पन्न होकर पीछे आहार करे अथवा पहिले आहार करके पीछे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे सौधर्म देवलोकका कहा वैसे ही यहां जानना. ऐसे ही सनत्कुमार यावत् अच्युत, ग्रैवेयक, अनुत्तर विमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी तक का जानना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शर्करप्रभा में से पृथ्वीकाया मारणान्तिक समुद्घात करके सौधर्म देवलोक में पृथ्वी काया

सूत्र

पुढवीकाइओ सव्वपुढवीसु उववाइओ, एवं जाव ईसिप्पभार पुढवीकाइओ सव्वपुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहे सत्तमाए ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ७ ॥

आउकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए समोहइत्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए एवं जहा पुढवीकाइओ तहा आउकाइओवि, सव्वकप्पेसु जाव ईसिप्पभाराए तहेव उववाएयव्वो, एव जहा रयणप्पभा

भावार्थ

पृथ्वीकाया का उत्पन्न होना कहना. वैसे ही जैसे सौधर्म पृथ्वीकायिक सब पृथ्वी में उत्पन्न होने का कहा वैसे ही यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वीकायिक सब पृथ्वी में जानना. यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ७ ॥

अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वीकाय में अप्काय मारणांतिक समुद्घात करके सौधर्म देवलोक में उत्पन्न होने योग्य होवे वह क्या पहिले उत्पन्न होकर पीछे आहार करे अथवा पहिले आहार कर पीछे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे पृथ्वीकाया का कहा वैसे ही अप्काया का सब देवलोक यावत् [illegible] क ना. और जैसे रत्नप्रभा की अप्काया कही वैसे ही शर्कर प्रभा यावत्

शब्दार्थ इ०इस भं०भगवन् र०रत्नप्रभा पु०पृथ्वी का स०शर्करप्रभा पु०पृथ्वीका के०कितना अ०अव्याबाध अं० अंतर प०प्ररूपा गो०गौतम अ०असंख्यात जो०योजन स०सहस्र अ०अबाधा अं०अंतर प०प्ररूपा स० शर्करप्रभा भं० भगवन् पु० पृथ्वी का वा० वालुप्रभा पु०पृथ्वी का के०कितना ए०ऐसे ही ए०ऐसे जा० यावत् त० तमा अ० अधो स० सातवी का अ० अधो स० सातवी का भं० भगवन् पु० पृथ्वी का अ० अलोक का के० कितना अ० अबाधा अं० अंतर प० प्ररूपा गो० गौतम अ० असंख्यात जो० योजन स० सहस्र

सूत्र इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सक्कारप्पभाएय पुढवीए केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ सक्कारप्पभाएणं भंते ! पुढवीए वालुयप्पभाएय पुढवीए केवइयं, एवं चेव ॥ एवं जाव तमाए अहे सत्तमाएय ॥ अहे सत्तमाएण भंते ! पुढवीए अलोगस्सय केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असखेज्जाइं जोअणसहस्साइं अबाहाए अंतरे

भावार्थ सातवे उद्देशे में तुल्यता रूप धर्म का कथन किया आठवे में अंतर का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी व शर्कर पृथ्वी का अबाधा से कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा व शर्करप्रभा का अबाधा से असंख्यात योजन सहस्र का अंतर कहा. शर्करप्रभा व वालु प्रभा का अंतर ऐसे ही असंख्यात योजन सहस्र का जानना. यों तम प्रभा व तमतम प्रभा पर्यंत कहना. अहो भगवन् !

उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ९ ॥ • • •

वाउकाइएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउकाइत्ताए उववज्जित्तए सेणं जहा पुढवीकाइओ तहा वाउकाइओवि णवरं वाउकाइयाणं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तंजहा वेदणासमुग्घाए, जाव वेउव्वियसमुग्घाए, मारणांतिय समुग्घाएणं समोहणमाणे देसेणवा समोहए सेसं तंचेव जाव अहे सत्तमा समोहयाओ ईसिप्पभाराए उववाएयव्वो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्सय दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १० ॥ • •

उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ९ ॥ ० ०

अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में वायुकाया मारणांतिक समुद्घात करके यावत् सौधर्म देवलोक में वायुकायापने उत्पन्न होने को योग्य है वगैरह सब पृथ्वीकाया जैसे कहना. विशेष में वायुकाया को चार समुद्घात कही. जिन के नाम, वेदना समुद्घात यावत् वैक्रेय समुद्घात. मारणांतिक समुद्घात करते देश से समुद्घात करे शेष वैसे ही जानना यावत् सातवी पृथ्वीतक. ईषत्प्राग्भार में से उत्पन्न होने का. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह सत्तरहवा शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुआ. ॥ १७ ॥ १० ॥

सूत्र

वायुकुमाराणं भंते ! सव्वे समाहारा, एवं चेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स सोलसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १६ ॥

अग्गिकुमाराणं भंते ! सव्वेसमाहारा एवं चेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्स सत्तरसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १७ ॥ सम्मत्तं सत्तरसमं सयं ॥ १७ ॥

भावार्थ

वायु कुमार का भी वैसे ही कहना. अहो भगवन् आपके वचन सत्य हैं यह सत्तरहवा शतक का सोलहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ १६ ॥

अहो भगवन् ! क्या अग्निकुमार सरिखे आहार करने वाले वगैरह पहिले जैसे कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सत्तरहवा शतक का सत्तरहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ १७ ॥ १७ ॥

केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणवि दसवाससहस्सट्ठिईएसु जाव उववज्जेज्जा ॥ तेणं भंते ! जीवा एवं सोचेव पढमगमओ णिरवसेसो भाणियव्वो जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ एवइयं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा॥३४॥सोचेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेण सागरोवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि सागरोवमट्ठिईएसु अवसेसो परिणामादीयो, भवादेसे पज्जव साणे सोचेव पढमगमगो णेतव्वो,जाव कालादेसेण जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमब्भ-

पहली नरक में उत्पन्न होवे योग्य होवे वे कितने कालकी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष व उत्कृष्ट दस हजार वर्ष की स्थिति में उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! वे जीवों ऐसे ही यह गमा भी प्रथम गमा जैसे कहना. यावत् कालादेश से जघन्य दस हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट चार पूर्व क्रोड और चालीस हजार वर्ष अधिक इतना काल तक रहे. यह दूसरा गमा जानना ॥ ३४ ॥ वही पर्याप्त संख्यात वर्ष के आयुष्यवाला उत्कृष्ट स्थितिमें उत्पन्न हुवा जघन्य उत्कृष्ट एकसागरोपमकी स्थिति से उत्पन्न होवे और परिणाम आदिसब अधिकार भवादेश पर्यंत पूर्वोक्त प्रथम गमा जानना. यावत् कालादेशसे जघन्य

सूत्र

मिच्छद्दिट्ठी ॥ णो णाणी दो अण्णाणा णियमं ॥ समुग्घाया आदिल्लातिण्णि ॥ आउ अज्झवसाणा अणुबंधोय जहेव असण्णीणं अवसेसं जहा पढमगमए जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं एवइयं कालं जाव करेज्जा ॥ ३६ ॥ सोचेव जहण्ण कालठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं दसवाससहस्सठिईएसु उक्कोसेणवि दसवास सहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ॥ तेणं भंते ! एवं सोचेव चउत्थो णिरवसेसो भाणियव्वो जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं उक्कोसेणं

भावार्थ

असंख्यातवे भाग और उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य की. यहां पर तीन लेश्या, दृष्टि मिथ्यादृष्टि, दो अज्ञान की नियमा, तीन समुद्घात, आयुष्य, अध्यवसाय और अनुबंध ये तीनों जैसे जघन्य स्थिति के असंज्ञी का गमा कहा वैसे कहना. और सब कथन पहिले गमा जैसे कहना. यावत् काल आश्री जघन्य दश हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट चार सागरोपम चार अंतर्मुहूर्त अधिक इतने काल तक सेवे यावत् गतागत करे ॥ ३६ ॥ वही जघन्य स्थिति वाली नारकी में उत्पन्न हुआ जघन्य दश हजार वर्ष और उत्कृष्ट भी दश हजार वर्ष की स्थिति में उत्पन्न होवे वगैरह चौथा गमा जैसे यहां कहदेना। यावत् काल देश मे जघन्य

सूत्र

तेयलेस्सं वीईवयइ, दसमास परियाए समणे णिग्गंथे आणयपाणयआरणच्चुयाणं देवाणं, एक्कारसमास परियाए समणे णिग्गंथे गेवेज्जग देवाणं, बारसमास परियाए समणे णिग्गंथे अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ, तेणपरं सुक्के सुक्काभिजाए भवित्ता, तओ पच्छा सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ चउदसम सयस्सय णवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १४ ॥ ९ ॥ ० •

केवलीणं भंते ! छउमत्थं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ १ ॥ जहाणं भंते ! केवली छउमत्थं जाणइ पासइ तहाणं सिद्धेवि जाणइ पासइ ? हंता जाणइ

भावार्थ

पपातिक देवों की तेजोलेश्या को अतिक्रमे; फीर आगे शुक्ल शुक्लाभिजात बनकर सीझे, बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह चौदहवा शतक का नवचा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ ९ ॥ ० ० ०

नववे उद्देशे में शुक्लपना कहा और इसी से केवली प्रभृति अर्थ प्रतिबद्ध दशवा उद्देशा कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या केवली छद्मस्थ को जाने देखे ? हां गौतम ! केवली छद्मस्थ को जाने देखे. अहो भगवन् ! जैसे केवली छद्मस्थ को जाने देखे वैसे ही क्या सिद्ध छद्मस्थ को जाने देखे ? हां सिद्ध भी केवली

सूत्र

सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव सेवेज्जा ॥ ३ ॥ सोचेव अप्पणा जहण्ण कालट्ठिईओ जाओ सव्वेवि रयणप्पभा पुढवी जहण्ण कालट्ठिईय वत्तव्वया भाणियव्वा जाव भवादेसोत्ति, णवरं पढम संघयणं णो इत्थीवेदगा, भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं उक्कोसेणं सत्तभवग्गहणाइं कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा ॥ ४ ॥ सोचेव जहण्ण कालट्ठिईएसु उववण्णो एवं सोचेव चउत्थो गमो णिरवसेसो भाणियव्वो जाव

भावार्थ

संवेध पर्यंत वैसे ही कहना. भवादेश से जघन्य तीन भव उत्कृष्ट पांच भव. कालादेश से जघन्य तेत्तीस सागरोपम दो अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट छासठ सागरोपम तीन पूर्व क्रोड अधिक. इतना यावत् करे. अब वही जघन्य स्थितिवाला सातवी पृथ्वी में उत्पन्न होवे तो सब रत्नप्रभा पृथ्वी जैसे कहना परंतु यहां जघन्य स्थिति और एक पहिला संघयन जानना. और स्त्री वेदी उत्पन्न नहीं होते हैं. भवादेश से जघन्य तीन भव उत्कृष्ट सात भव, कालादेश से जघन्य बावीस सागरोपम और दो अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट छासठ सागरोपम और चार अंतर्मुहूर्त अधिक (तीन नरक और चार मत्स्य के भव आश्री) वही

सूत्र

किंचि आणत्तंवा णाणत्तंवा एवं जहा इंदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया जाव तत्थणं जे ते उवउत्ता ते जाणंति पासंति आहारेंति, से तेणट्ठेणं णिक्खेवो भाणियव्वो ॥ ८ ॥ कइविहेणं भंते ! बंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता ! दुविहे बंधे पण्णत्ते तंजहा-दव्वबंधेय भावबंधेय ॥ ९ ॥ दव्वबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-पओगबंधेय वीससाबंधेय ॥ १० ॥ वीससाबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते, मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सादीयवीससाबंधेय अणा-

भावार्थ

रहे हुवे हैं ? हां माकंदिय पुत्र ! भावितात्मा अनगार को यावत् अवगाह कर रहे हुवे हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरित किये हुवे पुद्गलों तथा उस के भेद वर्णादि विशेष पुद्गलों वगैरह जैसे पन्नवणा पद में पहिले उद्देश में कहा वैसे ही यहां वैमानिक पर्यंत जानना. यावत् वहां जो उपयोग युक्त है वह जाने देखे व आहार करे वहां तक कहना. अहो माकंदिय पुत्र ! इसलिये ऐसा कहा है ॥८॥ अहो भगवन् ! बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! बंध के दो भेद कहे हैं. १ द्रव्य बंध और २ भाव बंध ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य बंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य बंध के दो भेद कहे हैं. १ प्रयोग बंध और २ वीस्रसा बंध ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! वीस्रसा बंध के

मूल

सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा ॥ ७ ॥ सोचेव जहण्णकालठिईएसु उववण्णो सव्वे व लद्धी संवेहोवि तहेव सत्तमगम सरिसो ॥ ८ ॥ सोचेव उक्कोसकालठिईएसु उववण्णो सव्वेव लद्धी जाव अणुबंधोत्ति, भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंचभवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइयं कालं जाव करेज्जा ॥ ४३ ॥ जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सण्णि मणुस्सेहिंतो उववज्जंति

भावार्थ

यावत् भवादेश. स्थिति जघन्य उत्कृष्ट पूर्व क्रोड कालादेश से जघन्य बावीस सागरोपम दो पूर्व क्रोड अधिक उत्कृष्ट छासठ सागरोपम चार पूर्व क्रोड अधिक इतना यावत् करे. वही जघन्य स्थितिवाली नरक में उत्पन्न हुवा लब्धि, संवेध वगैरह सातवा गमा कहना, वही उत्कृष्ट स्थिति से उत्पन्न हुवा लब्धि यावत् अनुबंध पूर्वोक्त जैसे कहना. भवादेश से जघन्य तीन भव उत्कृष्ट पांच भव कालादेश से जघन्य तेत्तीस सागरोपम दो पूर्व क्रोड अधिक. उत्कृष्ट छासठ सागरोपम तीन पूर्व क्रोड अधिक. इतना काल यावत् करे ॥

सूत्र

केवलीणं भंते ! सोहम्मं कप्पं सोहम्म कप्पेति जाणइ पासइ ? एवं चेव ॥ एवं ईसाणं, एवं जाव अच्चुयं ॥ केवलीणं भंते ! गेविज्जग विमाण गेविज्जगविमाणेति जाणइ पासइ ? एवं चेव ॥ एवं अणुत्तरविमाणेवि ॥ केवलीणं भंते ! ईसिपब्भारं पुढवि ईसिपब्भार पुढवीति जाणइ पासइ? एवं चेव॥५॥केवलीणं भंते ! परमाणु पोग्गलं परमाणु पोग्गलेति जाणइ पासइ? एवं चेव॥एवं दुपदेसियं खंधं, एवं जाव अणंत पदेसियं खंधं ॥ जहाणं भंते केवली अणंतपदेसिए खंधेति जाणइ पासइ तहाणं सिद्धेवि अणंत पदेसियं खंधं जाव पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ चउद्दसम सयस्सय दसमो उद्देसो सम्मत्तो॥१४॥१०॥ सम्मत्तंय चउद्दसम सयं॥१४॥

भावार्थ

रत्नप्रभा पृथ्वी जाने देखे ? हां गौतम ! जाने देखे ऐसे ही शर्करप्रभा पृथ्वी यावत् सातवीं तमतमप्रभा पृथ्वी का जानना. जैसे नारकी का कहा, वैसे ही सौधर्म ईशान यावत् अच्युत, ग्रैवेयक, अनुत्तर विमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का जानना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! केवली परमाणु पुद्गल को क्या परमाणु पुद्गल जाने देखे ? हां गौतम ! वैसे ही जानना. ऐसे ही द्विप्रदेशात्मक स्कंध, यावत् अनंत प्रदेशात्मक स्कंध का जानना. वैसे ही सिद्ध भी अनंत प्रदेशिक स्कंध को जाने देखे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह चौदहवा शतक का दशवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १४ ॥ १० ॥ यह चौदहवा शतक संपूर्ण हुवा ॥ १४ ॥

सूत्र

जाव उववज्जंति, पज्जत संखेज्ज वासाउय सण्णिमणुस्सेणं भंते ! जे भविए णेरइएसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! कइसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तंजहा रयणप्पभाए जाव अहे सत्तमाए ॥४४॥ पज्जत्त संखेज्ज वासाउय सण्णिमणुस्सेणं भंते ! जे भविए रयणप्पभा पुढवीए णेरइएसु उववज्जित्तए सेणं भंते! केवइया कालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?गोयमा! जहण्णेणं दस वाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ॥ तेणं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा

भावार्थ

होवे ! अहो गौतम ! पर्याप्त संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले उत्पन्न होवे. परंतु अपर्याप्त संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले नहीं उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! जो पर्याप्त संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले नारकी में उत्पन्न होने योग्य हैं वे कितनी नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा यावत् सातवी तमतमप्रभा में उत्पन्न होवे ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! पर्याप्त संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य जो नारकी में उत्पन्न होने योग्य होवे वे यहां कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट एक सागरोपम की स्थिति से उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! एक समय में वे जीवों कितने उत्पन्न होते हैं !

मागंदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तंजहा-मूलपगडिबंधेय, उत्तरपगडिबंधेय ॥ १५ ॥ णेरइयाणं भंते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कइविहे भावबंधे पण्णत्ते ? मागंदियपुत्ता दुविहे भावबंधे पण्णत्ते तंजहा-मूलपगडिबंधेय, उत्तर पगडिबंधेय ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ णाणावरणिज्जेणं जहा दंडओ भणिओ एवं जाव अंतराइयं भाणियव्वो ॥ १६ ॥ जीवाणं भंते ! पावे कम्मे जेय कडे जाव जेय कज्जिस्सइ अत्थिया तस्स केइ णाणत्ते ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवाणं पावे कम्मे जेय कडे जाव जेय कज्जिस्सइ अत्थिया केइ णाणत्ते ? मागंदियपुत्ता ! से जहा णामए केइपुरिसे धणुं परामुसइ, परामुसइत्ता उसुं परामुसइ २ त्ता ठाणं



मूल प्रकृतिबंध व उत्तर प्रकृतिबंध. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को ज्ञानावरणीय कर्म के कितने भाव बंध कहे हैं ? अहो माकंदिय पुत्र ! दो भाव बंध कहे हैं ! मूलप्रकृतिबंध व उत्तर प्रकृति बंध. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. जैसे ज्ञानावरणीय का दंडक कहा वैसे ही अंतराय तक का दंडक कहना. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! जिन जीवोंने पापकर्म किये हैं और जो जीवों पापकर्म करेंगे उन में क्या भिन्नता है ? हां माकंदिपुत्र ! उन में भिन्नता है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जिन जीवोंने पापकर्मों

सूत्र

सेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ एवइयं जाव करेज्जा ॥ ४६ ॥ सोचेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो एसचेव वत्तव्वया णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं मासपुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा॥ ४७॥सोचेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ एसचेव वत्तव्वया णवरं इमाइं णाणत्ताइं सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहुत्तं उक्कोसेणवि अंगुलपुहुत्तं, तिण्णिणाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए, पंच समुग्घाया आदिल्ला ठिई

भावार्थ

मास अधिक. उत्कृष्ट चार पूर्व क्रोड और चालीस हजार वर्ष अधिक. इतना यावत् करे ॥ ४६ ॥ वही उत्कृष्ट स्थिति से उत्पन्न हुवा उपर्युक्त वक्तव्यता कहना. विशेष में कालादेश से जघन्य एक सागरोपम और प्रत्येक मास अधिक उत्कृष्ट चार सागरोपम और चार पूर्व क्रोड अधिक इतना यावत् करे. ॥ ४७ ॥ वही जघन्य स्थितिवाला पर्याप्त सख्यात वर्ष के आयुष्यवाला मनुष्य रत्नप्रभा में उत्पन्न होवे तो कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? वगैरह सब वक्तव्यता ऐसे ही जानना परंतु शरीर अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक अंगुल, तीन ज्ञान तीन अज्ञान की भजना, पहिली पांच समुद्घात स्थिति और अनुबंध जघन्य

सूत्र

जाव करेज्जा ॥ ५० ॥ सोचेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाव सोचेव पढम गमओ णेयव्वो णवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुहसयाइं उक्कोसेणवि पंच धणुहसयाइं ठिई जहण्णेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्वकोडी, एवं अणुबंधोवि ॥ कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिंवाससहस्सेहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइय काल जाव करेज्जा ॥५१॥ सोचेव जहण्ण कालट्ठिईएसु उववण्णो सच्चेव सत्तमगमग वत्तव्वया णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसवाससहस्सेहिं अब्भहिया उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए

भावार्थ

प्रत्येक मास अधिक. उत्कृष्ट चार सागरोपम और चार प्रत्येक मास अधिक. इतना यावत् करे ॥ ५० ॥ वही उत्कृष्ट स्थितिवाले यावत् उत्पन्न होवे तो पहिला गमा कहना परंतु शरीर अवगाहना - जघन्य उत्कृष्ट पांचसो धनुष्य की जानना. स्थिति जघन्य उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही अनुबंध. कालादेश से जघन्य पूर्व क्रोड और दस हजार वर्ष अधिक. उत्कृष्ट चार सागरोपम चार पूर्व क्रोड अधिक इतना काल यावत् करे ॥ ५१ ॥ वही जघन्य स्थितिवाली नारकी में उत्पन्न होवे वगैरह सातवा गमा कहना विशेष में कालादेश से जघन्य पूर्व क्रोड दस हजार वर्ष अधिक उत्कृष्ट चार पूर्व क्रोड चालीस हजार वर्ष अधिक, इतना

मागंदियपुत्ता ! असंखेज्जइ भागं आहारेंति अणंतभागं णिज्जरेंति ॥ १९ ॥ चक्कियाणं भंते ! केइ तेसु णिज्जरापोग्गलेसु आसइत्तए्वा जाव तुयट्टित्तएवा ? णो इणट्ठे समट्ठे अणाहारमेयं वुइयं समणाउसो ! एवं जाव वेमाणियाणं ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥१८॥३॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव भगवं गोयमे एवं वयासी- अह भंते ! पाणाइवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणाइवाए विरमणे जाव मिच्छादंसण



व अनंत भागकी निर्जरा करते हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! उन निर्जरित पुद्गलों में कोई बैठने को यावत् सोने को क्या समर्थ है ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो श्रमण ! यह अनाधार कहा गया है. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह आठारहवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १८ ॥ ३ ॥ :o; :o; :o;

तीसरे उद्देशे में निर्जरा की व्याख्या कही. चौथे उद्देशे में पाप की व्याख्या करते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पुछने लगे कि अहो भगवन् ! प्राणातिपात मृषावाद यावत् मिथ्या दर्शन शल्य, प्राणा-

सूत्र

ठिती जहण्णेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी एवं अणुबंधोवि, सेसं तंचेव जाव भवादेसोत्ति ॥ कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं वासपुहुत्तमब्भहियं उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा ॥ ५४ ॥ एवं एसा ओहिएसु तिसुगमएसु मणुस्स लद्धी णाणत्तं-णेरइयट्ठिती कालादेसेणं संवेहं च जाणेज्जा ॥ सोचेव अप्पणा जहण्ण कालट्ठितीओ जाओ तस्सवि तिएसु गमएसु एसचेव लद्धी णवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहुत्तं उक्कोसेणंवि रयणिपुहुत्तं

भावार्थ

अवगाहना जघन्य प्रत्येक हाथ उत्कृष्ट पांचसो धनुष्यकी स्थिति जघन्य प्रत्येक वर्ष उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही अनुबंध. शेष भवादेश पर्यंत पहिले जैसे जानना. कालादेश से जघन्य एक सागरोपम और प्रत्येक वर्ष अधिक उत्कृष्ट बारह सागरोपम और चार पूर्व क्रोड अधिक. इतना यावत् करे ॥ ५४ ॥ ऐसे ही यह मनुष्य लब्धि तीनों औधिक-औधिक में, औधिक जघन्य स्थिति और औधिक उत्कृष्ट स्थिति में कहना. विशेष में नरकस्थिति का कालादेश से कायासंबंध जानना. प्रथम गमा में स्थित्यादिक वगैरह जानना. द्वितीय गमा में औधिक जघन्य स्थिति में स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्ट सागरोपम की. संवेध काल से जघन्य एक सागरोपम और प्रत्येक वर्ष अधिक उत्कृष्ट चार सागरोपम चार प्रत्येक वर्ष अधिक. तीसरे में

सूत्र

परिहायंति, तहेव तिरिक्ख जोणियाणं कालादेसोवि तहेव णवरं मणुस्सठिई जाणि यव्वा ॥ ५५ ॥पज्जत्त संखेज्ज वासाउय सण्णि मणुस्सेणं भंते ! जेभविए अहे सत्तम पुढवि णेरइएसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! केवइय कालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमट्ठिईएसु उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा॥ तेणं भंते ! जीवा एगसमएणं अवसेसो सोचेव सक्करप्पभ पुढवी गमओ णेयव्वो णवरं पढम संघयणं ॥ इत्थीवेयगा ण उववज्जंति सेसं तंचेव जाव अणुबंधोत्ति ॥ भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्त

भावार्थ

गमा जैसे कहना. परंतु स्थिति और काया संबंध में भिन्नता जानना. ऐसे ही छठी नारकी पर्यंत कहना. तीसरी नारकी से एक २ संघयन कमी कहना तिर्यंच का कालादेश और मनुष्य स्थिति जानना ॥५५॥ अहो भगवन् ! पर्याप्त संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य सातवी नरक में उत्पन्न होता है वह कितनी स्थिति मे उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! जघन्य बावीस सागरोपम उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम. अव शेष सब शर्कर प्रभा पृथ्वी का गमा जानना. विशेष में पहिला संघयन, स्त्री वेद उत्पन्न होवे नहीं, शेष अनुबंध पर्यंत पहिले जैसे कहना. भवादेश से दो भव कालादेश से जघन्य बावीस सागरोपम और प्रत्येक वर्ष

अगणिकाए, णिद्धे-तेल्ले ॥ छारियाणं भंते पुच्छा ? गोयमा ! एत्थणं दोणया भवंति तंजहा णिच्छइयणएय, वावहारियणएय, वावहारियणयस्स लुक्खाछारिया, णेच्छइयणयस्स पंचवण्णे जाव अट्ठफासा पण्णत्ता ॥ ३ ॥ परमाणुपोग्गलेणं भंते ! कइवण्णे जाव कइफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगवण्णे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते ॥ दुपदेसिएण भंते ! खधे कइवण्णे पुच्छा ? गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय दुफासे सिय तिफासे

भावार्थ

से लाल मजीठ, पीली हल्दी, श्वेत शंख, सुगंधी कोष्टक, दुर्गन्धी मृतक शरीर, तिक्तरस, निंब, कटुक सूंठ, कषायला तूरा करीठ, अम्बट इमली, मधुर सक्कर. कर्कश स्पर्श वज्र, कोमल मक्खन,भारी लोहा,हलका भोजपत्र, शीत हिम, ऊष्ण अग्नि, चिकना तेल, रूक्ष राख यों सब में व्यवहार नय से एक२ ही वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पाता है और निश्चय नय से पांच वर्ण यावत् आठोंही स्पर्श पाते हैं. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल में कितने वर्ण यावत् स्पर्श पाते हैं ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल में एक वर्ण एक रस दो स्पर्श कहे हैं. अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श कहे हैं ? अहो गौतम ! कदाचित् एक वर्ण कदाचित् दो वर्ण, यदि दोनों एक वर्ण के होवे तो एक ही वर्ण, इस के पांच विकल्प

सूत्र

पंचधणुहसयाइं उक्कोसेणवि पंचधणुहसयाइं, ठिई जहण्णेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्व कोडी एवं अणुबंधोवि णवसुवि एतेसु गमएसु णेरइय ठिई संवेहंच जाणेज्जा॥सव्वत्थ भवग्गहणाइं दोण्णि जाव णव गमएसु कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं उक्कोसेणवि तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं एवइयं कालं सेवेज्जा एवइयं काल गतिरागतिं करेज्जा॥ सेवं भंते। भंतेत्ति चउवीस-इमसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २४ ॥ १ ॥ • •

रायगिहे जाव एवं वयासी-असुरकुमाराणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइएहिं-

भावार्थ

वही उत्कृष्ट स्थितिवाला मनुष्य सातवी नारकी में उत्पन्न होवे तो उस के भी तीनों गमाओ में पूर्वोक्त जैसी वक्तव्यता कहना. परंतु शरीर अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट पांचसो धनुष्य की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही अनुबंध कहना. इन के नवों गमाओं में स्थिति और संवेध कहना. सर्वत्र दो भव लेना. नव गमाओं में कालादेश से जघन्य तेत्तीस सागरोपम पूर्वक्रोड अधिक और उत्कृष्ट भी तेत्तीस सागरोपम पूर्वक्रोड अधिक. इतना काल सेवे. इतनी गति आगति करे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह चौवीसवा शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ २४ ॥ १ ॥ • •

प्रथम उद्देशे में नरक का कथन कीया. दूसरे उद्देशे में असुरकुमार का कथन करते हैं. इस उद्देशे में

शब्दार्थ

अर्थ को णो० नहीं आ० आदर किया णो० नहीं प० अच्छा माना तु० चूप सं० रहा ॥ २८ ॥ त० तब अ० मैं गो० गौतम रा० राजगृह ण० नगर में प० नीकलकर णा० नालंदा वा० बाहिर की म० मध्य से जे० जहां तं० वणकर शाला ते० तहां उ० आकर दो० दूसरा मा० मास क्षमण उ० अंगीकार कर वि० विचरा ॥ २९ ॥ त० तब अ० मैं मा० मास क्षमण पा० पारणे में तं० वणकर सा० शाला से प० नीकलकर णा० नालंदा वा० बाहिर म० मध्य से जे० जहां रा० राजगृह ण० नगर जा० यावत्

सूत्र

एयमट्ठं णो आढामि णो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ॥ २८ ॥ तएणं अहं गोयमा ! रायगिहाओ णयराओ पडिणिक्खमामि २ त्ता, णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छामित्ता, दोचं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ २९ ॥ तएणं अहं मासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिणिक्खमामि पडिणिक्खमामित्ता णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं

भावार्थ

॥ २७ ॥ अहो गौतम ! उस समय मैंने गोशाला के वचन का आदर किया नहीं; उन के वचन मैंने अच्छे जाने नहीं परंतु मौन रहा. ॥ २८ ॥ फीर अहो गौतम ! मैं राजगृह नगर में से नीकलकर नालंदिय पाडा के बाहिर मध्यबीच में से नीकलता हुवा तंतुवाय शाला में आया और दूसरा मास खमण कर के रहने लगा. ॥ २९ ॥ मास खमण के पारणे के दिन तंतुवाय शाला में से नीकल कर नालंदिय ...

सूत्र अप्पसत्था; तिसुवि गमएसु अवसेसं तंचेव ॥ १ ॥ जदि सण्णिपंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्ज वासाउय सण्णि जाव उववज्जंति असंखेज्ज वासाउय जाव उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति, असंखेज्ज वासाउय जाव उववज्जंति, ॥ असंखेज्जवासाउय सण्णि पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएणं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! केवइय कालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ॥ २ ॥ तेणं भंते ! जीवा एगसमएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कोवा

भावार्थ जहां जघन्य स्थिति वाले तिर्यंच कहे हैं वहां अध्यवसाय प्रशस्त ग्रहण करना परंतु अप्रशस्त ग्रहण करना नहीं. ॥ १ ॥ यदि संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच उत्पन्न होवे तो क्या संख्यात वर्ष वाले या असंख्यात वर्ष वाले उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले उत्पन्न होवे और असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले भी उत्पन्न होवे. असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच असुरकुमार में उत्पन्न होने योग्य होते हैं वे कितनी स्थिति से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तीन पल्योपम [illegible] वाले अपना आयुष्य जितना [illegible] आयुष्य बांधे ॥२॥ अहो भगवन् !

सूत्र णिरवसेसं ॥ ९ ॥ बादरपरिणएणं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कइवण्णे पुच्छा ? गोयमा ! सिय एगवण्णे जाव सिय पंचवण्णे, सियएगगंधे, सिय दुगंधे; सिय एगरसे जाव सिय पंचरसे, सिय चउफासे जाव सिय अट्ठफासे ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ ६ ॥ • •

गयगिहे जाव एवं वयासी अण्णउत्थियाणं भंते ! एवं माइक्खंति जाव परूवेंति

भावार्थ पांच प्रदेशिक स्कंध का कहा ऐसे ही यावत् असंख्यात प्रदेशिक स्कंध का जानना. परमाणु से लगाकर असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध सूक्ष्म परिणाम रूप होता है और अनंत प्रदेशिक स्कंध सूक्ष्म तथा बादर दोनों परिणामरूप होता है इसलिये अनंतप्रदेशात्मक स्कंध की पृथक् व्याख्या करते हैं. अहो भगवन् ! सूक्ष्म परिणत असंख्यात प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्णादि कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसे पंच प्रदेशिक स्कंध का कहा वैसे ही इस का भी कहना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! बादर परिणत अनंतप्रदेशात्मक स्कंध में कितने वर्णादि हैं ? अहो गौतम ! स्यात् एक वर्ण स्यात् पांच वर्ण स्यात् एक गंध स्यात् दो गंध, स्यात् एक रस स्यात् पांच रस स्यात् चार स्पर्श स्यात् आठ स्पर्श भी होता है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह अठारहवा शतक का छठा उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १८ ॥ ६ ॥

छठे उद्देशे में नयवादिमत आश्रित वस्तु विचारणा कही. अब सातवे उद्देशे में अन्ययथिक मत आश्री

सूत्र

मंति ॥ १६ ॥ वेदणा दुविहावि सातावेदगावि असातावेदगावि ॥ १७ ॥ लिंग वेदो दुविहोवि इत्थी वेदगावि पुरिसवेदगावि, णो णपुंसगवेदगा ॥ १८ ॥ ठिई जहण्णेणं साइरेगा पुव्वकोडी उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥ १९ ॥ अज्झवसाणा पसत्थावि अप्पसत्थावि ॥ २० ॥ अणुबंधो जहेवठिई, कायसंवेहो भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं ॥ कालादेसेणं जहण्णेणं साइरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया उक्कोसेणं छ पलिओवमाइं, एवइयं जाव करेजा ॥ १ ॥ २१ ॥ सोचेव जहण्ण कालट्ठिईएसु उववण्णो एसचेव वत्तव्वया णवरं असुरकुमारट्ठिई संवेहं च जाणेजा ॥ २२ ॥ सोचेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं तिण्णि पलिओ-

भावार्थ

दनेवाला ॥ १७ ॥ इस में वेद दो स्त्री वेद और पुरुष वेद, नपुंसक वेद नहीं है ॥ १८ ॥ स्थिति जघन्य पूर्व क्रोड से कुच्छ अधिक उत्कृष्ट तीन पल्योपम ॥१९॥ अध्यवसाय प्रशस्त और अप्रशस्त ॥२०॥ अनुबंध स्थिति जैसे कहना. कायसंवेध भवादेश से दो भव और कालादेश से जघन्य कुच्छ अधिक पूर्व क्रोड और दश हजार वर्ष अधिक उत्कृष्ट छ पल्योपम. इतना यावत् करे, यह पहिला गमा हुवा ॥२१॥ वही जघन्य स्थितिवाला असुरकुमार में उत्पन्न हुवा यही वक्तव्यता कहना. विशेष में स्थिति

सूत्र

पुव्वकोडी दसवाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं साइरेगा दो पुव्वकोडी एवइयं जाव सेवेज्जा ॥ ४ ॥ २४ ॥ सोचेव जहण्ण कालट्ठिईएसु उववण्णो एसचेव वत्तव्वया णवरं असुरकुमारट्ठिई संवेहंच जाणेज्जा ॥ ५ ॥ २५ ॥ सोचेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो, जहण्णेणं साइरेगं पुव्वकोडीआउएसु उक्कोसेणवि साइरेगपुव्वकोडी आउएसु उववज्जेज्जा सेसं तंचेव ॥ णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं साइरेगा दो पुव्वकोडीओ उक्कोसेणवि साइरेगाओ दो पुव्वकोडीओ एवइयं कालं जाव करेज्जा ॥ ६ ॥ ॥ २६ ॥ सोचेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ सोचेवय पढमगमगो भाणियव्वो

भावार्थ

और दस हजार वर्ष अधिक उत्कृष्ट साधिक दो पूर्व क्रोड इतना यावत् करे यह चौथा गमा हुवा ॥ २४ ॥ वही जघन्य स्थिति में उत्पन्न होवे तो पहिले जैसे कहना विशेषता में असुरकुमार की स्थिति व संवेध कहना. यह पांचवा गमा हुवा ॥२५॥ वही उत्कृष्ट स्थितिवाला तिर्यंच असुरकुमार में उत्पन्न होवे तो जघन्य साधिक पूर्व क्रोड के आयुष्य में उत्पन्न होवे उत्कृष्ट भी साधिक पूर्व क्रोड के आयुष्य में उत्पन्न होवे. शेष सब पूर्वोक्त जैसे. परंतु कालादेश से जघन्य उत्कृष्ट साधिक दो पूर्व क्रोड जानना ॥ २६ ॥ वही उत्कृष्ट स्थितिवाला उत्पन्न हुवा उसका पहिला गमा जैसे कहना परंतु स्थिति जघन्य तीन पल्योपम

सूत्र

वसजोणिएणं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! केवइय कालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणं साइरेग सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा तेणं भंते ! जीवा एग समएणं एवं एएसिं रयणप्पभपुढविगमग सरिसा णवगमगा णेतव्वा णवरं अप्पणा जहण्ण कालट्ठिईओ भवइ ताहे तिसुवि गमएसु इमं णाणत्तं चत्तारि लेस्साओ, अज्झवसाणा पसत्था सेसं तंचेव संवेहो साइरेगेण सागरोवमेण कायव्वो ॥ ३० ॥ जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा !

भावार्थ

के आयुष्यवाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच असुरकुमार में उत्पन्न होने योग्य होवे वे जघन्य दशहजार वर्ष उत्कृष्ट साधिक सागरोपम की स्थिति से उत्पन्न होवे. अहो भगवन्! वे जीवों एकसमय में कितने उत्पन्न होते हैं? वगैरह रत्नप्रभा पृथ्वी के नव गमा सरिखे यहां भी नव गमा कहना परंतु जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच के तीनों गमाओं में चार लेश्या व प्रशस्त अध्यवसाय कहना शेष सब वैसे ही कहना यावत् साधिक सागरोपम का संवेध है॥ ३० ॥ अहो भगवन्! यदि मनुष्य में से उत्पन्न होवे तो क्या संज्ञी मनुष्य में से उत्पन्न

शब्दार्थ गा० गाथापति के गि० गृह में अ० प्रवेश कीया त० तब से० वह सु० सुदर्शन गा० गाथापति ण० विशेष स० सर्व का० रसमय भो० भोजन से प० देवे से० शेष तं० तैसे जा० यावत् च० चौथा मा० मास क्षपण उ० अंगीकार कर वि० विचरता हूं ॥ ३२ ॥ ती० उस णा० नालिंदा बा० बाहिर अ० नजदीक को० कोल्लाग स० सन्निवेश हो० था व० वर्णन युक्त ॥ ३३ ॥ त० तहां को० कोल्लाग स० सन्निवेश में ब० बहुल मा० ब्राह्मण प० रहता था अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत रि० ऋग्वेद जा० यावत्

सूत्र णे सुदंसणस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे तएणं से सुदंसणे गाहावई, णवरं ममं सव्वकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेति सेसं तंचेव, जाव चउत्थं मासक्खमणं उव-संपज्जित्ताणं विहरामि ॥ ३२ ॥ तीसेणं णालिंदा बाहिरियाए अदूरसामंते एत्थणं कोल्लाएणामं सण्णिवेसे होत्था, सण्णिवेस वण्णओ ॥ ३३ ॥ तत्थणं कोल्लाए

अर्थ कर विचरने लगा ॥ ३१ ॥ अहो गौतम ! तीसरे मासखमण के पारणे के दिन राजगृह नगर में सुदर्शन शेठ के गृह में मैंने प्रवेश किया. सुदर्शन गाथापति मुझे इच्छानुसार सकल रसमय भोजन देकर संतुष्ट हुवा शेष सब अधिकार विजय गाथापति जैसे जानना यावत् चौथा मासखमण कर के विचरने लगा. ॥ ३२ ॥ उस नालिंदा पाडा के बाहिर पास एक कोल्लाससंनिवेश था. वह वर्णन युक्त था ॥ ३३ ॥ उस ग्राम सन्निवेश में बहुल नामक ब्राह्मण रहता था. वह ऋद्धिवंत यावत् अपराभूत था और ऋग्वेद यावत्

सूत्र

मादिल्ला तिण्णिगमा णेयव्वा; णवरं सरीरोगाहणा पढम त्तितिएसु गमएसु जहण्णेणं साइरेगाइं पंचधणुहसयाइं उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं सेसं तंचेव तईओगमो गाहणा जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेणवि तिण्णि गाउयाइं सेसं जहेव तिरिक्खजोणि- याणं सोचेव अप्पणा जहण्ण कालट्ठिईओ जाओ तस्सवि जहण्ण काल ट्ठिईय तिरिक्खजोणिय सरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा णवरं सरीरोगाहणा तिसुवि गमएसु जहण्णेणं साइरेगाइं पंच धणुहसयाइं उक्कोसेणवि साइरेगाइं पंचधणुहसयाइं सेसं तंचेव सोचेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ तस्सवि तेचेव पच्छिल्ला तिण्णि गमगा भाणियव्वा णवरं सरीरोगाहणा तिसुवि गमएसु जहण्णेणं तिण्णि

भावार्थ

ना है. उस ही जघन्य स्थितिवाले मनुष्य का जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच जैसे तीनों गमा कहना. तीनों गमा में अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट साधिक पांचसो धनुष्यकी जानना. उस ही उत्कृष्ट स्थितिवाले मनुष्य का उत्कृष्ट स्थितिवाले तिर्यंच के पीछे के तीन गमा कहना. परंतु तीनों में शरीर अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट तीन गाउ की कहना ॥ १२ ॥ यदि संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य में से उत्पन्न होवे तो क्या पर्याप्त में से उत्पन्न होवे या अपर्याप्त में से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! पर्याप्त संख्यात वर्ष के आयुष्य-

सूत्र

पणिहाणे पण्णत्ते, तंजहा-वइपणिहाणेय कायपणिहाणेय, एवं जाव चउरिंदियाणं, सेसाणं तिविहे जाव वेमाणियाणं ॥५॥ कइविहेणं भंते! दुप्पणिहाणे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा-मणदुप्पणिहाणे वइदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, जहेव पणिहाणेणं दंडओ भणिओ तहेव दुप्पणिहाणेणवि भाणियव्वो ॥ ६ ॥ कइविहेणं भंते! सुप्पणिहाणे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा मणसुप्पणिहाणे, वइ सुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ॥ मणुस्साणं भंते कइविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते? एवंचेव ॥ सेवं भंते! भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥७॥ तएणं समणे भगवं महावीरे जाव बहिया

भावार्थ

तक को तीनों प्रणिधान हैं ॥५॥ अहो भगवन्! कितने दुष्प्रणिधान कहे हैं? अहो! गौतम! तीन दुष्प्रणिधान कहे हैं. तद्यथा-१ मनदुष्प्रणिधान २ वचन दुष्प्रणिधान व ३ काया दुष्प्रणिधान. वगैरह जैसे प्रणिधान का दंडक कहा वैसे ही दुष्प्रणिधान का दंडक कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! कितने सुप्रणिधान कहे हैं? अहो गौतम! तीन सुप्रणिधान कहे हैं. तद्यथा १ मन सुप्रणिधान २ वचन सुप्रणिधान और ३ काया सुप्रणिधान. अहो भगवन्! मनुष्य को कितने सुप्रणिधान कहे हैं? अहो गौतम! मनुष्यों को तीनों सुप्रणिधान कहे हैं. अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं ऐसा कहकर श्री गौतम स्वामी विचरने लगे ॥ ७ ॥

त्ति ॥ चउवीसमसयस्स ... ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-णागकुमाराणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खमणुस्सदेवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णो णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, णो देवेहिंतो उववज्जंति, ॥ जइ तिरिक्ख जोणि एवं जहा असुरकुमाराणं वत्तव्वया तहा एएसिंपि जाव असण्णित्ति ॥ जइ सण्णि पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय ? गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति ॥ असंखेज्जवासाउय सण्णि

वचन सत्य है. यह चौवीसवा शतक का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २४ ॥ २ ॥

दूसरे उद्देशे में असुरकुमार का कथन कीया. तीसरे में नागकुमार का कथन करते हैं. राजगृह नगर यावत् ऐसे बोले अहो भगवन् ! नागकुमार कहां से उत्पन्न होते हैं ? क्या नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देव में से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नागकुमार तिर्यंच व मनुष्य में से उत्पन्न होते हैं परंतु नारकी व देव में से नहीं उत्पन्न होते हैं वगैरह जैसी असुरकुमार की वक्तव्यता कही वैसे सब यहांपर असंज्ञी तक कहना.-और संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय उत्पन्न होते हैं तो क्या संख्यात वर्ष के आयुष्य वाले,

सूत्र

वज्जमाणस्स जाव असंखेज्जवासाउय सण्णिमणुस्सेणं भंते ! जे भविए णागकुमारेसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! केवइय कालट्ठिईएसु उववज्जइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणं देसूणं दुपलिओवमं एवं जहेव असंखेज्ज वासाउयाणं तिरिक्खजोणियाणं णागकुमारेसु आदिल्ला तिण्णिगमगा तहेव इमस्सवि, णवरं पढम बिईएसु गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेणं साइरेगाइं पंचधणुहसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं, तईय गमओगाहणा जहण्णेणं देसूणाइं दो गाउयाइं, उक्कोसेणं तिण्णिगाउयाइं सेसं तंचेव ॥ सोचेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ तस्स तिसुवि गमएसु

भावार्थ

गौतम ! संज्ञी मनुष्य में से उत्पन्न होते हैं, परंतु असंज्ञी मनुष्य में से नहीं उत्पन्न होते हैं ? वगैरह जैसे असुरकुमार समान यावत् असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले संज्ञी मनुष्य जो नागकुमार में उत्पन्न होने योग्य होते हैं वे कितनी स्थिति से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट देश उणा दो पल्योपम. ऐसे ही जैसे असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच के नागकुमार में उत्पन्न होने के पहिले तीन गमे कहे वैसे ही तीनों गमा यहां कहना. विशेष में पहिला दूसरा गमा में शरीर की अवगाहना जघन्य साधिक पांच धनुष्य उत्कृष्ट तीन गाउ. तृतीय गमा में शरीर अवगाहना जघन्य देश उना

सूत्र

जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स सच्चेव लद्धी णिरवसेसा णवसु गमएसु; णवरं णागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा ॥ सेवं भंते ! २ त्ति ॥ चउवी० तइओ ॥ ३ ॥ अवसेसा सुवण्णकुमारा जाव थणियकुमारा एतेवि अट्ठउद्देसगा जहेव णागकुमाराणं तहेव णिरवसेसा भाणियव्वा सेवं भंते! २ त्ति ॥ चउ० एक्कारसमो उ० स० ॥ २४ ॥ ११ ॥ पुढवीकाइयाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति-किं णेरइएहिंतो तिरि-मणु-देवेहिंतो-

भावार्थ

गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट देश उणा दो पल्योपम. ऐसे ही जैसे असुरकुमार में उत्पन्न होने का कहा वैसे ही यहां पर नव गमाओं विशेषता रहित कहना. परंतु यहां नागकुमार की स्थिति व संवेध कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह चौवीसवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुआ॥२४॥३॥ जैसे तीसरे उद्देशे में नागकुमार की वक्तव्यता कही वैसे ही सुवर्ण कुमार यावत् स्तनित कुमार पर्यंत आठों जाति के भवनपति देव के आठ उद्देशे भिन्न २ विशेषता रहित कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यों चौवीसवे शतक के चौथे से अग्यारहवे तक आठ उद्देशे संपूर्ण हुवे ॥ २४ ॥ ४-५-६-७-८-९-१०-११ ॥

अहो भगवन् ! पृथ्वी कायामें कहां से उत्पन्न होवे क्या नारकी तिर्यंच, मनुष्य या देवमें से उत्पन्न होवे? अहो गौतम!

शब्दार्थ मं० मंखलि ना० नाम का मं० भिक्षुक पि० पिता हो० था त० तत्र त० उस मं० भिक्षुक को ए० ऐसे स० सब भा० कहना जा० यावत् अ० अजिन जि० जिन प्रलापी जि० जिन शब्द प० कहता वि० विचरता है तं० इसलिये णो० नहीं गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् वि० विचरता है गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र अ० अजिन जि० जिन प्रलापी वि० विचरता है स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् जि० जिन शब्द

सूत्र इक्खइ जाव परूवेइ, एवं खलु तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखलीणामं मंखेपिता होत्था। तएणं तस्स मंखस्स एवं तंचेव सव्वं भाणियव्वं जाव अजिणे जिणप्पलावी जिणसद्दं पगासमाणे विहरइ ॥ तं णो खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ गोसालेणं मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी विहरइ ॥

भावार्थ बोलने यावत् प्ररूपने लगे कि मंखली पुत्र गोशाला कि जो जिन जिन प्रलाप करता हुवा विचरता है वह मिथ्या है क्यों की श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि मंखली पुत्र गोशाला का पिता मंख था, उस की भद्रा भार्या थी वगैरह सब कथन पूर्वोक्त जैसे कहना यावत् अजिन होने पर जिन हूं, ऐसा प्रलाप करता हुवा विचरता है, इसलिये मंखली पुत्र गोशाला जिन व जिन

सूत्र

यासमहस्सट्ठिइएसु उववज्जा तेणं भंते ! जीवा एग समएणं पुच्छा? गोयमा ! अणुसमयं अविरहिया असंखेज्जा उववज्जंति ॥ छेवट्टसंघयणी॥सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं॥ मसूरचंद संट्ठिया॥ चत्तारि लेस्साओ॥णो सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी,णो सम्मामिच्छादिट्ठी॥ णो णाणी अण्णाणी, दो अण्णाणी णियमं ॥ णोमणजोगी णोवइजोगी कायजोगी ॥ उवओगो दुविहोवि चत्तारि सण्णाओ चत्तारि कसायाओ एगे फासिंदिए प० तिण्णि समुग्घाया ॥ वेदणा दुविहा ॥ णो इत्थीवेदगा णो पुरिसवेदगा णपुंसगवेदगा ॥ ठिई जहण्णेणं

भावार्थ

होवे. अहो भगवन् ! वे एक समय में कितने उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वे समय २ में विरह रहित असंख्यात उत्पन्न होवे. उन को संघयण छेवट्ट जानना, शरीर की अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट अंगुल का असंख्यातवा भाग. संस्थान मसुर की दाल अथवा अर्ध चंद्र का, लेश्या चार, समदृष्टि व सम-मिथ्यादृष्टि नहीं परंतु एक मिथ्यादृष्टि, ज्ञानी नहीं, अज्ञानी हैं, जिस में मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान ऐसे दो अज्ञान की नियमा है. मन योग व वचन योग नहीं है परंतु काया योग है, दो उपयोग, चार संज्ञा चार कषाय, एक स्पर्शेन्द्रिय, तीन समुद्घात, दोनों प्रकार की वेदना, स्त्री वेद पुरुष वेद नहीं परंतु नपुंसक वेद

सूत्र

एवा परियावज्जेजा, तस्सणं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! अणगारस्सणं भावियप्पणो जाव तस्सणं इरियावहिया किरिया कज्जइ, णो संपराइया किरिया कज्जइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? जहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो णिखित्तो ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ १ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ ॥ २ ॥ तेणं कालेणं तेणं

भावार्थ

अहो भगवन् ! युग प्रमाण [ चार हाथ ] भूमि देखकर चलते हुवे भावितात्मा अनगार के पांव नीचे कोई मुर्गी के बच्चे, बंदर के बच्चे, व कीडियों के बच्चे परितापना पावे तो उस अनगार को क्या ईर्यापथिक क्रिया होवे या संपरायिक क्रिया होवे ? अहो गौतम ! युगप्रमाण भूमि आगे देखते हुवे भावितात्मा अनगार के पांव की नीचे कोई मुर्गी के बच्चे, बंदर के बच्चे, व कीडियों के बच्चे परितापना पावे तो उन अनगार को ईर्यापथिक क्रिया होवे परंतु संपरायिक क्रिया होवे नहीं. अहो भगवन् ! ऐसा किस कारन से कहा गया है ? अहो गौतम ! जैसे सातवे शतक में संवृत उद्देशे में कहा वैसे ही यहां जानना. यावत् कषाय विच्छेद होने से ईर्या पथिक क्रिया लगे. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यावत् विचरने लगे ॥ १ ॥ फीर श्रमण भगवंत भी विचरने लगे ॥ २ ॥ उस काल उस समय में

शब्दार्थ प० कहते वि० विचरते हैं ॥ ६६ ॥ त० तब गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र ब० बहुत मनुष्य की अं० पास ए० यह अ० अर्थ सो० सुनकर णि० अवधार कर आ० क्रोधायमान हुवा जा० यावत् मि० देदीप्यमान हुवा आ० आतापना भू० भूमि से प० उतर कर सा० श्रावस्ती ण० नगरी की म० मध्य से जे० जहां हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी की कुं० कुंभकार की आ० दुकान ते० वहां उ० आकर कुं० कुंभकारिणी की कुं० कुंभकार की० दुकान में आ० आजीविक सं० संघ से सं० घेराया हुवा म० बहुत अ०

सूत्र समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासमाणे विहरइ ॥६५॥ तएणं गोसाले मखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभइत्ता सावत्थिं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं

भावार्थ प्रलापी नहीं है परंतु अजिन व अजिन प्रलापी है और श्री श्रवण भगवंत महावीर जिन व जिन प्रलापी है. ॥ ६६ ॥ बहुत मनुष्यों की पास से ऐसा सुनकर मंखली पुत्र गोशाला आसुरक्त हुवा यावत् दांत पीसतेहुवा और आतापना भूमि में से आकर श्रावस्ती नगरी की बीच में होता हुवा हालाहला कुंभकारी

मूत्र

जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेणवि बावीसं वाससहस्साइं ॥ ७ ॥ ९ ॥ सोचेव जहण्णकाल ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं एवं जहा सत्तमगमगो जाव भवादेसो ॥ कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्त अब्भहियाइं उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं एवइयं कालं ॥ ८ ॥ १० ॥ सोचेव उक्कोस काल ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं बावीसं वास सहस्स ठितीएसु उक्कोसेणवि बावीसं वास सहस्स ठितीएसु एवंचेव सत्तमगमगा वत्तव्वया जाणियव्वा जाव भवादेसोत्ति

भावार्थ

सातवा उत्पन्न हुवा नौवा गमा कहना परंतु स्थिति जघन्य उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की कहना ॥ ९ ॥ वही जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया में उत्पन्न हुवा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी अंतर्मुहूर्त की स्थिति से उत्पन्न होवे. ऐसे ही भवादेश पर्यंत सातवा गमा कहना. कालादेश से जघन्य बावीस हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट अठासी हजार वर्ष और चार अंतर्मुहूर्त अधिक. इतना काल यावत् करे ॥ १० ॥ वही उत्कृष्ट स्थिति में उत्पन्न हुवा जघन्य उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की स्थिति में उत्पन्न होता है वगैरह सातवा गमाकी वक्तव्यता भवादेश पर्यंत कहना. कालादेश से जघन्य चवालीस हजार वर्ष दो भव पृथ्वीकायाके

केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंत बालायावि भवामो ? ॥ तएणं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी-तुब्भेणं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणं पेच्चेह अभिहणह जाव उद्दवेह, तएणं तुब्भे पाणे पेच्चमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं जाव एगंतबालायावि भवह ॥ ७ ॥ तएणं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी णो खलु अज्जो ! अम्हे रीयं रीयमाणा पाणा पेच्चेमो, जाव उद्दवेमो, अम्हेणं अज्जो ! रीयं रीयमाणा कायं च जोयं च रीयं च पडुच्च दिस्सा पदिस्सा वयामो, तएणं अम्हे दिस्सा २ वयमाणा पदिस्सा वयमाणा २ णो पाणे पेच्चेमो

यावत् एकांत बाल हैं ? तब अन्य तीर्थिकोंने ऐसा उत्तर दिया कि अहो आर्यो ! तुम चलते हुवे प्राणों को आक्रमते हो, हणते हो यावत् मारते हो. इस तरह प्राणियों को आक्रमते, हणते यावत् मारते हुवे तुम करन तीन योग से एकांत बाल हो ॥ ७ ॥ तब भगवान् गौतम उन अन्यतीर्थिकों को ऐसा बोले अहो आर्यो ! गमन करते हुवे हम प्राणियों आतिक्रमते नहीं है यावत् उपद्रव नहीं करते हैं परंतु चलते हुवे काया योग, व परिभ्रमण आश्री देख २ कर चलते हैं. इस तरह देख २ कर चलते हम प्राणियों को अतिक्रमते नहीं है यावत् उपद्रव नहीं करते हैं. प्राणियों को नहीं आतिक्रमते यावत् उपद्रव नहीं करते

सूत्र

वाससहस्साइं एवं अणुबंधोवि एवं तिसुवि गमएसु ॥ द्विती संवेहो तइयछट्टसत्तमट्ठ णवमेसु गमएसु ॥ भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं सेसेसु चउसु गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं ॥ ततियगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तर वाससयसहस्सं एवइयं कालं गतिरागतिं करेज्जा ॥ ५ ॥ छट्ठे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीति वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं ॥ ६ ॥ सत्तमगमए कालादेसेणं जहण्णेणं सत्तवास सहस्साइं, अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं उक्कोसेणं सोलसुत्तर वाससय-

भावार्थ

नववा गमा में भवादेश से जघन्य दो भव उत्कृष्ट आठ भव शेष चार में जघन्य दो भव उत्कृष्ट असंख्यात भव. तीसरा गमा में कालादेश से जघन्य बावीस हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट एक लाख सोलह हजार वर्ष, छठा गमा में कालादेश से जघन्य बावीस हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक. उत्कृष्ट अठासी हजार वर्ष और चार अंतर्मुहूर्त अधिक. सातवा गमा में कालादेश से जघन्य सात हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट एक लाख सोलह हजार जिस में ८८००० वर्ष पृथ्वी के और २८००० वर्ष अपकाया के इतना काल

र्थ अमर्ष व० रखता वि० विचरता है ॥ ६७ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का अं० अंतेवासी आ० आनंद थे० स्थविर प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत छ० छठ छठ के अ० अंतर रहित त० तप कर्म से सं० संयम त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते वि० विचरते थे ॥ ६८ ॥ त० तब से० वह आ० आनंद थे० स्थविर छ० छठ क्षमण पा० पारणे में प० प्रथम पो० पोरिषी में ए० ऐसे ज० जैसे गो० गौतम स्वामी त० तैसे आ० पूछे त० तैसे जा०

सूत्र वहमाणे एवं वावि विहरइ॥६७॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे णामं थेरे पगइभदए जाव विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ६८ ॥ तएणं से आणंदेथेरे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ,

भावार्थ के कुंभकार की दुकान में आकर आजीविक से परवरा हुवा बहुत ईर्षा करनेलगा. ॥६७॥ उस काल उस समयमें महावीर स्वामीका प्रकृति भद्रिक यावत् विनीत आनंद नामका शिष्य निरंतर छठ२ के तप से आत्मा को भावते हुवे विचरते थे ॥ ६८ ॥ छठ के पारने के दिन प्रथम पौरुषि में स्वाध्याय यों गौतम स्वामी जैसे श्री महावीर स्वामी को पुछकर ऊंच नीच व मध्यकुल में यावत् फीरते हुवे हालाहला कुंभकारीकी

सेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीति वाससहस्साइं, बारसहिं राइंदिएहिं अब्भहियाइं, एवइयं एवं संवेहो उवउंजिऊण भाणियव्वो ॥ १४ ॥ जइ वाउकाइएहिंतो उववज्जंति, वाउकाइयाणवि एवंचेव णव गमका जहेव तेऊकाइयाणं णवरं पडागासंठिया, संवेहो वाससहस्सेहिं कायव्वो ॥ ततियगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं एगं वाससयसहस्सं एवं संवेहो उवउंजिऊण भाणियव्वो ॥ १५॥ जइ वणस्सइ काइएहिंतो उववज्जंति वणस्सइकाइयाणं आउकाइयगमग सरिसा णवगमगा भाणियव्वा

बावीस हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट अठासी हजार वर्ष और बारह रात्रि दिन अधिक. संबंध भी उपयोग लगाकर कहना ॥ १४ ॥ जैसे तेउकाया का कहा वैसे ही वायुकाया का जानना. परंतु इस में पताका का संस्थान है एक हजार वर्ष का संबंध कहना. तीसरा गमा में कालादेश से जघन्य बावीस हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट एक लाख वर्ष (पृथ्वी काया के चार भव के ८८००० वर्ष और वायुकाय के चार भवके १२००० वर्ष ) इतना काल तक गतागत करे ऐसे आगे का भी उपयोग रखकर संबंध कहना. ॥ १५ ॥ यदि वनस्पति काया में से उत्पन्न होवे तो वनस्पति काया का अप्काया

जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ॥ १० ॥ गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी सुट्ठणं तुम्हं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहुणं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, अत्थिणं गोयमा ! ममं बहवे अंतेवासी समणा णिग्गंथा छउमत्था जेणं णो पभू एयं वागरणं वागरेत्तए जहाणं तुमं, तं सुट्ठुण तुम गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहुणं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी ॥ ११ ॥ तएणं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तसमाणे हट्ठ तुट्ठ समणं भगवं

भावार्थ

और वंदना नमस्कार कर नम्रासन से यावत् पर्युपासना करने लगे. ॥ १० ॥ श्रमण भगवंत महावीरने गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थों को ऐसा कहा अहो गौतम ! तुमने अन्यतीर्थिकों को जो ऐसा उत्तरदिया सो अच्छा किया श्रेष्ठ किया. अहो गौतम ! मेरे बहुत छद्मस्थ श्रमण निर्ग्रन्थ हैं कि जो तेरे जैसे उत्तर देने में समर्थ नहीं हैं. इस से तुमने अन्यतीर्थिको जो उत्तरदिया सो अच्छा किया ॥ ११ ॥ अब श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ऐसा बोले तब भगवान गौतम हृष्ट तुष्ट हुवे और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना

 

सूत्र

तहेव जाव उच्चणीय मज्झिम जाव अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीईवयइ ॥ ६९ ॥ तएण से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीईवयमाणं पासइ, पासइत्ता एवं वयासी-एहि ताव आणंदा ! इओ, एगं महं उवमियं णिसामेह ॥ ७० ॥ तएणं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्तसमाणे जेणेव हालाहलाए कुंभका-

शब्दार्थ

यावत् उ० ऊंच नी० नीच म० मध्य जा० यावत् अ० फीरते हा० हालाहला कुं० कुंभकारी की अ० नजदीक से वी० गया ॥ ६९ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र आ० आनंद थे० स्थविर को हा० हाला हला कुं० कुंभकारिणी के कुं० कुंभकारावासकी अ० नजदीक वी० जाते पा० देखे पा० देखकर ए० ऐसा व० बोला ए० आव आ० आनंद इ० यहां ए० एक म० बडा उ० दृष्टान्त णि० सून ॥ ७० ॥ त० तब से० वह आ० आनंद थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र से ए० ऐसा

भावार्थ

कुंभकार की दुकान की पास जाते थे. ॥ ६९ ॥ मंखली पुत्र गोशाला आनंद स्थविर को हालाहला कुंभकारी की कुंभकार शाला की पास जाते हुवे देखकर ऐसा बोला कि अहो आनंद ! तुम यहां आओ, मैं तुम को एक बडी उपमा (दृष्टांत) कहूं ॥ ७० ॥ जब मंखलीपुत्र गोशाला आनंद स्थविर को ऐसा

सूत्र

पदेसियं ॥ १४ ॥ परमाहोहिएणं भंते ! मणूसे परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणइ तं समयं पासइ, जं समयं पासइ तं समयं जाणइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ परमाहोहिएणं मणूसे परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणइ णो तं समयं पासइ, जं समयं पासइ णो तं समयं जाणइ ? गोयमा ! सागारेसे णाणे भवइ, अणागारेसे दंसणे भवइ से तेणट्ठेणं जाव णो तं समयं जाणइ, एवं जाव अणंत पएसियं ॥ १५ ॥ केवलीणं भंते ! मणूसे जहा परमाहोहिए तहा केवलीवि, जाव अणंतपएसियं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स अट्ठमो उद्देसो ॥ १८ ॥ ८ ॥

भावार्थ

परमाणु पुद्गल जाने देखे? अहो गौतम! जैसे छद्मस्थका कहा वैसे ही अनंत प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहना॥१४॥ अहो भगवन् ! परम अवधिज्ञान वाला मनुष्य परमाणु पुद्गल को जिस समय जानते हैं उस ही समय क्या देखते हैं, जिस समय देखते हैं उस ही समय क्या जानते हैं? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन्! किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है? अहो गौतम! ज्ञान साकार है और दर्शन अनाकार है इस से जिस समय में जाने उस समय में देखे नहीं और जिस समय में देखे उस समय में जाने नहीं ऐसे ही अनंत प्रदेशिक स्कंध तक कहना.॥१५॥ अहो भगवन्! केवली मनुष्य वगैरह जैसे परम अवधिज्ञानीका कहा वैसे ही केवली का कहना यावत् अनंत प्रदेशिक. अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं यह अठारहवा शतकका आठवा उद्देशा संपूर्ण ॥१८॥८॥

सूत्र

जोगी, वइजोगी, कायजोगी ? गोयमा ! णो मणजोगी, णो वइजोगी, कायजोगी ॥ ५ ॥ तेणं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ ६ ॥ तेणं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओणं अणंत पदेसियाइं दव्वाइं एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति ॥ तेणं भंते ! जीवा जमाहारेंति तंचिज्जं-

भावार्थ

क्या वे जीवों मनयोगी, वचन योगी व काया योगी हैं ? अहो गौतम ! मनयोगी नहीं है वचन योगी नहीं है परंतु काया योगी हैं ॥५॥ अहो भगवन् ! क्या वे साकारोपयोगयुक्त हैं या अनाकारोपयोगयुक्त हैं? अहो गौतम ! साकारोपयोगयुक्त व अनाकारोपयोगयुक्त हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वे जीव किस का आहार करते हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य से अनंत प्रदेशिक द्रव्य के स्कन्ध का ऐसे ही जैसे पन्नवणा के पहिले आहार उद्देशे में कहा वैसे ही यहां जानना. यावत् सब प्रकार से आहार करे. अहो भगवन् ! वे जीवों जिस का आहार करते हैं वह इन्द्रिय शरीरपने परिणमता है और जिस का आहार नहीं करते हैं वह इन्द्रिय शरीरपने नहीं परिणमता है और जो परिणमे हुवे पुद्गलों हैं वे क्या मल की तरह विनाश पाते हैं ? हां गौतम ! वे जीवों जिस का आहार करते हैं. वह इन्द्रिय शरीरपने परिणमता है, जिस का आहार नहीं

शब्दार्थ होकर का० काल के अवसर में का० काल कि० करके अ० किसी देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न हुआ अ० मैं उ० उदाइ णा० नामक कुं० कुंडिकायनीक अ० अर्जुन गो० गौतम पुत्र का स० शरीर विं० छोड कर गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र का स० शरीर में अ० प्रवेश किया अ० प्रवेश करके इ० यह सा० सातवा प०पउट्ट परिहार अ०अंगीकार किया ॥ ८८॥ जे० जो आ०आयुष्मन् का० काश्यप अ० हमारे स० मत में के० कोइ सि० सीझे सि० सीझते हैं सि० सीझेंगे स० सब ते० वे च० चौरासी म० महाकल्प स० लक्ष स० सात दी० द्वीप स० सात सं० संजूथ स० सात स० संज्ञी ग० गर्भ स० सात

सूत्र किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे, अहं णं उदाई णामं कुंडियायणीए अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहामित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसामित्ता इमं सत्तम पउट्टपरिहारं परिहरामि ॥८८॥ जेवियाइं आउसो ! कासवा ! अम्हं समयंसि केइ सिज्झिसुवा सिज्झितिवा सिज्झिस्संतिवा सव्वे ते चउरासीइ महाकप्पसयसहस्साइं सत्तदिव्वे, सत्त संजूहे,

भावार्थ पने उत्पन्न हुआ है. कुंडिकायन गोत्रीय उदाइ नामवाले मैंने अर्जुन गौतमपुत्र का शरीर छोडकर मंखलीपुत्र गोशाला के शरीर में प्रवेश किया है. इस तरह प्रवेश करते मैंने सातवा शरीर धारन किया है ॥ ८८ ॥ अहो आयुष्मन् काश्यप ! जो कोई गत काल में सिद्ध हुवे, वर्तमान में सीझते हैं और अनागत

सूत्र

पुढवीकाइय लद्धी जहा असुरकुमाराणं णवर एगा तेउलेस्सा पण्णत्ता, तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा णियमं ॥ ठिई जहण्णेणं अट्ठभाग पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्स मब्भहियं; एवं अणुबंधोवि, कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठभाग पलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्सेणं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं एवइयं ॥ एवं सेसावि अट्ठगमगा भाणियव्वा॥णवरं ठिई कालादेसेणं च जाणेज्जा ॥ ३८ ॥ जइ वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति किं कप्पोववण्णग वेमाणियं कप्पातीत गवेमाणियहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! कप्पोववण्णग वेमाणिय जाव उववज्जंति णो कप्पातीतगवेमाणिय जाव उववज्जंति ॥ जइ कप्पोववण्णग जाव उववज्जंति किं

भावार्थ

जैसे कहना. परंतु एक तेजोलेश्या, तीन ज्ञान तीन अज्ञान की नियमा, स्थिति और अनुबंध जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट एक पल्योपम और एक लाख वर्ष अधिक. कालादेश से जघन्य पल्योपम का आठवा भाग और अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष ज्योतिषी आश्री और बावीस हजार वर्ष अधिक. ऐसे ही आठ गमा कहना. परंतु स्थिति और कालादेश भिन्न कहना ॥३८॥ यदि वैमानिक में से उत्पन्न होवे तो क्या कल्पोत्पन्न में से उत्पन्न होवे या कल्पातीत में से उत्पन्न होवे ? अहो

सूत्र

॥ एवं सेसावि अट्ठगमगा भाणियव्वा, णवरं ठिइं कालादेसं चजाणेज्जा ॥ ४० ॥ ईसाणं देवेण भंते ! जे भविए एवं ईसाण देवेणवि णवगमगा भाणियव्वा, णवरं ठिइं अणुबंधो जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ॥ सेसं तचेव ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ चउवीसइम सयस्स दुवालसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २४ ॥ १२ ॥ × ×

णमोसुअदेवयाए ॥ आउकाइएणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति, एवं जहेव पुढवी-काइय उद्देसए जाव पुढवीकाइएणं भंते ! जे भविए आउकाइएसु उववज्जित्तए सेणं

भावार्थ

दो सागरोपम बावीस हजार वर्ष अधिक. ऐसे ही शेष आठ भांगे कहना. परंतु स्थिति और कालादेश भिन्न २ कहना ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! ईशान देव पृथ्वीकाया में वगैरह उस के नव गमा सौधर्म देव-लोक जैसे कहना. परंतु स्थिति और अनुबंध जघन्य सातिरेक एक पल्योपम उत्कृष्ट साधिक दो सागरोपम शेष वैसे ही कहना अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यों कहकर यावत् विचरने लगे. यह चौवीस वा शतक का बारहवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ २४ ॥ १२ ॥

तेरहवे उद्देशे के प्रारंभ में श्रुत देवता को नमस्कार किया है. अहो भगवन् ! अप्काया में कहां से

सूत्र

भंतेत्ति जाव विहरइ चउवीसइमसयस्स चउद्दसमो उद्देसो ॥ २४ ॥ १४ ॥ वाउकाइयाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति, एवं जहेव तेऊकाइय उद्देसो तहेव णवरं ठिई संवेहंच जाणेज्जा सेवं भंते ! २ त्ति ॥ चउवीस० पण्णरसमो॥२४॥१५॥ वणस्सइकाइयाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति, एवं पुढवीकाइय उद्देसो सरिसो णवरं जाहे वणस्सइकाइया वणस्सइकाइएसु उववज्जंति, ताहे पढमबिइय चउत्थ पंचमेसु गमेसु परिमाण अणुसमयं अविरहियं अणंता उववज्जंति, भवादेसेणं जहण्णेणं दो

भावार्थ

अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यों कह कर विचरने लगे. यह चौवीसवा शतक का चौदहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २४ ॥ १४ ॥

अहो भगवन् ! वायुकाया कहां से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे तेउकाया का उद्देशा कहा वैसे ही कहना. परंतु स्थिति और संवेध वायुकाया का जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं, यों कहकर यावत् विचरने लगे. यह चौवीसवा शतक का पन्नरहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २४ ॥ १५ ॥

अहो भगवन् ! वनस्पतिकायिक कहां से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसे पृथ्वीकाया का उद्देशा कहा वैसे ही कहना. जब वनस्पतिकाया वनस्पतिकाया में उत्पन्न होवे तब पहिला, दूसरा, चौथा और

सूत्र

चउसु गमएसु संवेहो सेसेसु पंचसु गमएसु तहेव अट्ठभवा, एवं जाव चउरिंदिएणं समं चउसु संखेज्जभवा, पंचसु अट्ठभवा, पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए मणुस्सेसु समं तहेव अट्ठभवा, ठिई संवेहं च जाणेज्जा ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ चउवीसइम सयस्स सत्तरसमो ॥ २४ ॥ १७ ॥

तेइंदियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति, एवं तेइंदियाणं जहेव बेइंदियाणं उद्देसो णवरं ठिई संवेहंच जाणेज्जा, तेउक्काइएसु उववज्जइ, समं तइओगमो उक्कोसेणं

भावार्थ

से जघन्य दो अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट संख्यात काल. इतना यावत् करे. उन के चार गमा में संवेध वैसे ही कहना. शेष पांच गमा में आठ भव ऐसे ही यावत् चतुरेन्द्रिय की साथ कहना चार में संख्यात भव और पांच गमा में आठ भव. पंचेन्द्रिय तिर्यंच और मनुष्यकी साथ भी वैसे ही आठ भव. स्थिति और संवेध अपना २ जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह चौवीसवा शतक का सत्तरहवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २४ ॥ १७ ॥

अहो भगवन् ! तेइन्द्रिय कहां से उत्पन्न होवे ? जैसे बेइन्द्रिय का उद्देशा कहा वैसे ही तेइन्द्रिय का उद्देशा विशेषता रहित कहना. तेउकाया में उत्पन्न होनेवाले का तीसरा गमा में उत्कृष्ट दो सो आठ रात्रि

शब्दार्थ धनुष्य स० सहस्र उ० उंची ए० इस गं० गंगा की आ० लम्बाइ से स० सात गं० गंगा ए० एक म० महागंगा स० सात म० महागंगा सा० वह ए० एक सा० सादीन गंगा स० सात सा० सादीनगंगा सा० वह ए० एक म० मृत्यु गंगा स० सात म० मृत्यु गंगा सा० वह ए० एक लो० लोहितगंगा स० सात लो० लोहितगंगा सा० वह ए० एक अ० अवंतिगंगा स० सात अ० अवंतिगंगा सा० वह ए० एक प० परमावती ए० ऐसे ही स० अनुक्रम से ए० एक गं० गंगा स० लक्ष स० सतरह स० हजार छ०

सूत्र माणेणं सत्तगंगाओ, एगा महागंगा सत्तमहागंगाओ सा एगा सादीणगंगा, सत्तसादीणगंगाओ सा एगा मच्चुगंगा, सत्तमच्चुगंगाओ सा एगा लोहियगंगा, सत्त लोहियगंगाओ सा एगा अवंतीगंगा, सत्त अवंतीगंगाओ सा एगा परमावती, एवामेव सपुव्वावरेणं एगंगंगासयसहस्सं सत्तरसयसहस्सा छच्चगुणपण्णं गंगासया भवंतीति

भावार्थ जहां जाकर समस्त प्रकार से समाप्तपने को पाई है, वहां गंगा का मार्ग पांच सो योजन का लम्बा, अर्धा योजन का चौडा व पांचसो धनुष्य का ऊंचा है. ऐसी सात गंगा एकत्रित करने से एक महा गंगा होती है, सात महा गंगा की एक सादीन गंगा, सात सादीन गंगा की एक मृत्यु गंगा, सात मृत्यु गंगा की एक लोहित गंगा, सात लोहितगंगा की एक अवन्ती गंगा, सात अवन्ती गंगा की एक परमावती

सूत्र

पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं णेरइय-तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो-उववज्जंति ? गोयमा ! णेरइएहिंतोवि उववज्जंति, तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ १ ॥ जइ णेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभा पुढवि णेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढवि णेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहे सत्तमाए पुढवि णेरइएहिंतोवि उववज्जंति, ॥ २ ॥ रयणप्पभा पुढवि णेरइएणं भंते ! जे भविए तिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! केवतिकाल ट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं

भावार्थ

अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच कहां से उत्पन्न होवे ? क्या नारकी, तिर्यंच, मनुष्य या देव में से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देव इन चारों में से उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ जब नारकी में से उत्पन्न होवे तो क्या रत्नप्रभा में से उत्पन्न होवे यावत् नीचे की सातवी तमतम प्रभा में से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी नारकी में से उत्पन्न होवे यावत् नीचे की सातवी तमतमप्रभा में से उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा नारकी में से जो कोई तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होने योग्य होवे वे कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त

शब्दार्थ चं० चंपा ण० नगरी से ब० बाहिर अं० अंग मंदिर चे० उद्यान में म० मल्लराम का स० शरीर वि० छोडकर मं० मंडित के म० शरीर में अ० प्रवेश कर बी० बीस वा० वर्ष त० तीसरा पा० शरीर परावर्त प० किया त० उस में जे० जो च० चौथा पा० शरीर परावर्त से० वह व० वाणारसी ण० नगरी की ब० बाहिर का० काम महावन चे० उद्यान में मं० मंडित का स० शरीर वि० छोडकर रो० रोह के स० शरीर में अ० प्रवेश करके ए० गुनीस वा० वर्ष च० चौथा पा० शरीर परावर्त प० किया त० उस में जे० जो० पं० पांचवा प० शरीर परावर्त से० वह आ० आलंभिका ण० नगरी की ब० बाहिर प०

सूत्र रामि ॥ तत्थणं जेसे तच्चे पउट्टपरिहारे सेणं चंपाए णयरीए बहिया अंगमंदिरंसि चेइयंसि मल्लरामस्स सरीरं विप्पजहामि २ त्ता मंडियस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसामित्ता, वीसं वासाइं तच्चं पउट्ट परिहारं परिहरामि ॥ तत्थणं जेसे चउत्थे पउट्ट परिहारे सेणं वाणारसीए णयरीए बहिया काममहावणंसि चेइयंसि मंडियस्स सरीरं विप्पजहामि २ त्ता रोहस्स सरीरं अणुप्पविसामि, अणुप्पवि सामित्ता एगूणवीसं वासाइं चउत्थं पउट्ट

भावार्थ नगर की बाहिर चंद्रोत्तर उद्यान में पणकके शरीर में से नीकलकर मल्लराम के शरीर में प्रवेश किया. वहां इक्कीस वर्ष पर्यंत रहा. वहां से तीसरा शरीर परावर्तन चंपा नगरी के बाहिर अंग मंदिर उद्यान में मल्लराम का शरीर छोडकर मंडित के शरीर में प्रवेश किया, वहां बीस वर्ष पर्यंत रहा. वहां से चौथा शरीर

सूत्र

एणवि एवं जाव चउरिंदिया उववातेयव्वो, णवरं सव्वत्थ अप्पणो लद्धी भाणियव्वा, णवसुवि गमएसु भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं. उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं कालादेसेणं उभओट्ठितिं करेज्जा, सव्वेसिं सव्वगमएसु, जहेव पुढवीकाइएसु उववज्जमाणाणं लद्धी तहेव सव्वत्थ ट्ठिई संवेहंच जाणेज्जा ॥ ६ ॥ जइ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सण्णिपंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति असण्णिपंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा! सण्णिपंचिंदिय भेदे जहेव पुढवीकाइएसु उववज्जमाणस्स जाव असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएणं भंते! जे भविए पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए सेणं भंते! केवइकाल ? गोयमा! जहण्णेणं

भावार्थ

कहना. विशेष में सर्वत्र अपनी लब्धि कहना. नवों गमा में भवादेश से जघन्य दो भव उत्कृष्ट आठ भव. कालादेश से दोनों की स्थिति का मीलान करना. सब के सब गमा में जैसे पृथ्वीकाया में उत्पन्न होने की लब्धि कही वैसे ही सर्वत्र कहना. परंतु स्थिति और संवेध भिन्न कहना ॥ १६ ॥ अहो भगवन्! यदि तिर्यंच पंचेन्द्रिय में से उत्पन्न होवे तो क्या संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच में से उत्पन्न होवे अथवा असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम! संज्ञी पंचेन्द्रिय वगैरह भेद जैसे पृथ्वीकाया में

शब्दार्थ

वि० निर्ग्रंथों को कि० किंचित् आ० पीडा वि० व्याबाध छ० चर्मछेद अ० नहीं करता हुवा पा० देखकर गो० गोशाल के० मंखलीपुत्र की अं० पास से आ० आत्मा से अ० अवक्रम कर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० वहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को ति० तीन वार आ० आवर्त प० प्रदक्षिणा वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को उ० पास होकर वि० विचरने लगे थ० कितनेक आ० आजीविक थे० स्थविर गो० गोशाला मं०

सूत्र

आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकरेमाणे पासइ, पासइत्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ आताए अवक्कमंति, अवक्कमंतित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छंतित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति अत्थे-

भावार्थ

का इन को किंचित्मात्र बाधा, पीडा यावत् चर्म छेदकर सका नहीं. ऐसा देखकर आजीविक मत के कितनेक स्थविर मंखलीपुत्र गोशाला की पास से स्वयमेव नीकल गये और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आये. वहां महावीर स्वामी को तीन आवर्त व प्रदक्षिणा सहित वंदना नमस्कार कर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की नेश्राय से विचरने लगे और कितनेक मंखली पुत्र गोशाला की

सूत्र

अखंखेज्जइभाग ट्ठिति उववज्जंति ॥ तेणं भंते! जीवा एवं जहा रयणप्पभाए उववज्ज-माणस्स असण्णिस्स तहेव णिरवसेसं जाव सेसं कालादेसोत्ति णवरं परिमाणं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं संखेज्जावा उववज्जंति, सेसं तंचेव । सोचेव अप्पणा जहण्णकाल ट्ठिईओ जाओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं ट्ठिईएसु उक्कोसेणं पुव्व-कोडीआउएसु उववज्जंति ॥ तेणं भंते! अवसेसं जहा एयस्स पुढवीकाइएसु उववज्ज माणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु जाव अणुबंधोत्ति ॥ भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता

भावार्थ

के असंख्यातवे भाग से उत्पन्न होवे. अहो भगवन्! वे जीवों वगैरह जैसे रत्नप्रभा में उत्पन्न होनेवाले असंज्ञी का कहा वैसे ही कालादेश पर्यंत कहना. परंतु परिमाण जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात उत्पन्न होते हैं, शेष वैसे ही. वही जघन्य स्थितिवाला उत्पन्न हुआ जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड की स्थिति से उत्पन्न होवे. अहो भगवन्! वे एक समय में कितने उत्पन्न होवे? वगैरह पृथ्वीकाया में इस का उत्पन्न होने के जैसे बीच के तीन गमा कहे वैसे ही अनुबंध पर्यंत कहना. भवादेश से जघन्य दो भव उत्कृष्ट आठ भव. कालादेश से जघन्य दो अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चार पूर्व क्रोड और चार अंतर्मुहूर्त

सूत्र

एसचेव वत्तव्वया जहा सत्तमगमए, णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतो मुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ एवइयं ॥ सोचेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागं, एवं जहा रयणप्पभाए जहण्णेणं उववज्ज-माणस्स असण्णिस्स णवमंगमं तहेव णिरवसेसं जाव कालादेसोत्ति, णवरं परिमाणं जहा एतस्सेव ततियगमे, सेसं तंचेव ॥ ६ ॥ जइ सण्णि पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासा असंखेज्जवासाउय? गोयमा! संखेज्जवासा णो असंखेज्जवासा ॥ जइ संखेज्जवासाउय

भावार्थ

जघन्य स्थिति मे उत्पन्न हुवा सातवा गमा जैसी वक्तव्यता कहना परंतु कालादेश से जघन्य पूर्व क्रोड अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट चार पूर्व क्रोड चार अंतर्मुहूर्त अधिक. वही उत्कृष्ट स्थिति में उत्पन्न हुवा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवा भाग और उत्कृष्ट भी पल्योपम का असंख्यातवा भाग. ऐसे ही रत्नप्रभा में असंज्ञी का जघन्य से उत्पन्न होने का नववा गमा कहा वैसे ही यहां कालादेश पर्यंत कहना. परिमाण इस के ही तीसरे गमा जैसे कहना ॥ ६ ॥ यदि संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रियमें से उत्पन्न होवे तो क्या संख्यातवर्षवाले या असंख्यात वर्षवाले उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! संख्यात वर्षवाले उत्पन्न होवे परंतु असंख्यात वर्षवाले

शब्दार्थ मंखलीपुत्र को उ० प्राप्त होकर वि० विचरने लगे ॥ ११३ ॥ त० तब से० वह गो० गोशाला मं० मंखली-पुत्र ज० जिस लिये ह० शीघ्र आ० आयाथा त० उसे अ० नहीं साधता रु० इन्द्रादि प० देखता दी० दीर्घ उ० उष्ण नी० निश्वास डालते दा० दाढी के लो० रोम लुं० तोडता अ० पृष्ठभाग कं० खुजालता पु० पुतादि प० फोडता ह० हस्त वि० मसलता दो० दोनों पा० पांव से भू० भूमि को० कूटते हा० हाहा अ० अरे ह० हणाया अ० मैं अ० है ति० ऐसा क० करके स० श्रमण भ० भगवंत म०

सूत्र गहया आजीवियथेरा गोसालं चेव मंखलिपुत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ॥ ११३ ॥

तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते जस्सट्ठाए हव्वमागए तमट्ठमसाहेमाणे रुंदाइं पलोए-माणे दीहुण्हाइं नीससमाणे, दाढियाए लोमाए लुंचमाणे, अवटुं कंडुयमाणे, पुयलिं पप्फोडेमाणे हत्थे विणिद्धुणमाणे दोहिंविपाएहिं भूमिं कोट्टेमाणे हाहा अहो हतो हमस्सतीति कट्टु समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडि-

भावार्थ नेश्राय में रहकर विचरने लगे ॥ ११३ ॥ अब मंखली पुत्र गोशाला जिस कार्य ( महावीर स्वामी का वध ) के लीये आया था उस कार्य को नहीं साध सकने से दशोंदिशि में दीर्घ दृष्टि से देखता हुवा, दीर्घ नीश्वास डालता हुवा, दाढी के बालों हाथ से खींचता हुवा, गरदन खुजालता हुवा, दोनों हस्त परस्पर मसलता हुवा, दोनों पांवों से जमीन तोडता हुवा, 'हाहा,' 'अहो' 'मैं हणाया' ऐसा करके भगवंत श्री महावीर

सूत्र

उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं पुव्वकोडी पुहुत्त मब्भहियाइं एवइयं कालं ॥ ८ ॥ सोचेव जहण्णकाल ट्ठितीएसु उववण्णो एसचेव वत्तव्वया णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ॥ सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उक्कोसेणवि तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जंति ॥ एसचेव वत्तव्वया णवरं परिमाणं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा उववज्जंति ॥ ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं जोअणसहस्सं सेसं तंचेव जाव

भावार्थ

क्रोड अधिक इतना काल यावत् करे ॥ ८ ॥ वही जघन्य स्थिति से उत्पन्न हुवा ऐसी वक्तव्यता कहना; परंतु कालादेश से जघन्य दो अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चार पूर्वक्रोड चार अंतर्मुहूर्त अधिक. वही उत्कृष्ट स्थिति से उत्पन्न हुवा जघन्य उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति में होवे. और सब वही वक्तव्यता कहना परंतु परिमाण में जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात उत्पन्न होवे, अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन. शेष अनुबंध पर्यंत वैसे ही कहना. भवादेश से दो भव. कालादेश से जघन्य तीन पल्योपम और अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट तीन पल्योपम और पूर्व

मूल

[illegible] ठिइआई, पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियाई, संचिट्ठ जहण्णकालट्ठिइएसु उववण्णा [illegible] जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्त मब्भहियाई, [illegible] पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ॥ संचिट्ठ [illegible] जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठिइएसु उववज्जेज्जा तिपलिओ- [illegible] जहा एत्थसंव सत्तमगमए [illegible] जहण्णेणं तिण्णिपलिओवमाई पुव्वकोडीए [illegible] तिण्णिपलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाई, एवइयं जाव [illegible] किं सण्णिमणुस्सेहिंतो असण्णिमणुस्से ?

भावार्थ

[illegible] कालादेश से जघन्य दो काल अंतर्मुहूर्त अधिक, उत्कृष्ट चार [illegible] अधिक [illegible] उत्पन्न हुआ, जघन्य उत्कृष्ट तीन पल्योपम में [illegible] भवादेश से दो भव कालादेश से [illegible] तीन पल्योपम पूर्व और अधिक इतना काल [illegible] मनुष्य में से उत्पन्न होवे या

मूल

माणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु वत्तव्वया भणिया एसचेव एयस्सवि मज्झिमएसु तिसु गमएसु णिरवसेसा भाणियव्वा, णवरं परिमाणं उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति सेसं तंचेव ॥ सोचेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ सच्चेव पढमगमग वत्तव्वया णवरं ओगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणवि पंचधणुसयाइं, ठिईं अणुबंधो जहण्णेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्वकोडी, सेसं तंचेव जाव भवादेसोत्ति कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइं, एवइयं जाव करेज्जा ॥ सोचेव जहण्ण कालट्ठिईए उववण्णो एसचेव वत्तव्वया णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्त

भावार्थ

पल्योपम प्रत्येक मास अधिक उत्कृष्ट तीन पल्योपम पूर्व क्रोड अधिक. इतना यावत् करे. यही जघन्य स्थिति वाला उत्पन्न हुवा उस की सब वक्तव्यता संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होने के बीच के तीनों गमा जैसे कहना. परंतु परिमाण उत्कृष्ट में संख्यात उत्पन्न होते हैं ऐसा कहना. यही उत्कृष्ट स्थिति से उत्पन्न हुवा यावत् सब पहिला गमा जैसे कहना. परंतु अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट पांचसो धनुष्य की स्थिति ... भवादेश पर्यंत वैसे ही कहना. कालादेश से जघन्य पूर्व

सूत्र

दुविहा उवओग णिव्वत्ती प० तंजहा-सागारोवओगणिव्वत्ती, अनागारओग णिव्वत्ती, एवं जाव वेमाणिया ॥ १८ ॥ संगह गाथा-जीवाणं णिव्वत्ती कम्मप्पगति णिव्वत्ती, सरीरणिव्वत्ती, सव्विदिय णिव्वत्ती, भासायमणेकसायाया ॥ १ ॥ वण्णे गंधे रसे फासे संठाण विहीय होय बोधव्वे ॥ लेस्सादिट्ठीणाणे, उवओगो होय जोगेय ॥२॥ सेवं भंते! भंतेत्ति ॥ एगुणवीसइमस्स अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो॥१९॥८॥ कइविहाणं भंते ! करणे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते तंजहा-दव्व

भावार्थ

उपनी कहना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! उपयोग निर्वृत्ति के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! उपयोग निर्वृत्ति के दो भेद कहे हैं साकारोपयोग निर्वृत्ति व अनाकारोपयोग निर्वृत्ति. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना ॥ १७ ॥ अब इन की संग्रह गाथा का अर्थ करते हैं. १ जीव निर्वृत्ति २ कर्म निर्वृत्ति ३ शरीर ४ इन्द्रिय ५ भाषा ६ मन ७ कषाय ८ वर्ण ९ गंध १० रस ११ स्पर्श १२ संस्थान १३ लेश्या १४ दृष्टि १५ ज्ञान १६ अज्ञान १७ योग और १८ उपयोग. इन की निर्वृत्ति. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह उन्नीसवा शतक का आठवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ ८ ॥

आठवे उद्देशे में निर्वृत्ति का कथन किया. नववे उद्देशे में करण का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् !

मूत्र

जइ भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति किं असुरकुमार भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति जाव थणियकुमार भवणवासी ? गोयमा ! असुरकुमार भवणवासी जाव थणियकुमार भवणवासी ॥ १४ ॥ असुरकुमारेणं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्ख जोणिएसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! केवइय ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु उक्कोसेणं पुव्वकोडि ट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, असुरकुमाराणं लद्धी, णवसुवि गमएसु जहा पुढवीकाइएसु उववज्जमाणस्स एवं जाव ईसाणस्स देवस्स तहेव लद्धी ॥ भवादेसेणं सव्वत्थ अट्ठ भव गहणाइं, उक्कोसेणं जहण्णेणं दोण्णि। ट्ठितिं संवेहंच जाणेज्जा॥

भावार्थ

पति वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक देव में से उत्पन्न होते हैं. यदि भवनपति देव में से उत्पन्न होते हैं तो क्या असुरकुमार में से यावत् स्तनितकुमार में से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! असुरकुमार भवनवासी यावत् स्तनित कुमार भवनवासी में से उत्पन्न होते हैं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! जो असुरकुमार तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होने योग्य होवे वह कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड की स्थिति से उत्पन्न होवे. असुरकुमार की लब्धि नवों गमा में जैसे पृथ्वीकाया में असुरकुमार की उत्पत्ति ईशान पर्यंत की कही थी वैसे ही कहना. परंतु सब में भवादे-

 

तात्पर्यार्थ म० महावीर स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ को आ० आमंत्रण कर ए० ऐसा व० बोला मा० भो अ० आर्य गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र म० मेरा व० वध के लिये स० शरीर में से ते० तेज नि० नीकाला सं० दह अ० समर्थ प० पूरा सो० सोलह ज० देश को अं० अंग वं० वंग म० मगध म० मलय मा० मालव अ० अच्छ व० वत्स को० कोच्छ पा० पाढ ला० लाढ व० वज्री मो० मोली का० काशी को० कोशल को अ० आघात मं० मारने के घा० घात के लिये व० वध के लिये उ० जलाने के लिये भा० भस्म

त्ति ! समणे भगवं महावीरे समणे णिग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी जावइएणं अज्जो ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरीरगंसि तेयं णिसट्ठे सेणं अलाहि पज्जंते सोलसण्ह जणवयाणं, तंजहा अंगाणं, वंगाणं, मगहाणं, मलयाणं, मालवगाणं, अच्छाणं, वच्छाणं, कोच्छाणं, पाढाणं, लाढाणं, वज्जीणं, मोलीणं, कासीणं, कोस-

भावार्थ शीतल मृत्तिका के पानी से अपने गात्रों को सींचता हुवा रहने लगा ॥ ११४ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी श्रमण निर्ग्रन्थों को उद्देशकर बोले कि अहो आर्यों ! मंखलीपुत्र गोशालाने मेरे वध के लिये जो तेजो लेश्या नीकाली थी वह यदि अपने पूर्णरूप में प्रकट होती तो १ अंग २ वंग ३ मगध ४ मलय ५ मालव ६ अच्छ ७ वच्छ ८ कोच्छ ९ पाढ १० लाढ ११ वज्री १२ मोली १३ काशी १४ कोशल

मूत्र

सयस्स वीसइमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २४ ॥ २० ॥ × ×

मणुस्साणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णेरइएहिंतोवि उववज्जंति, जाव देवेहिंतोवि उववज्जंति, एवं उववातो जहा पंचिंदियतिरिक्ख जोणिय उद्देसए जाव तमापुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति, णो अहे सत्तमाए पुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति ॥१॥ रयणप्पभापुढवीणेरइयाणं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जंति सेणं भंते ! केवइकाल? गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहुत्तट्ठिईएसु उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु अवसेसा वत्तव्वया

भावार्थ

नतक का वीसवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २४ ॥ २० ॥ (०) (०)

अहो भगवन् ! मनुष्य कहां से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य नारकी में से उत्पन्न होते हैं. और तिर्यंच, मनुष्य व देव यों चारों गति में से उत्पन्न होते हैं यों जैसे तिर्यंच पंचेन्द्रिय का उपपात कहा. वैसे ही कहना. यावत् छठी तमा में से मनुष्य उत्पन्न होते हैं. परंतु सातवी तमतमा में से नीकलकर मनुष्य नहीं होते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जो रत्नप्रभा नरक का नारकी मनुष्य में उत्पन्न होता है वह कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य प्रत्येक मास उत्कृष्ट पूर्व क्रोड रत्नप्रभा का जीव मनुष्यायु बंध करता हुवा कम से कम प्रत्येक अर्थात् दो से नव मास तक के आयुष्य में उत्पन्न

सयस्स वीसइमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २४ ॥ २० ॥ × ×

सूत्र मणुस्साणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णेरइएहिंतोवि उववज्जंति, जाव देवेहिंतोवि उववज्जंति, एवं उववातो जहा पंचिंदियतिरिक्ख जोणिय उद्देसए जाव तमापुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति, णो अहे सत्तमाए पुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति ॥ १ ॥ रयणप्पभापुढवीणेरइयाणं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जंति सेणं भंते ! केवइकाल? गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहुत्तट्ठिईएसु उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु अवसेसा वत्तव्वया

भावार्थ शतक का वीसवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २४ ॥ २० ॥ (०) (०)

अहो भगवन् ! मनुष्य कहां से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य नारकी में से उत्पन्न होते हैं. और तिर्यंच, मनुष्य व देव यों चारों गति में से उत्पन्न होते हैं यों जैसे तिर्यंच पंचेन्द्रिय का उपपात कहा, वैसे ही कहना. यावत् छट्ठी तमा में से मनुष्य उत्पन्न होते हैं. परंतु सातवी तमतमा में से नीकलकर मनुष्य नहीं होते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जो रत्नप्रभा नरक का नारकी मनुष्य में उत्पन्न होता है वह कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य प्रत्येक मास उत्कृष्ट पूर्व क्रोड रत्नप्रभा का जीव मनुष्यायु बंध करता हुवा कम से कम प्रत्येक अर्थात् दो से नव मास तक के आयुष्य में उत्पन्न

महावीर की अं० पास से को० कोष्टक चे० उद्यान में से प० नीकलकर जे० जहां सा० श्रावस्ती ण० नगरी जे० जहां हा० हालाहला कुं० कुंभकारी की कुं० कुंभकार की आ० दुकान ते० वहां उ० आकर हा० हालाहला कुं० कुंभकारि से कुं० कुंभकार शाला में अं० आम्र फल ह० हस्तगत म० मद्यपान पि० पीता अ० वारंवार गा० गाता हुवा अ० वारंवार ण० नृत्य करता हुवा अ० वारंवार हा० हालाहला कुं० कुंभकारी को अं० अंजलिकर्म क० करता सी० शीतल म० मृत्तिका पा० पानी आ० कुंभार के भाजन में रहा हुवा पानी से गा० गात्रों को प० सींचता हुवा वि० विचरने लगा ॥ ११४ ॥ अ० आर्य स० श्रमण भ० भगवंत

सूत्र

णिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता हालाहलाहिं कुंभकारीहिं कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए मज्जपाणगं पियमाणे, अभिक्खणं गायमाणे, अभिक्खणं णच्चमाणे, अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणे सीतलएणं मट्टियापाणएण आयंचणिउदएणं गाताइं परिसिंचमाणे विहरइ ॥ ११४ ॥ अज्जो-

भावार्थ

स्वामी की पास से कोष्टक उद्यान में से नीकलकर श्रावस्ती नगरी में हालाहला कुंभकारिणी की कुंभकार शाला में आया. वहां पर हालाहला कुंभकारिणी की साथ हस्त में आम्र फल सहित मद्यपान करता हुवा, वारंवार गाता हुवा, वारंवार नृत्य करता हुवा, वारंवार हालाहला कुंभकारी को अंजली कर्म करता हुवा

सयस्स वीसइमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २४ ॥ २० ॥ × ×

मूत्र . मणुस्साणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णेरइएहिंतोवि उववज्जंति, जाव देवेहिंतोवि उववज्जंति, एवं उववातो जहा पंचिंदियतिरिक्ख जोणिय उद्देसए जाव तमापुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति, णो अहे सत्तमाए पुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति ॥१॥ रयणप्पभापुढवीणेरइयाणं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जंति सेणं भंते ! केवइकाल? गोयमा ! जहण्णेणं मासपहुत्तट्ठिईएसु उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु अवसेसा वत्तव्वया

भावार्थ शतक का वीसवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २४ ॥ २० ॥ (०) (०)

अहो भगवन् ! मनुष्य कहां से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य नारकी में से उत्पन्न होते हैं. और तिर्यंच, मनुष्य व देव यों चारों गति में से उत्पन्न होते हैं यों जैसे तिर्यंच पंचेन्द्रिय का उपपात कहा, वैसे ही कहना. यावत् छठी तमा में से मनुष्य उत्पन्न होते हैं. परंतु सातवी तमतमा में से नीकलकर मनुष्य नहीं होते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जो रत्नप्रभा नरक का नारकी मनुष्य में उत्पन्न होता है वह कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य प्रत्येक मास उत्कृष्ट पूर्व क्रोड रत्नप्रभा का जीव मनुष्यायु बंध करता हुवा कम से कम प्रत्येक अर्थात् दो से नव मास तक के आयुष्य में उत्पन्न

सूत्र

उद्देसो सम्मत्तो ॥ १९ ॥ ९ ॥

वाणमंतराणं भंते ! सव्वे समाहारा एवं जहा सोलसमसए दीव कुमारुद्देसए जाव अप्पिड्ढियत्ति ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ एगूणवीसइमस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १९ ॥ १० ॥ एगूणवीसइमं सयं सम्मत्तं ॥ १९ ॥

भावार्थ

व संस्थान. यह उन्नीसवा शतक का नववा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ ९ ॥ (०)

नववे उद्देशे में करण का कथन किया. आहार भी करने से ही होता है, इसलिये इस उद्देशे में आहार का कथन करते हैं. अहो भगवन् ! क्या सब वाणव्यंतर समान आहार करनेवाले हैं ऐसे ही जैसे सोलहवे शतक में द्वीप कुमार उद्देशे में कहा वैसे ही यावत् अल्प ऋद्धिवाले कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह उन्नीसवा शतक का दशवा उद्देशा संपूर्ण हुवा॥१९॥१०॥यह उन्नीसवा शतक समाप्त हुवा॥१९॥

सूत्र

गोयमा! भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति जाव वेमाणिय देवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ ५ ॥ जइ भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति, किं असुरकुमार भवणवासि देवेहिंतो उववज्जंति जाव थणियकुमार भवणवासि? गोयमा! असुरकुमार भवणवासि जाव थणियकुमार उववज्जंति ॥ ६ ॥ असुरकुमारेणं भंते! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए सेणं भंते! केवइयकाल ट्ठिईएसु? गोयमा! जहण्णेणं मास पुहुत्तट्ठिईएसु उक्कोसेणं पुव्वकोडि आउएसु एवं जाचेव पंचिंदिय तिरिक्खजोणि उद्देसए वत्तव्वया साचेव एत्थवि भाणियव्वा, णवर जहा तहिं जहण्णग अंतोमुहुत्त ट्ठिईएसु तहा इहवि मासपुहुत्त ट्ठिईएसु परिमाणं, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा

भावार्थ

गौतम! भवनवासी यावत् वैमानिक देव में से उत्पन्न होवे. ॥ ५ ॥ यदि भवनवासी में से उत्पन्न होवे तो क्या असुरकुमार में से उत्पन्न होवे यावत् स्तनितकुमार में से उत्पन्न होवे? अहो गौतम! असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार में से उत्पन्न होवे. ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! असुरकुमार में से जो मनुष्य में उत्पन्न होने योग्य होवे वह कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे? अहो गौतम! जघन्य प्रत्येक मास उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही जैसे तिर्यंच पंचेन्द्रिय की वक्तव्यता कही वैसे ही कहना. विशेष में वहांपर जहां २ जघन्य

क० ए० एम १० बाल सु० सुम द० देवानुप्रिय म० मुझ का० कालगत जा० जानकर सु० सुगंधित ग० गंधोदक से ण्हा० स्नान कराना प० पद्म सु० सुकुमार गं० गंध का० कापाय से गा० गात्रों को लू० पूंछकर स० अच्छा गो० गोशीर्ष गा० गात्रों को अ० लींपना म० महर्घ्य हं० हंस लक्षणवाले प० पट सा० साडी नि० डालना स० सर्वालंकार से वि० विभूषित क० करना पु० पुरूपसहस्र से व० वहनकराती सी० पालखी में दु० बैठाना सा० श्रावस्ती ण० नगरी में सिं० शृंगाटक जा० यावत् प० पथ में म० बडे स० शब्दसे उ० उद्घोषणा करते ए० ऐसा व० बोलना ए० ऐसा दे० देवानुप्रिय गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र जि० जिन जि० जिन

सूत्र

ममं कालगयं जाणित्ता सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाहेह सु० २ पम्हलसुकुमालए गंध कासाइए गायाइं लूहेह गा० २ सरसेणं गोसीसेणं गायाइं अणुलिंपह, स० २ महरिहं हंसलक्खणं पडसाडगं नियंसेह मह २, सव्वालंकार विभूसियं करेह, स० २ त्ता, पुरिससहस्सवाहिणीसीयं दुरूहेह पु० २ त्ता, सावत्थीए णयरीए सिंघाडग जाव पहेसु महयासद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वंदह एवं खलु देवाणुप्पिया

भावार्थ

सुगंधित पानी से मुझे स्नान कराना, पद्म समान सुकोमल कषाय रंगवाले वस्त्र से गात्रों को स्वच्छ करना, सरस गोशीर्ष चंदन से गात्रों को लेपन करना, बहुत मूल्यवाला व हंस समान श्वेत वस्त्र पहिनाना, सर्वालंकार से विभूषित करना, सहस्र पुरुष वाहिनी शिविका पर बैठाना, और श्रावस्ती नगरी के शृंगाटक

सूत्र

चउगुणेज्जा॥६॥ आणयदेवेणं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! केवइ काल ? गोयमा ! जहण्णेणं वास पुहुत्तट्ठिइएसु उववज्जेज्जा उक्कोसेणं पुव्वकोडि ठिईएसु तेणं भंते ! एवं जहेव सहस्सारो देवाणं वत्तव्वया, णवरं ओगाहणाट्ठिति अणुबंधो जाणेज्जा, सेसं तंचेव॥ भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं छभवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठारससागरोवमाइं वासपुहुत्त मब्भहियाइं, उक्कोसेणं सत्तावण्णं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं कालं सेवेज्जा॥ एवं णववि गमगाणवरं ट्ठिई अणुबंध संवेहंच जाणेज्जा एवं जाव अच्चुयदेवो णवरंट्ठिई अणुबंध संवेहंच जाणेज्जा। पाणयदेवस्साट्ठिई तिगुणा सट्ठिसागरोवमाइं, आरणगस्सतेवट्ठि सागरोवमाइं, अच्चुयस्स

भावार्थ

भी चोगुनी करना॥६॥ अहो भगवन्! आणत देवलोकमें से जो मनुष्य होने योग्य होवे वह कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य प्रत्येक वर्ष उत्कृष्ट पूर्व क्रोड. शेष सहस्सार देव की वक्तव्यता कहना. परंतु अवगाहना, स्थिति व अनुबंध जानना. भवादेश से जघन्य दोभव उत्कृष्ट छभव कालादेश से जघन्य अठारह सागरोपम प्रत्येकवर्ष अधिक उत्कृष्ट सत्तावन सागरोपम तीन पूर्व क्रोड अधिक, इतनाकाल यावत् सेवे. ऐसे ही नव गमा कहना परंतु स्थिति, अनुबंध व संवेध इसकाही जानना. ऐसे ही

सूत्र

दंसणे ४, आभिणिबोहियणाणे जाव विभंगणाणे, आहारसण्णाए ४, ओरालिय सरीरे ५, मणजोगे ३ सागारोवओगे, अणागारोवओगे, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते णण्णत्थ आताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! पाणाइवाए जाव सव्वे ते णण्णत्थ आताए परिणमंति ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे कइवण्णे कइगंधे एवं जहा बारसमसए पंचमुद्देसए जाव कम्मओण जए णो अकम्मतो विभत्तिभावं परिणए सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ वीसइमस्स तइओ ॥ २० ॥ ३ ॥

भावार्थ

कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या, समदृष्टि ३ चक्षु दर्शन ४ आभिनिबोधिक ज्ञानी यावत् विभंग ज्ञानी, आहार, भय, मैथुन व परिग्रह ऐसी चार संज्ञा, उदारिक, वैक्रेय, आहारक तेजस व कार्माण ऐसे पांच शरीर, मन, वचन व काया ऐसे तीन योग, और ऐसे अन्य भी क्या आत्मा बिना अन्य को नहीं परिणमते हैं ? हां गौतम ! आत्मा बिना अन्य को नहीं परिणमते हैं. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव को कितने वर्ण, गंध, रस, वगैरह जैसा बारहवे शतक में पांचवे उद्देश में कहा यावत् पांच वर्ण, दो गंध पांच रस व आठ स्पर्श परिणमते हैं. कार्माण शरीर की अपेक्षा से जीव अनेक भाव मे परिणमता है, परंतु कर्म रहित होने से विभक्ति भाव पने नहीं परिणमता है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं, यह वीसवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ २० ॥ ३ ॥

सूत्र

पुव्वकोडी आउएसु उववज्जेज्जा, अवसेसं जहा आणयदेवस्सवत्तव्वया, णवरं ओगाहणा एगे भवधारणिज्जसरीरए से जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं,उक्कोसेणं दोरयणीओ, संठाणं एगे भवधारणिज्जसरीरए से समचउरंस संठाणसंठिए, पंचसमुग्घाया पण्णत्ता तंजहा-वेयणासमुग्घाए जाव तेयगसमुग्घाए, णो चेवणं वेउव्वियतेयग समुग्घाएहिं समोहणिंसुवा समोहणंतिवा समोहणिस्संतिवा ॥ ठिति अणुबंधा जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं एकतीसं सागरोवमाइं. सेसं तंचेव ॥ कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्त मब्भहियाइं, उक्कोसेणं तेणउति सागरोवमाइं

भावार्थ

विमान में से जो देव मनुष्य में उत्पन्न होने योग्य होवे वह कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ! अहो गौतम ! जघन्य प्रत्येक वर्ष उत्कृष्ट पूर्व क्रोडके आयुष्य से उत्पन्न होवे अवशेष सब आणत देवलोक की वक्तव्यता कहना परंतु अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट दो हाथ. संठाण भवधारणीय शरीर का एक समचतुस्र, वेदना, कषाय, मारणांत तेजस ऐसी पांच समुद्घात परंतु वैक्रिय तेजस समुद्घात अतीत काल में की नहीं वर्तमान में करते नहीं और आगामी नहीं करेंगे. स्थिति व अनुबंध जघन्य बावीस सागरोपम उत्कृष्ट इकतीस सागरोपम शेष वैसे ही कालादेश से जघन्य बावीस सागरोपम प्रत्येक वर्ष

शब्दार्थ

प० मकाश मान वि० विचर कर इ० इस ओ० अवसर्पिणी में च० चौवीस ति० तीर्थंकरों में च० चरिम तिं० तीर्थंकर सि० सिद्ध जा० यावत् स० सब दुःख प० रहित इ० ऋद्धि म० समुदाय से म० मेरा स० शरीर का णी० नीहारन क० करना ॥ १३३ ॥ त० तब ते० वे आ० आजीविक थे० स्थविर गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र का ए० यह अर्थ वि० विनय म प० सुना ॥ १३४ ॥ त० तब त० उस गो० गोशाला मं०मंखली पुत्र को स०सात रात्रि प०परिणमते प०प्राप्त होते स०सम्यक्त्व अ०यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय जा० यावत स० उत्पन्न हुआ णो० नहीं अ० मैं जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत्

सूत्र

विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमे तित्थगरे सिद्धे जाव सव्वदुक्ख-प्पहीणे ॥ इड्डी सक्कारसमुदएणं ममं सरीरगस्स णीहरणं करेह ॥ १३३ ॥ तएणं ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥ १३४॥ तएणं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तांसि परिणममाणंसि पडिलद्ध सम्म गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्द पगासमाणे

भावार्थ

मंखली पुत्र गोशाला जिन जिन प्रलापी यावत् जिन शब्द का प्रकाश करते हुवे विचर कर इस अवसर्पिणी के चौवीस तीर्थंकरों में चरिम तीर्थंकर सिद्ध बुद्ध यावत् सब दुःख के अंतकर्त्ता हुए, और ऋद्धि सत्कार समुदाय से मेरा शरीर का निहारन करना ॥ १३३ ॥ आजीविक स्थविरोंने मंखलीपुत्र गोशाला की इस बात विनय पूर्वक अंगीकार की ॥ १३४ ॥ अब मंखलीपुत्र गोशाला को सात रात्रिपरिणमते हुए सम्यक्त्व की प्राप्ति हुइ यावत् महापद में बडे २ शब्दों से ऐसा बोलना कि अहो देवानुप्रिय !

सूत्र

एगारयणी, सम्मद्दिट्ठी णो मिच्छद्दिट्ठी णो सम्मामिच्छादिट्ठी, णाणी णोअण्णाणी णियमं तिणाणी तंजहा आभिणिबोहिय णाणी, सुअणाणी, ओहिणाणी, ठिई जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, सेसं तंचेव, भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं वास पुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइयं जाव करेज्जा ॥ एवं सेसावि अट्ठ गमगा भाणियव्वा; णवरं ठिई अणुबंध संवेहंच जाणेज्जा ॥ सेसं तंचेव ॥९॥ सव्वट्ठसिद्धग देवेणं भंते ! जे भविए मणुए सव्वेव विजयादि देववत्तव्वया भाणियव्वा, णवरं ठिई अजहण्ण मणुक्कोसं

भावार्थ

सम्यग्दृष्टि परंतु मिथ्यादृष्टि व सममिथ्यादृष्टि नहीं. ज्ञानी परंतु अज्ञानी नहीं निश्चयही तीन ज्ञान जिनके नाम-आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुत ज्ञान वा विभंग ज्ञान स्थिति जघन्य एकत्तीस सागरोपम उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम, भवादेश से जघन्य दो भव उत्कृष्ट चार भव, कालादेश से जघन्य एकतीस सागरोपम व प्रत्येक वर्ष अधिक उत्कृष्ट छासठ सागरोपम और दो पूर्व क्रोड अधिक, ऐसे ही शेष आठ गमा कहना. परंतु स्थिति, अनुबंध व संवेध स्थिति अनुसार कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! सर्वार्थसिद्ध विमान के देव मनुष्य में उत्पन्न होने

सूत्र

ण भण्णइ ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ चउवीसइम सयस्स एकवीसइमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २४ ॥ २१ ॥ ● ● ● ● ●

वाणमंतराणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खजोणिय एवं जहेव णागकुमार उद्देसए असण्णि तहेव णिरवसेसं ॥ जइ सण्णिपंचिंदिय जाव असंखेज्जवासाउय सण्णिपंचिंदिय जे भविए वाणमंतर● सेणं भंते ! केवइकाल ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्स ट्ठिइएसु उक्कोसेणं पलिओवमट्ठिइएसु सेसं तंचेव, जहा णागकुमार उद्देसए जाव कालादेसेणं जहण्णेणं साइरेगाइं पुव्वकोडी

भावार्थ

कहना. शेष छ गमा कहना नहीं; क्योंकि सर्वार्थ सिद्ध में से जघन्य उत्कृष्ट स्थिति नहीं है. यह चौवीसवा शतक का इक्कीसवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २४ ॥ २१ ॥ (०) (०)

अहो भगवन् ! वाणव्यंतर कहां से उत्पन्न होते हैं क्या नारकी में से, मनुष्य में से या देव में से ! अहो गौतम ! जैसे नागकुमार उद्देशा में असंज्ञी वैसे ही विशेषता रहित कहना. यदि संज्ञी पंचेन्द्रिय यावत् असंख्यात वर्षवाले संज्ञी पंचेन्द्रिय वाणव्यंतर में उत्पन्न होने योग्य होवे वह कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट पल्योपम. शेष सब नागकुमार जैसे यावत्

अर्थ की कुं॰ कुंभकार शाला के ब॰ बहुत म॰ मध्यभाग में सा॰ श्रावस्ती ण॰ नगरी की आ॰ आलेखना की गो॰ गोशाला मं॰ मंखलीपुत्र का बा॰ बांया पा॰ पांव सु॰ सूत्र से बं॰ बंधा ति॰ तीन वार मु॰ मुख में उ॰ थूंका सा॰ श्रावस्ती ण॰ नगरी में सिं॰ शृंगाटक जा॰ यावत् प॰ पथ में आ॰ इधर उधर क॰ करते णी॰ नीच स॰ शब्द से उ॰ उद्घोषणा क॰ करते ए॰ ऐसा व॰ बोला णो॰ नहीं दे॰ देवानु-

सूत्र रावणस्स बहुमज्झदेसभाए सवत्थिं णयरिं आलिहंति २ त्ता, गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं वामे पादे सुंबेणं बंधंति तिक्खुत्तो मुहे उट्टुभंति २ त्ता सावत्थीए णयरीए सिंघाडग जाव पहेसु आकड्ढविकड्ढिं करेमाणं णीयं सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी णो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव

भावार्थ की मध्य बीच में श्रावस्ती नगरी का चित्र नीकाला. पश्चात् मंखली पुत्र गोशाला का बांया पांव रस्सी से बांधा और तीन वार उस के मुख में थुंके. पीछे श्रावस्ती नगरी के शृंगाटक यावत् महापथ में इधर उधर घसीट कर नीच शब्दों से उद्घोषणा करते हुवे ऐसा बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! मंखली पुत्र गोशाला जिन जिन प्रलापी यावत जिन शब्द प्रकाश करता हुवा नहीं विचरता था. यह मंखली पुत्र गोशाला श्रमण की घात करनेवाला यावत् छद्मस्थपना में ही काल कर गया है. श्रमण भगवंत महावीर जिन जिन प्रलापी यावत् जिन शब्द प्रकाश करते हुवे विचरते हैं. इस तरह शपथ मुक्त होकर दूसरी बस्त

सूत्र

मणुस्साण असंखेज्जवासाउय जहेव णागकुमाराणं उद्देसए तहेव वत्तव्वया, णवरं तइयगमए ठिई जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं, ओगाहणा जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेणं तिण्णिगाउयाइं सेसं तंचेव ॥ संवेहो से जहा एत्थचेव उद्देसए ॥ असंखेज्जवासाउय सण्णिपंचिंदियाणं संखेज्जवासाउय सण्णि मणुस्सा जहेव णागकुमारुद्देसए णवरं वाणमंतराठिई संवेहं च जाणेज्जा ॥ सेवं भंते ! २ त्ति ॥ चउवीस० बावीसमो ॥ २४ ॥ २२ ॥

भावार्थ

कहना. ॥ ९ ॥ संख्यात वर्षवाले जैसे ही कहना. परंतु स्थिति, अनुबंध व संबंध दोनों की स्थिति से जानना. यदि असंख्यात वर्षवाले मनुष्य में से उत्पन्न होवे तो वगैरह नागकुमार जैसे वक्तव्यता कहनी. परंतु तीसरा गमा में स्थिति जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम कहना. अवगाहना जघन्य एक गाउ उत्कृष्ट तीन गाउ की कहना, संबंध वगैरह इसी उद्देशे में असंख्यात वर्ष वाले संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे जानना. संख्यात वर्षवाले संज्ञी मनुष्य का नागकुमार उद्देशा जैसे कहना. परंतु वाणव्यंतर की स्थिति अनुबंध व संबंध जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं, यह चौवीसवा शतक का बावीसवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ २४ ॥ २२ ॥

सूत्र

फासे ॥ जइ एगवण्णे सिय कालए जाव सुक्किलए । जइ दुवण्णे सिय कालएय सिय णीलएय १, सिय कालएय णीलगाय २, सिय कालगाय णीलएय ३, सिय कालएय लोहियएय ४, सिय कालएय लोहियगाय, सिय कालगाय लोहियएय ६ । एवं हालिद्दएणवि समं ३, एवं सुक्किलएणवि समं ३, सिय णीलएय लोहियएय एत्थवि भंगा ३, ॥ एवं हालिद्दएणवि समं ३, एवं सुक्किलएणवि समं ३, भंगा सिय लोहियएय हालिद्दएय ३, एवं सुक्किलएणवि समं भंगा ३, सिय हालिद्दएय सुक्किलएय भंगा ३, एवं सव्वेते दस दुया संजोगा भंगा तीसं भवंति ॥ जइ तिवण्णे-सिय कालएय णीलएय

भावार्थ

तीन प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण वगैरह जैसे अठारहवे शतक में कहा वैसे ही यावत् चार स्पर्श. यदि एक वर्ण तो कदाचित् काला यावत् शुक्ल यों पांचों भांगे पावे, यदि दो वर्ण पावे तो १ स्यात् एक काला दो हरा ( दोनों पुद्गल एक प्रदेश अवगाहकर रहे हुवे होवे इस लिये एक वचन ) २ स्यात् एक काला दो हरा ३ स्यात् दो काले एक हरा ४ स्यात् एक काला दो लाल ५ स्यात् एक काला दो लाल अनेक वचन ६ स्यात् दो काले एक लाल यों काला पीला के तीन भांगे और ऐसे ही काला व शुक्ल के तीन भांगे सब १२ भांगे हुवे कदाचित् १ एक नीला दो लाल एक वचन २ कदाचित् एक

इंएसु, उक्कोसेणं पलिओवमवाससयसहस्स मब्भहियाट्ठिईएसु उववज्जेज्जा अवसेसं जहा असुरकुमारुद्देसए, णवरं ट्ठिई जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं एवं अणुबंधोवि सेसं तहेव णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं दो अट्ठभागपलिओवमाइं उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्स मब्भहियाइं एवइयं कालं जाव करेज्जा. सोचेव जहण्ण कालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं अट्ठ भागपलिओवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि अट्ठभागपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ॥ एसचेव वत्तव्वया णवरं कालादेसंच जाणेज्जा ॥ २ ॥ सोचेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो एसचेव वत्तव्वया णवरं

अधिक अवशेष असुरकुमार उद्देशा जैसे कहना परंतु स्थिति जघन्य-एक पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट तीन पल्योपम ऐसे ही अनुबंध भी कहना. कालादेश से जघन्य पल्योपम के दो आठ भाग उत्कृष्ट चार पल्योपम व एक लाख वर्ष अधिक, वही जघन्य स्थिति में उत्पन्न हुआ जघन्य उत्कृष्ट पल्योपम के आठ भाग की स्थिति में उत्पन्न होवे और सब वैसे ही वक्तव्यता कहना; परंतु कालादेश में ज्योतिषी की स्थिति अनुसार कहना. वही उत्कृष्ट स्थिति में उत्पन्न हुवा वैसी वक्तव्यता कहना परंतु स्थिति जघन्य-एक पल्योपम व एक लाख वर्ष अधिक उत्कृष्ट तीन पल्योपम ऐसे ही अनुबंध कालादेश जघन्य दो पल्योपम

प्रिय गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् वि० विचरने को ए० यह गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र म० मारने का घातक जा० यावत् छ० छद्मस्थ में का० कालगत स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर जि० जिन जि० जिन प्रलापी जा० यावत् वि० विचरते हैं स० शपथ से छूटने का क० करके दो० दूसरी वक्त पू० पूजा स० सत्कार थि० स्थिर क० करने को गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र का वा० बाये पांव से मुं० छोडकर हा० हालाहला कुं० कुंभकारिणी की कुं० कुंभकार शाला में दु० द्वारकपाट अ० खोलकर गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र के स० शरीर को सु० सुगंधित गं० गंधोदक से ण्हा० स्नान कराया तं० वैसे ही म० बडी इ० ऋद्धि स० सत्कार स० समुदय

विहरिए ॥ एवमणं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव काल-गए ॥ समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, सवहपडिमोक्ख-मणगं करेंति, करेंतित्ता, दोच्चंपि पूयासक्कारथिरीकरणट्ठयाए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुंबेयंति २ त्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवारवयणाइं अवगुणंति २ त्ता, गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेंति तंचेव

पूजा सत्कार व सन्मान के लिये मंखलीपुत्र गोशाला के बांये पांव से रस्सी छोडकर हालाहला कुंभ-कारिणी के कुंभकारशाला के द्वार खोल दिये. मंखली पुत्र गोशाला के शरीर को सुगंधित पानी से

सूत्र

एवं अणुबंधोवि, सेसं तहेव ॥ कालादेसेणं जहण्णेणं दो अट्ठभागपलिओवमाइं उक्को-सेणवि दो अट्ठभागपलिओवमाइं, एवइयं ॥ जहण्णकालट्ठिईयस्स, एसचेव एयागमो-६ ॥ सोचेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ सच्चेव ओहिया वत्तव्वया णवरं ठिई जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेणवि तिण्णि पलिओवमाइं, एवं अणु-बंधोवि सेसं तंचेव॥ एवं पच्छिमा तिण्णि गमगा णेयव्वा, णवरं संवेहं च जाणेज्जा ॥ एते सत्तगमगा ॥ २ ॥ जइ संखेज्जवासाउय सण्णिपंचिंदिय संखेज्जवासाउयाणं. जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं, तहेव णववि गमा भाणियव्वा, णवरं जोइसिय ट्ठिई संवेहं च जाणेज्जा, सेसं तहेव णिरवसेसं ॥ ३ ॥ जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति भेदो तहेव जाव असंखेज्जवासाउय ॥ सण्णि मणुस्सेणं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उव-

भावार्थ

स्थिति जघन्य उत्कृष्ट तीन पल्योपम ऐसे ही अनुबंध ऐसे ही पीछे के तीनों गमा कहना. परंतु स्थिति व संवेध इस अनुसार जानना यों सात गमा हुवे ॥ २ ॥ यदि संख्यात वर्ष वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय उत्पन्न होवे तो जैसे असुर कुमार में उत्पन्न होने की वक्तव्यता कही वैसे ही यहां नव गमा कहना. परंतु ज्योतिषी की स्थिति व संवेध कहना. ॥ ३ ॥ यदि मनुष्य में से उत्पन्न होवे तो असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले

भंगा ३, ॥ रसा जहा वण्णा ॥ जइ दुफासे सिय सीएय णिद्धेय, एवं जहेव दुपदे णियरस तहेव चत्तारि भंगा ॥ जइ तिफासे सव्वे सीए देसे णिद्धे देसे लुक्खे १ सव्वे सीए देसे णिद्धे देसा लुक्खा २ सव्वे सीए देसा णिद्धा देसे लुक्खे ३, सव्वे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे एत्थवि भंगा तिण्णि ६ ॥ सव्वे णिद्धे देसे सीए, देसे उसिणे भंगा तिण्णि ९। सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिण्णि १२ ॥ जइ चउफासे देसे सीए देसे उसिणे, देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे उसिणे, देसे णिद्धे, देसा लुक्खा २, देसे सीए देसे उसिणे देसा णिद्धा, देसे लुक्खे ३,

भावार्थ

वैसे करना. अब स्पर्श के भांगे कहते हैं, यदि दो स्पर्श पावे तो स्यात् शीत व स्निग्ध यों जैसे द्विप्रदेशिक स्कंध का कहा वैसे ही यहां चार भांगे करना. यदि तीन स्पर्श होवे तो सर्व शीत देश स्निग्ध देश रूक्ष २ सर्व शीत एक स्निग्ध दो रूक्ष अनेक वचन ३ सर्व शीत जिस में दो स्निग्ध एक रूक्ष ४ सर्व उष्ण जिस में एक स्निग्ध एक रूक्ष, एक आकाशप्रदेश अवगाहना आश्री वगैरह छ भांगे होवे. सर्व स्निग्ध एक शीत एक उष्ण ऐसे तीन और सर्व रूक्ष एक शीत एक उष्ण यों तीन सब मीलकर बारह भांगे होते हैं. यदि चार स्पर्श होवे तो एक शीत, एक उष्ण जिस में एक स्निग्ध एक रूक्ष एक आकाश प्रदेश अवगाहित होने से एक वचन ही ग्रहण किया है. २ एक शीत एक उष्ण जिस में एक स्निग्ध अनेक रूक्ष, ३

सूत्र

भाणियव्वा, णवरं जोइसिय ट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा ॥ सेसं तहेव णिरवसेसं ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ चउवीसइम सयस्स तेवीसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥२४॥ २३ ॥

सोहम्मग देवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइएहिंतो भेदो जहा जोइसिय उद्देसए, असंखेज्जवासाउय सण्णिपंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएणं भंते ! जे भविए सोहम्मगे देवेसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! केवइकाल ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओव मट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ॥ तेणं भंते ! अवसेसं जहा जोइसिएसु उववज्जमाणस्स णवरं सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि णो

भावार्थ

वैसे ही विशेषता रहित कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह चौवीसवा शतक का तेवीसवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २४ ॥ २३ ॥

अहो भगवन् ! सौधर्म देवलोक में कहां से उत्पन्न होते हैं क्या नारकी में से वगैरह भेद ज्योतिषी उद्देशे जैसे कहना. अहो भगवन् ! असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय सौधर्म देवलोक में उत्पन्न होने योग्य होवे वह वहां कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति से उत्पन्न होवे. [ युगलियों का आयुष्य इतना ही होने से ]

मे गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र के स० शरीर का णी० निहारन क० किया ॥ १३७ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर अ० अन्यदा कदापि सा० श्रावस्ती ण० नगरी से को० कोष्टक चे० उद्यान में से प० नीकलकर व० बाहिर ज० जनपद में वि० विचरने लगे ॥ १३८ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में मिं० मिंढिक ग्राम ण० नगर हो० था व० वर्णन योग्य त० उस मिं० मिंढिक ग्राम ण० नगर की व० बाहिर उ० ईशान कौन में ए० यहां सा० शाल को० कोष्टक चे० उद्यान

मूत्र

जाव महया महया इड्ढीसक्कार समुदएणं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स णीहरणं करेंति ॥ १३७ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरं अण्णयाकयाइं सावत्थीओ णयरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता बाहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ १३८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं मिंढियगामे णामं णयरे होत्था, वण्णओ तस्सणं मिंढियगामस्स णयरस्स बाहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थणं

भावार्थ

स्नान कराया यावत् बहुत २ ऋद्धि सत्कार समुदाय से मंखली पुत्र गोशाला के शरीर का निहारन किया ॥ १३७ ॥ उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी अन्यदा कदापि श्रावस्ती नगरी के कोष्टक उद्यान में से नीकलकर बाहिर जनपद विहार विचरने लगे ॥ १३८ ॥ उस काल उस समय में मिंढिक ग्राम नामक नगर था. उस का वर्णन चंपा नगरी जैसे जानना. उस मिंढिक ग्राम नगर की बाहिर ईशान

पलिओवमाइं, नेसं तंचेव ॥ कालाएसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेणवि छप्पलिओवमाइं एवइयं कालं जाव ॥ ३ ॥ सोचेव अप्पणा जहण्ण कालट्ठिईओ जाओ जहण्णेणं पलिओवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि पलिओवमट्ठिईएसु एसचेव वत्तव्वया, णवरं ओगाहणा जहण्णेणं धणुहपुहुत्तं उक्कोसेणं दो गाउयाइं. ठिई जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणवि पलिओवमं सेसं तहेव कालाएसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइं उक्कोसेणवि दो पलिओवमाइं एवइयं॥४॥सोचेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ आदिल्ल-गमगसरिसा तिण्णिगमगा णेयव्वा, णवरं ठिई कालादेसंच जाणेज्जा ॥ ५ ॥ जइ संखेज्जवासाउय सण्णिपंचिंदिय संखेज्जवासाउयस्स जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स

परंतु स्थिति जघन्य उत्कृष्ट तीन पल्योपम की कहना. कालादेश से जघन्य उत्कृष्ट छ पल्योपम कहना. इतना काल करे ॥ ३ ॥ वही जघन्य स्थितिवाला जघन्य उत्कृष्ट पल्योपम की स्थिति में उत्पन्न होवे परंतु अवगाहना जघन्य प्रत्येक धनुष्य उत्कृष्ट दो गाउ. स्थिति जघन्य उत्कृष्ट एक पल्योपम. कालादेशसे जघन्य उत्कृष्ट दो पल्योपम. शेष पूर्ववत् ॥ ४ ॥ वही उत्कृष्ट स्थितिवाला उत्पन्न हुवा पहिले के तीन गमा सरिखे तीन गमा कहना, परंतु स्थिति व कालादेश मे उत्कृष्ट मानना ॥ ५ ॥ यदि संख्यात वर्ष के

सूत्र

दुवण्णे सिय कालएय णीलएय १ सिय कालएय णीलगाय २, सिय कालगाय णीलएय ३, सिय कालगाय णीलगाय ४, सिय कालएय लोहियएय एत्थवि चत्तारि भंगा ४, सिय कालएय हालिद्दएय ४, सिय कालएय सुक्किलएय ४, सिय णीलएय लोहियएय ४, सिय णीलएय हालिद्दएय ४, सिय णीलएय सुक्किलएय ४, सिय लोहियएय हालिद्दएय ४, सिय लोहियएय सुक्किलएय ४ सिय हालिद्दएय सुक्किलएय ४, एवं एए दस दुयासंजोगा भंगा पुण चत्तालीसं ४०, ॥ जइ तिवण्णे सिय कालएय णीलएय लोहियएय १, सिय कालएय णीलएय

भावार्थ

वर्ण होवे तो चारों ही कदाचित् काले यावत् कदाचित् शुक्ल यों पांच भांगे. यदि दो वर्ण होवे तो १. स्यात् काले के दो, हरे के दो २ स्यात् काले का एक हरे के तीन ३ काले के तीन हरे का एक और ४ काले के दो हरे के दो यहां दो प्रदेश अवगाहना आश्री है. ये काले व हरे के चारों भांगे हुवे वैसे ही काले व लाल के चार भांगे, काले पीले के चार भांगे, काले शुक्ल के चार भांगे, हरे व लाल के चार भांगे, नीले व पीले के चार भांगे, नीले व शुक्ल के चार भांगे, लाल पीले के चार, लाल शुक्ल के चार और पीले व शुक्ल के चार भांग करना. यों दो वर्ण के द्विसंयोगी. ४० भांगे होवे. यदि तीन वर्ण होवे तो १ स्यात् एक काला

सूत्र

जहण्णेणं तिण्णिगाउयाइं, उक्कोसेणवि तिण्णि गाउयाइं, चउत्थगमए जहण्णेणं गाउयं उक्कोसेणवि गाउयं ॥ पच्छिमएसु तिसु गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेणवि तिण्णि गाउयाइं ॥ सेसं तहेव णिरवसेसं ॥ जइ संखेज्जवासाउय सण्णि मणुस्से एवं संखेज्जवासाउय सण्णि मणुस्साणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव णवगमगा भाणियव्वा, णवरं सोहम्मगदेवट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा, सेसं तंचेव ॥ ७ ॥ ईसाण देवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति? ईसाणदेवाणं एसचेव सोहम्मग-देव सरिसा वत्तव्वया. णवरं असंखेज्जवासाउय सण्णिपंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स

भावार्थ

वैसे ही यहां कहना. परंतु पहिले दो गमा में अवगाहना जघन्य एक गाउ उत्कृष्ट तीन गाउ. तीसरा गमा में अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट तीन गाउ, चौथा में जघन्य उत्कृष्ट एक गाउ पीछे के तीनों गमा में जघन्य उत्कृष्ट तीन गाउ अवगाहना कहना. शेष सब वैसे ही कहना ॥ ६ ॥ यदि संख्यात वर्ष के आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्य सौधर्म देवलोक में उत्पन्न होवे तो जैसे असुर कुमार में संख्यात वर्ष के आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्य की उत्पत्ति कही वैसे ही नवों गमा कहना परंतु सौधर्म देवलोक की स्थिति व संवंध जानना. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! ईशान देवलोक में कहां से उत्पन्न होते हैं ?

मा० देवता स० सर्वानुभूति अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह भं० भगवन् त० उस समय गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र के त० तपतेज से भा० भस्म कराया क० कहां ग० गया क० कहां उ० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे गो० गौतम म० मेरा अं० शिष्य पा० पूर्वदिशा का स० सर्वानुभूति अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह त० तब गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र से भा० भस्मकराया उ० ऊर्ध्व चं० चंद्र सू० सूर्य जा० यावत् बं० ब्रह्म लं० लंतक म० महाशुक क० कल्प वी० छोडकर स० सहस्रार क० देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न हुवा त० वहां

सूत्र

पाईण जाणवए सव्वाणुभूईणाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए सेणं भंते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेण तेएणं भासरासीकए समाणे कहिंगए कहिं उववण्णे ? एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूईणामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए सेणं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं भासरासीकरमाणे उड्ढं चंदिमसूरिय जाव बंभलंतगमहासुक्के कप्पे वीईवइत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उव-

भावार्थ

गार मंखली पुत्र गोशाला से भस्म कराये हुवे काल के अवसर में काल करके कहां गये कहां उत्पन्न हुए? अहो गौतम ! मंखली पुत्र गोशाला से भस्म कराया हुवा मेरा अंतेवासी सर्वानुभूति अनगार चंद्र सूर्य यावत् ब्रह्म व लांतक देवलोक की उपर महा शुक्र देवलोक को उल्लंघ कर सहस्रार देवलोक में देवतापने

॥ गोडिमल्ला जाव पन्नत्त
आणयदेवेसु उववज्जित्तए ॥
..आणं णवरं तिण्णि संघयणाणि, सेसं
। भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्तभवग्गहणाइं,
..रावमाइं दोहिंवास पुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं
रोवमाइं ..हं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं ॥ एवं सेसावि अट्ठगमगा
ट्ठितिं संवेहंच जाणेज्जा ॥ सेसं तहेव एवं जाव अच्चुयदेवा, णवरं ठितिं

११ ॥ अहो भगवन् ! आणत देवलोक में कहां से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! सहस्रार देवलोक उपपात कहना परंतु यहांपर तिर्यंच नहीं उत्पन्न होते हैं यावत् संख्यात वर्ष के आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्य आणत देवलोक में उत्पन्न होने योग्य होवे तो कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! सहस्रार देवलोक में उत्पन्न होने वाले मनुष्य की जैसी वक्तव्यता कही वैसे ही यहां कहना परंतु संघयन तीन कहना शेष अनुबंध पर्यंत वैसे ही कहना. भवादेश से जघन्य तीन भव उत्कृष्ट सात भव कालादेश से जघन्य अठारह सागरोपम उत्कृष्ट दो प्रत्येक वर्ष अधिक सत्तावन सागरोपम चार पूर्व क्रोड

सूत्र

५, सिय कालएय, णीलएय, लोहियगाय हालिद्दएय सुक्किल्लगाय ६, सिय कालएय णीलएय लोहियगाय हालिद्दगाय सुक्किल्लएय ७, सिय कालएय णीलगाय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय ८, सिय कालएय, णीलगाय, लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लगाय ९, सिय कालगेय णीलगाय लोहियएय हालिद्दगाय सुक्किल्लगेय १०, सिय कालएय णीलगाय लोहियगाय हालिद्दएय सुक्किल्लएय ११, सियकालगाय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय १२, सिय कालगाय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लगाय १३, सिय कालगाय णीलएय लोहियएय हालिद्दगाय सुक्किल्लएय १४,

भावार्थ

स्यात् काला हरा एक लाल अनेक पीला शुक्ल एक ६ स्यात् काला हरा एक लाल अनेक पीला एक शुक्ल अनेक ७ स्यात् काला नीला एक लाल पीला अनेक व शुक्ल एक ८ स्यात् काला एक हरा अनेक लाल पीला शुक्ल एक ९ स्यात् काला एक हरा अनेक लाल पीला एक और शुक्ल अनेक १० स्यात् काला एक हरा अनेक लाल एक पीला अनेक शुक्ल एक ११ स्यात् काला एक हरा लाल अनेक पीला शुक्ल एक १२ स्यात् काला अनेक हरा, लाल, पीला व शुक्ल एक १३ स्यात काला अनेक हरा लाल पीला एक शुक्ल अनेक १४ स्यात काला अनेक हरा लाल एक पीला अनेक शुक्ल एक १५ स्यात काला अनेक हरा

उववाओ जहा सहस्सारे देवाणं णवरं तिरिक्खजोणिया खोडेयव्वा जाव पज्जत्त संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्साणं भंते ! जे भविए आणयदेवेसु उववज्जित्तए ॥ मणुस्साणं वत्तव्वया जहेव सहस्सारेसु उववज्जमाणाणं णवरं तिण्णि संघयणाणि, सेसं तहेव अणुबंधो भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्तभवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं दोहिंवास पुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं सत्तावण्णं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं ॥ एवं सेसावि अट्ठगमगा भाणियव्वा णवर ट्ठितिं संवेहंच जाणेज्जा ॥ सेसं तहेव एवं जाव अच्चुयदेवा, णवरं ठितिं

॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! आणत देवलोक में कहां से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! सहस्रार देवलोक जैसे उपपात कहना परंतु यहांपर तिर्यंच नहीं उत्पन्न होते हैं यावत् संख्यात वर्ष के आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्य आणत देवलोक में उत्पन्न होने योग्य होवे तो कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! सहस्रार देवलोक में उत्पन्न होने वाले मनुष्य की जैसी वक्तव्यता कही वैसे ही यहां कहना परंतु संघयन तीन कहना शेष अनुबंध पर्यंत वैसे ही कहना. भवादेश से जघन्य तीन भव उत्कृष्ट सात भव कालादेश से जघन्य अठारह सागरोपम उत्कृष्ट दो प्रत्येक वर्ष अधिक सत्तावन सागरोपम चार पूर्व क्रोड

शब्दार्थ अ० कितनेक दे० देवों की अ० अठारह सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० कही त० उस में स० सर्वानुभूति दे० देव की अ० अठारह सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी से० अब स० सर्वानुभूति देव ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्यक्षय से जा० यावत् म० महाविदेह वा० क्षेत्र में सि० सीझेंगे जा० यावत् अं० अंत करेंगे ॥ १८२ ॥ ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय के अं० शिष्य को० कोशल जा० देशका सु० सुनक्षत्र अ० अनगार प० प्रकृति भ० भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह भं०

सूत्र

वण्णं ॥ तत्थणं अत्थेगइयाण देवाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं सव्वाणुभूईस्सवि देवस्स अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, सेणं सव्वाणुभूई देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति ॥ १९ ॥ एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कोसल जाणवए सुणक्खत्ते-णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए सेणं भंते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं

भावार्थ उत्पन्न हुआ. उस में कितनेक देवताओं की अठारह सागरोपम की स्थिति कही. वहां पर सर्वानुभूति अनगार की अठारह सागरोपम की स्थिति कही. यह सर्वानुभूति देव वहां से आयुष्य, स्थिति व भव क्षय से चवकरके यावत् महाविदेह क्षेत्र में सिझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ १८२ ॥ अहो भगवन् ! आपके अंतेवासी प्रकृति भद्रिक यावत् विनीत कोशल देश के सुनक्षत्र अनगार मंखली पुत्र

सूत्र

लद्धी णवसुवि गमएसु जहा गेवेज्जेसु उववज्जमाणस्स णवरं पढमं संघयणं ॥ १४ ॥ सव्वट्ठ सिद्धगदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति उववाओ जहेव विजयादीणं जाव सेणं भंते ! केवइयकाल ठिईएसु उववज्जेजा ? गोयमा ! जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमठिई उक्कोसेणवि तेत्तीस सागरोवमठिईएसु; अवसेसा जहा विजयाईसु उववज्जंता, णवर भवादेसेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं वासपुहुत्तेहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणवि तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइय॥लंचेव अप्पणा जहण्ण कालठिईओ जाओ एसचेव वत्तव्वया, णवरं ओगाहणा ठिइओ रयणिपुहुत्तंच, वासपुहुत्ताणि, सेसं तहेव संवेहंच जाणेज्जा ॥ १५॥ सोचेव

भावार्थ

अ॰ इ अधिक शेष पूर्वोक्त जैसे कहा ऐसे ही आठ गमा करना. परंतु स्थिति व संवेध इत्यादि कहना. नवों गमा में मनुष्य लब्धि ग्रैवेयक विमान जैसे कहना. परंतु संघयन पहिला जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् सर्वार्थ सिद्ध में कहां से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! विजयादि में जैसे उपपात कहा वैसे ही कहना यावत् वह कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य तेत्तीस सागरोपम उत्कृष्ट भी तेत्तीस सागरोपम की स्थिति से उत्पन्न होवे सब विजयादि में उत्पन्न होने का कहा वैसे ही कहना परंतु भवादेश से तीन भव कालादेश से, जघन्य तेत्तीस सागरोपम दो प्रत्येक वर्ष अधिक उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम दो पूर्व क्रोड

सूत्र

लोहियएय, हालिद्दगाय २, एवं जहेव सत्तपएसिए जाव सिय कालगाय णीलगाय लोहियगाय, हालिद्दगाय १६ ॥ एए सोलस भंगा ॥ एवमेते पंच चउक्क संजोगा एवमेते असीति भंगा ॥ जइ पंचवण्णे-सिय कालएय णीलएय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय, एवं एएणं कमेणं भंगा उच्चारेयव्वा जाव सिय कालएय णीलगाय लोहियगाय हालिद्दगाय सुक्किल्लएय १५; एसो पण्णरसमो भंगो, सिय कालगाय णीलगेय लोहियएय हालिद्दएय सुक्किल्लएय १६. सिय कालगाय णीलगेय लोहियएय

भावार्थ

कहा वैसे ही कहना यावत् कदाचित् चार स्पर्श होवे यदि एक वर्ण होवे आठों प्रदेश काले वगैरह एक दो तीन वर्ण का सात प्रदेशिक स्कंध जैसे कहना यदि चार वर्ण होवे तो १ स्यात् काला, हरा, लाल व पीला एक २ स्यात् काला, हरा लाल एक पीला अनेक ऐसे ही जैसे सात प्रदेशों का कहा वैसे ही कहना यावत् स्यात् काला हरा लाल व पीला अनेक वचन यों सोलह भांगे करना ऐसे ही काला हरा, लाल व श्वेत यों पांच चार संयोगी करना. प्रत्येक चार संयोगी में सोलह २ भांगे जानना. सब मीलकर ८० भांगे चार वर्ण के हुवे. यदि पांच वर्ण होवे तो काला हरा, लाल पीला व श्वेत एक वचन यों अनुक्रम से जैसे पहिले भांगे कहे वैसे ही २५ भांगे करना यावत् स्यात् काला एक हरा, लाल, पीला

# ※ पञ्चविंशतितम शतकम् ※

सूत्र

लेस्साय,दव्व, संठाण, जुम्म, पज्जव, णियंठ, समणाय, ॥ ओहे भविया भविए सम्मा, मिच्छेय, उद्देसा ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी कइणं भंते! लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तंजहा कण्हलेस्सा जहा पढमसए बितिय उद्देसए तहेव लेस्साविभागो अप्पाबहुगंच जाव चउव्विहाणं दे णं

भावार्थ

चौवीसवे शतक में द्वार से जीव का उपपात का चिंतवन किया. अब पचीसवे शतक में जीव का लेश्या द्वार से चिंतवन करते हैं. इस शतक में बारह उद्देशे कहे हैं जिन के नाम—१ लेश्या का २ द्रव्य विचार ३ स्थान विचार ४ कृत युग्म विचार, ५ पर्याय विचार ६ पुलाकादि निर्ग्रन्थ विचार ७ सामायिकादि संयति का विचार ८ नरकादि औधिक उत्पत्तिका ९ भव्यादि विशेषणवाले नारकादि उत्पन्न होने १० अभव्यपने वर्तने का ११ समदृष्टि और १२ मिथ्यादृष्टि का. यों पचीसवे शतक में बारह उद्देशे कहे. अब पहिला उद्देशा कहते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी भगवान गौतम को ऐसा बोले अहो भगवन् ! लेश्या कितनी कही ? अहो गौतम ! लेश्याओं छ कही जिन के नाम. कृष्ण लेश्या वगैरह जैसे प्रथम शतक के दूसरे उद्देशे में कहा वैसे ही लेश्या का विभाग और अल्पाबहुत्व कहना यावत् चार प्रकार के देव व चार प्रकार की देवी यों

भगवन् त० तब गोशाला मं० मंखलीपुत्र के त० तपतेज से प० पीडित का० काल के अवसर में का० काल कर के क० कहां ग० गये क० कहां उ० उत्पन्न हुए ए० ऐसे गो० गौतम म० मेरा अं० शिष्य सु० सुनक्षत्र णा० नामक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० यह त० उस समय गो० गोशाला मं० मंखली पुत्र के त० तपतेज से प० पिडित जे० जहां म० मेरी अं० पास ते० वहां उ० आकर वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर स० स्वयमेव पं० पांच म० महाव्रत आ० आचरकर स० साधु स० साध्वी को खा० खमाकर आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण वाला स० समाधि सहित का०

मूत्र

तवेणं तेएणं परिताविए समाणे कालमासे कालंकिच्चा कहिंगए कहिंउववण्णे? एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी सुणक्खत्ते णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए सेणं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता वंदइ णमंसइ, वंदइत्ता णमंसइत्ता सयमेव पंचमहव्वयाइं आरुहइ आरुहइत्ता समणाओ समणीओय खामेइ, आलोइय पडिक्कंते

भावार्थ

गोशाला से दुःखित कराये हुवे काल के अवसर में काल करके कहां गये कहां उत्पन्न हुए ? अहो गौतम ! मेरा अंतेवासी सुनक्षत्र अनगार मंखली पुत्र गोशाला से परितापित हुवा मेरी पास आया और मुझे वंदना नमस्कार कर स्वयमेव पांच महाव्रत की आराधना कर साधु साध्वी को खमाकर आलोचना प्रतिक्रमण सहित काल के अवसर में काल करके चंद्र सूर्य की ऊंचे यावत् आणत प्राणत व आरण देवलोक को

सूत्र

जोगरस कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमरस अपज्जत्तगरस जहण्णए जोए १ बादरस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे २ बेइंदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ३ एवं तेइंदियस्स ४ एवं चउरिंदियस्स ५ असण्णिपंचिंदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ६ सण्णिपंचिंदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ७ सुहुमपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए

भावार्थ

अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ! अर्थात् चौदह प्रकार के जघन्य और उत्कृष्ट ऐसे दो भेद करने से २८ हुए. इन अठावीस में कौन किनसे अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ! अहो गौतम ! सब से थोडा सूक्ष्म अपर्याप्त का जघन्य जोग क्यों कि सूक्ष्म पृथिव्यादिक का शरीर सूक्ष्म और अपर्याप्तपना से विशेष सूक्ष्म उस में भी जघन्य की विवक्षा हुई, इस से सर्व वक्तव्यता जोग से थोडा जघन्य जोग हुवा यह जोग विग्रह गति में कार्माण उदारिक पुद्गल ग्रहण करते समय रहता है फीर समय की वृद्धि होते जघन्य उत्कृष्ट जोग होवे परंतु सर्वोत्कृष्ट जोग होवे नहीं. इस से २ बादर अपर्याप्त का जघन्य जोग पूर्वोक्त अपेक्षा से असंख्यात गुना. ३ इस से बेइन्द्रिय के अपर्याप्त का जघन्य जोग असंख्यात गुना ४ इस से तेइन्द्रिय के अपर्याप्त का जघन्य जोग असंख्यात गुना ५. इस से चतुरेन्द्रिय के अपर्याप्त का जघन्य जोग असंख्यात गुना ६ इस से असंज्ञी पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त का जघन्य जोग असंख्यात गुना ७ इस से संज्ञी पंचेन्द्रिय

सूत्र

पदेसियस्स ॥ पंचवण्णावि तहेव णवरं बत्तीसइभोवि भंगो भण्णइ, एवमेते एकग दुयगतियग चउक्कग पंचग संजोएसु दोण्णि छत्तीसं भंगसयं भवंति ॥ गंधा जहा णवपदेसियस्स ॥ रसा जहा एयस्स चेव वण्णा फासा जहा चउप्पदेसियस्स ॥ जहा दसपदेसिओ, एवं संखेज्जपएसिओ एव असंखेज्जपएसिओवि सुहुमपरिणओ अणंत पएसिओ एवं चेव, ॥ १० ॥ बादरपरिणएणं भंते! अणंतपदेसिए खंधे कइवण्णे? एवं जाव अट्ठारसमे सए जाव सिय अट्ठफासे पण्णत्ते वण्णगंधरसा जहा दसपदेसियस्स॥ जइ चउफासे

भावार्थ

कहना यावत् चार स्पर्श यदि एक वर्ण होवे तो एक वर्ण के पांच भांगे दो वर्ण के द्विसंयोगी ४०, तीन संयोगी ८०, चार संयोगी ८० भांगे होवे. यदि पांच वर्ण होवे तो ३२ भांगे पूर्वोक्त जैसे जानना और ३२ वा स्यात् काला, हरा, लाल, पीला व श्वेत सब अनेक वचन क्यों कि दस प्रदेशिक स्कंध है. वर्ण के सब मिलकर २३७ भांगे होते हैं. गंध के ६ रस के २३७ वर्ण जैसे और स्पर्श के ३६ चतुष्क प्रदेशिक स्कंध जैसे कहना. यह दश प्रदेशी स्कंध के ५१६ भांगे हुवे. ऐसे ही संख्यात प्रदेशिक व असंख्यात प्रदेशिक का जानना. सूक्ष्म परिणत अनंत प्रदेशिक स्कंध का भी वैसे ही कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! बादर परिणत अनंत प्रदेशिक स्कंध में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श कहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! जैसे

सूत्र

ज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे १९ एवं तेइंदियस्सवि २० एवं चउरिंदियस्सवि २१ एवं जाव सण्णिपंचिंदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २३ बेइंदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २४ एवं तेइंदियस्सवि २५ एवं जाव सण्णिपंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २८ ॥३॥ दो भंते ! णेरइया पढमसमय उववण्णगा किं समजोगी विसमजोगी ? गोयमा ! सिय समजोगी सिय विसमजोगी ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-सिय

भावार्थ

इस से बेइन्द्रिय के अपर्याप्त का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुना २० इस से तेइन्द्रिय के अपर्याप्त का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुना २१ इस से चतुरेन्द्रिय के अपर्याप्त का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुना २२ इस से असंज्ञी पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुना २३ इस से संज्ञी पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुना २४ इस से बेइन्द्रिय के पर्याप्त का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुना २५ इस से तेइन्द्रिय के पर्याप्त का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुना २६ इस से चतुरेन्द्रिय के पर्याप्त का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुना २७ इस से असंज्ञी पंचेन्द्रिय के पर्याप्त का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुना और २८ इस से संज्ञी पंचेन्द्रिय के पर्याप्त का उत्कृष्ट योग असंख्यात गुना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! पहिले समय में उत्पन्न होने वाले दो नारकी क्या समयोगी हैं या विषम योगी हैं ? अहो गौतम ! स्यात् समयोगी

सूत्र

दव्वाणं णो संखेज्जा णो असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! असंखेज्जा णेरइया जाव असंखेज्जा वाउकाइया, अणंता वणस्सइकाइया, असंखेज्जा बेइंदिया एवं जाव वेमाणिया, अणंता सिद्धा, से तेणट्ठेणं जाव अणंता ॥ २ ॥ जीवदव्वाणं भंते ! अजीव दव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, अजीव दव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जीव दव्वाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, णो अजीवदव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव मागच्छंति ? गोयमा! जीवदव्वाण अजीवदव्वा परियादियंति, अजीवदव्वा

भावार्थ

परंतु अनंत कहे हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात नारकी यावत् असंख्यात वायुकाया, अनंत वनस्पतिकाया, असंख्यात बेइन्द्रिय यावत् वैमानिक और अनंत सिद्ध इसलिये ऐसा कहा गया है यावत अनंत जीव द्रव्य हैं ॥ २ ॥ जीव द्रव्य को क्या अजीव उपभोग में आते हैं या अजीव द्रव्य को जीव द्रव्य उपभोग में आते हैं ? अहो गौतम ! जीव द्रव्य को अजीव द्रव्य उपभोग में आते हैं परंतु अजीव द्रव्य को जीव द्रव्य उपभोग में नहीं आते हैं. अहो भगवन् ! ऐसा किस कारन से कहा गया है यावत् अजीव द्रव्य को जीव द्रव्य उपभोग में नहीं आते हैं ? अहो गौतम ! जीव द्रव्य अजीव द्रव्य को ग्रहण करते हैं

सूत्र

सव्वे गुरुए सव्वेसीए सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए ४, एत्थवि बत्तीसं भंगा एवं सव्वेते पंचफासे, अट्ठावीसं भगसयं भवंति ॥ जइ छप्फासे-सव्वेकक्खडे सव्वे गुरुए देसेसिए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे १, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसालुक्खा २, एवं जाव सव्वेकक्खडे सव्वेगुरुए देसासीया देसाउसिणा देसाणिद्धा देसालुक्खा ॥ एए सोलस भंगा ॥ सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे एत्थवि सोलस भंगा ॥ सव्वे मउए सव्वे गुरुए देसेसीए देसेउसिणे देसेणिद्धे देसेलुक्खे एत्थवि सोलस भंगा ॥ सव्वे मउए

भावार्थ

स्पर्श के सब मीलकर १२८ भांगे पांच स्पर्श के होवे यदि छ स्पर्श होवे तो सर्व कर्कश, सर्व गुरु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष २ सर्व कर्कश सर्व गुरु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध एक देश रूक्ष अनेक वचनांत ऐसेही यावत् सर्व कर्कश सर्व गुरु देश शीत, देश ऊष्ण, देश स्निग्ध व देश रूक्ष अनेक यों सोलह भांगे करना. सर्व कर्कश सर्व लघु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध व देश रूक्ष के भी सोलह भांगे जानना. सर्वमृदु सर्वगुरु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध देश रूक्ष के भी सोलह भांगे करना और सर्व मृदु सर्व लघु देश शीत देश ऊष्ण देश स्निग्ध व देश रूक्ष के भी सोलह भांगे करना. यों कर्कश मृदु के चौसठ भांगे

सूत्र

एवं वुच्चइ , एवं जाव वेमाणिया ॥ णवरं सरीर इंदिय जोगा जाणियव्वा जस्स जं अत्थि ॥ ४ ॥ से णूणं भंते ! असंखेज्जेलोए अणंताइं दव्वाइं आगासे भइयव्वाइं ? हंता गोयमा ! असंखेज्जेलोए जाव भइयव्वाइं ॥ ५ ॥ लोगस्सणं भंते ! एगमिं आगासपएसे कइदिसिं पोग्गला चिज्जंति ? गोयमा ! णिव्वाघाएणं छद्दिसिं

भावार्थ

कार्माण, श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय व श्वासोश्वास बनाते हैं इस से ऐसा कहा गया है. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत चौवीस ही दंडक का जानना. परंतु शरीर इन्द्रिय व जोग जिन को जितने होवे उन को उतने कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! क्या असंख्यात प्रदेशात्मक लोक में अनंत द्रव्य ( जीव व परमाणु ) का समावेश हो सके ? हां गौतम ! असंख्यात प्रदेशात्मक लोक में अनंत द्रव्य का समावेश हो सके * ॥५॥ अनंत द्रव्य का लोक में अस्थान कहा वह चयउपचय से होता है इसलिये चयउपचय का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! लोक के एक आकाश प्रदेश में कितनी दिशाओं के पुद्गल चिनाते हैं ? [ एकत्रित होते हैं ] अहो गौतम! निर्व्याघात से छ दिशा के पुद्गल और व्याघात से क्वचित तीन दिशा के अलोक की नमादिक

* जैसे नियत क्षेत्र में एक दीपककी प्रभा के पुद्गल संपूर्ण होने पर भी अन्य दीपक की प्रभा के पुद्गलों का समावेश होता है वैसे ही पुद्गल परिणाम की सामर्थ्यता से असंख्यात प्रदेशात्मक लोकमें अनंत द्रव्य का समावेश होताहै.

कुंभ प्रमाण प० पद्म की वर्षा र० रत्नों की वर्षा वा० होगा ॥१६३॥ त० तब त० उस दा० पुत्र के अ० मातपिता ए० अग्यारहवा दि० दिन वी० व्यतीत होते जा० यावत् सं० प्राप्त वा० बारहवा दि० दिन अ० यह ए० ऐसा गो० गौण गु० गुणनिष्पन्न णा० नाम का० करेंगे ज० जिस से अ० हमारे इ० इस दा० पुत्र के जा० जन्म होते स० शतद्वार ण० नगर में स० अभ्यंतर बा० बाहिर जा० यावत् र० रत्न वर्षा हु० हुइ तं० इसलिये हो० होवे अ० हमारे इ० इस दा० पुत्र का णा० नाम म० महापद्म ॥ १६४ ॥

सूत्र

कुंभग्गसोय पउमवासेय रयणवासेय, वासिहिति ॥ १६३ ॥ तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते जाव संपत्ते बारसाहदिवसे अयमेयारूवं गोणं-गुणनिप्फणं णामधेज्जं काहिति जम्हाणं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सतदुवारे णयरे सब्भितर बाहिरए जाव रयणवासेय वासे वुट्ठे, तं होऊणं अम्हं

भावार्थ

उस रात्रि में भारप्रमाण कुंभप्रमाण पद्म वृष्टि व रत्न वृष्टि होगा ॥ १६३ ॥ अग्यारहवा दिन पूर्ण होकर बारहवा दिन बैठेगा तब उनके मात पिता ऐसा गुण निष्पन्न नाम रखेंगे कि जब हमारा पुत्र का जन्म हुवा तब शतद्वार नगर की आभ्यंतर व बाहिर भार प्रमाण व कुंभप्रमाण पद्म व रत्नों की वृष्टि हुइ इस से

१ बीस पल अथवा शत पल का भार. २ जघन्य सात आढक मध्यम अस्सी आढक और उत्कृष्ट सो आढक का एक कुंभ.

सूत्र

ताइं दव्वओ अणंतपएसियाइं दव्वाइं खेत्तओ असंखेज्जपएसोगाढाइं, एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव णिव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सियचउद्दिसिं, सियपंचदिसिं ॥ ८ ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं वेउव्विय सरीरत्ताए गेण्हंति ताइं किं ठियाइं ? एवंचेव णवरं णियमं छद्दिसिं ॥ एवं आहारगसरीरत्ताएवि ॥ ९ ॥जीवेण भंते ! जाइं दव्वाइं तेयगसरीरत्ताए गेण्हति पुच्छा ? गोयमा ! ठियाइं गेण्हति, णो अट्ठियाइं गेण्हंति, सेस जहा ओरालियसरीरस्स कम्मगसरीर

भावार्थ

अहो गौतम ! द्रव्य से ग्रहण करता है, क्षेत्र से ग्रहण करता है, काल से ग्रहण करता है, और भाव से भी ग्रहण करता है. द्रव्य से अनंत प्रदेशिक द्रव्य ग्रहण करता है, क्षेत्र से असंख्यात प्रदेशा-वगाहित भी ग्रहण करता है. यों जैसे पन्नवणा सूत्र के पहिले आहार उद्देशा में कहा यावत् निर्व्या-घातसे छ दिशा के व्याघातसे स्यात् तीन स्यात् चार व स्यात् पांचों दिशा के पुद्गल ग्रहण करते हैं ॥८॥ अहो भगवन् ! जीव जिन द्रव्यों को वैक्रेय शरीरपने ग्रहण करता है वे क्या स्थितिक हैं या अस्थितिक हैं ? ऐसे ही कहना. परंतु नियमा छ दिशी के पुद्गलों ऐसे ही आहारक शरीर का जानना ॥९॥ अहो भग-वन् !. जीव जो द्रव्य तेजस् शरीरपने ग्रहण करता उन्हे क्या स्थितिक ग्रहण करता है या अस्थितिक ग्रहण करता है ? अहो गौतम ! स्थितिक शरीरपने ग्रहण करता है परंतु अस्थितिक शरीरपने नहीं ग्रहण

सूत्र

णिद्धा देसा लुक्खा ॥ एए चउसट्ठि भंगा ॥ सव्वे गुरुए सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसेसीए देसे उसिणे जाव सव्वे लहुए सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा सीया देसा उसिणा ॥ एए चउसट्ठि भंगा ॥ सव्वे सीए सव्वेणिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए जाव सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसागरुया देसा लहुया एवमेते चउसट्ठि भंगा॥सव्वे ते छप्फासे तिण्णि चउरासिया भंगसया भवंति ३८४ ॥ जइ सत्तफासे सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे कक्खडे देसे गुरुए

भावार्थ

ऊष्ण यों चौसठ भांगे कहना. सब शीत सब स्निग्ध देश कर्कश देश मृदु देश गुरु देश लघु यावत् सब ऊष्ण सब रूक्ष देश कर्कश देश मृदु देश गुरु व देश लघु के चौसठ भांगे कहना. छ स्पर्श के सब मीलकर तीन सो चौरासी भांगे होते हैं. यदि सात स्पर्श होवे तो १ सब कर्कश, देश गुरु देश लघु देश शीत देश ऊष्ण, देश स्निग्ध देश रूक्ष २ सब कर्कश देश गुरु देश लघु देश शीत देश ऊष्ण एक वचन देश स्निग्ध देशरूक्ष अनेकवचनांत यों चार भांगे कहना. ४ सब कर्कश देशगुरु देश लघु देश शीत एक वचन देश ऊष्ण अनेक वचन देश स्निग्ध व देश रूक्ष एक ५सब कर्कशदेश गुरु देश लघु देश शीत अनेक वचन देश ऊष्ण

सूत्र

पएसिएय तत्थणं जे से ओय पएसिए से जहण्णेणं तिपेदेसिए तिपदेसोगाढे उक्कोसेणं अणंत पएसिए तंचेव ॥ तत्थणं जे से जुम्मपएसिए से जहण्णेणं दुपएसिए दुपदेसो गाढे, उक्कोसेणं अणंतपएसिए तंचेव ॥ तत्थणं जे से पयरायते से दुविहे पण्णत्ते तंजहा ओयपएसिएय जुम्म पएसिएय ॥ तत्थणं जे से ओयपएसिए से जहण्णेणं पण्णरसपदेसिए पण्णरसपएसोगाढे ॥ उक्कोसेणं अणंत पएसिए तहेव ॥ तत्थणं जे से जुम्म पएसिए से जहण्णेणं छप्पएसिए छप्पएसोगाढे ॥ उक्कोसेणं अणंत पएसिए तहेव॥ तत्थणं जे से घणायते से दुविहे पण्णत्ते तंजहा ओयपएसिएय जुम्म पएसिएय

भावार्थ

संस्थान के तीन भेद कहे हैं. १ श्रेणिबद्ध आयत, २ प्रतर आयत और ३ घन आयत. उस में श्रेणीबद्ध आयत के दो भेद ओजप्रदेशिक व युग्म प्रदेशिक. ओज प्रदेशिक जघन्य तीन प्रदेशिक तीन प्रदेशावगाही उत्कृष्ट अनंत प्रदेशिक असंख्यात प्रदेशावगाही. युग्म प्रदेशिक जघन्य दो प्रदेशिक दो प्रदेशावगाही उत्कृष्ट अनंत प्रदेशिक असंख्यात प्रदेशावगाही. प्रतरायत के दो भेद ओजप्रदेशिक व युग्म प्रदेशिक. ओज प्रदेशिक जघन्य १५पंदरह प्रदेशिक पंदरह प्रदेशावगाही उत्कृष्ट अनंत प्रदेशिक असंख्यात प्रदेशावगाही. युग्म प्रदेशिक जघन्य छ प्रदेशी छ प्रदेशावगाही उत्कृष्ट अनंत प्रदेशिक असंख्यात प्रदेशावगाही. घनायत

करके आ० आर्य ह० हाथ में वि० छद्मस्थावस्था में गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्र हो० था स० श्रमणघातक जा० यावत् छ० छद्मस्थ में का० कालकिया तं० उस मू० मूल से अ० हे अ० आर्य अ० अनादि अ० अनंत दी० दीर्घ चा० चतुर्गतिक सं० संसार में अ० परिभ्रमण किया ॥ ११३ ॥ तं० इसलिये मा० मत अ० आर्य तु० तुमको के० कोई भ० होवे आ० आचार्य प्रत्यनीक उ० उपाध्याय प्रत्यनीक अ० अपयशकारक अ० अवर्णवाद अ० अकीर्तिकारक मा० मत अ० अनादि अ० अनंत सं० संसार कंतार अ० परिभ्रमण करेगा

उदाए गोसाले मंखलिपुत्ते होत्था समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए तं मूलगाथण अह अज्जो ! अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसारकंतारं अणुपरियट्टइ, ॥ ११३ ॥ तं मा णं अज्जो ! तुब्भंपि केइ भवतु आयरियपडिणीए उवज्झाय पडिणीए आयरियउवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए मा णं सेवि एवंचेव अणादीयं अणवदग्गं जाव संसारकंतारं अणुपरियट्टिहिति,

विदित हो उत्तम ऐसा कहते हैं कि अहो आर्यों ! बहुत काल पहिले मैं श्रमण का घातक मंखली पुत्र गोशाला था. यावत् छद्मस्थ में काल कर गया. वहां से मैंने अनादि अनंत दीर्घ चतुर्गतिक संसार में परिभ्रमण किया ॥ ११३ ॥ इस लिये अहो आर्यों ! तुम आचार्य उपाध्याय का प्रत्यनीक मत होवो, उन का अपयशकारक, अकीर्तिकारक, अवर्णवादक मत होवो. और इस में जैसे मैंने अनादि अनंत चतु-

सूत्र

पएसिए असंखेज्ज पएसोगाढे ॥ १२ ॥ परिमंडलेणं भंते ! संठाणे दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे तेओए दावरजुम्मे कलिओए ? गोयमा ! णो कडजुम्मे णो तेयोगे णो दावरजुम्मे कलिओए ॥ वट्टेणं भंते ! संट्ठाणे दव्वट्ठयाए एवंचेव, एवं जाव आयते ॥ परिमंडलाणं भंते ! संट्ठाणा दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मा तेओगा पुच्छा ? गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा, सिय तेओगा, सिय दावरजुम्मा सिय कलिओगा ॥ विहा-णादेसेणं णो कडजुम्मा, णो तेओगा, णो दावरजुम्मा, कलिओगा, एवं जाव आयता ॥ १३ ॥ परिमंडलेणं भंते ! संठाणे पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे पुच्छा ? गोयमा !

भावार्थ

गाढे ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान द्रव्य से क्या कृतयुग्म, त्रेता, द्वापर या कलि युग्म है ? अहो गौतम ! परिमंडल संस्थान कलियुग्मवाले हैं. परंतु कृत, त्रेता व द्वापर युग्मवाले नहीं हैं. ऐसे ही वृत्त यावत् आयत संस्थान का जानना. अब समुच्चय आश्री कहते हैं. अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान द्रव्य से क्या कृत युग्म, द्वापर, त्रेता कलियुग्म हैं ? अहो गौतम ! समुच्चय आश्री परिमंडल संस्थान स्यात् कृत युग्म, स्यात् त्रेता, स्यात द्वापर, व स्यात कलि युग्म है. विधान से ( विशेषता से ) कृत, त्रेता व द्वापर नहीं है परंतु एक कलि युग्म है. ऐसे ही आयत

सूत्र

प्पभाए पुढवीए घणोदधिघणोदधिवलएसु आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, सेसं तंचेव एवं एएहिं चेव अंतरे समोहत्ताओ जाव अहे सत्तमाए पुढवीए घणोदधिघणोदधि वलएसु आउकाइयत्ताए उववाएयव्वो, एवं जाव अणुत्तरविमाणाणं ईसिप्पभाराए पुढवीए अंतरा समोहए जाव अहे सत्तमाए घणोदधि घणोदधिवलएसु उववाएयव्वो ॥ ६ ॥ वाउकाइयाएणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए पुढवीए अंतरा समोहए समोहइत्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउकाइयत्ताए उववज्जित्तए एवं जहा सत्तरसममए वाउकाइयउद्देसएसु तहा इहवि, णवरं अंतरेसु समोहणा वेयव्वो

भावार्थ

शेष पूर्वोक्त जैसे यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी के घनोदधि के घनोदधि वलय में अप्कायापने उत्पन्न होने तक कहना. और इसी तरह सनत्कुमार माहेन्द्र व ब्रह्मदेवलोक यावत् अनुत्तरविमान व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी के बीच का अप्काय का सातवी पृथ्वी के घनोदधि के घनोदधि वलय में अप्कायापने उत्पन्न होने का कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा व शर्करप्रभा के बीच का वायुकाया मारणांतिक समुद्घात से काल कर के सौधर्म देवलोक में वायुकाय पने उत्पन्न होने योग्य होवे वह क्या वहां उत्पन्न होकर आहार करे अथवा आहार करके उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! इस का जैसे सत्तरहवे शतक में

सूत्र

भंते ! संट्ठाणे किं कडजुम्म पुच्छा ? गोयमा !, सिय कडजुम्मपएसोगाढे सिय तेओगपएसोगाढे, णो दावरजुम्म पएसोगाढे, सिय कलिओगपएसोगाढे ॥ १६ ॥ तंसेणं भंते ! संट्ठाणे पुच्छा ? गोयमा ! सिय कडजुम्म पएसोगाढे. सिय तेओग पएसोगाढे. सिय दावरजुम्म पएसोगाढे, णो कलिओग पएसोगाढे ॥ १७ ॥ चउरंसेणं भंते ! संट्ठाणे जहा वट्टे तहा चउरंसेवि ॥ १८ ॥ आयतएणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! सिय कडजुम्म पएसोगाढे जाव सिय कलिओग पएसोगाढे ॥ १९ ॥ परिमंडलाणं भंते ! संट्ठाणा किं कडजुम्म पएसोगाढा तेओग पुच्छा ?

भावार्थ

पृच्छा ? अहो गौतम ! स्यात कृत युग्म प्रदेशावगाही, स्यात त्रेता युग्म प्रदेशावगाही स्यात कलियुग्म प्रदेशावगाही परंतु द्वापर युग्म प्रदेशावगाही नहीं. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! त्र्यंस संस्थान की पृच्छा ? अहो गौतम ! स्यात कृत युग्म प्रदेशावगाही, स्यात त्रेता, न स्यात द्वापर युग्म प्रदेशावगाही परंतु कलियुग्म प्रदेशावगाही नहीं ॥ १७ ॥ चउरंस संस्थान का वृत संस्थान जैसे कहना ॥ १८ ॥ आयत संस्थान की पृच्छा ? अहो गौतम ! स्यात कृत युग्म प्रदेशावगाही यावत् स्यात कलि युग्म प्रदेशावगाही ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान क्या कृतयुग्म प्रदेशावगाही हैं वगैरह पृच्छा ? अहो गौतम ! ओघिक सं- विधाना

अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा, पदेसट्ठयाए परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ॥ दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया दव्वट्ठयाए तेचेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ॥ परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, तेचेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा तेचेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ॥२२॥ एएसिणं भंते ! एग पदेसोगाढाणं संखेज्जपदेसोगाढाणं असं-

द्रव्य से असंख्यात गुने. सब से थोडे प्रदेश से अनंत प्रदेशिक स्कंध, इस से परमाणु पुद्गल अप्रदेश अनंत गुने, इन से संख्यात प्रदेशिक स्कंध प्रदेश से संख्यात गुने इस से असंख्यात प्रदेशिक द्रव्य से असंख्यात गुने. अब द्रव्य प्रदेश आश्री अनंत प्रदेशिक स्कंध द्रव्य से सब से थोडे उस से प्रदेश आश्री अनंत गुने इस से परमाणु पुद्गल द्रव्य से अप्रदेशिक अनंत गुने, इस से संख्यात प्रदेशिक स्कंध द्रव्य से संख्यात गुने इस से वही प्रदेश से संख्यात गुने, इस से असंख्यात प्रदेशिक स्कंध द्रव्य से असंख्यात गुने इस से वही प्रदेश आश्री असंख्यात गुने ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! इन एक

सूत्र

पएसट्टयाए संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्टयाए संखेज्जगुणा तेचेव पदेसट्टयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्टयाए असंखेज्जगुणा, तेचेव पदेसट्टयाए असंखेज्जगुणा ॥ २३ ॥ एएसिणं भंते ! एगसमयट्ठितीयाणं संखेज्ज समयट्ठितीयाणं असंखेज्ज समयट्ठितीयाणय पोग्गलाणं जहा ओगाहणाए तहा ठिईएवि भाणियव्वं अप्पाबहुग ॥२४॥ एएसिणं भंते ! एगगुण कालगाणं संखेज्जगुण कालगाणं, असंखेज्जगुण कालगाणं, अणंतगुण कालगाणय पोग्गलाणं दव्वट्टयाए पदेसट्टयाए दव्वट्टपएसट्टयाए, एएसिणं जहा परमाणुपोग्गलाणं अप्पाबहुग तहा एएसिंपि अप्पाबहुग ॥ एवं सेसाणवि

भावार्थ

इस से वही प्रदेश अर्थ संख्यात गुने, इस से असंख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल द्रव्य से असंख्यात गुने इस से वही प्रदेश अर्थी असंख्यात गुने ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! इन एक समय की स्थिति वाले संख्यात समय की स्थिति वाले व असंख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गलों में कौन अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! जैसे अवगाहना का कहा वैसे ही स्थिति का कहना ॥२४॥ अहो भगवन् ! इन एक गुण काला, संख्यात गुण काला, असंख्यात गुण काला व अनंत गुण काला पुद्गल में द्रव्य से

गोयमा ! अविरतिं पडुच, से तेणट्ठेणं जाव तदुभयाहिगरणीवि ॥ एवं जाव वेमाणिए ॥ ७ ॥ जीवाणं भंते ! अधिगरणं किं आयप्पओग णिव्वत्तिए, परप्पओग णिव्वत्तिए तदुभयप्पओग णिव्वत्तिए? गोयमा ! आयप्पओगणिव्वत्तिएवि, परप्पओगणिव्वत्तिएवि, तदुभयप्पओगणिव्वत्तिएवि ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा ! अविरति पडुच्च से तेणट्ठेणं जाव तदुभयप्पओग णिव्वत्तिएवि॥एवं जाव वेमाणियाणं॥८॥कइणं भंते! सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा! पंचसरीरगा पण्णत्ता, तंजहा-ओरालिय जाव कम्मए ॥९॥

यावत् उभय के अधिकरणवाला जीव है. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जीव अधिकरण को अपने शरीर प्रयोग से बनाता है, अन्य के शरीर प्रयोग से बनाता है अथवा उभय के शरीर प्रयोग से बनाता है ? अहो गौतम ! अपने शरीर प्रयोग से बनाता है, पर के शरीर प्रयोग से बनाता है व उभय के शरीर प्रयोग से बनाता है, अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जीव आत्मप्रयोग से अधिकरण बनाता है यावत् उभयप्रयोगसे अधिकरण बनाता है ? अहो गौतम! अविरति भावसे इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् उभय के शरीर प्रयोग से अधिकरण बनाता है ऐसे ही वैमानिक पर्यंत चौवीस दंडक का जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! शरीर कितने कहे ? अहो गौतम ! शरीर पांच कहे. जिन के नाम. १. उदारिक, २. वैक्रेय ३ आहारक ४ तेजस और ५. कार्मण ॥ ९ ॥ अहो भगवन् !

सूत्र

पोग्गला दव्वट्ठपदेसट्ठयाए, संखेज्जगुण कक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, तेचेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जगुण कक्खडा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तेचेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, अणंतगुण कक्खडा दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, तेचेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ॥ एवं मउय गुरुय लहुयाणवि अप्पाबहुगं ॥ सीय उसिण णिद्ध लुक्खाणं जहा वण्णाणं तहेव ॥ २५ ॥ परमाणू पोग्गलेणं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे तेयोए दावरजुम्मे कलिओए ? गोयमा ! णो कडजुम्मे, णो तेयोए.

भावार्थ

शेष सब वैसे ही कहना. अब द्रव्य प्रदेश आश्री कहते हैं द्रव्य से व प्रदेश से सब से थोडे एक गुण कर्कश पुद्गल, इस से संख्यात गुन कर्कश पुद्गल द्रव्य आश्री संख्यात गुने, इस से उस के ही पुद्गल प्रदेश आश्री संख्यात गुने, इस से असंख्यात गुण कर्कश पुद्गल द्रव्य आश्री असंख्यात गुने, इस से वही प्रदेश आश्री असंख्यात गुने, इस से अनंत गुन कर्कश पुद्गल द्रव्य आश्री अनंत गुने, इस से वही प्रदेश आश्री असंख्यात गुने. ऐसे ही मृदु, गुरु व लघु की अल्पाबहुत्व कहना. शीत, उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष की वर्ण जैसे कहना. ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल द्रव्यार्थिक नय से क्या कृत युग्म है, त्र्योज है, द्वापर

सूत्र

निवा ओसप्पिणीतिवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ३ ॥ एएसुणं भंते पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु अत्थि उस्सप्पिणीतिवा ओसप्पिणीतिवा ? हंता अत्थि ॥ ४ ॥ एएसुणं पंचसु महाविदेहेसु णेवत्थि ओसप्पिणीतिवा उस्सप्पिणीतिवा, अवट्ठिएणं तत्थकाले पण्णत्ते? समणाउसो ! ॥५॥ एएसुणं भंते ! पंचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवेंति? णो इणट्ठे समट्ठे ॥६॥ एएसुण पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु पुरिम पच्छिमगा दुवे अरहंता भगवंतो पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवेंति, अवसेसाणं अरहंता भगवंतो चाउज्जाम धम्मं पण्णवयंति एएसुणं पंचसु महाविदेहेसु अरहंता

भावार्थ

भूमि में क्या उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् वहां अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नहीं है. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच भरत एरवत में क्या अवसर्पिणी उत्सर्पिणी है ? हां है. ॥ ४ ॥ अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! इन पांच महाविदेह क्षेत्र में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल नहीं है परंतु अवस्थित काल है. अहो भगवन् ! इन पांच महाविदेह क्षेत्र में जो अरिहंत भगवंत होते हैं वे क्या प्रतिक्रमण सहित पांच महाव्रत रूप धर्म प्ररूपते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् नहीं प्ररूपते हैं. ॥ ६ ॥ अहो गौतम ! इन पांच भरत एरवत में पहिले छेले दो अरिहंत भगवंत प्रतिक्रमण सहित पांच महाव्रत प्ररूपते हैं शेष मध्य चार याम रूप धर्म कहते हैं ? इन पांच महाविदेह क्षेत्र में अरिहंत भगवंत चार

जहा तिपदेसिया ॥ अट्ठपदेसिया जहा चउप्पदेसिया ॥ णवपदेसिया जहा परमाणु पोग्गला ॥ दसपदेसिया जहा दुपदेसिया ॥ संखेज्जपएसियाणं पुच्छा, गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा ॥ विहाणादेसेणं कडजुम्मावि जाव कलिओगावि ॥ एवं असंखेज्जपएसियावि ॥ अणंतपएसियावि ॥ २१ ॥ परमाणु पोग्गलेणं भंते ! किं कडजुम्मपएसोगाढे पुच्छा ? गोयमा ! णो कडजुम्मपएसोगाढे णो तेओए, णो दावरजुम्मे कलिओगपएसोगाढे ॥ दुपदेसिएणं पुच्छा ? गोयमा ! णो कडजुम्मपएसोगाढे णो तेओए, सिय दावरजुम्मपएसोगाढे, सिय कलिओग

का तीन प्रदेशिक जैसे, आठ प्रदेशिक का चार प्रदेशिक जैसे, नव प्रदेशिक का परमाणु पुद्गल जैसे दश प्रदेशिक का दो प्रदेशी जैसे कहना. संख्यात प्रदेशी की पृच्छा, अहो गौतम ! सामान्य से स्यात् ... यावत् स्यात् कलिओज. विधान से कृतयुग्म यावत् कलि युग्म ऐसे ही असंख्यात ... का कहना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल क्या कृतयुग्म प्रदेशावगाही है वगैरह ... अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल कृतयुग्म प्रदेशावगाही नहीं है परंतु कलि ओज प्रदेशावगाही. ... अहो गौतम ! कृतयुग्म प्रदेशावगाही द्विप्रदेशिक स्कंध नहीं है परंतु स्यात्

सूत्र

कलिओगा ॥ विहाणादेसेणं णो कडजुम्मपएसोगाढा णो तेओगपएसोगाढा, दावर जुम्मपएसो गाढावि, कलिओगपएसोगाढावि ॥ तिपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ओघादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा, णो तेओगा, णो दावर णो कलिओगा ॥ विहाणादेसेणं णो कडजुम्मपएसोगाढा, तेओगपएसोगाढावि, दावरजुम्मपएसो गाढावि, कलिओग पएसो गाढावि ॥ चउप्पएसियाणं पुच्छा ? गोयमा! ओघादेसेण कडजुम्म-पएसोगाढा णो तेओगा, णो दावर णो कलिओगा ॥ विहाणा देसेण कडजुम्मपएसो गाढावि जावकलिओगपएसो गाढावि ॥ एवं जाव अणंत पएसिया ॥ ३० ॥ परमाणु पोग्गलाणं भंते! किं

भावार्थ

पृच्छा, अहो गौतम ! सामान्य से कृतयुग्म प्रदेशावगाही है परंतु त्र्योज, द्वापर व कलि युग्म प्रदेशाव-गाही नहीं है. और विधाना देश से कृतयुग्म, त्र्योज कलियुग्म प्रदेशावगाही नहीं है परंतु द्वापर युग्म प्रदेशावगाही है. तीन प्रदेशी की पृच्छा, अहो गौतम ! सामान्य से कृतयुग्म प्रदेशावगाही है परंतु त्र्योज, द्वापर व कलि योज, प्रदेशावगाही नहीं है विधाना देश से कृतयुग्म प्रदेशावगाही नहीं है परंतु त्र्योज, द्वापर व कलि योज प्रदेशावगाही है. चार प्रदेशिक स्कंध की पृच्छा, अहो गौतम ! सामान्य से कृत-युग्म प्रदेशावगाही है परंतु त्र्योज, द्वापर व कलियुग्म प्रदेशावगाही नहीं है और विधाना देश से कृत-युग्म प्रदेशावगाही यावत् कलियुग्म प्रदेशावगाही जानना. ऐसे ही अनंत प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहना ॥ ३० ॥

सूत्र

जिणपरियाए तावइयाए संखेज्जाइं आगमेस्साणं चरमतित्थगरस्स तित्थे अणुसिज्जिस्सइ ॥ १२ ॥ तित्थं भंते ! तित्थे तित्थंकरे तित्थे ? गोयमा ! अरहा ताव णियमं तित्थंगरेति; तित्थं पुण चाउवण्णाइण्णो समणसंघे, तंजहा-समणा समणीओ सावगा सावियाओ ॥ १३ ॥ पवयणं भंते ! पवयण पावयणं पवयणं ? गोयमा ! अरहा ताव णियमं पावयणी पवयणं, पुण दुवालसंगे गणिपिडगे, तंजहा-आयारो जाव दिट्ठिवाओ ॥ १४ ॥ जे इमे भंते ! उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा णाया कोरव्वा एए अस्सिं धम्मे ओगाहइ, ओगाहइत्ता अट्ठविहं कम्मरयमलं पवाहिंति २ त्ता

भावार्थ

की जितनी जिन पर्याय उतना संख्यात काल पर्यंत आगामिक चरम तीर्थंकर का तीर्थ रहेगा ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! तीर्थ को तीर्थ कहना या तीर्थंकर को तीर्थ कहना ? अहो गौतम ! अरिहंत तीर्थ करनेवाले हैं. और साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका इन चारों वर्णों से आकीर्ण श्रमणसंघ तीर्थ है ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! शास्त्रों को प्रवचन कहना या शास्त्र कर्ता को प्रवचन कहना ? अहो गौतम ! अरिहंत प्रवचनी हैं, क्योंकि वे शास्त्र के उपदेष्टा हैं और द्वादशांग गणिपिडग ही प्रवचन है. जिन के नाम. आचारांग यावत् दृष्टिवाद ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! जो उग्रकुलवाले, भोगकुलवाले, राजा के कुलवाले, इक्ष्वाग के

सूत्र

खंधस्स पुच्छा, गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जंकालं, परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतकालं ॥ णि-रेयस्स केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइ भागं। परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं उक्को-सेणं अणतं कालं एवं जाव अणंतपदेसियस्स ॥ परमाणु पोग्गलाणं भंते ! सेयाणं केवइयं कालं अंतरंहोइ ? गोयमा ! णत्थि अंतरं ॥ णिरेयाणं केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! णत्थि अंतरं ॥ एवं जाव अणंतपदेसियाणं खंधाणं ॥ ३६ ॥ एएसिणं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सेयाणं णिरेयाणय कयरे २ जाव विसेसाहियावा ?

भावार्थ

परस्थानांतर आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट अनंतकाल. अहो भगवन् ! स्थिर का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! स्वस्थानांतर आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यातवा भाग परस्थानांतर आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट अनंतकाल ऐसे ही अनंत प्रदेशिक का कहना. अहो भगवन् ! कंपन स्वभाववाले परमाणु पुद्गलों का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! उन का अंतर नहीं है. स्थिर का कितना अंतर ? अहो गौतम ! उन का भी अंतर नहीं है. ऐसे ही अनंत प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहना. ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् ! इन कंपन व स्थिर स्वभाववाले परमाणु पुद्गल में कौन किस से अल्प बहुत यावत्

सूत्र

असंखेज्जगुणा, ॥ ३९ ॥ परमाणुपोग्गलेणं भंते! किं देसेए सव्वेए णिरेए? गोयमा! णो देसेए सिय सव्वेए सिय णिरेए ॥ दुपदेसिएणं भंते! खंधे पुच्छा? गोयमा! सिय देसेए सिय सव्वेए, सिय णिरेए ॥ एवं अणंतपदेसिए ॥ परमाणुपोग्गलाणं भंते! किं देसेया सव्वेया णिरेया? गोयमा! णो देसेया सव्वेयावि णिरेयावि ॥ दुपदेसियाणं भंते! खंधा पुच्छा? गोयमा! देसेयावि सव्वेयावि णिरेयावि एवं जाव अणंतपदेसिया ॥ ४० ॥ परमाणुपोग्गलेणं भंते! सव्वेए कालओ केवचिरंहोइ? गोयमा! जहण्णेणं

भावार्थ

॥ ३९ ॥ अहो भगवन्! परमाणु पुद्गल क्या देश से कंपन वाला, सर्व से कंपन वाला या स्थिर है? अहो गौतम! देश से कंपन वाला नहीं है परंतु स्यात सर्व से कंपन वाला व स्यात स्थिर है, द्विप्रदेशिक स्कंध की पृच्छा, अहो गौतम! स्यात देश से कंपन वाला, स्यात सर्व से वाला कंपन व स्यात स्थिर है ऐसे ही अनंत प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहना. अहो भगवन्! बहुत परमाणु पुद्गल क्या देश से कंपन वाले हैं, सर्व से कंपने वाले हैं या स्थिर हैं? अहो गौतम! देश से कंपन वाले नहीं हैं परंतु सर्व से कंपन वाले व स्थिर हैं. द्विप्रदेशिक स्कंध की पृच्छा, देश से कंपन वाले, सर्व से कंपन वाले व स्थिर भी हैं. ऐसे ही अनंत प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहना ॥ ४० ॥ अहो भगवन्! परमाणु पुद्गल सर्व से कंपन वाला

सूत्र

चारणाय जंघाचारणाय ॥ १ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-विज्जाचारणाय ? विज्जाचारणाय गोयमा ! तस्सणं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तओकम्मेणं विज्जाएसु उत्तरगुणलद्धिखममाणस्स विज्जाचारणलद्धी णाम लद्धी समुप्पज्जइ, से तेणट्ठेणं जाव विज्जाचारणा, विज्जाचारणा ॥ २ ॥ विज्जाचारणस्सणं भंते ! कहं सीहागई कहं सीहेगइविसए पण्णत्ते ? गोयमा अयण्णं जंबूद्दीवेदीवे जाव किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं देवेणं महिड्ढीए जाव महेसक्खे जाव इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं

भावार्थ

में गमन करे सो विद्याचारण और २ जंघा शक्ति विशेष से जो आकाश में गमन करे सो जंघा चारण ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! विद्याचारण क्यों कहा गया है ? अहो गौतम ! अंतर रहित छठ २ का तप करने से, पूर्वगत श्रुत विशेष से उत्तरगुण लिद्ध विशुद्धादिक से विद्याचारण नामक लब्धि प्राप्त होवे इस से अहो गौतम ! विद्या चारण लब्धि कही ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! विद्याचारण की कैसी शीघ्रगति और कैसा शीघ्रगति विषय है ? अहो गौतम ! एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा इस जम्बूद्वीप को तीन लाख सोलह हजार दो सो सत्ताइस योजन से कुछ अधिक परिधि है, उसे कोई महा ऋद्धि वंत यावत् महा ऐश्वर्यवंत देवता तीन चपटी बजाने जितनी देर में तीन वक्त प्रदक्षिणा देकर शीघ्र आता है.

सूत्र

णत्थि अंतरं णिरेयाणं केवइयं? णत्थि अंतरं दुपदेसियाणं भंते! खंधाणं देसेयाणं केवतिकालं? णत्थि अंतरं सव्वेयाणं केवइ? णत्थि अंतरं णिरेयाणं केवइ? णत्थि अंतरं॥ एवं जाव अणंत पदेसियाणं॥ ९४॥ एएसिणं भंते! परमाणु पोग्गलाणं सव्वेयाणं णिरेयाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा परमाणु पोग्गला सव्वेया, णिरेया असंखेज्ज गुणा॥ एएसिणं भंते! दुपदेसियाणं खंधाणं देसेयाणं सव्वेयाणं णिरेयाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा दुपदेसिया खंधा सव्वेया, देसेया असंखेज्जगुणा, णिरेया असंखेज्जगुणा॥ एवं जाव असंखेज्जपएसियाणं खंधाणं॥ एएसिणं भंते! अणंतपदेसियाणं खंधाणं देसेयाणं सव्वेयाणं णिरेयाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा? गोयमा!

भावार्थ

रहता है. वैसे ही स्थिरका भी अंतर नहीं है. अहो भगवन्! द्विप्रदेशिक को देशकंपकी कितना अंतर? अहो गौतम! उन का अंतर नहीं है वैसेही सर्वकम्प व अकम्पका जानना. ऐसेही अनंत प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहना॥९४॥ अहो भगवन्! परमाणु पुद्गल के सकम्प व अकम्प में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है? अहो गौतम! सब से थोडे परमाणु पुद्गल सर्व कम्प इस से अकम्प असंख्यातगुने. अहो भगवन्! इन द्विप्रदेशिक स्कंध के देश कम्पन, सर्व कम्पन व अकम्पन में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है? अहो गौतम! सब से थोडे द्विप्रदेश स्कंध सर्व कम्पनवाले, इस से देश कम्पनवाले असंख्यातगुने. इस से अकम्प असंख्यातगुने. ऐसे ही असंख्यात प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहना. अहो भगवन्! इन

सूत्र छक्केहिय समज्जियाणं कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढवीकाइया छक्केहिय समज्जिया, छक्केहिय णो छक्केणय समज्जिया संखेज्जगुणा ॥ एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । बेइंदियाणं जाव वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥ एएसिणं भंते ! सिद्धाणं छक्कसमज्जियाणं णो छक्कसमज्जियाणं जाव छक्केहिय णो छक्केणय समज्जियाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोव सिद्धा छक्केहिय णो छक्केणय समज्जिया, छक्केहिय समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केणय णो छक्केणय समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा, णो छक्क समज्जिया संखेज्जगुणा ॥ ११ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं बारस समज्जिया णो बारस समज्जिया

भावार्थ विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे पृथ्वी काया बहुत छक्क समार्जित इस से बहुत छक्क नो छक्क समार्जित संख्यात गुना. ऐसे ही वनस्पतिकाया तक कहना. बेइन्द्रिय से वैमानिक पर्यंत नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् ! इन छक्क समार्जित, नो छक्क समार्जित यावत् बहुत छक्क समार्जित में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे सिद्ध बहुत छक्क नो छक्क समार्जित इस से बहुत छक्क समार्जित संख्यात गुने इस से छक्क नो छक्क संख्यातगुने इस से छक्क समार्जित संख्यातगुने इन से नो छक्क समार्जित संख्यातगुने ॥११॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी बारह

सूत्र

अणंताओ आवलियाओ ॥ ५ ॥ थोवेणं भंते ! किं संखेज्जाओ आणापाणूओ असंखेज्जाओ जहा आवलियाए वत्तव्वया एवं आणापाणूओवि निरवसेसा ॥ एवं एएणं गमएणं जाव सीसपहेलिया भाणियव्वा ॥ सागरोवमेणं भंते ! किं संखेज्जा पलिओवमा पुच्छा ? गोयमा ! संखेज्जा पलिओवमा णो असंखेज्जा पलिओवमा णो अणंता पलिओवमा ॥ एवं ओसप्पिणीओवि ॥ पोग्गलपरियट्टेणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! णो संखेज्जा पलिओवमा, णो असंखेज्जा पलिओवमा, अणंता पलिओवमा ॥ एवं जाव सव्वद्धा ॥ सागरोवमाणं भंते ! किं संखेज्जा पलिओवमा पुच्छा ? गोयमा ! सिय संखेज्जा पलिओवमा, सिय असंखेज्जा पलिओवमा, सिय अणंता पलिओवमा ॥

भावार्थ

परंतु स्यात् असंख्यात व स्यात् अनंत आवलिकाओं ऐसे ही उत्सर्पिणी पर्यंत कहना. पुद्गल परावर्त की पृच्छा, अहो गौतम ! संख्यात असंख्यात आवलिकाओं नहीं परंतु अनंत आवलिकाओं जानना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! स्तोक को क्या संख्यात श्वासोश्वास हैं, असंख्यात श्वासोश्वास हैं या अनंत श्वासोश्वास हैं ? अहो गौतम ! जैसे आवलिका की वक्तव्यता कही वैसे ही श्वासोश्वास की वक्तव्यता कहना. ऐसे ही शीर्षप्रहेलिका पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! सागरोपम के क्या संख्यात पल्योपम वगैरह पृच्छा. अहो

सूत्र

णेरइया वारसमुणं णो वारसएणं समज्जिया ॥ जेणं णेरइया णेगेहिं वारसएहिं पवेस णएणं पविसंति तेणं णेरइया वारसएहिं समज्जिया ॥ जेणं णेरइया णेगेहिं वारसएहिं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेण एक्कारसएणं पवेसणएण पविसंति तेणं णेरइया वारसएहिय णो वारसएणय समज्जिया ॥ से तेणट्ठेणं जाव समज्जियावि ॥ एवं जाव थणियकुमारा॥ पुढवीकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुढवीकाइया णो वारसतसमज्जिया णो नोवारसएणय समज्जिया, णो वारसएण णो वारसएणय समज्जिया, वारसएहिं समज्जिया वारसएहिय णो वारसएणय समज्जिया ॥ से केणट्ठेणं भंते ! जाव सम-

भावार्थ

बारह प्रवेशन में प्रवेश करते हैं वे बहुत बारह से समार्जित हैं और जो नारकी बहुत बारह और अन्य जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट अग्यारह प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे बहुत बारह व नोबारह समार्जित हैं. इसलिये ऐसा कहा गया है यावत् समार्जित हैं. ऐसे ही स्तनित कुमारपर्यंत जानना. पृथ्वीकाया की पृच्छा ! अहो गौतम ! पृथ्वीकाया बारह समार्जित, नो बारह समार्जित और बारह समार्जित नो बारह समार्जित नहीं है परंतु बहुत बारह समार्जित व बहुत बारह समार्जित व नो बारह समार्जित है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् नो बारह समार्जित है ? अहो गौतम जो पृथ्वी काया

सूत्र

अणंताओ ॥ पोग्गलपरियट्टेणं भंते! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणी उसप्पिणीओ पुच्छा ? गोयमा! णो संखेज्जाओ ओसप्पिणी उस्सप्पिणीओ, णो असंखेज्जाओ, अणंताओ ओसप्पिणीओ उसप्पिणीओ ॥ एवं जाव सव्वद्धा ॥ पोग्गलपरियट्टाणं भंते ! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणीउसप्पिणीओ पुच्छा? गोयमा ! णो संखेज्जाओ. ओसप्पिणी उस्सप्पिणीओ, णो असंखेज्जाओ, अणंताओ ओसप्पिणी उस्सप्पिणीओ ॥६॥ तीयद्धाणं भंते ! किं संखेज्जा पोग्गल परियट्टा ? गोयमा ! णो संखेज्जा पोग्गलपरियट्टा

भावार्थ

अहो भगवन् ! पुद्गल परावर्त की क्या संख्यात अवसर्पिणी है ? वगैरह पृच्छा, अहो गौतम ! संख्यात व असंख्यात अवसर्पिणी नहीं है परंतु अनंत अवसर्पिणी है. अहो भगवन् ! पुद्गल परावर्त की क्या संख्यात उत्सर्पिणी है ? अहो गौतम ! संख्यात असंख्यात उत्सर्पिणी नहीं है परन्तु अनंत उत्सर्पिणी है. अहो भगवन् ! पुद्गल परावर्त की क्या संख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी है ? वगैरह पृच्छा, अहो गौतम ! संख्यात असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नहीं है परंतु अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी है. ऐसे ही सब काल पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! बहुत पुद्गल परावर्त में क्या संख्यात अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी पृच्छा, अहो गौतम ! संख्यात असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नहीं परंतु अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी है. ॥६॥ अहो भगवन् ! अतीत काल में क्या संख्यात पुद्गल परावर्त है या असंख्यात पुद्गल परावर्त है.

पंचहिं पुट्ठा जहा कंदए । एवं जाव बीयं ॥ ११ ॥ कइणं भंते ! सरीरया पण्णत्ता? गोयमा ! पंच सरीरया पण्णत्ता, तंजहा-ओरालियं जाव कम्मए ॥ १२ ॥ कइणं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचइंदिया पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदियं जाव फासिंदियं ॥ १३ ॥ कइविहेण भंते ! जोए पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तंजहा-मणजोए वयजोए कायजोए ॥ १४ ॥ जीवेणं भंते ! ओरालियसरीरं णिव्वत्तिएमाणे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंच किरिए, एवं पुढवीकाइएवि, एवं जाव मणुस्से ॥ १५ ॥ जीवाणं भंते ! ओरालिय

भानना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! शरीर कितने कहे हैं ! अहो गौतम ! शरीर पांच कहे हैं. जिन के नाम उदारिक शरीर वैक्रेय शरीर, आहारक शरीर, तेजस शरीर व कार्माण शरीर ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रियों कितनी कही हैं ? अहो गौतम ! इन्द्रियों पांच कही हैं. श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! योग कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! योग तीन कहे हैं १ मन योग २ वचन योग व ३ काया योग ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीर बनाते हुवे जीवों को कितनी क्रियाओं लगे ? अहो गौतम ! कदाचित् चार व कदाचित् पांच क्रियाओं लगे. ऐसे ही पृथ्वीकाया का यावत् मनुष्य तक कहना

सूत्र

पण्णवणवेयरागे कप्पचरित्त पडिसेवणा णाणे ॥ तित्थलिंग सरीर खित्ते काले गति संजमणिकासे ॥ १ ॥ जोगुवओग कसाए, लेसा परिणाम बंध वेदेय ॥ कम्मोदीरण उवसं, पजहण्ण सण्णाय आहारे ॥ २ ॥ भव आगरिसे कालं, तरेण समुग्घायखेत्त फुसणाय ॥ भावे परिमाणं खलु, अप्पाबहुयं णियंठाणं ॥ ३ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-कइणं भंते! णियंठा पण्णत्ता ? गोयमा! पंच णियंठा पण्णत्ता, तंजहा-पुलाए, बउसे, कुसीले, णियंठे, सिणाते, ॥ १ ॥ पुलाएणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

पांचवे उद्देशे के अंत में भाव के नाम कहे. उत्तम भाव निर्ग्रन्थ को होते हैं इसलिये निर्ग्रन्थ का प्रश्न इस के द्वार ३६ कहे हैं. १ प्ररूपणा द्वार २ वेदद्वार ३ रागद्वार ४ कल्प द्वार ५ चारित्रद्वार ६ ७ ज्ञान ८ तीर्थ ९ लिंग १० शरीर ११ क्षेत्र १२ काल १३ गति १४ संयम १५ निकर्ष (१६) १६ योग १७ उपयोग १८ कषाय १९ लेश्या २० परिणाम २१ बंध २२ वेद २३ कर्मोदीरणा ४ अंगीकार करना त्यागना २५ संज्ञा २६ आहार २७ भव २८ आकर्ष २९ काल ३० अंतर ३१ ३२ ३३ क्षेत्र ३३ स्पर्शना ३४ भाव ३५ परिमाण और ३६ अल्पा बहुत्व. राजगृह नगर में यावत् ऐसा बोले अहो भगवन् ! कितने प्रकार के निर्ग्रन्थ कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच प्रकार के निर्ग्रन्थ कहे हैं.

सूत्र

चुलसीतिहिय णो चुलसीतिएय समज्जिया ? गोयमा ! णेरइया चुलसीतिसमज्जियावि जाव चुलसीतिहिय णो चुलसीतिहियसमज्जियावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव समज्जियावि ? गोयमा ! जेणं णेरइया चुलसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया चुलसीतिसमज्जिया, जेणं णेरइया जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीति पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया णो चुलसीति समज्जिया, जेणं णेरइया चुलसीतिएणं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया चुलसीतिएणय णो चुलसीतिएय सम-

भावार्थ

भगवन् ! क्या नारकी १ चौरासी से समर्जित हैं, २ नो चौरासी से समर्जित हैं, ३ चौरासी नो चौरासी से समर्जित हैं ४ बहुत चौरासी से समर्जित हैं या ५ बहुत चौरासी बहुत नो चौरासी से समर्जित हैं ? अहो गौतम ! नारकी में पांचों भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया यावत् नो चौरासी समर्जित हैं ? अहो गौतम ! जो नारकी चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे नारकी चौरासी समर्जित हैं जो नारकी जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट त्र्यासी तक प्रवेश करते हैं वे नारकी नो चौरासी समर्जित हैं, जो नारकी चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं और उपर जघन्य एक

पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा-णाणपडिसेवणा कुसीले, दंसणपडिसेवणा कुसीले, चरित्तपडिसेवणा कुसीले, लिंगपडिसेवणा कुसीले, अहासुहुमपडिसेवणा कुसीले णामंपंचमे ॥ कसाय कुसीलेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-णाणकसाय कुसीले, दंसणकसाय कुसीले, चरित्तकसाय कुसीले, लिंगकसाय कुसीले, अहा सुहुमकसाय कुसीले, णामं पंचमे ॥ णियंठेणं भंते !

वांच्छा करे. अहो भगवन् ! बकुश के कितने भेद कहे हैं. ? अहो गौतम ! बकुश के पांच भेद कहे हैं १ जानकर दोष लगावे २ अजान में दोष लगावे ३ प्रगटदोष लगावे ४ गुप्त दोष और ५ शरीर की शुश्रूषा करे. अहो भगवन् ! कुशील के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कुशील के दो भेद कहे हैं १ प्रतिसेवना कुशील सम्यक्त्व विराधक और २ कषाय कुशील कषाय से दोषित होवे. अहो भगवन् ! प्रतिसेवना कुशील के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच भेद हैं. १ ज्ञान प्रतिसेवना ज्ञान की सम्यक् प्रकार से आराधना करे नहीं २ दर्शन प्रतिसेवना दर्शन का विराधक होवे ३ चारित्र प्रतिसेवना चारित्रका विराधक होवे. ४ लिंग प्रतिसेवना लिंग का विराधक और ५ यथासूक्ष्म प्रतिसेवना तपादि से नियाणा करे. अहो भगवन् ! कषाय कुशील के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कषाय कुशील के पांच भेद कहे हैं १ ज्ञान कषाय कुशील ज्ञान आश्री कषाय करे २ दर्शन कषाय कुशील दर्शन आश्री कषाय करे ३

सूत्र

भंते ! किं सवेयए होज्जा, अवेयए होज्जा ? गोयमा ! सवेयए होज्जा, णो अवेयए-होज्जा ॥ जइ सवेयए होज्जा - किं इत्थिवेयए होज्जा, पुरिसवेयए होज्जा, पुरिसणपुंसगवेयए होज्जा ? गोयमा ! णो इत्थीवेयए होज्जा, पुरिसवेयए होज्जा, पुरिसणपुंसगवेयए होज्जा ॥ बउसेणं भंते ! किं सवेयए होज्जा अवेयए होज्जा ? गोयमा ! सवेयए होज्जा णो अवेयए होज्जा ॥ जइ सवेयए होज्जा किं इत्थीवेयए होज्जा, पुरिसवेयए होज्जा, पुरिसणपुंसगवेयए होज्जा ? गोयमा ! इत्थीवेयए होज्जा, पुरिसवेयए होज्जा, पुरिस-णपुंसगवेयए होज्जा ॥ एव पडिसेवणाकुसीलेवि ॥ कसायकुसीलेणं भंते ! किं

भावार्थ

भगवन् ! पुलाक क्या सवेदी है या अवेदी है ? अहो गौतम ! सवेदी होवे परंतु अवेदी होवे नहीं यदि सवेदी होवे तो क्या स्त्री वेदी, पुरुष वेदी या पुरुष नपुंसक वेदी होवे ? अहो गौतम ! स्त्री वेदी होवे नहीं परंतु पुरुष वेदी व पुरुष नपुंसक वेदी पुलाक निर्ग्रन्थ होवे. अहो भगवन्! बकुश सवेदी को होवे या अवेदी को होवे? अहो गौतम! सवेदी को होवे परंतु अवेदी को होवे नहीं. यदि सवेदी को होवे तो क्या स्त्री पुरुष या पुरुष नपुंसक को होवे? अहो गौतम! स्त्री वेदी, पुरुष वेदी व पुरुष नपुंसक वेदी इन तीनों को होवे. ऐसे ही प्रतिसेवना कुशील

१ पुरुष चिन्ह का छेदन हुवा होवे वह पुरुष नपुंसक वेदी कहाता है, इस को पुलाकनिग्रंथ होता है परंतु जन्म नपुंसक वेदी को नहीं होता है.

सूत्र

चुलसीतिहिय णो चुलसीतिएय समज्जिया ? गोयमा ! णेरइया चुलसीतिसमज्जियावि जाव चुलसीतिहिय णो चुलसीतिहियसमज्जियावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ जाव समज्जियावि ? गोयमा ! जेणं णेरइया चुलसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया चुलसीतिसमज्जिया, जेणं णेरइया जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीति पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया णो चुलसीति समज्जिया, जेणं णेरइया चुलसीतिएणं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं णेरइया चुलसीतिएणय णो चुलसीतिएय सम-

भावार्थ

भगवन् ! क्या नारकी १ चौरासी से समार्जित हैं. २ नो चौरासी से समार्जित हैं, ३ चौरासी नो चौरासी से समार्जित हैं ४ बहुत चौरासी से समार्जित हैं या ५ बहुत चौरासी बहुत नो चौरासी से समार्जित हैं ? अहो गौतम ! नारकी में पांचों भांग पाते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया यावत् नो चौरासी समार्जित हैं ? अहो गौतम ! जो नारकी चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं. वे नारकी चौरासी समार्जित हैं जो नारकी जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट त्रियासी तक प्रवेश करते हैं वे नारकी नो चौरासी समार्जित हैं, जो नारकी चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं और उपर जघन्य एक

सूत्र

किं सरागे होज्जा, वीयरागे होज्जा ? गोयमा ! सरागे होज्जा णो वीयरागे होज्जा एवं जाव कसायकुसीले ॥ णियंठेणं भंते ! किं सरागे होज्जा पुच्छा ? गोयमा ! णो सरागे होज्जा वीयरागे होज्जा ॥ जइ वीयरागे होज्जा किं उवसंत कसाय वीयरागेहोज्जा, खीणकसायवीयरागे होज्जा ? गोयमा ! उवसंतकसायवीयरागे होज्जा, खीणकसायवीयरागे होज्जा ॥ सिणाते एवंचेव णवरं णो उवसंतकसायवीयरागे होज्जा, खीणकसायवीयरागे होज्जा ॥ ४ ॥ पुलाएणं भंते ! किं ठ्रियकप्पे होज्जा, अठ्रिय॰ कप्पे होज्जा ? गोयमा ! ठ्रियकप्पे वा होज्जा अठ्रियकप्पे वा होज्जा॥ एवं जाव सिणाए ॥

भावार्थ

वीतराग है ? अहो गौतम ! सराग है परंतु वीतराग नहीं है. ऐसे ही कपाय कुशील पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! निर्ग्रन्थ क्या सरागी होवे पृच्छा. अहो गौतम ! निर्ग्रन्थ सरागी नहीं परंतु वीतरागी होवे. यदि वीतरागी होवे तो क्या उपशांत कपाय वीतरागी होवे या क्षीण कपाय वीतरागी होवे ? अहो गौतम ! उपशांत कपाय वीतरागी व क्षीण कपाय वीतरागी होवे. ऐसे ही स्नातक का कहना परंतु उपशांत कपाय वीतरागी होवे नहीं और क्षीण कपाय वीतरागी होवे. ॥ ४ ॥ कल्पद्वार अहो भगवन् ! पुलाक क्या स्थितकल्प या अस्थित होवे ? अहो गौतम ! स्थित कल्प व अस्थित कल्प दोनों होवे यों

१ कल्प आचार को कहते हैं, स्थित कल्प सो अचेलादि दशों कल्प में पूर्ण बन्धा हुवा होवे और अस्थित कल्प

जीवा धम्मेवि ठ्ठिया अहम्मेविठ्ठिया, धम्माधम्मेविठ्ठिया ॥ णेरइयाणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! णेरइया णो धम्मेठ्ठिया, अहम्मेठ्ठिया, णो धम्माधम्मेठ्ठिया, एवं जाव चउरिंदियाणं ॥ पंचिंदियतिरिक्ख जोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्ख जोणिया णो धम्मेठ्ठिया, अहम्मेठ्ठिया, धम्माधम्मेविठ्ठिया ॥ मणुस्सा जहा जीवा ॥ वाणमंतरजोइसिय वेमाणिया जहा णेरइया ॥ ३ ॥ अण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति एवं खलु समणा पंडिया समणोवासगा बालपंडिया जस्सणं एगपाणाएवि दंडे अणिक्खित्ते सेणं एगंतबालेत्ति वत्तव्वं सिया, से कहमेयं

अहो गौतम ! जीव धर्म में स्थित हैं, अधर्म में स्थित व धर्माधर्म में स्थित हैं. नारकी की पृच्छा ! नारकी धर्म में स्थित नहीं हैं अधर्म में स्थित हैं और धर्माधर्म में स्थित नहीं हैं. ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यंत कहना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय धर्म में स्थित नहीं हैं परंतु अधर्म व धर्माधर्म में स्थित हैं. मनुष्य धर्म अधर्म व धर्माधर्म में स्थित हैं. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि श्रमण पंडित हैं श्रमणोपासक बालपंडित हैं और जिसने एक प्राणी का घात का परिहार नहीं किया है वह एकान्त बाल है. तो अहो भगवन् ! यह किस

सूत्र

भंते ! किं सामाइयसंजमे होज्जा; छेओवट्ठावणियसंजमे होज्जा, परिहार विसुद्धियसंजमे होज्जा, सुहुमसंपरायसंजमे होज्जा, अहक्खायसंजमे होज्जा ? गोयमा ! सामाइय संजमे होज्जा छेओवट्ठावणिय संजमे होज्जा, णो परिहारविसुद्धिसंजमे होज्जा, णो सुहुम संपराय संजमे होज्जा, णो अहक्खाय संजमे होज्जा॥ एवं बउसेवि॥ एवं पडिसेवणाकुसीलेवि ॥ कसायकुसीलेणं पुच्छा ? गोयमा ! सामाइय संजमे वा होज्जा जाव सुहुमसंपरायसंजमे वा होज्जा, णो अहक्खाय संजमे होज्जा ॥ णियंठेणं पुच्छा, गोयमा ! णो सामाइयसंजमेवा होज्जा जाव णो सुहुमसंपरायसंजमे वा

भावार्थ

स्नातक का कहना ॥ ७ ॥ अब चारित्र द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! पुलाक क्या सामायिक चारित्र वाले होवे छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्ध, सूक्ष्म संपराय या यथाख्यात चारित्र वाले होवे ? अहो गौतम ! सामायिक चारित्र वाले होवे. छेदोपस्थापनीय चारित्र वाले होवे परंतु परिहार विशुद्ध, सूक्ष्मसंपराय व यथाख्यात चारित्र वाला होवे नहीं ऐसे ही बकुश व प्रतिसेवना कुशील का जानना, कषाय कुशील की पृच्छा, सामायिक चारित्र यावत् सूक्ष्म संपराय चारित्र होवे परंतु यथा ख्यात चारित्र होवे नहीं. निर्ग्रन्थ की पृच्छा, अहो गौतम ! सामायिक चारित्र यावत् सूक्ष्म संपराय चारित्र होवे नहीं परंतु

केणट्ठेणं भंते ! जाव समज्जिया ? गोयमा ! जेणं सिद्धा चुलसीइएणं पवेसगएणं पविसंति तेणं सिद्धा चुलसीतिसमज्जिया, जेणं सिद्धा जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीतिएणय पवेसगएणं पविसंति तेणं सिद्धा णो चुलसीति समज्जिया, जेणं सिद्धा चुलसीइएणं अण्णेणय जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं तेसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं सिद्धा चुलसीतिय णो चुलसीतिएय समज्जिया से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया ॥ एएसिणं भंते ! णेरइयाणं चुलसीतिसमज्जि- याणं णो चुलसीतिसमज्जियाणं सव्वेसिं अप्पाबहुगं जहा छक्क समज्जियाणं जाव

समार्जित हैं, नो चौरासी समार्जित हैं, चौरासी नो चौरासी समार्जित हैं, परंतु बहुत चौरासी व बहुत चौरासी बहुत नो चौरासी समार्जित नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है यावत् समार्जित है ? अहो गौतम ! जो सिद्ध चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे सिद्ध चौरासी समार्जित हैं, जो सिद्ध जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट त्र्यासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे सिद्ध नोचौरासी समार्जित हैं, जो सिद्ध चौरासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं और जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट त्र्यासी प्रवेशन से प्रवेश करते हैं वे सिद्ध चौरासी नो चौरासी समार्जित हैं अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है यावत समा-

सूत्र

असंखेज्ज गुणा॥ १५॥ पुलागस्सणं भंते! केवइया चरित्त पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! अणंता चारित्तपज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं जाव सिणायस्स ॥ पुलाएणं भंते ! पुलागस्स सट्ठाण सण्णिगासेणं चारित्तपज्जवेहिं किं हीणे तुल्ले अब्भहिए ? गोयमा ! सियहीणे, सियतुल्ले, सिय अब्भहिए ॥ जइ हीणे अणंतभागहीणे वा असंखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जइ भागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा अणंत गुण हीणे वा ॥ अह अब्भहिए अणंतभागमब्भहिए वा असंखेज्जइभाग मब्भहिए वा संखेज्जइभाग मब्भहिए वा; संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुण

भावार्थ

कुशील के संयम स्थान असंख्यात गुने ॥ १५ ॥ अब निकर्ष द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! पुलाक को कितने चारित्र के पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनंत चारित्र के पर्याय कहे हैं. ऐसे ही स्नातक पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! पुलाक पुलाक के चारित्र पर्यव में स्वस्थान सन्निकर्ष से क्या हीन, तुल्य या अधिक है ? अहो गौतम ! स्यात् हीन, स्यात तुल्य व स्यात अधिक है. यदि हीन होवे तो अनंत भाग हीन, असं-ख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन, असंख्यात गुण हीन व अनंत गुण हीन और अधिक में अनंत भाग अधिक, असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक,

॥ ६ ॥ जीवाणं भंते ! किं अत्तकडं वेदणं वेदेंति, परकडं वेदणं वेदेंति तदुभयकडं वेदणं वेदेंति ? गोयमा जीवा अत्तकडं वेदणं वेदेंति, णो परकडं वेदणं वेदेंति, णो तदुभयकडं वेदणं वेदेंति, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तरसमस्सय चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ४ ॥ ० ० ०

कहिणं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं, इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम जहा ठाणपद जाव मज्झे ईसाणवडिंसए सेणं



ही दंडक का जानना ॥६॥ अहो भगवन् ! जीव क्या आत्म कृत वेदना वेदते हैं यावत् उभय कृत वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! जीव आत्म कृत वेदना वेदते हैं. परकृत व उभयकृत वेदना नहीं वेदते हैं. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सतरहवा शतक का चौथा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ४ ॥ ० ०

चौथे उद्देशे में वेदना का अधिकार कहा. साता वेदनीय कर्मवाले देवता होते हैं इसलिये साता वेदनीय का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! ईशान नामक देवेन्द्र, देवराजा की सुधर्मा सभा कहां है ?

सूत्र खेज्जइ भागं सेसं जहा सालीणं, एवं एए दस उद्देसा ॥ बावीसइमस्स पढमोवग्गो ॥ २२ ॥ १ ॥ !०; !०; !०;

अह भंते ! णिवंबजंबुकोसंबसाल अंकोल पीलु सेलु सल्लइ मोयइ मालुय बउल पलास करंज पुत्तंजीव अरिट्ठ बहेलग हरिय भल्लाय उंबरि भरिय खीरणि धायइ पियाल पूतियणं णिवारगसण्हेणवासिग सीसव अयसि पुण्णाग णागरुक्ख सीवण्ण असोगाणं एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ॥ एवं मूलादीया दस उद्देसाकायव्वा णिरवसेसं जहा तालवग्गो ॥ बितिओवग्गो सम्मत्तो ॥ २२ ॥ २ ॥ :०: :०:

भावार्थ की. शेष सब अधिकार शाली धान्य जैसे कहना. यों बावीसवे शतक के प्रथम वर्ग में दश उद्देशे संपूर्ण हुवे. यह बावीसवा शतक का प्रथम उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २२ ॥ १ ॥

अहो भगवन् ! नींब, आम्र, जाम्ब, कोशंब, शाली, अंकोल, पीलू, शेलू, शल्यकी, मोद की, मालती बकुल, पउल, पलाश, करंज, जीवापुत्र, अरिठा, बहेडा, हरडे भिलामा, उंबर भेरही, रायणी पाहडी पियंगु, पूति चारगवण्ड, नपाची, सीसव, अलसी, पुन्नाग, नागवृक्ष, सिवन व अशोक, इन में जो जीव मूलपने उत्पन्न होते हैं वगैरह सब कथन जैसे तालवृक्ष का कहा वैसे ही कहना यों बावीस वे शतक के दूसरे वर्ग में दश उद्देशे संपूर्ण हुवे. ॥ २२ ॥ २ ॥ ० ० ०

सोहम्मे कप्पे पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए से भंते ! किं पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा, पुव्विं वा संपाउणेत्ता पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुव्विं वा उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा पुव्विं वा संपाउणेत्ता पच्छा उववज्जेज्जा ॥ से केणट्ठेणं जाव ! पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुढवीकाइयाणं तओ समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणांतिय समुग्घाए, मारणांतिय समुग्घाएणं समोहणमाणे देसेण वा समोहणइ सव्वेण वा समोहणइ, देसेण समोहणमाणे पुव्विं संपाउ-

भावार्थ

[illegible] है. अहो भगवन् ! [illegible] पृथ्वी [illegible] मारणांतिक समुद्घात [illegible] उत्पन्न होवे [illegible] उत्पन्न होकर पीछे [illegible] आहार ग्रहण कर पीछे उत्पन्न होवे ! अहो गौतम ! पहिले [illegible] आहार ग्रहण कर पीछे उत्पन्न होवे अहो [illegible] पीछे उत्पन्न होवे ! अहो गौतम ! पृथ्वी [illegible] वेदना समुद्घात, कषायसमुद्घात मारणांतिक समुद्घात, मारणांतिक [illegible]

सूत्र

वग्गो सम्मत्तो ॥ २३ ॥ २ ॥ (-) (-) (-) (-)

अह भंते ! आयकाय कुहुण कुंदुरुक्क उव्वेहलियसफासज्जा छत्ता वंसाणिय कुराणं, एएसिणं जे जीवा मूलत्ताए एवं एत्थवि मूलादिया दस उद्देसगा णिरवसेसं जहा आलुवग्गो सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ तइओ वग्गो सम्मत्तो ॥ २३ ॥ ३॥ (!)

अह भंते ! पाढामिय वालुंकि महुररसा रायवल्ली पउमा मोढरि दति चडीण, एए-सिणं जे जीवा मूलादिया दस उद्देसगा आलुयवग्गसरिसा, णवरं ओगाहणा जहा वल्लीणं, सेसं तंचेव सेवं भंते ! २ त्ति चउत्थो वग्गो सम्मत्तो ॥ २३ ॥ ४ ॥

भावार्थ

यावत् बीज पने उत्पन्न हुवे यों दशों उद्देश जैसे आलु के कहे वैसे ही कहना. परंतु अवगाहना ताल वर्ग जैसे कहना. यह तेवीसवा शतक का दूसरा वर्ग समाप्त हुवा ॥ २३ ॥ २ ॥

अहो भगवन् ! आयकाय, अनंतकाय, कुहुण, कुंदुरुक्क, उवेहलिक, सफा, सज्जा, छत्रा, वंशाणिक, कुरु इन सब अनंतकाय में जो जीव मूलपने उत्पन्न होवे यों मूलादि दश उद्देश आलु वर्ग जैसे कहना. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यह तेवीसवा शतक का तीसरा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २३ ॥ ३ ॥

अहो भगवन् ! पाठामृग, बालुका, मधुररसा, रायवल्ली, पद्मा, मोढरी, दन्ती, चण्डी, इन में जो जीव मूलपने उत्पन्न होवे इत्यादि पूर्ववत् दश उद्देश जैसे आलु के कहे वैसे ही कहना परंतु अवगाहना वेली

सूत्र

उववज्जंति ॥ जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, किं सण्णिपंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति असण्णिपंचिंदिय तिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, किं जलचरेहिंतो उववज्जंति थलचरेहिंतो उववज्जंति खहचरेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति, थलचरेहिंतो उववज्जंति, खहचरेहिंतो उववज्जंति, ॥ जइ जलचरे थलचरे खहचरेहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति णो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ॥

भावार्थ

या खेचर में से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जलचर, स्थलचर व खेचर में से उत्पन्न होवे. यदि जलचर, स्थलचर खेचर में से उत्पन्न होवे तो क्या पर्याप्त उत्पन्न होवे या अपर्याप्त उत्पन्न ? होवे अहो गौतम ! पर्याप्त उत्पन्न होवे परंतु अपर्याप्त होवे नहीं. अहो भगवन् ! जो पर्याप्त असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय नारकी में उत्पन्न होने योग्य होता है वह कितनी नारकी में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! पहिली एक नारकी में उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! जो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच पहिली रत्नप्रभा में उत्पन्न

सूत्र

उववज्जंति ॥ जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, किं सण्णिपंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति असण्णिपंचिंदिय तिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, किं जलचरेहिंतो उववज्जंति थलचरेहिंतो उववज्जंति खहचरेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति, थलचरेहिंतो उववज्जंति, खहचरेहिंतो उववज्जंति, ॥ जइ जलचरे थलचरे खहचरेहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति णो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ॥

भावार्थ

या खेचर में से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जलचर, स्थलचर व खेचर में से उत्पन्न होवे. यदि जलचर, स्थलचर खेचर में से उत्पन्न होवे तो क्या पर्याप्त उत्पन्न होवे या अपर्याप्त उत्पन्न होवे अहो गौतम ! पर्याप्त उत्पन्न होवे परंतु अपर्याप्त होवे नहीं. अहो भगवन् ! जो पर्याप्त असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय नारकी में उत्पन्न होने योग्य होता है वह कितनी नारकी में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! पहिली एक नारकी में उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! जो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच पहिली रत्नप्रभा में उत्पन्न

सूत्र सकालठिईयपज्जत्त तिरिक्ख जोणिएणं भंते ! जे भविए जहण्ण कालठिईएसु रयणप्पभा जाव उववज्जित्तए सेणं भंते ! केवति जाव उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सठिईएसु, उक्कोसेणवि दसवाससहस्स ठिईएसु उववज्जेज्जा ॥ तेणं भंते ! सेसं तंचेव जहा सत्तमगमए जाव सेणं भंते ! उक्कोसकालठिईं जाव तिरिक्खजोणिए जहण्ण कालट्ठिईय रयणप्पभा जाव करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया उक्कोसेणवि पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया एवइयं जाव करेज्जा ॥ २९ ॥ उक्कोसकालठिईय पज्जत्त जाव तिरिक्खजोणिएणं भंते ! जे भविए उक्कोसकालठिईएसु

भावार्थ यावत् करे ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! उत्कृष्ट स्थितिवाले पर्याप्त तिर्यंच जघन्य स्थितिवाली नारकी में उत्पन्न होने योग्य होवे वह वहां कितनी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट दश हजार वर्ष शेष सब सातवा गमा जैसे कहना. यावत् उत्कृष्ट स्थिति यावत् तिर्यंच जघन्य स्थितिवाली रत्नप्रभा नरक में यावत् उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! भव आश्री दो भव और काल आश्री जघन्य पूर्व क्रोड और दश हजार वर्ष अधिक उत्कृष्ट पूर्व क्रोड और दश हजार वर्ष अधिक. इतना यावत् करे ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! उत्कृष्ट स्थितिवाले असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय यावत् उत्कृष्ट स्थितिवाली नरक में

सूत्र

समएणं केवइया उववज्जंति जहेव असण्णी ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संघयणी पण्णत्ता? गोयमा! छव्विह संघयणी पण्णत्ता तंजहा वइरोसभ णाराय संघयणी उसभ णाराय जाव छेवट्ठसंघयणी ॥ सरीरोगाहणा जहेव असण्णीणं ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! छव्विह संठिया पण्णत्ता, तंजहा-समचउरंसा णग्गोहा जाव हुंडा॥तेसिणं भंते! जीवाणं कइ लेस्साओ पण्णत्ताओ? गोयमा ! छल्लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा-कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ दिट्ठी तिविहावि ॥ तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा भयणा ॥ जोगो तिविहोवि सेसं जहा

भावार्थ

होवे. अहो भगवन् ! वे एक समय में कितने उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जैसे असंज्ञी का कहा वैसे ही इन का भी कहना अर्थात् असंख्यात उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! उन जीवों के शरीर कौनसे संघयनवाले हैं ? अहो गौतम ! छ संघयनवाले वे जीवों हैं; जिन के नाम-वज्र ऋषभ नाराच संघयन यावत् छेवट्ठ संघयन. शरीर की अवगाहना जैसी असंज्ञी की कही वैसे ही कहना यावत् जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन की. अहो भगवन् ! उन को कौनसा संस्थान कहा ? अहो गौतम ! छ संस्थान कहे समचतुस्र संस्थान यावत् हुंडक संस्थान. अहो भगवन् ! उन जीवों को लेश्याओं कितनी कहीं ? अहो गौतम ! उन को छ लेश्याओं कहीं जिन के नाम कृष्ण यावत् शुक्ल लेश्या. इन में तीन दृष्टि, तीन ज्ञान, तीन अज्ञान और जोग भी तीन पाते हैं. शेष अनुबंध पर्यंत सब

[illegible] नंदिवद्धेए जाव [illegible] अकालपरिहीणं चेव ममं अंतियं पाउब्भ-
[illegible] विउलं पव्वयं विसमणं पडिसुणेति २ त्ता
[illegible] उवागच्छति उवागच्छइत्ता विउलं असणं जाव
[illegible] २ त्ता मित्त णाइ जाव तस्सेव, मित्तणाइ जाव पुरओ
[illegible] ठावेइत्ता त मित्तणाइ जाव जेट्ठपुत्तंच आपुच्छंति,
[illegible] सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमति २ त्ता मित्तणातिणियग
[illegible] नंदिवद्धेए जाव रवेणं अकालपरिहीणं
[illegible] अंतिय पाउब्भवति ॥ १२ ॥ तएणं से कामदेवे विपुलं

[illegible] और मित्र ज्ञाति यावत् ज्येष्ठ पुत्र की साथ सब
[illegible] और उन एक हजार आठ गुमास्तोंने
[illegible] विपुल अशनादि बनाये और मित्र ज्ञाति यावत्
[illegible] ज्येष्ठ पुत्र को [illegible] सब [illegible] पुत्र [illegible]
[illegible] भगवंत [illegible]
[illegible]

सूत्र

केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणंवि दसवाससहस्सट्ठिईएसु जाव उववज्जेज्जा ॥ तेणं भंते ! जीवा एवं सोचेव पढमगमओ णिरवसेसो भाणियव्वो जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ एवइयं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा॥३४॥सोचेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेण सागरोवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि सागरोवमट्ठिईएसु अवसेसो परिणामादीओ, भवादेसे पज्जव साणे सोचेव पढमगमगो णेतव्वो, जाव कालादेसेण जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमब्भ-

अर्थ

प्रथमी नरक में उत्पन्न होने योग्य होवे वे कितने कालकी स्थिति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष व उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की स्थिति में उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! वे जीवों ऐसे ही यह गमा भी प्रथम गमा जैसे कहना. यावत् कालादेश से जघन्य दश हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट चार पूर्व क्रोड और चालीस हजार वर्ष अधिक इतना काल तक रहे. यह दूसरा गमा जानना ॥ ३५ ॥ वही पर्याप्त संख्यात वर्ष के आयुष्यवाला उत्कृष्ट स्थितिमें उत्पन्न हुवा जघन्य उत्कृष्ट एकसागरोपमकी स्थिति से उत्कृष्ट होवे और परिणाम आदिसब अधिकार भवादेश पर्यंत पूर्वोक्त प्रथम गमा जानना. यावत् कालादेशसे जघन्य

सूत्र

असणं पाणं खाइमं साइमं जहा गंगदत्तो जाव मित्तणाइ जाव परिजणेणं जेट्ठ पुत्तं णेगमट्ठसहस्सेणय समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव रवेणं हत्थिणापुरं णयरं मज्झंमज्झेणं जहा गंगदत्तो जाव आलित्तेणं भंते ! लोए पलित्तेणं भंते ! लोए आलित्तपलित्तेणं भंते ! लोए जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ ॥ इच्छामिणं भंते ! णेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावियं, मुंडावियं जाव माइक्खियं तएणं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं णेगमट्ठ सहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावेइ जाव धम्ममातिक्खति एवं देवाणुप्पिया गंतव्वं एवं चिट्ठियव्वं जाव संजमियव्वं ॥ १३ ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं संपडिवज्जइ-तमाणाए तहा गच्छइ जाव संजमइ ॥ १४ ॥ तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठ

भावार्थ

मित्र ज्ञाति यावत् परिजन सहित ज्येष्ठ पुत्र व एक हजार आठ गुमास्ते मार्ग में चलते हुवे सब ऋद्धि व वादिंत्रों सहित हस्तिनापुर नगर की बीच में गंगदत्त जैसे यावत् अहो भगवन् ! यह लोक आलिप्त, पलिप्त, आलिप्त पलिप्त है यावत् अनुगामी होगा. अहो भगवन् ! एक हजार आठ गुमास्ते सहित मैं स्वयमेव प्रव्रजित होने, मुंडित होने, यावत् कहने की इच्छता हूं तब मुनि सुव्रत अरिहंतने एक हजार आठ गुमास्ते सहित कार्तिक श्रेष्ठी को प्रव्रजित किया यावत् उपदेश दिया कि एसे बैठना एसे संयम पालना ॥ १३ ॥ फीर एक हजार आठ गुमास्ते सहित कार्तिक श्रेष्ठीने मुनिसुव्रत अरिहंत का एसा धार्मिक उपदेश सम्यक्

सूत्र

मिच्छद्दिट्ठी ॥ णो णाणी दो अण्णाणा णियमं ॥ समुग्घाया आदिल्लातिण्णि ॥ आउ अज्झवसाणा अणुबंधोय जहेव असण्णीणं अवसेसं जहा पढमगमए जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं एवइयं कालं जाव करेज्जा ॥ ३६ ॥ सोचेव जहण्ण कालठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं दसवाससहस्सठिईएसु उक्कोसेणवि दसवास सहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ॥ तेणं भंते ! एवं सोचेव चउत्थो णिरवसेसो भाणियव्वो जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं उक्कोसेणं

भावार्थ

असंख्यातवे भाग और उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य की. यहां पर तीन लेश्या, दृष्टि मिथ्यादृष्टि, दो अज्ञान की नियमा, तीन समुद्धात, आयुष्य, अध्यवसाय और अनुबंध ये तीनों जैसे जघन्य स्थिति के असंज्ञी का गमा कहा वैसे कहना. और सब कथन पहिले गमा जैसे कहना. यावत् काल आश्री जघन्य दश हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट चार सागरोपम चार अंतर्मुहूर्त अधिक इतने काल तक सेवे यावत् गतागत करे ॥ ३६ ॥ वही जघन्य स्थिति वाली नारकी में उत्पन्न हुआ जघन्य दश हजार वर्ष और उत्कृष्ट भी दश हजार वर्ष की स्थिति में उत्पन्न होवे वगैरह चौथा गमा जैसे यहां कहदेना यावत् काला देश से जघन्य

सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव सेवेज्जा ॥ ३ ॥ सोचेव अप्पणा जहण्ण कालट्ठिईओ जाओ सव्वेवि रयणप्पभा पुढवी जहण्ण कालट्ठिईय वत्तव्वया भाणियव्वा जाव भवादेसोत्ति, णवरं पढम संघयणं णो इत्थीवेदगा, भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं उक्कोसेणं सत्तभवग्गहणाइं कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा ॥ ४ ॥ सोचेव जहण्ण कालट्ठिईएसु उववण्णो एवं सोचेव चउत्थो गमो णिरवसेसो भाणियव्वो जाव

भव पर्यंत वैसे ही कहना. भवादेश से जघन्य तीन भव उत्कृष्ट पांच भव. कालादेश से जघन्य तेत्तीस सागरोपम दो अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट छासठ सागरोपम तीन पूर्व क्रोड अधिक. इतना यावत् करे. अब वही जघन्य स्थितिवाला सातवी पृथ्वी में उत्पन्न होवे तो सब रत्नप्रभा पृथ्वी जैसे कहना परंतु यहां जघन्य स्थिति और एक पहिला संघयन जानना. और स्त्री वेदी उत्पन्न नहीं होते हैं. भवादेश से जघन्य तीन भव उत्कृष्ट सात भव, कालादेश से जघन्य बावीस सागरोपम और दो अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट छासठ सागरोपम और चार अंतर्मुहूर्त अधिक (तीन नरक और चार मत्स्य के भव आश्री) वही

पाश्चहारियणएय, वावहारियणयस्स कालए भमरे, णिच्छिइयणयस्स पंचवण्णे जाव अट्ठफासे ॥२॥ सुयपिच्छेणं भंते ! कइवण्णे पण्णत्ते ? एवंचेव णवरं वावहारियणयस्स णीलए सुयपिच्छे, णेच्छइयस्स णयस्स सेसं तंचेव ॥ एवं एएणं अभिलावेणं लोहितिया मंजिट्ठिया, पीतिया हालिद्दा, सुक्किलए संखे, सुब्भिगंधे कोट्ठे, दुब्भिगंधे-मियगसरीरे, तित्तेणं णिंबे, कडुया सुंठी, कसाए तुंबरए कविट्ठे, अंबा अंबालिया, महुरे खंडे; कक्खडे वइरे, मउए णवंणीए, गुरुए अए, लहुए उलुयपत्ते, सीए हिमे, उसिणे

भावार्थ निश्चय और व्यवहार ऐसे दो नय ग्रहण किये गये हैं. व्यवहारनय से मधुररसवाला गुड है और निश्चयनयसे गुड में पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श पाते हैं. अहो भगवन् ! भ्रमर में कितने वर्णादि पाते हैं ? अहो गौतम ! यहां पर भी दो नय ग्रहण किये हैं, जिन में व्यवहार नयसे भ्रमर में काला वर्ण पाता है और निश्चयनय से पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श पाते हैं. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शुक की पांख में कितने वर्ण पाते हैं ? अहो गौतम ! यहां भी दो नय ग्रहण किये हैं. व्यवहारनय से शुक की पांख में हरा वर्ण पाता है और निश्चय नय से पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श पाते हैं. और भी इस आलापक

१ स्थंडेरगर मक्खा २ सोंठ. मक्खा.

सूत्र

परिहायंति, तहेव तिरिक्ख जोणियाणं कालादेसोवि तहेव णवरं मणुस्सट्ठिई जाणि यव्वा ॥ ५५ ॥पज्जत्त संखेज्ज वासाउय सण्णि मणुस्सेणं भंते ! जेभविए अहे सत्तम पुढवि णेरइएसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! केवइय कालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमट्ठिईएसु उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा॥ तेणं भंते ! जीवा एगसमएणं अवसेसो सोचेव सक्करप्पभ पुढवी गमओ णेयव्वो णवरं पढम संघयणं ॥ इत्थीवेयगा ण उववज्जंति सेसं तंचेव जाव अणुबंधोत्ति ॥ भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्त

भावार्थ

गमा जैसे कहना. परंतु स्थिति और काया संबंध में भिन्नता जानना. ऐसे ही छठी नारकी पर्यंत कहना. तीसरी नारकी से एक २ संघयन कमी कहना तिर्यंच का कालादेश और मनुष्य स्थिति जानना ॥५५॥ अहो भगवन् ! पर्याप्त संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य सातवी नरक में उत्पन्न होता है वह कितनी स्थिति मे उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! जघन्य बावीस सागरोपम उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम. अब शेष सब शर्कर प्रभा पृथ्वी का गमा जानना. विशेष में पहिला संघयन, स्त्री वेद उत्पन्न होवे नहीं, शेष अनुबंध पर्यंत पहिले जैसे कहना. भवादेश से दो भव कालादेश से जघन्य बावीस सागरोपम और प्रत्येक वर्ष

सूत्र

पंचधणुहसयाइं उक्कोसेणवि पंचधणुहसयाइं, ठिई जहण्णेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्व कोडी एवं अणुबंधोवि णवसुवि एतेसु गमएसु णेरइय ठिई संवेहंच जाणेज्जा॥सव्वत्थ भवग्गहणाइं दोण्णि जाव णव गमएसु कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं उक्कोसेणवि तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं एवइयं कालं सेवेज्जा एवइयं काल गतिरागतिं करेज्जा॥ सेवं भंते । भंतेत्ति चउवीस-इममयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २४ ॥ १ ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-असुरकुमाराणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइएहिं-

भावार्थ

वही उत्कृष्ट स्थितिवाला मनुष्य सातवी नारकी में उत्पन्न होवे तो उस के भी तीनों गमाओं में पूर्वोक्त जैसी वक्तव्यता कहना. परंतु शरीर अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट पांचसो धनुष्य की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही अनुबंध कहना. इन के नवों गमाओं में स्थिति और संवेध कहना. सर्वत्र दो भव लेना. नव गमाओं में कालादेश से जघन्य तेत्तीस सागरोपम पूर्वक्रोड अधिक और उत्कृष्ट भी तेत्तीस सागरोपम पूर्वक्रोड अधिक. इतना काल सेवे. इतनी गति आगति करे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह चौवीसवा शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुवा. ॥ २४ ॥ १ ॥

प्रथम उद्देशे में नरक का कथन कीया. दूसरे उद्देशे में असुरकुमार का कथन करते हैं. इस उद्देशे में

सूत्र

सिय चउफासे ॥ एवं तिपदेसिएवि-णवरं एगवण्णे सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, एवं रसेसुवि, सेसं जहा दुपदेसियस्स, एवं चउप्पदेसिएवि णवरं सिय एगवण्णे जाव सिय चउवण्णे; एवं रसेसुवि, सेसं तंचेव ॥ एवं पंचपएसिएवि णवरं सिय एगवण्णे जाव पंचवण्णे एवं रसेसुवि; गंध फासा तहेव जहा पंचपदेसिओ ॥ एवं जाव असंखेज्जपदेसिओ ॥ सुहुम परिणएणं भंते ! अणंतपदेसिए खंधे कइवण्णे ? जहा पचपदेसिए तहेव

भावार्थ

दोनों दो वर्ण के होवे तो दो वर्ण इस के दश विकल्प. ऐसे ही स्यात् एक गंध, स्यात् दो गंध, इस के तीन विकल्प, ऐसे ही स्यात् एक रस, स्यात् दो रस दोनों के १५ विकल्प, ऐसे ही स्यात् दो स्पर्श, स्यात् तीन स्पर्श, स्यात् चार स्पर्श, इस के ४२ विकल्प होते हैं. ऐसे ही तीन प्रदेशिक स्कंध का कहना. विशेष में स्यात् तीनों का एक वर्ण जिस के पांच विकल्प यावत् तीन वर्ण सब ४५ विकल्प, गंध के द्विसंयोगी दो, तीन संयोगी तीन, ऐसे पांच रस के ४५ विकल्प वर्ण जैसे कहना, और शेष सब द्विप्रदेशिक स्कंध जैसे कहना. स्पर्श के २५ भांगे सब मीलकर १२० भांगे हुवे यावत् ऐसे ही चार प्रदेशिक का. विशेष में स्यात् एक वर्ण स्यात् चार वर्ण सब भांगे ९० पाते हैं. गंध के ६, रस के ९०, स्पर्श के ३६, सब२२३भांगे वर्ण के. ऐसे ही पांच प्रदेशिक का कहना विशेष में स्यात् एक वर्ण स्यात् पांच वर्ण ऐसे ही रस गंध व स्पर्श का पूर्वोक्त प्रकार से कहना, सब भांगे ४७४ हुवे. जैसे

सूत्र अप्पसत्था; तिसुवि गमएसु अवसेसं तंचेव ॥ १ ॥ जदि सण्णिपंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्ज वासाउय सण्णि जाव उववज्जंति असंखेज्ज वासाउय जाव उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति, असंखेज्ज-वासाउय जाव उववज्जंति, ॥ असंखेज्जवासाउय सण्णि पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएणं भंते! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! केवइय कालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ॥ २ ॥ तेणं भंते! जीवा एगसमएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कोवा

भावार्थ जहां जघन्य स्थिति वाले तिर्यंच कहे हैं वहां अध्यवसाय प्रशस्त ग्रहण करना परंतु अप्रशस्त ग्रहण करना नहीं. ॥ १ ॥ यदि संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच उत्पन्न होवे तो क्या संख्यात वर्ष वाले या असंख्यात वर्ष वाले उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले उत्पन्न होवे और असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले भी उत्पन्न होवे. असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच असुरकुमार में उत्पन्न होने योग्य होते हैं वे कितनी स्थिति से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तीन पल्योपम देवकुरु उत्तरकुरु युगलक्षेत्र वाले अपना आयुष्य जितना देवका आयुष्य बांधे ॥२॥ अहो भगवन्!

सूत्र

एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्संति, एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासइ, तंजहा मोसंवा, सच्चामोसंवा, से कहमेयं भंते! एवं ? गोयमा ! जंणं ते अण्णउत्थिया जाव जंणं एवमाहंसु मिच्छंते एव माहंसु; अहं पुण गोयमा ! एव माइक्खामि ४ णो खलु केवली जक्खाएसेणं आदिस्सइ, णो खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासइ, तंजहा मोसंवा सच्चामोसंवा ॥ केवलीणं असावज्जाओ अपरोवघाइयाओ आहच्च दो भासाओ भासइ, तंजहा सच्चंवा असच्चामोसंवा ॥ १ ॥ कइविहेणं भंते ! उवही पण्णत्ता ?

भावार्थ

प्रश्न करते हैं. राजगृह नगर में यावत् पर्युपासना करते हुवे श्री गौतम स्वामी ऐसा बोले कि अहो भगवन्! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि केवलि के शरीर में यक्ष प्रवेश करते हैं जिससे केवली भी कदाचित मृषा व सत्यमृषा ऐसी दो भाषा बोले. अहो भगवन् ! यह कथन किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं उन का कथन मिथ्या है. अहो गौतम ! इस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि केवली यक्षाधिष्ठित नहीं होते हैं. वैसे ही यक्षाधिष्ठित से मृषा व सत्यमृषा ऐसी भाषा केवली नहीं बोलते हैं; परंतु केवली सत्य व असत्यमृषा ऐसी दो

सूत्र

पुव्वकोडी दसवाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं साइरेगा दो पुव्वकोडी एवइयं जाव सेवेज्जा ॥ ४ ॥ २४ ॥ सोचेव जहण्ण कालट्ठिईएसु उववण्णो एसचेव वत्तव्वया णवरं असुरकुमारट्ठिई संवेहंच जाणेज्जा ॥ ५ ॥ २५ ॥ सोचेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो, जहण्णेणं साइरेगं पुव्वकोडीआउएसु उक्कोसेणवि साइरेगपुव्वकोडी आउएसु उववज्जेज्जा सेसं तंचेव ॥ णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं साइरेगा दो पुव्वकोडीओ उक्कोसेणवि साइरेगाओ दो पुव्वकोडीओ एवइयं कालं जाव करेज्जा ॥ ६ ॥ ॥ २६ ॥ सोचेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ सोचेवय पढमगमगो भाणियव्वो

भावार्थ

और दश हजार वर्ष अधिक उत्कृष्ट साधिक दो पूर्व क्रोड इतना यावत् करे यह चौथा गमा हुवा ॥ २४ ॥ वही जघन्य स्थिति में उत्पन्न होवे तो पहिले जैसे कहना विशेषता में असुरकुमार की स्थिति व संवेध कहना. यह पांचवा गमा हुवा ॥२५॥ वही उत्कृष्ट स्थितिवाला तिर्यंच असुरकुमार में उत्पन्न होवे तो जघन्य साधिक पूर्व क्रोड के आयुष्य में उत्पन्न होवे उत्कृष्ट भी साधिक पूर्व क्रोड के आयुष्य में उत्पन्न होवे. शेष सब पूर्वोक्त जैसे. परंतु कालादेश से जघन्य उत्कृष्ट साधिक दो पूर्व क्रोड जानना ॥ २६ ॥ वही उत्कृष्ट स्थितिवाला उत्पन्न हुवा उसको पहिला गमा जैसे कहना परंतु स्थिति जघन्य तीन पल्योपम

देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ; एएणं गोयमा ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति. एएणं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ॥ एएणं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ अट्ठारसमस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ ७ ॥ • •

रायगिहे जाव एवं वयासी-अणगारस्सणं भंते ! भावियप्पाणो पुरओ दुहओ मायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स अहे कुक्कड पोतेवा, वट्टापोतेवा, कुलिंगच्छा-

भावार्थ सिद्ध विमान के देव पांच हजार वर्ष में अनंत कर्मांश खपावे. अहो गौतम ! इसीसे देवों अनंत कर्मांश जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच सो वर्ष में खपाते हैं. इस से अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच हजार वर्ष में कर्म खपावे और इस से ही अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच लाख वर्ष में कर्म खपावे. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह अठारहवा शतकका सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥१८।७॥

सातवे उद्देशे में कर्मक्षय करने का कहा. इस उद्देशे में कर्मबंध का कहते हैं. राजगृही नगरी के गुणशील उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार श्री गौतम स्वामी ऐसा बोले

सूत्र

वाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा तेणं भंते ! जीवा एग समएणं पुच्छा? गोयमा ! अणुसमयं अविरहिया असंखेज्जा उववज्जंति ॥ छेवट्ठसंघयणी॥सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं॥ मसुरचंद संठिया॥ चत्तारि लेस्साओ॥णो सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी,णो सम्मामिच्छादिट्ठी॥ णो णाणी अण्णाणी, दो अण्णाणी णियमं ॥ णोमणजोगी णोवइजोगी कायजोगी ॥ उवओगो दुविहोवि चत्तारि सण्णाओ चत्तारि कसायाओ एगे फासिंदिए प० तिण्णि समुग्घाया ॥ वेदणा दुविहा ॥ णो इत्थीवेदगा णो पुरिसवेदगा णपुंसगवेदगा ॥ ठिई जहण्णेणं

भावार्थ

होवे. अहो भगवन् ! वे एक समय में कितने उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वे समय २ में विरह रहित असंख्यात उत्पन्न होवे. उन को संघयण छेवट्ठ जानना, शरीर की अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट अंगुल का असंख्यातवा भाग. संस्थान मसुर की दाल अथवा अर्ध चंद्र का, लेश्या चार, समदृष्टि व सम-मिथ्यादृष्टि नहीं परंतु एक मिथ्यादृष्टि, ज्ञानी नहीं, अज्ञानी है, जिस में मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान ऐसे दो अज्ञान की नियमा है. मन योग व वचन योग नहीं है परंतु काया योग है, दो उपयोग, चार संज्ञा चार कषाय, एक स्पर्शेन्द्रिय, तीन समुद्घात, दोनों प्रकार की वेदना, स्त्री वेद पुरुष वेद नहीं परंतु नपुंसक वेद

मूल

रायगिहे जाव पुढवीसिलापट्टए ॥ ३ ॥ तस्सणं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति ॥ ४ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव परिसा पडिगया ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे जाव उड्ढं जाणू जाव विहरइ ॥ ६ ॥ तएणं ते अण्णउत्थिया जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता भगवं गोयमं एवं वयासी तुब्भेणं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंतबालायावि भवह ॥ ७ ॥ तएणं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी से

भावार्थ

राजगृह नगर यावत् पृथ्वी शीलापट्ट था ॥ ३ ॥ उस गुणशील उद्यान की पास बहुत अन्यतीर्थिकों रहते थे ॥ ४ ॥ वहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे यावत् परिषदा पीछी गई ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अंतेवासी यावत् ऊर्ध्व जानु से यावत् विचरने लगे ॥६॥ तब वे अन्यतीर्थिक जहां गौतम स्वामी थे वहां आये और भगवान् गौतम को ऐसा बोले कि अहो आर्यो ! तुम तीन करन तीन योग से असंयति यावत् एकांत बालहो ॥७॥ तब भगवान् गौतम उन अन्यतीर्थिकों को बोले कि अहो आर्यो ! किस कारन से हम तीन करन तीन योग से ...

सूत्र

जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेणवि बावीसं वाससहस्साइं ॥ ७ ॥ ९ ॥ सोचेव जहण्णकाल ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं एवं जहा सत्तमगमगो जाव भवादेसो ॥ कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्त अब्भहियाइं उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं एवइयं कालं ॥ ८ ॥ १० ॥ सोचेव उक्कोस काल ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं बावीसं वास सहस्स ठितीएसु उक्कोसेणवि बावीसं वास सहस्स ठितीएसु एवंचेव सत्तमगमगा वत्तव्वया जाणियव्वा जाव भवादेसोत्ति

भावार्थ

पाकर उत्पन्न हुवा नौवा गमा कहना परंतु स्थिति जघन्य उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की कहना ॥ ९ ॥ वही जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया में उत्पन्न हुवा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी अंतर्मुहूर्त की स्थिति से उत्पन्न होवे. ऐसे ही भवादेश पर्यंत सातवा गमा कहना. कालादेश से जघन्य बावीस हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट अठासी हजार वर्ष और चार अंतर्मुहूर्त अधिक. इतना काल यावत् करे ॥ १० ॥ वही उत्कृष्ट स्थिति में उत्पन्न हुवा जघन्य उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की स्थिति में उत्पन्न होता है वगैरह सातवा गमाकी वक्तव्यता भवादेश पर्यंत कहना. कालादेश से जघन्य चवालीस हजार वर्ष दो भव पृथ्वीकायाके

सूत्र

वाससहस्साइं एवं अणुबंधोवि एवं तिसुवि गमएसु ॥ ठिती संवेहो तइयछट्ठसत्तमट्ठ णवमेसु गमएसु ॥ भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं सेसेसु चउसु गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं ॥ ततियगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तर वाससयसहस्सं एवइयं कालं गतिरागतिं करेज्जा ॥ ५ ॥ छट्ठे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीति वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं ॥ ६ ॥ सत्तमगमए कालादेसेणं जहण्णेणं सत्तवास सहस्साइं, अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं उक्कोसेणं सोलसुत्तर वाससय-

भावार्थ

नववा गमा में भवादेश से जघन्य दो भव उत्कृष्ट आठ भव शेष चार में जघन्य दो भव उत्कृष्ट असंख्यात भव. तीसरा गमा में कालादेश से जघन्य बावीस हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट एक लाख सोलह हजार वर्ष, छठा गमा में कालादेश से जघन्य बावीस हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक, उत्कृष्ट अठासी हजार वर्ष और चार अंतर्मुहूर्त अधिक. सातवा गमा में कालादेश से जघन्य सात हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट एक लाख सोलह हजार जिस में ८८००० वर्ष पृथ्वी के और २८००० वर्ष अप्काया के इतना काल

सूत्र

जाव णो उद्दवेमो, तएणं अम्हे पाणे अपेच्चमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंत पंडियावि जाव भवामो ॥ तुब्भेणं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबालायावि भवह, ॥ ८ ॥ तएणं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं जाव विभवामो ? ॥ तएणं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-तुब्भेणं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह जाव उद्दवेह, तएणं तुब्भे पाणे पेच्चमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं जाव एगंत बालायावि भवह ॥ ९ ॥ तएणं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं पडिहणइ पडिहणइत्ता

भावार्थ

तीन करन तीन योग से हम एकांत पंडित हैं. परतु अहो आर्यों ! तुम स्वतः ही तीन करन तीन योगमे एकांत बाल हो ॥ ८ ॥ तब अन्यतीर्थिक भगवंत गौतम को ऐसा बोले अहो आर्य ! किस कारन से हम तीन करन तीन योग से यावत् एकांत बाल हैं ? तब भगवान् गौतमने उन अन्य तीर्थिकों को ऐसा कहा अहो आर्यों ! तुम चलते हुए प्राणियों को अतिक्रमते हो यावत उपद्रव करते हो. इस तरह प्राणियोंको अतिक्रमते यावत उपद्रव करते तीन करन तीन योग से यावत् एकांत बाल हो ॥ ९ ॥ इस तरह अन्यतीर्थिकों का प्रतिघात करके भगवान गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आये

सेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीति वाससहस्साइं, बारसहिं राइंदिएहिं अब्भहियाइं, एवइयं एवं संवेहो उवउंजिऊण भाणियव्वो ॥ १४ ॥ जइ वाउकाइएहिंतो उववज्जंति, वाउकाइयाणवि एवंचेव णव गमका जहेव तेऊकाइयाणं णवरं पडागासंठिया, संवेहो वाससहस्सेहिं कायव्वो ॥ ततियगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं एगं वाससयसहस्सं एवं संवेहो उवउंजिऊण भाणियव्वो ॥ १५॥ जइ वणस्सइ काइएहिंतो उववज्जंति वणस्सइकाइयाणं आउकाइयगमग सरिसा णवगमगा भाणियव्वा

बावीस हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट अठासी हजार वर्ष और बारह रात्रि दिन अधिक. संबंध भी उपयोग लगाकर कहना ॥ १४ ॥ जैसे तेउकाया का कहा वैसे ही वायुकाया का जानना. परंतु इस में पताका का संस्थान है एक हजार वर्ष का संबंध कहना. तीसरा गमा में कालादेश से जघन्य बावीस हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट एक लाख वर्ष (पृथ्वी काया के चार भव के ८८००० वर्ष और वायुकाय के चार भव के १२००० वर्ष) इतना काल तक गतागत करे ऐसे आगे का भी उपयोग रखकर संबंध कहना. ॥ १५ ॥ यदि वनस्पति काया में से उत्पन्न होवे तो वनस्पति काया का अप्काया

सूत्र

अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं, उक्कोसेणं सत्तरयणीओ, तत्थणं जा सा उत्तरवेउव्विया, सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं जोअणसयसहस्सं ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-भवधारणिज्जाय, उत्तरवेउव्वियाय, ॥ तत्थणं जे ते भवधारणिज्जा ते समचउरंससंठाण संठिया पण्णत्ता, तत्थणं जे से उत्तरवेउव्विया ते णाणा संठाण संठिया प० ॥ लेस्साओ चत्तारि ॥ दिट्ठी तिविहावि ॥ तिण्णि णाणा णियमं, तिण्णि अण्णाणा भयणाए ॥ जोगे तिविहेवि ॥ उवओगे दुविहेवि ॥ चत्तारि सण्णाओ ॥ चत्तारि

भावार्थ

भाग उत्कृष्ट सात हाथ. उस में जो उत्तर वैक्रेयवाले हैं उनकी जघन्य अंगुलका असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक लाख योजन. अहो भगवन् ! उन को कौनसा संस्थान कहा है ? अहो गौतम ! संस्थान के दो भेद. भवधारणीय और उत्तरवैक्रेय. उस में भवधारणीय का समचतुस्रसंस्थान और उत्तर वैक्रेय का संस्थान विविध प्रकार का. लेश्याओं चार कहीं, दृष्टि तीन, तीन ज्ञान की भजना तीन अज्ञान की नियमा, तीन योग, उपयोग दो, चार कषाय. पांच इन्द्रिय, पांच समुद्घात, दोनों प्रकार की वेदना, स्त्री वेद और पुरुष वेद होवे. परंतु नपुंसक वेद नहीं, स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट सागरोपम,

सूत्र

अणंतावा उववज्जंति ७ ॥ तेओग कलिओग तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंतावा उववज्जंति ८ ॥ दावरजुम्म कडजुम्मेसु अठवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा उववज्जंति ९ ॥ दावरजुम्म तेओगेसु एक्कारसावा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा उववज्जंति १० ॥ दावरजुम्म दावरजुम्मेसु दससवा संखेज्जावा असंखेज्जा- वा अणंतावा उववज्जंति ११ ॥ दावरजुम्म कलिओगेसु णववा संखेज्जावा असंखे- ज्जावा अणंतावा उववज्जंति १२ ॥ कलिओग कडजुम्मेसु चत्तारिवा संखेज्जावा असं- खेज्जावा अणंतावा उववज्जंति १३ ॥ कलिओग तेओगेसु सत्तवा संखेज्जावा असं-

भावार्थ

वैसे ही यावत् परिमाण पन्नरह संख्यात, असंख्यात व अनंत उत्पन्न होते हैं, शेष वैसे ही यावत् अनंतवक्त. यों सोलह महा युग्मों में एक गमा, परंतु परिमाण में विशेषता. त्र्योज द्वापर युग्म में परिमाण चउदह संख्यात, असंख्यात व अनंत उत्पन्न होते हैं ७. त्र्योज कल्योज में तेरह संख्यात असंख्यात व अनंत उत्पन्न होते हैं ८. द्वापर कृत युग्म में आठ संख्यात, असंख्यात व अनंत ९. द्वापर युग्म त्र्योज में अग्यारह संख्यात, असंख्यात व अनंत १० द्वापर युग्म में दश, संख्यात असंख्यात व अनंत ११. द्वापर युग्म कल्योज में नव संख्यात असंख्यात व अनंत उत्पन्न होते हैं १२. कलियोग कृत युग्ममें चार संख्यात असंख्यात व अनंत

ओगाहणा जहेणेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं, आउयकम्मस्स णो बंधगा अबंधगा, आउयस्स णो उदीगा अणुदीरगा णो उस्सासगा णो णिस्सासगा, णो उस्सासणिस्सासगा॥ सत्तविह बंधगा, णो अट्ठविह बंधगा॥ १ ॥ तेणं भंते ! पढम समय कडजुम्म २ एगिंदियत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! एक्कं समयं. एवं ठिईएवि, समुग्घाया आदिल्ला दोण्णि, समोहया ण पुच्छिज्जंति उव्वट्टणा णपुच्छिज्जइ, सेसं तहेव सव्वं णिरवसेसं,सोलससुवि गमएसु जाव अणंता खुत्तो ॥ सेवं भंते २ त्ति ॥ पैंतीसमस्स, बितिओ॥ ३५॥२॥ *

अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट भी अंगुल का असंख्यातवा भाग. आयुष्यकर्म के बंधक नहीं है परंतु अबंधक हैं, आयुष्यकर्म की उदीरणा करनेवाले नहीं हैं परंतु अनुदीरणावाले हैं, उश्वासवाले, निश्वासवाले व उश्वासनिश्वासवाले नहीं हैं, सात कर्म के बंधक हैं परंतु आठ कर्म के बंधक नहीं है ॥ १ ॥ अहो भगवन्! प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रिय कितने काल तक रहते हैं? अहो गौतम ! एक समय, ऐसे ही स्थिति का भी कहना. समुद्घात स्थिति पहिले की दो,समोहया व उद्वर्तना की पृच्छा नहीं कहना. शेष सोलह गमा में अनंत वक्त पर्यन्त वैसे ही कहना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह पैंतीसवा शतक का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ ३५ ॥ २ ॥

सरीर बंधंति २ त्ता, तओ पच्छा आहारेंतिवा परिणामेंतिवा सरीरंवा बंधंति ॥ १ ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कइलेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तंजहा-कण्ह णील काउ तेउ॥ २॥तेणं भंते! जीवा किं सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी ? गोयमा! मिच्छादिट्ठी णो सम्मदिट्ठी णो सम्मामिच्छदिट्ठी ॥ ३ ॥ तेणं भंते ! जीवा किं णाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णो णाणी अण्णाणी, णियमा दुअण्णाणी तंजहा-मइअण्णाणी सुअण्णाणीय ॥ ४ ॥ तेणं भंते ! जीवा किं मण-

भावार्थ

कायिक प्रत्येक अहारवाले व प्रत्येक परिणामवाले हैं इस से प्रत्येक शरीर बांधते हैं. प्रत्येक शरीर बांधकर आहार करते हैं परिणमाते हैं और शरीर बांधते हैं ॥ १ ॥ अब दूसरा लेश्या द्वार कहते हैं:-अहो भगवन् ! उन जीवोंको कितनी लेश्याओं कही ? अहो गौतम! चार लेश्याओं कहीं. तद्यथा १ कृष्ण २ नील ३ कापोत और ४ तेजो ॥ २ ॥ तीसरा दृष्टिद्वार कहते हैं:-अहो भगवन् ! वे जीवों क्या समदृष्टिवाले हैं, मिथ्यादृष्टिवाले हैं अथवा समामिथ्यादृष्टिवाले हैं ? अहो गौतम ! मिथ्यादृष्टिवाले हैं परंतु समदृष्टि व समामिथ्यादृष्टिवाले नहीं हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या वे ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं. अहो गौतम ! ज्ञानी नहीं हैं परंतु अज्ञानी हैं. और मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान ऐसे दो अज्ञान पाते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् !